नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्यो नमः

सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

भाग

६



आगम - ४२

"दशवैकालिक" निर्युक्ति एवं चूर्णि:

मूल संशोधक :- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

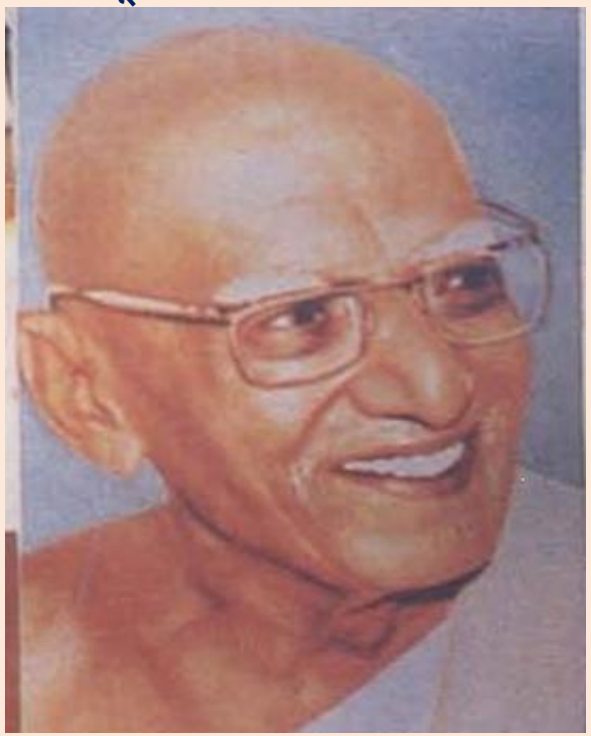
अभिनव-संकलनकर्ता :- आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से

श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ, पालडी, अमदावाद

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब



श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

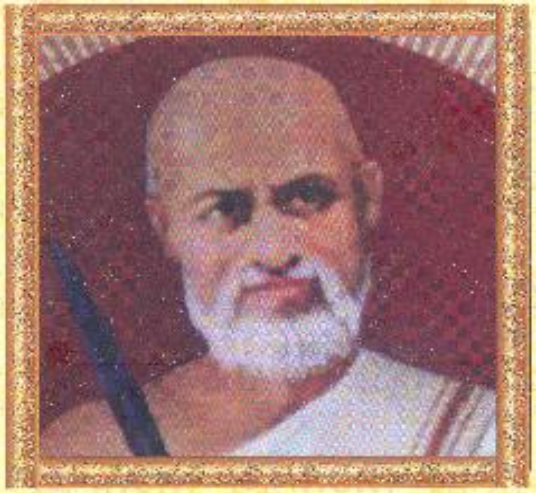
करीब पचास साल पहेले परम पूज्य स्वर्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू-भगवंत एवं साध्वी-महाराज के लिए उपाश्रय भी है, जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

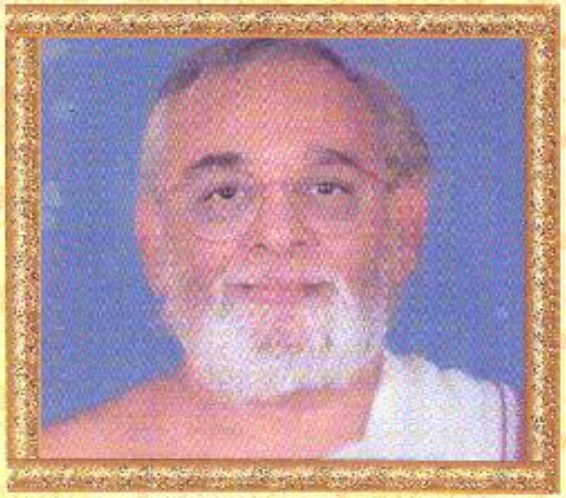
सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदाबाद Mo 9825598855 / 9825306275



आगम

वाचना शताब्दी वर्ष

भाग-6 [४२] दशवैकालिक-सूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

"दशवैकालिक" निर्युक्ति: एवं चूर्णि:

[मूलं + भद्रबाहुस्वामी कृत् निर्युक्ति: + भाष्यगाथा: + जिनदासगणि रचिता चूर्णि:]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ **मुनि दीपरत्नसागर** (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

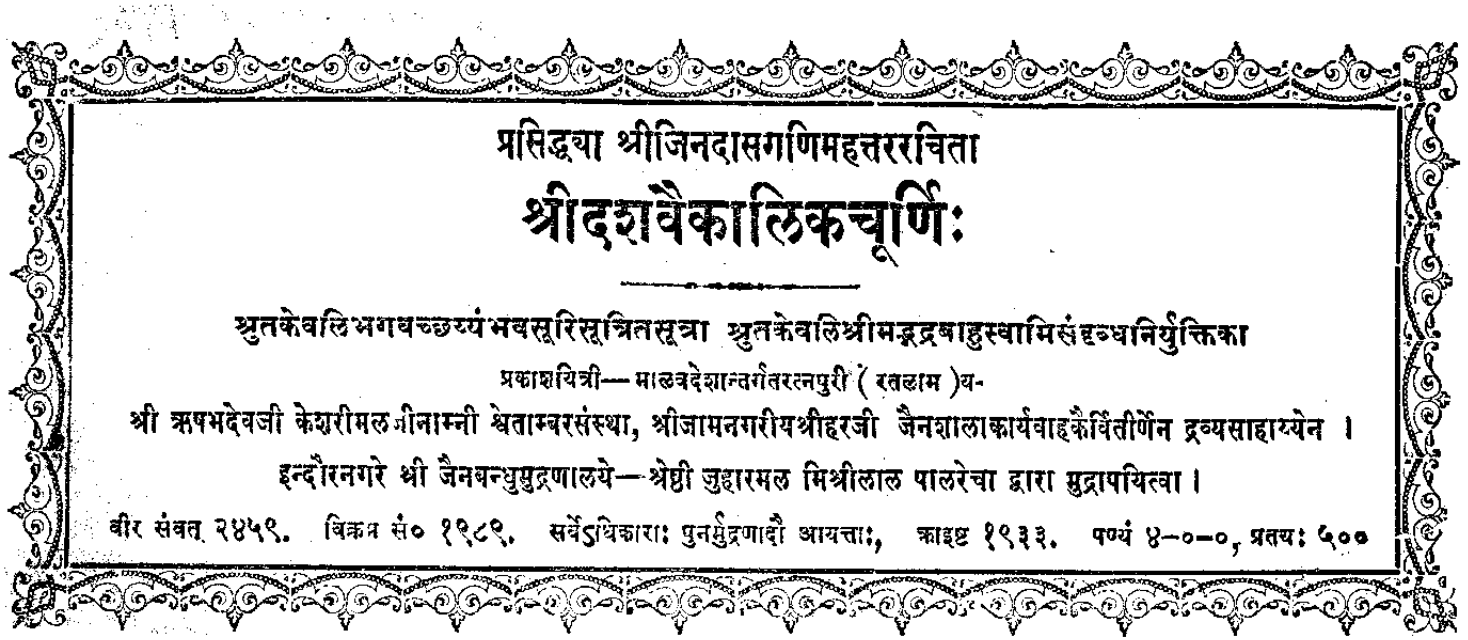
01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५

'सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग-६

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि:

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [–]



प्रसिद्धया श्रीजिनदासगणिमहत्तररचिता

श्रीदशवैकालिकचूर्णिः

श्रुतकेवलिभगवच्छय्यंभवसूरिसूत्रितसूत्रा श्रुतकेवलिश्रीमद्भद्रबाहुस्वामिसंदृब्धानिर्युक्तिका

प्रकाशयित्री— मालवदेशान्तर्गतरत्नपुरी (रतलाम)य-

श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजीनाम्नी श्वेताम्बरसंस्था, श्रीजामनगरीयश्रीहरजी जैनशालाकार्यवाहकैर्वितीर्णेन द्रव्यसाहाय्येन ।

इन्दौरनगरे श्री जैनबन्धुमुद्रणालये—श्रेष्ठी जुहारमल मिश्रीलाल पालरेचा द्वारा मुद्रापयित्वा ।

वीर संवत् २४५९. विक्रम सं० १९८९. सर्वेऽधिकाराः पुनर्मुद्रणादौ आयत्ताः, क्राइष्ट १९३३. पण्यं ४–०–०, प्रतयः ५००

दशवैकालिक-चूर्णि: मूल "टाइटल पेज"

सामाचारी-संरक्षक, ज्ञानधनी, आगम-संशोधक, तीव्र-मेधावी, समाधिमृत्यु-प्राप्त, बहुमुखीप्रतिभाधारक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

◆ जिन्होने शुद्ध-श्रद्धा, सम्यक्-श्रुत आराधना, यथाख्यातचारित्र के प्रति गति और अंत समय देह-ममत्व के त्याग के द्वारा कायोत्सर्ग नामक अभ्यंतर-तप कि मिशाल कायम कि है ऐसे बहुश्रुत आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज का परिचय कराना मेरे लिए नामुमकिन है, फ़िर भी गुरुभक्ति बुद्धि से श्रद्धांजली स्वरुप एक मामुली सी झलक पैस करने का यह प्रयास मात्र है |

◆ चारित्र-ग्रहण के बाद अल्प कालमे जो अपने गुरुदेव की छत्रछाया से दूर हो गये, तो भी गुरुदेव के स्वर्ग-गमन को सिर्फ़ कर्मो का प्रभाव मानकर अपने संयम के लक्ष्य प्रति स्थिर रहते हुए अकेले ज्ञान-मार्ग कि साधना के पथ पर चले | पढाई के लिए ही कितने महिनो तक रोज एकासणा तप के साथ बारह किल्लोमिटर पैदल विहार भी किया | लेकिन अपने मंझिल पे डटे रहे, और परिणाम स्वरुप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का, प्राचीन लिपिओ का, व्याकरण-न्याय-साहित्य आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया | जैन आगमशास्त्रो के समुद्र को भी पार कर गए|

◆ एक अकेला आदमी भी क्या नहीं कर शकता? इस प्रश्न का उत्तर हमें इस महापुरुष के जीवन और कवन से मिल गया, जब वे चल पड़े देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के स्थापित पथ पर. बिना किसी सहाय लिए हुए सिर्फ अकेले ही "जैन-आगम-शास्त्रो" को दीर्घजीवी बनाने के लिए अनेक हस्तप्रतो से शुद्ध-पाठ तैयार किये | दो वैकल्पिक आगम, कल्पसूत्र और निर्युक्तिओ को जोड़कर ४५ आगम-शास्त्रो को संशोधित कर के संपादित किया | फिर पालीताणामें आगम मंदिर बनवाकर आरस-पत्थर के ऊपर ये सभी आगम-साहित्य को कंडारा, सूरतमें ताम्रपत्र पर भी अंकित करवाए और "आगम मंजूषा" नाम से मुद्रण भी करवा के बड़ी बड़ी पेटीमें रखवा के गाँव गाँव भेज दिए | वर्तमानकालमे सर्व प्रथमबार ऐसा कार्य हुआ |

◆ सिर्फ मूल आगम के कार्य से ही उन के कदम रुके नही थे, उन्होंने आगमो की वृत्ति, चूर्णि, निर्युक्ति, अव चूरी, संस्कृत-छाया आदि का भी संशोधन-सम्पादन किया | उपयोगी विषयो के लिए उन्होंने एक लाख श्लोक प्रमाण संस्कृत-प्राकृत नए ग्रंथो की रचना भी की | कितने ही ग्रंथो की प्रस्तावना भी लिखी | ये सम्यक्-श्रुत मुद्रित करवाने के लिए आगमोदय समिति, देवचंद लालभाई इत्यादि विभिन्न संस्था की स्थापना भी की |

◆ ज्ञानमार्ग के अलावा सम्मेतशिखर, अंतरीक्षजी, केशरियाजी आदि तीर्थरक्षा कर के सम्यक-दर्शन-आराधना का परिचय भी दिया | राजाओं को प्रतिबोध कर के और वाचनाओ द्वारा अपनी प्रवचन-प्रभावकता भी उजागर करवाई | बालदिक्षा, देवद्रव्य-संरक्षण, तिथि-प्रश्न इत्यादि विषयोमे सत्य-पक्षमें अंत तक दृढ़ रहे | जैनशासन के लिए जब जरुरत पड़ी तब अदालती कारवाईंओ का सामना भी बड़ी निडरता से किया था |

◆ सागरानंदजी के नाम से मशहूर हो चुके पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजीने अपने परिवार स्वरुप ७०० साधू-साध्वीजी भी शासन को भेट किये |

...ये थे हमारे गुरुदेव "सागरजी"... ***.....मुनि दीपरत्नसागर...***

संयमैकलक्षी, उपधान-तप-प्रेरक, चारित्र-मार्ग-रागी, प्रवचन-पटु, सुपरिवार-युक्त

पूज्य गच्छाधिपतिआचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

***** परमपूज्य आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी के पाट-परंपरामे हुए तिसरे गच्छाधिपति थे पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी, जो एक पून्यवान् आत्मा थे, दीक्षा ग्रहण के बाद अल्पकालमे ही एक शिष्य के गुरु बन गये | फ़िर क्या ! शिष्यो कि संख्या बढती चली, बढ़ते हुए पुन्य के साथ-साथ वे आखिर 'गच्छाधिपति' पद पे आरूढ़ हो गए | इस महात्मा का पुन्य सिर्फ शिष्यों तक सिमित नही था, वे जहा कहीं भी 'उपधान-तप' की प्रेरणा करते थे, तुरंत ही वहां 'उपधान' हो जाते थे | प्रवचनपटुता एवं पर्षदापुन्य के कारण उन के उपदेश-प्राप्त बहोत आत्माओने संयम-मार्ग का स्वीकार किया | खुद भी संयमैकलक्षी होने के कारण चारित्रमार्ग के रागी तो थे ही, साथसाथ ज्ञानमार्ग का स्पर्श भी उन का निरंतर रहेता था | आप कभी भी दुपहर को चले जाइए, वे खुद अकेले या शिष्य-परिवार के साथ कोई भी ग्रन्थ के अध्ययन-अध्यापनमें रत दिखाई देंगे |**

***** ये तो हमने उनके जीवन के दो-तीन पहेलु दिखाए | एक और भी अनुसरणीय बात उन के जीवनमें देखने को मिली थी- 'आराधना-प्रेम'. कैसी भी शारीरिक स्थिति हो, मगर उन्होंने दोनों शाश्वती ओलीजी, [पोष}दशमी, शुक्ल पंचमी, त्रिकाल देववंदन, पर्व या पर्वतिथि के देववंदन आदि आराधना कभी नहीं छोड़ी | आखरी सालोमें जब उन को एहसास हो गया की अब 'अंतिम-आराधना' का अवसर नजदीक है, तब उन के मुहमें एक ही रटण बारबार चालु हो गया- "*अरिहंतनुं शरण, सिद्धनुं शरण, साधुनुं शरण, केवली भगवंते भाखेला धर्मनुं शरण* " इसी चार शरणो के रटण के साथ ही वे समाधि-मृत्यु-रूप सम्यक् निद्रा को प्राप्त हुए थे | ऐसे महान् सूरिवर को भावबरी वंदना |**

***** मुनि दीपरत्नसागर...**

~~~
~~~

'सागर-समुदाय-एकता-संरक्षक, तीर्थ-उद्धार-कार्य-प्रवृत्त, गुणानुरागी'

इस "सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग १ से ८ के संपूर्ण अनुदान के प्रेरणादाता

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी महाराज साहेब

पूज्यपाद स्व॰ गच्छाधिपति देवेन्द्रसागर-सूरीश्वरजी के विनयी शिष्य एवं दो गच्छाधिपतिओ के मुख्य सहायक के रुपमे 'सागर समुदाय' के सुचारु संचालक पूज्य हर्षसागरसूरिजी, जिन की प्रेरणा से ये "स चूर्णिक-आगम-सुत्ताणि" के मुद्रण के लिए संपूर्ण द्रव्यराशि प्राप्त हुई , उनका अत्यल्प परिचय यहां करेंगे | समुदाय-एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हुए ये महात्मा *समुदाय के साधु-साध्वीजी* की आवश्यकताओकी पूर्ती के लिए भी प्रवृत्त रहेते है, प्राचीन-अर्वाचीन तीर्थो के जीर्णोद्धार एवं विकाश के लिए भी उत्साहित रहेते है, ज्ञान-क्षेत्र अछूता न रहे इसीलिए अनुमोदना, अनुदान एवं समय मिलने पर शास्त्र-वांचनमें भी रूचि रखते है | समुदाय के जरूरतमंद साध्वीजी भगवंतो के आवास का विषय हो या साध्वीजी के विहारमें मजदूर का वेतन चुकाना हो, ऐसे छोटे-छोटे कार्यो के प्रति भी उन का लक्ष्य रहेता है | दर्शन-शुद्धि के लिए जब उन्होंने समग्र भारतवर्ष के १०० साल तक के पुराने जिनालयो में १८ अभिषेक की प्रेरणा की, उस वक्त लगभग सभी अभिषेक-सामग्री की द्रव्य-शुद्धि का ख़याल रखते हुए अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय दिया था, साथमे अनुकंपा भाव से पुजारी या विधि करानेवाले को यत्किंचित् बहुमान प्रगट करते हुए कुछ धन-राशि प्रदान करवाई |

ऐसे बहुगुण-संपन्न महात्मा पूज्य आचार्यश्री हर्षसागर-सूरिजी को हम भावभरी वंदना करते हुए इस श्रुतकार्य का प्रारंभ करने जा रहे है |

**** मुनि दीपरत्नसागर*

[कात्रेज]पूना, शंखेश्वर, कपडवंज, प्रभासपाटण आदि स्थानोमे आगममंदिर के प्रेरक, कर्मग्रंथ अभ्यासु, निस्पृह महात्मा

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य श्री दौलतसागर-सूरीश्वरजी महाराज साहेब

(एवं) अजातशत्रु, स्वाध्याय-रसिक, प्रशांतमूर्ती और अपने गुरु के प्रीतिपात्र

परम पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धनसागर-सूरिजी महाराज साहेब

इस पवित्र श्रुत-कार्यमे दोनो सूरिवरो का स्मरण करते हुए कोटि कोटि वंदना के साथ

.....मुनि दीपरत्नसागर

आगम (४२)	दशवैकालिक-चूर्णे: उपक्रम:
प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि
	दशवैकालिक-चूर्णे: पूज्यपाद आनंदसागरसूरीश्वरजी लिखित उपक्रम:

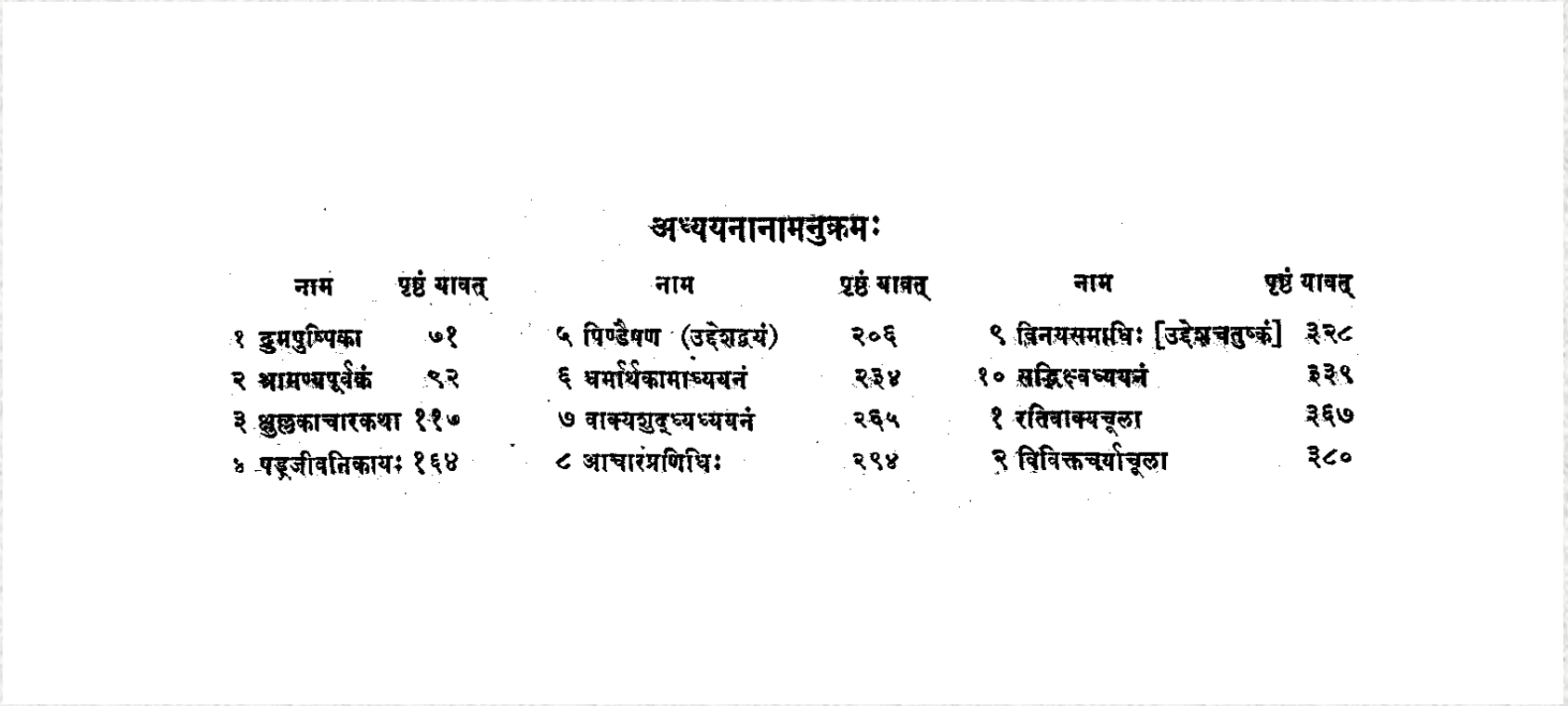
श्रीदशवैकालिकचूर्णेरुपक्रमः

भगवद्भिः श्रुतकेवलिभिः श्रीमद्भिः शय्यम्भवसूरिभिः पूर्वगतश्रुतेभ्य आदेशान्तरेण द्वादशाङ्गाद् गणिपिटकादुद्धृतं, प्रयोजनं तूद्धारेऽस्य स्वतनूजस्य मनकाख्यस्याष्टवर्षीयस्य षण्मासिकायुष्कस्यागधनासिद्ध्यर्थं, सहि भगवतां प्रव्रज्याकाले गर्भस्थोऽभूत्, प्रभुषु प्रव्रजत्स्वाक्रन्दमानेषु स्वजनेषु गर्भोदन्तं पृच्छत्सु च मात्राऽलक्ष्यमाणगर्भत्वात् मनागिति निरदेशि, जाते च तस्मिन् जननीजल्पानुसारात् कृतं मनकेति नाम, जाताष्टवर्षमानश्चावगम्य मातुर्मुखादवगतः पितुः प्रव्रज्याया उदन्तः, अनेक दुर्वचनोदितैरवगताऽस्या अरुचिः श्रामण्ये, अनापृच्छ्यैव तां नष्ट्वा राजगृहाच्चम्पामागत्याचार्यसकाशे प्रवव्राज, कौटुम्बिकैः स्वामित्वस्याव्युत्सृष्टत्वान्नातः शैक्षनिष्फेटिकाप्रवृत्तिः प्रवचनधरैरुद्दीर्णा, षण्मासीमवगत्यायुस्तस्य हितायोद्धृतं भगवद्भिः संजिहीर्षुभिः, परं श्रीयशोभद्रादिना श्रमणसंघेनोपरुद्धैर्न संहृतं भगवद्भिः, भगवद्भिर्भद्रबाहुस्वामिभिर्निर्युक्त्याऽलंकृतमेतत्, श्रीमद्भिर्जिनदासगणिभिः सनिर्युक्तिकस्यास्य विहिता चूर्णिः, सैवैपौन्मुद्ध्यमाणा, यद्यपि पूर्वधरासन्नकालजातैः श्रीहरिभद्रसूरिभिः सूत्रिताऽस्य वृत्तिरनया, मुद्रिताचागमोदयसमितिसंस्थाप्रयासेन श्रेष्ठिदेवचन्द्रपुस्तकोद्धारसंस्थया सा, सूत्रगाथाकारादेविषयाणां च क्रमस्तत्समानः प्राय इति नायास एतद्विषये, उन्मुद्रणे चास्या वितीर्णं साहाय्यं श्री जामनगरीयश्रीहरजीजैनशालाकार्यवाहकैरिति नै विस्मर्तुमहं, अवगम्यैनां समावार्थां चूर्णिं मोक्षमार्गरतयो भवन्तु भव्या इत्याशास्महे ।

आनन्दसागराः

१९८९ फाल्गुन शुक्ल तृतीया ।

आगम (४२)	मूल संपादकेन लिखीत: अध्ययन-अनुक्रम:
प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि
	दशवैकालिक-चूर्णे: मूल संपादकेन लिखित: अध्ययन-अनुक्रम:



अध्ययनानामनुक्रमः

नाम	पृष्ठं यावत्	नाम	पृष्ठं यावत्	नाम	पृष्ठं यावत्
१ द्रुमपुष्पिका	७१	५ पिण्डैषण (उद्देशद्वयं)	२०६	९ विनयसमाधिः [उद्देशचतुष्कं]	३२८
२ श्रामण्यपूर्वकं	९२	६ धर्मार्थकामाध्ययनं	२३४	१० सद्भिक्ष्वध्ययनं	३३९
३ क्षुल्लकाचारकथा	११७	७ वाक्यशुद्ध्यध्ययनं	२६५	१ रतिवाक्यचूला	३६७
४ षड्जीवनिकायः	१६४	८ आचारप्रणिधिः	२९४	२ विविक्तचर्याचूला	३८०

मूलांक:	अध्ययन	पृष्ठांक:		मूलांक:	अध्ययन	पृष्ठांक:		मूलांक:	अध्ययन	पृष्ठांक:
००१	१– द्रुमपुष्पिका	०२२		२२६	६– महाचारकथा	२१९		---	९/३- उद्देशक - ३	----
००६	२– श्रामण्यपूर्वकं	०८४		२९४	७– वाक्यशुद्धि:	२४७		---	९/४- उद्देशक - ४	----
०१७	३– क्षुल्लकाचारकथा	१०५		३५१	८– आचारप्रणिधी	२७४		४८५	१०-- सभिक्षु:	३४३
०३२	४– षड्जीवनिकाया	१३१		४१५	९– विनयसमाधि:	३०८			चूलिका	३६२
०७६	५– पिन्डैषणा	१७७		---	९/१- उद्देशक - १	----		५०६	१– रतिवाक्यं	३६३
---	५/१- उद्देशक- १	----		---	९/२- उद्देशक - २	----		५२४	२– विविक्तचर्या	३८०
---	५/२ उद्देशक- २	----			---------			---	उपसंहार-निर्युक्ति:	३९२

[“दशवैकालिक-चूर्णि:” इस प्रकाशन की विकास-गाथा]

यह प्रत सबसे पहले “दशवैकालिक-चूर्णि” के नामसे सन १९३३ (विक्रम संवत १९८९) में रुषभदेवजी केशरमलजी श्वेताम्बर संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

वृत्ति की तरह चूर्णी के भी दुसरे प्रकाशनों की बात सुनी है , जिसमे ऑफसेट-प्रिंट और स्वतंत्र प्रकाशन दोनों की बात सामने आयी है , मगर मैंने अभी तक कोई प्रत देखी नहीं है |

✤ - हमारा ये प्रयास क्यों? -✤ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने उन सभी प्रतो को स्केन करवाई , उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया , जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी , ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर श्रुतस्कंध-अध्ययन-उद्देशक-मूलसूत्र-निर्युक्ति आदि के नंबर लिख दिए, ताकिँ पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन, उद्देशक आदि चल रहे है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ ‘दीप अनुक्रम’ भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है , इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है|

इस आगमचूर्णि के प्रकाशनोमें भी हमने उपरोक्त प्रकाशनवाली पद्धत्ति ही स्वीकार करने का विचार किया था , परंतु चूर्णि और वृत्ति की संकलन पद्धत्ति एक-समान नही है, चूर्णिमे मुख्यतया सूत्रों या गाथाओ के अपूर्ण अंश दे कर ही सूत्रो या गाथाओ को सूचित कर के पूरी चूर्णि तैयार हुई है, कईं निर्युक्तियां और भाष्य दिखाई नही देते , कोइ-कोइ निर्युक्ति या भाष्य के शब्दो के उल्लेख है , उनकी चूर्णि भी है पर उस निर्युक्ति या भाष्य स्पष्टरूप से अलग दिखाई नहि देते | इसीलिए हमें यहाँ सम्पादन पद्धत्ति बदलनी पड़ी है | हमने यहाँ उद्देशक आदि के सूत्रो या गाथाओ का क्रम, [१-१४, १५-२४] इस तरह साथमे दिया है, निर्युक्ति तथा भाष्यो के क्रम भी इसी तरह साथमे दिये है और बायीं तरफ़ उपर आगम-क्रम और नीचे इस चूर्णि के सूत्रक्रम और दीप-अनुक्रम दिए है, जिससे आप हमारे आगम प्रकाशनोंमे प्रवेश कर शकते है|

शासनप्रभावक पूज्य आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी म०सा० की प्रेरणासे और श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैनसंघ, पालडी, अमदावाद की संपूर्ण द्रव्य सहाय से ये ‘सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि’ भाग-६ का मुद्रण हुआ है, हम उन के प्रति हमारा आभार व्यक्त करते है |

.....मुनि दीपरत्नसागर.

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ १ ॥

अथ दशवैकालिकचूर्णिः

मंगलत्रयं

नमो जिनागमाय। णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं, मंगलादीणि सत्थाणि मंगलमज्झाणि मंगलावसाणाणि य, मंगलपरिग्गहीता य सिस्सा सत्थाणं अवग्रहेहावायधारणसमत्था भवंति, ताणि य सत्थाणि लोगे विरायंति वित्थारं च गच्छंति। आह-मंगलमिति किमर्थमुपादीयते?, उच्यते, विघ्नविनायकाद्युपशमनार्थमुपादीयते, आह-यद्येतन्मंगलत्रयेण किं प्रयोजनं?, उच्यते, आदि-मंगलग्रहणेन शिष्यस्तच्छास्त्रं क्षिप्रं गृह्णाति, मध्यमंगलग्रहणेन तस्य शास्त्रस्य शिष्यो निर्विघ्नेन पारं गच्छति, अवसानमङ्गलग्रहणेन तच्छास्त्रं शिष्यप्रशिष्येभ्यो अव्यवच्छित्तिकरं भविष्यति, अनेन प्रयोजनेन मंगलत्रयमुपादीयते, आह--यदेतन्मंगलत्रयापांतरालद्वयं तन्नामामंगलिकं प्राप्नोति, उच्यते, तत्र अंतरालस्याभावादंडवच्च सर्वमेव शास्त्रं मंगलं निर्जरात्मकत्वात्तपोवत्, एवं तर्हि शास्त्रस्या-मंगलत्वं प्राप्नोति, कस्माद्?, अन्येन मंगलेन मंगलीक्रियमाणत्वात्, यदि तावच्छास्त्रं मंगलं किमस्यान्यन्मंगलमुपादीयते?, अथामंगलं किमनेनारब्धेन?, उच्यते, शास्त्रं हि स्वयमेव मंगलं अन्येषां च मंगलं भवति, स्वपरानुभावात्मकसामर्थ्ययुक्तत्वाद् गुडलवणाग्निप्रदी-पवत्, एवं तर्ह्यनवस्था प्राप्नोति-यदि मंगलस्यापि मंगलमुपादीयते तस्याप्यन्यत् तस्याप्यन्यद्, एवं मंगल उपादीयमाने मारमाशीर्माला प्रसज्यते, सत्येमतत्, किं तर्हि ?, शिष्यस्य मंगलबुद्ध्युत्पादनार्थमिदमुच्यते साधुवत् ॥ मंगलमिति कः शब्दार्थः ?, रख णख वख मख अगि वगि मर्गीति धातुमवस्थाप्य अस्य धातोः 'इदितो नुम् धातो' (पा०७।१।५८) रिति नुमागमः, परस्य अवर्ण्ण-

॥ १ ॥

*** मंगलम् एवं सूत्र-प्रस्तावना

*** यहां निर्युक्ति आदि सभी स्थानोमे जहां जहां "२/१-३" इस तरह क्रमांक लिखे है वे सभी स्थानोमे पहेला क्रमांक इस चूर्णि कि प्रत का समझना और (/) 'ओब्लिक' के बाद दिया हुआ क्रम वृत्तिकार का बताया हुआ 'निर्युक्ति' आदि का क्रमांक समझना |

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ २ ॥

परगमने कृते ततःप्रत्ययाधिकारेऽनुवर्त्तमाने 'मंगेरल' चिति (पा० उणा० ५) अलच्प्रत्ययांतस्येदं रूपं मंगलमिति भवति, मंगलमिति कोऽर्थः ?, मंगेति धर्मस्याख्या, ला आदाने धातुः, अस्य धातोर्मंगपूर्वस्य द्वितीयस्यायं विग्रहः, मंगं लातीति विग्रहः, मंगं लातीति 'आतोऽनुपसर्गे' कः (पा.३।२।३) कप्रत्ययान्तस्य मंगलं, अथवा मामिति आत्मनो निर्देशे 'गृ निगरणे' अस्य धातोर्म्मंगपूर्वस्य धातोरचित्यच्प्रत्ययान्तस्य मं सांसारिकेभ्यो अपायेभ्यः गलतीति मंगलं ' कृपो रो लः ' ' ग्रो यङि, (पा. ८।२।२०) अचि विभाषे (पा. ८।२।६१) ति लत्वं ॥ तच्च मंगलं चतुर्विधं–नाममंगलं स्थापनामंगलं द्रव्यमंगलं भावमंगलमिति, नामस्थापने पूर्ववत्, ' द्रु द्रु गतौ ' द्रवते द्रूयते वा द्रोरवयवो विकारो वा द्रव्यं 'द्रव्यं च भव्ये' (पा. ५।३।१०४) यत्प्रत्ययांतस्य द्रव्यं, तत्र ज्ञातृभव्यशरीराभ्यां व्यतिरिक्तं द्रव्यमंगलं दध्यक्षतसुवर्णसिद्धार्थकपूर्णकलशादि, भावमंगलं भवनं, भू सत्तायां परस्मैभाषा, श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे (पा. ३।३।२४) ति घञ्, अतो ञिणति वृद्धिभावः, तं पुण भावमंगलं 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं' धम्मग्गहणेण आदिमंगलं कयं भवति, मज्झे मंगलं धम्मत्थकामस्स आदि सुत्तं 'णाणदंसणसंपण्णं, संजमे य तवे रयं' णाणदंसणसंजमतवग्गहणेण मज्झं मंगलं कयं भवति, अवसाणं मंगलं भिक्खुगुणथिरीकरणं विचित्तचरिगा य वण्णिज्जइ ॥

सव्वेसिं परूवणं करेंतो जहा आवस्सए जाव सुयणाणेणं अधीगारो, कम्हा ?, सुतनाणस्स जम्हा उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुयोगो पवत्तइ, तत्थ पढमं उद्दिट्ठसमुद्दिट्ठाणुण्णातस्सऽणुओगो भवइत्तिकाउं अणुओगेणं अहीगारो, सो य चउव्विहो, तंजहा-चरणकरणाणुयोगो धम्माणुयोगो गणियाणुओगो दव्वाणुओगो, तत्थ चरणकरणाणुयोगो णाम कालियसुयं, धम्माणुयोगो इसिभासियाइं उत्तरज्झयणादि, गणियाणुयोगो सूरपण्णत्ती जंबुद्दीवपण्णत्ती एवमादि, दवियाणुयोगो णाम दिट्ठिवायो, पुण इहं चरणकरणा-

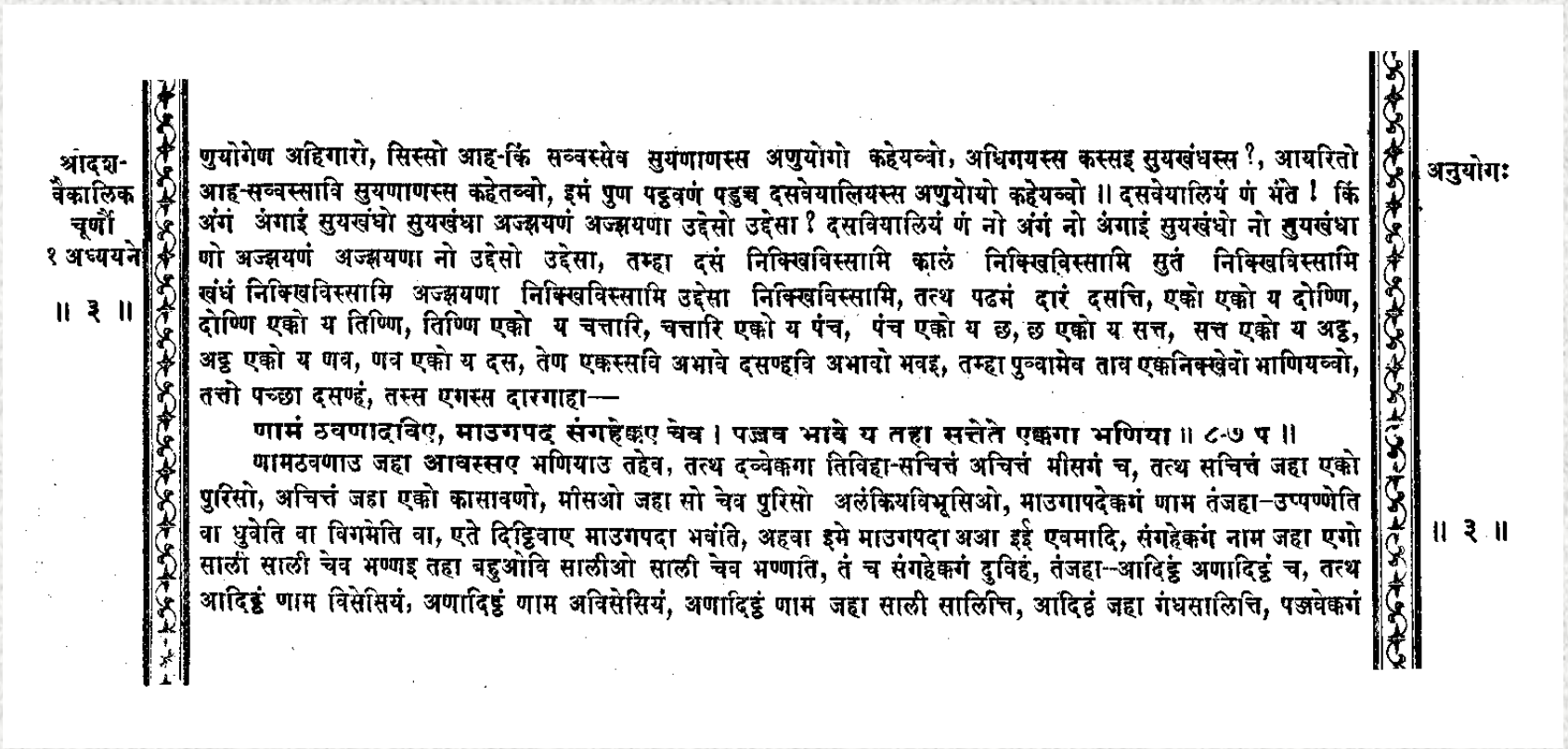
मंगलत्रयं ॥ २ ॥

*** चत्वार: अनुयोगा: वर्णयन्ते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि



श्रादश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ३ ॥

णुयोगेण अहिगारो, सिस्सो आह-किं सव्वस्सेव सुयणाणस्स अणुयोगो कहेयव्वो, अधिगयस्स कस्सइ सुयखंधस्स ?, आयरितो आह-सव्वस्सावि सुयणाणस्स कहेतव्वो, इमं पुण पडुवणं पडुच्च दसवेयालियस्स अणुयोगो कहेयव्वो ॥ दसवेयालियं णं भंते ! किं अंगं अंगाइं सुयखंधो सुयखंधा अज्झयणं अज्झयणा उद्देसो उद्देसा ? दसवियालियं णं नो अंगं नो अंगाइं सुयखंधो नो सुयखंधा णो अज्झयणं अज्झयणा नो उद्देसो उद्देसा, तम्हा दसं निक्खिविस्सामि कालं निक्खिविस्सामि सुतं निक्खिविस्सामि खंधं निक्खिविस्सामि अज्झयणा निक्खिविस्सामि उद्देसा निक्खिविस्सामि, तत्थ पढमं दारं दसत्ति, एक्को एक्को य दोण्णि, दोण्णि एक्को य तिण्णि, तिण्णि एक्को य चत्तारि, चत्तारि एक्को य पंच, पंच एक्को य छ, छ एक्को य सत्त, सत्त एक्को य अट्ठ, अट्ठ एक्को य णव, णव एक्को य दस, तेण एकस्सवि अभावे दसण्हवि अभावो भवइ, तम्हा पुव्वामेव ताव एक्कनिक्खेवो भाणियव्वो, तत्तो पच्छा दसण्हं, तस्स एगस्स दारगाहा—

णामं ठवणादविए, माउगपद संगहेक्कए चेव । पज्जव भावे य तहा सत्तेते एक्कगा भणिया ॥ ८-७ प ॥

णामठवणाउ जहा आवस्सए भणियाउ तहेव, तत्थ दव्वेक्कगा तिविहा-सचित्तं अचित्तं मीसगं च, तत्थ सचित्तं जहा एक्को पुरिसो, अचित्तं जहा एक्को कासावणो, मीसओ जहा सो चेव पुरिसो अलंकियविभूसिओ, माउगापदेक्कगं णाम तंजहा—उप्पण्णेति वा धुवेति वा विगमेति वा, एते दिट्ठिवाए माउगपदा भवंति, अहवा इमे माउगपदा अआ ईई एवमादि, संगहेक्कगं नाम जहा एगो साली साली चेव भण्णइ तहा बहुओवि सालीओ साली चेव भण्णंति, तं च संगहेक्कगं दुविहं, तंजहा—आदिट्ठं अणादिट्ठं च, तत्थ आदिट्ठं णाम विसेसियं, अणादिट्ठं णाम अविसेसियं, अणादिट्ठं णाम जहा साली सालित्ति, आदिट्ठं जहा गंधसालित्ति, पज्जवेक्कगं

अनुयोगः

॥ ३ ॥

*** 'द्रव्य' शब्दस्य सचित्त-आदि भेदा:

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

दुविहं-आदिट्ठं अणादिट्ठं च, आदिट्ठं च पज्जवोत्ति वा भेदोत्ति वा गुणोत्ति वा एगट्ठा, तत्थ अणादिट्ठं जहा दसगालियं आदिट्ठं दुमपुप्फियं सामण्णपुव्वयं एवमादि, भावेक्कगं आदिट्ठं अणादिट्ठं च, अणादिट्ठं भावो, आदिट्ठं उदइओ उवसमिओ खइओ खओवसमिओ पारिणामिओ, तत्थ उदइयभावेक्कगं दुविहं-अणादिट्ठं उदइओ भावो, आदिट्ठं पसत्थमप्पसत्थं च, तत्थ पसत्थेक्कगं तित्थगरनामगोत्तस्स कम्मस्स उदओ एवमादी, अप्पसत्थेक्कगं कोहोदओ एवमादि, इयाणिं उवसमियखइयखओवसमिया, ते तिण्णिवि भावेक्कगाणि, ते य छण(समण)स्स पसत्था चेव, एतेसिं अपसत्थो पडिवक्खो णत्थि, कम्हा?, जम्हा मिच्छदिट्ठीणं केई कम्मंसा खीणा केई उवसंता, खओवसमेण य कल्लाणं बुद्धीपाडवादिणो गुणा संतावि तेसिं विवरीयगाहित्तणेणं उम्मत्तवयणमिव अप्पमाणं चेव, तम्हा उवसमियखवियखओवसमिया भावा सम्मदिट्ठिणो चेव लब्भंति, परिणामियभावे एक्कगं दुविहं--आदिट्ठं च अणादिट्ठं च, पारिणामिअभावे आइट्ठं दुविहं-सादिअपरिणामिएक्कगं अणाइपरिणामिएक्कगं च, तत्थ साइअपरिणामिएक्कगं जहा कसायपरिणओ एवमाइ, अणाइपरिणामिएक्कगं जहा जीवो जीवभावेण निच्चमेव परिणओ। एत्थ कतरेण इक्कगेण अहिगारो?, भद्दियायरितोवदेसेणं जम्हा दस एते पज्जायअज्झयणा संगहेक्कएण संगहिया तम्हा संगहेक्कएण एत्थ अहिगारो, दत्तिलायरिओवएसेणं जम्हा सुयणाणं खओवसमिए भावे वहइ तम्हा भावेक्कएणं अधिगारो, दोन्निवि एते आदेसा अविरूद्धा, भावेक्कएणं अधीगारो॥ इयाणिं दुगतिगजाव नव एते दारे मोत्तूण दस भण्णंति, किं कारणं ?, दससु परूविएसु दुगादीणि परूवियाणि भविस्संतित्तिकाउं, तम्हा दसगस्स छव्विहो निक्खेवो तं०-नामदस ठवणदस दव्वदस खेत्तदस कालदस भावदस इति, नामठवणाओ गयाओ, इयाणिं दव्वदस दस दव्वा सचित्ताचित्तमीसगा, तत्थ सचित्तदव्वा जहा दस मणूसा, अचित्ता जहा दस काहावणा, मीसगा जहा दस अलंकियविभूसिया

॥ ४ ॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ५ ॥

मणूसा, खेत्तदसा दस आगासपएसा, कालदसा 'बाला मंदा किड्डा' जहा तंदुलवेयालिए, भावदसा एते चेव दस अज्झयणा ॥ इदाणिं कालेत्ति दारं, तत्थ गाहा—

दव्वे अद्धअहाउय, उवक्कमे देसकाल काले य । तहय पमाणे वण्णे भावे पगयं तु भावेणं ॥११–९प०॥ एसा गाहा जहा सामाइयनिज्जुत्तीए तहा परूवेतव्वा, एत्थ दिवसपमाणकालेण अधिगारो, तत्थवि ततियपोरुसीए ठविज्जइत्तिकाउं तेण अधिगारो, आढत्तो य णिज्जूहिउं अवरण्हकाले, तस्स पडिसेहो कज्जइ, विगतः कालो विकालः, अथवा विकालः कालः, असकलः खंडश्चेत्यनर्थांतरं, विकालवेलायां परिसमाप्तं वैकालिकं, अथवा (एतत्) विकाले पठ्यत इति वैकालिकं, अथवा दशैतानि अध्ययनानि व्यवगते दिने कृतानीति दशवैकालिकं॥ दशवैकालिकमिति कः शब्दार्थो?, विकालेन निर्वृत्तं संकाशादिपाठाच्चातुरर्थिको ठक्, 'तद्धिते ह्यचामादि' रित्यादिवृद्धिः वैकालिकं॥ इदाणिं सुत्तं, तं चउविहं–णामसुत्तं ठवणसुत्तं दव्वसुत्तं भावसुयं, जहा अणुयोगदारे। एवं खंधस्सवि चउक्कओ निक्खेवओ , तहेव अज्झयणस्स, तहेव णामठवणाओ दव्वभावा भाणिऊणं जहा अणुयोगदारे, णवरं भावज्झयणस्स इमाओ निरुत्तिगाहाओ चउरो 'अज्झप्पस्साणयणं'(२९॥ प०१६) गाहा, अधिगम्मन्ति य अत्था (३० ॥ प० १६) गाहा ' जह दीवा दीवसयं ' गाथा (३१ ॥ प० १६) ' अट्ठविहं कम्मरयं ' गाथा (॥३३॥ पा०१६) चउरोवि कंठाओ, एवं उद्देसगस्सवि चउक्कओ निक्खेवो तहेव ॥

इदाणिं 'जेणेव जं च पडुच्च' गाथा, जेण निज्जूढं सो भाणितव्वो, जं वा पडुच्च निज्जूढं जइ वा णिज्जूढाणि जाए वा परिवाडिए (जह वा) अज्झयणाणि ठवियाणि पचं कारणाणि भाणियव्वाणि, 'जेणं' ति जेण एताणि दस अज्झयणाणि णिज्जूढाणि

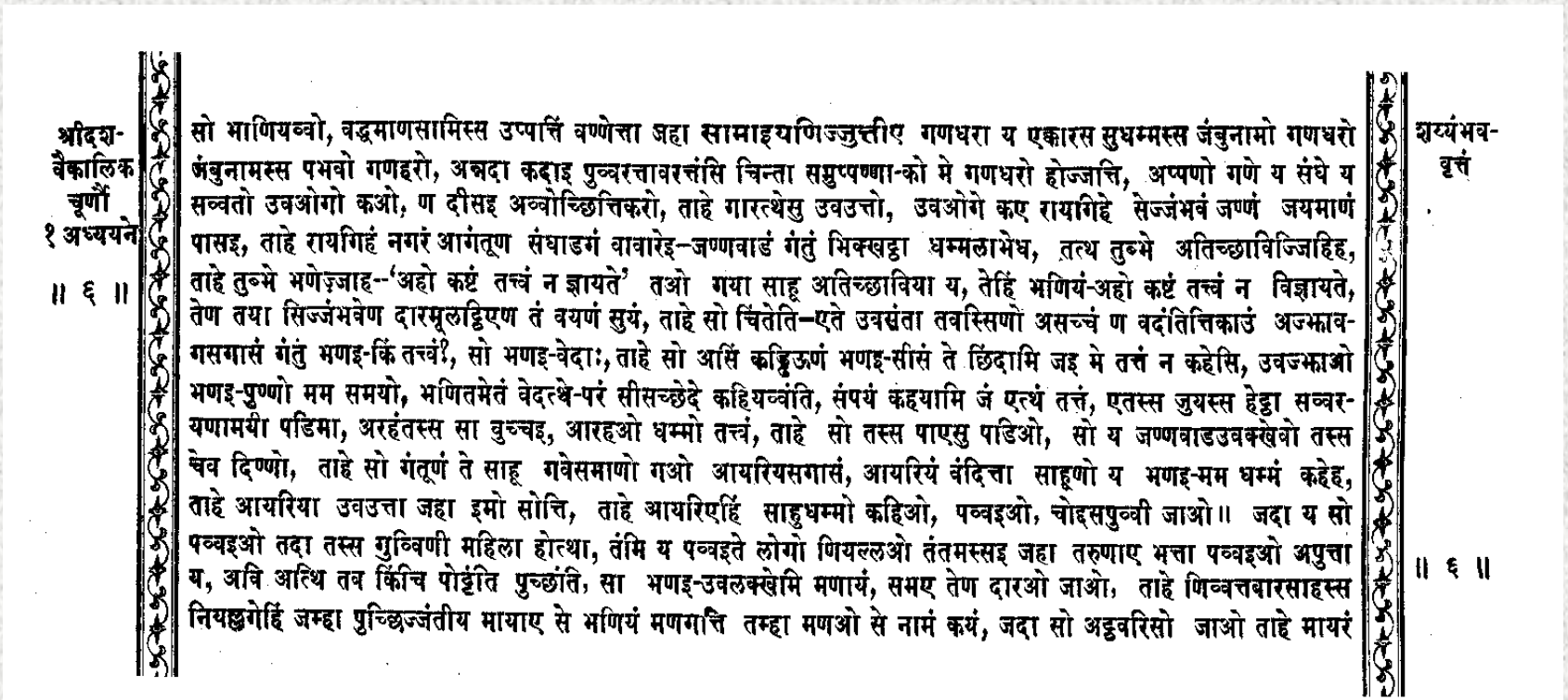
काल-निक्षेपादि

॥ ५ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ६ ॥

सो भाणियव्वो, वद्धमाणसामिस्स उप्पत्तिं वण्णेत्ता जहा सामाइयणिज्जुत्तीए गणधरा य एक्कारस सुधम्मस्स जंबुनामो गणधरो जंबुनामस्स पभवो गणहरो, अन्नदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तंसि चिन्ता समुप्पण्णा-को मे गणधरो होज्जत्ति, अप्पणो गणे य संघे य सव्वतो उवओगो कओ, ण दीसइ अव्वोच्छित्तिकरो, ताहे गारत्थेसु उवउत्तो, उवओगे कए रायगिहे सेज्जंभवं जण्णं जयमाणं पासइ, ताहे रायगिहं नगरं आगंतूण संघाडगं वावारेइ–जण्णवाडं गंतुं भिक्खट्ठा धम्मलाभेध, तत्थ तुब्भे अतिच्छाविज्जिहिह, ताहे तुब्भे भणेज्जाह–'अहो कष्टं तत्त्वं न ज्ञायते' तओ गया साहू अतिच्छाविया य, तेहिं भणियं-अहो कष्टं तत्त्वं न विज्ञायते, तेण तया सिज्जंभवेण दारमूलट्ठिएण तं वयणं सुयं, ताहे सो चिंतेति–एते उवसंता तवस्सिणो असच्चं ण वदंतित्तिकाउं अज्झाव-गसगासं गंतुं भणइ-किं तत्त्वं?, सो भणइ-वेदाः, ताहे सो असिं कड्ढिऊणं भणइ-सीसं ते छिंदामि जइ मे तत्तं न कहेसि, उवज्झाओ भणइ-पुण्णो मम समयो, भणितमेतं वेदत्थे-परं सीसच्छेदे कहियव्वंति, संपयं कहयामि जं एत्थं तत्तं, एतस्स जुयस्स हेट्ठा सव्वर-यणामयी पडिमा, अरहंतस्स सा वुच्चइ, आरहओ धम्मो तत्त्वं, ताहे सो तस्स पाएसु पडिओ, सो य जण्णवाडउवक्खेवो तस्स चेव दिण्णो, ताहे सो गंतूणं ते साहू गवेसमाणो गओ आयरियसगासं, आयरियं वंदित्ता साहूणो य भणइ-मम धम्मं कहेह, ताहे आयरिया उवउत्ता जहा इमो सोत्ति, ताहे आयरिएहिं साहुधम्मो कहिओ, पव्वइओ, चोद्दसपुव्वी जाओ॥ जदा य सो पव्वइओ तदा तस्स गुव्विणी महिला होत्था, तंमि य पव्वइते लोगो णियल्लओ तंतमस्सइ जहा तरुणाए भत्ता पव्वइओ अपुत्ता य, अवि अत्थि तव किंचि पोट्टंति पुच्छंति, सा भणइ-उवलक्खेमि मणायं, समए तेण दारओ जाओ, ताहे णिव्वत्तबारसाहस्स नियल्लगेहिं जम्हा पुच्छिज्जंतीय मायाए से भणियं मणगत्ति तम्हा मणओ से नामं कयं, जदा सो अट्ठवरिसो जाओ ताहे मायरं

शय्यंभव-वृत्तं

॥ ६ ॥

*** दशवैकालिकसूत्रस्य रचयिता शय्यंभवसूरेः कथानकं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ७ ॥

पुच्छइ-को मम पिया ?, सा भणइ-तुब्भ पिया पव्वइओ, ताहे सो दारओ नासिऊण पिउसगासं पट्ठिओ, आयरिया य तंकालं चंपाए विहरंति, सो दारओ गओ चंपं, आयरिएण य सण्णाभूमीगएणं सो दारओ दिट्ठो, दारएण वंदिओ, आयरियस्स तं दारयं पेच्छंतस्स णेहो जाओ, तस्सवि दारगस्स तहेव, आयरिएहिं पुच्छिओ-भो दारगा! कओ आगमणंति?, सो दारगो भणइ-रायगिहाउ, रायगिहे तो तं कस्स पुत्तो णत्तुओ वा?, सो भणइ-सेज्जंभवो नाम बंभणो, तस्स अहं पुत्तो, सो य किर पव्वइओ, तेहिं भणियं-तुमं केण कज्जेण आगओऽसि ?, सो भणइ-अहंपि पव्वइस्सं, पच्छा सो दारओ भयवं तं तुब्भे जाणह? आयरिया भणंति--जाणामि, सो कहिंति ?, ते भणंति--सो मम मित्तो एगसरीरभूओ, पव्वयाहि तुमं मम सगासे, एवं करेमि, आयरिया आगंतुं पडिस्सए आलोएंति--सचित्तो पडुप्पण्णो, सो पव्वइओ, पच्छा आयरिया उवउत्ता-केवइ कालं एस जीवति ? जाव छम्मासा, ताहे आयरियाण बुद्धी समुप्पण्णा-इमस्स थोवयं आउं किं कायव्वंति?, तं **चोद्दसपुव्वी कहिंपि कारणे समुप्पण्णे णिज्जूहइ, दसपुव्वी पुण अपच्छिमो अवस्समेव णिज्जूहइ**, ममंपि इमं कारणं समुप्पण्णं, अहमवि निज्जुहामि, ताहे आढत्तो णिज्जुहिउं, ते य निज्जूहिज्जंता वियाले निज्जुढा थोवावसेसे दिवसे, तेण तं दसवेयालियं भणिज्जतित्ति, '**जं पडुच्च**'त्ति दारं गयं ॥

इयाणिं **जत्तोत्ति दारं** वण्णिज्जइ, एत्थ गाहाओ तिण्णि **आयप्पवायपुव्वा० गाहा** (१६ प० १३) '**सच्चप्पवायपुव्वा**' (१७ प. १३) गाहा--'**बितिओवियं आदेसो**'(१८ प. १३) गाहा, आयप्पवायपुव्वा णिज्जूढा होइ धम्मपन्नत्तीति, सा एसा चेव छजीवणिया धम्मपण्णत्तित्ति भण्णति, कम्मप्पवायपुव्वा उ पिंडेसणा, सीसो आह-केणाभिसंबंधेण कम्मप्पवादपुव्वे कम्मे वण्णिज्जमाणे पिंडेसणा भण्णइ ?, आयरिओ आह--' आहाकम्मं भुंजमाणे कइ कम्मपगडीओ बंधइ ?' जहा भगवतीए, सुद्धं च पिंडं

उद्धार-स्थानानि अधि-कारांश्च ॥ ७ ॥

*** दशवैकालिक सूत्रस्य उद्धारस्थानानि एवं अधिकार:

भुंजमाणस्स असुहकम्मबंधा ण भण्णंति, एतेण अभिसंबंधेण कम्मप्पवायपुव्वाउ, सच्चप्पवायपुव्वाउ वक्कसुद्धी, अवसेसा अज्झयणा पच्चक्खाणपुव्वस्स तइयवत्थूओ णिज्जूढा, बितियाएसेण दुवालसंगाओ गणिपिडगाओ णिज्जूढा। जत्तोत्ति दारं गतं। इदाणिं जतित्ति दारं कथ्यते, कति एताणि अज्झयणाणि?, आयरिओ आह-दुमपुप्फियाईणि सभिक्खुपज्जवसाणाणि रतिवक्का विवित्तचरिया चूलिया य एताउ दो चूलाओ, जतित्ति दारं गयं। जहा ते ठवियत्ति दारं भणिज्जइ, एत्थ पंच गाहाओ ‘पढमे धम्मपसंसा बितिए धिति’ गाहा (२० ॥ प. १३) ‘ तइए आयारकहा’ गाहा-(२१॥ पा १३) ‘ भिक्खविसोही’ गाहा (२२। पा. १३) ‘वयणविभत्ती गाहा (२३ ॥ प १३) ‘ दो अज्झयणा’ गाहा (२४ ॥प. १५) ॥ पढमज्झयणे धम्मो पसंसिज्जइ, सो य इमम्हि चेव जिनशासने, नान्यत्र, मा भूदभिनवप्रव्रजितस्य संमोहः ततो द्वितीयाध्ययनमपदिश्यते-धर्म्मस्थितस्य धृतिः स्यात्, प्ररूपणं तदर्थमिति, ‘ जस्स धिति तस्स तवो जस्स तवो तस्स सोग्गई सुलभा। जे अधितिमंत पुरिसा तवोवि खलु दुल्लहो तेसिं ॥१॥ तृतीये सा धृतिः कस्मिन् कार्येति?, आचारे, अनेनाभिसंबंधेनाप्याचाराध्ययनमपदिश्यते, स चाचारः षट्सु जीवनिकायेषु भवतीत्यनेन संबंधेन षड्जीवनिकायाध्ययनमपदिश्यते, पंचमे आहारादिकमृते शरीरस्थितिर्न भवति, अशरीरस्य च धर्मो न भवतीत्यनेनाभिसंबंधेन पिंडैषणाध्ययनमपदिश्यते, षष्ठे साधुं भिक्षागोचरप्रविष्टं केचिदाहुः—कीदृशो युष्माकं आचारः?, तेनाभिहिताः-आचार्यसकासमागच्छथ, ततस्ते आचार्यसकासमागता ब्रुवंति-कथयस्व कथयस्वेत्यनेन संबंधेन धर्म्मार्थकामाध्ययनमपदिश्यते, सप्तमे तेषामाचार्येण सावद्यवचनदोषविधिसंज्ञेन निरवद्येन कथयितव्यमित्यनेनाभिसंबंधेन वाक्यशुद्ध्यध्ययनमपदिश्यते, अष्टमे ते धर्म्मं श्रुत्वा संसारभयोद्विग्नमनसो ब्रुवंति-वयमपि प्रव्रजामः, ततस्ते आचार्य आह-प्रव्रजितेनाचारप्रणिधानं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ १ ॥

कर्त्तव्यमित्यनेनाभिसंबंधेन आचारप्राणिध्यध्ययनमपदिश्यते, नवमे आचारव्यवस्थितस्य प्रव्रजितस्य विनयो वर्ण्यते इत्यनेनाभिसंबंधेन विनयसमाधिनामाध्ययनमपदिश्यते, एतेष्वेव नवस्वध्ययनार्थेषु यो व्यवस्थितः स भिक्षुर्भवतीत्यनेनाभिसंबंधेन सभिक्ष्वध्ययनमपदिश्यते, द्वावध्ययने चूडा, तत्र प्रथमायां संयमे सीदमानस्य तस्य भिक्षोरवधावनप्रेक्षिणो दोषा वर्ण्यन्ते नरकगमनादि, ततः संयमविरागो(ऽग) मद् , अनेनाभिसंबंधेन प्रथमचूडामध्ययनमपदिश्यते, द्वितीयचूडायां तस्य भिक्षोरसीदमानस्य गुणा वर्ण्यंते, तेन शिवमचलमसंजननमक्षयमव्याबाधापुनरावर्त्तकं निर्वाणसुखं भवतीत्यनेनाभिसंबंधेन द्वितीयचूडामध्ययनमपदिश्यते, एवंदसवेयालियस्स उ पिंडत्थो वण्णिओ समासेणं । एत्तो एक्केक्कं पुण अज्झयणं वन्नइस्सामि ॥ १ ॥

दस एताणि अज्झयणाणि दुमपुप्फियादीणि सभिक्खुपज्जवसाणाणि, तत्थ पढमं अज्झयणं दुमपुप्फिया, तस्स चत्तारि अणुओगदारा, तंजहा–उवक्कमो णिक्खेवो अणुगमो णयो, तत्थ उवक्कमो जहा आवस्सए छव्विहो समवतारितो तहेव इहइंपि, णिक्खेवो ओहणिप्फण्णो तहेव परूवेऊण गाहाओ, ‘अज्झयणस्साणयणं’ गाहाओ पंच भाणियव्वाओ, नामणिप्फण्णो दुमपुप्फिया दोण्णि पदाणि, दुमं पुप्फिया दोण्णि पयाणि, दुमेति पदं, एत्थ गाहा ‘ णामदुमो ठवणदुमो दव्वदुमो खेत्तकालभावदुमे (॥३४॥ प. १७) णामठवणाओ गयाओ, जहा आवस्सगचुण्णीए तहेव इहइंपि, दुम इति कः शब्दार्थः ?, दु अस्मिन् देशे विद्यते ‘ तदस्यास्त्यस्मि (पा. ५।२।९४) इति मतुप्प्राप्ते द्युद्रुभ्यां मः (पा. ५।२।१०८) प्रत्ययो भवति, प्रातिपदिकार्थस्य रुत्वं विसर्जनीयः द्रुमः, दव्वदुमो दुविहो-आगमतो णोआगमतो य, आगमओ जाणये अणुवउत्तो, णोआगमओ पुण तिविहो भवति-जाणगसरीरदव्वदुमो भवियसरीरदव्वदुमो जाणगभवियसरीरवतिरितो दव्वदुमो इति, तत्थ जाणगसरीरदव्वदुमो

द्रुमस्य निक्षेपाः सिद्धिश्च

॥ २ ॥

अध्ययनं -१- ‘द्रुमपुष्पिका’ आरभ्यते

*** ‘द्रुम’ शब्दस्य नाम-आदि निक्षेपा:

जो जीवो दुमपदत्थाधिकारजाणओ तस्स जं सरीरगं जीवरहियं सुक्खरुक्खो वा पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च जहा अयं घयकुंभो आसी एस जाणगसरीरदव्वदुमो, इयाणिं भवियसरीरदव्वदुमो जो जीवो दुमपदत्थाधिगारं जाणिहिइ, अणागतभावपण्णवणं पडुच्च जहा अयं घयकुंभो भविस्सइ अयं मधुकुंभो भविस्सइ, एस भवियसरीरदव्वदुमो। इदाणिं जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्तो दव्वदुमो, सो तिविहो भवइ, तं०-एगभविओ बद्धाउओ अभिमुहणामगोत्तो य, एगभविओ जो ततो भवाओ अणंतरं दुमेसु उववज्जिस्सति, बद्धाउओ णाम जो दुमेसु आउगं णिबद्धं ण ताव उववज्जइ, अभिमुहनामगोत्तो णाम जस्स पुव्वभविए णामगोत्ते पहीणयाए पएसा णिच्छूढा इलियादिट्ठंतेणं सो पुव्वभवं जहाय अभिमुहनामगोओ दुमेसु उववज्जिउकामो, एस दव्वदुमो। भावदुमो दुविहो-आगमओ णोआगमओ य, आगमओ जो दुमाहिगारजाणओ जहा एतेहिं कम्मेहिं कएहिं उप्पज्जिस्सइ एस उवउत्तो, नोआगमओ दुमणामगोत्ताणि कम्माणि वेदिंतो भावदुमो भवति। सीसो आह-अहो ताव असमंजसं भण्णइ, कहं खु जो जस्स जीवस्स उवओगो सो सो चेव भविस्सइ ?, नो खलु लोए अग्गिमि उवउत्तो देवदत्तो अग्गि चेव भवइ, आयरिओ भणइ-अहो वच्छ ! अइमुद्धोऽसि, णणु णाणंति वा संवेदणंति वा अधिगमोत्ति वा चेतणंति वा भावत्ति वा एते सद्दा एगट्ठा, जीवलक्खणं चेव णाणं, ण तु णाणातो वतिरित्तो जीवो, तेण जो० स णाया, सो जं अग्गिस्स सामत्थं दहणपयणपगासणाइं जाणइ, तओ अग्गिणाणायो सो णाया अव्वइरित्तो, तेण सो अग्गिसामत्थजाणओ भावग्गि चेव लब्भइ, तम्हा जो जस्स जीवस्स उवओगो सो चेव भण्णइ। इदाणिं दुमस्स एगट्ठियाणि-जहा सक्कसहस्सक्खवज्जपाणिपुरंदरादीणि इंदस्स एगट्ठियाणि एवं दुमस्सवि इमाइं एगट्ठियाइं, ‘दुमा य पादवा चेव रुक्खा गच्छा’ (३५-१७) गाहा। तत्थ दुमा नाम भूमीय आगासे य दोसु माया दुमा, पादेहिं पिबंतीति पादपाः पाएसु वा

पालीज्जंतीति पादपाः, पादा मूलं भण्णंति, रुक्ख पुहवी खरत्ति आगासं तेसु दोसुवि जहा ठिया तेण रुक्खा, अहवा रुः पुढवीं तं खायंतीति रुक्खो, विडिमाणि जेण अत्थि तेण विडिमा, ण गच्छंतीति अगमा, णदीतलागादीणि तेहिं तरिज्जंति तेण तरवो, कुत्ति पिथिवी तीए धारिज्जंति तेणं कुहा, महीए जेण रुहंति तेण महीरुहा, पुत्तणेहेण वा परिगिज्झंति तेण वच्छा, रुप्पंति जम्हा तेण रोवगा, रुक्ख पृथिवी तीय जी(जा)यंतित्ति रुजगा, **दुमेत्ति दारं समत्तं। इदाणिं पुप्फत्ति दारं**, तंपि चउव्विहं, जहा दुमो वक्खाणिओ तहा वक्खाणेऊण चउव्विहंपि दव्वपुप्फाण अहिगारो, तस्स एगट्ठियाणि णामाणि 'पुप्फं फुल्लं कुसुमं' एवमादीणि, पुप्फियमिति किं तारकादौ पठ्यते ?, पुष्पशब्द एतत्प्रातिपदिकं तस्य नपुंसकविवक्षायां प्रातिपदिकार्थलिंगपरिणामवचनमात्रे प्रथमास्तस्य एकवचनस्य अतो नित्यमम्भावः अतो गुणः पररूपत्वं पुष्पं, अवयवलक्षणषष्ठीसमासः, सुपो धातुप्रातिपदिकयोरिति सुपलुक्। इदाणिं वाक्यं द्रुमपुष्पं द्रुमपुष्पिका, का रूपसिद्धिः ?, द्रुमपुष्पशब्दस्य 'प्राग्विवात्क' (पा. ५-३-७) इति वर्त्तमाने 'अज्ञाते' (७३) 'कुत्सिते' (७४) 'संज्ञायां' (७५) कन्प्रत्ययः, नकारलोपः, द्रुमपुष्पप्रातिपदिकं, स्त्रीविवक्षायां 'अजाद्यतष्टा' (पा ४। १-४) पिति टाप्प्रत्ययो भवति, पकारटकारलोपे कृते 'प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपे (पा. ७-३-४४) ति इत्वं, अकः सवर्णदीर्घत्वं परगमने कृते द्रुमपुष्पिकारूपं सिद्धं । इदाणिं द्रुमपुष्पिकाध्ययनं, का रूपसिद्धिः ?, द्रुमपुष्पिका चासौ अध्ययनं च समानाधिकरणः, षष्ठीतत्पुरुषः, द्रुमपुष्पिकाध्ययनरूपं सिद्धं, अथवा द्रुमपुष्पेन यत्र उपमानं क्रियते तदिदं वा द्रुमपुष्पिकाध्ययनमिति । तस्स य अज्झयणस्स इमे अत्थाधिगारा एगट्ठिया, एत्थ गाहा 'दुमपुप्फिया य आहारएसणा (३७-१८) दुमपुप्फियत्ति वा आहारएसणत्ति वा गोयरेति वा ततेति वा उञ्छेत्ति वा मेससरिसेत्ति वा जलोगसरिसेइवा सप्पस-

***अत्र प्रथम अध्ययनस्य परिचय-निर्युक्ति: आरब्धा:

*** अत्र 'द्रुमपुष्पिका' शब्दस्य सिद्धि: निर्दिश्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ १२ ॥

रिसेत्ति वा वणत्ति वा अक्खेत्ति वा उसुत्ति वा गोलेत्ति वा पुत्तेत्ति वा उदएत्तिवा एतेहिं उवम्मं कीरइत्तिकाउं ताणि भण्णंति नामाणि तस्स अज्झयणस्स, **दुमपुप्फियत्ति** जहा भमरो दुमपुप्फेहिंतो अकयमकारियं पुप्फं अकिलामेन्तो आहारेति, एवं अकयमकारियं निरुवधं गिहत्थाणं अपीलयं आहारं गेण्हइ । **आहारएसणत्ति** एगग्गहणे तज्जातीयग्गहणं उग्गमादिसुद्धं अरत्तदुट्ठेण आहारेयव्वं, **गोयरेत्ति** जहा सो वच्छओ तंमि सेट्ठिकुले ताए बहुगाए सव्वालंकारविभूसियाए उ चारिं दिज्जमाणं पलोएइ, सद्दादीसु न रत्ते दुट्ठो वा, एवं भिक्षुणा हिंडंतेणं सद्दादीसु इट्ठाणिट्ठविसएसु न रज्जियव्वं न य दुस्सियव्वंति। **तदेत्ति** जहा चत्तारि घुणा पण्णत्ता, तंजहा-तयक्खाए छल्लिक्खाए कट्ठक्खाए सारक्खाए, तयक्खाए नामेगे णो सारक्खायी १ सारक्खाइ णामेगे णो तयाखायी २ एगे तयखायीवि सारक्खायीवि ३ एगे णो तयक्खायी णो सारक्खायी ४, तयक्खायीसमाणस्स णं भिक्खुस्स सारक्खायी समाणे तवे भवइ, एवं जहा ठाणे तहेव । **उंछेत्ति** दारं, तं चउव्विहं, णागठवणाउ तहेव, दव्वुंछं जहा केइ तावसादी उंछंति, भावे अण्णायपिंडो । **मेसुत्तिदारं**, जहा मेसो अणायुगाणिंतो पिबेति एवं साहुणावि भिक्षापविट्ठेण बीयकमणादि ण तहा हल्लफलयं कायव्वं जहा भिक्खाए दाया मूढो भवइ, सो वा तेण वारेयव्वो जेण परिहरइ। जलूगा, एत्थ चेव समोयारेयव्वो, भणियं च न दशंस्तीक्ष्णनिपातैर्बन्धमायाति चात्मनः । जलूकापि तदेवार्थं, माद्देवेनोपसर्प्पति ॥ १ ॥ **एवमणेसणाए**, ण जहा मसओ दुक्खं उप्पाइत्ता रुधिरं पिबति, एवं णिवारेइ जहा तस्स दायगस्स मणो दुहं न भवति, जलोगा व निवारणीयं पसण्णमणसेणं। **सप्पोत्ति** जहा सप्पो सरत्ति बिले पविसति तहा साहुणावि अणासादंतेण हणुयं असंसरंतेणं आहारेयव्वं, अहवा जहा सप्पो एगदिट्ठी तहा णिग्गंथे पवयणे एगदिट्ठिणा होयव्वं । **वणेत्ति** जहा वणस्स मा फुट्टिहिति तो से मक्खणं दिज्जइ, एवं इमस्सवि

अध्ययनैकार्थाः शब्दाः

॥ १२ ॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ १३ ॥

जीवस्स मा भितिक्खयं करेहिइ तो से दिज्जइ आहारो, ण वण्णाइहेउ। अक्खोत्ति जहा सगडस्स जत्तासाहणट्ठा अब्भंगो दिज्जइ, एवं संजमभरवहणत्थं आहारेयव्वं। उसुत्ति जहा रहिओ लक्खं विंधिउकामो तदुवउत्तो विंधइ, वक्खित्तचित्तो फिट्टइ, एवं साहूवि उवउत्तो भिक्खं हिंडंतो संजमलक्खं विंधइ, वक्खित्पंतो सद्दाइएसु फिट्टइ। पुत्तिति पुत्तमंसोवमो आहारो भोत्तव्वो। गोलित्ति जहा जतुंमि गोलए कज्जमाणे जइ अग्गिणा अतिल्लियाविज्जइ ता अतिदवत्तणेण न सक्कइ काउं, अह व नेवऽल्लिया विज्जइ नो चेव निग्घरति, णातिदूरे णातिआसण्णे अकए सक्कइ बंधिउं, एवं भिक्खापविट्ठो साहू जइ अइभूमीए विसइ तो तेसिं अगारहत्थाणं अप्पत्तियं भवइ तेणयसंकणादिदोसा, अह दूरे तो न दीसइ एसणाघाओ य भवइ, तम्हा कुलस्स भूमी जाणित्ता णाइदूरे णासण्णे ठाइ-यव्वं। उदएत्ति जहा वाणियएण छ रयणाणि खुंडियाणि दिसाए गंतुं, सो य ताणि ण सक्कइ नित्थारेउं चोरभया, ताहे सो ठवेऊणं ताणि एगंमि पएसे अण्णे जरपाहाणे घेत्तुं पडिओ गहिल्लवेसेण, रयणवाणियउ गच्छतित्ति भाविए तिन्नि वारे जा कोइ न उट्ठेइ ताहे घेत्तुं पयाओ, अडवीए तिसाय गहिओ जाव कुहियपाणिययं खिल्लरं विणट्ठं पासइ, तत्थ बहवे हरिणादओ मया, तेणं सव्वं उदगं वसा जाता, तं तेण अणुस्सासियाए अणस्सादंतेणं पीतं, णित्थारियाणि अणेण रयणाणि, एत्थं तु रयणत्थाणियाणि णाणदंसणचरित्ताणि, चोरत्थाणिया विसया, कुहिओदगत्थाणियाणि फासुगेसणिज्जाणि अंतपंताणि आहारेयव्वाणि, आहारिंतेणं साहारेंतपुप्फफलेण जहा वाणियगो इह भवे सुहीजातो एवं साधूवि सुही भविस्सइ अडवित्थाणीयं संसारं नित्थरित्ता॥ गयं चेयं नामं दुमपुप्फियत्ति, गतो नामनिप्फण्णो। इदाणिं सुत्तालावगणिप्फण्णो, सो पत्तलक्खणोऽवि ण निक्खिप्पति, कम्हा?, जम्हा अत्थि इतो तइयं अणुयोगदारं अणुगमोत्ति, तम्हा तहिं चेव णिक्खिविस्सामि, तहिं निक्खिप्पमाणे लहुगं भवइ, सीसस्स

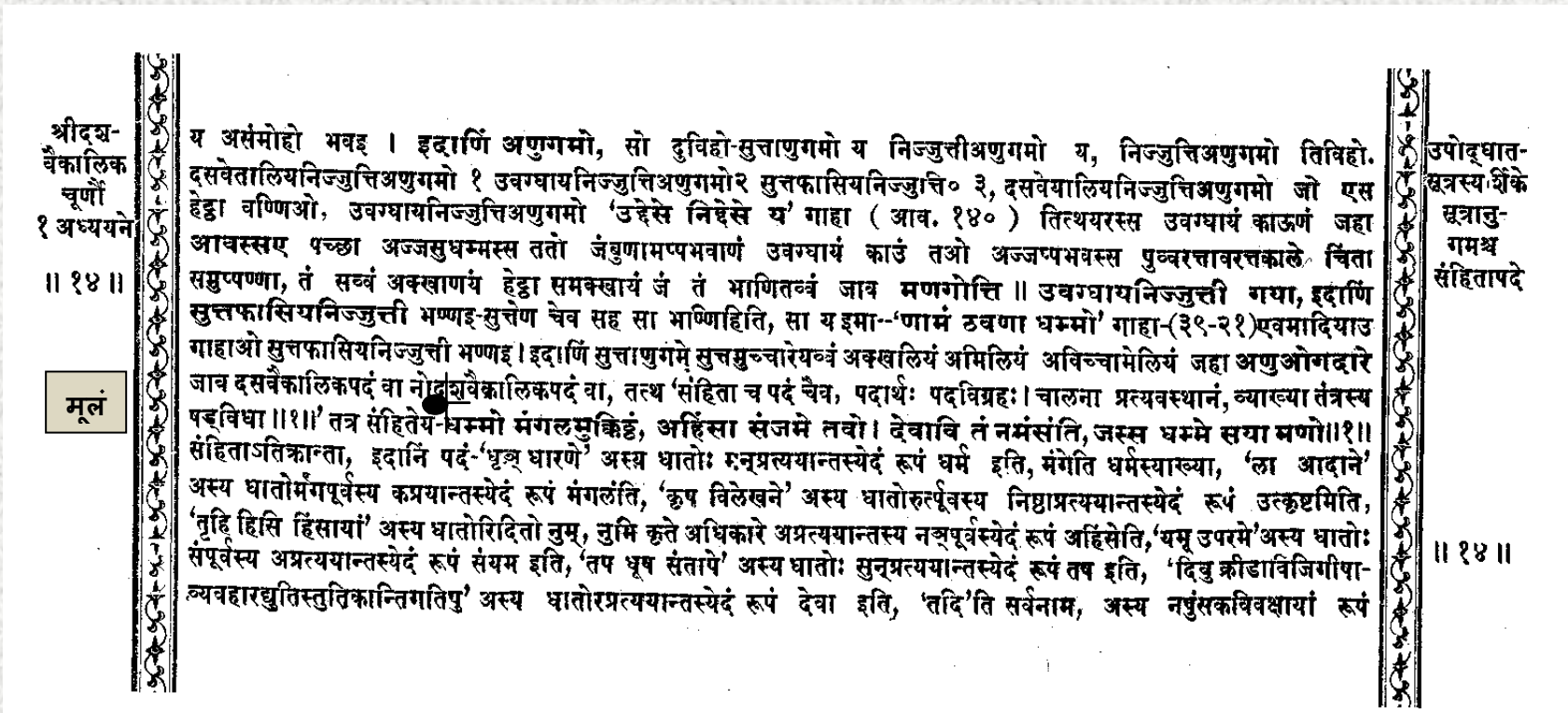
अध्ययनैकार्थाः

॥ १३ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ १४ ॥

मूलं

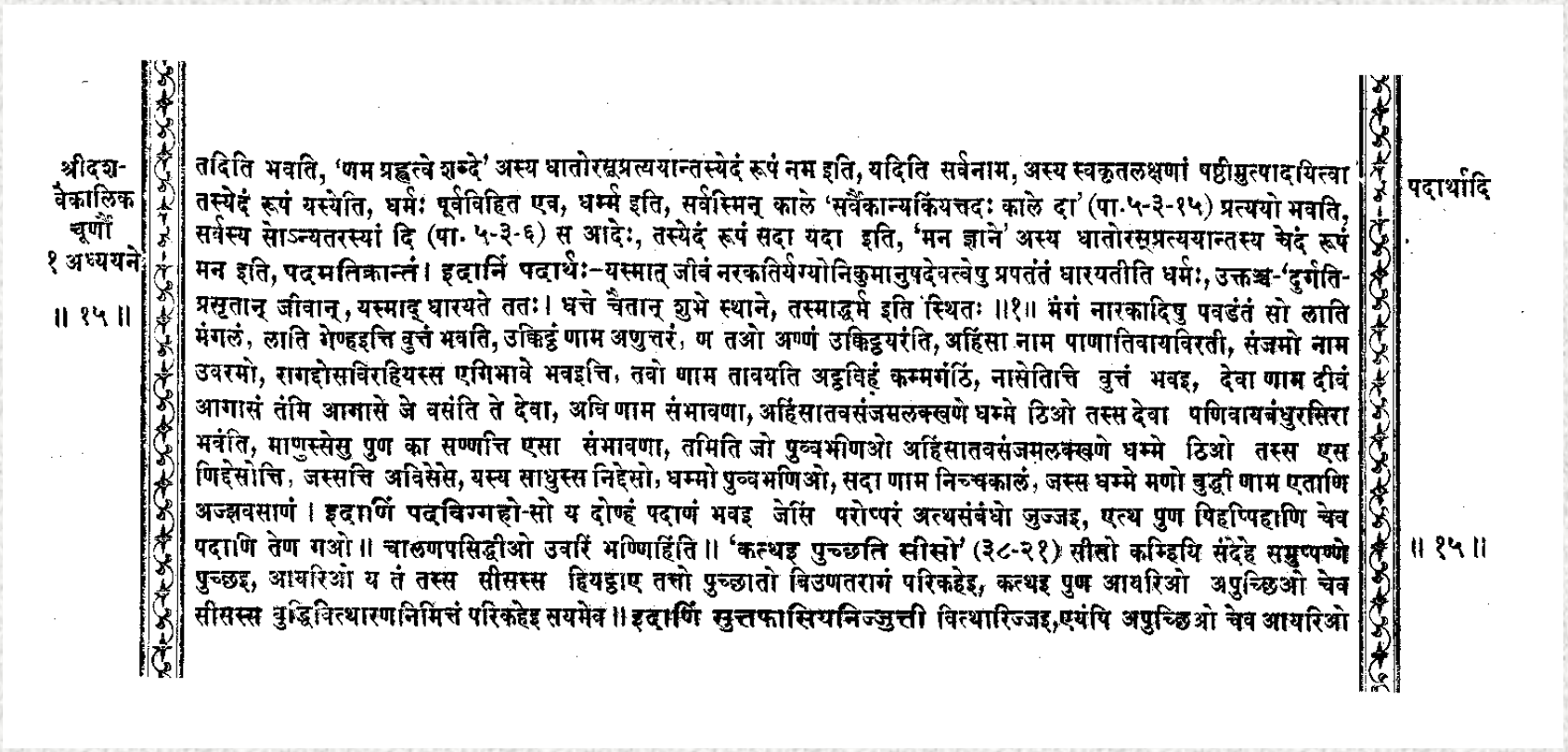
य असंमोहो भवइ । इदाणिं अणुगमो, सो दुविहो-सुत्ताणुगमो य निज्जुत्तीअणुगमो य, निज्जुत्तिअणुगमो तिविहो. दसवेतालियनिज्जुत्तिअणुगमो १ उवग्घायनिज्जुत्तिअणुगमो२ सुत्तफासियनिज्जुत्ति० ३, दसवेयालियनिज्जुत्तिअणुगमो जो एस हेट्ठा वण्णिओ, उवग्घायनिज्जुत्तिअणुगमो 'उद्देसे निद्देसे य' गाहा (आव. १४०) तित्थयरस्स उवग्घायं काऊणं जहा आवस्सए पच्छा अज्जसुधम्मस्स ततो जंबुणामप्पभवाणं उवग्घायं काउं तओ अज्जप्पभवस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले चिंता समुप्पण्णा, तं सव्वं अक्खाणयं हेट्ठा समक्खायं जं तं भाणितव्वं जाव मणगोत्ति ॥ उवग्घायनिज्जुत्ती गया, इदाणिं सुत्तफासियनिज्जुत्ती भण्णइ-सुत्तेण चेव सह सा भण्णिहिति, सा य इमा--'णामं ठवणा धम्मो' गाहा-(३९-२१)एवमादियाउ गाहाओ सुत्तफासियनिज्जुत्ती भण्णइ। इदाणिं सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं अक्खलियं अमिलियं अविच्चामेलियं जहा अणुओगदारे जाव दसवेकालिकपदं वा नो|सुवैकालिकपदं वा, तत्थ 'संहिता च पदं चैव, पदार्थः पदविग्रहः। चालना प्रत्यवस्थानं, व्याख्या तंत्रस्य षड्विधा ॥१॥' तत्र संहितेय-धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमे तवो। देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो॥१॥ संहिताऽतिक्रान्ता, इदानिं पदं-'धृञ् धारणे' अस्य धातोः मनुप्रत्ययान्तस्येदं रूपं धर्म इति, मंगेति धर्मस्याख्या, 'ला आदाने' अस्य धातोर्मंगपूर्वस्य कप्रयान्तस्येदं रूपं मंगलंति, 'कृप विलेखने' अस्य धातोरुत्पूर्वस्य निष्ठाप्रत्ययान्तस्येदं रूपं उत्कृष्टमिति, 'तृहि हिंसि हिंसायां' अस्य धातोरिदितो नुम्, नुमि कृते अधिकारे अप्रत्ययान्तस्य नञ्पूर्वस्येदं रूपं अहिंसेति,'यमू उपरमे'अस्य धातोः संपूर्वस्य अप्रत्ययान्तस्येदं रूपं संयम इति, 'तप धृष संतापे' अस्य धातोः सुनप्रत्ययान्तस्येदं रूपं तव इति, 'दिवु क्रीडाविजिगीषा-व्यवहारद्युतिस्तुतिकान्तिगतिषु' अस्य धातोरप्रत्ययान्तस्येदं रूपं देवा इति, 'तदि'ति सर्वनाम, अस्य नपुंसकविवक्षायां रूपं

उपोद्घात-सूत्रस्य शैके सूत्रानु-गमश्च संहितापदे

॥ १४ ॥

*** अथ सूत्रं आरभ्यते

*** 'धर्म' आदि पदस्य अर्थ: निर्दिश्यते



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ १५ ॥

तदिति भवति, 'णम प्रह्वत्वे शब्दे' अस्य धातोरसुप्रत्ययान्तस्येदं रूपं नम इति, यदिति सर्वनाम, अस्य स्वकृतलक्षणां षष्ठीमुत्पादयित्वा तस्येदं रूपं यस्येति, धर्मः पूर्वविहित एव, धर्म्म इति, सर्वस्मिन् काले 'सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा' (पा.५-३-१५) प्रत्ययो भवति, सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि (पा. ५-३-६) स आदेः, तस्येदं रूपं सदा यदा इति, 'मन ज्ञाने' अस्य धातोरसुप्रत्ययान्तस्य चेदं रूपं मन इति, पदमतिक्रान्तं। इदानिं पदार्थः–यस्मात् जीवं नरकतिर्यग्योनिकुमानुषदेवत्वेषु प्रपतंतं धारयतीति धर्मः, उक्तञ्च-'दुर्गति-प्रसृतान् जीवान्, यस्माद् धारयते ततः। धत्ते चैतान् शुभे स्थाने, तस्माद्धर्म इति स्थितः ॥१॥ मंगं नारकादिषु पवडंतं सो लाति मंगलं, लाति गेण्हइत्ति वुत्तं भवति, उक्किट्ठं णाम अणुत्तरं, ण तओ अण्णं उक्किट्ठयरंति, अहिंसा नाम पाणातिवायविरती, संजमो नाम उवरमो, रागदोसविरहियस्स एगिभावे भवइत्ति, तवो णाम तावयति अट्ठविहं कम्मगंठिं, नासेतित्ति वुत्तं भवइ, देवा णाम दीवं आगासं तंमि आगासे जे वसंति ते देवा, अवि णाम संभावणा, अहिंसातवसंजमलक्खणे धम्मे ठिओ तस्स देवा पणिवायबंधुरसिरा भवंति, माणुस्सेसु पुण का सण्णत्ति एसा संभावणा, तमिति जो पुव्वभणिओ अहिंसातवसंजमलक्खणे धम्मे ठिओ तस्स एस णिद्देसोत्ति, जस्सत्ति अविसेसे, यस्य साधुस्स निद्देसो, धम्मो पुव्वभणिओ, सदा णाम निच्चकालं, जस्स धम्मे मणो बुद्धी णाम एताणि अज्झवसाणं। इदाणिं पदविग्गहो-सो य दोण्हं पदाणं भवइ जेसिं परोप्परं अत्थसंबंधो जुज्जइ, एत्थ पुण पिहप्पिहाणि चेव पदाणि तेण गओ॥ चालणपसिद्धीओ उवरिं भणिहिंति॥ 'कत्थइ पुच्छति सीसो' (३८-२१) सीसो कम्हियि संदेहे समुप्पण्णे पुच्छइ, आयरिओ य तं तस्स सीसस्स हियट्ठाए तओ पुच्छातो विउणतरागं परिकहेइ, कत्थइ पुण आयरिओ अपुच्छिओ चेव सीसस्स बुद्धिवित्थारणनिमित्तं परिकहेइ सयमेव॥ इदाणिं सुत्तफासियनिज्जुत्ती वित्थारिज्जइ,एयंपि अपुच्छिओ चेव आयरिओ

पदार्थादि

॥ १५ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ १६ ॥

सीसस्स अणुकंपणत्थं वित्थारेणं परिकहेइ, तत्थ पढमं धम्मपरूवणत्थं भण्णइ-'नामं ठवणाधम्मो दव्वधम्मो य भावधम्मो य' गाथा, (३९-२१) णामठवणाओ तहेव, इदाणिं दव्वधम्मो, तस्स इमा गाथा 'दव्वं च अत्थिकायो' गाथा (४०-२१) दव्वधम्मो तिविहो भवइ, तंजहा—दव्वधम्मो य अत्थिकायधम्मो य पयारधम्मो य, तत्थ दव्वधम्मो ताव दव्वपज्जवा, एते धम्मा तस्स जीवदव्वस्स अजीवदव्वस्स, उप्पायठिईभंगा पज्जाया भवंति, तत्थ जीवदव्वस्स ताव इमे उप्पायठितिभंगा, जह मणुस्सभावेण उप्पण्णस्स मणुस्सस्स मणूसत्ते उप्पायो भवंति, जाओ पुण गतितो उव्वट्टिऊण आगओ ताए गतीए विगमो, जीवत्तणे पुण अवट्ठिओ चेव, एवं एयंमि भवग्गहणे। इदाणिं अजीवस्स उप्पायठिईभंगा भण्णंति, जहा परमाणुस्स परमाणुभावेण विगयस्स परमाणुत्तणे विगमे दुप्पदेसियत्तेण उप्पाओ अजीवदव्वत्तणेण अवट्ठिओ चेव, तहा सुवण्णदव्वस्स अंगुलेज्जगत्तणेण विगमो कुंडलत्तणेण उप्पाओ सुवण्णदव्वत्ते अवट्ठियं चेव, जहा कालगवण्णविगमे कालत्तेण विगमो नीलत्तेण उप्पाओ वण्णत्तेण अवट्ठिओ चेव। इदाणिं अरूविदव्वाणं परपच्चया उप्पायठितिभंगा भण्णंति, जहा घडागासेणं संजुत्तस्स आगासस्स घडागासंयोगेण उप्पायो पडागासत्तेण विगमो आगासत्तेण अवट्ठिई। इदाणिं अत्थिकायधम्मोत्तिदारं 'धम्मत्थिकाय' गाहा (४०-२२) अत्थि वेज्जति काया य अत्थिकाया, ते इमे पंच, तेसिं पंचण्हवि धम्मो णाम सब्भावो लक्खणंति एगट्ठा, तत्थ पढमे धम्मत्थिकाए सो गइलक्खणो, बितिओ अधम्मत्थिकाओ सो ठितिलक्खणो, ततिओ आगासत्थिकायो सो अवगाहलक्खणो, चउत्थो पोग्गलत्थिकायो सो गहणलक्खणो, पंचमो जीवत्थिकाओ सो उवओगलक्खणोत्ति नायव्वो। इदाणिं पयारधम्मोत्तिदारं, पयारधम्मा णाम सोयाईण इंदियाण जो जस्स विसयो सो पयारधम्मो भवइ, तं सोइंदियस्स सोयव्वं

धर्म-निक्षेपाः

॥ १६ ॥

	*** अथ 'धर्म'स्य निक्षेप-कथनं

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [१]

चक्खुइंदियस्स दट्ठव्वं घाणिंदियस्स अग्घाइयव्वं, एवं सव्वत्थ। इदाणिं भावधम्मोत्ति दारं—'लोइय कुप्पायण' गाहद्धं, (४१-२२) सो य तिविहो-लोइओ लोउत्तरिओ कुप्पावयणीओ य, लोइओ अणेगविहो पण्णत्तो, तंजहा—**गम्मपसुदेसरज्जे पुरवर-गामगणगोट्ठिराईणंति** (४२-२२) तत्थ गंमधम्मो णाम जहा दक्खिणापहे माउलदुहिया गंमा उत्तरापहे अगम्मा, एवं भक्खा-भक्खं पेयापेयं भासियव्वं, पसुधम्मो णाम गातभगिणीदुहियादीणं गमणं, देसधम्मो णाम दक्खिणापहे अण्णं णेवत्थं अण्णं उत्तरापहे एवमादि, रज्जेवि अण्णं लाडरज्जे करज्जवत्ती अण्णो उत्तरापहे एवमादि, पुरत्ति नगरं तत्थवि अण्णो अण्णो गामवासीणं, गामे एगागिणीवि इत्थिगा गिहंतरं गच्छइ, नगरे सवितिज्जगा एवमादि, गणधम्मो जहा मल्ला पिबंति समवाएणं एवमादि, गोट्ठिधम्मो गामसमव्वयाण गोट्ठि भवइ, तेसिं उस्सवादिएसु कारणेसु इट्ठभोयणासणाइसु गोट्ठिओ भवंति, रायधम्मो णाम अत्तणेवि अवराहं ण खमिज्जइ, सपजाए सुदंडो घेप्पति, एवमादि। इदाणिं कुप्पावयणिओ; कुत्थियं पवयणं कुप्पवयणं तं सक्ककणादकपिलइस्सरवेद-वादी, एवमादि कुप्पावयणियं भवति, सीसो आह-केण कारणेण एताणि कुप्पावयणाणि भवंति?, **'सावज्जो उ कुतित्थियधम्मो ण जिणेहि उ पसत्थो'** वज्जो णाम गरहिओ, सह वज्जेण सावज्जो भवइ, सावज्जत्तणेण कुप्पावयणियो भवइ, अतो य न पसंसिज्जति जिणेहिं, के य ते जिणा?, इमे चउव्विहा, तं०-णामजिणा ठवणजिणा दव्वजिणा भावजिणा य, नामठवणाओ तहेव, दव्वजिणा जे छउमत्था वाहिं वा वेरियं वा जे जिणन्ति ते दव्वजिणा, भावजिणा जे केवलणाणिणो, तेहिं सो कुप्पावयणीओ सारंभत्तणेण न पसंसितो। **इदाणिं लोउत्तरो** भावधम्मो, सो दुविधो-सुयधम्मो चरित्तधम्मो य, तत्थ सुयधम्मो दुवालसंगं गणिपिडगं, तस्स धम्मो जे जाणि-यव्वा भावा अहवा असंजमाउ नियत्ती संजमंमि य पवित्ती॥ **इदाणिं चरित्तधम्मो**, सो इमो समणधम्मो दसप्पगारोवि-खमा मद्दवं

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ १८ ॥

अज्जवं सोयं सच्चं संजमो तवो चाओ अकिंचणियत्तणं बंभचेरमिति, तत्थ खमा आकुट्ठस्स वा तालियस्सं वा अहियासेंतस्स कम्मक्खओ भवइ, अणहियासेंतस्स कंमबंधो भवइ, तम्हा कोहस्स निग्गहो कायव्वो, उदयपत्तस्स वा विफलीकरणं, एस खमत्ति वा तितिक्खत्ति वा कोधनिग्गहेत्ति वा एगट्ठा १। मद्दवं नाम जाइकुलादीहीणस्स अपरिभवणसीलत्तणं, जहाऽहं उत्तमजातीओ एस नीयजातीत्ति मदो न कायव्वो, एवं च करेमाणस्स कम्मनिज्जरा भवइ, अकरेंतस्स य कम्मोवचयो भवइ, माणस्स उदिण्णस्स निरोहो उदयपत्तस्स विफलीकरणमिति२। अज्जवं नाम उज्जुगत्तणंति वा अकुडिलत्तणंति वा, एवं च कुव्वमाणस्स कम्मनिज्जरा भवइ,अकुव्वमाणस्स य कम्मोवचयो भवइ, मायाए उदिंतीए णिरोहो कायव्वो उदिण्णाए विफलीकरणंति ३। सोयं नाम अलुद्धया धम्मोवगरणेसुवि, एवं च कुव्वमाणस्स कम्मनिज्जरा भवति, अकुव्वमाणस्स कम्मोवचओ, तम्हा लोभस्स उदेंतस्स णिरोहो कायव्वो उदयपत्तस्स वा विफलीकरणमिति ४। सच्चं नाम सम्मं चिंतेऊण असावज्जं तहा भासियव्वं सच्चं च, एवं च करेमाणस्स निज्जरा भवइ, अकरेमाणस्स कम्मोवचयो भवइ ५। संजमो तवो य एते पच्छा भण्णंति, किं कारणं?, जेण उवरि 'अहिंसा संजमो तवो।' एत्थवि सुत्तालावगे संजमो तवो य भणियव्वगा चेव, तेण लाघवत्थं इहं ण भणिया ६-७। इदाणिं चागो णाम वेयावच्चकरणेण आयरियोवज्झायादीण महंती कम्मनिज्जरा भवइ तम्हा वत्थपत्तओसहादीहिं साहूण संविभागकरणं कायव्वंति ८। अकिंचणिया नाम सदेहे निस्संगता, निम्ममत्तणंति वुत्तं भवइ, एवं च करेमाणस्स कम्मनिज्जरा भवइ, अकरेमाणस्स य कम्मोवचओ भवइ, तम्हा अकिंचणीयं साहुणा सव्वपयत्तेण अहिट्ठेयव्वं ९। इदाणिं बंभचेरं, तं अट्ठारसपगारं, तंजहा-ओरालियकामभोगा मणसा ण सेवइ ण सेवावेइ सेवंतं णाणुजाणइ. एवं वायाएवि न सेवइ न सेवावेइ सेवंतं नाणुजाणइ, एवं काएणावि न सेवेइ न सेवावेइ सेवंतं नाणुजाणइ, एवं नवविधं गयं, एवं दिव्वावि

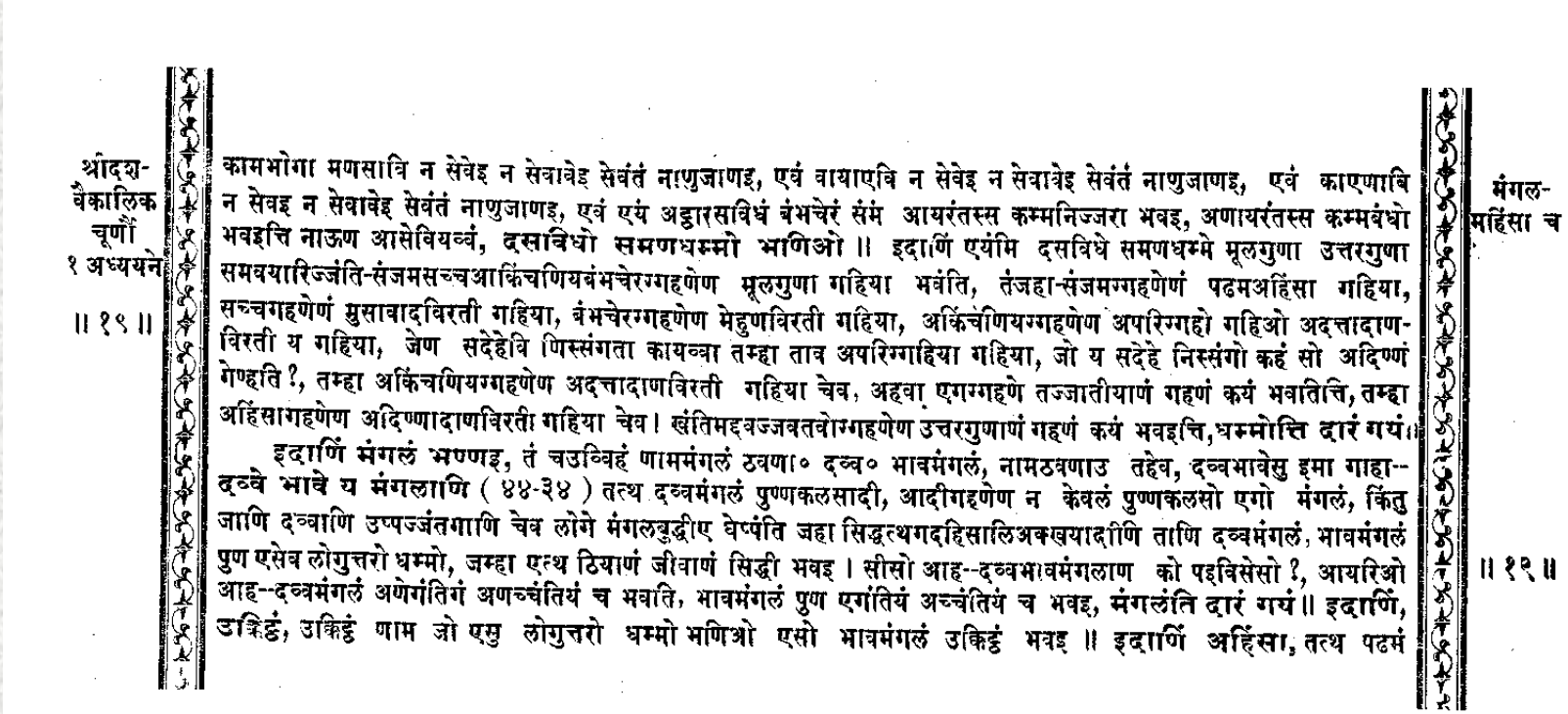
लोकोत्तर-धर्मः दशधा श्रमणधर्मः

॥ १८ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ १९ ॥

कामभोगा मणसावि न सेवेइ न सेवावेइ सेवंतं नाणुजाणइ, एवं वायाएवि न सेवेइ न सेवावेइ सेवंतं नाणुजाणइ, एवं काएणावि न सेवइ न सेवावेइ सेवंतं नाणुजाणइ, एवं एयं अट्ठारसविधं बंभचेरं संमं आयरंतस्स कम्मनिज्जरा भवइ, अणायरंतस्स कम्मबंधो भवइत्ति नाऊण आसेवियव्वं, दसविधो समणधम्मो भणिओ ॥ इदाणिं एयंमि दसविधे समणधम्मे मूलगुणा उत्तरगुणा समवयारिज्जंति-संजमसच्चआकिंचणियबंभचेरग्गहणेण मूलगुणा गहिया भवंति, तंजहा-संजमग्गहणेणं पढमअहिंसा गहिया, सच्चगहणेणं मुसावादविरती गहिया, बंभचेरग्गहणेण मेहुणविरती गहिया, अकिंचणियग्गहणेण अपरिग्गहो गहिओ अदत्तादाण-विरती य गहिया, जेण सदेहेवि णिस्संगता कायव्वा तम्हा ताव अपरिग्गहिया गहिया, जो य सदेहे निस्संगो कहं सो अदिण्णं गेण्हति ?, तम्हा अकिंचणियग्गहणेण अदत्तादाणविरती गहिया चेव, अहवा एगग्गहणे तज्जातीयाणं गहणं कयं भवतीत्ति, तम्हा अहिंसागहणेण अदिण्णादाणविरती गहिया चेव। खंतिमद्दवज्जवतवोग्गहणेण उत्तरगुणाणं गहणं कयं भवइत्ति, धम्मोत्ति दारं गयं॥

इदाणिं मंगलं भण्णइ, तं चउव्विहं णाममंगलं ठवणा० दव्व० भावमंगलं, नामठवणाउ तहेव, दव्वभावेसु इमा गाहा--दव्वे भावे य मंगलाणि (४४-३४) तत्थ दव्वमंगलं पुण्णकलसादी, आदीगहणेण न केवलं पुण्णकलसो एगो मंगलं, किंतु जाणि दव्वाणि उप्पज्जंतगाणि चेव लोगे मंगलबुद्धीए घेप्पंति जहा सिद्धत्थगदहिसालिअक्खयादीणि ताणि दव्वमंगलं, भावमंगलं पुण एसेव लोगुत्तरो धम्मो, जम्हा एत्थ ठियाणं जीवाणं सिद्धी भवइ । सीसो आह--दव्वभावमंगलाण को पइविसेसो ?, आयरिओ आह--दव्वमंगलं अणेगंतिगं अणच्चंतियं च भवति, भावमंगलं पुण एगंतियं अच्चंतियं च भवइ, मंगलंति दारं गयं॥ इदाणिं, उक्किट्ठं, उक्किट्ठं णाम जो एसु लोगुत्तरो धम्मो भणिओ एसो भावमंगलं उक्किट्ठं भवइ ॥ इदाणिं अहिंसा, तत्थ पढमं

मंगल-महिंसा च

॥ १९ ॥

*** अथ 'मंगल'स्य नाम-आदि निक्षेप-कथनं

हिंसा वण्णेयव्वा, हिंसाए परूवियाए अहिंसा परूविया चेव, सा य मणवयणकाएहिं जोएहिं दुप्पउत्तेहिं जं पाणववरोवणं कज्जइ सा हिंसा, तत्थ भंगा चत्तारि--दव्वतोवि एगा हिंसा भावओवि, एगा हिंसा दव्वओ न भावओ, एगा भावओ न दव्वओ, अण्णा ण दव्वओ न भावओ, सा अ हिंसा चेव ण भण्णइ, तत्थ दव्वओवि भावओवि जहा केइ पुरिसे मियवधाते परिणामपरिणए मियवधाय उसुं निसिरेज्जा, से य मिए तेण उसुणावि विद्धे, एसा दव्वओ भावओवि हिंसा, तत्थ जा सा दव्वओ न भावओ सा इमा, उक्तं च-'**उच्चालियंमि पाए**' गाहा, (४-७४९) '**ण य तस्स तण्णिमित्तो**' गाहा (४-७५०), एताओ दोऽवि जहा **ओहनिज्जुत्तीए**, तत्थ जा सा भावओ न दव्वओ जहा केइ पुरिसे असिणा अहिं छिंदिस्सामित्तिकट्टु रज्जुं छिंदिज्जा एसा भावओ, एसा हिंसा विकोवणत्थं वण्णिया, इह पुण अहिंसाए पयोयणं, सा य अहिंसाइ वा अज्जीवाइवातोत्ति वा पाणातिपातविरइत्ति वा एगट्ठा ॥ सिस्सो आह--णणु जा चेव अहिंसा सो चेव संजमोऽवि, आयरिओ आह--अहिंसागहणे पंच महव्वयाणि गहियाणि भवंति, संजमो पुण तीसे चेव अहिंसाए उवग्गहे वट्टइ, संपुण्णाय अहिंसाय संजमोवि तस्स भवइ, **अहिंसा गता** ॥ इदाणिं **संजमो**, सो य सत्तरसविहो, तंजहा--पुढविकायसंजमो आउकायसंजमो तेउकायसंजमो वाउकायसंजमो वणस्सइकायसंजमो बेइंदियसंजमो तेइंदियसंजमो चउरिंदियसंजमो पंचिंदियसंजमो पेहासंजमो उपेहासंजमो अवहट्टुसंजमो पमज्जियसंजमो मणसंजमो वयसंजमो कायसंजमो उवकरणसंजमो, तत्थ पुढविकायसंजमो णाम पुढविकायं मणवयणकाएहिं जोगेहिं न हिंसइ न हिंसावेइ हिंसंतं णाणुजाणइ, एवं आउकायसंजमोवि, जाव पंचिंदियसंजमो, पेहासंजमो णाम ठाणं निसीयणं तुयट्टणं वा जत्थ काउकामो तं पुव्वं पडिलेहिय पमज्जिय करेमाणस्स संजमो भवइ, वितहकरणे असंजमो, उवेहासंजमो

॥ २० ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ २१ ॥

णाम संजमतवसमग्गं संभोगियं तं चोदंतस्स संजमो भवइ, असंभोइयं चोदंतस्स असंजमो भवइ, पावयणं कज्जं काऊण चियत्ता वा से पडिचोयणत्तिकाउं तत्तो अण्णसंभोइयं चोदेंति, गिहियाणं कम्मारंभे पमादपत्ताणं उवेहयंतस्स संजमो भवइ, वावारेंतस्स असंजमो, अवहट्टुसंजमो नाम अइरेगोवकरणं विगिंचंतस्स संजमो भवइ, पाणजातीए य आहारादिसु विगिंचंतस्स संजमो भवइ, असुद्धोवगरणाणि य परिठवेंतस्स संजमो भवइ, पमज्जणासंजमो नाम सागारिए पाए अपमज्जंतस्स संजमो भवइ, अप्पसागारिए पाए पमज्जंतस्स संजमो भवइ, मणसंजमो णाम अकुसलमणनिरोहो कुसलमणउदीरणं वा, वयसंजमो णाम अकुसलवइनिरोहो कुसलवइउदीरणं वा, कायसंजमो णाम आवस्सगाइजोगे मोत्तुं सुसमाहियपाणिपादस्स कुम्मो इव गुत्तिंदियस्स चिट्ठमाणस्स संजमो भवइ, उवकरणसंजमो णाम पोत्थएसु घेप्पंतएसु असंजमो भवइ, महद्धणमुल्लेसु य वत्थेसु, तेसिं विवज्जणे संजमो, कालं पुण पडुच्च चरणकरणट्ठा अव्वोच्छित्तिनिमित्तं च गेण्हमाणस्स पोत्थए संजमो भवइ। इदाणिं तवो, सो दुविहो-बज्झो अब्भंतरो य, तत्थ पढमं बज्झो भवइ पच्छा अब्भंतरो, सीसो आह-केण कारणेण बज्झो अब्भंतरो वा भण्णइ?, आयरिओ आह-जम्हा मिच्छदिट्ठीहिवि यायरिज्जमाणो नज्जइ विवरीयग्गहणेण कुतित्थियादीहिवि कज्जइ तम्हा बज्झो, अब्भंतरो पुण कज्जमाणो ण तहा पागडो भवइ तेण अब्भंतरो भण्णइ, तत्थ जो बज्झो सो छव्विहो, तंजहा-अणसणं ऊणोयरिया भिक्खायरिया रसपरिच्चाओ कायकिलेसो संलीणतत्ति, तत्थ अणसणं नाम जं न असिज्जइ अणसणं, णो आहारिज्जइत्ति वुत्तं भवति, तं च दुविहं-इत्तरियं आवकहियं च, इत्तरियं णाम परिमितकालियं, तं चउत्थाउ आरद्धं जाव छम्मासा, आवकहियं जावजीवमेव, तं तिविधं-पाओवगमणं इंगिणिमरणं भत्तपच्चक्खाणं च, तत्थ पाओवगमणं णाम जो निप्पडिकम्मो पादउव्व जओ पडिओ तओ पडिओ चेव, तं च दुविहं

बाह्येतपसि अनशनं

॥ २१ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

भवइ, तं०-वाघाइमं निव्वाघाइमं च, तत्थ वाघाइमं नाम जो आउगं पहुप्प तमेव बला उवक्कमे सिंघवग्घतरच्छादिसु कारणेसु वावि अभिद्दुओ वा पाओवगमणं करेइ, एयं वाघातिमं, निव्वाघाइमं नाम सुत्तत्थतदुभयाणि गेण्हिऊण अव्वोच्छित्तिनिमित्तं व वाएऊण तओ पच्छा जरापरिणयस्स भवइ, एयं निव्वाघाइमं, इंगिणिमरणं णाम सयमेव उव्वत्तणपरियत्तणादीणि करेति चउव्विहाहारविवज्जियं च परपडियरणविवज्जियं च। इदाणिं भत्तपच्चक्खाणं, तं नियमा सपडिकम्मं, सपडिकम्मं णाम उव्वत्तणपरियत्तणादीणि असहुस्स वा सव्वं कीरइ, अणसणं समत्तं ॥ ऊमोयरिया णाम ओमभावो नाम, ऊणंति वुत्तं भवति, सा य दुविहा-दव्वे भावे य, तत्थ दव्वोमोदरिया उवकरणे भत्ते पाणे य, तत्थ उवकरणे ताव एगवत्थधारित्तं एवमादि, भत्तपाणोमोदरिया नाम अप्पणा मुहप्पमाणेण कवलेणं पंच विकप्पा भवंति, तंजहा-अप्पाहारोमोयरिया अवड्ढोमोयरिया दुभागोमोयरिया पमाणोमोदरिया किंचूणोमोयरिया इति, इयाणिं एतासिं अप्पाहारअवड्ढदुभागप्रमाणकिंचूणोमोयरियाणं पंचण्हवि विभागो भाणितव्वो, तत्थ चउव्वीसं लंबणा पमाणजुत्ताओमोदरिया, एसोमोदरिया चउत्थ भण्णइ, ताओ पमाणजुत्तातो ओमोदरियाउ तिण्हं अप्पाहारअवड्ढदुभागोमोदरियाणं निप्फत्ती भण्णइ, पंचमा नामनिप्फण्णादेव किंचूणोमोदरियत्ति भण्णति, एतेसिं पंचण्हवि उमोदरियाणं निदरिसणं, तत्थ अप्पाहारोमोदरिया नाम जेण अप्पयरं कुच्छीए पुण्णं बहुतरं ऊणं, पमाणोमोयरियाए तिभागो, अवड्ढोमोयरिया णाम पमाणजुत्तोमोदरियाए अवड्ढंति वा अद्धंति वा एगट्ठा, दुभागोमोदरिया णाम पमाणोमोदरियं तिहा छिंदिऊण एगं भागं छड्डेऊण दो भागा गहिया दुभागोमोयरिया भवइ, पमाणोदरिया णाम बत्तीस कवला पुरिसस्स आहारो संपुण्णो, तस्स चउत्थो भागो छड्डिज्जइ, सेसा चउवीसं कवला पमाणजुत्तोमोदरिया भवइ, किंचूणोमोयरिया णाम किंचूणो आहारोत्ति वुत्तं

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ २३ ॥

भवइ, इदाणिं एताओ पंचवि ओमोदरियाओ वित्थारेण भण्णइ, तत्थ अप्पाहारोमोदरिया नाम पमाणोमोदरियाए तिभागो, ते अट्ठ कवला, अट्ठविधा य अप्पाहारोमोयरिया भवइ, तंजहा-अप्पाहारोमोदरियाए अट्ठ कवला, एगूणकवला अप्पाहारोमोदरिया जाता सत्त, विऊण कवल अप्पाहारोमोदरिया जाता छ, तिचउरोपंचूणकवलअप्पाहारोमोदरिया जाता पंच चउरो तिण्णि, छहि ऊणकवल-अप्पाहारोमोदरिया जाता दोण्णि, सत्तूणकवलअप्पाहारोमोदरिया जाता एगो अप्पाहारोमोदरिया, जाता सत्तवि ऊणकवल०,अप्पा-हारोमोयरियाए एककवलाहारोमोदरिया जहण्णा अट्ठकवलोमोयरिया उक्कोसा सेसा अज०। इदाणिं अवड्ढाहारोमोयरिया बारसकवला भण्णति, सा य चउव्विहा, तंजहा-बारसकवल अवड्ढाहारोमोयरिया, एगक० इक्कारस, विहूणकवल अवड्ढाहारोमोयरिया जाया दस, तिहिऊण कवलअवड्ढाहारोमोयरिया जाता नव, अवड्ढाहारोमोयरिया जहण्णिया नव कवला उक्कोसेण बारस, सेसा अजहण्णमणुक्कोसा। इदाणिं दुभागोमोयरिया सोलसकवला, सा चउव्विहा, तंजहा-सोलकवलदुभागोमोयरिया, एगूणकवल दोभागोमोदरिया जाता पण्णरस, दोहिऊण दुभागकवलहारोमोदरिया जाता चोद्दस, तिहिऊण दुभागकवलाहारोमोयरिया तेरस, दुभागकवलाहारोमोदरि-याए जहण्णा तेरस उक्कोसा सोलस, सेसा अजहण्णमणुक्कोसा । इदाणिं पमाणजुत्ताहारोमोदरिया एगू(अट्ठ)णकवलजुत्ताहारोमो-दरिया चउव्वीसं कवला भवंति, सा य अट्ठविहा, तंजहा-चउवीसकवलजुत्ताहारोमोयरिया एगूणकवलजुत्ताहारोमोदरिया जाता तेवीसं एवं दोहिऊण जाया बावीसं, तिहिऊण जाया इक्कवीसं, चउहिं ऊणा जाता वीसं, पंचहिं ऊणा जाता एगूणवीसं, छहि ऊणा जाता अट्ठारस, सत्तहिं ऊणा जाता सत्तरस, पमाणजुत्ताहारोमोयरिया जहण्णेण सत्तरस उक्कोसेणं चउवीसं कवला, सेसा अजहण्णमणु-क्कोसेणं। इदाणिं किंचूणाहारोमोयरिया, सा य एक्कतीसं कवला, सत्तविहा पुण भण्णइ, तंजहा-एक्कतीसं कवला किंचूणाहारोमोय-

बाह्येऽवमौ-दरिका

॥ २३ ॥

रिया, एगूणकवला किंचूणाहारोमोयरिया जाता तीसं, एवं दोहिं ऊणा जाया एकूणतीसं, तिहिं ऊणा जाया अट्ठावीसं, चउहिं ऊणा जाया सत्तावीसं, पंचूणा जाता छव्वीसं, छहिं ऊणा जाया पंचवीसं, किंचूणाहारोमोयरिया सव्वजहण्णा पणवीसं सव्वुक्कोसा एकतीसं, अवसेसा अजहण्णमणुक्कोसा, एवं एसा पुरिसस्स ओमोदरिया । इदाणिं इत्थियाए, सावि एवं चेव, णवरं अट्ठावीसं कवला संपुण्णाहारो, तदणुसारेणं एवं सेसं भाणियव्वं । **दव्वोमोदरिया गता, इदाणिं भावोमोदरिया-कोहादीणं** चउण्हं कसायाणं उदेंताणं निरोहो उदयपत्ताणं विफलीकरणं कायव्वंति, **ओमोदरिया गता** । **इदाणिं भिक्खायरिया**-सा अणेगप्पगारा, तंजहा-दव्वाभिग्गहचरिगा, जहा कोइ साहू अभिग्गहं गिण्हेज्जा-जइ मे भिक्खं हिंडमाणस्स अमुगं दव्वं लब्भइ तो गिण्हिस्सामि, इतरहा न गेण्हामि, एवमादी भिक्खायरियाए अभिग्गहा भाणितव्वा, अहवा इमा चउव्विहा भिक्खायरिया, तं० पेला अद्धपेला गोमुत्तिया संबुक्कावट्टा । **इदाणिं रसपरिच्चागो**, खीरदधिनवणीयादीणं रसविगतीणं विवज्जणं । **कायकिलेसो** नाम वीरासणउक्कुडुगासण-भूमीसेज्जाकट्ठसेज्जालोयमादियाउ भाणियव्वाउ, पश्चात्कर्म पुराकर्म्म, ईर्यापथपरिग्रहौ । दोषा ह्येते परित्यक्ताः, केश-लोचं प्रकुर्वता ॥ १ ॥ कायक्लेशश्च पूर्वोक्तो, वैरुप्यं तु सुसंधितम् । आप्तागमः क्षमा चैव, सूत्रोक्ता कर्मनिर्जरा ॥ २ ॥ लोचः । **इदाणिं संलीणया**, सा चउव्विहा भवइ, तंजहा-इंदियसंलीणया कसायसंलीणया जोगसंलीणया विवित्तचरिया, तत्थ इंदिय-संलीणया पंचविहा भण्णइ, तंजहा-सोइंदियसंलीणया चक्खिंदियसंलीणया घाणिंदियसंलीणया जिब्भिंदियसंलीणया फासिंदिय-संलीणया, तत्थ सोइंदियसंलीणया णाम-सद्देसु य भद्दगपावएसु सोयविसयमुवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण भवि-यव्वं ॥ १ ॥ एवं सेसेसुवि इंदिएसुवि एसा चेव गाहा चरियव्वा । **इदाणिं कसायसंलीणया**, सा चउव्विहा, तंजहा कोहोदय-

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ २५ ॥

निरोहो वा उदयपत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणमिति, एवं जाव लोभोदयनिरोधो वा उदयपत्तस्स वा लोहस्स विफलीकरणमिति। इदाणिं जोगसंलीणया, सा तिविहा, तं०-अकुसलमणनिरोधो कायव्वो कुसलमणउदीरणं वा, एवं वायावि भाणियव्वा, कायसंलीणया णाम ठाणचंकमणादीणि अकज्जे न कायव्वाणि, कज्जेवि पसंतचित्तमणसेण जुगंतरपलोयणाइणा कायव्वाणित्ति, विवित्तचरिया नाम आरामुज्जाणाइसु इत्थीपसुपंडगविरहियाणि फासुएसणिज्जाणि पीढफलगाणि अभिगिण्हिऊण विहरियव्वंति॥ बज्झो गतो। इदाणिं अब्भिंतरओ, सो छव्विहो, तं०-पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं सज्झाओ झाणं विउस्सग्गोत्ति, तत्थ पायच्छित्तं दसविहं-आलोयणं पडिक्कमणं तदुभयं विवेगो विउस्सग्गो तवो छेदो मूलं अणवट्ठप्पो पारंचितंति, तत्थ आलोयणा नाम अवस्सकरणिज्जेसु भिक्खायरियाईसु जइवि अवराहो नत्थि तहावि अणालोइए अविणओ भवइत्तिकाऊण अवस्सं आलोएयव्वं, सो जइ किंचि अणेसणाइ अवराहं सरेज्जा, सो वा आयरितो किंचि सारेज्जा तम्हा आलोएयव्वं, आलोयणंति वा पगासकरणंति वा अक्खणंति वा विसोहित्ति वा एगट्ठा। इदाणिं पडिक्कमणं, तं च मिच्छामिदुक्कडेण संजुत्तं भवइ, तंजहा-कोइ साहू भिक्खायरियाए गच्छंतो विकहापमत्तो इरियं न सोहेइ, अन्नेण य साहुणा पडिचोइओ-जहा इरियं न सोहेसि, न य तंमि समए किंचि पाणविराहणं कयं, ताहे सो मिच्छादुक्कडेणेव सुद्धो भवइ, एवं भासासमितीएवि सहसा अणाभोगेण व काइ अप्पसावज्जा गिहत्थभासा भासिया सा मिच्छादुक्कडेणेव सुज्झइ, एवं सेससमितिसुवि जत्थ असमितित्तणं समावण्णो अप्पत्तेसु इट्ठेसु परमगिद्धिभावण्णो रागद्दोसा वेसि कया ण य महंतो अवराहो ताव मिच्छा दुक्कडेणेव सुद्धी भवइत्ति। तदुभयं नाम जत्थ आलोयणं पडिक्कमणं, एगिंदियाणं जीवाणं संघट्टपरितावणादिसु कएसु आउत्तस्स भवंति। विवेगो नाम परिट्ठावणं, तं च आहारोवहिसेज्जास-

अभ्यन्तरे तपसि प्रायश्चित्तं ॥ २५ ॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ २६ ॥

णाणं संसत्ताणं उग्गमादीसु य कारणेसु असुद्धाणं भवइ। इदाणिं काउस्सग्गो, सो य काउसग्गोत्ति वा विउस्सग्गोत्ति वा एगट्ठा, सो य काउस्सग्गो इमेहिं कज्जइ, तंजहा-णावानइसंतारे गमणागमणसुभिणदंसणआवस्सगादिसु कारणेसु बहुविहो भवइ। इदाणिं तवो, सो पंच राइंदियाणि आदिकाऊण बहुवियप्पो भवइत्ति। तथा छेदो नाम जस्स कस्सवि साहुणो तहारूवं अवराहं णाऊण परियाओ छिज्जइ, तंजहा-अहोरत्तं वा पक्खं वा मासं वा संवच्छरं वा एवमादि छेदो भवति। मूलं नाम सो चेव से परियाओ मूलतो छिज्जइ। अणवट्ठप्पो नाम सव्वच्छेदपत्तो किंचिकालं करेऊण तवं ततो पुणोवि दिक्खा कज्जइ। पारंचो नाम खेत्ततो देसातो वा निच्छुभइ, छेदअणवट्ठमूलपारंचियाणि देसं कालं संजमविराहणं पुरिसं च पडुच्च दिज्जतित्ति, पच्छित्तं गतं।

इदाणिं विणओ, सो य सत्तविधो भवइ, तंजहा-णाणविणओ दंसणविणओ चरित्तविणओ मणविणओ वायाविणओ कायविणओ उवयारियविणओत्ति, तत्थ नाणविणओ पंचविधो-आभिणिबोहियणाणविणओ सुतणाणविणओ ओहिणाणविणओ मणपज्जवणाणविणओ केवलणाणविणओत्ति, से णाणविणओ कहं भवइ ?, तंजहा-जस्स एतेसु णाणेसु पंचसुवि भत्ती बहुमाणो वा, जे वा एतेहिं नाणेहिं पंचहिं भावा दिट्ठा दीसंति दीसिस्संति वा तेसिं सद्दहणत्तं, एस णाणविणओ। इदाणिं दंसणविणओ, सो दुविहो, तंजहा-सुस्सूसणाविणओ अणासातणाविणओ य, तत्थ सुस्सूसणाविणओ नाम सम्मद्दंसणगुणाहिएसु साधुसु कज्जइ दंसणपूयाणिमित्तं, सो य सुस्सूसाविणओ अणेगविहो भवइ, तंजहा-सक्कारविणओ सम्माणविणओ अब्भुट्ठाणं आसणाभिग्गहो आसणाणुप्पयाणं किइकम्मं अंजलिपग्गहो एंतस्स अणुगच्छणया ठियस्स पज्जुवासणया गच्छंतस्स अणुवयणंति, सीसो आह-सक्कारसंमाणाणं पुण को पतिविसेसो ?, आयरिओ भणइ-सक्कारो थुणणाइ, सम्माणो वत्थपत्तादीहिं कीरइ, इदाणिं आसणा-

अभ्यन्तरे विनयः

॥ २६ ॥

भिग्गहो-सो आगच्छंतस्स चेव परमादरेण णाम अभिमुहमागंतूण वग्गहत्थेहिं भण्णइ-एत्थ ओविसाहित्ति, **आसणपदाणं णाम** ठाणाओ ठाणं संचरंतस्स आसणं गेण्हिऊण इच्छिए ठाणे ठवेइ, सेसाणि अब्भुट्ठाणकिइकम्मादीणि पागडाणित्ति काऊण न भणियाणि । **इदाणिं अणासादणाविणओ**, सो पण्णरसविहो, तंजहा-अरहंतस्स अणासादणाए अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणासादणाए आयरियाणं अणासायणाए उवज्झायाणं अणासातणाए थेराणं अणासातणाए कुलस्स अणासादणाए गणस्स अणासादणाए संघस्स अणासादणाए किरियाए अणासादणाए, किरिया णाम अत्थिवादो भण्णइ, तंजहा-अत्थि माया अत्थि पिया अत्थि जीवा एवमादि, जो एवं ण सद्दहइ विवरीयं वा पण्णवेइ तेण किरिया आसादिता भवइ, आभिणिबोहियणाणस्स अणासादणाए जाव केवलनाणस्स अणासादणाए, एतेसिं पण्णरसण्हं कारणाणं एक्केक्कं तिविहं भवइत्ति, तंजहा-अरहंताणं भत्ती अरहंताणं बहुमाणो अरहंताणं वण्णसंजलणया, एवं जाव केवलणाणस्सवि तिविहं भाणियव्वं, सव्वेवि एते भेदा पंचचत्तालीसं भवंति, **दंसणविणओ** गओ । **इदाणिं चरित्तविणओ** कहिज्जइ, सो पंचविधो भवइ, तंजहा-सामाइयचरित्तविणओ छेदोवट्ठावणियचरित्तविणयो परिहारविसुद्धियचरित्तविणओ सुहुमसंपरागचरित्तविणओ अहक्खायचरित्तविणओत्ति, एतेसिं पंचण्ह चरित्ताणं को विणओ ?, भण्णति, पंचविहस्स जा सद्दहणा वा सद्दहियस्स जा काएण फासणया भव्वाणं च पुरओ परूवणया, चरित्तविणओ वण्णिओ । **इदाणिं मणविणओ**, आयरियाईण उवरिं अकुसलो मणो निरुंभियव्वो कुसलमणउदीरणं च कायव्वं, एवं वायाविणओवि । **तत्थ कायविणओ नाम** तेसिं चेव आयरियादीण अद्धाणपरिस्संताण वा सीसाउ आरब्भ जाव पादतला ताव परमादरेण विस्सामणं । **इदाणिं उवयारियविणओ** सत्तविधो, णिच्चमेव आयरियस्स अब्भासे अच्छणं छंदाणुवत्तणं कारियनिमित्तकरणं

कयपडिकइया दुक्खत्तस्स गवेसणं देसकालण्णुया सव्वत्थेसु अणुलोयमाचि, तत्थ अब्भासे अच्छणं नाम आयरियाण सीसो निज्जरट्ठाए इंगिएण अभिप्पायं नाऊण जहिच्छियं उववायइस्सामित्ति काउण आयरियस्स अब्भासे अच्छइ, तत्थ छंदाणुवत्तणं नाम आयरियाण सीसेण कालं तुलेऊणं आहारउवहिउवस्सगाणं उववायणं कायव्वं, कारियनिमित्तकरणं नाम पसण्णा हु आयरिया सविसेसं सुत्तत्थतदुभयाणि दाहिंतित्तिकाऊणं तारिसाणि अणुकूलाणि करेइ जेण तेसिं आयरियाण चित्तप्पसाओ जायइ, कयपडिकइया णाम जइवि निज्जरत्थं करेइ ततोवि मम एस कारेहितित्ति काउं विणयं करेइ, सेसाणि दुक्खत्तस्स गवेसणाईणि पसिद्धाणि चेव काऊण नो भणियाणि, अहवा एसो सव्वो चेव विणओ नाणदंसणचरित्ताणं अव्वतिरित्तोत्तिकाऊण तिविहो चेव भाणियव्वो, तं०—नाणविणओ दंसणविणओ चरित्तविणओ ॥ विणओ गओ ॥

इदाणिं वेयावच्चं, तं च इमेहिं कारणेहिं कज्जइ, तं०- अण्णपाणवत्थपत्तपडिस्सयपीढफलगसंथारप्पगादीहिं धम्मस्स साहणेहिं, तं च कस्स कज्जइ ?, इमेसिं दसण्हं, तं० आयरियउवज्झाया थेर तवस्सि गिलाण सिक्खग साहम्मिय कुलगणसंघेसु, तत्थ आयरिओ पंचविहो, तं०-पव्वावणायरिओ सुत्तस्स उद्दिसणायरिओ समुद्दिस० अणुण्णा० वायणायरिओत्ति, उवज्झाओ पसिद्धो चेव, थेरो नाम जो गच्छस्स संथिरिं करेइ, जो तिसु त परियागाइसु वा थेरो,तवस्सिणाम जो उग्गतवचरणरतो, गिलाणो णाम रोगाभिभूओ, सिक्खगो नाम जो अहुणा पव्वइयओ, साहम्मिओ नाम एगो पवयणओ ण लिंगतो,एगो लिंगओ न पवयणओ, कुलगणसंघा पसिद्धा चेव। इदाणिं सज्झाओ, सो पंचविधो, तं०-वायणा पुच्छणा परियट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा, वायणा णाम सिस्सस्स अज्झावणं, पुच्छणा सुत्तस्स अत्थस्स वा भवति, परियट्टणं णाम परियट्टणंति वा अब्भसणंति वा गुणणंति वा एगट्ठा,

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ २९ ॥

अणुप्पेहा णाम जो मणसा परियट्टेइ णो वायाए, धम्मकहा नाम जो अहिंसादिलक्खणं सव्वण्णुपणीयं धम्मं अणुयोगं वा कहेइ एसा धम्मकहा, सज्झाओ गओ। इदाणिं झाणं, तं च अंतोमुहुत्तियं भवइ, तस्स य इमं लक्खणं, तं०-दढमज्झवसाणंति, केई पुण आयरिया एवं भणंति-एगग्गस्स चिन्ताए निरोधो झाणं, एगग्गस्स किर चिन्ताए निरोधो तं झाणमिच्छंति, तं छउमत्थस्स जुज्जइ, केवलिणो न जुज्जइत्ति, किं कारणं ?, जेण मइत्ति वा सुत्ति (सइ)त्ति वा सण्णत्ति वा आभिणिबोहियणाणंति वा एगट्ठा, केवलिस्स य सव्वभावा पच्चक्खत्तिकाऊण आभिणिबोहियणाणस्स अभावे कओ चिन्तानिरोधो भवइ?, तम्हा एगग्गचिंतानिरोधो झाणमिति विरुज्झते, दढमज्झवसाओ पुण सव्वाणुवाइत्तिकाऊण, जेसिं पुण आयरियाण एगग्गचिन्तानिरोधो झाणं तेसिं इमो वक्खाणमग्गो-एगग्गस्स य जा चिंता (निरोहो य) तं झाणं भवइ, एते दोण्हाणं, तत्थ एगग्गस्स चिंता एतं झाणं छउमत्थस्स भवइ, कहं ?, जहा दीवसिहा निवायगिहावत्थियाहिं किंचि कालंतरं निच्चला होऊण पुणोवि केणइ कारणेण कंपाविज्जइ एवं छउमत्थस्स झाणं, तं कम्मिवि आलंबणे कंचि कालं अच्छिऊण पुणोवि अवत्थंतरं गच्छइ, जो पुण एगग्गस्स निरोधो एयं झाणं केवलिस्स भवइ, कम्हा ?, जम्हा केवली सव्वभावेसु केवलोवयोगं णिरुंभिऊण णो चिट्ठइ, तं झाणं चउव्विहं भवइ, तं०-अट्टं रोद्दं धम्मं सुक्कमिति, तत्थ संकिलिट्ठज्झवसायो अट्टं, अइकूरज्झवसाओ रोद्दं, दसविहसमणधम्मसमणुगतं धम्मं, सुक्कं असंकिलिट्ठपरिणामं अट्ठविहं वा कम्मरयं सोधति तम्हा सुक्कं, परिणामविसेसेण णाणत्तं, परिणामविसेसोवि फलविसेसेण णज्जइ, तम्हा-अट्टं तिरिक्खजोणी रोद्दज्झाणेण गंमती नरयं। धम्मेण देवलोगं सिद्धगतिं सुक्कझाणेणं ॥ १ ॥ तत्थ अट्टज्झाणं तं चउव्विहं-अमणुण्णसंपओगसंपउत्तो तस्स विप्पओगाभिकंखी सइसमन्नागते यावि भवइ, अमणुण्णं णाम अप्पियं, समन्तओ

अभ्यन्तरे तपसि ध्यानम्

॥ २९ ॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ ३० ॥

जोगो संपओगो तेण अप्पिएण समंततो संपउत्तो तस्स विप्पयोगाभिकंखी सतिसमण्णागते यावि भवइ, सतिसमण्णागते णाम चित्तनिरोहो काऊं झायइ, जहा कह णाम मम एतेसु अणिट्ठेसु विसएसु सह संजोगो न होज्जत्ति, तेसु अणिट्ठेसु विसयादिसु पओसं समावण्णो अप्पत्तेसु इट्ठेसु परमगिद्धिमावण्णो रागदोसवसगओ नियमा उदयकिलिन्नव्व पावकम्मरयं उवचिणाइत्ति अट्टस्स पढमो भेदो गतो १। मणुण्णसंपयोगसंपउत्तो तस्स अविप्पयोगाभिकंखी सद्दसमन्नागए यावि भवइ, सद्दाइसु विसएसु परमपमोद-मावन्नो अणिट्ठेसु पदोसमावण्णो तप्पच्चइयस्स रागदोसं० अजाणमाणो गओ इव सलिलउल्लियंगो पावकम्मरयमलं उवचिणोतित्ति अट्टस्स बितिओ भेदो गओ २। आयंकसंपयोगसंपउत्तो तस्स विप्पयोगाभिकंखी सतिसमन्नागते, तत्थ आतंको णाम आसुकारी, तं जरो अतीसारो सू(सा)सं सज्जहूओ एवमादि, आतंकगहणेण रोगोवि सूइओ चेव, सो य दीहकालिओ भवइ, तं गंडी अदुवा कोढी एवमादि, तत्थ वेदणानिमित्तं आयंकरोगेसु पदोसमावण्णो आरुग्गभिकंखी रागदोसवसगओ णेहाणुगओ निवसंतो असुभ-कम्मरयमलं उवचिणोति, अट्टज्झाणस्स तइओ भेदो गओ ३। परिज्झयकामभोगसंपउत्ते तस्स अविप्पजोगाभिकंखी सतिसमण्णा-गए यावि भवइ, तत्थ परिज्झंति वा पत्थयंति वा गिद्धित्ति वा अभिलासोत्ति वा लेप्पत्ति वा कंखंति वा एगट्ठा, तत्थ काम-ग्गहणेण सद्दरूवा य गहिया, भोगग्गहणेण गंधरसफरिसा गहिया, एतेसिं कामभोगाणं जा पत्थणा सा परिज्झा, परिज्झिउ नाम अणुगओ, जहा लोगे अब्भेहिं अणुगतओ अब्भंतओ भण्णइ एवं सोवि कामभोगपिवासाए परिब्भज्झाणगतो परिज्झितो भण्णइ, ततो सो रागदोसोवगओ नियमा असुहकम्मबंधउत्ति भवइ, एवं चउव्विधंपि अट्टं भणियं, एयं पुण अट्टज्झाणं को झायइ?, अविरयदेसविरय पमत्तसंजया य झाएंति, सीसो आह--कहमेतं नज्जइ? जह एस अट्टं झायइत्ति न वा झायति ?, आयरिओ भणइ-

अभ्यन्तरे तपसि ध्यानम्

॥ ३० ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ ३१ ॥

अट्टस्स णं झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं०-कंदणया सोयणया तिप्पणया विलवणया, तत्थ कंदणया नाम हिरण्णसुवण्णादीहिं अवहिएहिं वा कंदइ हा मात ! हा पित ! हा भागे ! हा पुत्ते ! त्ति एवमादी, सोयणया नाम जो नीसढं दीणमणसो अंतग्गतेण सोगग्गिणा अभितविज्जमाणो चिट्ठइ सा सोयणता, तिप्पणया नाम तीहिंवि मणवयणकाइएहिं जोगेहिं जम्हा तप्पति तेण तिप्पणया, विलवणया नाम अतिसोगाभिभूयत्तणेण विचित्तचेतसो णाथधिट्ठाणि विविधाणि विलवइ विलवणया, (अहवा कूजणया ककरणया तिप्पणया विलवणया तं०) कूजणया णाम मातिपितिभातिभगिणीपुत्तदुहित्तमरणादीवि (सु) महइमहंतेण सद्देण रोवइत्ति कूजणया, ककरणया णाम जो घडीजंतगं व वाहिज्जमाणं करगरेइ सा ककरणया, तिप्पणयाविलवणयाउ पुव्ववणियाउ, अट्टज्झाणं गतं । इदाणिं रोद्दज्झाणं--तं० चउव्विहं, तं०-हिंसाणुबंधी मोसाणुबंधी तेणाणुबंधी सारक्खणाणुबंधी, तत्थ हिंसाणुबंधी नाम जो णिच्चकालमेव वधपरिणओ अकरेमाणोवि पाणववरोवणं मज्जारो विव तग्गयमाणसो चिट्ठइ एस हिंसाणुबंधी१, मोसाणुबंधी णाम जो कम्मभारियताए निच्चमेव असंतअसब्भूतेहिं अभिरमइ, अदिट्ठाणि य भणइ दिट्ठाणि मए, एवमादि मोसाणुबंधी २, तेणाणुबंधी णाम जो अहो य राई य परदव्वहरणपसत्तो जीवघाती य एस तेणाणुबंधी ३, सारक्खणाणुबंधी णाम जो अत्थसरीरादीणं सारक्खणानिमित्तं णिच्चमेव आहम्मिएसु कारणेसु पवत्तइ अचोरं चोरमितिकाऊण धाएइ, असंकणिज्जे य संकइ, एस सारक्खणाणुबंधी, रोद्दं चउव्विहंपि गतं । इदाणिं एतस्सेव लक्खणाणि भण्णंति, ताणि इमाणि चत्तारि,तं०-ओसण्णदोसे बहुदोसे अण्णाणदोसे आमरणंतदोसे, तत्थ ओसण्णदोसे णाम जो एवं ताणेव हिंसाणुबंधादीणं चउण्हं रुद्दकारणाणं एगंतरंमि कारणे अभिणिविट्ठो पुणो २ तं चेव समायरइ वाहिओविव अप्पत्थभोइत्तणेणं रोगं वड्ढेइ एवं सोऽवि पावकम्मरोगं वड्ढेइ एस

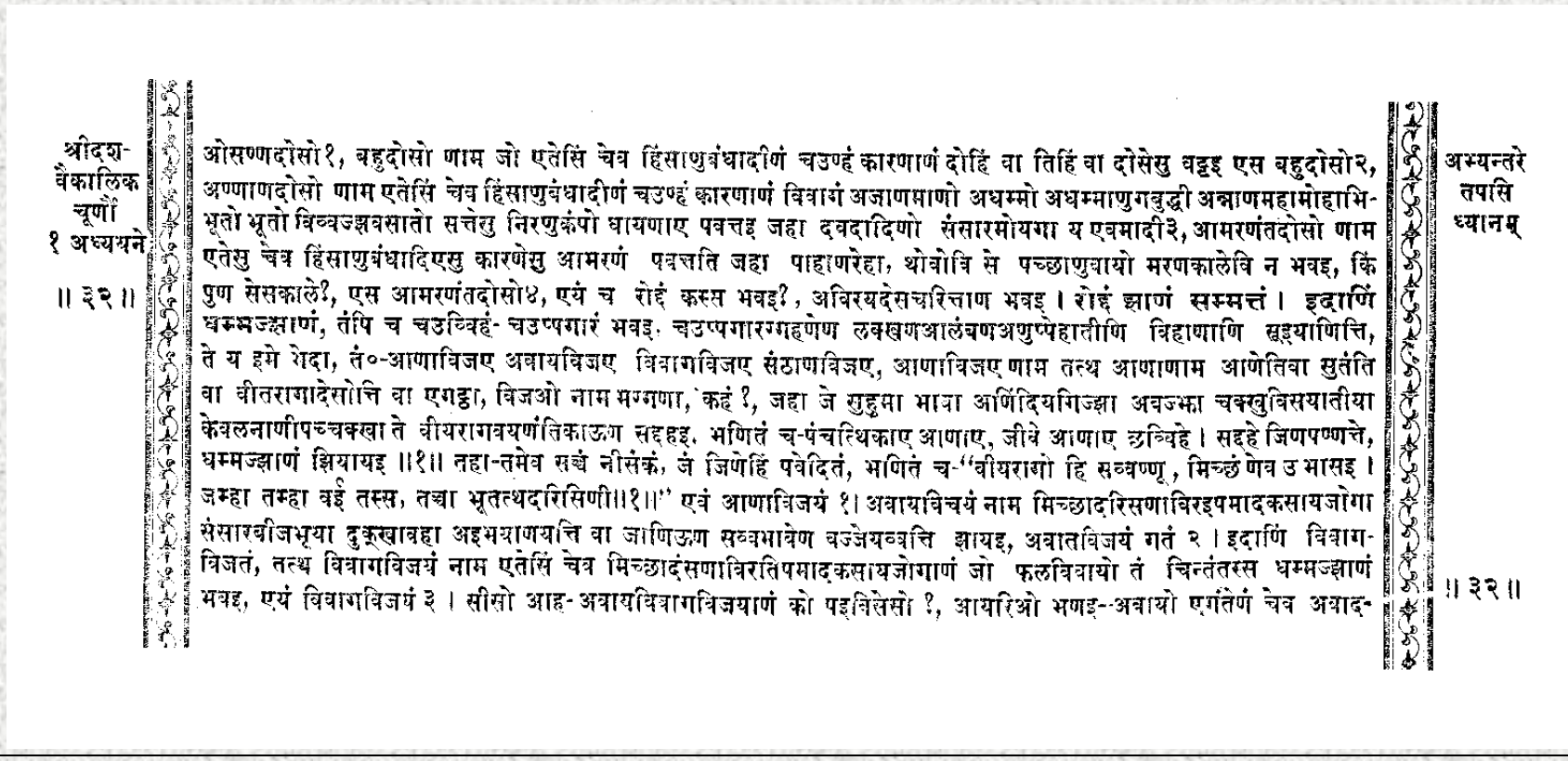
अभ्यन्तरे तपसि ध्यानम्

॥ ३१ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ३२ ॥

ओसण्णदोसो १, बहुदोसो णाम जो एतेसिं चेव हिंसाणुबंधादीणं चउण्हं कारणाणं दोहिं वा तिहिं वा दोसेसु वट्टइ एस बहुदोसो २, अण्णाणदोसो णाम एतेसिं चेव हिंसाणुबंधादीणं चउण्हं कारणाणं विवागं अजाणमाणो अधम्मो अधम्माणुगबुद्धी अन्नाणमहामोहाभिभूतो भूतो विव्वज्जवसातो सत्तेसु निरणुकंपो घायणाए पवत्तइ जहा दवदादिणो संसारमोयगा य एवमादी ३, आमरणंतदोसो णाम एतेसु चेव हिंसाणुबंधादिएसु कारणेसु आमरणं पवत्तति जहा पाहाणरेहा, थोवोवि से पच्छाणुवायो मरणकालेवि न भवइ, किं पुण सेसकाले?, एस आमरणंतदोसो ४, एयं च रोद्दं कस्स भवइ?, अविरयदेसचरित्ताण भवइ। रोद्दं झाणं सम्मत्तं। इदाणिं धम्मज्झाणं, तंपि च चउव्विहं- चउप्पगारं भवइ- चउप्पगारग्गहणेण लक्खणआलंबणअणुप्पेहातीणि विहाणाणि सूइयाणित्ति, ते य इमे रोदा, तं०-आणाविजए अवायविजए विवागविजए संठाणविजए, आणाविजए णाम तत्थ आणाणाम आणेतिवा सुतंति वा वीतरागादेसोत्ति वा एगट्ठा, विजओ नाम मग्गणा, कहं?, जहा जे सुहुमा भावा अणिंदियगिज्झा अवज्झा चक्खुविसयातीया केवलनाणीपच्चक्खा ते वीयरागवयणंतिकाऊण सद्दहइ, भणितं च-पंचत्थिकाए आणाए, जीवे आणाए छव्विहे। सद्दहे जिणपण्णत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ॥१॥ तहा-तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेदितं, भणितं च-“वीयरागो हि सव्वण्णू, मिच्छं णेव उ भासइ। जम्हा तम्हा वई तस्स, तच्चा भूतत्थदरिसिणी॥१॥” एवं आणाविजयं १। अवायविचयं नाम मिच्छादंरिसणाविरइपमादकसायजोगा संसारबीजभूया दुक्खावहा अइभयाणयत्ति वा जाणिऊण सव्वभावेण वज्जेयव्वत्ति झायइ, अवातविजयं गतं २। इदाणिं विवागविजतं, तत्थ विवागविजयं नाम एतेसिं चेव मिच्छादंसणाविरतिपमादकसायजोगाणं जो फलविवायो तं चिन्तंतस्स धम्मज्झाणं भवइ, एयं विवागविजयं ३। सीसो आह- अवायविवागविजयाणं को पइविसेसो?, आयरिओ भणइ--अवायो एगंतेणं चेव अवाद-

अभ्यन्तरे तपसि ध्यानम्

॥ ३२ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [१]

हेऊहिं कम्मेहिं भवइ, जेहिं असुहेहिं संसारियाइं दुक्खाइं पावंति ताणि चेव कम्माणि ववहारियणयस्स अवायो भण्णइ, कहं ?, जहा लोगे आणवेज्जए ‘ अण्णमया वै प्राणा ’ जम्हा किर अण्णेण विणा पाणा ण भवंति तम्हा लोगेण अण्णं चेव पाणा कया, एवं इहईपि जम्हा मिच्छादरिसणाविरइपमादकसायजोगेहिं विणा णावायो भवइ तम्हा ताणि चेव अवातो भण्णइ, भणियं च-“इहलोइए अवाए, अदुवा पारलोइए । चिंतयंतो जिणक्खाए, धम्मं झाणं झियायइ ॥ १ ॥” विवागो पुण सुभासुभाणं कम्माणं जो अणुभावो चिंतइ सो विवागो, भणियं च-“ सुहाणं असुहाणं च, कम्माणं जो विवागयं । उदिण्णाणं च अणुभागं, धम्मज्झाणं झियायइ ॥ १ ॥ अवायविवागाणं एस विसेसोत्ति गयं ३ । संठाणविजयं नाम जहा जंबुदीवादीणं दीवसमुद्दाणं संठाणं वण्णिज्जइ, सीसो आह-किं संठाणमेव एवं झियाइयव्वं? ण वण्णरसगंधफासाइ झाइयव्वत्ति तेण तेसिं गहणं न कयं ?, आयरिओ आह--सच्चं तं एवं, किन्तु एगग्गहणे तज्जातीयाण सव्वेसिं गहणं भवइ, तेणं संठाणगहणेणं वण्णरसगंधफरिसा गहिया चेव भवंति, जे अवण्णअगंधअरसअफासमन्ताइं दव्वाइं धम्मत्थिकायमाइयाइं ताणिवि गहियाणि चेव भवंति, अलोगोवि य संठाणग्गहणेण घेप्पइ, किं पुण धम्माधम्मागासादीणं गहणं ?, लोगे णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?, सुसिरगोलगसंठिए पण्णत्ते, ” चउव्विहंपि धम्मज्झाणं भणियं, एयं पुण धम्मज्झाणं अप्पमत्तसंजओ झायइ । इदाणिं एयस्स चेव धम्मज्झाणस्स लक्खणाणि भण्णंति, ताणि इमाणि चत्तारि-आणारुई णिसग्गरुई सुत्तरुई ओगाहरुई, तत्थ आणारुई नाम जा तित्थगराणं आणा तं आणं महतासंवेगसमावण्णो पसंसइ, एस आणारुई, निसग्गरुई नाम णिसग्गो सहावो, सहावेण चेव जिणप्पणीए भावे रोयइ बहुजणमज्झे य महतासंवेगसमावण्णो पसंसइ,एस निसग्गरुई, सुत्तरुई णाम ‘जह जह सुयमोगाहइ अइसयरसपसरजुयमपुव्वं तु । तह तह पल्हाइ मुणी नव-

॥ ३३ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ३४ ॥

नवसंवेगसद्धाए ॥ १ ॥ " एस सुत्तरुई, ओगाहरुई णाम अणेगनयवायभंगुरं सुयं अत्थओ सोऊण महतासंवेगमावज्जइ एस ओगाहरुई । धम्मज्झाणस्स लक्खणाणि सम्मत्ताणि । इयाणिं तस्स चेस आलंबणा, जहा कोई पुरिसो गड्डाए वा विसमंसि वा पडिओ वेल्लिं वा रुक्खं वा मूलं वा अवलंबित्ताणं उत्तरइ, एवं धम्मज्झाणज्झायीवि चउण्हं आलंबणाणं अण्णतरं आलंबिऊण झायइ, तंजहा- वायणं वा पुच्छणं वा परियट्टणं वा धम्मकहं वा, एयाणि हेट्ठा वण्णियाणि । धम्मस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तंजहा-अणिच्चाणुप्पेहा असरणाणुप्पेहा एगत्तणुप्पेहा संसाराणुप्पेहा, तत्थ अणिच्चाणुप्पेहा नाम-सव्वट्ठाणाणि असासयाणि इह चेव देवलोगे य। सुरअसुरनरादीणं रिद्धिविसेसा सुभाइं च ॥ १ ॥ " एवं खु चिंतयंतस्स सरीरोवगरणादिसु निस्संगया भवइ, मा पुण तेहिं विजुत्तस्स दोसं भविस्सइ। असरणाणुप्पेहा नाम 'जम्मजरामरणभए अभिद्दुए विविहवाहिसंतत्ते। लोगंमि नत्थि सरणं जिणिंदवरसासणं मोत्तुं ॥ १ ॥ " एवं खु चिंतियंतस्स जिणसासणे थिरया भविस्सतित्ति, एगत्ताणुप्पेहा नाम— एगो करेइ कम्मं फलमवि तस्सेक्कओ समणुहोइ । एक्को जायइ मरई परलोगं इक्कओ जाइ ॥ १ ॥ एवं खु चिंतयंतस्स तस्स मातापितापुत्तमादिसु संगो न भविस्सइ, सत्तुणो य उवरिं वेराणुबंधो न भवति, एतेहिं गंथेहिं असुहकम्मनिज्जरत्थमुज्जमतित्ति, संसाराणुप्पेहा णाम ' धी संसारो जहिया जुव्वाणो परमरूवगाव्वियओ । मरिऊण जायइ किमी तत्थेव कलेवरे नियए ॥ १ ॥ एए चिंतयंतस्स संसारभउव्विग्गया भवइ,भवुव्विग्गो य तस्स विणासाय उज्जमइ। धम्मज्झाणं सम्मत्तं ॥ इदाणिं सुक्कज्झाणं, पुहुत्तवितक्कं सविचारिं एगत्तवियक्कमविचारिं सुहुमकिरियं अनियट्टिं समुच्छिन्नकिरियं अप्पडिवादि, तत्थ पुहुत्तवितक्कं सविचारिणाम पृथग्भावः पृथक्त्वं, तिहिवि जोगेसु पवत्तइत्ति वुत्तं भवइ, अहवा पुहुत्तं णाम वित्थारो भण्णइ, सुयणाणोवउत्तो अणे-

अभ्यन्तरे तपसि ध्यानम्

॥ ३४ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ ३५ ॥

गेहिं परियाएहिं झायइत्तिवुत्तं भवइ, वियक्को सुतं, विचारो नाम अत्थवंजणजोगाण संकमणं, सह विचारेण सविचारं, अत्थवंजण-जोगाणं जत्थ संकमणं तं सवियारं भण्णइ, तं च झायमाणो चोद्दसपुव्वी सुयनाणोवउत्तो अत्थओ अत्थंतरं गच्छइ, वंजणाओ वंजणंतरं, वंजणं अक्खरं भण्णइ, जोगाउ जोगंतरं, जोगो मणवयणकायजोगो भण्णइ, भणियं च- " सुयनाणे उवउत्तो अत्थंमि य वंजणंमि सविचारं । झायइ चोद्दसपुव्वी पढमं झाणं सरागो उ ॥ १ ॥ अत्थसंकमणं चेव, तहा वंजणसंकमं । जोगसंकमणं चेव, पढमे झाणे णिगच्छइ ॥ २ ॥" इयाणिं एगत्तवियक्कं अविचारिनाम, एगभावो एगत्तं, एगंमि चेव सुयणाणपयत्थे उवउत्तो झायइत्तिवुत्तं भवइ,अहवा एगंमि वा जोगे उवउत्तो झायइ,वितक्को सुयं,अविचारं नाम अत्थाउ अत्थंतरं न संकमइ, वंजणाओ वंजणंतरं जोगाओ वा जोगंतरं, तत्थ निदरिसणं-सुयणाणे उवउत्तो अत्थंमि य वंजणंमि अविचारिं। झायइ चोद्दसपुव्वी बितियं झाणं विगतरागो ॥ १ ॥ अत्थसंकमणं चेव, तहा वंजणसंकमं । जोगसंकमणं चेव; बितिए झाणे न विज्जइ ॥ २ ॥ तइयं सुहुमकिरि-यानियट्टिणाम, तं केवलिस्स भवइ, तत्थ केवली परमसुक्कलेसत्तणेण अप्पडिहयणाणत्तणेण य किं तस्स झाइयव्वं ?, जहवि तस्स केवलिकम्माइं पडुच्च अंतोमुहुत्तिओ जोगनिरोधो भवइ, तत्थ मणोजोगस्स ताव केवलिस्स सव्वकालं चेव अव्वावारो मोत्तूण केणइ देवाइणा किंचि सदिव्वं वागरणं पुच्छिओ संतो तं पडुच्च मणेण चेव वागरेइ, परिसेसवइजोगनिरोहं काउं कायस्सवि बादरजोगं निरुंभइ, ताहे तस्स सुहुमकिरियाणियट्टि णामज्झाणं भवति, जम्हा सुहुमकिरियानियट्टि सुहुमकिरियं झायइ, भणियं च-- " अत्थि णं भंते! केवलिस्स वयणुप्पण्णा सुहुमकिरिया कज्जइ?, हंता अत्थि, एवं जहा पन्नत्तीए,अणियट्टि णाम तस्स जोगनिरोधा झाणं केवलं देवेण वा दाणवेण नियत्तेउं न सक्कइत्ति, एवं सुहुयकिरियअनियट्टित्ति भण्णइत्ति । इदाणिं समुच्छिन्नकिरियं अप्पडि-

अभ्यन्तरे तपसि ध्यानम्

॥ ३५ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१|| दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ३६ ॥

वार्तिं, तं च सेलेसिं पडिवण्णयस्स भवइ, समुच्छिण्णकिरियाणाम जस्स मूलाओ चेव किरिया समुच्छिण्णा, अजोगिचरिमुत्तं भवइ, अहवा इमा समुच्छिण्णकिरिया जस्स मूलाउ चेव छिण्णा किरिया, अबंधउत्तिवुत्तं भवति, अपडिवाई णाम जो जोगनिरोधेण अप्पडिएणं चेव केवली कंमाइं तडतडस्स छिंदिऊण परमणाबाधत्तं गच्छइ, एवं समुच्छिण्णकिरियमपडिवातित्ति भण्णइ, सुक्कज्झाणस्स चउरो मूलभेया वण्णिया। इदाणिं एतेसिं चेव जो जस्स विसयो सो भण्णइ- तत्थ आदिल्लाणि दोण्णि चोद्दसपुव्विस्स उत्तमसंघयणस्स उवसंतखीणकसायाणं च भवइ, तत्थ निदरिसणं- ' पढमं बितियं च झायंति, पुव्वाणं जे उ जाणगा। उवसंतेहिं कसाएहिं, खीणेहिं च महामुणी ॥ १ ॥ उवरिल्लाणि पुण केवलिस्स भवंति, एत्थ णिदरिसणं,- उवरिल्लाणि झाणाणि, तातिणो गुणसिद्धिओ। खीणमोहा झियायंति, केवली दोण्णि उत्तमे ॥ १ ॥ जदाऽयं परिणामविसेसेण बिइयज्झाणं वोलीणो तइयं पुण न ताव पावइ झाणंतरे चेव वट्टइत्ति, एयंमि अंतरे केवलणाणं उप्पज्जति, एतेसिं णिदरिसणं- 'बितियस्स तइयस्स य, अंतरंमि उ केवलं। उप्पज्जइ अणंतं तु, खीणमोहस्स तायिणो ॥ १ ॥' इदाणिं जोगं पडुच्च भण्णइ, तत्थ पढमिल्लुगं एक्कंमि वा जोगे तिसु वा जोगेसु वट्टमाणस्स भवइ, बितियं पुण णियमा तिण्हं जोगाणं अण्णतरे भवइ, तइयं कायजोगिणो भवइ, चउत्थं अजोगिणो भवइ, एत्थ निदरिसणं- 'जोगे जोगेसु वा पढमं, बितियं जोगंमि कम्हिवि। तियं च काइए जोगे, चउत्थं च अजोगिणो ॥ १ ॥' इदाणिं लेस्साओ पडुच्च भण्णइ, पढमबियाइं सुक्कलेसाए वट्टमाणस्स भवन्ति, तइयं परमसुक्कलेसाए वट्टमाणस्स भवति, चउत्थं अलेसस्स भवइ, भणियं च- 'पढमबितियाए सुक्कं, ततियं परसुक्कयं। लेस्सातीतं तु उवरिल्लं, होइ झाणं वियाहियं ॥१॥ इदाणिं कालं पडुच्च भण्णइ-पढमबितियाइं जइ कहंचि कालं करेइ तओ अणुत्तरेसु उववज्जइ, उवरिल्लाणि दोण्णि सिद्धिसाहणाणि,

अभ्यन्तरे तपसि ध्यानम्

॥ ३६ ॥

भणियं च-'अणुत्तरेहिं देवेहिं, पढमबितिएहि जायइ । उवरिल्लेहिं झाणेहिं, सिज्झई णीरओ सदा ॥१॥" चतुर्भेदं सुक्कं झाणं सम्मत्तं । इदाणिं लक्खणा-विदेगो विउस्सग्गो संवरो असंमोहो, एते लक्खणा सुक्कस्स । इदाणिं आलंबणा- खंती मुत्ती अज्जवं मद्दवं, एयं जहा हेट्ठा समणधम्मे वण्णियं तहेव । इदाणिं अणुप्पेहाओ, तं०-असुहाणुप्पेहा अवायाणुप्पेहा अणंतवत्तियाणुप्पेहा विप्परिणामाणुप्पेहा,एवं सुक्कज्झाणं सम्मत्तं। इदाणिं विउस्सग्गो, सो य विउस्सग्गोत्ति वा विवेगोत्ति वा अधिकिरणंति वा छड्डणंति वा वोसिरणंति वा एगट्ठा, सो य दुविधो, तं०-दव्वे य भावे य, तत्थ दव्वे चउव्विधो, तं०-गणविउस्सग्गो सरीरविउस्सग्गो उवहीविउस्सग्गो आहारविउस्सग्गो, भावविउस्सग्गो णाम कोहादीण चउण्हं उदयनिरोहो उदिण्णाण विफलीकरणं, एस विउस्सग्गो सम्मत्तो। सम्मत्तो य अब्भंतरओ तओ । एयंमि दुवालसविहे तवे आयरिज्जमाणे पुव्वउवचितं कम्मं णिज्जरिज्जइ असुहकम्मोवचयो य न भवइ, असुहकम्मस्स य अणासवेणं पुव्वोवचितस्स निज्जरणाए परमसुहुमाणाबाहस्स सिद्धिसुहस्स संपावगो भवइत्ति जाणिऊण तवे उज्जमो कायव्वो इति तवो सम्मत्तो । सीसो आह-धम्मो मंगलमुक्किट्ठंगहणेण चेव सिद्धी अत्थि, किमत्थं अहिंसासंजमतवाणं गहणं ?, धम्मग्गहणेण चेव अहिंसासंजमतवा घेप्पंति, कम्हा?, जम्हा अहिंसा संजमे तवो चेव धम्मो भवइ, तम्हा अहिंसासंजमतवग्गहणं पुनरुत्तं काऊण ण भणियव्वं, आचार्याह- अनैकान्तिकमेतत्, अहिंसासंजमतवा हि धर्म्मस्य कारणानि, धर्म्मः कार्यं, कारणाच्च कार्यं स्याद्भिन्नं, कथमिति?, अत्रोच्यते, अन्यत्कार्यं कारणात् अभिधानवृत्तिप्रयोजनभेददर्शनात् घडपडवत्, इतश्च अन्यत् कार्यं कारणात्, तद्विशेषत्वात् मृद्घटवत्, अहवा अहिंसासंजमतवगहणे सीसस्स संदेहो भवइ-धम्मबहुत्वे कतरो एतेसिं गम्मपसुदेसादीणं धम्माणं मंगलमुक्किट्ठं भवइ ?, अहिंसासंजमतवग्गहणेण पुण नज्जइ जो अहिंसा-

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ३८ ॥

संजमतवजुत्तो सो धम्मो मंगलमुक्कट्ठं भवइ, एवं च ठाविए पक्खे सीसो आह- जो एस भणिओ धम्मो मंगलमुक्कट्ठं अहिंसा संजमो तवोत्ति एस किं आणाए गेण्हेतव्वो, एत्थ उदाहरणं वा किंचि ?, आयरिओ आह- उभयथाऽपि, आणाए गिण्हियव्वो उदाहरणमवि अत्थि चेव, एत्थ गाहा 'जिणवयणं सिद्धमेव' गाहा (४९-३३) जिणाणं वयणं २, जिणा चउव्विहा वण्णेतव्वा जहा हेट्ठा वण्णिया, एत्थ भावजिणेहिं अहिगारो, तेसिं भावजिणाणं वयणं सव्वन्नुत्तणेण आकप्पं णिव्वयणिज्जं पुव्वं सिद्धमेव भवति, भणितं च-"वीतरागो हि सव्वण्णू, मिच्छं णेव पभासइ। जम्हा तम्हा वई तस्स, भूतत्था तच्चदरिसणी॥१॥" तहावि सीसस्स पच्चयणिमित्तं उदाहरणं भणिज्जइ, जहा उदाहरणं तहा सोतारं पडुच्च हेऊवि भण्णइ, ण केवलं उदाहरणहेऊण चेव एक्कं भण्णति, किन्तु 'कत्थवि पंचावयवं' (५०-३३) गाहा, कत्थय सीसस्स पच्चयनिमित्तं महवित्थारणनिमित्तं च पंचावयवोववेतेण वयणेण वक्खाणं भण्णइ, कत्थइ पुण दसावयवोवेतेणंति, सीसो आह- किं कारणं पुण सव्वकालमेव पंचावयवोववेतेण दसावयवोववेएण वा वयणेण वक्खाणं ण भण्णइ ?, आयरिओ आह-'हंदि सवियारमक्खायं' हंदिसद्दो उप्पदरिसयइ-एयंमि वा पगारे अण्णंमि वा वक्खाणिज्जमाणे सोयारमासज्ज कत्थइ आगममेत्तमेव कहिज्जइ कयाइ दिट्ठंतो कयाइ हेऊ कयाइ आगमहेउदिट्ठंता तिण्णिवि, कदाइ आगमहेउदिट्ठंतोवसंथारणिगमणावसाणेण पंचावयवेण कहिज्जइ, कदायि पुण दसावयवेण, तत्थ पुव्विं ताव एतेसि पंचण्हं अवयवाणं लक्खणं वण्णिज्जइ, तत्थ साहणियस्स अत्थस्स जो निद्देसो एसा पतिण्णा, जहा जिणपवयणे पंचत्थिकायो लोगो भण्णइ, एवमादी, कुतित्थियाणवि जो जस्स समए चेव पइण्णाए साहणत्थं दिज्जइ, इदाणिं दिट्ठंतो-यत्र लौकिकानां परीक्षकाणां च बुद्धिसाम्यं स दृष्टान्तः, तत्थ लोइयगहणेण गोवालादी तत्तबाहिरो जणो गहिओ,

दृष्टान्तः पंचावयवाः

॥ ३८ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

परिक्खगमहणेण जेहिं सद्दसत्थाणि णायादीणि सत्थाणि अधीतानि ते परिक्खगा, एतेसिं लोइयाणं परिक्खगाणं च जंमि अत्थे बुद्धिविसंवादो न भवइ सो दिट्ठंतो, जहा लोइया उण्हं अग्गिं पडिवज्जंति, तहा परिक्खगावि, ण उ लोइया उण्हं परिक्खगा सीतं, परिक्खगा वा उण्हं लोइया सीयंति, एवं जहा लोइयाणं पगासणसमत्थो आइच्चो तहा परिक्खगाणवि, न उ लोइया पगासगं आइच्चं इच्छंति परिक्खगा अप्पगासगं, लोइया वा अप्पगासंति परिक्खगा वा पगासं, तम्हा जत्थ लोइयपरिक्खगाणं बुद्धिअविसंवादो भवइ सो दिट्ठंतोत्ति गतो दिट्ठंतो, तथा उवसंहारो नाम जत्थ जहासद्दो तहासद्दो य पउंजइ सो उवसंहारो, निगमणं नाम जत्थ पसाहिए अत्थे अज्झत्थहेऊणं पुणो कहणं कज्जइ एयं निगमणं, एतेहिं पंचहिं अवयवेहिं दुमपुप्फियअज्झयणस्स अत्था उवरिं सुत्तफासियनिज्जुत्तीए भणिहिई, इहं पुणाइ सिस्समतीविकोवणत्थं पंचावयववोववेयं वयणं भण्णइ, यथा अस्त्यात्मा इति प्रतिज्ञा, कार्यप्रत्यक्षत्वादिति हेतुः, परमाणुवदिति दृष्टान्तः, यथा परमाणवोऽप्रत्यक्षा अपि द्व्यणुकादिकार्येण प्रत्यक्षेणानुमीयंतेऽस्तीति तथाऽऽत्माऽप्रत्यक्षोऽपि प्राणादिकार्येण प्रत्यक्षेणानुमीयतेऽस्तीत्युपसंहारः, तस्मात् प्राणादिमद्भावादस्त्यात्मा इति निगमनं, पंचावयवाणं परूवणा गता, इदाणिं दसावयवाणं परूवणं काहामि, तं०-पतिण्णा पढमो अवयवो पइण्णाविसुद्धी बितियो अवयवो एवं हेऊ तइओ अवयवो हेउविसुद्धी चउत्थो अवयवो दिट्ठंतो पंचमो अवयवो दिट्ठंतविसुद्धी छट्ठो उवसंहारो सत्तमो उवसंहारविसुद्धी अट्ठमो णिगमणं णवमो णिगमणविसुद्धी दसमो, एए एयंमि चेव अज्झयणे उवरिं भण्णिहिंति, इदाणिं दिट्ठंतस्स एगट्ठियाणि भण्णंति- तं० 'नायं आहरणंतिय गाहा (५२-३४) नायंति वा दिट्ठंतोत्ति वा आहरणंति वा ओवम्मंति वा निदरिसणंति वा एगट्ठा, नज्जंति अणेण अत्था तेण नायं, आहरिज्जंति अणेण अत्था तेण आहरणं, दीसंति अणेण अत्था

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ४० ॥

तेण दिट्ठंतो, उवमिज्जेति अणेण अत्था तेण ओवम्मं, निच्छियं दरिसिंति अणेण अत्था तेण निदरिसणं, एगट्ठिया गता । इदाणिं एतस्स दिट्ठंतस्स दुविधं विधाणं भण्णइ, तं०-'चरियं च कप्पियं च०' (५३-३४) चरियं नाम जं सव्वं सद्भूतं वत्तं तेण जस्स दिट्ठंतो कीरइ तं चरियं, कप्पियं नाम जं जस्स असंतेण भावेण दिट्ठंतो कज्जइ, एत्थ गाहा—'जह अम्हे तह तुम्हे तुब्भेवि य होहिहा जहा अम्हे । अप्पाहेइ पडंते पंडुअपत्तं किसलयाणं ॥ १ ॥' एयं कप्पियं, एतेसिं चरित-कप्पियाणं एक्केक्कं चउव्विहं भवइ, तं०नाय [आहरणं] दिट्ठंतो ओवम्मं निदरिसणंति, इदाणिं पुणरवि चरितकप्पियं दुविहं चउव्विहं भवइ, एत्थ गाहा-'चरियं च कप्पियं च०' गाहा (५३-३४) कहं चउव्विहं भवइ?, तंजहा-आहरणो आहरणदेसे आहरणदोसे उवण्णासो वयणे. एतेसिंपि एक्केको भेदो दुविधो, तं०- चरियं च कप्पियं च, तत्थ आहरणदारं भण्णइ, तं चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-अवाये उवाये ठवणाकम्मे पडुप्पण्णविणासी, तत्थ अवायेवि चउव्विहे पण्णत्ते, तं०- दव्वावाए खेत्तावाए कालावाए भावावाए, तत्थ दव्वावाए उदाहरणं दो भायरो, तेहिं सुरट्ठं गंतूण सहस्सिओ नउलओ रूवगाण विढविओ, ते य सयं गामं संपत्थिया, एयंता णउलयं वारएण वहंति. जया एगस्स हत्थे तदा इतरो चिंतेइ-मारेमि णं, णवरमेते रूवगा ममं होंतु, एवं बितिओ चिंतेइ-जहा अहमेयं मारेमि, ते परोप्परं वधपरिणता ण य अज्झवसिताओ, जाहे (व) सग्गामस्स समीपं संपत्ता, तत्थ तओ जेट्ठतरस्स पुणरावत्ती जाया-धिरत्थु ममं जेण मए दव्वस्स कए भाउणो विणासो चिंतिओ. परुण्णो, इतरेण पुच्छिओ, कहिए भणइ-ममवि एतारिसं चित्तं होस्सुं, ताहे ते एतस्स दोसेण अम्हाणं एतंति काउं तेहिं सो नउलओ दहे छूढो, ते य घरं गया, सो य नउलओ तत्थ पडंतो मच्छेण गिलिओ. सो य मच्छो मेएण मारिओ. वीहीए य ओयारिओ, तेसिं च भाउगाणं गेहिणी

दृष्टान्त-भेदाः

॥ ४० ॥

मायाए वीभीए पट्ठविया जहा मच्छे आणेहि जा भाउगाणं ते सिज्झंति, ताए य समावत्तीए सो चेव मच्छो आणिओ, चेडीए फालेतीए नउलओ दिट्ठो, चेडीए चिन्तियं-एस नउलो मम चेव भविस्सइत्ति उच्छंगे कओ, थविज्जंतो य थेरीए दिट्ठो, माऊय तीए भणितं-किमेतं तुमे उच्छंगे कयं ?, साचि लोभे गया न साहइ, ताओ दोऽवि परोप्परं पहताओ, सा थेरी ताए चेडीए तारिसे मम्मपदेसे आहता जेण तक्खणमेव जीवियाओ ववरोविया, तेहिं तु दारएहिं सो कलहवइयरो नाओ, सो नउलओ दिट्ठो, थेरिगा य पाणविमुक्का निसट्ठं धरणियले पडिया दिट्ठा, इमो सो अणत्थो अत्थोत्तिकाऊणं तं दारियं एगस्स गोहस्स दाउं तस्स अवातेण दोवि भायरो पव्वइया, तेहिं दारएहिं तन्निमित्तं अवातो कओ, थेरियाए न कओ, एवमत्थजायस्स कारणगाहियस्स अवातो करणीओ, एतदेव विनाशकारणं भवइ इह परलोए य, एरिसं दव्वओ आहरणं भवइ । इदाणिं खेत्तावायो, खेत्तावायो नाम जो जतो अवायंति काऊण गच्छइ जहा दसारा महुराओ जरासिंधुरायभयात् बारवइं गया, एवं साहुणावि असिवादीहिं कारणेहिं खेत्तावाओ कायव्वो, तो नित्थरेहिंति, जहा दसारा णित्थिण्णा । कालावायो नाम जो जस्स कालस्स अवायं करेइ, जहा दीवायणपरिव्वायओ दारवइं मा विणासेहामित्ति तेण अवातेण पट्ठितो उत्तरापहं गतो, एवं साहुणावि दुब्भिक्खस्स अवातो असिवाणं च कायव्वो, ण उ अपुण्णे आगंतव्वं मूढत्ताए। भावावाए उदाहरणं खमओ, एको खमओ चेल्लएण समं भिक्खायरियं गओ, तेण तत्थ मंडुक्कलिया मारिया, चेल्लएण भणियं-मंडुक्कलिया ते मारिया, अरे दुट्ठसेह ! चिरमइया चेव सा, ते गया, पच्छा रत्तिं आवस्सए आलोएंताण खमएण सा मंडुक्कलिया णालोइया, ततो चेल्लएण भणियं- खमगा ! तं मंडुक्कलियं आलोएहि, खमओ रुट्ठओ तस्स चेल्लणस्स खेल्लमयं घेत्तूण उद्धाइओ, असिआलयखंभे आवडिओ वेगेण एंतो, मओ जोतिसिएसु उववण्णो, तओ चइत्ता दिट्ठीविसाणं

॥ ४१ ॥

कुले दिट्ठीविसो सप्पो जाओ, तत्थ य परिहिंडंते, ण नगरे, तत्थ राइपुत्तो सप्पेण खइओ, आहितुंडितेण य विज्जाए सव्वे सप्पा आवाहिया, मंडले य पवेसिया, भणियाऽणेण-सव्वे गच्छंतु, जेण पुण रायपुत्तो खइओ सो अच्छउ, सव्वे गया, एगो ठिओ, सो भणिओ-अहवा विसं आपिव अहवा एत्थ अग्गिमि निवडाहि, सो य अगंधणो, सप्पाणं किल दो जातिओ-गंधणा अगंधणा य, ते गंधणा माणिणो, ताहे सो अग्गिमि पडिओ, न य तेण तं वंतयं पच्चावीतं, रायपुत्तोवि मओ, पच्छा रण्णा पदुट्ठेण घोसावियं रज्जे-जो मम सप्पसीसं आणेइ तस्साहं दीणारं देमि, पच्छा लोगो दीणारलोभेण सप्पे मारेउं आढत्तो, तं च कुलं जत्थ सो खमओ उप्पण्णो तं जाइसरत्ति रत्तिं हिंडति, दिवसओ न हिंडति, मा जीवे दहिहामित्तिकाउं, अण्णया आहिंडगेहिं सप्पे मग्गंतेहिं रत्तिं चएण परिमलेण तस्स खमगसप्पस्स बिलं दिट्ठंति, दारट्ठिओ ओसहीए आवाहेइ, चिंतेइ-दिट्ठो मे कोहस्स विवागो, तो जइ अहं अभिमुहो निग्गच्छामि तो दहिहामि, ताहे पुंछेण आढत्तो णिप्फिडिउं, जत्तियं निप्फिडेइ तावइयमेव आहितुंडितो छिंदइ, जाव सीसं छिण्णं, सो य सप्पो देवयापरिगहिओ, देवताए रण्णो सुमिणए दारिसणं दिण्णं, जहा मा सप्पे मारेहि, पुत्तो ते भविस्सइत्ति, तस्स दारगस्स नागदत्तं नामं करेज्जाह, सो य खमगसप्पो मरित्ता तेण पाणपरिच्चागेण तस्स चेव रन्नो पुत्तो जाओ, जाए दारए णामं से कयं नागदत्तो, खुड्डलओ चेव सो पव्वइओ, सो य किर तेण तिरियाणुभावेण अतीव छुधालुओ दोसीणवेलाए चेव आढवेइ भुंजिउं जाव सूरत्थमणवेला, उवसंतो धम्मसंठिओ य, तंमि य गच्छे चत्तारि खमगा, तं०-चाउमासिओ तिमासिओ दोमासिओ मासखवओ य, रत्तिं च देवता वंदिया आगया, चाउमासिओ पढमठिओ, परओ तिमासिओ, तस्सवि परओ दोमासिओ, तस्सवि परओ मासिओ, ताण परओ खुड्डलओ सव्वेसिं, त सव्वे खमगा अतिक्कमित्ता ताए देवताए खुड्डओ वंदिओ, पच्छा ते

॥ ४२ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [१]

खममा रुट्ठा, णिग्गच्छंती य गहिया चाउम्मासियखमएण पोत्ते, भणिया य तेण-कडपूयणि ! अम्हे तवच्चरणिणो ण वंदसि, एयं कूरभोयणं वंदसित्ति, सा देवया भणइ-अहयं भावखमयं वंदामि, न पूयासक्कारपरे माणिणो वंदामि, पच्छा ते चेल्लगं तेण अमरिसं वहंति, देवता चिंतेइ-मा एते चेल्लगं खरंटेहिंति, तो सण्णिहिता चेव अच्छामि, ते ताहं पडिचोदेहामि, बितियदिवसे य चेल्लओ संदिसावेऊण गओ तोसीणस्स, पडियागतो आलोएत्ता चाउम्मासियखमयं निमंतेइ, तेण पडिग्गहम्मि निच्छूढं, चेल्लओ भणइ-मिच्छामि दुक्कडं जं तुज्झ मए खेलमल्लओ ण पणामिओ, तं णेण उप्पराहुत्तो चेव फेडेत्ता खेलमल्लए छूढं, एवं जाव मासिएणवि णिच्छूढं, तं तेणं चेव फेडियं आउगलित्ता, लंबणं गेण्हामित्तिकाउं खमएण चेल्लओ बाहुंमि गहिओ, तं तेण तस्स चेल्लगस्स अदीणमणसस्स (विसहमाणस्स) विसुद्धपरिणामस्स लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खएण उवसमेण च केवलणाणं समुप्पण्णं, ताहे सा देवता भणइ- कहं तुमे वंदियव्वा ? जेणेवं कोहाभिभूयां अच्छह, ताहे ते खवगा संवेगसमावण्णा मिच्छामि दुक्कडंति अहो बालो उवसंतो अम्हेहिं पावकम्मेहिं आसादिओ, एवं तेसिं सुहज्झवसाणाणं केवलणाणं समुप्पण्णं, एवं अवायो कातव्वो कोहादीहिं ॥ तहा जीवचिंताए सेहादीणं अवाओ दरिसिज्जइ, संवेगनिमित्तं सम्मत्तथिरीकरणनिमित्तं च, जहा जस्स वाइणो जीवो दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ य निच्चो तस्स सुहदुक्खेहिं जीवो न संजुज्जइ, संसारमोक्खो वा न भवइ, कहं ?, सो तेहिं कूडत्थो अचलो मओ, अचलो सुहदुक्खाइएहिं कारणेहिं ण परिणमइ, जो सुही तेण सुहिणा चेव भवियव्वं, तहा जस्स वाइणो जीवो एगंतेण अणिच्चो खणे खणे उप्पज्जइ विणस्सइ य, तस्स य सव्वसो चेव खणे खणे उप्पण्णस्स विणट्ठस्स य अवत्थिती चेव नत्थि, अणवट्ठियस्स सुहदुक्खपयोगो न भवइ, जम्हा एते दोण्णिवि निच्चानिच्चपक्खा असव्वण्णुदिट्ठा तम्हा इह जिण-

॥ ४३ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [१]

पवयणे जीवो दव्वट्ठयाए निच्चो पज्जवेहिं अणिच्चो, एत्थ दिट्ठंतो- सोवण्णयंगुलेज्जगं, जहा सुवण्णमयस्स अंगुलेज्जगस्स कुंडलत्तेण उप्पण्णस्स उप्पाओ भवइ, अंगुलेज्जगत्तणेण विगमो, सुवण्णत्तणेण अवट्ठिइ चेव, जीवदव्वस्सवि मणुस्सभावेण उप्पण्णस्स माणुसत्तेण उप्पाओ, देवादीणं अण्णयरगेण विगमो भवइ, जीवत्तणे अवट्ठिओ चेव, तम्हा जिणपवयणे जीवो दव्वट्ठयाए णिच्चो पज्जवेहिं अणिच्चोत्ति, अवाओत्ति दारं गतं। इदाणिं उवाएत्ति दारं- सो य दव्वादी चउव्विहो, तत्थ दव्वोवायो जहा धातुवाइया उवाएण सुवण्णं करेंति, एवं तारिसे संघकज्जे समुप्पण्णे उवाएण जोणीपाहुडाइयं पडिणीयं आसयंति, विज्जातिसएहिं वा एरिसे दरिसेइ जेण उवसमेइ। खेत्तोवाओ- जहा नावाए पुव्ववेतालीओ अवरावेयालिं गम्मइ, एवं विज्जाइसएहिं अद्धाणाइसु नित्थरियव्वं। कालउवाओ जहा नालियाए कालो नज्जइ, एवं सुत्तत्थेहिं एत्तिएहिं परियट्टिएहिं एत्तिओ कालो गओ भवइ, एवं जाणियव्वं। भावउवाए उदाहरणं, सेणिओ राया भज्जाए भण्णइ-जहा मम एगथंभं पासादं करेहि, तेण वड्ढइणो आणत्ता, गया कट्ठछिंदगा, तेहिं अडवीए महइमहालओ दुमो दिट्ठो, जेणेस परिगहिओ सो दरिसावेइ जइ अप्पाणं तो णं न छिंदामो, अह न देइ दरिसावं तो छिंदामोत्ति, तहा तेण रुक्खवासिणा वाणमंतरेण अभयस्स दरिसाओ दिण्णो, अहं रण्णो एगखंभं पासादं करेमि सव्वोउगं च आरामं करेमि सव्ववणजातीउववेयं, मा छिंदहत्ति, एवं तेण कओ पासाओ। अण्णदा एगाए मातंगीए अकाले अंबडोहलो, सा भत्तारं भणइ- मम अंबयाणि आणेहि, तदा य अकालो अंबयाणं, तेण ओणामणीए विज्जाए डालं ओणामियं, अह ताणि गहियाणि, पुणो य उण्णामिणीए उण्णामियं, पभाए रण्णा दिट्ठं, न दीसइ, को एस मणूसो अइगओ?, जस्स एरिसी सत्ती सो मम अंतउरं अवि धरिसेहित्तिकाउं अभयं सद्दावेऊण भणइ- सत्तरत्तस्स अब्भंतरे जइ चोरं णाणेसि तो ते नत्थि

जीवियं, ताहे अभओ गवेसेउमाढत्तो, नवरं एगंमि पएसे गोज्झो रमितुकामो, मिलइ लोगो, तत्थ गंतुं अभओ भणइ—जाव गोज्झो मंडइ अप्पाणं ताव ममेगं अक्खाणगं सुणेह, जहा कम्मि य नगरे एको दरिद्दसेट्ठी परिवसई, तस्स धूता वड्ढकुमारी अतीव रूवस्सिणी य, सा य वराय कामदेवं अच्चेइ, सा य एगंमि आरामे चोरियगं पुप्फाणि अच्चेइ, आरामिएण दिट्ठं, कड्ढिउमाढत्ता, तीए य सो भणिओ--मा मइं कुमारिं विणासेहि, तुहवि भगिणीभगिणिज्जाउ अत्थि, तेण भणिया-एक्कहा ते मुयामि,जइ नवरं जंमि दिवसे परिणिज्जसि तं दिवसं चेव भत्तारेण अणुग्घाडिया समाणी मम समासं एहिसी तो मुयामि, तीए भणिओ-एवं भवउत्ति, तेण विसज्जिया, अण्णदा परिणीया, जाहे अपवरकं पेसिआ ताहे भत्तारस्स सब्भावो कहिओ, मुक्का, गच्छंतीय अंतरा रक्खसो दिट्ठो जो छण्हं मासाणं आहारेइ, तेण गहिया, कहिए मुक्का (एत्थंतरा चोरेहिं पारद्धा जहावत्ते कहिये मुक्का) गया आरामियस्स समासं, (तेणवि जहावत्ते अक्खाए मुक्का) अणहसमग्गा गता, ताहे अभओ तं जणं पुच्छइ--अक्खाह इत्थ केण दुक्करं कयं?, ताहे इस्सालुगा भणंति-भत्तारेण दुक्करं, छुयालुया भणंति-रक्खसेणं, पारदारिया भणंति-मालाकारेणं, हरिएसेण भणियं-चोरेहिं, पच्छा गहिओ, जहा एसो चोरेत्ति, सेणियस्स उवणीओ, पुच्छिएण सब्भावो कहिओ, ताहे रण्णा भणियं--जइ नवरं एयाओ विज्जाओ देहि तो ण मारेमि, देमित्ति अब्भुवगए आसणि ठिओ पढइ, ण ठाइ, राया भणइ-किं न ठाइ ?, ताहे मातंगो भणइ--जहा अविणएण पढसि, अहं भूमीए, तुमं आसणे, णीयरे उवविट्ठो, ठियाओ, सिद्धाओ य विज्जाओ, जहा अभएण तस्स चोरस्स उवाएण भावो णाओ, एवं सेहाणं उवट्ठेंताणं भावो गवेसियव्वो-किं एते पव्वावणिज्जा नवत्ति ?, 'अट्ठारस पुरिसेसु वीसं इत्थीसु दस नपुंसेसु' तओ उवरिं पंचकप्पे भणिहिति, तहा जीवचिंताएवि सेहादीण ता उवाओ दरिसिज्जइ-जीवो हि पच्चक्खओ

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

अणुवलब्भेमाणो सुहदुक्खइच्छाओ सपुरिसकारादीहिं कारणेहिं साहिज्जइ, अत्थित्ति पच्चक्खं दीसए, लोए विज्जमाणो देवदत्तो दव्वओ अस्सपट्ठातो हत्थिखंधं दुरुहइ खित्तओ गामाओ नगरं गच्छइ कालओ सरदकालाओ हेमंतकालं संकमइ भावे कोहाओ माणं संकमइ, एवं मायाई, जीवोऽवि माणुस्ससरीरं विप्पजहाय देवसरीरं उवचिणाइ, एस दव्वओ, खित्तओवि मणुस्सभवे तस्स अण्णाओ ओगाहणाओ अण्णाओ देवभवे, कालओवि स एव मणुस्सभवे परिमितवरिसायू भवित्ता देवभवे पलिओवमट्ठिइओ जायइ, भावओवि अट्ठज्झाणी भवित्ता धम्मज्झाणी भवइ, एवमादीहिं किंचि पच्चक्खओ अणुवलब्भमाणोऽवि जीवो लक्खणयो गेण्हियव्वो, यो उवयोगलक्खणेत्ति भण्णइ, एत्थ दिट्ठंतो घडो, जहा अजीवदव्वस्स घ स्स वट्टमाणअतीतानागताए काले उवओगो नत्थि, ण य सो जीवो इच्छिज्जइ, कम्हा ?, उवयोगलक्खणाभावो, जीवस्स य उवयोगो लक्खणं फुडं दीसइ, तम्हा जो उवयोगलक्खणो अत्थो सो जीवोत्ति, भणियं च—"उवयोगजोगइच्छाविलक्खणाणबलचेट्ठियगुणेहिं । अणुमाणा णायव्वो अग्गिज्झो इंदियगुणेहिं ॥१॥ जो चिट्ठइ कायगतो जो सुहदुक्खस्स वेदणा णिच्चं । विसयसुहजाणओवि य सो अप्पा होइ णायव्वो ॥ २ ॥" एत्थ सीसो आह—जइ उवयोगो जीवलक्खणं तेण एगिंदियाणं अजीवत्तं भवइ, कहं ?, जम्हा तेसिं उवयोगस्स अभावो, एत्थ दिट्ठंतो घडओ, जहा तीयाणागएसु कालेसु न कदावि (तस्स) उवयोगो विज्जइ तहा एगेंदियाण जीवाण उवयोगो न विज्जइ, तम्हा उवयोगस्स अभावे एगेंदियाणं ते अजीवया आवण्णा, आयरिओ आह—अहो ! ताव समयबाहिराणि वयणाणि मन्नयसि, णणु सव्वण्णुपणीए मग्गे परूवियं, जहा ' सव्वजीवाणंपि य णं अक्खरस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडिओ ' अत्थऽक्खरं णाम चेयण्णंति वा उवयोगोत्ति वा अक्खरत्ति वा एगट्ठा । तत्थ सुयणाणं आभिणिबोहियणाणं च पडुच्च भण्णति-सव्वसुद्धो

उवयोगो अणुत्तरोववाइयाणं, तओ उवरिमगेवेज्जाणं असंखेज्जगुणपरिहाणी, एवं असंखेज्जगुणपरिहाणीए सेढीए जाव पुढविकाइया ताव भाणियव्वो, तम्हा एगिंदियाण उवयोगस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडिओ, तओ सो चेव अणंतभागो तेसिं मइणाणं सुयणाणं च भण्णइ, तम्हा जं भणसि जहा तेसिं उवयोगो चेव नत्थि, उवयोगअभावेण य तेसिं अजीवत्तं भवतित्ति तं मिच्छा, उवाउत्ति-दारं गतं। इदाणिं ठवणाकम्मित्ति दारं भण्णति, तं च कंचि अत्थं तारिसं परूवेऊणं अत्तरुइयस्स अत्थस्स परूवणं करेइ एवं. जहा पुंडरीयज्झयणे पुंडरीयं परूवेऊण अण्णाणि मयाणि दूसियाणि, निव्वयणं च सव्वनयविसुद्धं पवयणमुवदिट्ठं, एवमादि ठवणाकम्मं भण्णइ, अहवा ठवणाकम्मे उदाहरणं--जहा एगंमि नगरे एगो मालागारो सण्णाइओ पुप्फे घेत्तूण वीहीए एइ, सो अतीव वच्चइओ, ताहे सो सिग्घं वोसिरिऊण सा पुप्फचितिया तस्सेव उवरि पल्लत्थिया, ताहे लोगो पुच्छइ किमेयं जेणेत्थं पुप्फाणि छड्डेसि?, ताहे सो भणइ अहं ओलोडिओ, एत्थं हिंगुसिवो णाम, एयं तं वाणमंतरं, हिंगुसिवं नाम वाणमंतरं, एवं जइ किंचि उड्डाहं पावणियं कयं होज्जा केणइ पमाएणं ताहे तहा पच्छादेतव्वं जहा पज्जन्ते पवयणुब्भावणा भवति, एवं जइ किंचिदेव जीवंचिताएवि परप्पवायी निग्गहट्ठाणं भणेज्जा तारिसं किंचि भासमाणस्स फलं होज्जा, तत्थ साहुणा तं तस्स वयं भासिज्जमाणमेवञ्जहा कायव्वं णयदिट्ठीए जेण परप्पवादी निप्पट्ठपसिणवागरणो भवति, ठवणाकम्मेत्ति दारं गतं। इदाणिं पडुप्पण्णविणासी णाम, जहा एगो वाणियओ तस्स बहुगाओ भगिणीओ भागिणेज्जा भाउज्जायाओ य, तस्स घरसमीवे राउलगा गंधव्विया संगीतं करेंति दिवसस्स तिण्णि वारे, ततो वाणियगमहिलाओ तेण गीतसद्देण तेसु गंधव्विएसु अज्झोववण्णाओ किंचि कम्मादाणं न करेंति, पच्छा तेण वाणियएण विचिंतितं- जहा विणट्ठा एयाउत्ति, को उवाओ होज्ज जह ण विणस्संतित्तिकाउं

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ ४८ ॥

मित्तस्स कहियं, तेण भणियं- अत्तणो घरसमीवे वाणमंतरं कारावेहि, तेण कयं, ताहे पाडहियाण रूवगा दाउं वावारेइ. जाहे गंधव्विया संगीययं आढवेंति ताहे ते पाडहिया पडहे देंति, एवं सो दिणे दिणे फुसेंति गायंति य, ताहे तेसिं गंधव्वियाणं विग्घो जाओ, पडह-सद्देण न सुव्वइ गंधव्वो सद्दो, तओ ते राउले उवट्ठिया, वाणियओ सद्दाविओ, किं विग्घं करेसित्ति?, भणइ-मम घरे देवो तस्साहं तिन्नि वेले पडहे दवावेमि, ताहे ते रण्णा भणिया-जहा अम्हत्थ गायह, किं देवस्स दिणे दिणे अंतराइयं कज्जइ?,एवं आयरिएणावि सीसेसु आगारीसु अज्झोववज्जमाणेसु तारिसो उवाओ कायव्वो जहा तेसिं तस्स दोसस्स निवारणा भवइ, एवं जीवचिंताएवि नाहियवाइयाणं अदूरसामंते ठिच्चा जीवस्स अत्थिभावो पण्णविज्जमाणो जइ केइ रत्तपडा भणेज्जा-सव्वे भावा चेव नत्थि, किं पुण जीवोऽवि, तत्थ भण्णति- जं एतं ते वयणं जहा सव्वभावा नत्थि एयं वयणं नत्थि?, एसवि भावो , जति भणइ-अत्थि तो जं भणइ सव्वभावा नत्थित्ति न जुज्जइ, अह एतं नत्थि तो अम्हं सिद्धो चेव पक्खो, केणऽम्ह पक्खो दूसिउत्ति, एवं सो एवमाईहिं हेऊहिं तहा कायव्वो जेण पहाय पहं न एइ,पडुप्पण्णविणासित्तिदारं गयं। समत्तं च आहरणत्ति दारं। इदाणिं आहरणे तद्देसत्ति दारं, से चउव्विहे,तं०-अणुसिट्ठि उवालंभे पुच्छा णिस्सावयणे, अणुसट्ठीए सुभद्दा उदाहरणं, चंपाए णगरीए जिणदत्तस्स साव-गस्स सुभद्दा नाम धूया, सा अतीव रूववती, सा य केणइ उवासएण दिट्ठा, सो ताए अज्झोववण्णो तं मग्गइ, सावओ भणइ-णाहं मिच्छादिट्ठिस्स धूयं देमि, पच्छा सो साहूणं सगासं गओ, धम्मो यऽणेण पुच्छिओ, कहिओ साहूहिं, ताहे कवडसावयधम्मं पगहिओ, तत्थ से सब्भावेण चेव उवगतो धम्मो, ताहे तेण साहूणं सब्भावो कहिओ, जह मए दारियाकए णं (कयं), णायं जहा कवडेण कज्जिहिइ,अण्णाणि मे देह अणुव्वयाणि,लोए पगासो सावओ जाओ,तओ काले गए वरगा मालया पट्ठवेन्ति, ताहे तेण जिणदत्तेण

आहरण-देशेऽनुष्ठिः शास्तिः

॥ ४८ ॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ ४२ ॥

सावओत्तिकाऊण सुभद्दा दिण्णा, पाणिग्गहणं वत्तं, अण्णदा सो भणइ- दारियं घरं नेमि, ताहे सो सावओ तं भणइ- तं सव्वं उवासगकुलं, एसा तं नाणुवत्तिहिइ, पच्छा छोभयं वा लभेज्जत्ति, णिबंधे विसज्जिया, णेऊण जुयं घरं कयं, सासुयणणंदाओ पदुट्ठाओ भिक्खूण भत्तिं न करेइत्ति, अण्णदा ताहिं सुभद्दाए भत्तारस्स अक्खायं, एसा सेतपडेहिं समं संसत्ता, सावओ न सद्दहइ, अण्णदा खमगस्स भिक्खागतस्स अच्छिसि कणुओ पविट्ठो, सुभद्दाए जिब्भाए सो कणुओ एडिओ, सुभद्दाए य चीण-पिट्ठेण तिलगो कओ, सो य तस्स खमगस्स निडाले लग्गो, उवासियाहिं सावगस्स दरिसिओ, सावएण पत्तियं, ण तहा अणुवत्तइ, सुभद्दा चिंतेइ--किं अच्छेरयं जं अहं गिहत्थि छोभयं लभामि ?, जं पवयणस्स उड्डाहो एयं मि दुक्खइत्ति, सा रत्तिं काउस्सग्गेण ठिया, देवो आगओ, संदिसाहि किं करेमि ?, सा भणइ-एतं मे अजसं पमज्जाहित्ति, देवो भणइ—' एवं भवउ ' अहमेतस्स नगरस्स चत्तारिवि दाराइं ठएहामित्ति, जा जा पतिव्वया होहिति सा एयाणि दाराणि उग्घाडेहिति, तत्थ तुमं चेव एक्का उग्घाडिहिसि ताणि कवाडाणि, सयणस्स पच्चयनिमित्तं चालणीए उदगं छोढूण दरिसिज्जासि, ततो य चालणीओ फुसितमवि ण गलेहिति, एवं आसासेऊण निग्गओ देवो, णगरदाराणि अणेण ठइयाणि, णगरजणो य अइण्णो, इओ य आगासे वाया-भो णागरजणा ! मा णिरत्थयं किलिस्सह, जा सीलवती चालणीए से छूढं उदगं न गलइ सा तेण उदगेण दारं अच्छोडइ ततो दारं उग्घडिज्जिस्सति, तत्थ बहुयाओ सेट्ठिसत्थवाहादीण धूयासुण्हाओ ण सक्केंति पिलियं पलभिउं, ताहे सुभद्दा सयणं आपुच्छइ, अविसज्जेंताण य चालणीए जया उदगं छोढूणं तेसिं पाडिहेरं दरिसेइ तओ विसज्जिया, उवासगाओ एवं वोत्तुमाढत्ता-जहा एसा समणपडिलेहिया उग्घाडेहिति, ताहे चालणीए उदगं छूढं, न गिलइ, पिच्छित्ता विसण्णा, ततो जणेणं सक्कारिज्जंती तं-

अनुशासने सुभद्रा

॥ ४२ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

दारसमीवं गता, ' णमो अरहंताणं ' भणिऊण उद्दएण अच्छोडिआ कवाडा, महया सद्देण कोंकारवं करेमाणा तिण्णिवि गोपुर-दारा उग्घाडिया, उत्तरदारं चालणीपाणिएण अच्छोडेऊण भणइ—' जा मए सरिसी सीलवइ होहिइ सा एतं दारं उग्घाडिहिइ,' तं अज्जवि ढक्कियं चेव अच्छइ, पच्छा णागरजणेण साहुकारो कओ-अहो महासई, एवं पियदढधम्मा वेयावच्चाइसु अणुसासियव्वा, उज्जमंता अणुज्जमंता य संठवेतव्वा, जहा सीलवइताणं इहलोगे एरिसं फलमिति । तहा जीवचिंताए जेसिं पावादियाणं जीवो अत्थि अम्हवि जिणप्पणीए मग्गे जीवो अत्थि, इदाणिं पुण जं भणह सो अकत्ता एवं न जुज्जइ, कम्हा?, जेण सुहदुक्खादीणि अणुभवंतो दीसइ, जइ तेणं तं कम्मं न कयं केण तं कयं? जं सो सुहदुक्खं वेदेहित्ति, एवमादीहिं हेऊहिं अणुसासियव्वो, अणुसा-सणा गता। इदाणिं उवालंभोत्ति दारं, तत्थ उदाहरणं-मिगावती, देवीए वत्तव्वया जहा आवस्सए दव्वपरंपरए भणिया तहेव पव्वइया, अज्जचन्दणाए सिस्सिणी दिण्णा, अण्णदा य स भगवं विहरमाणो कोसंबीए समोसरिओ, चंदाइच्चा सविमाणेहिं आगया, चउपोरसीयं समोसरणं काउं अत्थमणकाले पडिगता, तओ मिगावती संभंता अतिविकालीकयत्तिभणिऊण साहुणीहिं सहिया जाव अज्जचंदणाए उवालब्भति, जहा एवं उत्तमकुलपसूया होइऊण एवं करेसि, अहो न लट्ठयं, ताहे पणमिऊण पाएहिं पडिया, परमेण विणएण खामेइ, खमह मे अज्जाओ!, णाहं पुण एवं करेहामित्ति, अज्जचंदणा य तंमि किर समए संथारोवगता पसुत्ता, इतरीए परमसंवेगगताए केवलणाणं समुप्पण्णं, परमं च अंधकारं वट्टइ, सप्पो य तेणंतएण आगच्छइ, पवत्तीणीए य हत्थो लंघमाणो उप्पाडिओ, पडिबुद्धा य अज्जचंदणा, किमेयं?, सा भणइ-दीहजातिओ, कहं तुमं जाणसि?, अतिसएण, पडिवाई अप्पडि-वाइत्ति ?, अप्पडिवाईत्ति भणिए सावि संभंता खामेइ, एवं पमादयंतो सीसो उवालभितव्वो । तहा जीवचिंताएवि णाहिय-

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ५१ ॥

वादी उवालभितव्वो. जं एयं कुसत्थं देवाणुप्पिएण जीवस्स अत्थिभावपडिसेहणं उच्चारियं तं जीवस्सेव पभावेण, कम्हा?, जम्हा अचेयणा घडादयो भावा जीवभावपडिसेहगाणि सत्थाणि न तरंति उच्चारेउं, तम्हा जीवस्सेव तं सामत्थं, जं तुमं एयं कुसत्थं जीवभावपडिसेहगं उच्चारेसित्ति, भणियं च-"जस्सेव पभावुम्मिल्लियाइं तं चेव हयकयग्घाइं। कुमुदाइं अप्पसंभावियाइं चंद उवहसंति ॥१॥" उवालंभोत्ति दारं गतं। इदाणिं पुच्छा, जहा कोणिएण रण्णा सामी पुच्छिओ-चक्कवट्टिणो अपरिचत्तभोगा कालमासे कालं किच्चा कहिं उववज्जंति?, सामिणा भणियं-अहे सत्तमाते उववज्जंति, ताहे भणइ-अहं सत्तमीए न किं उववज्जिस्सामि?. सामिणा भणियं-तुमं छट्ठपुढवीए, सो भणइ-अहं सत्तमीए किं ण उववज्जिस्सामि?, सामिणा भणियं-सत्तमीए चक्कवट्टी उववज्जंति, सो भणइ-अहं किं ण होमि चक्कवट्टी? ममवि चउरासीइं रहाईण सयसहस्साणि, सामिणा भणियं-तव रयणाणि नत्थि, ताहे सो कित्तिमाइं रयणाइं करेत्ता ओयवेउमारद्धो, तिमिसगुहाए पविसिउं पवत्तो, कयमालिएण वारिओ, भणिओ य-वोलीणा चक्कवट्टिणो बारसवि, णस्सिहिसि तुमं, वारिज्जंतो न ठाइ य, पच्छा कयमालिएण आहओ, मओ य छट्ठिं पुढविं गओ, एवं बहुस्सुता बज्झागमा आयरिया अट्ठाणि हेऊणि पुच्छियव्वा, पुच्छित्ता य सक्कणिज्जाणि समारियव्वाणि, असक्कणिज्जाणि परिहरियव्वाणि, भणियं च-"पुच्छह पुच्छावेह य पंडिए साहवो चरणजुत्ते। मा मयलेवविलित्ता पारत्तहियं ण याणिहिह ॥१॥" तहा जीवचिंताएवि णाहियवादिया भण्णंति-केण हेतुणा देवाणुप्पिया! एवं भणह जहा णत्थि जीवादिया भावा, सो य णं भणेज्ज-अपच्चक्खत्तणेणं, जइ पच्चक्खमेव करयल इव आमलगं दीसेज्जा तो नवरिं अहं सद्दहेज्जा, एवं भणंतो सो वादी घडिभण्णइ-जदि जं तुम्हारिसेहिं चक्खुदंसीहिं णोवलब्भइ तं णत्थि एवं हिमवंतस्स पव्वयस्स पलपरिमाणेण गणिज्जमाणस्स पलग्गपरिमाणं पव्वते न लब्भइ,

पृच्छायां कोणिकः ॥ ५१ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [१]

किं तस्स पलग्गपरिमाणस्स अभावो भवउ ?, तम्हा जं भणसि-जं इहं पच्चक्खं नोवलब्भइ तं नत्थित्ति तं मिच्छा, पुच्छत्ति दारं गतं। इदाणिं निस्सावयणे गागलियादओ जह पव्वइया तावसा य एवं जहा वइरस्सामिउप्पत्तीए आवस्सए तहा वण्णेत्ता गोतमसामिस्स य अद्धिती, तत्थ भगवता भणितं-चिरसंसिट्ठो सि य गोतमा !, अण्णे य तण्णिस्साए अणुसासिया दुमपत्तए अज्झयणे, एवं जे असहणा ते अण्णमइवसंपण्णणिस्साए अणुसासियव्वा। तहा जीवचिंताएवि जस्स एस पक्खो जहा नत्थि सव्वभावा ते अण्णावदेसेणं पण्णविज्जंति, इयरहा रागदोसयत्तिकाऊणं पदूसेज्जा, तेण इमाए परिवाडीए पण्णविज्जंति, जस्स वादिणो सव्वभावा सुण्णा तस्स दमादीणं गुणाणं णत्थि फलं, एवमाईहिं कारणेहिं अण्णं चेव निस्साए पण्णविज्जइ, आहरण-देसोत्ति दारं गतं। इदाणिं, आहरणतद्देसोत्ति दारं, से य चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा-अहम्मजुत्ते पडिलोमो अत्तोवण्णासे दुरुवणीए। तत्थ अहम्मजुत्ते उदाहरणं-चाणक्केण नंदे उत्थाविते चंदउत्ते य रायेण पट्ठविए एवं सव्वं वण्णेत्ता जहा सिक्खाए, तत्थ नंदसंतेहिं मणुस्सेहिं सह सो चोरग्गाहो मिलिओ नगरं मुसइ, चाणक्कोवि अण्णं चोरग्गाहं ठविउकामो तिदंडं गहिऊण परिवाय-गवेसेण णगरं पविट्ठो, गओ नलदामकोलियसगासं, उवविट्ठो करणसालाए अच्छइ, तस्स य दारओ मक्कोडएण खइओ, तेण कोलिएण बिलं खणित्ता दड्ढं, ताहे चाणक्केण तं भण्णइ-एते किं डहसि ?, कालिओ भणइ-जइ एते समूलजाता न उच्छातिज्जंति तो पुणोवि खाइस्संति, ताहे चाणक्केण चिंतियं-एस मए लद्धो चोरग्गाहो, एस (चोरे) नंदत्तणे य समुद्धरिस्सइ, चोरग्गाहो कओ, तेण खंडिया विस्संभिया, अम्हे संमिलिया मुसामोत्ति, तेण अण्णेवि अक्खाया जे जत्थ मुसगा, बहुगा सुहतरायं मुसीहामोत्ति, ताहे ते तेण चोरग्गाहेण मेलिऊण सव्वेवि मारिया, एवमधम्मजुत्तं न भणितव्वं न कातव्वंति, तहा जीवचिन्ताएवि कयाइ तारिसं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ५३ ॥

पावयणियं कज्जं णाऊण तहारूवं सावज्जंपि कज्जेज्जा जहा उलुगेण सो परिव्वाइओ मोरीनउलीवाराहिएवमाइआहिं विज्जाहिं सो विलकूखीकओ, एवमादि, अधम्मजुत्तेत्ति दारं गतं । इदाणिं पडिलोमेत्ति दारं, तत्थ अभयपज्जोया उदाहरणं, एक्केण हिओ अवरेण पडिहिओ, एयं अक्खाणयं जहा जोगसंगहेसु सिक्खाए तहा चेव भाणियव्वं, एवं विज्जाएवि, जइ कोऽपि परप्पवादी भणेज्जा-मम दो रासी, तत्थ भणितव्वं-ण याणसि, तिण्णि रासी, ततियं रासिं ठावित्ता पच्छा वत्तव्वं-दो चेव रासिणो, मया एयस्स बुद्धि परिभूय भणियं जहा तिण्णि रासी एवमादी, पडिलोमेत्ति दारं । इदाणिं अत्तुवन्नासे, जहा एगस्स रण्णो तलायं सव्वरज्जस्स आहारभूयं, तं च तलायं वरिसे२ भरियं भिज्जइ, ताहे राया भणइ-को सो उवाओ होज्जा ? जेणऽयं न भिज्जेज्जा, तत्थ एगो कविलिओ मणूसो भणइ-जइ नवरं महाराय ! एत्थ पिंगलो कविलियातो से दाढिया से सिस्से कविलयं, से जीवंतओ चेव जंमि ठाणे भिज्जइ तंमि ठाणे निक्खिप्पइ तो नवरं न भिज्जइ, पच्छा कुमारामच्चेण भणियं-महाराय ! एसो चेव एरिसो जारिसं भणइ, एरिसो नत्थि अण्णो, पच्छा सो तत्थेव निक्खाओ मारित्ता, एवं एरिसं न भणितव्वं जं अप्पवधाए भवइ । तहा जीवचिंताएवि ण तारिसं साहुणा भणियव्वं जेण दुस्साहिओ वेयालो इव अप्पणो चेव वहाए भवइ, एत्थ निदरिसणं जहा कोऽवि भणेज्जा-एगिंदिया सजीवा, कम्हा ?, जेण तेसिं फुडो उस्सासनिस्सासो दीसइ, दिट्ठंतो घडो, जहा घडस्स निज्जीवत्तणेण उस्सासनिस्सासो नत्थि, ताण उस्सासनिस्सासो फुडो दीसइ, तम्हा एते सज्जीवा, एवमादीहिं विरुद्धं न भासितव्वं, अत्तुवण्णासो नाम दारं गयं । इदाणिं दुरुवणीतत्ति दारं, तत्थ उदाहरणं-तच्चण्णिओ मच्छे मारेंतो रण्णा दिट्ठो, ताहे रण्णा भणिओ-किं मच्छे मारेसि?, तच्चण्णिओ भणइ-अचीलकं न सक्केमि पातुं, अरे तुमं मज्जं पियसि?, भणइ-महिलाए अत्थिओ न लहामि

प्रतिलोमात्मोपन्यास दुरुपनीताः ॥ ५३ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ ५४ ॥

(ठाउं), महिलावि ते?, भणइ-जायपुत्तभंडं कहं छड्डेमि?, पुत्तावि ते?, भणइ–किं खु खत्ताइं खणाति?, खत्तखाणओवि से, अण्णं किं खोडिपुत्ताणं कम्मं ?, खोडिपुत्ताऽवि से, किहइं कुलपुत्तओ बुद्धसासणे पव्वयइ?, एरिसं न भणियव्वं जेण अप्पाणतो भंडाविज्जइ पवयणं च उब्भामिज्जइ। तहा जीवचिंताए वादिणा तहा भणितव्वं वादे जेण न जिव्वइ परवाइणा, **दुरुवणीतंति दारं गयं, आहारणतद्दोसेत्ति दारं सम्मत्तं। इदाणिं उवण्णासोवणयणेत्ति दारं**, से य चउव्विहे पण्णत्ते,तव्वत्थु अन्नवत्थु पडिणिभे हेऊ, तत्थ तव्वत्थुए उदाहरणं-एगंमि देवकुले कप्पडिया मिलिया, भणंति-केण भे भमंतेहिं अच्छरियं किंचि दिट्ठं ?, तत्थ एको कप्पडिओ भणइ-मए दिट्ठंति, जइ पुण एत्थ समणोवासओ नत्थि तो साहामि, तओ सेसएहिं भाणियं-नत्थि समणोवासओ, पच्छा सो भणइ-मए हिंडंतेण पुव्ववेतालीए समुद्दस्स तडे रुक्खो महइमहंतो दिट्ठो, तस्सेगा साहा समुद्दे पइट्ठिया, एगा थले, तत्थ जाणि पत्ताणि जले पडंति ताणि जलचराणि भवंति, जाणि थले ताणि थलचराणि भवंति, ते कप्पडिया भणंति-अहो अच्छेरयं देवेण भट्टारएण निम्मितंति, तत्थेगो सावओ कप्पडिओ सो भणइ-जाणि मज्झे पडंति ताणि कि भवंति ?, ताहे सो खुड्डो भणइ-मया पुव्वं चेव भणियं-जइ सावगो नत्थि तो कहेमि, एवं कुस्सुइसु आघविज्जंतीसु तत्तो चेव ताओ चेव वत्थूओ किंचि वत्तव्वं जेण तुण्हिका भवंति। तहा जीवचिंताएवि जाहे नाम कोवि वइसेसिगायो भणेज्जा-जहा एगंतेणेव निच्चो जीवो, कम्हा ?, जम्हा अरूवी जीवो, एत्थ दिट्ठंतो आगासं, जहा आगासं अरूवी तं च निच्चं दीसइ तहा जीवोवि अरूवि सोवि निच्चो भविस्सइ, तम्हा निच्चो जीवोत्ति. एत्थं सो भण्णइ-जं अरूवि तं निच्चं भवइ तं कह उक्कोचणआउंटणपसारणगमणादीणि कम्माणि, ताणिवि अरूवीणि अह अपुव्वाणि, तम्हा अणेगंतिगो एस हेउत्तिकाऊण विरज्जइ, तव्वत्थुएत्ति दारं गतं । इदाणिं तदण्णवत्थुएत्ति

उपन्यासोपनयने तद्वस्तु-तदन्य-वस्तु च

॥ ५४ ॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ५५ ॥

दारं, जहा कोइ आरोडणनिमित्तं भणिज्जा-जस्स वादिणो अण्णो जीवो अण्णं सरीरं तस्स एगो भवइ-कहं जो य सो अण्णसद्दो एस तुल्लो जीवेहिं वट्टइ सरीरेवि, तुल्लत्तणेण अण्णसद्दस्स जीवसरीराणं एगत्तं भवइ, एवं चोदितो पक्खे तज्जीवतस्सरीरवाइणा इमो भाणियव्वो, जइ अण्णसद्दतुल्लत्तणेण जीवसरीराणं एगत्तं (तो सव्वभावाणं एगत्तं) भविस्सइ, कहं?, जहा अण्णे परमाणू अण्णे दुपएसिए खंधे अण्णे देवदत्ते भवइ एवं अण्णसद्दो सव्वभावेसु भवइ, ता किं अण्णसद्दो सव्वभावेसु वट्टइत्तिकाउं सव्वभावा चेव एगीभवंतु ?, तम्हा सिद्धं अण्णो जीवो अण्णं सरीरंति, तदण्णवत्थुएत्ति दारं गयं। इदाणिं पडिनिभेत्ति दारं, तत्थ उदाहरणं---एगम्मि नगरे एगो परिव्वायओ सोवण्णेण खोरएण गहिएणं हिंडति, सो भणइ-जो ममं असुयं सुणावेइ तस्स एयं देमि खोरयं, तत्थ एगो सावगो, तेण भणियं--'तुज्झ पिया मज्झं पिये, धारेइ अणूणयं सयसहस्सं। जइ सुतपुव्वं दिज्जउ, अह न सुयं खोरयं देहि ॥ १ ॥' एवं एरिसे कज्जे उप्पण्णे एरिसगं (वत्तव्वं, जीवचिंताएवि एसो भणइ-) जं अत्थि जीवो, सो वत्तव्वो-जइ जं अत्थि तं जीवो भवइ, एवं घडाइणोवि भावा अत्थि, ते जीवा भविस्संति, एवमादी पडिणिभं भण्णइ। इदाणिं हेऊ, सो चउव्विहो पण्णत्तो, तं०-जावतो थावओ वंसओ लूसओ, तत्थ यावकस्य का रूपसिद्धि ?, यु मिश्रणे धातुः, अस्य भूवादयो धातव (पा. १-३-१) इति धातुसंज्ञायां प्रत्ययाधिकारे 'ण्वुल्तृचा' (पा. ३-१-१३३) विति ण्वुल् प्रत्ययः, अनुबंधलोपे 'युवोरनाकौ' (पा. ७-१-१) विति अकादेशः, भिदेर्गुण (पा. ७-३-८२) इति वर्त्तमाने 'अचामङ्किती' (पा, ७-२-११६ अचो ञ्णिति) ति वृद्धिः, आवादेशस्य परगमनं यावकः, तत्थ जावए एगो गोहो जवे किणइ, ताहे अण्णेण पुच्छिज्जइ-किं मुल्लेण किणसि ?, भणइ-मुहियाए न लहामि। तहा जीवचिंताएवि जइ कोई भणेज्जा-कहं जीवो न दीसइ ?, जम्हा अणिंदियगिज्झो तेण ण दीसइत्ति।

प्रतिनिभः ॥ ५५ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

इदाणिं इत्थं चेव जावए वितियं उदाहरणं-एगो वाणियगो भज्जं गहिऊण पच्चंतं गओ, 'पाएण खीणदव्वा धणियपरद्धा कयावराहा य। पच्चंतं सेवंते पुरिसा दुरहीयविज्जा य ॥ १ ॥' सा य महिला उब्भामिया, एगंमि पुरिसे लग्गा, तं वाणियगं सागारियं चिंतेऊण भणइ-वच्च वाणिज्जेण, तेण भणिया-किं घेत्तूण वच्चामि ?, सा भणइ-उट्टलेंडियाओ घेत्तूण वच्च उज्जेणिं, पच्छा सो सगडं भरेत्ता गओ उज्जेणिं, ताए भणिओ य-जहा एक्केकियं दीणारेण देज्जासेत्ति, सा चिंतइ-वरं खु चिरं खिप्पंतो अच्छउ, तेण ताओ वीथीए उड्डियाओ, कोइ न पुच्छइ, मूलदेवेण य दिट्ठो पुच्छिओ य, सिट्ठं तेण, मूलदेवेण चिंतियं-जहा एस वराओ महिलाए छोभिओ, ताहे मूलदेवेण भण्णइ-अहमताउ ते विक्किणामि जइ ममवि मुल्लस्स अद्धं देहि, तेण भणियं देमित्ति, अब्भुवगते पच्छा मूलदेवेण स हंसो जाएऊण तत्थ विलग्गिऊण आगासेणं उप्पइओ, नगरस्स मज्झे थाइऊण भणइ-जइ चेडरूवस्स गलए उट्टलिंडिया न बद्धा तं मारेमि, अहं देवो, पच्छा सव्वलोएण भीएण दीणारिक्काओ उट्टलेंडियाओ गहियाओ विक्कियाओ य, ताहे तेण मूलदेवस्स अद्धं दिण्णं, मूलदेवेण य सो भण्णइ-मंदभग्ग! तव महिला धुत्ते लग्गा, ताए तव एयं कयं, न पत्तियइ, मूलदेवेण भण्णइ-एहि वच्चामो जा तए दरिसेमि जइ न पत्तियसि, तो गया, अण्णाए लेसाए वियाले ओवासो मग्गिओ, ताए दिण्णो, तत्थगंमि पएसि ठिया, सो धुत्तो आगओ, इयरीवि धुत्तेण सह पिवेउमारद्धा, इमं च गायइ-'इरि-मंदिर पत्तहारओ महु गयउ कंतो वणिजारओ। वरिसाण सतं च जीवओ मा घर जीवंतु कयाइ एयउ ॥१॥', मूलदेवो भण्णइ-कयलीवणपत्तवेढिया, एइ भणामि देव!। जं महलएण गिज्जइ सुणेह मुहुत्तमेत्त ॥१॥ पच्छा मूलदेवेण भण्णइ-किह धुत्ते ?, तओ पभाए णिग्गंतूण पुणरवि आगओ, तीय पुरओ ठिओ, सा सहसा संभंता अब्भुट्ठिया, तओ खाणपिवणे वट्टंते तेण वाणिएण सव्वं तीए गीइपज्जंतयं

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

संभारियं, उवालद्धा य, एवं सीसोवि कई पयत्थे असद्दहंतो विज्जादीहिं देवयं आकंपयित्ता सद्दहावेतव्वो, तहा वादीवि कत्तियावणादीहिं णिज्जिणियव्वो जहा सिरिगुत्तेण छलूकयो, गओ यावकः। इदाणिं थावकः, स्थापकस्य का रूपसिद्धिः?, ष्ठा गतिनिवृत्तौ धातुः, 'धात्वादेः षः स' (पा. ६-१-६४) इति सकारादेशः, निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः ठकारस्य थकारः स्था, भूवादयो धातव (पा. १-३ १) इति धातुसंज्ञा, अस्य विग्रहः-तिष्ठति कश्चित् तिष्ठंतमन्योऽनुप्रयुङ्क्ते तिष्ठ तिष्ठेत्येवं विगृह्य हेतुमति चे- (पा. ३-१-३६) ति णिच् प्रत्ययः, अनुबंधलोपे कृते 'अर्तिह्वीब्लीरीक्नूयीक्ष्म्याय्यातां पुग् णा' (पा ७-३-३६) विति पुक्, अनुबंधलोपे 'युवोरनाकाविति' (पा.७-१-१) अकादेशः, णेरनिटी (पा.६-४-५१) ति लोपः, परगमनं, स्थापकः। इदाणिं प्रातिपदिकार्थः, लिंगपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा सु उकारलोपः रुत्वं विसर्जनीय स्थापकः, जहा एगो परिव्वाययो भण्णइ, अहं लोगमज्झं जाणामि, तत्थेगेण सावगेणं भण्णइ-कयरं लोगमज्झं?, ताहे सो परिव्वायओ एगंमि भूमीपएसे खीलयं निखणित्ता भणइ-एयं लोगमज्झं, पुणो अण्णत्थ पुच्छिओ, तत्थवि खीलयं निहणित्ता भणइ-एयं लोयमज्झं, पुणो अण्णत्थ पुच्छिओ, तत्थवि खीलयं णिहणित्ता भण्णइ-इमं लोगमज्झं, एवं सो सावगो तेण समं अण्णाए लेस्साए वच्चइ, सोवि य चउसुवि दिसासु खीलं णिहणिऊणं भणइ-एयं लोगमज्झं, जत्थ जत्थ कोई पुच्छइ तहिं तहिं सो खीलयं निहणिऊण भणइ-एयं लोगमज्झं, ततो सावएण भणिओ-जइ पुव्वाए पडिदिसाए लोगमज्झं तो अवराए दिसाए ण जुज्जइ, एवं पुव्वावरविरुद्धभासियत्तणेण फुडो मुसावादो भवइत्ति, सो तेण सावएण निरुत्तरो कओ। एवं जीवचिंताएवि साहुणा तारिसं भाणियव्वं तारिसो गेण्हिऊण णयव्वो जस्स पुरो उत्तरं चेव दाउं न तरइ जेण पुव्वावरविरुद्धदोसो य न भवइ, एवं स्थावकः ॥ इदाणिं वंसगो-व्यंसकस्य का रूपसिद्धिः? 'असि समाघाने' धातुः क्षुरादौ

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

॥ ५८ ॥

पठितव्यः, इदितोऽनुबंधीतोरिङ् (नुम्) विपूर्वस्य विअंस एवं स्थिते 'भूवादयो धातव' इति धातुसंज्ञा स्वार्थिको णिच् अनुबंध-लोपः परगमनं व्यंसि, सनाद्यंता (पा. ३-१ ३२) इति धातुसंज्ञा, प्रत्ययाधिकारे ण्वुल्तृचा (पा. ३-१-१३३) विति ण्वुल् प्रत्ययः, अनुबंधलोपः, युवोरनाका' (पा. ७-१-१) विति अकादेशः, णेरनिटीति (पा. ६-४-५१) णिलोपः, परगमणं, व्यंसयतीति व्यंसकः, जहा एगो गामेल्लओ सगडं कट्ठाण भरेऊण नगरं पविट्ठो, गच्छंतेणं अंतरालेएगा तित्तिरी मइया दिट्ठा, तं गेण्हिऊण सगडस्स उवरिं पक्खिविऊण नगरं पविट्ठो, सो एगेण नगरधुत्तेण पुच्छिओ-कहं सगडतित्तिरी लब्भइ ?, तेण गामिल्लएण भण्णइ-तप्पणादुगालियाए लब्भइ, ततो तेण सक्खिणो आहरित्ता सगडं सतित्तिरीयं गहियं, ततो सो गामिल्लओ दीणमणसो अच्छइ, तत्थ य एगो मूलदेवसरिसो दिट्ठो, पुच्छिओ-किं सीयसि? अरे देवाणुप्पिया!, तेण भणियं-अहमेगेण गोहेण इमेण पगारेण छलिओ, तेण भणियं-मा बीहेहि, तस्स तप्पणीदुयालियं तुमं सोवयारं मग्ग, माहट्ठाणं सिक्खाविओ, एवं भवउत्ति भणिऊण तस्स सगासे गओ, भणियं चणेणं-मम तइ सगडं हितं तो मे इदाणिं तप्पण्णादुगालियं सोवयारं दवावेहि, एवं होउत्ति घरं नीओ, महिला संदिट्ठा-अलंकियविभूसिया परमेण विणएण एतस्स तप्पणादुगालियं देहि, सा वयणसमं उवट्ठिया, ततो सो सागडिओ भणइ-ममंगुली छिण्णो, इमो-चीरेण वेढितो, न सक्केमि आदुयालेउं, तुमं आदुयालेउं देहि, आदुयालिया तेण हत्थेणं गहिया, गामिल्लओ तेण समं संपट्ठिओ, लोगस्स य कहइ-जहा मए एसा सतित्तिरिगेण सगडेण गहिया, ताहे तेण धुत्तेण सगडं विसज्जियं, तं च पसादेऊण भज्जा नियत्तिया। तहा जीवचिंताएवि कोऽवि कुप्पावयणिओ चोइज्जा जहा जिणप्प-णीते मग्गे अत्थि जीवो अत्थि घडो, अत्थित्तं जीवेऽवि घडेऽवि, दोसुवि अविसेसेण वट्टत्ता अत्थिसद्दतुल्लत्तणेण दीवघडाणं एगत्तं

॥ ५८ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

भवइ, अह पुण भणेज्जा--अत्थिभावातो वतिरित्तो जीवो, तेण जीवस्स अभावो पावतित्ति, एत्थं इमं उत्तरं भाणितव्वं-जइ जीव-घडा अत्थित्ते वट्टंति तम्हा तेसिं एगत्तं संभावेहि, एवं सव्वभावाणं एगत्ते भवइ, कहं ?, अत्थि घडो अत्थि पडो अत्थि परमाणू अत्थि दुपएसिए खंधे, एवं सव्वभावेसु अत्थिभावो वट्टतित्तिकाउं किं सव्वभावा एक्कीभवंतु?, एत्थ सीसो आह--कहं पुण एयं जाणितव्वं, सव्वभावेसु अत्थिभावो वट्टइ, न य एगं भवति ?, आयरिओ आह-अणेगंतओ एतं सिज्झति, एत्थ दिट्ठंतो खइरवणस्सइ. जहा नियमा खयरे वणस्सई, वणस्सई पुण खइरो पलासे वा, एवं जीवोवि, तेण णियमा अत्थि, अत्थिभावो पुण जीवो वा होज्जा अण्णो वा धम्माधम्मागासादीणं, एवं व्यंसकः ॥ इदाणिं लूसए, लूषकस्य का रूपसिद्धिः?, 'लूष हिंसायां' धातुः चुरादौ पठ्यते, भूवादयो धातव (पा १-३-१) इति धातुसंज्ञा, प्रत्ययाधिकारे 'सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचधर्म्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्'(पा.३-१-२५) अनुबंधलोपः, 'युवोरनाकौ' विति (पा.७-१-१) अकादेशः, 'णेरनिटी'(पा.६-४-५१) ति णि लोपः, परगमनं, लूषयतीति लूषकः, जहा एगो मणूसो तउसाणं भरिएण सगडेण नगरं पविसइ, सो पविसंतो धुत्तेण भण्णइ--जो य तउसाणं सगडं खाएज्जा तस्स तुमं किं देसि?, ताहे सागडिएण सो धुत्तो भणिओ-तस्साहं तं मोदगं देमि जो नगरदारेणं न निप्फिडइ, धुत्तेण भण्णइ-ताहे एयं तउससगडं खायामि, तुमं पुण मोदगं देज्जासि जो नगरदारेण न निस्सरइ, पच्छा सागडिएण अब्भुवगए धुत्तेण सक्खिणो कया, सगडं अधिट्ठितो, तेसिं तउसाणं एक्केक्काउ खंडं खंडं अवणेत्ता पच्छा तं सागडियं मोदगं मग्गइ, ताहे सागडिओ भणइ-इमे तउसा न खइता तुमे, धुत्तेण भण्णइ-जइ न खइया तउसे अग्घवेहि तुमं, अग्घविएसु कइया आगया, पासंति खंडिया तउसा, ताहे कइया भणंति- को एते खतिए किणति ?, ततो कारणे ववहारे जाओ, खातियात्ति

॥ ५९ ॥

जितो सागडितो, ताहे धुत्तेण मोदगं मग्गिज्जइ, अच्चइओ सागडिओ, जूतिकरा ओलग्गिता, ते तुट्ठा पुच्छंति, तेसिं जहावत्तं सव्वं कहइ, एवं कहिए तेहिं उत्तरं सिक्खाविओ जहा तुमं खुड्डुलगं मोयगं नगरदारे ठावेत्ता भण-एस मोदगो न नीति णगरदारेण णिण्हत्ति, जितो धुत्तो। एवं जीवचिंताएवि पुव्वं सयमेव सव्वभिधारं हेउं उच्चारेऊण परविस्सभणानिमित्तं सहसा वा भणिओ होज्जा, पच्छा तमेव हेतुं अण्णेण निरुत्तवयणेणं ठावइ, एवं तूषकहेऊ समत्तो॥ इदाणिं जो एतेहिं पक्खहेऊदिट्ठंतउवणयणिगमणेहिं अत्थो साहिज्जइ सो भण्णइ-तत्थ पढमे अज्झयणे धम्मपसंसा, सा च धम्मपसंसा पंचावयवोववेतेण वा दसावयवोववेतेण वा वयणेण भण्णइ, तत्थ पढमं पंचावयवोववेतेण भण्णइ-तत्थेदं प्रमाणमपादिश्यते-अहिंसासंजमाप्पको धम्मो मङ्गलमुत्कृष्टं, कस्माद् ?, देवादिपूज्जत्वादर्हदादिवत्, यथा अर्हन् पूज्यो मङ्गलमुत्कृष्टं च, तथा धर्मः पूज्यः, तस्मात्पूज्यत्वान्मङ्गलमुत्कृष्टं, इमे सुत्तफासियनिज्जुत्तीए अवयवा भण्णंति, 'धम्मो गुणा अहिंसाइया उ' गाहा (९०-६६) पुव्वद्धं, धम्मो नाम अहिंसाइया गुणा भवंति, आदिग्रहणेण संजमतवादि गहिया, अहिंसासंजमतवोववेतो जो धम्मो सो मंगलमुक्किट्ठं भवइ, एस पइण्णा ॥ इदाणिं को हेऊ धम्मो मंगलमुक्किट्ठं भवइ?, तत्थ सुत्तेणेव पढमे हेउं भणइ-'देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो' देवपुज्जत्तणं हेऊ. किं कारणं ?, जे अधम्मिया ते देवेहिं न पूइज्जंति । इदाणिं सुत्तफासियनिज्जुत्तीगाहापच्छद्धेण हेउ चेव भण्णइ-'देवावि लोगपुज्जा पणमंति सुधम्मबिंति हेउ, देवावि देवलोके युक्ता, तदेव लोगे पुज्जावि होऊण जो अहिंसाइगुणोववेते धम्मे ठिओ तस्स पणमंति. एत्थ चोदओ भणइ-जहा को सो धम्मे ठिओ ?, आयरिओ आह-जस्स धम्मे सया मणो, अहिंसादिगुणजुत्ते जस्स सया-अविगहिये जावज्जीवं 'मणो' मणो चेतणो भण्णइ, एस हेऊ गओ। इदाणिं दिट्ठंतो 'दिट्ठंतो अरहंता अणगारा बहवे य

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१॥

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ ६१ ॥

जिणसीसा (९१-६२) तत्थ पुव्विं अरहंतगहणं जम्हा ते अनंतबलधितिपरक्कमा अप्पडिहयवरणाणदंसणधरा य धम्मफल-विसेसजाणयत्तिकाऊण, अण्णे य गोयमाइणो तित्थगरसीसा सोभणवत्थितत्ति देवेहिं पूजिया, एत्थ आयरिओ गाहाए पच्छद्धं-भणइ-वत्तणुवत्ते णज्जइ जह नरपतिणोवि पणमंति ?, वत्तं नाम जं अतीते काले, इदाणिं अपच्चक्खमवि अणुवत्तेण साहि-ज्जइ, केण कारणेण ?, इदाणिं नरपतिणो अट्ठंगमहानिमित्तपाढगाण विवेयमुद्धियाणं णाणासत्थविसारयाण य साहूणं परमवि-णयोनतसिरा नमंसंति किंकरा इव पज्जुवासमाणा य चिट्ठंति, एस दिट्ठंतो, सीसो आह-जो पच्चक्खो भावो सो दिट्ठंतो दिज्जइ, तित्थगरा य संपयं णो पच्चक्खमुवलब्भंति ते अणुमाणियो णज्जंति, जो अणुमाणियो अत्थो सो दिट्ठंतो न भण्णइ, आयरिओ आह-तंकालं पच्चक्खा ते आसित्ति ण विरुज्झते, तित्थगरदिट्ठंतेणेयमुक्तं, इयाणिं उप्पण्णं, दिट्ठंतो गओ ॥ इदाणिं उवसंहारो, उवसंहारो तत्थ इमं गाहापुव्वद्धं ‘ उपसंहारो देवा जह तह रायाणो पणमंति (९२-६२) सुधम्मं, जहा देवा सोहणे धम्मे ठितं पणमंति तह रायाइणोवि भवियाउ णमंति, एस उवसंहारो गओ । इदाणिं निगमणं गाहापच्छद्धेण भण्णइ (वृ. धम्मो) तम्हा मंगलमुक्किट्ठमिति (वृ० य) निगमणं होति णायव्वं तम्हा देवपूजितत्तणेण अहिंसासंजमतवजुत्तो धम्मो मंगलमुक्किट्ठं भवइ । धर्मः मंगलमुत्कृष्टं अहिंसासंजमतपात्मकत्वाद्हृदादिवत्, यथाऽर्हन् अहिंसासंजमतपात्मको मंगलमुत्कृष्टं च तथा धर्मः अहिंसासंजमतपात्मकः तस्मान्मंगलमुष्कृष्टं, पंचावयवं सम्मत्तं ॥ इदाणिं दसावयवोवचेतेण वयणेण एस चेव अत्थो वित्थारिज्जइ, बितियपइण्णा जिणसासणंमि साहंति साहवो धम्मं (९३-६३) अद्धं गाथा, बितियपतिण्णत्ति जा पंचावयवेसु पतिण्णा भणिया सा पढमुक्ता, इदानिं तीए इमा बिइया दसावयवविभावणत्थं पतिण्णा कज्जइ, सा इमा-एतंमि

दशा-वयवाः

॥ ६१ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१||

दीप अनुक्रम [१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

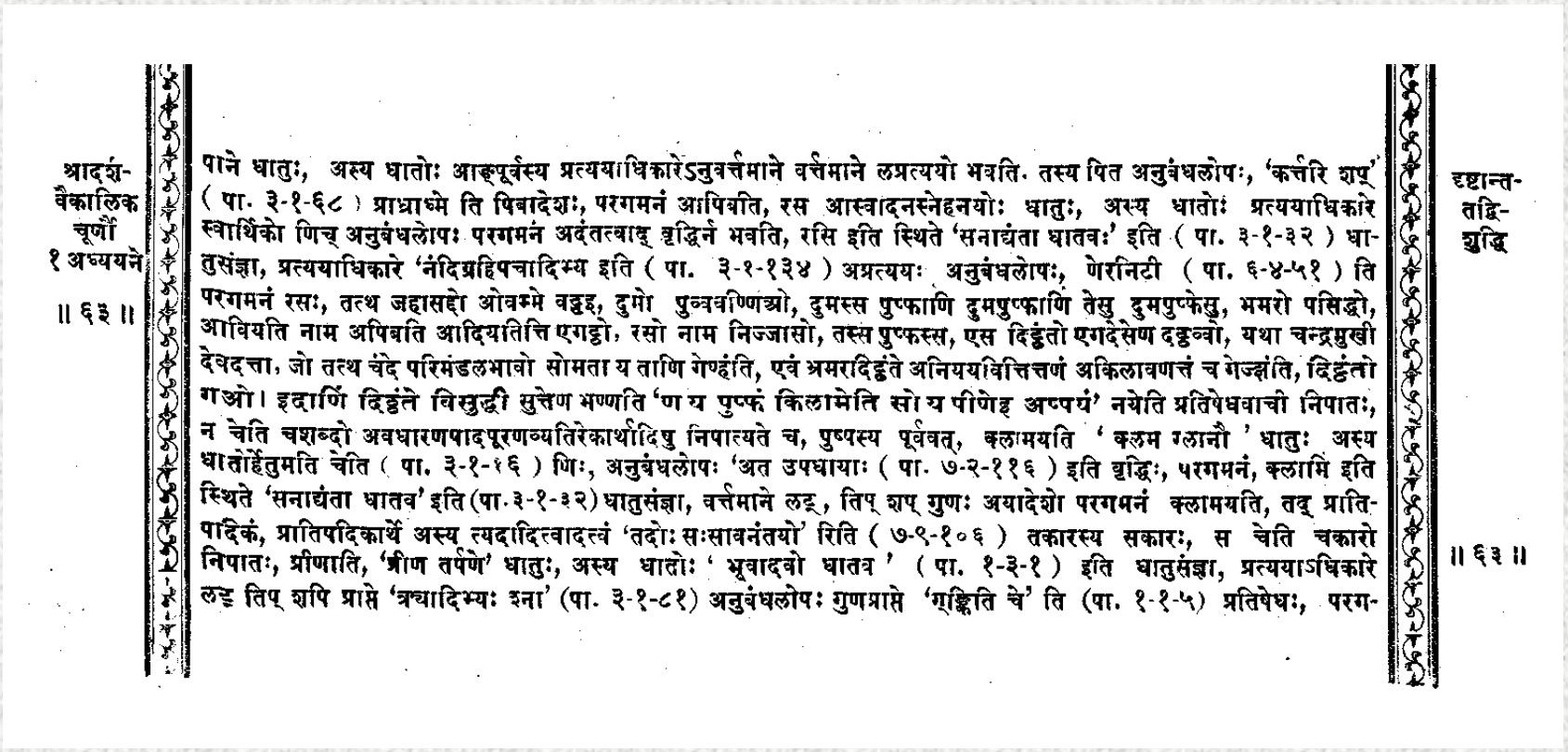
॥ ६२ ॥

मूलं

चेव ताव जिणाणं सासणे ठिया साधवो धम्ममणुपालयंति एसा पइण्णा गता, इदाणिं पइण्णाविसुद्धी-जहा इहं ताव जिणाणं सासणे ठिया विसुद्धं धम्मं अणुपालेंति न एवं परतित्थियसमएसु विसुद्धो अणुपालणोवायो अत्थि, एत्थ सीसो चोएइ- सव्वे पवादिया अप्पणच्चियं धम्मं पसंसंति, धम्मसद्दो य तेसु तेसुवि उवलब्भइ, आयरिओ आह-नणु हेट्ठा वण्णिओ 'सावज्जो उ कुतित्थियधम्मो जिणेहिं उ अपसत्थो' जोवि तेसिं सासणे धम्मसद्दो सोवि उवचारितो, निच्छयतो पुण अहिंसासंजमतवलक्खणो जो सो धम्मत्ति भण्णइ, जहा सिंहसद्दो सिंहे पाहण्णेण वट्टइ, उवचरितो पुण अण्णेसुवि भवइ, एसा पइण्णाविसुद्धी गया ॥ तत्थ को स हेउत्ति ?, अहिंसादिगुणजुत्ततणं हेऊ भण्णइ, तत्थ इमं गाहापच्छद्धं 'हेऊ जम्हा साभाविएसु अहिंसाइसु जयंति' जम्हा ते साहवो अहिंसाइएसु पंचसु महव्वएसु सब्भावेण जयंति, कहं नाम अम्ह अक्खलियचारित्ताणं मरणं भविज्जत्ति, एस हेऊ ॥ इदाणिं हेतुविसुद्धी भण्णइ 'जं भत्तपाणउवगरण' अद्धगाथा, जेण कारणेण साहवो अहिंसादीणं पंचण्हं महव्वयाणं विसुद्धिनिमित्तं भत्तपाणउवगरणवसहिसयणाइसु संजमोवकरणेसु जतन्ति, किं भणियं होइ जयंति ?, आयरिओ आह-- एत्थ इमं गाहापच्छद्धं, फासुयं अकयं अकारियं अणणुमोइयं अणुद्दिट्ठाणि गेण्हिऊण परिभुंजंति, अण्णे पुण रत्तपडादिणो कुतित्थिया 'ण फासुअकयकारित' गाहा, (भा. ३-६४) एसा गाहा पढियसिद्धा, एसा हेउविसुद्धी समत्ता, इदाणिं दिट्ठंतो, सो इमो जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियती रसं' यथेति येन प्रकारेण, 'प्रकारवचने थाल्' (पा. ५-३-२३) लकारलोपः, यथा दुमपुष्पयोः पूर्ववत्, भ्रमर इति 'भ्रम अनवस्थाने' धातुः, अस्य धातोः, प्रत्ययाधिकारे 'ऋच्छेर (उ. पाद ३) इति 'अर्तिकमित्रमिचमिदेविवासिभ्यश्चित्' इति (उ. पाद ३) अरप्रत्ययः, परगमनं, भ्रमरः, भ्राम्यति च रौति च भ्रमरः, पा

दृष्टान्त-तद्वि-शुद्धि

॥ ६२ ॥



आदर्श-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ६३ ॥

पाने धातुः, अस्य धातोः आङ्पूर्वस्य प्रत्ययाधिकारेऽनुवर्त्तमाने वर्त्तमाने लप्रत्ययो भवति. तस्य पित अनुबंधलोपः, 'कर्त्तरि शप्' (पा. ३-१-६८) प्राधाग्मे ति पिबादेशः, परगमनं आपिबति, रस आस्वादनस्नेहनयोः धातुः, अस्य धातोः प्रत्ययाधिकारे स्वार्थिको णिच् अनुबंधलोपः परगमनं अदंतत्वाद् वृद्धिर्न भवति, रसि इति स्थिते 'सनाद्यंता धातवः' इति (पा. ३-१-३२) धातुसंज्ञा, प्रत्ययाधिकारे 'नंदिग्रहिपचादिभ्य इति (पा. ३-१-१३४) अप्रत्ययः अनुबंधलोपः, णेरनिटी (पा. ६-४-५१) ति परगमनं रसः, तत्थ जहासद्दो ओवम्मे वट्टइ, दुमो पुव्ववण्णओ, दुमस्स पुप्फाणि दुमपुप्फाणि तेसु दुमपुप्फेसु, भमरो पसिद्धो, आवियति नाम अपिबति आदियतित्ति एगट्ठो, रसो नाम निज्जासो, तस्स पुप्फस्स, एस दिट्ठंतो एगदेसेण दट्ठव्वो, यथा चन्द्रमुखी देवदत्ता, जो तत्थ चंदे परिमंडलभावो सोमता य ताणि गेण्हंति, एवं भमरादिट्ठंते अनियतवित्तित्तणं अकिलावणत्तं च गेज्झंति, दिट्ठंतो गओ। इदाणिं दिट्ठंते विसुद्धी सुत्तेण भण्णति 'ण य पुप्फं किलामेति सो य पीणेइ अप्पयं' नयेति प्रतिषेधवाची निपातः, न चेति चशब्दो अवधारणपादपूरणव्यतिरेकार्थादिषु निपात्यते च, पुष्पस्य पूर्ववत्, क्लामयति 'क्लम ग्लानौ' धातुः अस्य धातोर्हेतुमति चेति (पा. ३-१-१६) णिः, अनुबंधलोपः 'अत उपधायाः (पा. ७-२-११६) इति वृद्धिः, परगमनं, क्लामि इति स्थिते 'सनाद्यंता धातव' इति (पा.३-१-३२) धातुसंज्ञा, वर्त्तमाने लट्, तिप् शप् गुणः अयादेशो परगमनं क्लामयति, तद् प्रातिपादिकं, प्रातिपदिकार्थे अस्य त्यदादित्वादत्वं 'तदोः सःसावनंतयो' रिति (७-९-१०६) तकारस्य सकारः, स चेति चकारो निपातः, प्रीणाति, 'प्रीण तर्पणे' धातुः, अस्य धातोः 'भूवादयो धातव' (पा. १-३-१) इति धातुसंज्ञा, प्रत्ययाऽधिकारे लट् तिप् शपि प्राप्ते 'ब्रुवादिभ्यः श्ना' (पा. ३-१-८१) अनुबंधलोपः गुणप्राप्ते 'गुङ्किति चे' ति (पा. १-१-५) प्रतिषेधः, परग-

दृष्टान्त-तद्वि-शुद्धि

॥ ६३ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥२॥

दीप अनुक्रम [२]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ ६४ ॥

मनं प्रीणाति, आत्मानमिति 'अत सातत्यगमने' अस्य धातोः प्रत्ययाधिकारे 'सात्यतिभ्यां मनन्मनिणा' विति (उ.पा. ४) मनिण् प्रत्ययः अनुबंधलोपः 'अत उपधाया' इति' (७-२-११६) वृद्धिः परगमनं आत्मा, कर्मणि द्वितीयैकवचनं अम् 'नोपधाया (पा ६-४-) सर्वनामस्थाने परे दीर्घत्वं आत्मानं, न य सो भमरो तेसिं पुप्फाणं किलावणं करेइ अह य अत्ताणं पीणयति, दिट्ठंतविसुद्धी सुत्तफासियनिज्जुत्तीए भण्णइ 'जह भमरस्तिय' (९७-६५) अद्धगाहा, दिट्ठंतो गओ । इदाणिं एयम्स विसुद्धिं निज्जुत्तीए सयमेव आयरिओ सिस्सहियट्ठाए आह--'तत्थ य भणेज्ज कोई समणाणं कीरइ सुविहियाणं' (९९-६५) एत्थ य कोई भणेज्जा-जमेते गिहत्था पाकं करेंति एयं साहूणं अट्ठाए कीरइ, तं आरंभमाजीवंति साधवो, एतेण कारणेण साहुणो दोसभागिणो भवंति, एतस्स उत्तरं आयरिओ भणइ, जम्हा ' वासइ व तणस्स कए '(१०६-५)गाहा, एसा गाहा कड्ढियव्वा, एत्थंतरे सीसो चोए-इजहा मेहा पयावई वड्ढिनिमित्तं वासंति, सो य पयावई वड्ढि ण तेण विरहिया भवइ, तम्हा जं भण्णइ-'वासइ न तणस्स कए' तं विरुज्झइ, एत्थ आयरिओ आह-न एतं एवं भवइ, कम्हा ?, जम्हा सुतीओ विरुद्धाओ दीसंति, परे कहयंति--जहा मघवं वासइ, अण्णे पुण भणंति-गब्भा वासंति, तत्थ जइ इंदो वासति तओ उक्कावातदिसादाहनिग्घायादीहिं उवघाओ वासस्स न होज्जा, अह पुण गब्भा वासंति तओ तेसिं असण्णीणं णेवं सण्णा भवति जहा लोगस्स अट्ठाए वरिसामित्ति तणाण वा अट्ठाए, 'किं तु दुमा पुप्फेंति ' गाहा (१९४-६६) कंठया, कदापि सीसस्स बुद्धी भवेज्जा, जहा पयावइणा वित्ती सत्ताणं उप्पाइया, तेण दुमा भमराए अट्ठाए पुप्फंति, तण्ण भवति, कहं तं ?, दुमा णामगोत्तस्स कम्मस्स उदएणं ताणि नाणि फलविसेसाणि निव्वत्तिंति, किं च-'अत्थि बहू वणसंडा' गाहा (१०७-६६) जइ पगई एसा पुप्फाणं च दुमाणं कम्हा अकाले न पुप्फंति फलंति वा ?,

दृष्टान्त-तद्वि-शुद्धौ

॥ ६४ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||२||

दीप अनुक्रम [२]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ ६५ ॥

मूलं

आयरिओ भणइ-'पगती एस दुमाणं' गाहा (१०९-६३) पढियव्वा, जहा ते दुमा अप्पणो रिउकालेणेव पुप्फंति य फलंति य, न उ भमराण अट्ठाए 'किं तु गिही रंधंती समणाणं कारणे सुविहियाणं' गाहा (११० ६६)पाठ्या, कदापि सीसो भणिज्जा जहा समणाणुकंपणट्ठाए पुण्णनिमित्तं च पुण्णमेव गिहत्थाणं पागकरणं, तेसिं समणाणं अट्ठाए कुव्वंताणं अधपरिहाणी भवइ, अध-परिहाणीए य कहं तेसिं पाहण्णं ण भविस्सइ ?, एत्थ आयरिओ आह--जं भणसि तेसिं अट्ठाए साहूणं पागकरणं तण्ण भवइ, कम्हा?, जेण 'कंतारे दुब्भिक्खे' गाहा (११२-६७) कंठ्या, किं च 'अत्थि बहुगामनगरा' गाहा (११४-६७) 'पगती एस गिहीणं' गाहा (११५-६७) 'तत्थ समणा सुविहिया' गाथा (११६ ६७) 'नवकोडीपरिसुद्धं' गाथा (१५०-६७) तत्थ इमाओ नव कोडीओ-न हणइ न हणावेइ हणंतं नाणुजाणाइ, ण पयइ ण पयावेइ पयंतं णाणुजाणाइ, न किणइ ण किणावेइ किणंतं नाणुजाणाइ, एताहिं णवहिं कोडीहिं उग्गमउप्पायणेसणादीहिं सुद्धमाहारिंति, तं च किमट्ठं आहारेंति ?, इमेहिं छहिं कारणेहिं 'वेदण वेयावच्चे' सिलोगो, एतीसे पदाणं वक्खाणं जहा पिंडनिज्जुत्तीए, दिट्ठन्तविसुद्धी गता। इदाणिं उवसंहारो, सो सुत्तेण भण्णइ 'एमेते समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो। विहंगमाव पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया ॥ (३-६८) एवमिति निपातः एवं एवसद्दो अवहारणे वट्टइ, किमवधारयति ?, अनियतवित्तित्तणं अकिलावणत्तं च अवधारेइ, एतत्सर्वनाम्नः प्रथमाबहुवचनं जस्, त्यदाद्यत्वं, जसः शीः (पा. ७-१-१७) आदूगुणः (पा. ६-१-८७) परगमनं, एते-पच्चक्खमेव अनिययवित्ती विहरमाणा दीसंति, श्रमणाः 'श्रम तपसि खेदे च' धातुः, अस्य धातोः 'भूवादयो धातव' इति (पा.१-३-१) धातुसंज्ञा, प्रत्ययाधिकारे 'करणाधिकरणयोश्चेति' (पा. २-३-११७) ल्युट् अनुबंधलोपे 'युवोरनाकौ' (पा. ७-१-१) विति अनादेशः, परगमनं, श्रमणा,

उपसंहार-तद्विशुद्धी

॥ ६५ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||३|| दीप अनुक्रम [३]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ६६ ॥

मुक्ता नाम 'मुचृ मोक्षणे' धातुः, अस्य धातोः 'भूवादयो धातवः' (पा. १-३-१) इति धातुसंज्ञा, प्रत्ययाधिकारे क्तप्रत्ययः अनुबंधलोपः कत्वं परगमनं मुक्ताः, बाहिरब्भंतरेहिं गंथेहिं मुक्ताः संति जे ते अविसेसियाणं गहणं, लोगेति मणुस्सलोगस्स गहणं, शांतिः 'शमु उपशमे' धातुः अस्य धातोः 'भूवादयो धातवः' (मा १-३-१) इति धातुसंज्ञा, प्रत्ययाधिकारे स्त्रियां क्तिन् (पा. ३-३-९४) अनुबंधलोपः 'अनुनासिकस्य लोः क्ङिति चे' (पा.६-४-१५) ति आकारः, परसवर्णः परगमने शान्तिः, शान्तिनाम ज्ञानदर्शनचारित्राण्यभिधीयन्ते, 'साध राध संसिद्धौ' साध अस्य धातोः 'कृवापाजिमिस्वदिसाधशूभ्य उण्' प्रत्ययः, अनुबंधलोपः परगमनं साधुः, तामेव गुणविशिष्टां शान्तिं साधयन्तीति साधवः, अहवा संति अकुतोभयं भण्णइ, तं चेव साहुणो अप्पमत्तत्तणेणं जीवाणं शांतिं भणंति, अहवा शान्तिग्रहणेण तेसिं साधूणं अत्थित्तं घेप्पति, एत्थ सीसो आह·नणु एमेते समणा मुत्तत्ति एतेणेव नज्जंति जहा ते अत्थि तो पुणोवि संतिग्रहणेन पुनरुक्तं कुव्वहा, आयरिओ भणइ-परियायवयणेण सो चेव अत्थो दरिसिओ, एतेण कारणेण दोसो ण भवति, अण्णेवि णिण्हयाइ भणंति जहा अम्हेवि बाहिरब्भंतरेहिं मुक्ता साहुणो, शांतिग्रहणेण पुणो कज्जमाणेण भावसाधुणो गहिता, ते दव्वसाधुणो न गहिता, जम्हा ते अणुवएसेण सछंदा हया इव उद्दामा गया इव निरंकुशा हिंडंति तम्हा शांतिगहणं करेइ, साधव एव जोगे साहेंति तम्हा साहुणो। 'विहंगमा' 'गम्लृ सृप्लृ गतौ' धातुः अस्य धातोर्विहपूर्वस्य विहमाकाशं उच्यते, 'भूवादयो धातवः' (पा. १-३-१) धातुसंज्ञा 'गमश्चे' ति (पा. ३-२-४७) खड् प्रत्ययः अनुबंधलोपः, 'खिच्यनव्ययस्ये' ति (पा. १-३-१) नुमागमः, पूर्वपदस्य परगमनं, विहे गच्छंतीति विहंगमाः, भमर इवाभिहितं भवति, विहगमेहिं तुल्ला नाम जहा विहंगमा सयं विगसितेसु पुप्फेसु अप्पाणं पीणयंति एवं साहवोवि गेहाणं सअट्ठाए निट्ठिएसु अण्ण-

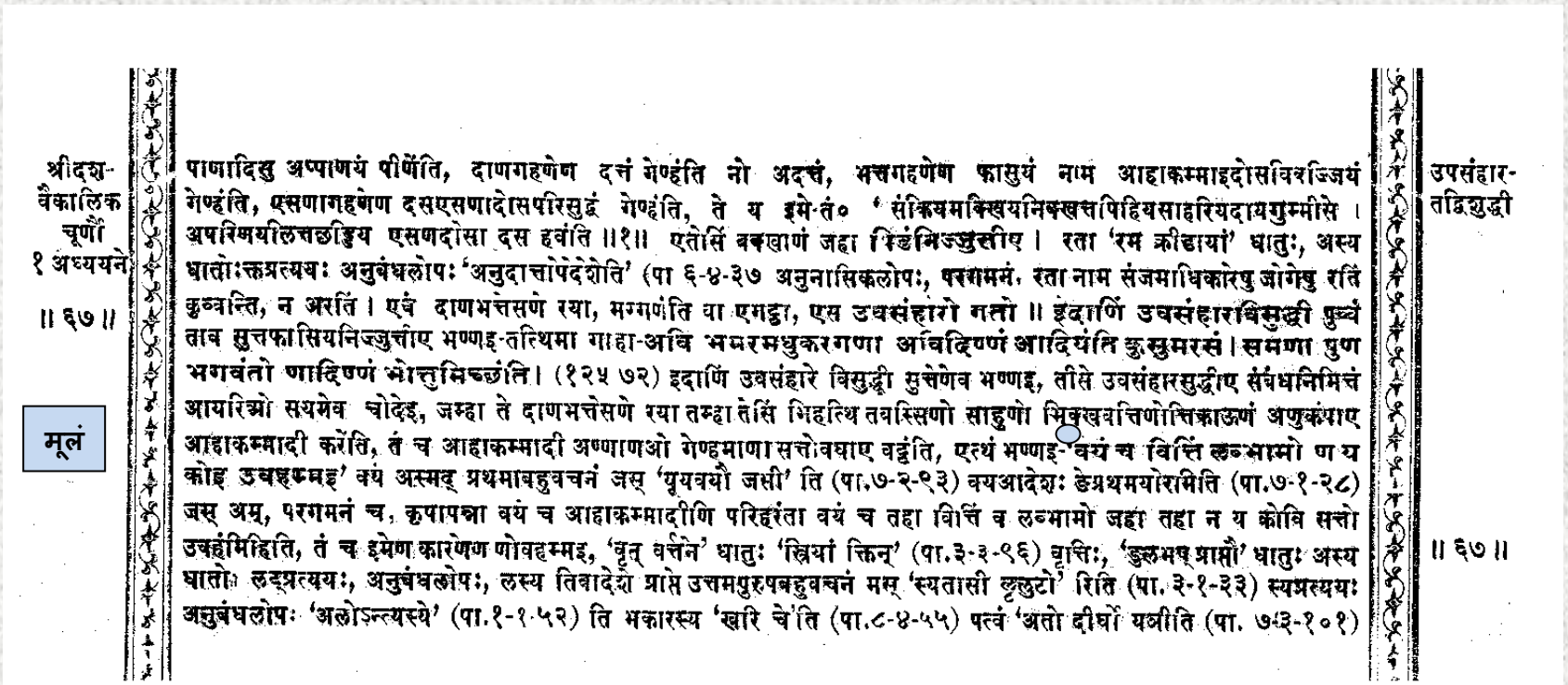
उपसंहार-तद्विशुद्धौ

॥ ६६ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥३॥

दीप अनुक्रम [३]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ६७ ॥

मूलं

पाणादिसु अप्पाणयं पीणेंति, दाणगहणेण दत्तं गेण्हंति नो अदत्तं, भत्तगहणेण फासुयं नाम आहाकम्माइदोसविवज्जियं गेण्हंति, एसणागहणेण दसएसणादोसपरिसुद्धं गेण्हंति, ते य इमे-तं० 'संकियमक्खियनिक्खित्तपिहियसाहरियदायगुम्मीसे । अपरिणयलित्तछड्डिय एसणदोसा दस हवंति ॥१॥ एतेसिं वक्खाणं जहा पिंडेसणाए । रता 'रम क्रीडायां' धातुः, अस्य धातोरुक्तप्रत्ययः अनुबंधलोपः 'अनुदात्तोपदेशेति' (पा ६-४-३७ अनुनासिकलोपः, परसमं. रता नाम संजमाधिकारेसु जोगेसु रतिं कुव्वन्ति, न अरतिं । एवं दाणभत्तसणे रया, मग्गणंति वा एगट्ठा, एस उवसंहारो गतो ॥ इदाणिं उवसंहारविसुद्धी पुव्वं ताव सुत्तफासियनिज्जुत्तीए भण्णइ-तत्थिमा गाहा-अवि भमरमधुकरगणा अविदिण्णं आदियंति कुसुमरसं । समणा पुण भगवंतो णादिण्णं भोत्तुमिच्छंति। (१२५ ७२) इदाणिं उवसंहारे विसुद्धी सुत्तेणेव भण्णइ, तीसे उवसंहारसुद्धीए संबंधनिमित्तं आयरिओ सयमेव चोदेइ, जम्हा ते दाणभत्तेसणे रया तम्हा तेसिं भिहत्थि तवस्सिणो साहुणो भिक्खवत्तिणोत्तिकाऊणं अणुकंपाए आहाकम्मादी करेंति, तं च आहाकम्मादी अण्णाणओ गेण्हमाणा सत्तोवघाए वट्टंति, एत्थं भण्णइ-वयं च वित्तिं लब्भामो ण य कोइ उवहम्मइ' वयं अस्मद् प्रथमाबहुवचनं जस् 'युयवयौ जसी' ति (पा.७-२-९३) वयआदेशः ङेप्रथमयोरमिति (पा.७-१-२८) जस् अम्, परगमनं च, कृपापन्ना वयं च आहाकम्मादीणि परिहरंता वयं च तहा वित्तिं व लब्भामो जहा तहा न य कोवि सत्तो उवहंमिहिति, तं च इमेण कारणेण णोवहम्मइ, 'वृत् वर्त्तने' धातुः 'स्त्रियां क्तिन्' (पा.३-३-९६) वृत्तिः, 'डुलभष् प्राप्तौ' धातुः अस्य धातोः लट्प्रत्ययः, अनुबंधलोपः, लस्य तिबादेशे प्राप्ते उत्तमपुरुषबहुवचनं मस् 'स्यतासी लृलुटो' रिति (पा. ३-१-३३) स्यप्रत्ययः अनुबंधलोपः 'अलोऽन्त्यस्ये' (पा.१-१-५२) ति भकारस्य 'खरि चे'ति (पा.८-४-५५) पत्वं 'अतो दीर्घो यञीति (पा. ७-३-१०१)

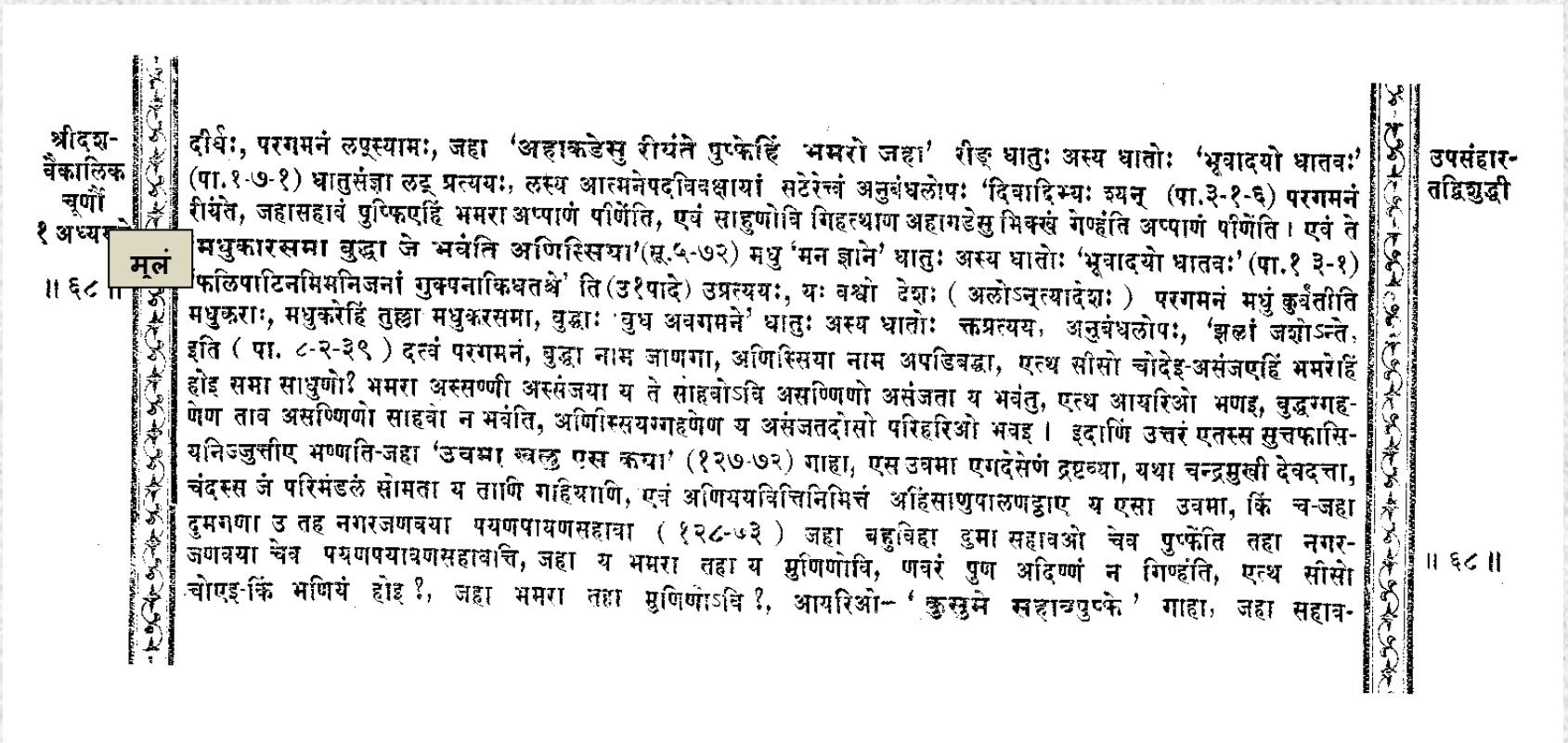
उपसंहार-तद्विशुद्धी

॥ ६७ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥४॥

दीप अनुक्रम [४]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्य...

मूलं

॥ ६८ ॥

दीर्घः, परगमनं लप्स्यामः, जहा 'अहाकडेसु रीयंते पुप्फेहिं भमरो जहा' रीङ् धातुः अस्य धातोः 'भूवादयो धातवः' (पा.१-७-१) धातुसंज्ञा लट् प्रत्ययः, लस्य आत्मनेपदविवक्षायां सटेरेच्चं अनुबंधलोपः 'दिवादिभ्यः श्यन्' (पा.३-१-६) परगमनं रीयंते, जहासहावं पुप्फेहिं भमरा अप्पाणं पीणेंति, एवं साहुणोवि गिहत्थाण अहाकडेसु भिक्खं गेण्हंति अप्पाणं पीणेंति। एवं ते मधुकारसमा बुद्धा जे भवंति अणिस्सिया'(सू.५-७२) मधु 'मन ज्ञाने' धातुः अस्य धातोः 'भूवादयो धातवः' (पा.१ ३-१) फलिपाटिनमिसनिजनां गुक्पनाकिधतश्चे' ति(उ१पादे) उप्रत्ययः, यः वश्चो देशः (अलोऽन्त्यादेशः) परगमनं मधुं कुर्वंतीति मधुकराः, मधुकरेहिं तुल्ला मधुकरसमा, बुद्धाः 'बुध अवगमने' धातुः अस्य धातोः क्तप्रत्यय, अनुबंधलोपः, 'झलां जशोऽन्ते, इति (पा. ८-२-३९) दत्वं परगमनं, बुद्धा नाम जाणगा, अणिस्सिया नाम अपडिबद्धा, एत्थ सीसो चोदेइ-असंजएहिं भमरेहिं होइ समा साधुणो? भमरा अस्सण्णी अस्संजया य ते साहवोऽवि असण्णिणो असंजता य भवंतु, एत्थ आयरिओ भणइ, बुद्धग्गहणेण ताव असण्णिणो साहवो न भवंति, अणिस्सयग्गहणेण य असंजतदोसो परिहरिओ भवइ। इदाणिं उत्तरं एतस्स सुत्तफासिनिज्जुत्तीए भण्णति-जहा 'उवमा खलु एस कया' (१२७-७२) गाहा, एस उवमा एगदेसेण द्रष्टव्या, यथा चन्द्रमुखी देवदत्ता, चंदस्स जं परिमंडलं सोमता य ताणि गहियाणि, एवं अणियतविचित्तनिमित्तं अहिंसाणुपालणट्ठाए य एसा उवमा, किं च-जहा दुमगणा उ तह नगरजणवया पयणपायणसहावा (१२८-७३) जहा बहुविहा दुमा सहावओ चेव पुप्फेंति तहा नगरजणवया चेव पयणपयावणसहावत्ति, जहा य भमरा तहा य मुणिणोवि, णवरं पुण अदिण्णं न गिण्हंति, एत्थ सीसो चोएइ-किं भणियं होइ ?, जहा भमरा तहा मुणिणोऽवि ?, आयरिओ- 'कुसुमे सहावपुप्फे' गाहा, जहा सहाव-

॥ ६८ ॥

उपसंहार-तद्विशुद्धी

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥५॥

दीप अनुक्रम [५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने

॥ ६९ ॥

कुसुमितेसु दुमगहनेसु भमरा आवाहं अकुव्वमाणा रसं आइयंति, एवं नगरजणवएहिं सद्धावेण चेव पयणपयावणएहिं अप्पणो अट्ठाए उन्नक्खडियं समणा सुविहिया उग्गमादिसुद्धं गवेसित्ता आहारेन्ति । इदाणिं जो एस हेट्ठा दोसो भणिओ सीसेण जहा जइ मधुगारसमा साहवो तो ते असण्णिणो असंजता य, जइ मधुकरसमा साहुणो तओ असंजता भवंति, एयस्स दोसस्स परिहरणनिमित्तं आयरिओ अद्धगाहाए भणइ, सा य इमा उवसंहारो भमरा जह तह समणावि अवहजीवात्ति (१३० ७३) जहा ते भमरा कुसुमाण किलामं अणुप्पाएत्ता रसमावियंति तहा साहुणोवि आहाकम्मादीणि परिहरंता ण कस्सइ पीलं उप्पायंति, किंच-भमराणं साधूण य महंतो चेव विसेसो, जहा 'णाणापिंडरया दंता' 'पिडि संघाते' धातुः, अस्य 'इदितो नुम्' (पा. ७-१-५८) नुम्, नंदिग्रहिपचादिभ्यः' (पा. ३-१-१२४) अच्, अनुबंधलोपः, परसवर्णः परगमनं पिंडः, णाणापिंडरया णाम उक्खित्तचरगादी पिंडस्स अभिग्गहविसेसेण णाणाविधेसु रता, अहवा अंतपंताईसु नाणाविहेसु भोयणेसु रता, ण तेसु अरइं करेंति, भणितं चहे-जं व तं च आसिय जत्थ व तत्थ व सुहोवगतनिद्दा। जेण व तेण व संतुट्ठ धीर ! मुणिओ तुमे अप्पा ॥१॥" ते णाणापिंडरता दुविधा भवंति, तंजहा-दव्वओ भावओ य,दव्वओ आसहत्थिमादि, ते णो दंता भावओ, साहवो पुणो) इंदिएसु दंता, इदाणिं आयरिओ सयमेव सीसहितट्ठा अपुच्छिओ चेव इट्ठं गाहाए पच्छद्धं भणइ-दंतेत्ति पुण पदंमी नायव्वं वक्कसेसमिणं' जं एयं दंतेत्ति पदं, वक्कसेसं नाम दत्तगहणेण अण्णाणिवि तज्जाइयाणि गहियाणित्ति वुत्तं भवइ, काणि पुण ताणि पदाणि?-' जो एत्थेवं ' गाहा (१३१-७३) एयंमि दुमपुप्फियज्झयणे भमरुवदिट्ठंतपाहण्णेण एसणासमिई वण्णिया,तहा इरियासमियाईणि जाणि पदाणि ताणि गहियाणित्ति, दिक्खियपयारो णाम जं दिक्खिएण आयरियव्वंति वुत्तं भवइ,उवसंहारविसुद्धी

उपसंहार-विशु-द्ध्याद्याः

॥ ६९ ॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १ अध्ययने ॥ ७० ॥

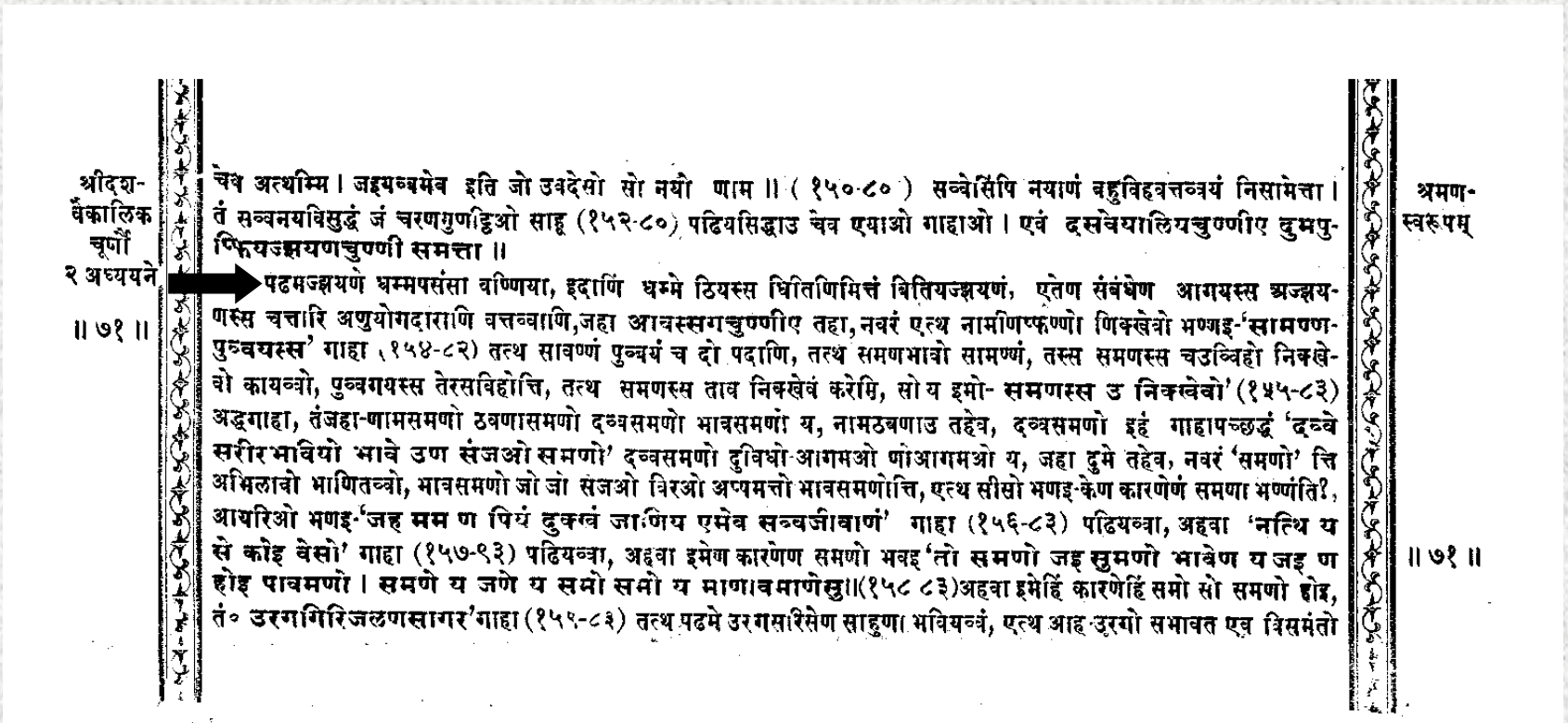
नाम संमत्ता ॥ इदाणिं णिगमणं,- 'तेण वुच्चंति साहुणो' जेण कारणेण तसथावराण जीवाणं अप्पणो य हियत्थं च भवइ तहा जयंति अतो य ते साहुणो भण्णंति, निगमणं सम्मत्तं। इदाणिं निगमणविसुद्धीए अभिसंबंधनिमित्तं आयरिओ सयमेव चोदेइ, जहा जइ कोई भणेज्जा परिव्वायगरत्तपडादिणो तसथावरभूतहितत्थमप्पहितत्थं च जयंता साहुनो भविस्संति, तं च णेव भवइ, जेण ते सब्भावओ ण जयंति, कहं न जयंति?, तत्थ सक्काणं जं उद्दिस्स सत्तोवघातो भवइ ण तत्थ तेसिं कम्मबंधो भवइ, परिव्वायगा नाम जइ किर तेसिं सद्दाइणो विसया इंदियगोयरं हव्वमागच्छंति, भणियं तेसिं 'इंदियविसयपत्ताणं उवयोगो कायव्वो' एवं ते अण्णाणमहासमुद्दमोगाढा पडुप्पण्णभारिया जीवा ताणि आलंबणाणि काऊण तमेव परिकिलेसावहं गिहवासं अवलंबयंति, कहं ते साहवो?, साहवो पुण भगवंतो सब्भावओ जयंति, कहं ते ण?, 'कायं वायं च मणं' गाहा (१३६-७४) काएण ताव समाहियपाणिपादा चिट्ठंति गच्छंति वा, वायाएवि अकुसलवइनिरोहं करेंति कुसलवइउदीरणं च, मणेणवि अकुसलमणनिरोहं करेंति कुसलमणउदीरणं च, इंदियाणि इट्ठेसु इंदियविसएसु रागं न करेंति. अणिट्ठेसु दोसं, अट्ठारसविहमबंभं परिवज्जित्ता बंभं धारेंति, कसायाणं कोहादीणं उदयनिरोधं करेंति, उदिण्णाण विफलीकरणं, 'जं च तवे' गाहा (१३७-७४) बारसविहे तवे जहासत्तीए उज्जुत्तत्तणं काउं, एतेण कारणेण तेसिं साहुलक्खणं संपुण्णं भवइ, ण तु सक्कादीणं णियडिबहुलाणं, तम्हा जिणवयणरया साहुणो भवंति। निगमणसुद्धी समत्ता। समत्ता दसावयवा इमे, तं जहा 'ते उ पइण्णविसुद्धी' गाहा (१३८-७५) एवं दुमपुप्फियज्झयणं संखेवेण भणियं, वित्थरओ पुण सव्वक्खरसण्णिवाइणो चोद्दसपुव्विणो अणगारा कहयंति, 'सेअत्थं एत्थ' गाहा ( ) 'दुमपुप्फिय' गाहा, ( ) इदाणिं नयत्ति गाहा--'णायंमि गिण्हियव्वे अगेण्हियव्वंमि

उपसंहार-विशुद्ध्याद्याः ॥ ७० ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥५॥

दीप अनुक्रम [५]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ २ अध्ययने ॥ ७१ ॥

चेव अत्थम्मि। जइयव्वमेव इति जो उवदेसो सो नयो णाम ॥ (१५०-८०) सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं निसामेत्ता। तं सव्वनयविसुद्धं जं चरणगुणट्ठिओ साहू (१५२-८०) पढियसिद्धाउ चेव एयाओ गाहाओ। एवं दसवेयालियचुण्णीए दुमपुप्फियज्झयणचुण्णी समत्ता ॥

पढमज्झयणे धम्मपसंसा वण्णिया, इदाणिं धम्मे ठियस्स धितिणिमित्तं बितियज्झयणं, एतेण संबंधेण आगयस्स अज्झयणस्स चत्तारि अणुयोगदाराणि वत्तव्वाणि,जहा आवस्सगचुण्णीए तहा,नवरं एत्थ नामीणप्फण्णो णिक्खेवो भण्णइ-'सामण्णपुव्वयस्स' गाहा (१५४-८२) तत्थ सावण्णं पुव्वयं च दो पदाणि, तत्थ समणभावो सामण्णं, तस्स समणस्स चउव्विहो निक्खेवो कायव्वो, पुव्वगयस्स तेरसविहोत्ति, तत्थ समणस्स ताव निक्खेवं करेमि, सो य इमो- **समणस्स उ निक्खेवो**' (१५५-८३) अद्धगाहा, तंजहा-णामसमणो ठवणासमणो दव्वसमणो भावसमणो य, नामठवणाउ तहेव, दव्वसमणो इहं गाहापच्छद्धं 'दव्वे सरीरभावियो भावे उण संजओ समणो' दव्वसमणो दुविधो-आगमओ णोआगमओ य, जहा दुमे तहेव, नवरं 'समणो' त्ति अभिलावो भाणितव्वो, भावसमणो जो जो संजओ विरओ अप्पमत्तो भावसमणोत्ति, एत्थ सीसो भणइ-केण कारणेण समणा भण्णंति?, आयरिओ भणइ-'जह मम ण पियं दुक्खं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं' गाहा (१५६-८३) पढियव्वा, अहवा 'नत्थि य से कोइ वेसो' गाहा (१५७-९३) पढियव्वा, अहवा इमेण कारणेण समणो भवइ 'तो समणो जइ सुमणो भावेण य जइ ण होइ पावमणो। समणे य जणे य समो समो य माणावमाणेसु॥(१५८-८३)अहवा इमेहिं कारणेहिं समो सो समणो होइ, तं० उरगगिरिजलणसागर'गाहा (१५९-८३) तत्थ पढमे उरगसरिसेण साहुणा भवियव्वं, एत्थ आह-उरगो सभावत एव विसमंतो

श्रमण-स्वरूपम्

॥ ७१ ॥

➡ **अध्ययनं -१- परिसमाप्तं** **अध्ययनं -२- ‘श्रामण्यपूर्वकं’ आरभ्यते**

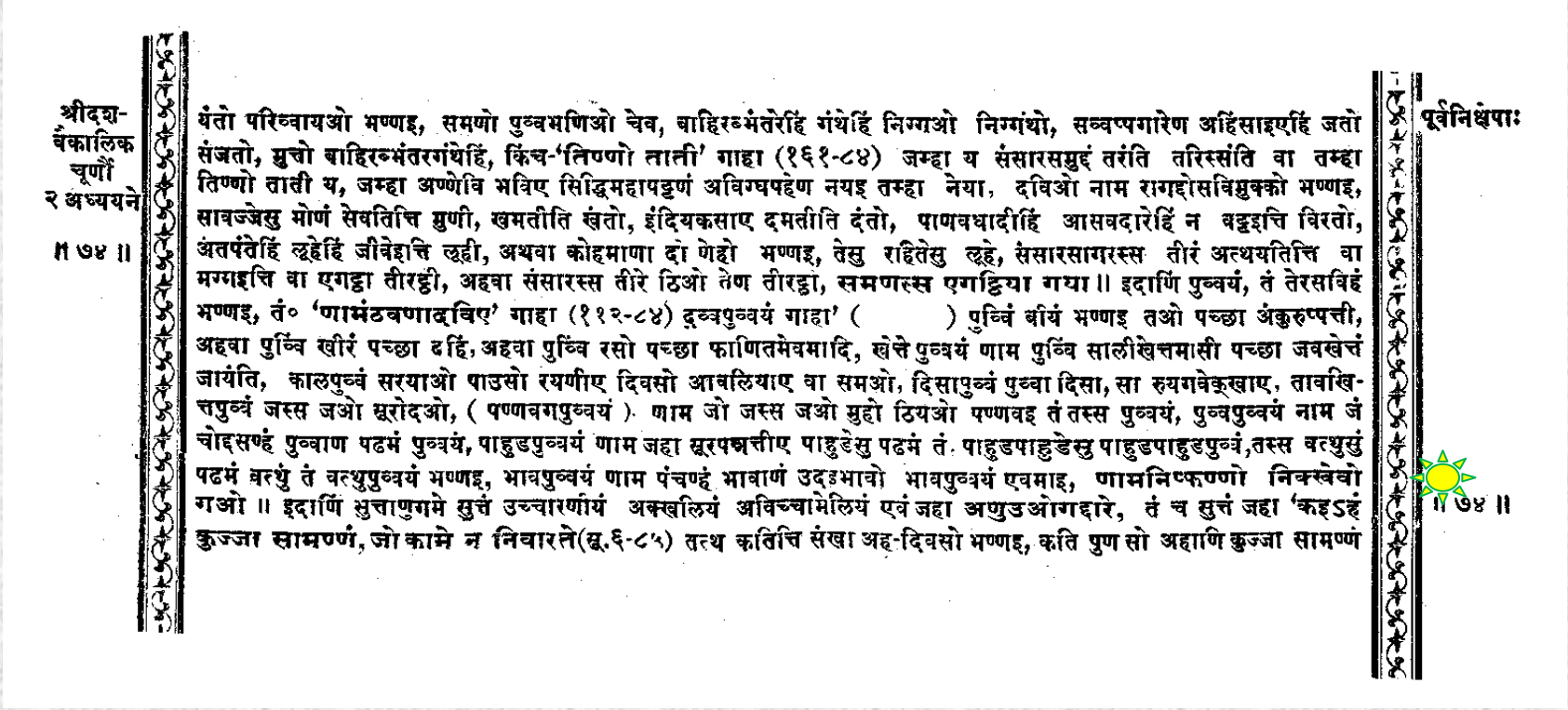
रोसणो अणवरद्धवेरिओ य, किमेरिसो साहू भवउ?, भण्णइ-जं तस्स एगंतदिट्ठित्तं परनिलयत्तं च बिलं च अइगच्छंतो ओरयं न आसाएइ, एताणि पडुच्च भण्णइ,जहा उरगसमेण होयव्वं, तत्थ एगंतदिट्ठित्तणं धम्मं पडुच्च कायव्वं, परकडपरिणिट्ठियासु वसहीसु वसितव्वं, बिलसरिसं भोत्तव्वं, तं बिलं नउलयं पविसमाणं न आसादेइ तहा आहारोवि अणासायंतेण आहारेयव्वो, किंच- पव्वयसरिसेण साधुणा होयव्वं, तस्स पुण पव्वयस्स अण्णाणभावं खरभावं च उज्झिऊणं तेजस्सित्तणं परिगिज्झइ, जहा व सो अगणी इंधणादीहिं न तिप्पइ, एवं सुत्तेवि अज्झाइअव्वे साहुणा अतित्तेण भवितव्वं, जह वा सो अग्गी इंधणादीणि डहमाणे णो कत्थइ विसेसं करेति-इमं डहितव्वं इमं वा अडहणीयं, एवं मणुण्णामणुण्णेसु अण्णपाणादिसु फासुएसणिज्जेसु रागो दोसो वा न कायव्वो, किंच-सागरसरिसिण होयव्वं साहुणा, सो य गतीए खारत्तणेण अपेयो न एयं घेप्पइ, किं तु जाणि य समुद्दस्स गंभीरत्तं अगाहत्तणं व ताणि घेप्पंति, कहं ?, साहुणा सागरो इव गंभीरेण होयव्वं, नाणदंसणचरित्तेहि य अगाहेण भवितव्वं, कहं ?, माइपिइमाइएसु नातिसंजोएसु वा रागदोसेहिं आगासमिव निरुवलेवेण भवितव्वं, किंच-तरुसरिसेण भवितव्वं, कहं ?, जहा रुक्खो छिज्जमाणो भइज्जमाणो रागं दोसं न गच्छइ तहा माणमाणे साहुणा भवितव्वं, किंच-भमरेण व अनियतवत्तिणा भवितव्वं, कहं?, भमरो जहा एस चेव हेट्ठा उदरं देसं कालं च नाऊण चरइ, एवं साहुणावि गोयरचरियादिसु देसं कालं च नाऊण चरियव्वं, जहा मिगो णिच्चुव्विग्गो तहा णिच्चकालमेव संसारभउव्विग्गेण अप्पमत्तेण भवियव्वं, किंच-धरणी विव सव्वफासविसहेण साहुणा भवितव्वं, किंच-जलरुहसमेण साहुणा भवियव्वं, जहा पउमं पंके जायं जले संवड्ढं तेहिं चेव नोवलिप्पइ, एवं साहुणावि कामेहिं जाएण भोगेहिं संवड्ढिएण तहा कायव्वं जहा तेहिं न लिप्पइ. किंच-सूरो इव तेयसा जुत्तेण साहुणा भवितव्वं, जहा

सूरोदयो समंता अविसेसेण लोगं पगासेइ, एवं साहुणावि धम्मं कहयंतेण राइणो दासस्स अविसेसेण कहेयव्वं. भणियं च 'जहा पुण्णस्स कत्थइ तहा तुच्छस्स कत्थइ' किंच साहुणा पवणसमेण होयव्वं, जहा पवणो कत्थइ ण पडिबद्धो तहा साहुणावि अपडिबद्धेण होयव्वं, किंच-समणेण विसतिनिसाइसु कारणेसु जे गुणा तेसु वट्टियव्वं, तत्थ इमा गाहा (२५०-८३) तत्थ पढमं साहुणा विससमेण भवितव्वं, भणियं च-'वयं मणुस्साण सहा ण पडिया, ण माणिणो णेव य अत्थगव्विया । जणं जणं (तो) पभवामु तारिसा, जहा विसं सव्वरसाणुवादिणं ॥१॥ तिणिसा जहा सव्वतो नमइ एवं जहाराइणिए णमितव्वं, सुत्तत्थं च पडुच्च ओमराइणिएसुवि नमियव्वं. वाऊ जहा हेट्ठा, वंजुलो नाम वेतसो, तस्स किल हेट्ठ चिट्ठिया सप्पा निव्विसीभवंति, एरिसेण साहुणा भवितव्वं, जहा कोहाइएहिं महाविसेहिं अभिभूए जीवे उवसामेइ, कणवीरपुप्फं सव्वपुप्फेसु पागडं णिग्गंधं च, एवं साहुणावि सव्वत्थ पागडेण भवियव्वं, जहा असुइत्ति एस निग्गंथेणं असुभगंधो न भवइ सीलस्स एवं भवियव्वं, उप्पलसरिसेण साहुणा भवियव्वं, कहं ?, जहा उप्पलं सुगंधं तहा साहुणा सीलसुगंधेण भवियव्वं, नडेत्ति जहा से बहुस्सवि रायवेसं काउं दासवेसं धारेइ एवमाइ, एवं साहुणा माणावमाणेसु नडसरिसेण भवियव्वं, कुक्कुडत्ति कुक्कुडो जं लब्भइ तं पाएण विक्किरइ ताहे अण्णेवि सत्ता चुणंति, एवं संविभागरुइणा भवियव्वं, अहाए आदरिसपडितावित्र पागडभावेण होयव्वं, अहवा 'तरुणंमि होंति तरुणो थेरो थेरेहिं डहरए डहरो। अहाओ विव रूवं अणुयत्तइ जस्स जं सीलं ॥१॥' इदाणिं समणस्स इमाणि एगट्ठियाणि, तं० 'पव्वइए अणगारे' गाहा (१६१-८४), तत्थ पव्वइओ नाम पापाद्विरतो प्रव्रजितः, अणगारा नाम अगारं-गृहं तद् यस्य नास्ति सः अनगारः, अट्ठविहाओ कम्मपासाओ डीणो पासंडी, तवं चरतीति चरगो, तवे ठिओ तावसो, भिक्खणसीलो भिक्खू, सव्वसो पावं परिवज्ज-

॥ ७३ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||६-१६||

दीप अनुक्रम [६-१६]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ २ अध्ययने ॥ ७४ ॥

यंतो परिव्वायओ भण्णइ, समणो पुव्वभणिओ चेव, बाहिरब्भंतरेहिं गंथेहिं निग्गओ निग्गंथो, सव्वप्पगारेण अहिंसाइएहिं जतो संजतो, मुत्तो बाहिरब्भंतरगंथेहिं, किंच-'तिण्णो तारी' गाहा (१६१-८४) जम्हा य संसारसमुद्दं तरंति तरिस्संति वा तम्हा तिण्णो तारी य, जम्हा अण्णेवि भविए सिद्धिमहापट्टणं अविग्घपहेण नयइ तम्हा नेया, दविओ नाम रागद्दोसविमुक्को भण्णइ, सावज्जेसु मोणं सेवतित्ति मुणी, खमतीति खंतो, इंदियकसाए दमतीति दंतो, पाणवधादीहिं आसवदारेहिं न वट्टइत्ति विरतो, अंतपंतेहिं लूहेहिं जीवेइत्ति लूही, अथवा कोहमाणा दो णेहो भण्णइ, तेसु रहितेसु लूहे, संसारसागरस्स तीरं अत्थयतित्ति वा मग्गइत्ति वा एगट्ठा तीरट्ठी, अहवा संसारस्स तीरे ठिओ तेण तीरट्ठा, समणस्स एगट्ठिया गया ॥ इदाणिं पुव्वयं, तं तेरसविहं भण्णइ, तं० 'णामंठवणादविए' गाहा (११२-८४) दव्वपुव्वयं गाहा' ( ) पुव्विं बीयं भण्णइ तओ पच्छा अंकुरुप्पत्ती, अहवा पुव्विं खीरं पच्छा दहिं, अहवा पुव्विं रसो पच्छा फाणितमेवमादि, खेत्ते पुव्वयं णाम पुव्विं सालीखेत्तमासी पच्छा जवखेत्तं जायंति, कालपुव्वं सरयाओ पाउसो रयणीए दिवसो आवलियाए वा समओ, दिसापुव्वं पुव्वा दिसा, सा रुयगवेकूखाए, तावखित्तपुव्वं जस्स जओ सूरोदओ, (पण्णवगपुव्वयं) णाम जो जस्स जओ मुहो ठियओ पण्णवइ तं तस्स पुव्वयं, पुव्वपुव्वयं नाम जं चोद्दसण्हं पुव्वाण पढमं पुव्वयं, पाहुडपुव्वयं णाम जहा सूरपन्नत्तीए पाहुडेसु पढमं तं पाहुडपाहुडेसु पाहुडपाहुडपुव्वं,तस्स वत्थुसु पढमं वत्थुं तं वत्थुपुव्वयं भण्णइ, भावपुव्वयं णाम पंचण्हं भावाणं उदइभावो भावपुव्वयं एवमाइ, णामनिप्फण्णो निक्खेवो गओ ॥ इदाणिं सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारणीयं अक्खलियं अविच्चामेलियं एवं जहा अणुउओगदारे, तं च सुत्तं जहा 'कइऽहं कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारते(सू.६-८५) तत्थ कतिंति संखा अह-दिवसो भण्णइ, कति पुण सो अहाणि कुज्जा सामण्णं

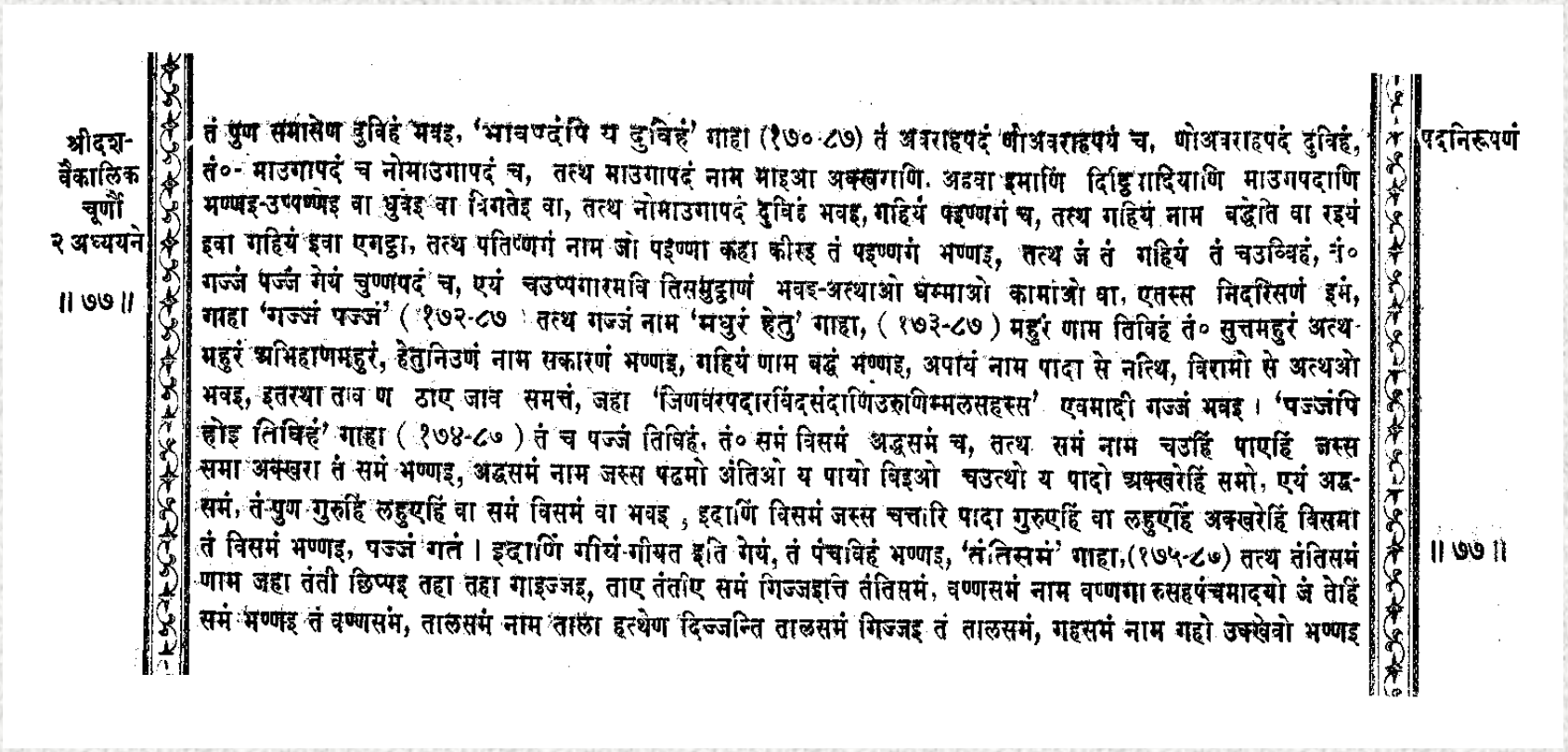
पूर्वनिक्षेपाः

॥ ७४ ॥

सर्वत्र एष: चिन्ह: मूलं दर्शयते (जहां भी ऐसा चिन्ह बनाया है, वहा नई गाथा या सूत्र का आरम्भ होता है ऐसा समझ लेना)

जो कामे ण णिवारए?, अण्णे पुण पढंति-'कयाऽहं कुज्जा सामण्णं' कदा इति कंमि काले अहमिति अत्तीनिद्देसे वट्टइ, कदाऽहं करेमि सामण्णं जो कामे न निवारए, कोसिंपि पुण एवं 'कहं ण कुज्जा सामण्णं जो कामे न निवारए' तिन्नि एते विकप्पा अविरुद्धा, पाएण पुण एयं सुत्तं एव पढेज्जइ 'कहंणु कुज्जा सामण्णं' तत्थ कहणुत्ति-किं केन प्रकारेण 'किमश्चे' ति (पा.५-३-२५) थमुप्रत्ययः कथं, नु निपातः, कथं नु, कथं नुशब्दः क्षेपे प्रश्ने च वर्त्तते, तत्र क्षेपः प्रपंचेत्युच्यते यथा कथं नु राजा?, यो न रक्षति, कथं नु वैयाकरणः?, शब्दं न ब्रूयात्' प्रश्ने कथं नु अयं दाता ?, द्रव्यैः, अहवा कथं नु भगवन् जीवाः सुखवेदनीयं कर्म्म बध्नंति एवमादि, एत्थं पुण सुत्ते कहंणु सद्दो खेवे दट्ठव्वो, कथं नु स कुर्यात् श्रामण्यं ?, यः कामान् न निवारयति, कुर्यात् 'डुकृञ् करणे' धातुः अस्य धातोः 'भूवादयो धातवः (पा. १-३-१) इति धातुसंज्ञा, प्रत्ययाधिकारे 'विधिनिमंत्रणामंत्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनातिसर्जनेषु लिङ्' प्रत्ययः (पा. ३-३-१६१) अनुबंधलोपः लस्य तिप् 'यासुट्परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्चे' ति (पा. ३-४ १०३) अनुबंधलोपः 'सार्वधातुकार्द्धधातुकयोरिति (पा. ७-३-८४) गुणः 'उरण्पर' इति (१-१-५१) रपरत्वं 'अत उत्सार्वधातुके' इति (पा. ६-४-११०) अकारस्य उकारः, 'नित्यं ङितश्चे' ति (पा. ३-४-९९) अइकारलोपः (ये चेति ६-४-१०९ प्रत्ययोकार-लोपः) परगमनं कुर्यात्, सामन्नं यः कामान्न निवारयति, ते य कामा इमे 'णामंठवणा' गाहा (१६३-८५) ते य कामा चतु-व्विधा पण्णत्ता, तं०-णामकामा ठवणाकामा दव्वकामा भावकामत्ति, णामठवणाओ तहेव, तत्थ दव्वकामा इमे, तं०'सद्दरस' एस गाहाए पुव्वद्धं (१६४-८५) ते इट्ठा सद्दरसरूवगंधफासा कामिज्जमाणा विसयपसत्तेहिं कामा भवंति, जाणि य मोहोदयकारणाणि विगडमादीणि दव्वाणि तेहिं अब्भवहरिएहिं सद्दादिणो विसया उदिज्जंति एते दव्वकामा, भावकामा नाम ते 'दुविधा य

भावकामा' दुविधा य 'इच्छाकामा य मदणकामा य' तत्थ 'इच्छा पसत्था अपसत्था य' गाहा पुव्वद्धं (१६५-८६) तत्थ पसत्था इच्छा जहा धम्मं कामयति मोक्खं कामयति, अपसत्था इच्छा रज्जं वा कामयति जुद्धं वा कामयति एवमादि इच्छाकामा, मदण-कामा नाम वेदोदयो भण्णइ, जहा इत्थी इत्थिवेदेण पुरिसं पत्थेइ, पुरिसोवि इत्थी, एवमादी, तेणाऽत्त-तेण मयणकामेण अहिगारो, सेसा उच्चारितसरिसत्तिकाऊण परूविया, तस्स मदणकामस्स इमाओ दोन्नि निरुत्तीगाहाओ 'विसयसुहेसु पसत्तं' गाहा (१६६-८६) भाणियव्वा 'अण्णंपिय से णामं' गाहा (१६७-८६) पढियव्वा, कामा भणिया, एते कामा जो समणो पत्थेइ, जओ ण णिवारए, सो कहं सामण्णं करेइहिइ?, एत्थ सीसो आह-सो साहू कामा अनिवारयंतो सामण्णं कहं न करेहिइ?, एत्थ आयरिओ भणइ- 'पदे पदे विसीदंतो, संकप्पस्स वसं गओ' गम्मंति जेणंति तं पदं भण्णइ, जहा हत्थिपदं वग्घपदं सीहपदं एवमादि, अहवा पदंणाम जेण निव्वत्तिज्जइ तं पदं भण्णइ,जहा नहपदं परसुपदं वासिपदं, तं च पदं चउव्विहं,तं०'नामपदं'गाथा(१६८-८६) आउट्टियं णाम जहा रूवओ हेट्ठावि उवरिंपि मुहं काउं उवलब्भइ, उक्किण्णं जहा सिलाए णामयं उक्किरिज्जइ कंसभायणं वा, उण्णेज्जं णाम जहा बउलादीणं पुप्फाणं संठाणेणं चिक्खिल्लमयाणि काउं पच्चंति, तेसु मयणं वग्घारेत्ता छुब्भइ, ते य मयणमया उप्पायंति, तं उण्णिज्जं भण्णइ, पीलियं नाम जहा पोत्थं संवेल्लेत्ता ठविज्जइ तत्थ भंगा उट्ठंति तं पीलियं भण्णइ, रंगपदं नाम जहा पोत्ता बद्धगा वित्तगा कीरंति तं रंगपदं,गंधिमं माला भण्णइ, वेढिमं जहा आणंदपुरे पुप्फमया मउडा कीरंति, पूरिमं वित्तमयी कुंडिया करित्ता सा पुप्फाणं भरिज्जइ, तत्थ छिड्डा भवंति एवं पूरिमं, वादिमं पोत्तं रूवा कीरंति कोलिएहिं देयहेहिं य, संघाइमं जहा महिलाणं कंचुया संघाइज्जंति, छज्जंनाम अब्भपडलएसु, गतं पदपदं, इदाणिं भावपदं भण्णइ-भावपदंपि अणेगविहमेव,



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ २ अध्ययने ॥ ७७ ॥

तं पुण समासेण दुविहं भवइ, 'भावपदंपि य दुविहं' गाहा (१७०-८७) तं अवराहपदं नोअवराहपदं च, नोअवराहपदं दुविहं, तं०- माउगापदं च नोमाउगापदं च, तत्थ माउगापदं नाम माइआ अक्खराणि. अहवा इमाणि दिट्ठिवादियाणि माउगपदाणि भण्णइ-उप्पण्णेइ वा धुवेइ वा विगतेइ वा, तत्थ नोमाउगापदं दुविहं भवइ, गहियं पइण्णगं च, तत्थ गहियं नाम बद्धेल्लेति वा रइयं इवा गहियं इवा एगट्ठा, तत्थ पतिण्णगं नाम जो पइण्णा कहा कीरइ तं पइण्णगं भण्णइ, तत्थ जं तं गहियं तं चउव्विहं, तं० गज्जं पज्जं गेयं चुण्णपदं च, एयं चउप्पगारमवि तिसमुट्ठाणं भवइ-अत्थाओ धम्माओ कामाओ वा, एतस्स निदरिसणं इमं, गाहा 'गज्जं पज्जं' (१७२-८७) तत्थ गज्जं नाम 'मधुरं हेतु' गाहा, (१७३-८७) महुरं णाम तिविहं तं० सुत्तमहुरं अत्थमहुरं अभिहाणमहुरं, हेतुनिउणं नाम सकारणं भण्णइ, गहियं णाम बद्धं भण्णइ, अपायं नाम पादा से नत्थि, विरामो से अत्थओ भवइ, इतरथा ताव ण ठाए जाव समत्तं, जहा 'जिणवरपदारविंदसंदाणिउरुणिम्मलसहस्स' एवमादी गज्जं भवइ। 'पज्जंपि होइ तिविहं' गाहा (१७४-८७) तं च पज्जं तिविहं, तं० समं विसमं अद्धसमं च, तत्थ समं नाम चउहिं पाएहिं जस्स समा अक्खरा तं समं भण्णइ, अद्धसमं नाम जस्स पढमो अंतिओ य पायो बिइओ चउत्थो य पादो अक्खरेहिं समो, एयं अद्धसमं, तं पुण गुरुहिं लहुएहिं वा समं विसमं वा भवइ, इदाणिं विसमं जस्स चत्तारि पादा गुरुएहिं वा लहुएहिं अक्खरेहिं विसमा तं विसमं भण्णइ, पज्जं गतं। इदाणिं गीयं-गीयत इति गेयं, तं पंचविहं भण्णइ, 'तंतिसमं' गाहा,(१७५-८७) तत्थ तंतिसमं णाम जहा तंती छिप्पइ तहा तहा गाइज्जइ, ताए तंतीए समं गिज्जइत्ति तंतिसमं, वण्णसमं नाम वण्णगा रुसहपंचमादयो जं तेहिं समं भण्णइ तं वण्णसमं, तालसमं नाम तालो हत्थेण दिज्जन्ति तालसमं गिज्जइ तं तालसमं, गहसमं नाम गहो उक्खेवो भण्णइ

पदनिरूपणं

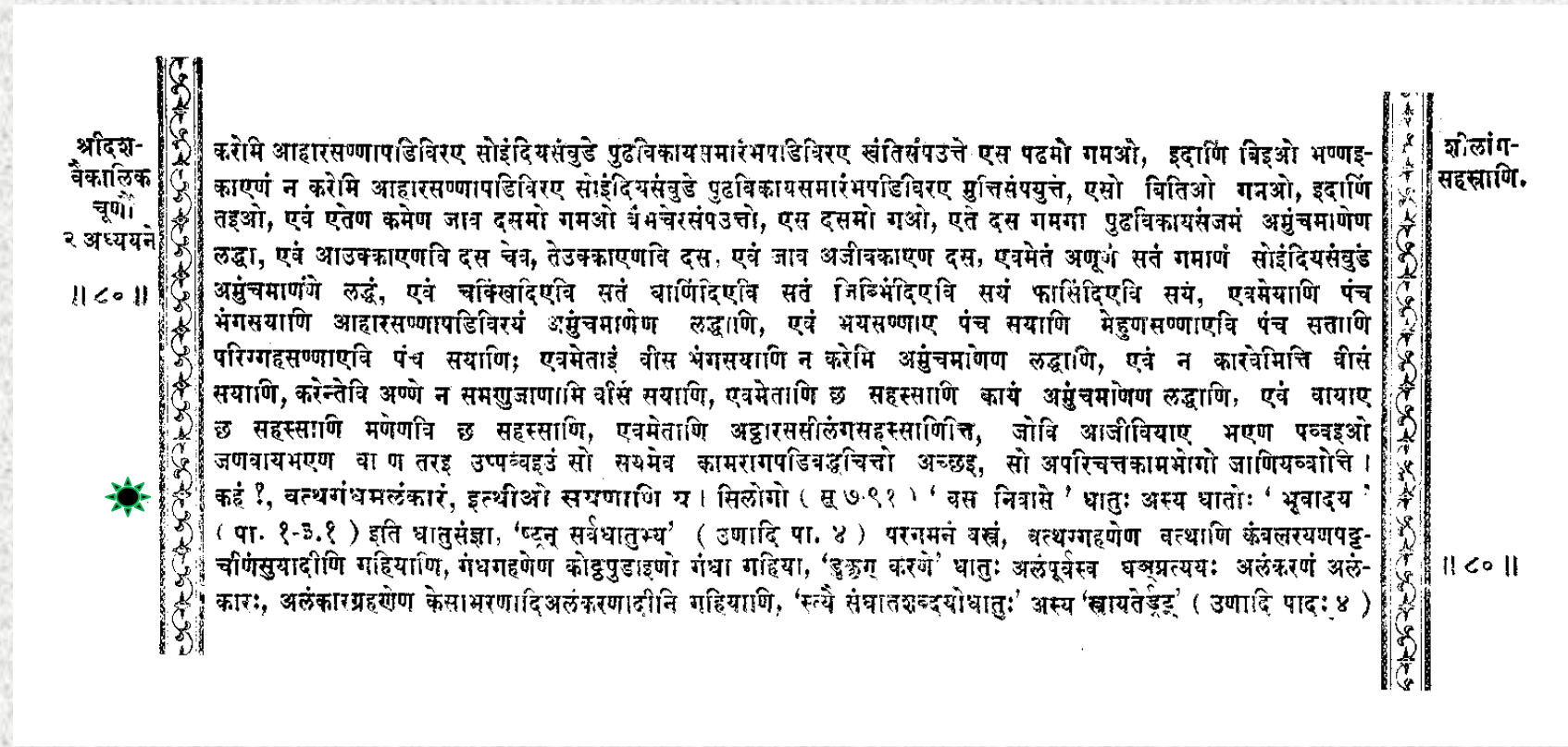
॥ ७७ ॥

जेण वत्तेण उक्खेवेण गावइ तं गहसमं भण्णइ, लओ नाम काणएण तंती छिप्पति ताहे नहेण आमज्जइ, तत्थ अण्णारिसो सरो उट्ठइ, तं लयसमं भण्णइ, गीयंति गतं। इदाणिं चुण्णपदं भण्णइ जहा बंभचेरेतराणि, एतस्स चुण्णपदस्स इमा लक्खणगाहा 'अत्थबहुलं महत्थं' गाहा (१७६-८६) अत्थबहुलं नाम जस्स बहु अत्था, महत्थं णाम पहाणं भण्णइ तेण जुत्तं, कारणेण हेउजुत्तंति भण्णइ, निवायता इमे, तं० च वा खलु ण हो एवमादयो अण्णतरो निवातो। इदाणिं उवसग्गए, ते य इमे तं० परि उत् श्रुत् अव एवमादि, एतेहिं निवातोवसग्गेहिं उववेयं गंभीरं भवइ, बहुपादं णाम जहा सिलोगो, गाहादीणं विरामो अत्थि न तथा तस्स, गमेहिं नयेहिं च विसुद्धं गमनयविसुद्धं, एवं चुण्णपदं गहियं सम्मत्तं, सम्मत्तं च नोअवराहपदंति, इदाणिं अवराहपदं-'इंदियविसया' गाहा (१७१-८८) तत्थ इंदियाणि सोतादीणि तेसिं विसया-सद्दादयो तेसु सद्दाइसु इट्ठाणिट्ठेसु सोतादीहिं इंदिएहिं रागदोसं गन्तूणं, कसाया कोहाहयो तेसु कया वट्टंता, परीसहा बावीसं तेसु बावीसाए परीसहेसु उदिण्णेसु वेदणा उवसग्गा भवंति, अण्णे य मज्जप्पमायादयो तेसु एक्केक्कए कारणे सीदंतो नाम पमादयंतोत्ति वुत्तं भवति. 'संकप्पस्स वसं गओ' संकप्पोत्ति वा छंदोत्ति वा कामज्झवसायो तस्स संकप्पस्स वसं गओ, एत्थ उदाहरणं जहा एगो खंतो सपुत्तो पव्वइयो, सो य चेल्लओ तस्स अतीव इट्ठो, सीदमाणो य भणइ-खंत! न सक्केमि अणुव्वाहणो हिंडिउं, अणुकंपाए खंतीण दिण्णा उवाहणाओ, ताहे भणइ-उवरितला सीतेण फुट्टंति, खल्लिया से कयातो, पुणो भणइ-सीसं मे अतीव डज्झइ, ताहे सीसदुवारिया से अणुन्नाया, ताहे भणइ-न सक्केमि हिंडिउं, तो से पडिस्सए ठियस्स आणेइ, एवं न तरामि खंता! भूमिए सुविउं, ताहे संथारो से अणुण्णातो, पुणो भणइ-न तरामि खंतो! लोयं काउं, तो खुरेण पकज्जिओ, ताहे भणइ-अण्हाणगं न सक्केमि, तओ से फासुगपाणएण

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||६-१६||

दीप अनुक्रम [६-१६]

कप्पो आयरियपाउग्गं च जुयलं घेप्पइ, एवं जं जं भणइ तं तं खंतओ तस्स नेहपडिबद्धो अणुयाणइ,एवं काले गच्छमाणे पभणितं, ण तरामि अविरातियाए विणा अच्छिउं खंतत्ति, ताहे खंतो भणइ-सढोऽतोऽजोगोत्तिकाऊण पडिस्सयाओ निप्फेडिओ, कम्मं न याणइ, अयाणंतो खणसंखडीए धण्णिकाउं अज्जण्णण मओ विसयवसट्टो मरिउं महिसो आयातो वाहिज्जइ य, खंतोवि सामण्ण-परियागं पालेऊण आउक्खए कालगओ देवेसु उववण्णो ओहिं पउंजइ, ओहिणा आभोगेउं तं चेल्लगं तेण पुव्वनेहेणं तेसिं गोहाण हत्थाओ किणइ, वेउव्विए भंडीए जोएइ, वाहेइ य गुरुगं, तं अतरेंतो वोढुं तोत्तएण वेहिउं भणइ-न तरामि खंता! भिक्खं हिंडिउं, एवं भूमिय सयणं लोयं काउं, एवं ताणि सव्वाणि वयणाणि उच्चरेइ जाव अविरइयाए विणा न तरामि खंतत्ति, ताहे एवं भणंतस्स तस्स महिसस्स इमं चित्तं जातं-कहिं एरिसं वत्तं सुयं वत्ति, ताहे ईहावूहमग्गणगवेसणं करेइ, एवं चिंतयंतस्स जातीसरणं समुप्पण्णं, देवेण ओही पउत्तो संबुद्धो, पच्छा भत्तं पच्चक्खाइय देवलोगं गतो, एवं पदे पदे विसीयंतो संतो संकप्पस्स वसं गच्छइ, जम्हा एस दोसो तम्हा अट्ठारसीलंगसहस्साणं संरक्खणनिमित्तं एते अक्खराहपदे वजेज्जा, सीसो भणइ-कतराणि पुण ताणि?, आयरिओ भणइ-इमाणि, तेसिं च सीलंगसहस्साणं इमाए गाहाए अत्थं अणुसारियव्वो-'जोए करणे सण्णा इंदिय भोमादि समणधम्मे य। सीलंगसहस्साणं अट्ठारसगस्स उप्पत्ती॥१॥ तत्थ ताव जोगो तिविहो-काएण वायाए मणेणं, करणं तिविहं-कयं कारावियं अणुमोइयं, सण्णा चउव्विहा तं०-आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा, इंदिए पंच, तं०-सोइंदिए चक्खिंदिए घाणिंदिए जिब्भिंदिए फासिंदिए, पुढविकाइयाइ पंच बेइंदिया जाव पंचेंदिया अजीवकाय पंचमो, समणधम्मो दसधा, तं०-खंती मोत्ती अज्जवे मद्दवे लाघवं सच्चे तवे संजमो बंभचेरवासे, एसा ठाणपरूवणा, अट्ठारसण्हं सीलंगसहस्साणं परूवणा--काएण न



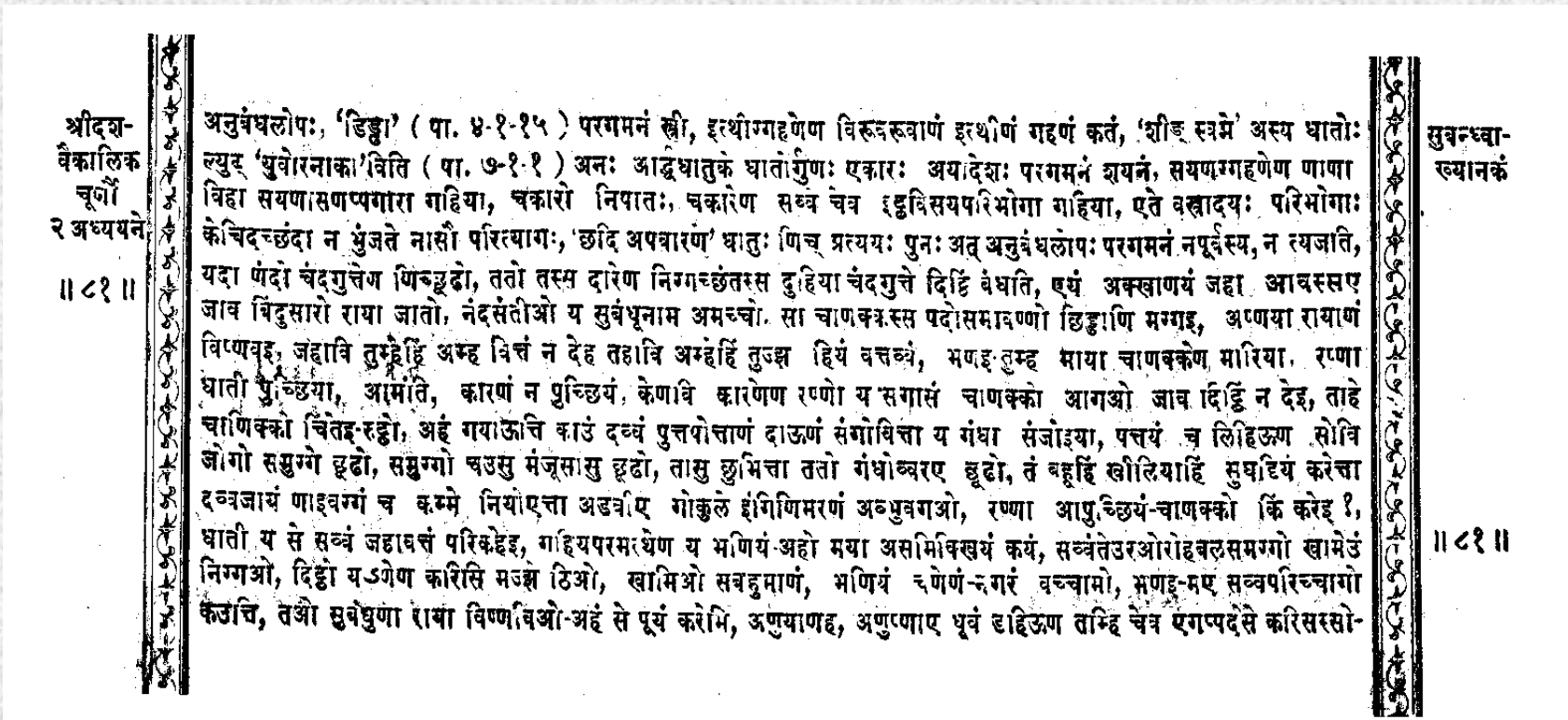
श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ। २ अध्ययने

॥ ८० ॥

करोमि आहारसण्णापडिविरए सोइंदियसंवुडे पुढविकायसमारंभपडिविरए खंतिसंपउत्ते एस पढमो गमओ, इदाणिं बिइओ भण्णइ-काएणं न करेमि आहारसण्णापडिविरए सोइंदियसंवुडे पुढविकायसमारंभपडिविरए मुत्तिसंपयुत्ते, एसो बितिओ गमओ, इदाणिं तइओ, एवं एतेण कमेण जाव दसमो गमओ बंभचेरसंपउत्तो, एस दसमो गओ, एते दस गमगा पुढविकायसंजमं अमुंचमाणेण लद्धा, एवं आउक्काएणवि दस चेव, तेउक्काएणवि दस, एवं जाव अजीवकाएण दस, एवमेते अणूणे सते गमाणं सोइंदियसंवुडं अमुंचमाणेणं लद्धं, एवं चक्खिंदिएवि सतं घाणिंदिएवि सतं जिब्भिंदिएवि सयं फासिंदिएवि सयं, एवमेयाणि पंच भंगसयाणि आहारसण्णापडिविरयं अमुंचमाणेण लद्धाणि, एवं भयसण्णाए पंच सयाणि मेहुणसण्णाएवि पंच सताणि परिग्गहसण्णाएवि पंच सयाणि; एवमेताइं वीस भंगसयाणि न करेमि अमुंचमाणेण लद्धाणि, एवं न कारवेमित्ति वीसं सयाणि, करेन्तेवि अण्णे न समणुजाणामि वीसं सयाणि, एवमेताणि छ सहस्साणि कायं अमुंचमाणेण लद्धाणि, एवं वायाए छ सहस्साणि मणेणवि छ सहस्साणि, एवमेताणि अट्ठारससीलंगसहस्साणीत्ति, जोवि आजीवियाए भएण पव्वइओ जणवायभएण वा ण तरइ उप्पव्वइउं सो सयमेव कामरागपडिबद्धचित्तो अच्छइ, सो अपरिचत्तकामभोगो जाणियव्वोत्ति। कहं ?, वत्थगंधमलंकारं, इत्थीओ सयणाणि य। सिलोगो (सू ७-९१) ‘ वस निवासे ’ धातुः अस्य धातोः ‘ भूवादय ’ (पा. १-३.१) इति धातुसंज्ञा, ‘ष्ट्रन् सर्वधातुभ्य’ (उणादि पा. ४) परनमनं वस्त्रं, वत्थग्गहणेण वत्थाणि कंबलरयणपट्ट-चीणंसुयादीणि गहियाणि, गंधगहणेण कोट्ठपुडाइणो गंधा गहिया, ‘डुकृञ् करणे’ धातुः अलंपूर्वस्य घञ्प्रत्ययः अलंकरणं अलं-कारः, अलंकारग्रहणेण केसाभरणादिअलंकरणादीनि गहियाणि, ‘स्त्यै संघातशब्दयोधातुः’ अस्य ‘स्त्रायतेर्ड्ड’ (उणादि पादः ४)

शीलांग-सहस्राणि.

॥ ८० ॥



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ २ अध्ययने ॥ ८१ ॥

अनुबंधलोपः, 'डिड्ढा' (पा. ४-१-१५) परगमनं स्त्री, इत्थीग्गहणेण विरूवरूवाणं इत्थीणं गहणं कतं, 'शीङ् स्वप्ने' अस्य धातोः ल्युट् 'युवोरनाकौ'विति (पा. ७-१-१) अनः आद्धधातुके धातोर्गुणः एकारः अयादेशः परगमनं शयनं, सयणग्गहणेण णाणा विहा सयणासणप्पगारा गहिया, चकारो निपातः, चकारेण सव्वे चेव इट्ठविसयपरिभोगा गहिया, एते वस्त्रादयः परिभोगाः केचिदच्छंदा न भुंजते नासौ परित्यागः, 'छदि अपवारणे' धातुः णिच् प्रत्ययः पुनः अत् अनुबंधलोपः परगमनं नपूर्वस्य, न त्यजति, यदा णंदो चंदगुत्तेण णिच्छूढो, ततो तस्स दारेण निग्गच्छंतस्स दुहिया चंदगुत्ते दिट्ठिं बंधति, एयं अक्खाणयं जहा आवस्सए जाव बिंदुसारो राया जातो, नंदसंतीओ य सुबंधूनाम अमच्चो. सा चाणक्कस्स पदोसमावण्णो छिद्दाणि मग्गइ, अप्पणया रायाणं विण्णवइ, जहावि तुम्हेहिं अम्ह चित्तं न देह तहावि अम्हेहिं तुज्झ हियं वत्तव्वं, भणइ-तुम्ह माया चाणक्केण मारिया. रण्णा घाती पुच्छिया, आमंति, कारणं न पुच्छियं, केणवि कारणेण रण्णो य सगासं चाणक्को आगओ जाव दिट्ठिं न देइ, ताहे चाणिक्को चिंतइ-रट्ठो, अहं गयाऊत्ति काउं दव्वं पुत्तपोत्ताणं दाऊणं संगोवित्ता य गंधा संजोइया, पत्तयं च लिहिऊण सोवि जोगो समुग्गे छूढो, समुग्गो चउसु मंजूसासु छूढो, तासु छुभित्ता ततो गंधोव्वरए छूढो, तं बहूहिं खीलियाहिं सुघडियं करेत्ता दव्वजायं णाइवग्गं च कम्मे नियोएत्ता अडवीए गोकुले इंगिणिमरणं अब्भुवगओ, रण्णा आपुच्छियं-चाणक्को किं करेइ ?, घाती य से सव्वं जहावत्तं परिकहेइ, गहियपरमत्थेण य भणियं-अहो मया असमिक्खियं कयं, सव्वंतेउरओरोहबलसमग्गो खामेउं निग्गओ, दिट्ठो यऽणेण करिसि मज्झे ठिओ, खामिओ सबहुमाणं, भणियं चणेणं-नगरं वच्चामो, भणइ-मए सव्वपरिच्चागो कउत्ति, तओ सुबंधुणा राया विण्णविओ-अहं से पूयं करेमि, अणुयाणह, अणुण्णाए धूवं दाहिऊण तम्हि चेव एगप्पदेसे करिसस्सो-

सुबन्धवा-ख्यानकं

॥ ८१ ॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||६-१६||

दीप अनुक्रम [६-१६]

वरिं ते अंगारे परिठवेइ, सो य करीसो पच्छितो, दड्ढो चाणक्को, ताहे सुबंधुणा राया विण्णविओ-चाणक्कस्स संतियं घरं मम अणुजाणह, अणुण्णाते गओ, पच्चुवेक्खमाणेण य घरं दिट्ठो अपवरगो घट्टिओ, सुबंधू चिन्तेइ-किमवि एत्थ, कवाडे भंजित्ता उग्घाडिया जाव समुग्गं मधेंतगंधं सपत्तयं पेच्छइ, तं पत्तयं वाएइ, तस्स य पत्तगस्स एसो अत्थो-जो एयं चुण्णं अग्घोत्तं सो जइ ण्हाति वा समालभइ अलंकारेइ सीतोदगं वा पिबति महीए सेज्जाए सुयइ जाणेण गच्छइ गंधव्वं वा सुणेइ एवमादी अण्णे वा इट्ठा विसया सेवइ जहा साहुणो अच्छंति तहा सो जइ न अच्छइ तो मरइ, ताहे सुबंधुणा विण्णासणत्थं अण्णो पुरिसो अग्घाइत्ता सद्दाइणो विसया भुंजाविओ मओ य, ताहे सुबंधूवि जीवितासाए अकामो साहू जहा तहा अच्छइ, किं सुबंधू तहा अकामो अतो साहू भण्णइ?, एवं वत्थं गंधमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य अच्छंदा अभुंजमाणा य जीवा णो परिचत्तभोगिणो भवंति । इत्थंतरे सीसो भणइ-अच्छंदा जे न भुंजंति एवं बहुवयणं भाणियव्वं, कहं पुण एगवयणेण ण दोसो?, जहा न से चाइत्ति, आयरिओ भणइ-विचित्तो सुत्तनिबंधो भवति, सुहमुहोच्चारणत्थं गंथलाघवत्थं च काऊण न एस दोसो भवइ । एवमभुंजमाणो कामे संकप्पसंकिलिट्ठत्ताए चागी न भण्णइ,कहं पुण चागी भवति?, भण्णइ 'जे य कंते पिए भोए,लद्धे विप्पिट्ठि कुव्वइ'। (सू.८) सिलोगो चेव वत्तव्वो, जेत्ति अविसेसियाणं गहणं, 'कमु कान्तौ' धातुः, अस्य निष्ठाप्रत्ययः क्तः अनुबंधलोपः अनुनासिकस्य क्तौ मलोपः आगारः परगमनं, कमनीयाः कान्ताः शोभना इत्यर्थः, पिया नाम इट्ठा, भोगा-सद्दादयो विसया, एत्थ सीसो पुण चोएति णणु जे कंता ते चेव पिया भवंति?, आचार्यः प्रत्युवाच-कंता नामेगे णो पिया १ पिया णामेगे णो कंता २ एगे पियावि कंतावि ३ एगे णो पिया णो कंता ४, किं कारणं ?, कस्सवि कंतेसु कंतबुद्धी उप्पज्जइ, कस्सइ पुण अकंतेसुवि कंतबुद्धी उप्पज्जइ, अहवा जे चेव अण्णस्स कंता ते चेव

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

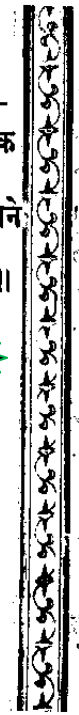
प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||६-१६||

दीप अनुक्रम [६-१६]

अण्णस्स अकंता, भणियं च-"चउहिं ठाणेहिं सन्ते गुणे णासेज्जा, तं० रोसेणं पडिणिवेसेणं अकयण्णुयत्ताए मिच्छत्ताभिणिवेसेण" भणियं च-"अन्नस्स पिया वासी मासी अन्नस्स वेसरी किसरा। अन्नस्स फारिया दूरिया य पहुनेहलो लोगो ॥ १ ॥" लद्धा नाम ते विसया सद्दाइणो उवभोगत्ताए उवणया, 'विप्पिट्ठि कुव्वइ' तओ भोगाओ विविहेहिं संपण्णा विपट्ठीओ उ कुव्वइ, परिचयइत्ति वुत्तं भवइ, अहवा विप्पट्ठि कुव्वंतित्ति दूरओ विवज्जयंती, अहवा विप्पट्ठिन्ति पच्छओ कुव्वइ, ण मग्गओ, साहीणे चयइ भोगे, पुणो सीसो आह-लद्धे विप्पट्ठि कुव्वइत्ति लद्धग्गहणेण चेव साहीणगहणं कयंति ?, आयरिओ आह-साहीणग्गहणेण सो भोगो साहीणो गेज्झति, साहिणो णाम कल्लसरीरो, भोगसमत्थोत्ति वुत्तं भवइ, न उम्मत्तो रोगिओ पवसिओ वा, बितियं भोगग्गहणं (किं?) संपुण्णभोगग्गहणत्थं कीरइ, आयरिओ आह-संपुण्णेसु भोगेसु चायित्तं तस्स भवइ जे एरिसे भोगे चयइ, एत्थ दिट्ठंतो भरहणामा, जहा सो भरहो जंबूणामो य, तारिसेऽवि रिद्धिविसेसे जहिऊण भगवन्तसासणे ठिया ते चागिणो भण्णंति, सीसो आह-जइ भरहजंबुणामाइणो जे संते भोगे परिच्चयंति ते परिच्चाइणो, एवं ते मणंतस्स अयं दोसो भवइ-जे केइ अत्थसारहीणा दमगाइणो पव्वइऊणं भावओ अहिंसाइगुणजुत्त सामण्णे अब्भुज्जुया ते किं अपरिच्चागिणो भवंति ?, आयरिओ आह-तेऽवि तिण्णि रतणकोडीओ परिच्चइऊण पव्वइया-अग्गी उदगं महिला, तिण्णि रयणाणि लोगसाराणि परिच्चइऊण पव्वइया, दिट्ठंतो-एगो पुरिसो सोहम्मसामिणो सगासे कट्ठहारओ पव्वइओ, सो भिक्खं हिंडंतो लोगेणं भण्णइ-एसो सो कट्ठहारओ पव्वइओ, सो सेहत्तणेण आयरियं भणइ-मइं अण्णत्थ णेह, अहं न सक्कमि अहियासेत्तए, आयरिएहिं अभओ आपुच्छिओ-वच्चामो, अभयो भणइ-मासकप्पपायोग्गं खेत्तं किं एयं न भणइ ?, जेण अण्णत्थ वच्चह, आयरिएहिं भणियं-जहा सेहनिमित्तं, अभयो भणइ-

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||६-१६||

दीप अनुक्रम [६-१६]



अच्छह वीसत्था, अहमेतं लोगं उवाएणं निवारेमि, बितिए दिवसे तिण्णि सुवण्णकोडीओ ठवियाओ, उग्घोसावियं नगरे, जहा अभयो दाणं देइ, लोगो आगओ, भणितं चऽणेण-तस्साहं एताओ तिण्णि कोडिओ देमि जो एताइं तिण्णि परिहरइ-अग्गिं पाणियं महिलं, लोगो भणइ-एतेहिं विणा किं सुवण्णकोडीहिं ?, अभयो भणइ-ता किं भणह दमउत्ति पव्वइओ?, जोवि निरत्थओ पव्वइओ तेणावि एयाओ तिण्णि सुवण्णकोडीओ परिचत्ताओ, सच्चं सामी, ठिओ लोगोत्ति--तम्हा अत्थपरिहीणोऽवि संजमे ठिओ तिण्णि उ लोगसाराणि अग्गिं उदगं महिलाओ य परिवज्जंतो चाइत्ति लब्भइ। एवं तस्स संजमे ठितस्स कस्सइ कदाइ मणं चंचलत्तेण माउग्गामेण सह अभिसंधारणं भवेज्जा तेण कहं कायव्वं ?, भण्णइ-समाए पेहाए परिव्वयंतो, सिया मणो णोसरई बहिद्धा (९-९३) सिलोगो, समा णाम परमप्पाणं च समं पासइ, णो विसमं, पेहा णाम चिन्ता भण्णइ, परिव्वयंतो णाम जो सव्वप्पगारेण संजमाहिगारेहिं उज्जमंतो, परिव्वयंतो णाम गामणगरादीणि उवदेसेणं विचरंतोत्ति वुत्तं भवइ तस्स, एवं पसत्थेहिं झाणठाणेहिं वट्टंतस्स मोहणीयस्स कम्मस्स उदएणं बहिद्धा मणो णोसरेज्जा, बहिद्धा नाम संजमाओ बाहिं गच्छइ, कहं ?, पुव्वरयाणुसरणेणं वा भुत्तभोइणो अभुत्तभोगिणो वा कोऊहलवत्तियाए, तत्थ उदाहरणं जहा एगो रायपुत्तो बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अभिरमंतो अच्छइ, दासी य तेण अंतेण जलभरियघडेण वोलेइ, तओ तेण दासीए सो घडो गोलीए भिण्णो, तं च अद्धितिं करेंतिं दट्ठूण पुणरावत्ती जाया, चिंतियं च- जे चेव रक्खगा ते विलोवगा किं तत्थ कुविउं सक्का ?। उदगाओ समुज्जलिओ कट्ठमग्गी विज्झवेतव्वे ॥ १ ॥ तो पुणवि चिक्खल्लगोलीएण तक्खणा चेव लहुहत्थयाए तं घडछिद्दं ढक्केइ, एवं जइ संजतस्स संजमं करेंतस्स बहिया मणो णिग्गच्छइ तत्थ पसत्थेण परिणामेण तं असुहसंकप्पछिद्दं चरित्तजलरक्खणट्ठाए ढक्के-

तव्वं, कहं ?, 'ण सा महं णोवि अहंपि तीसे' तत्थ नगारो पडिसेहे वट्टइ, सा इति पुव्वभोइणीए ग्रहणं महं, ण य अहमवि तीसेत्ति, तत्थ उदाहरणं-एगो वणियदारओ सेहो जायं उज्झिय पव्वइओ, सो य ओहाणुप्पेही, जया इमं च घोसेइ 'ण सा महं णोवि अहंपि तीसे' चरित्तजलक्खएण अहमपि तीसे सा ममाणुरत्ता, कहमहं तं छड्डेहामित्तिकाउं गहियायारभंडगणेवत्थो चेव संपट्ठितो, गओ तं गामं जत्थ सा, सो य निव्वाणतडं संपत्तो, तत्थ सा पुव्वजाइया पाणियस्स आगया, सा य साविया जाया, पव्वइउकामा, एताए सण्णइओ, इतरो तं ण याणइ, तेण सा पुच्छिया-सा अमुगस्स धुया किं मया?, सो चिंतेइ-जइ सासंधरा तो उप्पव्वयामि, इयरहा ण, ताए णायं, जहा एस पव्वज्जं पयहिउक्कामो, तो दोवि संसारे भविस्सामोत्ति, भणियं अणाए-सा अण्णस्स दिण्णा, ततो सो चिंतिउमारद्धो-सच्चं भगवतेहिं साधूहिं अहं पाढितो 'ण सा महं णोवि अहंपि तीसे' परमं संवेगमावण्णो, भणियं चाणेण-पडिणियत्तामि, तीए वेरग्गमग्गपडिउत्ति णाऊण अणुसासिओ-'अणिच्चं जीवियं, कामभोगा इत्तिरिया' एवं तस्स केवलिपन्नत्तं धम्मं कहेइ, अणुसट्ठो, जाणाविओ य, पडिगओ आयरियसगासं, पव्वज्जाए थिरीभूओ, अप्पा साहारेतव्वो जहा तेणंते, इच्चेवं तत्थ 'विणएज्ज रागं' 'रंज रागे' धातुः अस्य धातोः भावे घञ् प्रत्ययः "घञि च भावकरणयो" रिति (पा. ६-४-१७) अनुनासिकलोपवृद्धिः, रंजनं रागः एयारिसे चरित्तंतरे समुप्पण्णे विविहेहिं विणएज्ज रागे, दमेज्जत्ति वुत्तं भवइ, जहा विणीए सीसे विणीए अस्सेत्ति, एवं ताव मणसो णिग्गहो भणिओ, सो य न सक्कइ उवचियसरीरेण णिग्गहेउं, भणियं च-"चउहिं ठाणेहिं मेहुणं समुप्पज्जिज्जा, तं० चियमंससोणियत्ताए, मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं, मतीए, तदट्ठोवओगेणं" तम्हा कायबलनिग्गहे इमं सुत्तं भण्णइ—

आयावयाही चय सोगमल्लं, कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं। छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए (सू. १०-९५) आयावयाहि उड्ढबाहू, एगग्गहणे तज्जाइयाण गहणंति न केवलं आयावयाहि, ऊणोदरियमवि करेहि, आयरियाईणं कज्जे समुप्पण्णे अद्धाणं गच्छाहि, जो बहुस्सुओ सो सुत्तत्थाणि दवाविज्जइ, चय सोगमल्लंति चयाहित्ति वा छड्डेहित्ति वा जहाहित्ति वा एगट्ठा, सुकुमालभावो सोकमल्लं, सुकुमालस्स य कामेहिं इच्छा भवइ, कमणिज्जो य स्त्रीणां भवति सुकुमालः, तम्हा एवं सुकुमारभावं छड्डेहित्ति, कामे कमाहि एतेण आयावयाइणा कायकिलेसेणं अप्पसत्था इच्छा० मयणकामा य कमाहि, कमाहि णाम पिट्ठओ करेहि, अतिक्कमाहित्ति वुत्तं भवति,ते पुण कया कामा अतिक्कंता भवंति?, एत्थ भण्णइ--'कामियं खु दुक्खं,' कमियं णाम कामेहिं अतिक्कंतेहि संसारियं दुक्खं कंतमेव भविस्सइत्ति, छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागमिति, ते य कामा सद्दादयो विसया तेसु अणिट्ठेसु दोसो छिंदियव्वो, इट्ठेसु वट्टंतो अस्सो इव अप्पा विणयियव्वो, रागं न गच्छियव्वंति वुत्तं भवति, रागो दोसो य कम्मबंधस्स हेउणो भवंति, सव्वपयत्तेण ते वज्जणिज्जत्ति, तओ तेसु विजिएसु किं भविस्सतित्ति?, एवं भण्णइ-'एवं सुही होहिसि संपराए' एवं तुमं जयंतो संपराते-संसारो भण्णइ जाव ण परिणेव्वाहिसि ताव दुक्खाउले संसारे सुही देवमणुएसु भविस्ससि, जुत्तं भण्णइ, जया रागदोसेसु मज्झत्थो भविस्सति तओ(जिय)परीसहसंपराओ सुही भविस्ससित्ति,किं च-संजमे विसीदंतं अप्पाणं इमेण आलंबणेण साहारेज्ज,जहा-पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं। णेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणा ॥ (सू.११-९५) 'स्कंदिर् गतिशोषणयोः' धातुः,अस्य धातोःअल् प्रत्ययः अनुबंधलोपः परगमनं स्कंदः, तथा प्रातिपदिकार्थे सप्तम्यधिकरणे ङि अनुबंधलोपः 'आद् गुणः' (पा. ६-१८-७) सर्वस्य, स्कन्दो,

अतीव स्कन्दः पक्खंदाति वुत्तं भवइ, जलिओ लोगप्पसिद्धो चेव, जोतिग्गहणेण अग्गिणो गहणं कयं, जोती अग्गी भण्णइ, धूमो तस्सेव परियायो,केऊ उस्सओ चिंधं वा, सो धूमे केतू जस्स भवइ धूमकेऊ, सीसो आह-जोइग्गहणे कए जं पुणो जलियग्गहणं च करेसि तण्णु पुणरुत्तं, आयरिओ आह-जलियग्गहणं मुम्मुरादिनिसेहत्थं, धूमग्गहणं उक्कादिपडिसेहत्थं, दुरासयो नाम डहणसमत्थत्तणं, दुक्खं तस्स संजोगो सहिज्जइ दुरासओ तेण, अतो एवंगुणजातीयं किर अगणिं पविसंति अगंधणकुलजातिजा य णागा, न य इच्छंति वंतयं पुणो पडिआइउं, तत्थ नागाणं दो जातीयो-गंधणा य अगंधणा य, तत्थ गंधणा णाम जे डसिऊण गया मंतेहिं आगच्छिया तमेव विसं वणमुहट्ठिया पुणो आवियंति ते, अगंधणा णाम मरणं ववसंति ण य वंतयं आवियंति, उदाहरणं जहा दुमपुप्फियाए सव्वं तहेव, एत्थ पुण सुत्तट्ठाणमसुण्णं भवतु, जाव तेण सप्पेण आहिंडियणीयेण मरणमब्भुवगतं, णय तं विसं पडिआतीयं, वन्तमितिकाउं, एवं साहुणावि चिंतेयव्वं जइ णागाविरएण होऊण धम्मं अयाणमाणेण कुलमवलंबंतेण य जीवियं परिच्चत्तं ण य वन्तमावीतं, किमंगपुण मणुस्सेण जिणवयणं जाणमाणेण जातिकुलमत्तणो अणुगणिंतेणं ?, तहा करणीयं जेण सद्देण दोसे ण भवइ अविय-मरणं अज्झवसियव्वं, ण य सीलविराहणं कुज्जा, किं कारण एवं ववसिय सरीरविणासं करेइ?, पव्वइया पओ(वंते) भोगे पुणो सेविज्जंता अणाईए अणवदग्गे दीहमद्धे संसारकंतारे तासु तासु जातीसु बहूणि जम्मणमरणाणि पावंति,एयंमि अत्थे वितियं सवित्थरं उदाहरणं भण्णइ, जदा अरिट्ठनेमी पव्वइओ तदा रहनेमी तस्स जेट्ठस्स भाउओ रायमइं उवचरइ, जइ णाम एसा मइं इच्छेज्ज, साऽवि भगवती णिव्विण्णकामभोगा, णातं च तीए जहा एसो मइ अज्झाववण्णो, अण्णया य तदा महुघयसंजुत्ता पेज्जा पीया, रहनेमी आगओ, मदणफलं मुद्दे काऊणं तीए वन्तं, भणियं च-एयं पेज्जं पीयाहि, तेणं भाणियं-कहं वंतं पिज्जइ ?, तीए भ-

णिओ-जइ न पिज्जइ वंतयं तो अहंपि अरिट्ठनेमिसामिणा वन्ता कहं पिबिउसि?। धिरत्थु ते जसोकामी, जो तं जीवियकारणा। वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे। (सू.१२-९६) धि निंदायां 'असु क्षेपणे' धातुः, अस्य 'विधिनिमंत्रणा' 'लोट्' (च पा ३-३-१६२) अनुबंधलोपः, लस्य तिप् 'एरु' रिति (पा ३-४-८६) उच्चं शप् 'आदिप्रभृतिभ्यः शपः' (पा. २-४-१२) लुक् परगमनं, धि पूर्वस्य धिरस्तु, धिरत्थु तुब्भं जसोकामी, जसोकामिणो खत्तिया भण्णंति, अहवा धिरत्थु ते अयसोकामी, गंथलाघवत्थं अकारस्स लोवं काऊणं एवं पढिज्जइ 'धिरत्थु तेऽजसोकामी' 'जो तं जीवियकारणा' जो तुमं इमस्स कुसग्गजलबिंदुचंचलस्स जीवियस्स अट्ठाए भाउणा वन्तं इच्छसि आईउं, एयं पेज्जं णेच्छसि, एवं ते सेयं मरणंति, धम्मो य से कहिओ, संबुद्धो पव्वइओ य, रायमईवि तं चोएऊण पव्वइया, पच्छा अण्णदा कदाइ सो रहनेमी बारवईए भिक्खं हिंडिऊण सामिसगासमागच्छंतो वासवद्दलएण अब्भाहतो एक्कं गुहं अणुप्पविट्ठो, राईमई य सामिणो वंदणाए गया, वंदिय पडिस्सयमागच्छइ, अंतरे वरिसिउमाढत्तो, तिंता य तमेव गुहमणुपविट्ठा जत्थ सो रहनेमी, वत्थाणि य पविसारिया, ताहे तीए अंगपच्चंगं दिट्ठं. सो रहनेमी तीय अज्झोववण्णो, दिट्ठो य णाए, इंगियागारकुसलाए य नाओ अस्सोभणो भावो एतस्स,ताहे सा भणइ-'अहं च भोगरायस्स,तं चऽसि अंधगवण्हिणो। मा कुले गंधणा होमो,संजमं निहुओ चर ॥ (१३-९६) भोगा खत्तियाणं जातिविसेसो भण्णइ, जहा वद्धमाणसामिकुलुप्पण्णा णाया खत्तिया भण्णंति, एवं उग्गसेणादि भोगकुलिओ भण्णइ,तस्स अहं भोगराइणो धूया, तुमं च तस्स तारिसस्स अंधयवण्हिणो कुले पसूओ समुद्दविजयस्स पुत्तो, ता एवं दोण्णिवि महाकुलप्पसूयाणि मा गंधणणागसरिसाणि भवामो, हेट्ठा अभिहितं सव्वं रहनेमिस्स कहयइ, तंजहा-अगंधणकुलप्पसूया सप्पा चेव वंतं पडियाइयंति तहा वयंपि भोगे पयहिऊण सव्वभावेण मा ते चेव

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||६-१६||

दीप अनुक्रम [६-१६]

पडियाइय।मो, अहवा कुलगंधिणो कुलपूयणा मा भवामो, तम्हा तुमं संजममेव सव्वदुक्खनिवारणं निहुओ चराहि, किंच-सा पुण मणइ 'जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारीओ। वायाइद्धोव्व हढो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ (सू.१४-९६) 'दृशिर् प्रेक्षणे ' धातुः, अस्य धातोः भविष्यति 'अनद्यतने लुट्' (पा. ३-३-१५) 'स्यतासी ललुटो': पा. ३-१-३३) लट् प्रत्ययः अनुबंधलोपः मध्यमपुरुषः सिप् आनुपूर्व्यानुबंधलोपः स्यतासीस्यप्रत्ययः 'व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजछशां षः (पाः ८-२-३६) षत्वं ' षढोः कस्से (पा. ८-२-४१) कत्वं ' झ्कोः ' (पा. ८३-५७) सापेक्षप्रत्यययोः (पा. ८-३-५९) षत्वं 'सृजिदृशोर्झल्यमकिति' (पा.६-१-५८) अः,यणादेशः परगमनं द्रक्ष्यसि,संति इत्थीओ दरिसणिज्जाओ ताओ दट्ठूण जइ भावं करेहिसि-प्रार्थनां अभिप्रायं तो तुमं अणंतरयणाए पुढवीय वायाइद्धोविव हढो अट्ठितप्पा भविस्ससि, हढो णाम वणस्सइविसेसो, सो दहतलागादिषु छिण्णमूलो भवति, तथा वातेण य आइद्धो इओ इओ य निज्जइ, तहा तुमंपि एवं करेंतो संजमे अबद्धमूलो समणगुणपरिहीणो केवलं दव्वलिंगधारी भविस्ससि ॥

तीसे सो वयणं सुच्चा, संजयाए सुभासियं। अंकुसेण जहा णागो, धम्मे संपडिवाइओ॥(सू.१५-९६) 'श्रु श्रवणे' धातुः, अस्य धातोः 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले क्त्वा' (पा.३-४-२१) प्रत्ययः अनुबंधलोपः गुणप्रतिषेधः श्रुत्वा, 'तीसे' त्ति तीय रायमतीय सो रथनेमी एवं सुणेऊण वयणं अण्णाणि य धम्मसंताणि सुभासियाणि सोऊणं जहा सो अंकुसेण णागो, एत्थ उदाहरणं-वसंतपुरं णगरं, तत्थ एगा इब्भवहुगा नदीए ण्हायइ, अण्णो य तरुणो दट्ठूण तं भणइ-'सुण्हायं ते पुच्छइ एस नदी पउरसोहियतरंगा। एते य नदीरुक्खा अहं च पादेसु ते पणतो ॥ १ ॥' ताहे सा पडिभणइ- सुहगा होंतु णदीओ

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ २ अध्ययने ॥ ९० ॥

चिरं च जीवंतु जे नदीरुक्खा । सुण्हायपुच्छयाणं घत्तीहामो पियं काउं ॥ २ ॥ सो य तीसे घरं वा वारं ण याणइ, तीसे य वितिज्जगाणि चेडरूवाणि रुक्खे पलोयंताणि अच्छंति, तेण ताणं पुप्फफलाणि सुबहूणि दिण्णाणि, पुच्छियाणि य-का एसा ?, ताणि भणंति- अमुगस्स सुण्हा, सो य तीए विरहं न लहइ, तओ परिव्वाइयं ओलग्गिउमाढत्तो, भिक्खा दिण्णा, सा तुट्ठा भणइ- किं करेमि ओलग्गाए फलं ?, तेण भणियं- अमुगस्स सुण्हं मम कएण भणाहि, तीए गंतूण भणिया-अमुगो ते एवंगुण-जातीओ पुच्छइ, एसा रुट्ठा, एयाए तुल्लगाणि धोवंतीए मसिलित्तएण हत्थेण पट्ठीए आहया पंचंगुलयं, अवदारेण निच्छूढा, गया तस्स साहइ, नामंपि सा तव न सुणेइ, तेण णायं-कालपंचमीय अवद्दारेण अतिगंतव्वं, अतिगओ य, असोगवणियाए मिलि-याणि, सुत्ताणि य जाव पस्सावगएण ससुरेण दिट्ठाणि, तेण णायं-ण एस मम पुत्तो, पच्छा पायाओ णेउरं गहियं, चेतियं च, तीए सो भणिओ-णास लहुं, आवइकाले साहेज्जं करेज्जासि, इयरी गंतूण भत्तारं भणइ- एत्थ धम्मो असोगवणियं वच्चामो, गंतूण सुत्ताणि, खणमेगं सुविऊण भत्तारं उट्ठवेइ, भणइ य-तुब्भं एयं कुलाणुरूवं ? जेण मम पायाओ ससुरो णेउरं कड्ढइ, सो भणइ-सुय पभाए लब्भेहित्ति, पभाए थेरेण सिट्ठं, सो रुट्ठो भणइ विवरीयं, थेरोवि भणति-मया दिट्ठो अण्णो पुरिसो, विवादे जाए सा भणइ-अहं अप्पाणं सोहयामि, एवं करेहि, ततो ण्हाया कयबलिकम्मा गया जक्खघरं, तस्स जक्खस्स अंतरद्धेण गच्छंतो जो कारी सो लग्गइ, अकारी नीसरइ, ततो सो विडप्पितयमो पिसायरूवं काऊण निरंतरं घणं कंठे गेण्हइ, तओ सा गंतूणं तं जक्खं भणइ-जो मम मातरपितिदिण्णओ भत्तारो तं च पिसायं मोत्तूण जइ अण्णं पुरिसं जाणामि ता मे तुमं जाणेज्जासित्ति, जक्खो विलक्खो चिंतेइ-अहंपि वंचिओ एताए, णत्थि सतित्तणं धुत्ताए, जाव जक्खो चिंतेइ ताव सा निप्फिडिया, तओ सो थेरो सव्वलोगेण

नूपुरपंडि-तोदारहणं

॥ ९० ॥

विलक्खीकओ, तओ थेरस्स ताए अद्धितीए निद्दा णट्ठा, रण्णो य कण्णं गतं, रण्णा सद्दावेऊण अंतेउरपालओ कओ, अभिसेकं च हत्थिरयणं वासघरस्स हेट्ठा बद्धं चिट्ठइ, इओ य एगा देवी हत्थिमिथे आसत्ता, णवरं हतं थेरो पेच्छइ, चिंतियं चऽणेण-एवं रक्खेज्जमाणीओ एताओ एवं विहरंति किंनु पायताओ सदा सच्छंदाउत्ति पसुत्तो, पभाए सव्वलोगो उट्ठिओ, सो ण उट्ठेइ, रण्णो कहियं, रण्णा भणियं-सुवउ, चिरस्सविय उट्ठविओ, पुच्छिओ य, कहियं-सव्वं भणेति, भणति- जहा एगा देवी, ण याणामि कतरावि, तओ राइणा भंडहत्थी कारिओ, भणियाओ- एतस्स अच्चाणियं काऊणं उलंडेह, सव्वाहिं उलेंडिओ, एगा णेच्छइ, भणइ य- अहं वीहेमि, तओ रण्णा उप्पलेणाहया, पडिया, रण्णा जाणिया एसा कारित्ति, भणियं चऽणेण- मत्तंगतआरुहंतीए भंडमयस्स गयस्स वीहेहि (हन्तीए)। तत्थ णं मुच्छिय संकलाहया, एत्थऽसि मुच्छिय उप्पलाहया॥१॥' तओ सरीरं जोइयं, जाव संकलप्पहारो दिट्ठो, तओ रुट्ठेण रण्णा देवी मेंठो य हत्थी य तिण्णिवि छिण्णेकडगे चडावियाणि, भणिओ य मिंठो-एत्थं वाहेहि, हत्थीस्स दोहि य पासेहिं वेलुअग्गहाओ ठिया, जाव एगो पाओ आगासे ठविओ, जणो भणइ- किं एस तिरिओ जाणइ ?, एताणि मारेतव्वाणि, तहवि राया रोसं न मुयइ, तओ तिण्णि पादा आगासे कया, एगेण ठिओ, लोगेण य कओ अक्कंदो, किं तं हत्थिरतणं विणासिज्जइ ?, रण्णा मेंठो भणिओ- तरसि नियत्तेउं ?, भणइ- जइ दुयगाण अभयं देसि, दिण्णो, नियत्तिओ हत्थी अंकुसेण, एवं जहा से णागो तेण मिंठेण तमावई पाविओवि एरिसे ठाणे अंकुसेण आहओ जेण पादं भमाडेऊण चउसुवि पादेसुवि धरणितले ठिओत्ति, तहा रहनेमीवि रायमतीए संसारभउव्वेगकरेहिं वयणेहिं तहा अणुसासिओ जेण संजमं पुणरवि संपडिवण्णोत्ति ॥

॥ ९१ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||६-१६||

दीप अनुक्रम [६-१६]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ३ अध्ययने ॥ ९२ ॥

'एवं करेंति संपण्णा, पंडिया पवियक्खणा। विणियट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसोत्तमोत्ति त्तिबेमि (सू१६-९६) एवसद्दो अवधारणे वट्टइ, किमवधारयति ?, जहा रहणेमिणा रायमतीवयणाइं धम्मियाइं सोऊण मणो दुप्पउत्तो नियत्तिओ, एवं साहुणावि संजमातो नीसरमाणो णियत्तेयव्वो, संपण्णा णाम पण्णा-बुद्धी भण्णइ, तीय बुद्धीय उववेता संपण्णा भण्णंति, पंडिया णाम चत्ताण भोगाणं पडियाइयणे जे दोसा परिजाणंती पंडिया, पवियक्खणा णामावज्जभीरू भण्णंति, वज्जगीरुणो णाम संसार-भउव्विग्गा थोवमवि पावं णेच्छंति, विणियट्टंति णाम विविहेहिं पगारेहिं भोगेहिं अभिलसमाणं जीयं नियट्टेंति, जहा पुरिसुत्तमोत्ति रथनेमित्ति वुत्तं भवति, बेमिणाम मणगपिया भणति-नाहं स्वाभिप्रायेण ब्रवीमि, किं तर्हि ?, तीर्थकरस्य सुधर्मस्वामिन उपदेशाद् ब्रवीमि। इदाणिं नया, 'णायंमि गेण्हितव्वे अगिण्हियव्वंमि चेव अत्थंमि गाहा॥१॥'सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं णिसामेत्ता। तं सव्वनयविसुद्धं जं चरणगुणट्ठिओ साहू ॥ १ ॥ एताओ गाहाओ पढियव्वाओ। श्रामण्यपूर्वकस्य चूर्णी समाप्ता ॥

वितियज्झयणं धिईणिमित्तं परूवियं, इदाणिं दढधितियस्स आयारो भाणितव्वो, अहवा सा धिती कहिं करेय्या ?, आयारे, एतेण अभिसंबंधेण खुड्डियायारकहाओ, तस्स चत्तारि अणुओगदारा जहा आवस्सगचुण्णीए नवरं इह नामनिप्फण्णो निक्खेवो खुड्डियायारकहत्ति, महंती आयारकहं पप्प इयं खुड्डियायारकहा भण्णइ, सा य महंती आयारकहा धम्मत्थकामा भण्णइ, तम्हा भण्णइ खुड्डो निक्खिवियव्वो आयारो निक्खिवियव्वो कहा निक्खिवियव्वा, तत्थ पुव्विं खुड्डओ निक्खिवियव्वो, सो य अप्पं महंतयं पडुच्च खुड्डओ भण्णइ, तं महंतं ताव परूवेमि, तं च महंतं अट्ठविहं भवइ तं०नामं ठवणादविए खेत्ते काले पहाण पइ

भोगनिवृत्तिः पाण्डित्यं

॥ ९२ ॥

अध्ययनं -२- परिसमाप्तं **अध्ययनं -३- 'क्षुल्लकाचार' आरभ्यते**

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ २ अध्ययने ॥ ९३ ॥

भावे । गाहा (१८०-१००) णामठवणाओ गयाओ, तत्थ दव्वमहन्तं अचित्तमहाखंधो भण्णइ, सो किर सुहुमपरिणामपरिणओ अणंताणंतपएसिया खंधा तं तहाभावं परिणमंति जेण सव्वलोगं पूरेइ, जहा केवलीसमुग्घायादओ, दंडकवाडमंथंतराणि य चउत्थे समए पूरेइ, एवं सोऽवि चउत्थे समए सव्वं लोगं पूरेत्ता पडिनियत्तइ, एयं दव्वमहन्तं, खेत्तमहन्तं नाम सव्वागासं, कालमहंतं सव्वद्धा भण्णइ, पहाणमहंतं तिविहं, तं०-सचित्तं अचित्तं मीसयं, तत्थ सचित्तं तिविहं- दुपदं चउपदं अपदंति, तत्थ दुपदपहाणो तित्थगरो, चउप्पदाणं हत्थी, अपयाणं पणसं, अरविंदं वा, अचित्ताणं वेरुलियरयणं पहाणं, मीसगाणं च भगवं तित्थगरो वेरुलियादीहिं विभूसिओ, पहाणमहंतं सम्मत्तं, इदाणिं पडुच्चमहंतं भण्णइ- आमलगं पडुच्च बिल्लं महल्लं बिल्लं पडुच्च कविट्ठं महंतं एवमादि, भावमहंतं णाम तिविहं पण्णत्तं, तं०- पाहण्णओ कालओ आसययोत्ति, तत्थ पाहण्णतो सव्वभावाणं खाइओ भावो भावमहंतो, कालओ पप्प पारिणामिओ भावो पहाणो, किं कारणं ?, जेण जीवदव्वा अजीवपरिणामेण अजीवदव्वा य जीवपरिणामेण ण कयाइ परिणमंति, आसयओ उदइओ भावो पहाणो, किं कारणं ?, जेणेव बहुतरगा जीवा उदइए भावे आवस्सिया, उदइए भावे वट्टंतित्ति वुत्तं भवइ, भावमहंतं गयं ॥ इयाणिं एयस्सेव महंतयस्स पडिवक्खो खुड्डयं निक्खिवियव्वं, तंपि अट्ठविहं एवं चेव भवइ, नामठवणाओ तहेव, दव्वखुड्डयं परमाणू, खेत्तखुड्डयं एगो आगासपएसो, कालखुड्डयं समयो, पहाणखुड्डयं तिविहं, तं०-सचित्तं अचित्तं मीसगं च, तत्थ सचित्तं तिविहं-दुपयं चउप्पयं अपयं च, तत्थ दुपयाणं पहाणखुड्डयं लवसत्तमा देवा, पंचण्हवि सरीराण सव्वखुड्डलयं आहारगसरीराणि, चउप्पयाण पहाणं सव्वखुड्डलयं सीहो, अपयाणं आगासपुप्फं जाइपुप्फं वा, अचित्ताणं वइरं, मीसयं ते चेव लवसत्तमा देवा सयणिज्जगया, पहाणखुड्डुलयं गयं, इदाणिं पडुच्चखुड्डुलयं भण्णइ-

महत्क्षुल्लक-निक्षेपाः

॥ ९३ ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१७-३१॥

दीप अनुक्रम [१७-३१]

बिछं पडुच्च आमलयं खुड्डलयं एवमाई, भावखुड्डलयं खाइयभावो, किं कारणं?, सव्वत्थोवा जीवा खाइए भावे वट्टंति, खुड्डु-उत्तिदारं सम्मत्तं ॥

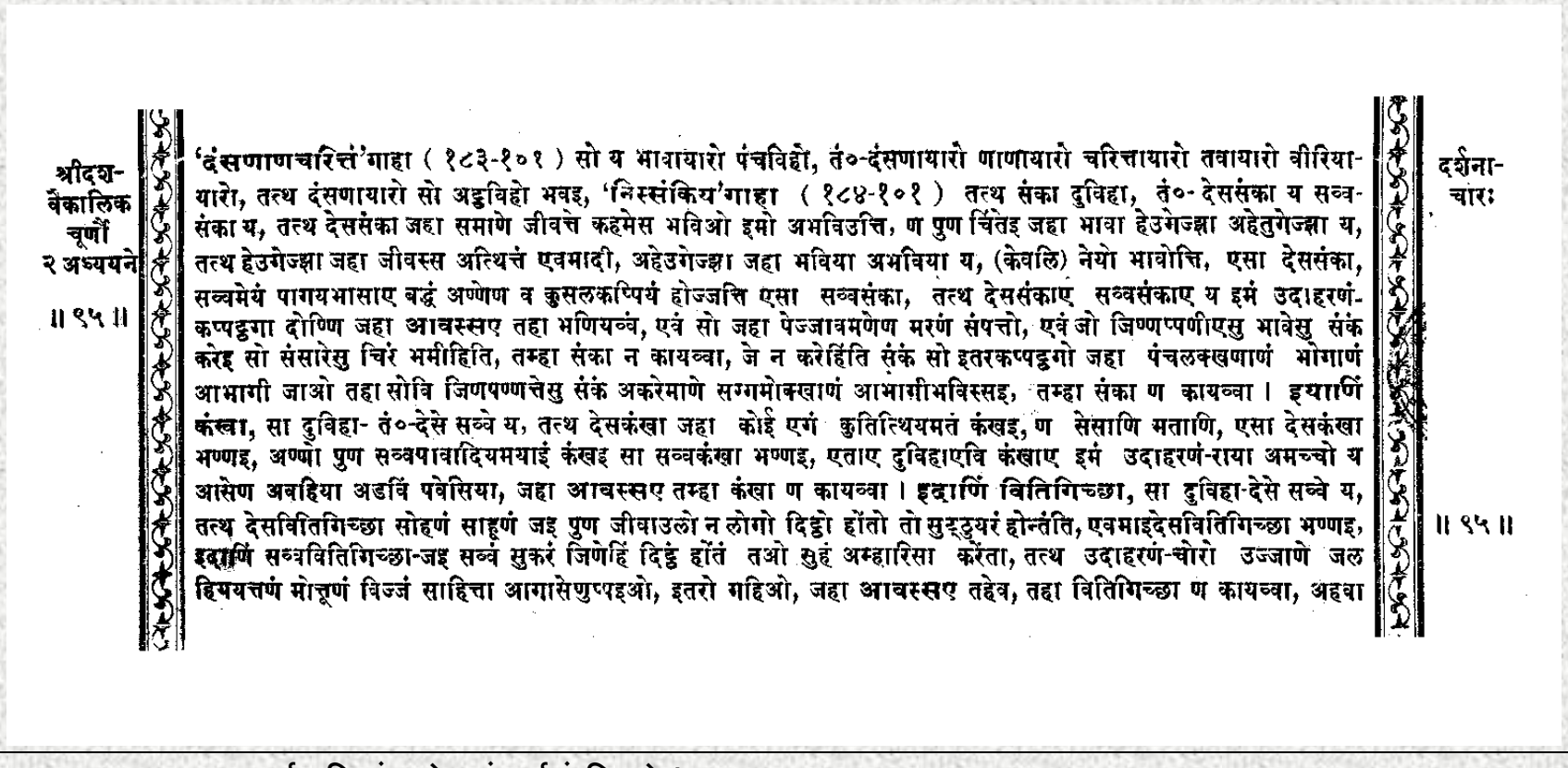
इदाणिं आयारोत्तिदारं- 'पतिखुड्डएण पगतं' गाहा (१८१-१००) सो य आयारो चउव्विहो-नामायारो ठव०दव्व० भावायारो य, णामठवणाओ गयाओ, तत्थ दव्वायारो णाम जहा दव्वं आयरइ, आयरइ णाम आयरयतीत्ति वा तं तं भावं गच्छ-इत्ति वा आयरइत्ति वा एगट्ठा, सो य दव्वायारो इमाए गाहाए अणुगंतव्वो-नामणधोवणवासण गाहा (१८२-१००) तत्थ नामणायारं पडुच्च दुविहं दव्वं भवति, तं०- नामणायारमंतं अणायारमंतं च, तत्थ नामणायारमंतं दव्वं तिणिसा, सया जो णाभिज्जमाणोवि न भज्जइ, जति पुण सो भज्जेज्जा अतो अणामणायारमंती भवेज्जा, नोनामणायारमंतं दव्वं एरंडो, सो अवि भज्जेज्जा णवि णमेज्जा, नामणंति भणियं, इदाणिं धोवणं भण्णइ, जहा हालिद्दरागरत्तं वत्थं धोवन्तं सुज्झइ, आयारमन्तं भण्णइ, किमिरागरत्तं पुण वत्थं सव्वप्पगारेहिं धोव्वमाणं न सुज्झइ तं तं नोआयारमन्तं भण्णइ, धोवणत्ति गयं, इदाणिं वासणत्ति दारं, तत्थ आयारमंतीओ कवेल्लुगाओ इट्ठगाओ वा, अणायारमन्तं वइरं, तं न सक्कए वासेउं, वासणेत्ति दारं गतं, इयाणिं सिक्खा-वणं पडुच्च आयारमंता णाम मयणसलागाओ सुयंगा य, ताणि माणुसप्पलावीणि कीरंति, अणायारमंता कागा सकुंता य, सुकरणं पडुच्च आयारमंताणि रुप्पसुवण्णाईणि दव्वाणि, तत्थ इच्छियाणि आभरणाईणि कज्जाणि कीरंति, अणायारमंतं घंटालोहं, घंटं भंजिऊण तंमि चेव लोहे अण्णं किंचि तारिसं णिव्वत्तेउं न सक्केइ, अविरोहं पडुच्च आयारमंताणि गुडदहीणि, विरोहं पडुच्च तेल्लदुद्धाणि अणायारमंताणि, तेल्लदहिकंजियाईणि एवमाईणि, दव्वायारो सम्मत्तो ॥ इदाणिं भावाऽऽयारो-तत्थ इमा गाहा ॥ ९४ ॥

*** अथ आचारस्य भेदानां वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१७-३१||

दीप अनुक्रम [१७-३१]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ २ अध्ययने ॥ ९५ ॥

'दंसणणाणचरित्ते' गाहा (१८३-१०१) सो य भावायारो पंचविहो, तं०-दंसणायारो णाणायारो चरित्तायारो तवायारो वीरियायारो, तत्थ दंसणायारो सो अट्ठविहो भवइ, 'निस्संकिय' गाहा (१८४-१०१) तत्थ संका दुविहा, तं०- देससंका य सव्वसंका य, तत्थ देससंका जहा समाणे जीवत्ते कहमेस भविओ इमो अभविउत्ति, ण पुण चिंतेइ जहा भावा हेउगेज्झा अहेतुगेज्झा य, तत्थ हेउगेज्झा जहा जीवस्स अत्थित्तं एवमादी, अहेउगेज्झा जहा भविया अभविया य, (केवलि) नेयो भावोत्ति, एसा देससंका, सव्वमेयं पागयभासाए बद्धं अण्णेण व कुसलकप्पियं होज्जत्ति एसा सव्वसंका, तत्थ देससंकाए सव्वसंकाए य इमं उदाहरणं-कप्पट्ठगा दोण्णि जहा आवस्सए तहा भणियव्वं, एवं सो जहा पेज्जावमणेण मरणं संपत्तो, एवं जो जिणप्पणीएसु भावेसु संकं करेइ सो संसारेसु चिरं भमीहिति, तम्हा संका न कायव्वा, जे न करेहिंति संकं सो इतरकप्पट्ठगो जहा पंचलक्खणाणं भोगाणं आभागी जाओ तहा सोवि जिणपण्णत्तेसु संकं अकरेमाणे सग्गमोक्खाणं आभागीभविस्सइ, तम्हा संका ण कायव्वा । इयाणिं कंखा, सा दुविहा- तं०-देसे सव्वे य, तत्थ देसकंखा जहा कोई एगं कुतित्थियमतं कंखइ, ण सेसाणि मताणि, एसा देसकंखा भण्णइ, अण्णा पुण सव्वपावादियमयाइं कंखइ सा सव्वकंखा भण्णइ, एताए दुविहाएवि कंखाए इमं उदाहरणं-राया अमच्चो य आसेण अवहिया अडविं पवेसिया, जहा आवस्सए तम्हा कंखा ण कायव्वा । इदाणिं वितिगिच्छा, सा दुविहा-देसे सव्वे य, तत्थ देसवितिगिच्छा सोहणं साहूणं जइ पुण जीवाउलो न लोगो दिट्ठो होंतो तो सुट्ठुयरं होन्तंति, एवमाइदेसवितिगिच्छा भण्णइ, इदाणिं सव्ववितिगिच्छा-जइ सव्वं सुकरं जिणेहिं दिट्ठं होंतं तओ सुहं अम्हारिसा करेंता, तत्थ उदाहरणं-चोरो उज्जाणे जलहियत्तणं मोत्तूणं विज्जं साहित्ता आगासेणुप्पइओ, इतरो गहिओ, जहा आवस्सए तहेव, तहा वितिगिच्छा ण कायव्वा, अहवा

दर्शनाचारः

॥ ९५ ॥

*** अत्र भावाचाराणाम् दर्शनादि पंच भेदानां वर्णनं क्रियते ।

*** भावाचार-मध्ये दर्शनाचारस्य नि:शङ्कित आदि अष्ट-भेदा: कथयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१७-३१||

दीप अनुक्रम [१७-३१]

वितिगिच्छाए इमं बितियं उदाहरणं- दुगुंछा ण कायव्वा, जहा सावगधूया दुगुंछं काउं दुब्भिगंधत्तणं पत्ता, पच्छा सेणियस्स भज्जा जाया, एवं एयं अक्खाणयं जहा आवस्सए, वितिगिंछित्ति गतं ॥ इदाणिं मूढदीट्ठित्तणं, तावसाणं तवातिसता विज्जातिसया य दट्ठूणं मिच्छादिट्ठीहिं वा पूइज्जमाणे कुतित्थिए पासिऊण अमूढदिट्ठिणा भवियव्वं, एत्थ उदाहरणं सुलसा साविया, जहा अंमडो रायगिहं गच्छंतो बहूणं भवियाण थिरीकरणनिमित्तं सामिणा भणिओ-सुहं संपुच्छेज्जासु, अंमडो चिंतेइ-पुण्णमंतिया सा जा अरहा पुच्छिज्जइ, तओ अंमडेण परिजाणणाणिमित्तं भत्तं मग्गिया, ताए न दिण्णं, तओ तेण बहूणि रूवाणि विगुव्वियाणि, तहवि न दिण्णं, ण य संमूढा, तहा किर कुतित्थियरिद्धीओ दट्ठूण अमूढदिट्ठिणा भवियव्वं, अमूढदिट्ठित्तिगतं । इदाणिं उववूहणत्ति दारं, सम्मत्ते सीयमाणस्स वा असीदमाणस्स वा उववूहणं कायव्वं, एत्थ सेणियराया दिट्ठंतो, जहा रायगिहे णगरे सेणिओ राया, इओ य सक्को देवराया सम्मत्तं पसंसइ, इओ य एगो देवो असद्दहंतो नगरबाहिं निग्गयस्स चेल्लयरूवं काऊण अणिमिसे गेण्हइ, ताहे तं निवारेइ, पुणरवि अण्णत्थ संजई गुव्विणी पुरओ ठिया, ताहे अपवरगे पेसिऊण जहा न कोइ जाणइ तहा सूइगिहं कारावियं, जं किंचि सूइकम्मं तं सयमेव करेइ, तओ सो देवो संजईरूवं पयहिऊण दिव्वं देवरूवं दरिसेति, भणइ य-भो ! सेणिय ! सुलद्धं ते जम्मजीवियफलं जेण ते पवयणस्सुवरिं एरिसी भत्ती भवतित्ति उववूहेऊण गओ, एवं उववूहियव्वो, साहम्मियउववूहणेत्ति गयं । इदाणिं थिरीकरणं, धम्मे सीदमाणस्स थिरीकरणं कायव्वं, जहा उज्जेणीए अज्जासाढो कालं करेंते संजए अप्पाहयइ मम दरिसावं देज्जह, जहा उत्तरज्झयणेसु एयं अक्खाणयं सव्वं तहेव, तम्हा जहा सो अज्जासाढो थिरीकओ तथा जे भविया ते थिरीकेरयव्वा, थिरीकरणंति दारं सम्मत्तं ॥ इदाणिं वच्छल्लत्ति दारं- तं च संत-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१७-३१||

दीप अनुक्रम [१७-३१]

बलविरियपुरिसकारपरक्कमेण पवयणस्स कायव्वं, एत्थ दिट्ठंतो चेव अज्जवइरा, जहा तेहिं अग्गिसिहाओ सुहुमकाइयाइं आणेऊण सासणस्स उब्भावणा कया, एयं अक्खाणयं जहा आवस्सए तहा कहियव्वं, एवं साहुणावि सव्वपयत्तेण सासणं उब्भावेयव्वं, पभावणेतिगयं, सम्मत्तो य दंसणायारो ॥

इदाणिं णाणायारो णाम जा णाणागमनिमित्ता चिट्ठा कज्जइ एस णाणायारो, सो य अट्ठविहो पण्णत्तो, तं०-'काले विणय'गाहा (१८६-१०१) तत्थ पढमं कालेत्ति दारं, जो जस्स अंगपविट्ठस्स वा अंगबाहिरस्स वा सुयस्स अज्झाइयव्वि कालो भणिओ तंमि जहोवइट्ठे काले पढंतो णाणायारे वट्टइत्ति, तव्विवरीए काले पढंतस्स अणायारो भवइ, लोगेऽवि दिट्ठं, करिसयाण कालं पप्प णाणाविहाणं बीयाणं निप्फत्ती भवइ, तम्हा साहुणा काले पढियव्वं, अकाले पढंते पडिणीयदेवया विराहेज्जा, अत्रोदाहरणं- एक्को साहू पाउसियं कालं घेत्तुं अइक्कंताएवि पढमाए पोरिसिंए अणुवयोगेण पढइ कालियसुत्तं, सम्मदिट्ठिदेवया य चिंतेइ-मा पन्तदेवया छलेज्जत्तिकाउं तक्कूडं घेत्तूणं तक्कं तक्केति तस्स पुरओ अभिक्खं आयागयाइं करेइ. तेण य चिरस्स सज्झायस्स मे वाघायं करेइत्ति भणिया-अयाणिए! को इमो तक्कस्स विक्कणणकालो?, वेलं ताव पलोएहि, तीयवि भणियं-अहो! को इमो कालियसुत्तस्स सज्झायकालोत्ति?, अविय सूतीछेड्डमेत्ताणि पासइ, तओ सो साहू चिंतेइ-न एस पागइयत्तिकाऊण उवउत्तो, णायं चणेण-अड्डरत्तो जाओ, मिच्छादुक्कडंति, देवयं भणइ- इच्छामि संता पडिचोयणा, देवयाए भण्णति- अकाले कालियं मा पढेज्जासि, मा ते अण्णा कोइ पंतदेवया छलेहिति, तम्हा कालेणाहीयव्वं, अहवा अकाले सज्झायं करेंतस्स इमं उदाहरणं-धम्मे धम्मे णातिधम्मे, अतिधंतणं साभई। जं अज्जियं धम्मंतेणं, तं हारियं अइधमंतेण ॥ १ ॥ जहा एगो समाविओ छेत्तं रक्खइ खगरभया,

॥ ९७ ॥

*** भावाचार-मध्ये ज्ञानाचारस्य काल आदि अष्ट-भेदा: कथयते

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१७-३१||

दीप अनुक्रम [१७-३१]

तं सिंगं घमइ सो य, अण्णदा तेण समावत्तीए धंतं सिंगयं, चोरा य तेण समीवेण गावो हरंति, तेहिं णायं--कुढो आयो, गावो छड्डेऊण णट्ठा, पभाए तेण दिट्ठातो, घरं णीयातो, तओ चिंतेइ-धमंतो चेवच्छामि छेत्तस्स अदूरसामंतो, एवं सो दिणे दिणे धमंतो धमंतो अच्छइ गावो चारिंतो य, ते य चोरा अण्णया तेणेव अंतेण वोलिंति, तेहिं सो परिजाणिओ जाव न कोइत्ति, ताहे रुट्ठेहिं बंधाविओ गावो य से हडाओ, एवं साहुणावि जं काले पढिज्जइ तंमि चेव संतोसो कायव्वो, जो पुण लाभेणं पढंतो अच्छइ अकालेवि सो तहा विणस्सइ, एयंमि चेव अत्थे इमो बितिओ संखधमओ-एगो राया दंडयत्ताए पडिओ, एक्केण य समावत्तीए संखो वाइओ, रन्ना य तुट्ठेणं थक्के धंतंति सयसहस्सं दिण्णं, सो पच्चूसे निच्चमेव धमं० अच्छइ, अण्णया य राइणा विरेयओ पीओ, सण्णाभूमी अतीति, तेणं संखो हओ, परबलमासण्णं सुत्तं राइणा पुव्वं, तओ राइणो संतासेण वेगो ठिओ, असुहो जाओ, लट्ठीभूओ अ, सो य संखवाइणो दंडिओ, तह अकाले ण सज्झाएअव्वं, मा तहा विणस्सिहित्ति, अहवा इमं तइयं उदाहरणं-सिरीए मतिमं तुस्से, अईसिरिं तु न पत्थए। अतिसिरिमिच्छंतीए, थेरीए विणासिओ अप्पा॥१॥ एगा छाणधारिया थेरी, ताए एगो वाणमंतरो तोसिओ, सा जाणि छाणाणि पल्लत्थेइ ताणि रयणाणि होंति, सा इस्सरी जाया, चाउस्सालं घरं कारियं, समोसियाए पुच्छियं- किमेयंति ?, एताए सिट्ठं, ताहे सावि एयं चेव वाणमंतरं आराहेउं पवत्ता, आराहिओ भणइ- किं करेमि ?, ताए थेरीए भणियं- जइ पसाओ जं समोसियथेरीए वरं देह सो मम दुगुणो भवउ, एवं होउ, जं जं सा चिंतेइ तं तीसे दुगुणं होइ, तओ ताए पढमथेरीए णायं जहा एताए वरो लद्धो ममाहिंतो दुगुणो, सा असहंती पुणो भणइ-मम चाउस्सालिं गिहं फिट्टउ, तणकुडिया मे भवउ, तओ इयरीए दो तणकुडीयाउ, चाउस्सालाणि फिट्टाणि, पुणो चिंतेइ-एकमच्छि काणं होउ, इयरीए

दोवि काणिभूयाणि, पुणो चिंचितेइ- मम एगो हत्थो भवउ, समोसियाए दोवि नट्ठा, पुणो चिंतेइ- मम एगो पाओ होउ, समोसियाए दोवि नट्ठा, ताहे पडिया अच्छइ, एसो असंतोसस्स दोसो, तहावि अतिरित्ते काले सज्झाएण कायव्वो, मा तहा विणिस्सिहिइ जहा थेरित्ति, कालित्तिगयं दारं-इयाणिं विणओ, विणएण पढियव्वं, अविणएण अधेज्जमाणो विज्जाफलं ण लभइ, एत्थोदाहरणं-सेणिओ राया भज्जाए भण्णइ- ममेगखंभं पासायं करेहि, एयं दुमपुप्फियज्झयणे वक्खाणियं, तम्हा विणएण अधिज्जेयव्वं, णो अविणएणं, विणओ गओ। इदाणिं बहुमाणोत्ति दारं , जे णाणमंता तेसु णाणमंतेसु भावओ नेहपडिबंधो एस बहुमाणो, भत्ती पुण अब्भुट्ठाणाकिरिया जा कज्जइ, एत्थ चउभंगी-एगस्स भत्ती णो बहुमाणो१ एगस्स बहुमाणो णो भत्ती२ एगस्स बहुमाणोवि भत्तीवि ३ एगस्स णो बहुमाणो णो भत्ती ४, एत्थ बहुमाणभत्तिविसेसनिदरिसणत्थं इमं उदाहरणं-एगंमि गिरिकंदरे सिवो, तं च बंभणो पुलिंदो य अच्चेंति, बंभणो उवलेवणसंमज्जणणावारिसावणपयतो सुतीभूओ अच्चिणित्ता थुणइ भत्तिजुत्तो, ण पुण बहुमाणेण, पुलिंदो पुण तंमि सिवे भावपडिबद्धो गल्लोदएण ण्हावेइ, णामिऊण उवविट्ठो, सिवो य तेण समं आलावसंकहाहिं अच्छइ, अन्नया तेसिं बंभणेण उल्लावणसद्दो सुओ, तेण परियरिऊण उवालद्धो- तुमंपि एरिसो चेव कडपूयणसिवो जो एरिसएण उच्छिट्ठएण समं मंतेसि, तओ सिवो भणइ- एसो मे बहुमाणेइत्ति, तुमं पुणाइं ण तहा, अण्णया य अच्छीणि ओखणिऊण अच्छइ सिवो, बंभणो य आगंतुं रडिउमाढत्तो उवसंतो य, पुलिंदो य आगओ, सिवस्स अच्छि ण पेच्छइ, तओ अप्पाणयं अक्खि कंडफलेण उक्खिणित्ता सिवस्स लाएइ, तओ सिवेण बंभणो पत्तियाविओ, एवं नाणमंतेसु भत्ती बहुमाणो य दोवि कायव्वाणि, बहुमाणोत्ति दारं गतं ॥ इयाणिं उवहाणदारं- उवहाणं णाम तवो जो जस्स अज्झयणस्स जोगो आगाढ-

॥ ९९ ॥

मणागाढो तहेव अणुपालेयव्वो, एत्थ दिट्ठंतो- एगे आयरिया ते वायणाए संता परितंता सज्झाएवि असज्झाइयं घोसेउमारद्धा, नाणंतरायं बंधिऊण कालं काऊण देवलोगं गया, तओ देवलोगाओ आउक्खएणं चुओ, आभीरकुले पच्छायाओ, भोगे भुंजइ, अण्णदा से धूया जाया, सा य अतिरूवस्सिणी, ताणि य पच्चंतिगाणि गोचारिणिमित्तं अन्नत्थं गच्छंति, तीय दारियाए पिउणो सगडं पुरओ गच्छइ, सा य दारिया तस्स सगडस्स धुरतुंडे ठिता वच्चइ, तरुणइब्भेहिं चिंतियं- समाणाइं काउं सगडाइं दारियं पेच्छामो, तेहिं सगडा उप्पहेण खेडिया, विसमेण भग्गा, तओ लोगेण तीए दारियाए णामं कयं-असगडा, ताए असगडाए पिया असगडपियत्ति, तओ तस्स तं चेव वेरग्गं जायं, तं दारियं एगस्स दाऊण पव्वइओ, जाव चाउरंगिज्जं ताव पढिओ, असंखए उद्दिट्ठे तं नाणावरणिज्जं से कम्मं उदिण्णं, पढंतस्स न किंचि ठाइ, आयरिया भणंति-छट्ठेणं अणुण्णविहिइ, तओ सो भणइ-एतस्स केरिसो जोगो?, आयरिया भणंति- जाव न ठाइ ताव आयंबिलं कायव्वं, तओ सो भणइ-तो एवं चेव पढामि, तेण य तहा पढंतेण बारस रूवाणि बारसहिं संवच्छरेहिं अधीयाणि, ताव से आयंबिलं कयं, तं च णाणावरणिज्जं कम्मं खीणं, एवं जहा असगडपियाए आगाढो जोगो अणुपालिओ तहा सम्मं अणुपालियव्वं, उवहाणित्ति गयं॥ इदाणिं अनिण्हवणेत्ति, जं जस्स सगासे किंचि सिक्खियं तं तहेव भाणियव्वं, जो वाणायरियं निण्हवइ सो ण इमं परं च लोगमाराहेइ, एत्थ उदाहरणं एगस्स ण्हाविअस्स खल्लुरभंडं विज्जासामत्थेण आगासे अच्छइ, तं च एगो परिव्वायओ (विज्जत्थमुवयरइ) बहूहिं उवसंपज्जिऊण तेण सा विज्जा लद्धा, ताहे अण्णत्थ गंतुं तिदंडेणागासगएण महाजणेण पूइज्जइ, रण्णा पुच्छिओ- भगवं! किमेस विज्जातिसउत्ति?, सो भणइ विज्जातिसओ, कस्स सगासाओ गहिओ?, सो भणइ-हिमवंतफलाहारस्स रिसिणो सगासे अहिज्जिओ, एवं वुत्ते समाणे तं तिदंडं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१७-३१॥

दीप अनुक्रम [१७-३१]

खंडेत्ति पडियं, एवं जो अप्पागमो आयरिओ सो ण निण्हवेयव्वो, **अणिण्हवणत्ति गयं ॥ इयाणिं वंजणोत्ति दारं**, तत्थ वंजणाणि अक्खराणि भण्णंति, तेहिं अक्खरेहिं णिप्फण्णं सुत्तं, तं च सुत्तं पागतं सक्कयं करेइ, यथा धर्मो मङ्गलमुत्कृष्टं, एवमादि, अहवा तस्स अण्णाणि वंजणाणि करेइ जहा 'पुण्णं कल्लाणमुक्कोसं, दयासंवरनिज्जरा,' वंजणभेदे अत्थभेओ तओ मोक्खाभावो निरत्थाय तओ दिक्खा, तम्हा अण्णाणि वंजणाणि ण कायव्वाणि. **वंजणोत्ति दारं गयं ॥ इयाणिं अत्थोत्ति दारं**, तेसु चेव वंजणेसु अण्णमत्थं वियप्पेति, जहा 'आवंती केयावंती लोगंसि विप्परामुसंती' एतस्स सुत्तस्स अत्थं विसंवयावेइ जहा आवंती-विसयो तत्थ केयावंती नाम(रज्जू) वंता णाम कूवे पडिया, तं लोगो विप्परामुसइत्ति वुत्तं भवइ, एरिसो अत्थविसंवादो ण कायव्वो, **अत्थेत्ति गयं ॥ इदाणिं उभयेत्ति**, जस्स सुत्तंपि अत्थोवि णस्सइ तं उभयं भण्णइ,जहा-धम्मो मंगलमुक्किट्ठं,अहिंसा संजमो तवो । देवावि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥' अहागडेसु रीयंति' एवमाइ सुत्तत्थविसंवादो इमो-इहाकडेहिं रंधेंति, कडेहिं रंधगारिओ । 'रायी भत्ते सिणाणे य' एतस्स इमो 'रण्णो भत्तंसिणो जत्थ, भद्दगो तत्थ विज्जति' एवमाइसु अत्थविसंवाओ ण कायव्वो, **सम्मत्तो य णामायारो ॥**

इयाणिं चरित्तायारो, सो य अट्ठविहो, तं०-'**पणिहाणजोगजुत्तो**',गाहा (१८७-१०१) तत्थ पणिधाणं णाम अज्झवसाणं, तेण अज्झवसाणयजोगेण जुत्तो, मेरक्खणंति वुत्तं भवइ, अहवा तिविहेणवि करणेणं जुत्तो पणिहाणजोगजुत्तोत्ति, भणियं च गोविंदवायएहिं-**कायेविय अज्झप्पं सरीरवायासमण्णियं चेव । कायमणसंपउत्तं अज्झायं किंचिदाहंसु ॥ १ ॥**' तत्थ समितीओ इरियासमितिमाइयाओ पंच गुत्तीओ तिण्णि मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती, सीसो आह- समिइगुत्तीणं

*** भावाचार-मध्ये चारित्राचारस्य प्रणिधान आदि अष्ट-भेदा: कथयते

को पतिविसेसो ?, आयरिओ भणइ- जं जिणोवदिट्ठेण विहिणा मणवयणकायजोगेहि य पवत्तणं तमिरियासमितिमाइयाओ पंच समितिओ निप्फज्जंति, गुत्तीओ पुण मणवयणकाइएहिं जोगेहिं अप्पवत्तमाणस्स संजमो निव्वणो भवइ, एस चरित्तायारो सम्मत्तो ॥

इयाणिं तवायारो 'बारसविहंमिवि तवे सब्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे । (अगिलाइ अणाजीवी नायव्वो सो तवायारो) णवि अत्थि णवियं होहिति सज्झायसमं तवोकम्मं ॥ १ ॥ (१८९-१०१) तवो बारसविहो जहा दुमपुप्फियाए तहा भाणियव्वो, कुसलदिट्ठो णाम तित्थगरदिट्ठोत्ति वुत्तं भवइ, अगिलाए नाम न रायवेट्ठी व मण्णइ, अणाजीवी नाम तमेव तवं णो आजीवइ, कहं नाम एतेण अण्णपाणं उप्पज्जेज्जत्ति, एस तवायारो भणिओ ॥

इदाणिं वीरियायारो भण्णइ,जं छत्तीसाए कारणेहिं असढो उज्जमइ एस वीरियायारो,ताणि पुण छत्तीस कारणाणि इमाणि तं०—अट्ठविहो दंसणायारो अट्ठविहो णाणायारो अट्ठविहो चरित्तायारो बारसविहो तवायारोत्ति, एत्थ वीरियायारे इमा गाहा-' अणिगूहियबलविरिएण ' गाहा (१८९-१०१) पठियसिद्धा चेव। वीरियायारो समत्तो, तेण समत्तो य आयारो ॥

इदाणिं कहा, सा य कहा चउव्विहा, तं०-'अत्थकहा कामकहा धम्मकहा एव मीसिया य कहा' (१९०-१०६) एतेसिं चउण्हं कहाणं एक्केक्का अणेयविहा भवति, तत्थ अत्थकहा नाम जा अत्थनिमित्तं कहा कहिज्जइ, सा अत्थकहा इमाए गाहाए अणुगंतव्वा, तं० 'विज्जा सिप्पे' गाहा, (१९१ १०६) तत्थ पढमं विज्जत्ति दारं, जो विज्जाए अत्थं उवज्जिणिज्जइ, जहा एगेण विज्जा साहिया सा तस्स पंचगं विहाइयं देइ, जहा वा सच्चइस्स विज्जाहरचक्कवट्टिस्स विज्जापहावेण भोगा उव-

*** अत्र कथानां अर्थकथादि चत्वार: भेदानां वर्णनं क्रियते

णया, सच्चइस्स उप्पत्ती जहा य सङ्घकुले वड्ढिओ जहा य महिस्सरो णामं कयं एयं निरवसेसं जहा आवस्सए जोगसंगहेसु तहा भाणियव्वं, विज्जत्तिगयं ॥ इदाणिं सिप्पंति, सिप्पेण अत्थो उवज्जिणिज्जई, एत्थ उदाहरणं कोक्कासो, जहा आवस्सए, सिप्पेत्ति गयं । इदाणिं उवाएत्ति, तत्थ दिट्ठतो चाणक्को, जहा चाणक्केण णाणाविहेहिं उवाएहिं अत्थो उवज्जिओ, कहं ? 'दो मज्झ धाउरत्ताओ' एयंपि अक्खाणयं जहेव आवस्सए तहा भाणियव्वं, उवाएत्ति गयं । इदाणिं अणिव्वेदे संचए य एक्कमेव उदाहरणं मम्मणो पणिओ, सोऽवि जहा आवस्सए तहा इहंपि वत्तव्वो ॥ इयाणिं दक्खत्तं, एत्थ गाहा ' दक्खत्तणये पुरिसस्स ' (१९३-१०७) एत्थ उदाहरणं जहा बंभदत्तो कुमारो अमच्चपुत्तो सिट्ठिपुत्तो सत्थवाहपुत्तो य, एते चउरोवि परोप्परं उल्लावेंति, जहा को भे केण जीवई ?, तत्थ रायपुत्तेण भणियं-अहं पुण्णेणं जीवामी, अमच्चपुत्तेण भणियं-अहं बुद्धिए जीवामि. सिट्ठिपुत्तो भणई-अहं रूवस्सित्तणेणं जीवामि, सत्थवाहपुत्तेण भणियं-अहं दक्खत्तणेण जीवामि, ते भणंति-अण्णत्थ गंतुं विण्णासेमो, ते गया अण्णं नगरं जत्थ न णज्जंति, उज्जाणे आवासिया, दक्खस्स आएसो दिण्णो, सिग्घं भत्तपरिव्वयं आणेहि, सो वीहिं गंतुं एगस्स थेरवाणियगस्स आवणे थिओ, तस्स बहुगा कइया एंति, तद्दिवसं कोवि ऊसवो, सो ण पहुप्पति पुडए बंधेउं, तत्थ सत्थवाहपुत्तो दक्खत्तणेण जस्स जं उवजुज्जइ लवणतेल्लघयगुडसुंठिमिरिय एवमादि तस्स तं दिंति, पइदिसिट्ठो लाभो लद्धो, तुट्ठो भणइ-तुब्भे आगंतुगा उदाहु वत्थव्वया ?, जइ आगंतुया तो अम्ह गिहे आसणपरिग्गहं करेज्जह, सो भणइ-अण्णे मम सहाया उज्जाणे अच्छंति, तेहिं विणा न भुंजामि, तेण भणियं-सव्वे एंतु, तेण य तेसिं भत्तसमालहणतंबोलाइ उवउत्तं, तं पंचण्हं रूवयाणं, विइयदिवसे रूवस्सी वणियपुत्तो वुत्तो-अज्ज तुमे दायव्वो भत्तपरिव्वयओ, एवं भवउत्ति सो उट्ठेऊण गणियापाडगं गओ अप्पयं

॥१०३॥

मंडेउं, तत्थ य देवदत्ता णाम गणिया पुरिसवेस्सिणी बहूहिं रायसेट्ठिपुत्तादीहिं मग्गिता, णेच्छइ, तस्स तं रूवसमुदयं दट्ठुं खुभिया, पडिवदासियाए गंतूण तीय माऊए कहियं जहा दारिया सुंदरजुवाणे दिट्ठे देइ, तओ सा भणइ-एयं मम गिहं अणुवरोहेण एज्जह, इहेव भत्तवेलं करेज्जह, तहेवागया, सतियो उवयोगो कओ, तइयदिवसे बुद्धिमंतो अमच्चपुत्तो संदिट्ठो-अज्ज तुमे भत्तपरिव्वयओ दायव्वो, एवं भवउत्ति सो गओ करणसालं, तत्थ य ततिओ दिवसो ववहारस्स छिज्जंतस्स, परिच्छेदं ण गच्छइ, दो सवत्तीओ, तासिं भत्ता उवरओ, एक्काए सुओ अत्थि, इतरी अपुत्ता, सा तं दारयं नेहेणं उवचरइ, भणइ य-मम पुत्तो, पुत्तमाया भणइ-मम, तासिं न परिच्छिज्जइ, तेण भणियं- अहं छिंदामि ववहारं, दारगं दुहा कज्जउ, दव्वंपि दुहा एव, पुत्तमाया भणइ-न मे दव्वेण कज्जं, दारगो तीएवि भवउ, जीवंतं पासीहामि तं, इयरी तुसिणीया अच्छइ, पुत्तो ताहे पुत्तमायाए दिण्णो, तहेव सहस्सं उवयोगो, चउत्थे दिवसे रायपुत्तो भणिओ- अज्ज रायपुत्त ! तुब्भेहिं पुण्णाहिएहिं जोगचरणं वहियव्वं, एवं भवउत्ति, तओ रायपुत्तो तेसिं अंतियाओ निग्गंतुं उज्जाणे ठिओ, तम्मि य नगरे अपुत्तो राया मओ, जंमि रुक्खछायाए रायपुत्तो निवण्णो सा ण ओयत्तति, तओ आसेण तस्सोवरि ठाइऊण हिंसियं, राया य अभिसित्तो, अणेगाणि सतसहस्साणि जातानि, एवं अत्थुप्पत्ती भवइ, दव्वत्तणेत्ति दारं गतं । इयाणिं साम-भेद-दंड-उवप्पयाणेहिं चउहिवि जहा अत्थो विढप्पइ, एत्थ उदाहरणं सियालो, तेण भमंतेण हत्थी मओ दिट्ठो, सो चिंतेइ-लद्धो मए, उवाएण ताव णिच्छुदेण खाइयव्वो जाव सीहो आगओ, तेण चिंतियं- सचिडेण ठाइयव्वं एतस्स, तेण भणियं- अरे भातिणेज्ज ! अच्छिज्जति ?, सिंघालेण भणियं- आमं मामं!, सीहो भणइ-किमेयं मयंति, सियालो भणइ- हत्थी, केण मारिओ ?, वग्घेण, सीहो चिंतेइ- कहमहं ऊणजातीएण मारियं भक्खयामित्ति गओ सीहो, नवरं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१७-३१॥

दीप अनुक्रम [१७-३१]

वग्घो आगओ, तस्स कहियं-सीहेण मारिओ, भणिओ य-सो पाणियं पाउं णिग्गओ, वग्घो नट्ठो, एस भेओ, जाव कागो आगओ, तेण चिंतियं-जइ एतस्स न देमि तो काउ काउत्ति वासियसद्देण अण्णे कागा एहिंति, तेसिं काऊरगसद्देणं सियालादि अण्णे य बहवे एहिंति, ते केत्तिया वारेहामि ?, तो एतस्स उवप्पयाणं देमि, तेण तओ तस्स खंडं घेत्तूण दिण्णं, सो तं घेत्तुं गओ जाव सियालो आगओ, तेण णायमेतस्स हढेण मारणं करेमि, तेण भिउडिं काऊण वेगो दिण्णो, नट्ठो सियालो, उक्तंच 'उत्तमं प्रति पातेन, शूरं भेदेन योजयेत् । नीचमल्पप्रदानेन, समतुल्यं पराक्रमैः ॥ १ ॥' अत्थकहा गता । इदाणिं कामकहा- 'रूवं वयो य वेसो' गाहा (१९४-१०९) रूवकहाए वसुदेववंभदत्ता, रूवेत्तिगयं ॥ इयाणिं वएत्ति, तत्थ जइ तरुणे वए वट्टइ तो, कामिज्जइ, इतरहा न कामिज्जइ, वएत्तिगतं ॥ इदाणिं वेसोत्ति, वेसो नाम वत्थाभरणादीहिं कीरइ, तेहिं जइ उववेओ तो कमणीओ भवति, एत्थ उदाहरणं- राया पासादगओ पलोएंतो अच्छइ, तेण य कालमहिला कुसुंभरत्तेहिं पाउएहिं हरियसद्दुले चमकंती दिट्ठा,तओ सो अज्झुववण्णो,मणुस्सा पेसिया आणेह एयं,सा आणिया जाव विरूवा, पडिविसज्जिया, राइणा भणियं-'सुमहग्घोवि कुसुंभो घेत्तव्वो पंडिएण पुरिसेण। जस्स गुणेण महिलिया,होइ सुरूवा कुरूवावि॥१॥'वेसोत्तिगयं। इदाणिं दक्खिण्णन्ति,दाणं देंतो राया दाएहिं विरूवो अवयत्थोऽवि कामिज्जइ, एस दक्खिण्णकहा, एत्थ अयलमूलदेव उदाहरणं, अयलो मूलदेवो व देवदत्ताए गणियाए लग्गा, अयलो देइ, मूलदेवो एमेव विसयसिक्खाहिं, कुट्टणी विपरिणामेइ ताए वण्णिज्जंतं, तीए कुट्टिणी भणिया-अयलं ता भणासु-उच्छुं मे देहि, तेण से सगडं भरेऊण पेसियं, तओ सा भणइ-किं मण्णे हत्थिणी जेण सगडं मज्झ भरियं पेसेइ, मूलदेवस्स पेसियं, तेण उच्छुगंडियाओ छोडेऊणं चाउज्जाएणं वासेत्ता तत्थेव सूयं लाएत्ता पेसियाओ, एवं कुट्टिणी पत्तियाविया, गंध-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१७-३१||

दीप अनुक्रम [१७-३१]

व्वाईणि सिक्खाए चेव पडंति, सिक्खत्ति गयं ॥ इदाणिं दिट्ठत्तिदारं, जहा कोई कस्सई कामसंसियं कहं कहेइ जहा मए एवंविधा नारी दिट्ठा जहा णारओ कण्हस्स रुविणीं कहयइ, दिट्ठत्ति गयं ॥ इदाणिं सुयंति, पउमनाभो राया णारयस्स सुणेऊणं पुव्वसंगइयं देवमाराहेऊण तस्स परिकहेइ-एवगुणजुत्ता द्रौपदी पंडवेहिं सद्धिं कीडति, सुएत्ति गतं ॥ इदाणिं अणुभूयेत्ति दारं,जहा तंरगवतीए अप्पणो चरितं कहियं, अणुभूएत्ति गतं ॥ इदाणिं संथवो,सो इमाए गाहाए अणुगंतव्वो-'संदंतणाउ पेम्मं पेम्माउ रती रतीउ वीसंभो । वीसंभाओ पणओ पंचविहं वड्ढए पेमं ॥ १ ॥ " संथवो गओ, गया कामकहा । इदाणिं धम्मकहा-'धम्मकहा बोद्धव्वा' गाहा(१९५-११०)तत्थ धम्मकहा चउव्विहा,तं०-अक्खेवणी विक्खेवणी संवेयणी निव्वेयणी यत्ति, तत्थ जाए कहाए सोयारो अक्खिप्पइ सा अक्खेवणी, विविहमनेकप्रकारं क्षिपति या कथा मतिं सा विक्षेपणी,संवेगजणणी संवेदणी,निव्वेयजणणी निव्वेयणी, तत्थ अक्खेवणी कहा चउव्विहा,तं०-'आयारे गाहा'(१९६-११०)आयारक्खेवणी ववहारक्खेवणी पण्णत्तिक्खेवणी दिट्ठिवायक्खेवणी, तत्थ आयारक्खेवणी णाम आयारेण अक्खिवंति जओ साहुणो अण्हाणलोयलद्धावलद्धिं एवमाईणि परमदुक्कराणि आयरंति अट्ठारसीलंगसहस्सधारिणो भगवंतोत्ति, आयारक्खेवणी कहा गता ॥ इयाणिं ववहारक्खेवणी,जाहे सोतारस्स आयारेण अक्खित्ता मती भवति ताहे ववहारक्खेवणीकहं कहेइ,जहा एवमवि दुरणुचरे आयारे ठियप्पाणो साहुणो जइ कहवि किंचिदणायारमायरंति इयाणिं ताहे जहा लोगे अववहारिस्स दंडो कीरइ ताहे तेसिंपि पायच्छित्ता दंडो कीरइ, एसा ववहारक्खेवणी, जहा कस्सइ कहिंचि अत्थे संसओ उप्पण्णो तत्थ साहुणा णिच्चियारं महुरं सउवायं च पण्णवणमग्गं अणुम्मुयंतेण पण्णत्तीवागरणेहिं सोयारो अक्खिवियव्वा पण्णत्तिक्खेवणी कहा गता ॥ इयाणिं दिट्ठिवायक्खेवणी, जाहे

कोइ सोतारो सुहुमाए दव्वचिंताए वा सोउमरिहे ताहे तस्स सोयारस्स मती वादेहिं अक्खिप्पइ, जेण वा दिट्ठिवाएण हेउणा अक्खिप्पइ सा य दिट्ठिवायक्खेवणी, एसा अक्खेवणी कहा, तारिसेण अण्णेण वियप्पेणं इमाए गाहाए भण्णति ' विज्जा चरणं च तवो ' गाहा, (१९७--११०) तत्थ नाणस्स सामत्थं कहयइ, जहा अंधगारे वट्टमाणा भावा पदीवेण सचक्खू पासइ, एवं नाणं पुरिसस्स दीवभूतंति, भणियं च--'पेच्छइ जहा सचक्खू पुरिसो दीवेण अंधयारेवि । जिणसासणदीवेण उ पासति (नाणी सयल भावे) ॥ १ ॥ ' एवं णाणसमत्थदीवएण सोयारस्स मती अक्खिप्पइ, एसा विज्जाअक्खेवणी गया ॥ इदाणिं चरणअक्खेवणी २ णाम एवं साहुणो सरीरेवि अपडिबद्धा भवंति, (साहुणो छट्ठट्ठमदसमदुवालसाई तवो जीए वण्णिज्जइ) पुरिसगारो णाम अणिगूहियबलवीरिएहिं संजमजोगो कायव्वो, समितीओ पंच गुत्तीओ तिण्णि, एयाओ विज्जाचरणाणि पुरिसकारसमितीगुत्तीपज्जवसाणाणि पंचवि कारणाणि जाए कहाए उवदिस्संति सो कहाए अक्खेवणीए रसोत्ति, रसो नाम लक्खणं भण्यते, एवं अक्खेवणी कहा गता ॥ इदाणिं विक्खेवणी, सा चउव्विहा, तं०- ससमयं कहेत्ता परसमयं कहेइ परसमयं कहेत्ता ससमयं कहेइ (पढमा विक्खेविणी, सम्मावादं कहेत्ता) गुणे य से उवदंसेइ (मिच्छावायं कहेत्ता दोसे य तस्स उवदंसेइ) एसा बितिया विक्खेवणी गया, इदाणिं तइया विक्खेवणी भण्णति, परसमयं कहेत्ता तेसु चेव परसमएसु जे भावा जिणप्पणीतेहिं भावेहिं सह विरुद्धा असंता चेव वियप्पा ते पुव्विं कहेत्ता दोसाइ तेसिं भणिऊण पुणो जिणप्पणीयभावसरिसा घुणक्खरमिव केवि सोहणा भणिया ते कहेइ, अहवा मिच्छावादो नत्थित्तं भण्णइ,सम्मावादो अत्थित्तं भण्णति,तत्थ पुव्विं नाहियवाईणं दिट्ठीओ कहित्ता पच्छा अत्थित्तपक्खवाईणं दिट्ठीओ कहेइ, एसा तइया विक्खेवणी गया, इयाणिं चउत्थी विक्खेवणी, सावि

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१७-३१॥

दीप अनुक्रम [१७-३१]

एवं चेव, णवरं पुव्विं सोभणे कहेइ पच्छा इयरेत्ति, एवं विक्खेवणी गया ॥ इयाणिं इहलोगसंवेयणी, जहा सव्वमेव माणुसत्तणं असारमद्धुवं कदलीथंभसमाणं एरिसं कहं कहेमाणो धम्मकहीं सोतारस्स संवेगमुप्पाएइ,इहलोगसंवेयणी गता॥ इदाणिं परलोगसंवेदणी,जहा'इस्साविसादमदकोहमाणलोभादिएहिं दोसेहिं। देवावि समभिभूया,तेसुवि कत्तो सुहं अत्थि?॥१॥इट्ठ जणविप्पओगो चेव चयं चेव देवलोगाउ।एतारिसा णिसग्गे देवावि दुहाणि पावंति॥१॥जइ देवेसु एयारिसाइं दुक्खाइं पाविऊंति नरगतिरिएसु पुण का कहा?. एसा परलोगसंवेदणी कहा गया ॥ इदाणिं सुभाण कम्माण विवागदरिसावणेणं संवेगं सोयारस्स उप्पाएइ, जह इहलोएवि तेयाइओ लद्धीओ भवंति सुभेसु कम्मेसु वट्टमाणस्स,तं० 'वीरिय विउव्वण'गाहा(२०२-११०)तवोजुत्तस्स साहुणो आगासगमणादीवीरियमुप्पज्जति जंघाचारणलद्धी विज्जाचारणलद्धी वा एवमादी, तहा विउव्वणलद्धीवि तवसामत्थेण भवति, णाणड्ढी इह लोए भवइ, भणियं च-'पभू भंते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्सं विउव्वित्तए' एवमादी, तहा चरणद्धीवि जहा 'जं अन्नाणी कम्मं खवेइ बहुयाहिं वासकोडीहिं । तं नाणी तिहिं गुत्तो खवेइ उस्सासमेत्तेणं ॥ १ ॥' दंसणिद्धी जहा-'सम्मद्दिट्ठी जीवो विमाणवज्जं न बंधए आउं। जइ य न सम्मत्तजढो अहव न बद्धाउओ पुव्विं ॥ १ ॥' एवमादीयाओ कहाओ कहेंतो संवेगणिं कहं कहेतित्ति,संवेगणी कहा गया । इदाणिं णिव्वेयणी, सा चउव्विहा-तं०-इहलोए दुच्चिण्णा कम्मा इहलोए दुहविवागसंजुत्ता भवंति, चउभंगी, अहं इह लोए दुच्चिण्णा कम्मा इहलोए दुहविवागसंजुत्ता भवंति ?, जहा चोराणं परदारियाणं, एवमाई, एसा पढमा निव्वेदणी गता॥ इदाणिं बितिया णिव्वेदणी, इहलोए दुच्चिण्णा कम्मा परलोए दुहविवागसंजुत्ता भवंति, जहा णेरइयाणं अण्णंमि कयं कम्मं निरयभवे फलं देइ, एसा बितिया निव्वेयणीकहा, इयाणिं तइया णिव्वेदणी कहा--परलोगे

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१७-३१||

दीप अनुक्रम [१७-३१]

दुच्चिण्णा कम्मा इहलोगे दुहविवागसंजुत्ता भवंति, कहं ?, जहा पावपसत्तिमंतो बालपभितिमेव अंतकुलेसु उप्पण्णा रेवययकोढाईहिं रोगेहिं दारिद्देण य अभिभूया दीसंति, एसा तइया निव्वेयणी ॥ इयाणिं चउत्था णिव्वेदणी, परलोए दुच्चिण्णा कम्मा परलोए चेव दुहविवागसंजुत्ता भवंति, कहं ?, जहा पुव्विं दुच्चिण्णेहिं कम्मेहिं जीवा संडासतुंडेहिं उप्पज्जंति, तओ ते नरयपाउग्गाणि कम्माणि असंपुण्णाणि ताए जातीए पूरेंति, पूरेऊण नरगभवे वेदेंति, एसा चउत्थी णिव्वेदणी ॥ एत्थं इहलोगो वा परलोगो वा पण्णवगं पडुच्च भवति, तत्थ पण्णवगस्स मणुस्सभवो इहलोगो, अवसेसाओ तिण्णि पगडीओ परलोगो, एताए निव्वेयणीए कहाए इमा रसगाहा- 'पावाणं कम्माणं' गाहा (२०३-११०) पढियव्वा, चउण्हं कहाणं कस्स का पढमं कहेयव्वा?, एत्थ भण्णइ-वेणइय णइगस्स कहा, वेयणियगो नाम जो पढमताए उवट्ठाइ ममं धम्मं कहेह, तस्स अक्खेवणी कहेयव्वा, तो ससमयगहियस्स पच्छा विक्खेवणी कहिज्जइ, किं कारणं ?, जम्हा अक्खेवणीए जीवा अक्खित्ता समाणा सम्मत्तं लभेज्जा, विक्खेवणीए पुण भयणिज्जा, गाढतरागं च मिच्छत्तं भवइ, कहं ?, जो आगाढमिच्छदिट्ठी तस्स ससमयो वणिज्जंतो रोयइ, गाढावगयत्तेणं पुण तस्स दोसा कहिज्जमाणा ण रोयंति, ण य सद्दहइ, मुहुमत्तणेण य दोसे अबुज्झमाणो अदोसे चेव मण्णेज्जा, इच्चेएण कारणेण भण्णति जहा गाढतरागं मिच्छंति, धम्मकहा समत्ता ॥ इयाणिं मीसिया कहा भण्णइ-'लोइयवेइय'० गाहा (२०८-११४) लोइयवेइयसामइएसु सत्थेसु जहिं धम्मत्थकामा तिण्णिवि कहिज्जंति सा मीसिया कहा, तत्थ लोइएसु जहा भारहरामायणादिसु वेदिगेसु जन्नकिरियादीसु सामइगेसु तरंगवइगाइसु धम्मत्थकामसहिताओ कहाओ कहिज्जंति, मीसिया कहा समत्ता ॥ इदाणिं कहापसंगेण चेव विकहा भण्णइ- जहा विणट्ठ-

*** अत्र मिश्रकथा एवं विकथाया: स्वरुपम् वर्णयते

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१७-३१||

दीप अनुक्रम [१७-३१]

सीला नारी विनारी एवं कहालक्खणाओ विणट्ठत्ति विकहा भवइ,सा य इमा विकहा,तं०'इत्थिकहा'गाहा(२०९-११४)भणितव्वा, विकहा गता ॥ जातो विक्खेवणादियातो चत्तारिवि कहाओ ताओ पुरिसंतरं पप्प अकहाओ य कहाओ भवंति, कहं ?, जहा दुवालसंगं गणिपिडगं मिच्छादिट्ठिं पप्प सुतअन्नाणभावेण परिणमइ, सम्मदिट्ठिं पप्प सुतनाणभावेण परिणमति, तहा कहाओवि पण्णवयं पडुच्च एव विविहाउ भवंति, एत्थ गाहा-'एता चेव कहाओ'गाहा (२१०-११४) भणितव्वा, तत्थ अकहा ताव एवं भवंति 'मिच्छत्तं वेदेंतो जं अन्नाणी कहं परिकहेति' गाहा (२११-११४) कहा पुणेवं भवति 'तवसंजम' गाहा (२१२-११४) पढियव्वा, विकहा पुण एवं भवइ-'जा संजमो(ओ) पमत्तो' गाहा (२१३-११४) भणियव्वा ॥ इदाणिं संजमगुणट्ठिएण केरिसा ण कहेयव्वा, केरिसा वा कहेयव्वात्ति, तत्थ इमा न कहेयव्वा-'संगाररसुत्तइया' गाहा (२१४-११४) भाणितव्वा, इमा पुण कहेयव्वा-'समणेण कहेयव्वा' गाहा (२१५-११४) पढितव्वा, 'अत्थमहंती' गाहा (२१६-११४) भणितव्वा, 'खेत्तं देसं कालं' गाहा (२१७-११४) कंठ्या, कहा सम्मत्ता, समत्तो य णामणिप्फण्णो णिक्खेवो ॥ इयाणिं सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं, अक्खलियं अमिलियं अविच्चामेलियं जहा अणुयोगदारे, तं चिमं सुत्तं'संजमे सुट्ठियप्पाणं, विप्पमुक्काण ताइणं । तेसिमेयमणाइण्णं, णिग्गंथाण महेसिणं (१७-११५) 'यम उपरमे' धातुः, अस्य धातुसंज्ञा, संपूर्वस्य अप्प्रत्ययः, अनुबंधलोपः परगमनं संयमः, तत्थ संयमो सत्तरसविहो हेट्ठा दुमपुप्फियाए वण्णिओ, 'अत सातत्यगमने' धातुः धातुसंज्ञा, सात्यतिभ्याम्मनिन्मनिणा'इति (उणादि ४) मनिण् प्रत्ययः, अनुबंधलोपः वृद्धिः आत्मा, तस्मिन् संयमे शोभनेन प्रकारेण स्थितः आत्मा येषां ते भवंति संयमे सुस्थितात्मानः,'मुच्लृ मोक्षणे'धातुः, अस्य निष्ठाप्रत्ययांतस्य विप्रपूर्वस्य च विप्रमुक्तः, विप्पमुक्काणं विवि-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१७-३१॥

दीप अनुक्रम [१७-३१]

हेण बाहिरब्भंतरेण गंथेण मुक्काणं, निग्गंथाणंति वुत्तं भवइ, 'त्रै पालने' धातुः, 'आदेच उपदेशेऽशिति' (पा६-१-४५) आकारः, अस्य तृच् प्रत्ययः, शत्रोः परमात्मानं च त्रायंत इति त्रातारस्तेषां त्रातृणां, तारेतित्ति तारिणो, ते य तारिणो तिविहा भवंति, तं०-आतितायारो परतायारो उभयतातारोत्ति, तत्थ आयतातारो पत्तेयबुद्धा, परतातारो तित्थकरा, कहं ?, ते कयकिच्चावि भगवंतो भवियाणं संसारसमुद्दपारकंखिणो धम्मोवएसेण तारयंति, चोदओ भणइ—अभव्वावि पव्वइया संता नो किं तातिणो भवंति ?, आयरिओ भणइ -तेहिं अंधलगपदीवधारितुल्लेहिं ण एत्थ अधिकारो, उभयतातिणो थेरा भण्णंति, ' तेसिमेयमणाइण्णं ' तेसिं पुव्वनिद्दिट्ठाणं संजमट्ठिताणं बाहिब्भंतरगंथविमुक्काणं आयपरोभयतातीणं एयं नाम जं उवरि एयंमि अज्झयणे भण्णिहिति एयं जेसिमणाइण्णं, अणाइण्णं णाम अकप्पणिज्जंति वुत्तं भवइ, अणाइण्णग्गहणेण जमेतं अतीतकालग्गहणं करेइ तं आयपरोभयतातीणं कीरइ, किं कारणं?, जइ ताव अम्ह पुव्वपुरिसेहिं अणातिण्णं तं कहमम्हे आयरिस्सामोत्ति?, निग्गंथग्गहणेण साहूण णिद्देसो कओ, महान्मोक्षोऽभिधीयते, महत्पूर्वः 'इषु इच्छायां' धातुः. महांतं एषितुं शीलं येषां 'सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छील्ये' (पा. ३ २-२८) इति णिनि प्रत्ययः, उपपदसमासे अनुबन्धलोपः, उपधागुणः ' वृद्धिरेची ' ति (पा. ५-१-८८) वृद्धिः, ते महैषिणो, मग्गणंति वा एसणंति वा एगट्ठा, तेषां महैषिणां एतत्सर्वमनाचीर्णं यदित ऊर्ध्वमनुक्रमिष्यामो, आह च—

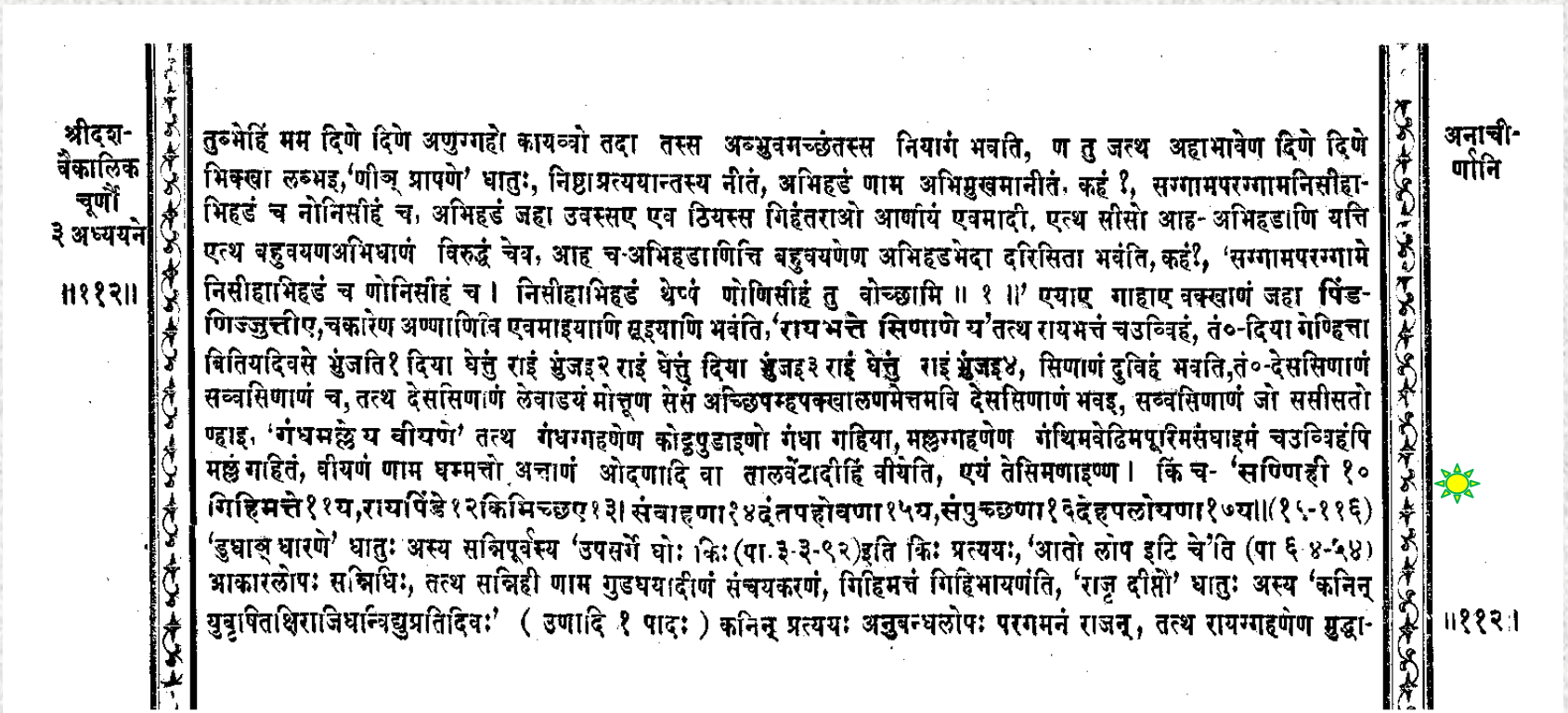
उद्देसियं१कीयगडं२,णियागं३अभिहडाणि४य।रायभत्ते५सिणाणे६थ,गंध७मल्ले८य वीयणे९॥(१८ ११६)उद्दिस्स कज्जइ तं उद्देसियं, साधुनिमित्तं आरंभोत्ति वुत्तं भवति, 'डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये' धातुः अस्य तुमुप्रत्ययः अनुबंधलोपः गुणः क्रेतुम् अन्यसत्कं यत्क्रेतुं दीयते क्रीतकृतं, नियागं नाम नियत्ति वुत्तं भवति, तं तु यदा आयरेण आमंतिओ भवइ, जहा भगवं !

*** अत्र औदेशिक-आदि दोषाणां वर्णनं क्रियते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१७-३१||

दीप अनुक्रम [१७-३१]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ३ अध्ययने ॥११२॥

तुब्भेहिं मम दिणे दिणे अणुग्गहो कायव्वो तदा तस्स अब्भुवगच्छंतस्स नियागं भवति, ण तु जत्थ अहाभावेण दिणे दिणे भिक्खा लब्भइ,'णीञ् प्रापणे' धातुः, निष्ठाप्रत्ययान्तस्य नीतं, अभिहडं णाम अभिमुखमानीतं. कहं ?, सग्गामपरग्गामनिसीहा-भिहडं च नोनिसीहं च, अभिहडं जहा उवस्सए एव ठियस्स गिहंतराओ आणीयं एवमादी, एत्थ सीसो आह- अभिहडाणि यत्ति एत्थ बहुवयणअभिधाणं विरुद्धं चेव, आह च-अभिहडाणित्ति बहुवयणेण अभिहडभेदा दरिसिता भवंति, कहं?, 'सग्गामपरग्गामे निसीहाभिहडं च णोनिसीहं च। निसीहाभिहडं थेरट्ठं णोणिसीहं तु वोच्छामि ॥ १ ॥' एयाए गाहाए वक्खाणं जहा पिंड-णिज्जुत्तीए,चकारेण अण्णाणिवि एवमाइयाणि सूइयाणि भवंति,'रायभत्ते सिणाणे य'तत्थ रायभत्तं चउव्विहं, तं०-दिया गेण्हित्ता बितियदिवसे भुंजति१ दिया घेत्तुं राइं भुंजइ२ राइं घेत्तुं दिया भुंजइ३ राइं घेत्तुं राइं भुंजइ४, सिणाणं दुविहं भवति,तं०-देससिणाणं सव्वसिणाणं च, तत्थ देससिणाणं लेवाडयं मोत्तूण सेसं अच्छिपम्हपक्खालणमेत्तमवि देससिणाणं भवइ, सव्वसिणाणं जो ससीसतो ण्हाइ, 'गंधमल्ले य वीयणे' तत्थ गंधग्गहणेण कोट्ठपुडाइणो गंधा गहिया, मल्लग्गहणेण गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमं चउव्विहंपि मल्लं गहितं, वीयणं णाम धम्मत्तो अत्ताणं ओदणादि वा तालवेंटादीहिं वीयेति, एयं तेसिमणाइण्णं। किं च- 'सण्णिही १० गिहिमत्ते११य,रायपिंडे१२किमिच्छए१३। संबाहणा१४दंतपहोवणा१५य,संपुच्छणा१६देहपलोयणा१७या॥(१५-११६) 'डुधाञ् धारणे' धातुः अस्य सन्निपूर्वस्य 'उपसर्गे घोः किः(पा.३-३-९२)इति किः प्रत्ययः, 'आतो लोप इटि चे'ति (पा ६ ४-६४) आकारलोपः सन्निधिः, तत्थ सन्निही णाम गुडघयादीणं संचयकरणं, गिहिमत्तं गिहिभायणंति, 'राजृ दीप्तौ' धातुः अस्य 'कनिन् युवृषितक्षिराजिधन्विद्युप्रतिदिवः' (उणादि १ पादः) कनिन् प्रत्ययः अनुबन्धलोपः परगमनं राजन्, तत्थ रायग्गहणेण मुद्धा-

अनाचीर्णानि

॥११२॥

*** अत्र संनिधि आदि दोषाणां वर्णनं क्रियते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१७-३१॥

दीप अनुक्रम [१७-३१]

भिसित्तरण्णो गहणं, 'पिडि संघाते' धातुः 'इदितो नुम्' प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः पिंडः राजपिंडः, सो य किमिच्छतो जति भवति, किमिच्छिओ नाम राया किर पिंडं देंतो गेण्हंतस्स इच्छियं दलेइ, अतो सो रायपिंडो गेहिपडिसेहणत्थं एसणारक्खणत्थं च न कप्पइ, संवाहणा नाम चउव्विहा भवति, तंजहा--अट्ठिसुहा मंससुहा तयासुहा रोमसुहा, एवं संवाहणं सयं न करेइ परेणं न कारवेइ करें तंपि अन्नं न समणुजाणामि(इ) दंतपहोयणं णाम दंताण कट्ठोदगादीहिं पक्खालणं, संपुच्छणा णाम अप्पणो अंगावयवाणि आपुच्छ-माणो परं पुच्छइ, पलोयणा नाम (अट्ठागे रूवनिरिक्खणं 'अट्ठावयं' गाहा (२०-११६) अट्ठावयं) जूयं भण्णइ, १८ नालियाए पासाओ छोढूण पाणिज्जंति, मा किर सिक्खागुणेण इच्छंतिए कोई पाडेहिति१९, छत्तं नाम वासायवनिवारणं तं अकारणे धरिउं न कप्पइ, कारणेण पुण कप्पति२०,तिगिच्छा णाम रोगपडिकम्मं करेइ२१,उवाहणाओ लोगसिद्धाओ चेव,सीसो आह—पाहणागहणेण चेव नज्जइ-जातो पाहणाओ ताओ पाएसु भवंति, ण पुण ताओ गलए आविधिज्जंति,ता किमत्थं पायग्गहणंति,आयरिओ भणइ-पायग्गहणेण अकल्लसरीरस्स गहणं कयं भवइ, दुब्बलपाओ चक्खुदुब्बलो वा उवाहणाओ आविंधेज्जा ण दोसो भवइत्ति, किंच-पादग्गहणेणं एतं दंसेति-परिग्गहिया उवाहणाओ असमत्थेण पओयणे उप्पण्णे पाएसु कायव्वा, ण उण सेसकालं २२, जोई अग्गी भण्णइ, तस्स अग्गिणो जं समारम्भणं, एतमवि तेसिमणाइण्णं २३। किंच-

'सिज्जातरपिंडं च' सिलोगो (२१-११६) 'शीङ् स्वप्ने' धातुः, क्यप्प्रत्ययान्तस्य शय्या, आश्रयोऽभिधीयते, तेण उ तस्स य दाणेण साहूणं संसारं तरतीति सेज्जातरो तस्स पिंडो, भिक्खत्ति वुत्तं भवइ२४, आसंदिग्गहणेणं आसंदगस्स गहणं कयं, सो य लोगे पसिद्धो२५,पलियंको पल्लंको भण्णइ, सोवि लोगे पसिद्धो चेव२६, अहवा एतं सुत्तं एवं पढिज्जइ 'सिज्जातरपिंडं च

॥११३॥

***अत्र शय्यातर-पिण्डस्य वर्णनं क्रियते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१७-३१||

दीप अनुक्रम [१७-३१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ३ अध्ययने ॥११४॥

आसन्नं परिवज्जए' सेज्जातरापिंडं च, एतेण चेव सिद्धे जं पुणो आसन्नग्गहणं करेइ तं जाणिवि तस्स गिहाणि सत्त अणंतरासण्णाणि ताणिवि सेज्जातरतुल्लाणि दट्ठव्वाणि, तेहिंतोवि परओ अन्नाणि सत्त वज्जेयव्वाणि, 'गिहंतरनिसेज्जा य' त्ति गिहं चेव गिहंतरं तंमि गिहे निसेज्जा न कप्पइ, निसेज्जा णाम जंमि निसत्थो अच्छइ, अहवा दोण्हं अंतरे, एत्थ गोचरग्गगतस्स णिसेज्जा ण कप्पइ, चकारग्गहणेण निवेसणवाडगादि सूइया, गोयरग्गगतेण न णिसियव्वंति २७, गातं णाम सरीरं भण्णइ, तस्स उव्वट्टणं ण कप्पइ, एतमवि तेसिमणाइण्णं २८। किं च-

' गिहिणो वेयावडियं ' सिलोगो (२२-११६) तत्थ गिहिवेयावडियं जं गिहीण अण्णपाणादीहिं विसूरंताण विसंविभागकरणं, एयं वेयावडियं भण्णइ २९, आजीवविचित्ता नाम पंचविधा भवइ, तं० 'जाती कुल गण कम्मे सिप्पे आजीवणा उ पंचविहा ' एताए गाहाए वक्खाणं जहा पिंडनिज्जुत्तीए ३०, 'तत्तानिव्वुडभोइ [य] त्तं' तत्तं पाणीयं तं पुणो सीतलीभूतमनिव्वुडं भण्णइ, तं च न गिण्हे, रत्तिं पज्जुसियं सचित्तीभवइ, हेमंतवासासु पुव्वण्हे कयं अवरण्हे सचित्तीभवति, एवं सचित्तं जो भुंजइ सो तत्तानिव्वुडभोई भवइ, अहवा तत्तमवि जाहे तिण्णि वाराणि न उव्वत्तं भवइ ताहे तं अनिव्वुडं, सचित्तंति वुत्तं भवइ, जो अपरिणयंपि भुंजइ सो तत्ताणिव्वुडभोइत्ति ३१, 'आउरस्सरणाणि य' आउरीभूतस्स पुव्वभुत्ताणुसरणं, अहवा सत्तुहिं अभिभूतस्स सरणं देइ, सरणंणाम उवस्सए ठाणंति वुत्तं भवइ, तत्थ उवस्सए ठाणं देंतस्स अहिकरणदोसो भवति सो वा तस्स सत्तु पओसमावज्जेज्जा, अहवा आउरसरणाणित्ति आरोग्यसालाओ भण्णंति, तत्थ न कप्पइ गिलाणस्स पविसिउं, एतमवि तेसिं अणाइण्णं ३२। 'मूलए सिंगबेरे य उच्छुखंडे अनिव्वुडे' सिलोगो(२३-११६)मूलओ लोगपसिद्धो ३३सिंगबेरं अल्लगं ३४, एताणि

अनाचीर्णानि

॥११४॥

*** अत्र गृहस्थ-वैयावच्च वर्णयते

***अथ अन्य अनाचिर्णानि वर्णयते

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१७-३१||

दीप अनुक्रम [१७-३१]

अनिव्वुडाणि ण कप्पंति,उच्छुखंडमवि दोसु पोरेसु वट्टमाणेसु अनिव्वुडं भवइ,निव्वुडं पुण जीवविप्पजढं भण्णइ, जहा निव्वातो जीवो, पसंतोत्तिवुत्तं भवइ३५, कंदा३६ मूलावि३७ जे अपरिणया ते ण कप्पंति, फला तयुसाइणो३८ बीजा गोधूमतिलादिणो,३९ एयमवि तेसिं परिभोत्तुं अणाइण्णं ।[*]च 'सोवच्चले सिंधवेलोणे' सिलोगो (२४-११६) सोवच्चलं नाम सेंधवलोणपव्वयस्स अंतरंतरेसु लोणखाणीओ भवति४०, सेंधवं नाम सिंधवलोणपव्वए तत्थ सिंधवलोणं भवइ४१, रुमालोणं रुमाविसए भवइ४२, समुद्दलोणं समुद्दपाणीयं तं खड्डीए निग्गंतूण रिणभूमीए आरिज्जमाणं लोणं भवइ४३, पंसुखारो ऊसो भण्णइ४४, कालालोणं नाम तस्सेव सेंधवपव्वयस्स अंतरंतरेसु काला लोणखाणीओ भवति, आमगं भवति असत्थपरिणयं, एतमवि तेसिमणाइण्णं४५। किंच—'धूवणेत्ति वमणे य' सिलोगो (२५-११६) तत्थ धूवणेत्ति नाम आरोग्यपडिकम्मं करेइ धूमंपि, इमाए सोगाइणो न भविस्संति, अहवा अन्नं वत्थाणि वा धूवेइ४६, वमणं लोगपसिद्धं चेव४७, वत्थीकम्मं नाम वत्थी दइओ भण्णइ, तेण दइएण घयाईणि अधिट्ठाणे दिज्जंति४८, विरेयणं लोगपसिद्धं चेव४९, एयाणि आरोग्गपरिकम्मनिमित्तं वा ण कप्पइ, अंजणे दन्तवणे य गायब्भंगविभूसणाणि लोगपसिद्धाणि चेव,५०[*] तेसिमेयमणाइण्णं 'तेसिमेयमणाइण्णं निग्गंथाण महेसिणं' २६-११६) तेसिमेयमणाइण्णामिति जं हेट्ठा उद्देसियाओ आरब्भ जाव गायब्भंगविभूसणेति अणाइण्णमेतं निग्गंथाण महेसिणं , ' संजमं अणुपालंता लहुभूयविहारिणो ' । संजमो पुव्वभणिओ, अणुपालयंति णाम तं संजमं रक्खयंति, भूता णाम तुल्ला, लहुभूतो लहु वाऊ तेण तुल्लो विहारो जेसिं ते लहुभूतविहारिणो, वाउरिव अप्पडिबद्धा विहरंति ।[*] 'पंचासवपरिण्णाया ' सिलोगो (२७-११८) 'श्रु गतौ' धातुः श्रवतीति अच्प्रत्ययः आश्रवः, 'पंच'त्ति संखा,आसवगहणेण हिंसाईणि पंच कम्मरसासव-

[*]

॥११५॥

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||१७-३१||

दीप अनुक्रम [१७-३१]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

दाराणि गहियाणि,ताणि दुविहपरिण्णाए परिण्णाताणि,जाणणापरिण्णाए पच्चक्खाणपरिण्णाए य ते पंचासवा परिण्णाया भवंति, तत्थ जाणणापरिण्णा णाम जो जं किंचि अत्थं जाणइ सा तस्स जाणणापरिण्णा भवति, जहा पडं जाणंतस्स पडपरिण्णा भवति, घडं जाणंतस्स घडपरिण्णा भवति, लोगेवि दिट्ठं- अहं भवंतं परिजाणामि, ण ताव भवं परिजाणसि, एसा जाणणापरिण्णा, पच्चक्खाणपरिण्णा नाम पावं कम्मं जाणिऊण तस्स पावस्स जं अकरणं सा पच्चक्खाणपरिण्णा भवति, किंच-तेण चेवक्केण पावं कम्मं अप्पा य परिण्णाओ भवइ जो पावं नाऊण न करेइ, जो पुण जाणित्तावि पावं आयरइ तेण निच्छयवत्तव्वयाए पावं न परिण्णायं भवइ, कहं ?, सो बालो इव अआणओ दट्ठव्वो, जहा बालो अहियं अयाणमाणो अहिए पवत्तमाणो एगंतेणेव अयाणओ भवइ तहा सोवि पावं जाणिऊण ताओ पावाओ न णियत्तइ तंमि पावे अभिरमइ, तिगुत्तो नाम 'गुपू रक्षणे' धातुः निष्ठाप्रत्ययः गुप्तं, तिविहेण मणवयणकायजोगे सम्मं निग्गहपरमा, छसु संजया णाम छसु पुढविक्कायाइसु सोहणेणं पगारेणं जता संजता, पंचणिग्गहणा णाम पंचण्हं इंदियाणं निग्गहणता, धीरा णाम धीरत्ति वा सूरेत्ति वा एगट्ठा, निग्गंथा उज्जु-संजमो भण्णइ तमेव एगं पासंतीति तेण उज्जुदंसिणो, अहवा उज्जुत्ति समं भण्णइ, सममप्पाणं परं च पासंतीत्ति उज्जुदंसिणो, ते एवंगुणजुत्ता काले इमं तवविसेसं कुव्वंति, तं आयावयंति गिम्हेसु' सिलोगो, (२८-११८) गिम्हेसु उड्ढबाहुउक्कुडुगासणाईहिं आयावेंति, जेवि न आयावेंति ते अण्णं तवविसेसं कुव्वंति, हेमंते पुण अपंगुला पडिमं ठायंति, जेवि सिसिरे णावगुंडिता पडिमं ठायंति तेवि विधीए पाउणंति, वासासु पडिसंलीणा नाम आश्रयस्थिता इत्यर्थः, तवविसेसेसु उज्जमंती, नो गामनगराइसु विहरंति, संजतगहणेण साधुत्ति वुत्तं भवति, सुसमाहिया नाम नाणे दंसणे चरित्ते य सुट्ठु आहिया सुसमाहिया किंच-'परीसहरिवु-

॥११६॥

*** अत्र संयतस्य स्वरूपम् एवं फ़लम् वर्णयते

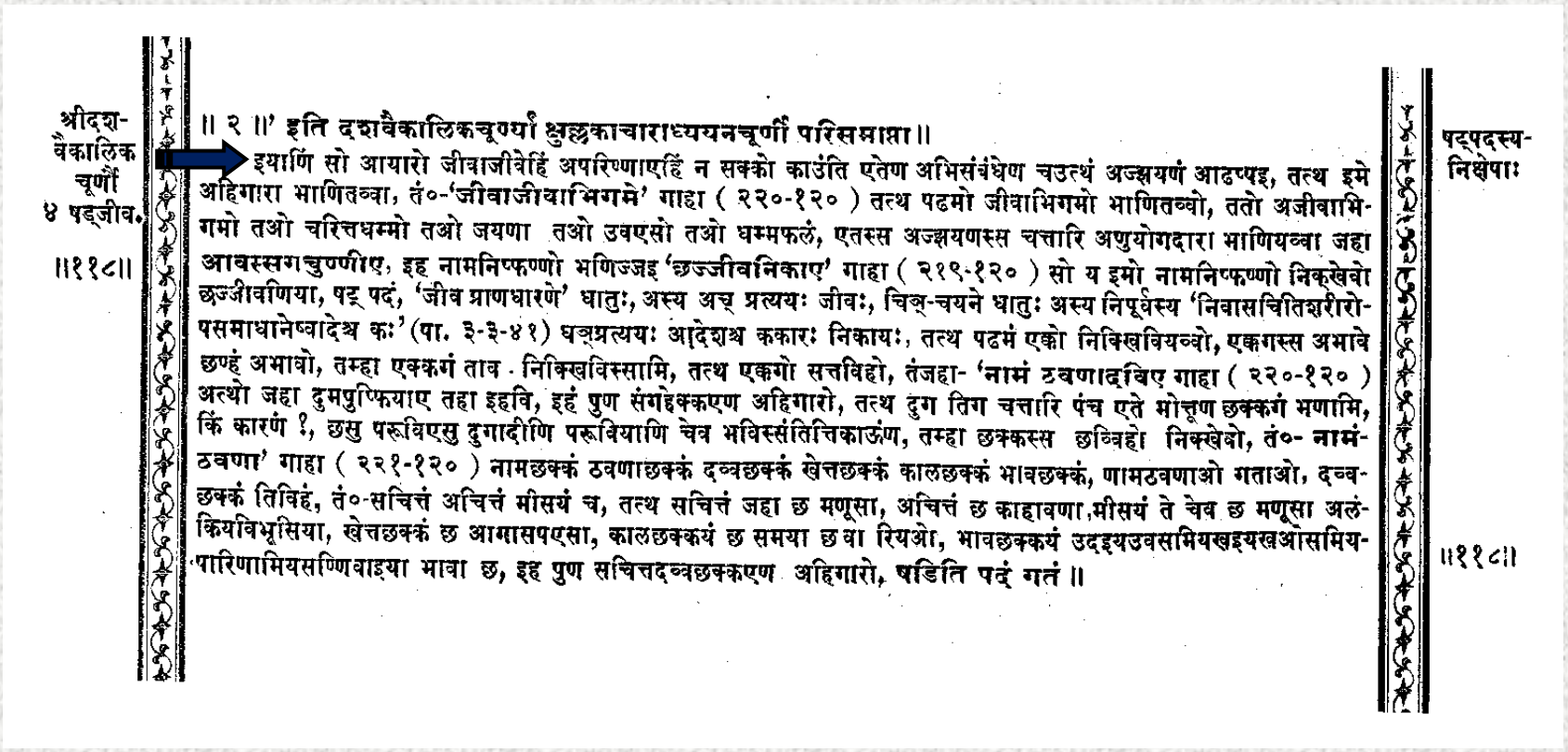
प्रत सूत्रांक [-] गाथा ॥१७-३१॥

दीप अनुक्रम [१७-३१]

दन्ता' (२९-११८) परीसहा बावीसं 'सह मर्षणे' धातुः,अस्य परिपूर्वस्य अच्प्रत्ययः, परीषहा,ते परीषहा रिपवो भण्णंति, ते जेहिं दमिता ते परीसहरिवुदन्ता, धुयमोहा नाम जितमोहत्तिवुत्तं भवइ, जितिंदिया णाम जिताणि इंदियाणि-सोत्ताईणि जेहिं ते जिइंदिया, सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा नाम सव्वेसिं सारीरमाणसाणं दुक्खाणं पहाणाय, खमणानिमित्तंति वुत्तं भवइ, परक्कमंति विविहेहिं पगारेहिं परक्कम्मंतित्ति वुत्तं भवइ। इदाणिं एवं तेसिं जतंताण जं फलं तं भन्नइ-'दुक्करइं करेत्ताणं' सिलोगो, (२०-११८) 'डुकृञ् करणे' धातुः दुरुपूर्वस्य अस्य 'ईषत्सुदुष्षु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् (पा. ३-३-१२६) प्रत्ययः दुक्कराणि, त एवं परक्कम्म दुक्कराणि आतापनाअकंडूयनाक्रोशतर्जनाताडनाधिसहनादीनि, दूसहाइं सहिउं केइ सोहंमाईहिं वेमाणिएहिं उप्पज्जंति, केइ पुण तेण भवग्गहणेण सिज्झंति, णीरया नाम अट्ठकम्मपगडीविमुक्का भण्णंति, तत्थ जे तेणेव भवग्गहणेण न सिज्झंति ते वेमाणिएसु उववज्जंति, तत्तोवि य चइऊणं धम्मचरणकाले पुव्वकयसावसेसेणं सुकुलेसु पच्चायायंति, तओ पुणोवि जिणपण्णत्तं धम्मं पडिवज्जिऊण जहण्णेण एगेण भवग्गहणेणं उक्कोसेणं सत्तहिं भवग्गहणेहिं-खवेत्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य । सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुडेत्ति (३१-११८) जाणि तेसिं तत्थ सावसेसाणि कम्माणि ताणि संजमतवेहिं खविऊणं सिद्धिमग्गमणुपत्ता नाम जहा ते तवनियमेहिं कम्मखवणट्ठमब्भुज्जुत्ता अओ ते सिद्धिमग्गमणुपत्ता भण्णंति, तायंतीति तायिणो, परिनिव्वुडा नाम जाइजरामरणरोगादीहिं सव्वप्पगारेणवि विप्पमुक्कत्ति वुत्तं भवइ, बेमिनाम नाहमात्मीयेनाभिप्रायेण, किं तर्हि?, तीर्थकरोपदेशाद् ब्रवीमि ॥ इयाणिं नया व्याख्यायंते 'णायंमि गिण्हियव्वे अगेण्हिअव्वंमि चेव अत्थंमि। जइतव्वमेव इति जो उवएसो सो नयो नाम ॥ १ ॥ सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं निसामेत्ता। तं सव्वनयविसुद्धं जं चरणगुणट्ठिओ साहू

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ षड्जीव. ॥११८॥

॥ २ ॥' इति दशवैकालिकचूर्ण्यां क्षुल्लकाचाराध्ययनचूर्णी परिसमाप्ता ॥

इयाणिं सो आयारो जीवाजीवेहिं अपरिण्णाएहिं न सक्को काउंति एतेण अभिसंबंधेण चउत्थं अज्झयणं आढप्पइ, तत्थ इमे अहिगारा भाणितव्वा, तं०-'जीवाजीवाभिगमे' गाहा (२२०-१२०) तत्थ पढमो जीवाभिगमो भाणितव्वो, ततो अजीवाभिगमो तओ चरित्तधम्मो तओ जयणा तओ उवएसो तओ धम्मफलं, एतस्स अज्झयणस्स चत्तारि अणुयोगदारा भाणियव्वा जहा आवस्सगचुण्णीए, इह नामनिप्फण्णो भणिज्जइ 'छज्जीवनिकाए' गाहा (२१९-१२०) सो य इमो नामनिप्फण्णो निक्खेवो छज्जीवणिया, षट् पदं, 'जीव प्राणधारणे' धातुः, अस्य अच् प्रत्ययः जीवः, चिञ्-चयने धातुः अस्य निपूर्वस्य 'निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः' (पा. ३-३-४१) घञ्प्रत्ययः आदेशश्च ककारः निकायः, तत्थ पढमं एक्को निक्खिवियव्वो, एक्कगस्स अभावे छण्हं अभावो, तम्हा एक्कगं ताव निक्खिविस्सामि, तत्थ एक्कगो सत्तविहो, तंजहा- 'नामं ठवणादविए गाहा (२२०-१२०) अत्थो जहा दुमपुप्फियाए तहा इहवि, इहं पुण संगहेक्कएण अहिगारो, तत्थ दुग तिग चत्तारि पंच एते मोत्तूण छक्कगं भणामि, किं कारणं ?, छसु परूविएसु दुगादीणि परूवियाणि चेव भविस्संतित्तिकाऊंण, तम्हा छक्कस्स छव्विहो निक्खेवो, तं०- नामं-ठवणा' गाहा (२२१-१२०) नामछक्कं ठवणाछक्कं दव्वछक्कं खेत्तछक्कं कालछक्कं भावछक्कं, णामठवणाओ गताओ, दव्वछक्कं तिविहं, तं०-सचित्तं अचित्तं मीसयं च, तत्थ सचित्तं जहा छ मणूसा, अचित्तं छ काहावणा,मीसयं ते चेव छ मणूसा अलंकियविभूसिया, खेत्तछक्कं छ आगासपएसा, कालछक्कयं छ समया छ वा रियओ, भावछक्कयं उदइयउवसमियखइयखओवसमिय-पारिणामियसण्णिवाइया भावा छ, इह पुण सचित्तदव्वछक्कएण अहिगारो, षडिति पदं गतं ॥

षट्पदस्य-निक्षेपाः

॥११८॥

अध्ययनं -३- परिसमाप्तं **अध्ययनं -४- ‘षड् जीवनिकाय’ आरभ्यते**

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ पड्जीव- ॥११९॥

इयाणिं जीवपदमाभिधीयते- तस्स इमाओ दो दारगाहा– 'जीवस्स उ णिक्खेवो' गाहा (२२२-१२१) 'गति उद्धगतित्ते या' गाहा (२२३-१२१) तत्थ पदमं दारं जीवस्स निक्खेवो, सो य इमो— 'णामं ठवणा' अद्धगाहा (२२४-१२१) णामंठवणाओ गयाओ, तत्थ दव्वजीवो जस्स अजीवदव्वस्स जीवदव्वत्तणेणं परिणामो भविस्सइ, ण ताव भवति, एस पुण भावो चेव णत्थि, अहवा जे जीवदव्वस्स पज्जया ते ताओ जीवाओ बुद्धीए पिहोकाऊणं एगं केवलं जीवदव्वं जीवपज्जवेहिं विहीणं भविस्सइ, दव्वजीवो गओ ॥ इयाणिं भावजीवो, जीवदव्वं पज्जवसहियं भावजीवो भवति, अहवा भावजीवो तिविहो भवइ, 'ओहभवग्गहणंमि' गाहा पच्छद्धं, तत्थ ओहजीवो णाम 'संते आउयकम्मे' गाहा (भा.७-१२१) 'संते आउयकम्मे' नाम आउयकम्मे दव्वे विज्जमाणे जाव ते आउय-कम्मपोग्गला सव्वहा अपरिखीणा ताव चाउरंते संसारे धरइ, न मरइत्तिवुत्तं भवइ, तस्सेव य आउगस्स कम्मस्स जया उदओ भवइ तया ओहजीवत्तणं भण्णइ, जया ण तं आउयकम्मं निरवसेसं खीणं भवइ तदा सिद्धो भवइ, जया य सिद्धत्तणं पत्तो तदा सव्वनयाणं हि ओहजीवियं पडुच्च उ मओ भण्णइ, एतेण कारणेणं सव्वजीवा आउगसब्भावताए जीवंति, एवं ओहओ जीवंति। इयाणिं भवजीवियंति,भवजीवियंति एगाए गाहाए भण्णइ-'जेण य धरइ भवगओ'गाहा (भा.८-१२२) जस्स उदएण जीवो नर-गतिरियमणुयदेवभवेसु धरइ, जीवइत्ति वुत्तं भवइ, जस्स उदएण भवाओ भवं गच्छइ एयं भवजीवियं भण्णइ ॥ इयाणिं तब्भ-वजीवियं, तं दुविहं तिरियाणं मणुयाणं च भवइ, अह जेण तिरिया मणुया सट्ठाणाओ उव्वट्टा समाणा पुणो तत्थेव उववज्जंति जाव य ते तत्थेव पुणरवि उववज्जंति ताव तब्भवजीवियं भण्णइ, तब्भवजीवियं गतं,निक्खेवो य त्ति दारं गतं ॥ इयाणिं परूवणा

जीवपद-निक्षेपाः

॥११९॥

*** अत्र 'जीव' पदस्य निक्षेपा: कथयते

भण्णइ-'दुविधा य होंति जीवा' गाहा, सुहुमा बादरा य, तत्थ सुहुमा सव्वलोगे परियावण्णा णायव्वा, बायरा पुण दुविहा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य,परूवणेति दारं गतं ॥ इयाणिं लक्खणेत्ति दारं,लक्खणं नाम जेण जीवो पच्चक्खमणुवलब्भमाणोवि णज्जइ जहा अत्थित्ति तं लक्खणं भण्णइ,तं च लक्खणं इमाहिं दोहिं गाहाहिमणुगंतव्वं, तंजहा ' आदाणे परिभोगे ' गाथा (२२५-१२३) ' चित्तं चेयण सन्ना ' गाहा (२२६-१२३) तत्थ पढमं आयाणेत्ति दारं, जहा अग्गिणो दहणादीणि लक्खणाणि एवं जीवस्सवि आदाणं, आदाणं णाम गहणं, जहा संडासएण आदाणेण लोहकारो आदेयं लोहपिंडं गेण्हइ, एवं जीवो संडासत्थाणिएहिं सोइंदियाइएहिं पंचहिं इंदिएहिं लोहपिंडत्थाणीया सद्दरूवरसगंधफासे गेण्हइ, नासदात्मा आदानेनादेयग्रहणसामर्थ्ययुक्तत्वाद् अयस्कारादिवत्, आदानेत्ति दारं गतं ॥ इदाणिं परिभोगेत्ति दारं, परिभोगेण नज्जइ जहा अत्थि जीवो, कहं ?, जम्हा सद्दाइणो पंच विसया जीवो परिभुंजअइ णो अजीवो, एत्थ दिट्ठंतो ओदणवड्ढियजं, जहा ओदणवड्ढियाओ भोत्ता अण्णो अत्थंतरभूओ, एवं सरीराओ अत्थंतरभूतेन अण्णेण भोत्तारेण भवियव्वं, सो य जीवो सद्दादीणं उवभुंजओत्ति, विज्जमानभोक्तृकमिदं सरीरं भोग्यत्वात् ओदनवड्ढीतकवत्, परिभोगेत्ति दारं ॥ इदाणिं जोगेत्ति दारं, सो तिविधो-मणजोगो वयजोगो कायजोगो, सो तस्स तिविहस्सवि जोगस्स जीवो णायगोत्ति, अन्यप्रयोक्तृका मनोवाकाययोगाः करणत्वात्परश्वादिवत्, जोगेत्ति दारं गतं ॥ इदाणिं उवयोगेत्ति दारं, सो य जीवोत्ति दारं, नाणंति दारं, नाणंति वा उवयोगेति वा एगट्ठा, सुहदुक्खोवयोगं निचकालमेवोवउत्तो, उवयोगो लक्षणं जीवस्येति, नासदात्मा स्वलक्षणापरित्यागादग्निवत्, उवयोगेत्ति दारं गतं ॥ तहा इयाणिं कसायलक्खणं जीवस्स भण्णइ, जहा सुवण्णदव्वस्स कडगकुंडलाईणि लक्खणाणि भवंति तहा जीवस्स को-

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ षड्जीव. ॥१२१॥

हाइपरियाया लक्खणं भवंति, किं कारणं ?, जम्हा अचेयणाणं घडपडमादीणं कोहादीणो कसाया ण भवंति, जीवस्सेव भवंति, तम्हा सिद्धं कसायलक्खणं जीवस्स, कसायओत्ति वा भावोत्ति वा परियाओत्ति वा एगट्ठा, नासदात्मा पर्यायात्पर्यायान्तरगमनसद्भावात् सुवर्णद्रव्यवत्, कसायेत्ति दारं गतं ॥ इदाणिं जीवस्स लेसालक्खणं भण्णइ, लेसा नाम परिणामविसेसो भण्णइ, जहा धासमे जीवघाए अण्णो अत्ताणं णिंदंतो घाएति,अण्णो हरिसं वच्चमाणो घाएइ,एरिसा परिणामविसेसा जीवस्सेव भवंति, नो अजीवस्स, नासदात्माऽन्यस्मादन्येन परिणामेन सद्भावात् क्षीरद्रव्यवत्, लेस्सत्ति दारं गतं ॥ इदाणिं आणपाणू दोन्नि समयं भण्णंति, तत्थ आणू उस्सासो भण्णइ, पाणू णीसासो, एते जम्हा जीवस्स दीसंति, अजीवस्स न, तम्हा ते जीवलक्खणं, आणापाणुत्ति दारं गतं । इदाणिं इंदियलक्खणं जीवस्स भण्णइ, इंदियाणि जीवस्स भवंति, नो अजीवस्स, तम्हा ताणि जीवस्स लक्खणं भवंति, सीसो आह--ननु आयाणग्गहणेणं एसेव अत्थो भणिओ, आयरिओ भणइ-जहा वासीए जा संठाणनिव्वत्ती भण्णइ, जहा वा रुक्खाइछेदणसमत्था सा उवकरणं भण्णइ, एवं तत्थ सद्दाइविसयग्गहणसमत्थाणि कलंबुयापुप्फसंठाणमादीणि उवकरणाणि गहियाणि, इह पुण कण्णचक्खुफासजीहाघाणिंदियाण निव्वत्तणा भणिया, परार्थाण्येतानींद्रियाणि करणत्वात्संदंशकादिवत्, इंदियत्ति दारं गतं ॥ इदाणिं कम्मबन्धो कम्मोदयो कम्मनिज्जरा य तिण्णिवि समयं चेव जीवलक्खणाणि भण्णंति, जहा आहारो आहारिओ सरीरेण सह संबंधं गच्छइ, पुणो य तेण पगारेणं बलादिणा उदिज्जंति, कालांतरेण य णिज्जिण्णो भवइ,एवं जीवोवि विसयकसाय(जुत्त)त्तणेण कम्मं बंधइ कंमस्स उदओ भवइ, जं पुण वेदितं भवइ सा निज्जरणा, विज्जमानभोक्तृकामिदं शरीरं कर्मग्रहणवेदनानिर्जरणस्वभावादाहारवत्, बंधोदयनिर्जरेत्ति दारं गतं, पढमाए गाहाए अत्थो

आनप्राणादीनि द्वाराणि

॥१२१॥

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

भणिओ। इयाणिं बितियाए गाहाए अत्थो भण्णइ, तत्थ पढमं चित्तंति दारं, चित्तं (नाम मणो तं जीवस्स लक्खणं) चेयणा नाम वट्टमाणे काले घडोत्ति जहा एरिसो घडोत्ति, एवमायि चेयणा, संजाणतीति सण्णा, जं पुव्वण्हे गाविं दट्ठूण अवरण्हे पुणो पच्चभिजाणइ जहा सा चेव एसा गावित्ति, अहवा आहारसण्णादि चउव्विहा सण्णात्ति, जीवलक्खणं विविहेहिं पगारेहिं जेण णज्जइ तं विण्णाणं, धारणा नाम जो सत्थं अज्झाइऊणं सुचिरं कालं धरेइ, एवमादि धारणा, बुद्धी नाम अप्पणो बुद्धिसामत्थेणं अत्थे उव्वेलइ सा बुद्धी, ईहा नाम किमेसो पुरिसो खाणु वत्ति पुरिसलक्खणाणि खाणुलक्खणाणि य ईहयति, एवमादी ईहा, मई णाम अवगमो, जहा एस पुरिसो णो खाणुत्ति एसा मती, वितक्का णाम एगमत्थं अणेगेहिं पगारेहिं तक्कयति, संभावयतित्ति वुत्तं भवति, एसो अत्थो एवमवि भवइ एवमवि अविरुद्धेत्ति, एताणि सव्वाणि जम्हा जीवस्स दीसंति तम्हा सिद्धाणि एताणि जीवस्स लक्खणाणि, चित्तचेयणसण्णाविण्णाणादयो जीवस्स गुणा, नासदात्मा गुणप्रत्यक्षत्वात् घटवत्, लक्खणेत्ति दारं गतं। इदाणिं अत्थित्तंति दारं, 'सिद्धं जीवस्स अत्थित्तं' गाहा (भा०२५-१२६) पुव्वद्धं, जीवस्स अत्थित्तं जीवसद्दाओ चेव सिज्झइ, कहं ?, असंते जीवे जीवसद्दस्सवि अभावो, पसिद्धो य सद्दो लोगे, तम्हा अत्थि जीवो जस्स एस निद्देसो जीवोत्ति, सीसो आह- खरविसाणकच्छभरोमाईणवि सद्दा लोगे पसिद्धा, ण पुण ताणि अत्थि, आयरिओ इमं गाहापच्छद्धं भणइ-'नासओ भुवि भावस्स सद्दो भवति केवलो', ण हि सव्वहा असंतस्स भावस्स लोगे केवलो सद्दो पसिद्धोत्ति, केवलो नाम सुद्धो, अण्णेण सह असंजुत्तोत्ति वुत्तं भवति, सार्थकोऽयं जीवशब्दः शुद्धपदत्वाद् घटवत्, खरविसाणकच्छभरोमसद्दा पुण न केवला उवलब्भंति, कहं ?, खरसद्दो गद्दभे वट्टइ, विसाणसद्दो गवलादिसु, कच्छभसद्दो कच्छभे, रोमसद्दो एलगाइसु, गद्दभकच्छभेसु विज्जमाणेसु णत्थित्ति संभा-

॥१२२॥

*** अत्र जीवस्य अस्तित्वं नाम द्वारम् कथयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

विज्जइ, ण पुण तहा जीवसद्दो। जोगोवयोगइच्छावितकादिलक्खणं जीवदव्वं मोत्तूण अण्णंमि कम्हि य न पसिद्धन्ति, सुण्णवादी आह- जति जीवसद्दाओ जीवस्स अत्थित्तं साहेसि, अहमवि सुण्णसद्देण सुण्णवायं साहयामि, कहं ?, सुन्नसद्दो य लोगे पसिद्धत्ति-काऊणं, तम्हा अत्थि सुन्नयंति, आयरिओ भणइ-विज्जमाणेण दव्वेण अण्णत्थगएण सुण्णंति भण्णइ, विज्जमाणस्स दव्वस्स णासो णट्ठंति भण्णति, किंच-इमेण अहिगारेण णज्जइ जहा अत्थि जीवोत्ति, 'मिच्छाभावे उ सव्वत्था' गाहा (भा० २८-१२६) जओ नत्थि जीवो तम्हा दाणधम्मब्भयसच्चबंभचेरवासादीणं नत्थि फलं, नऽवि य सुकडदुक्कडाणं कारओ वेदओ वा कोइत्ति, किंच 'इयो य जीवो अत्थि'त्ति, कहं ?,'लोगसत्थाणि'गाहा'लोइगा वेइगा चेव'(भा.३०-१२७)तत्र लौकिकास्तावदेवं ब्रुवते-'अच्छेज्जो-यमभेज्जोऽयमविकार्योऽयमुच्यते । नित्यस्सततग स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥ १ ॥ नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः ॥२॥" वैदिका अप्याहुः-"शृगालो वै एष जायते यस्सपुरीषो दह्यते, अथ सपुरीषो न दह्यते लोकस्य प्रजाः प्रादुर्भवन्ति ' समयेऽपि बुद्धेनोक्तं 'अहमासीद्भिक्षवो हस्ती,षड्दंतः शङ्खसन्निभः। शुकः पञ्जरवासी च, शकुनो जीवजीवकः ॥ १ ॥' इत्येवमादीति, कापिला अप्याहुः-'आत्माऽकर्त्ता भोक्ता निर्गुणे' त्यादि, कणादा अपि'अस्तित्वं सर्व-गतत्वमित्यादि संप्रतिपन्नाः, तस्माल्लोकवेदसमयसंप्रतिपत्तेर्मन्यामहेऽस्त्यात्मा इति, सीसो आह-सो जीवो पच्चक्खओ अणुवलब्भ-माणो कहं जाणियव्वो जहा अत्थित्ति?, आयरिओ भणइ- 'फरिसेण' गाहा (भा. ३३--२२७) जहा वाऊ पच्चक्खयो- मंसच-क्खुणा अणुवलब्भमाणोवि फरिसेण णज्जइ, एवं जीवोवि णाणदंसणाईहिं अकायगुणेहिं कायओ भिन्नो साहिज्जइ जह अत्थि, भणियं च- "उवयोगजोगइच्छाविवक्खणाणबलचेट्ठियगुणेहिं । अणुमाणा णायव्वो पच्चक्खमदीसमाणोवि ॥१॥" सीसो भणइ-

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ षड्जीव. ॥१२४॥

भगवं ! तुब्भे भणह जहा अणुमाणओ जीवो साहेतव्वो जहा अत्थित्ति, तं च अणुमाणं पच्चक्खपुव्वगं भवइ, ण य अप्पा केणइ पच्चक्खमुवलद्धपुव्वोत्ति जओ अम्हेहिं अणुमाणयो साहेयव्वोत्ति, आयरिओ भणइ-' अणिंदियगुणं ' गाहा (भा.३४-१२७) इंदियपच्चक्खेण जीवो न पच्चक्खयो उवलब्भइ, पतिण्णा, अरूवित्तणं हेऊ, दिट्ठंतो आगासं, अरूवित्तणेणं इंदियपच्चक्खेण णाणेण ण गेज्झइ, तहा जीवोत्ति, अरूवी, सव्वण्णू सिद्धा य साहूणो पासंति,तहा अरूवित्तणेण जीवो मंसचक्खुहिं पच्चक्खयो णोवलब्भति, सार्थकामिदमात्मवचनं शुद्धपदत्वाद् घटाभिधानवत्, अथवा अरूपित्वादाकाशवदिति, अत्थित्तंति दारं गतं ॥ इदाणिं अण्णत्तं अरूवित्तं निच्चत्तं च तिण्णिवि समयं इमाहिं दारगाहाहिं भण्णंति-तंजहा ' कारणविभाग ' (२२७-१२८) गाहा, ' निरामय ' गाहा, ' सव्वण्णुवदिट्ठत्ता ' गाहा (२२९-२२२)। तत्थ पढमं कारणविभागअभावोत्ति दारं, निच्चो जीवो, कहं ?, जम्हा तस्स कारणविभागस्स अभावो, जहा आगासस्स, वइधम्मो दिट्ठंतो पडो, जहा पडस्स कारणं तंतवो, ते य तंतवो जइ कोइ एगमेगं तंतुं गहाय उक्केल्लेज्जा अओ पडो अचिरेण कालेण विणासमावज्जेज्जा,एवं जीवस्स जति तंतुसरिसाणि कारणाणि होज्जा तो जहा पडो अणिच्चो तहा जीवोवि अणिच्चो होज्जा, ण य तस्स कारणविभागो अत्थि, तम्हा निच्चो जीवो, जम्हा य निच्चो तओ अरूवी सरीराओ अण्णो जाणियव्वो, नित्यः आत्मा कारणविभागाभावादाकाशवत् । इदाणिं विणासकारणाभावोत्ति दारं, कहं ?, जम्हा तस्स विणासकारणस्स अभावो जहा आगासस्स, इहं दिट्ठंतो जहा पडस्स अग्गिमादीणि विणासकारणाणि भवंति, सो य अणिच्चो, ण पुण तह जीवस्स विणासकारणाणि अत्थि, तम्हा विणासकारणअभावा निच्चो जीवो, जम्हा य निच्चो तओ अरूवी सरीराओ अण्णो, नित्य आत्मा विनाशकारणाभावादाकाशवत्, विणासकारणाभावोत्ति गतं,

अन्यत्वा-दीनि

॥१२४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ षड्जीव. ॥१२५॥

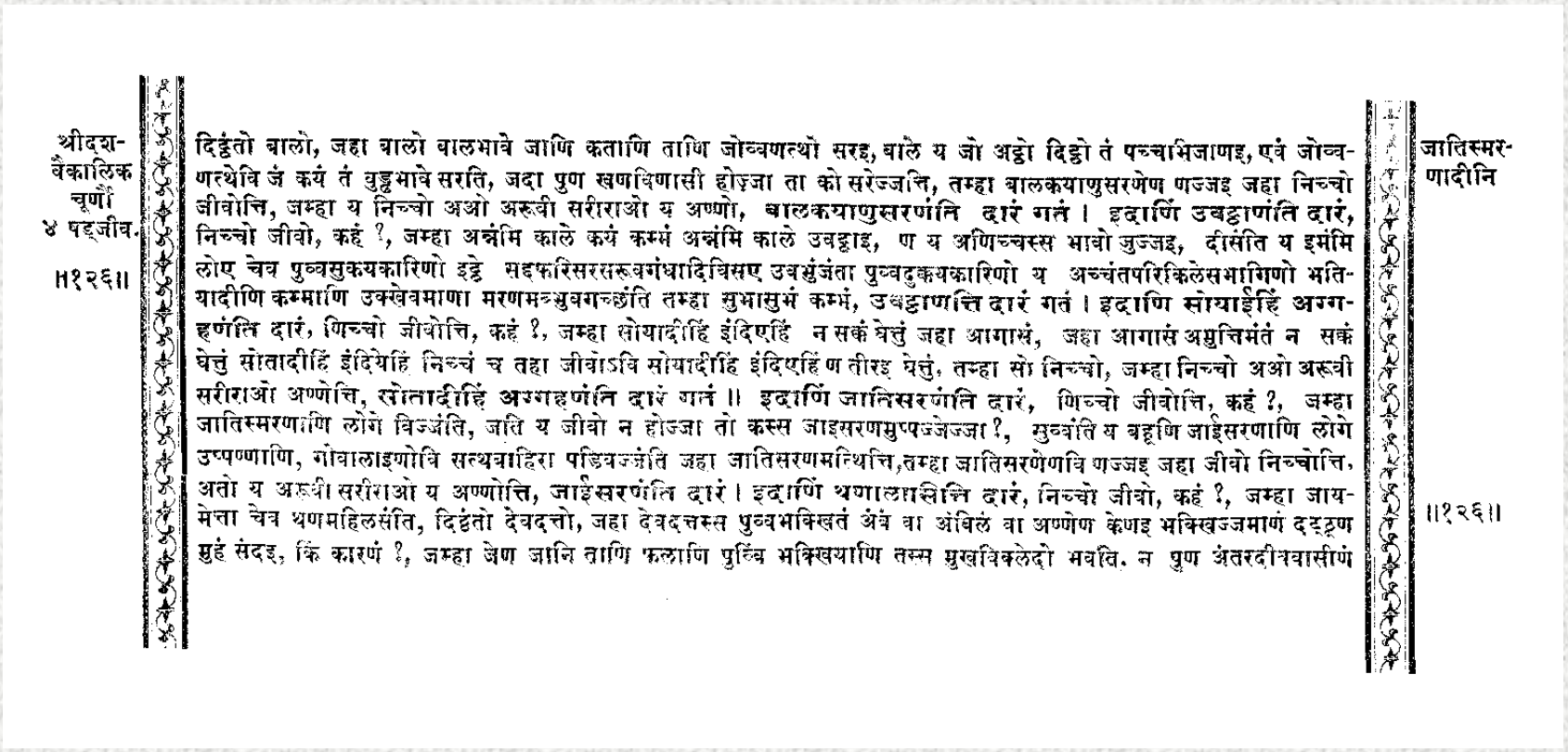
इदाणिं बंधपच्चयअभावोत्ति दारं–णिच्चो जीवो, कहं ?, बंधपच्चयाभावपसंगा जहाऽऽगासं, जम्हा खणविणट्ठस्स अभावो भवति, दिट्ठंतो घडो, जहा अविणट्ठो घडो जलादीणं आहारकिच्चं करेइ,एवं जीवो जइ निच्चो णाणखणे ण विणस्सइ तो अवत्थियस्स बंधो मोक्खो य भवइ, अणवत्थियस्स अण्णंमि खणे उप्पण्णस्स बंधपच्चयअभावो भवइ, तम्हा निच्चो जीवो, जम्हा य निच्चो अतो अरूवी सरीराओऽवि अण्णो, नित्य आत्मा बंधप्रत्ययाभावादाकाशवत्,बंधपच्चयअभावोत्ति दारं गतं। इदाणिं विरुद्धअत्थऽपाडुभावेत्ति दारं, निच्चो जीवो, कहं ?, जं विणासि दव्वं भवति तंमि विणट्ठे विरुद्धस्स पाउब्भावो दीसई, दिट्ठंतो कट्ठछाणादीणि, जहा कट्ठछाणादीणि विणासिदव्वाणि तेसिं विणासमागच्छंताणं छारइंगालाईणि विरुद्धदव्वाणि पाउब्भवंति, जहा वा घडस्स कवालाईणि विरुद्धदव्वाणि पाउब्भवंति, एवं जइ जीवस्स विणासे किंचि तारिसं विरुद्धदव्वं पाउब्भवेज्जा तो अणिच्चो होज्जत्ति, जम्हा य णिच्चो अतो अरूवी सरीराओ अण्णो, अविनाशी आत्मा विरोधिविकारासंभवादाकाशवत्, निच्चत्तंति दारं गतं ॥ नित्यः आत्मा द्रव्यामूर्त्तत्वादाकाशवत्, अरूवित्ता, अण्णत्तान्ति दारं गतं। इदाणिं विइयाए गाहाए अत्थो भण्णति, तत्थ पढमं दारं निरामयभावोत्ति, कहं ?, जम्हा निरामयो सामयो य भवति, दिट्ठंतो घडओ, जहा घडस्स विणट्ठस्स ण केणइ संजोगो भवइ, एवं जीवोवि जइ खणे उप्पज्जइ विणस्सइ य तओ तस्स अभावीभूयस्स निरामयभावो ण जुत्तो, विज्जमाणो अप्पा निरामयो वा होज्जा सामयो वा, निरामओ-निरोगी भण्णइ,सामयो सरोगी,निरोगो होऊण सरोगो भवइ, सरोगो होऊण निरोगो भवति, तम्हा निरामयसामययोगेण णज्जइ जहा अप्पा णिच्चोत्ति,जम्हा य निच्चो अओ अरूवी सरीराओ अण्णो, निरामयसामयभावोत्ति दारं गतं ॥ इयाणिं बालकयाणुसरणंति, नानिच्चो जीवो, कहं ?, जम्हा पुव्वाणुभूतं सरइ,

निरामय-सामया-दीनि-द्वाराणि ॥१२५॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ षड्जीव. ॥१२६॥

दिट्ठंतो बालो, जहा बालो बालभावे जाणि कताणि ताणि जोव्वणत्थो सरइ, बाले य जो अट्ठो दिट्ठो तं पच्चभिजाणइ, एवं जोव्वणत्थेवि जं कयं तं वुड्ढभावे सरति, जदा पुण खणविणासी होज्जा ता को सरेज्जत्ति, तम्हा बालकयाणुसरणेण णज्जइ जहा निच्चो जीवोत्ति, जम्हा य निच्चो अओ अरूवी सरीराओ य अण्णो, **बालकयाणुसरणंति दारं गतं । इदाणिं उवट्ठाणंति दारं,** निच्चो जीवो, कहं ?, जम्हा अन्नंमि काले कयं कम्मं अन्नंमि काले उवट्ठाइ, ण य अणिच्चस्स भावो जुज्जइ, दीसंति य इमंमि लोए चेव पुव्वसुकयकारिणो इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधादिविसए उवसुंजंता पुव्वदुकयकारिणो य अच्चंतपरिकिलेसभागिणो भतियादीणि कम्माणि उक्खेवमाणा मरणमब्भुवगच्छंति तम्हा सुभासुभं कम्मं, **उवट्ठाणत्ति दारं गतं । इदाणिं सोयाईहिं अग्गहणंति दारं,** णिच्चो जीवोत्ति, कहं ?, जम्हा सोयादीहिं इंदिएहिं न सक्कं घेत्तुं जहा आगासं, जहा आगासं अमुत्तिमंतं न सक्कं घेत्तुं सोतादीहिं इंदियेहिं निच्चं च तहा जीवोऽवि सोयादीहिं इंदिएहिं ण तीरइ घेत्तुं, तम्हा सो निच्चो, जम्हा निच्चो अओ अरूवी सरीराओ अण्णोत्ति, **सोतादीहिं अग्गहणंति दारं गतं ॥ इदाणिं जातिसरणंति दारं,** णिच्चो जीवोत्ति, कहं ?, जम्हा जातिस्मरणाणि लोगे विज्जंति, जति य जीवो न होज्जा तो कस्स जाइसरणमुप्पज्जेज्जा ?, सुव्वंति य बहूणि जाईसरणाणि लोगे उप्पण्णाणि, गोवालाइणोवि सत्थबाहिरा पडिवज्जंति जहा जातिसरणमत्थित्ति,तम्हा जातिसरणेणवि णज्जइ जहा जीवो निच्चोत्ति, अतो य अरूवी सरीराओ य अण्णोत्ति, **जाईसरणंति दारं । इदाणिं थणालासित्ति दारं,** निच्चो जीवो, कहं ?, जम्हा जायमेत्ता चेव थणमहिलसंति, दिट्ठंतो देवदत्तो, जहा देवदत्तस्स पुव्वभक्खितं अंबं वा अंबिलं वा अण्णेण केणइ भक्खिज्जमाणं दट्ठूण मुहं संदइ, किं कारणं ?, जम्हा जेण जाणि ताणि फलाणि पुव्विं भक्खियाणि तस्स मुखविकलेदो भवति, न पुण अंतरदीववासीणं

जातिस्मरणादीनि

॥१२६॥

*** अत्र जातिस्मरण द्वारम् कथयते

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ षड्जीव. ॥१२७॥

जत्थ ताणि फलाणि सव्वसो णत्थि, तहा जीवस्सवि पुव्वं अब्भत्थं थणपाणं जं जातस्सेव बालस्स उवएसमंतरेणवि थणं पति अहिलासो भवति, थणाभिलासकरणेण णज्जइ जहा निच्चो जीवोत्ति, थणाभिलासोत्ति दारं गतं। इदाणिं तइयाए गाथाए अत्थो भण्णइ, तत्थ पढमं दारं सव्वण्णुवदिट्ठत्ता, णिच्चो जीवो, कहं ?, जम्हा सव्वण्णूहिं एवमुवदिट्ठो, ते य भगवंतो ण तं भासंति जस्स पुव्वावरदोसो भवति, भणियं च-'वीतरागा हि सव्वण्णू०' तम्हा निच्चो ततो अरूवी सरीराओ य अण्णोत्ति, सव्वण्णुवदिट्ठत्तत्ति दारं गयं। इयाणिं सकम्मफलभोयणंति दारं, णिच्चो जीवो, कहं ?, जम्हा सयं कडाणि सुकयदुक्-याणि कम्माणि अणुभवइ, जति निच्चो न भवेज्जा तो खणविणासिस्स सुकडदुकडाणं फलाणुभवणं न होज्जा, दीसति य फल-मणुभवंतो पच्चक्खमेव, तम्हा सकयफलभोयणेण णज्जइ जहा णिच्चो जीवोत्ति, जम्हा णिच्चो तम्हा अरूवी सरीराओ य अण्णोत्ति, सकम्मफलभोयणेत्ति दारं, गतं अण्णत्तं, इयाणिं अमुत्तत्ति दारं, णिच्चो जीवो, कहं ?, जम्हा सो अरूवी, दिट्ठंतो आगासं, जहा आगासं अमुत्तिमंतं निच्चं तहा जीवोवि अमुत्तिमंतो निच्चो भविस्सति, अमुत्तत्तअण्णत्तनिच्चत्ताणि गयाणि ॥ इयाणिं कारओत्ति दारं, कारओ जीवो, कहं ?, जम्हा सुभासुभफलमणुभवइ, दिट्ठंतो वाणियकिसिबलाइ, जहा वाणिजादयो फल-भोइणो कत्तारो, एवं जीवो भोत्ता कारओ, गयं कारओत्ति दारं, इदाणिं देहवावित्ति दारं, जीवो देहवावी, कहं ?, जम्हा तस्स परिमिए देसे लिंगाणि उवलब्भंते, दिट्ठंतो अग्गी, जहा अग्गी जंमि ठाणे वट्टइ तंमि चेव डहणपयणपयासणादीणि भवंति, एवं जीवो जंमि चेव परिमिते देसे अवत्थिओ तंमि चेव आकुंचणपसारणादीणि दीसंति, तम्हा परिमिते देसे लिंगदरिसणेण णज्जइ जहा जीवो देहवावी, सरीरमात्रव्यापी एवमात्मा परिमितदेसे लिंगदर्शनादग्निवत्, देहवावित्ति दारं गतं। इयाणिं बितियाए

सर्वज्ञोपदि-ष्टत्वादीनि

॥१२७॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

अत्थो भण्णइ, तत्थ पढमं दारं गुणित्ति, गुणी जीवो, कहं ?, जम्हा दव्वाणं एस सहावोत्ति, एत्थ दिट्ठंतो घडो, जहा घडस्स रूवरसगंधाइणो गुणा भवंति तहा जीवस्सवि णाणदंसणाइणो बहवे गुणा भवंति, तम्हा गुणी जीवो, गुणित्ति दारं। इयाणिं उड्ढगतित्ति दारं, उड्ढगती जीवो, कहं ?, जम्हा सो अगुरुलहुउत्ति, दिट्ठंतो अलाउयं, अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लित्तं सुक्कं समाणं उदगे पक्खित्तं तेलेवगुरुययाए अहे धरणितले पइट्ठियं भवइ, तहा जीवोवि अट्ठकम्मगरुययाए अणादीऽणवदग्गे संसारजले पइट्ठाणो भवति, निरवसेसकम्मक्खएण य अगुरुलहुदव्वताए उड्ढं गच्छइ जाव धम्मत्थिकायदव्वस्स विसओत्ति, उड्ढगइओत्ति दारं गतं। इदाणिं निम्ममत्ति दारं, निम्मयं णाम जस्स कारणं नत्थि, निम्मयो--अमयो, जहा मिम्मयो घडो तंतुमयो पडो वीरणामयो कडो,एवं जीवस्स मयत्तं नत्थि तम्हा अमयो जीवो, नित्य आत्मा अमयत्वादाकाशवत्, निम्मयोत्ति दारं गतं। पुव्वकयकम्मसाफल्लता दारं जहा हेट्ठा वन्नियं तहा वन्नेयव्वं। इदाणिं परिमाणेत्ति दारं, अनेन विधानेन सिद्धमात्मनो अस्तित्वं, तस्मिन् सिद्धे तत्प्रमाणनिर्धारणार्थमिदमुच्यते- 'एगस्स अणेगाण य '(-१३४ गाहा) परिमाणं दुविहं भवइ, तंजहा--एगस्स अणेगाण य, तत्थ एगस्स ताव परिमाणं भण्णइ--' जीवत्थिकायमाणं ' गाहा (५६--१३४) एगजीवस्स परिमाणं भण्णइ, तं च इमं--जया केवली केवलिसमुग्घाएण समोहणइ तया सव्वलोगं पूरेइ जीवपएसेहिं, ओगाहणसुहुमं एक्केको जीवपएसो पिहप्पिहो भवइ, नो उप्परोपरिं, इहरहा असमुग्घायजीवप्पएसा उप्परोपरि भवंति। केत्तिया सव्वजीवा परिमाणओ होज्जत्ति ?, एत्थ गाहा 'पत्थेण व कुलवेण व' गाहा (५७-१३४) जहा कोइ सव्वधन्नाणि एगट्ठीकरेत्ता पत्थेण व कुलएण व मवेज्जा, तत्थ कुलवो लोगपसिद्धो, पत्थो पुण चत्तारि कुलवा भण्णंति, एवं असब्भावट्ठवणाए कोई लोगं कुलवं वा पत्थं

॥१२८॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

वा काउं अजहण्णमणुक्कोसियाए ओगाहणाए लोगं पुणो पुणो पूरेत्ता अलोगे पक्खिवेज्जा, तओ एगो दो तिण्णि एवं गणिज्जमाणा अणंता लोगा भवेज्जा,अहवा लोगस्स एक्केक्कंमि आगासपएसे एक्केक्कं जीवं बुद्धीए ठवेत्ता जीवलोगो भरिओ ताहे अलोगे परिकप्पइ एवं एगो दो तिण्णि संविज्जमाणा अणंता लोगा भवेज्जा, परिमाणंति दारं गतं,जीवोत्ति य पदं। इयाणिं निकायेत्ति दारं, 'णामंठवण सरीरे' गाथा (२३०-१३४) नामठवणाओ गयाओ, सरीरकाओ नाम सरीरमेव भण्णइ, गहनाम जेहिं सरीरेहिं भवन्तरं गच्छइ ताणि तेयाकम्माणि, जो वा जाए गईए कायो भवइ, सरीरंति वुत्तं भवइ, जहा नेरइयाण तिन्नि सरीराणि वेउव्वियतेयाकम्मगाणि , एवं सेसियाणवि गतीणं भाणियव्वाणि , णिकायो नाम छज्जीवनिकायो भण्णइ , तं०— पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया तसकाइया , अत्थिकाओ नाम धम्माधम्माइया पंच अत्थिकाया, दवियकाओ नाम तिप्पभिइं दव्वाणि एगत्थ मिलियाणि दव्वकाओ भण्णइ, जहा तिन्नि घडा, एवमादी, माउकायो नाम तिप्पभिइं माउअक्खरा माउयकायो भण्णइ, पज्जवकायो दुविहो, तं०- अजीवपज्जवकायो य जीवपज्जवकाओ य, तत्थ अजीवपज्जवकाओ नाम तिप्पभितिं अजीवपज्जवा अजीवपज्जवकायो भण्णइ, जहा घडस्स वण्णरसगंधफरिसत्ति एवमादी, जीवपज्जवकायो नाम तिप्पभिइं जीवपज्जवा जीवपज्जवकायो भण्णइ, जहा नाणदंसणचरित्ताणि एवमादि, संगहकायो नाम जहा तिप्पभिइं दव्वाणि एगेण सद्देण संगहियाणि, जहा तिगडु तिफला एवमादी, अहवा जहा जाओ सालित्ति एवमादी, भारकायो णाम 'एक्को कायो दुहा' गाहा ( ) एत्थ उदाहरणं- एगो काहारो तलागे दो घडा पाणियस्स भरिऊण कावोडीए वहइ, सो एगो आउकायकाओ दोसु घडेसु दुहा कओ, तत्थ सो काहारो गच्छंतो पक्खलिओ, एगो घडो भग्गो,

॥१२९॥

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥ दीप अनुक्रम [३२-७५]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

मूलं

तम्मि जो आउकाओ सो मओ, इतरंमि जीवइ, तस्स अभावे सोऽवि भग्गो, ताहे तेण पुव्वमएण मारिओत्ति भण्णइ, अहवा एगो घडो आउकायभरिओ, ताहे तमाउकायं दुहा काऊणं अद्धो ताविओ, सो मओ, अतो बीओ जीवइ, ताहे सोवि तत्थेव पक्खित्तो, तेण मएण जीवंतो मारिउत्ति, एसो भारकाओ गओ ॥ इयाणिं भावकाओ भण्णइ- भावकाओ नाम तिप्पभिई उदइयाइया भावा भावकाओ, 'इत्थं पुण अहिगारो' गाहा (२३१-१३५) इत्थं पुण अहिगारो अज्झयणे निकायकाएण अहिगारो, सेसा पुण उच्चारियत्थसरिसत्तिकाऊणं परूवियाणि, कायोत्ति दारं गतं, गओ य णामणिप्फण्णो णिक्खेवो, इदाणिं सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं अक्खलियं जहा अणुओगदारे, तं च सुतं इमं ॥

सुतं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं (सू०१-१३६)'श्रु श्रवणे' धातुः, अस्य निष्ठा प्रत्ययः-श्रूयते स्म श्रुतं, एतस्स सुतस्स इमो अभिसंबंधो- **'अत्थं भासइ अरहा सुत्तं गुंथंति गणहरा णिउणा। सासणस्स हियट्ठाए तओ सुत्तं पवत्तइ** ॥ १ ॥ जं भगवतो अंतिए अत्थं सोऊण गणहरा तमेव अत्थं सुत्तीकाऊण पत्तेयं अप्पणो सीसेहिं जिणवयणसोतव्वगाभिमुहेहिं पुच्छिज्जमाणा एवमाहंसु- **'सुतं मे आउसंतेणं'** अहवा सुहम्मसामी जंबुनामं पुच्छमाणं एवं भणइ, अस्मत्सर्वनाम्नः कर्तृकरणार्थे तृतीयैकवचनं टाङसी (पा. ७-१-१२) स्याद्येत्वे प्राप्ते 'योऽची'ति (पा. ७-२-८९) यकारः 'त्वमावेकवचने' (पा.७-२८७) इति मादेशः परगमनं मया, श्रुतं मया आयुष्मन् ! तेन भगवता, सुतं मयत्ति जो निद्देसो एस खणिगवादिपडिसेहणत्थं कज्जइ, कहं ?, अहमेव सो जो तदा भगवतो तित्थगरस्स सगासे सोऊण णिविट्ठो, अक्खणिउत्ति वुत्तं भवइ, आयुस् प्रातिपदिकं प्रथमासुः,आयुः अस्यास्ति मतुप्प्रत्ययः,आयुष्मान्!, आयुष्मन्नित्यनेन शिष्यस्यामन्त्रणं गुणाश्च देशकुलशीलादिका अन्वाख्याता भवंति,

*** अथ अध्ययनस्य सूत्राणि आरब्धा:

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

दीर्घायुष्कत्वं च सर्वेषां गुणानां प्रतिविशिष्टतमं, कहं ?, जम्हा दिग्घायू सीसो तं नाणं अन्नेसिंपि भवियाणं दाहिति, ततो य अव्वोच्छित्ती सासणस्स कया भविस्सइत्ति, तम्हा आउसंतग्गहणं कयंति, तेन सर्वनाम्नःतृतीयैकवचनं'त्यदादत्वं' (पा.७-२-१०२) अतो गुणः (पा. ६-१-८७) पररूपत्वं 'टाङसिङसामिनात्स्या' इति (पा. ७-१-१२) टावचनस्य इनः आदेशः, 'आद् गुणः' (पा. ६-१-८७) परगमनं तेन भगवता- तिलोगबंधुणा, एगो विगप्पो गओ १ इयाणिं बितियो विकप्पो भण्णइ-सुयं मे आउसंतेणं, सुयं मयाऽऽयुषि समेतेन तीर्थंकरेण-जीवमानेन कथितं, एष द्वितीयः विकल्पः २, इयाणिं तइओ विकप्पो सुयं मे आउसंतेणं श्रुतं मया गुरुकुलसमीपावस्थितेन तृतीयो विकल्पः ३, इयाणिं चउत्थो वियप्पो, सुयं मया एयमज्झयणं आउसंतेण भगवतः पादौ आमृषता, एवं सुत्ते वक्खाणिज्जमाणे विणयपुव्वे सीसायरियसंबंधो परूविओ, चउत्थो विगप्पो गओ, इयाणिं भगवता इति, भगः प्रातिपदिकं स भगः '(तद) स्यास्त्यास्मिन्नि (पा. ५-२-९४) ति मतुप् प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः (मादुपधायाश्च) मतोर्वोऽयवादिभ्यः (पा.८-२-९) इतिवत्वं भगवत् कर्तृकरणयोस्तृतीया, टा अनुबंधलोपः परगमनं भगवता, अथवा भगशब्देन ऐश्वर्यरूपयशःश्रीधर्मप्रयत्ना अभिधीयंते, ते यस्यास्ति स भगवान् , भगो जसादी भण्णइ, सो जस्स अत्थि सो भगवं भण्णइ. उक्तं च-"ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, रूपस्य यशसः श्रियः। धर्मस्याथ प्रयत्नस्य षण्णां भग इतीङ्गना ॥१॥' अतस्तेन भगवता एवंशब्दो निपातः अवधारणे वर्त्तते, किमवधारयति ?, एतस्मिन् षड्जीवनिकायाध्ययने योऽर्थोऽभिधास्यते तमवधारयति, अक्खायं नाम कहियं, 'चक्षिङ्. व्यक्तायां वाचि' धातुः आङ्पूर्वः अस्य निष्ठाप्रत्ययः क्तः अनुबन्धलोपः चक्षिङः ख्याञ्आदेशः नपुंसकं सु अम् आख्यातं, इहत्ति नाम इह पवयणे लोगे वा, खलुसद्दो विसेसणे, किं विसेसयति ?, न केवलं महावीरेण एयमज्झ-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

यणं कहियं, किंतु सेसेहिवि तित्थकरेहिं एवमाख्यातं, छण्हं जीवस्स निकायस्स तिण्हवि दाराणं अत्थो जहा नामनिप्फण्णे निक्खेवे भणिओ तहेव इहवि भाणितव्वो, अज्झाइ जम्हा तम्हा **अज्झयणं**, ततो **समणो** जहा सामण्णपुव्वए तहेव इहवि, **भगवया** इति एयस्स जहा हेट्ठतो भणिओ, महंतो यसोगुणेहिं वीरोत्ति **महावीरो**, एत्थ सीसो भणइ- णणु 'सुयं मे आउसंतेण' एवं णज्जति समणेणं भगवया महावीरेणं एयमज्झयणं पन्नत्तामिति किं पुण गहणं कयमिति ?, आयरिओ भणइ-समणो चउव्विहो, तं०-णामसमणो ठवणसमणो दव्वसमणो भावसमणोत्ति, एवं भगवमवि चउव्विहो, एवं महावीरोवि चउव्विहो भवति, तत्थ नाम-ठवणादव्वाणं पडिसेहनिमित्तं भावसमणभावभगवंतमहावीरग्गहणनिमित्तं पुणोगहणं कयं, 'पा'पाने' धातुः, अस्य धातोः काश्यपूर्वस्य 'आतोऽनुपसर्गे' (पा. ३-२-३) इति कः प्रत्ययः, काश्यं पिबतीत्येवं विगृह्य उपपदसमासे सुलुक् अनुबन्धलोपः 'अतो लोपे' (पा. ६-४-४८) त्याकारलोपः परगमने काश्यपः, काशो नाम इक्खु भण्णइ, जम्हा तं इक्खु पिबंति तेन काश्यपा अभिधीयंते, अथवा काश्यपं गोत्तं कुलं यस्य सोऽयं काश्यपगोत्तो तेण **काश्यपगोत्तेण**, **पवेदिता** नाम विविहमनेकपकारं कथितेत्युक्तं भवति, **सुयक्खाया** नाम सोभणेण पगारेण अक्खाता सुट्ठु वा अक्खाया, **सुपण्णत्ता** णाम जहेव परूविया तहेव आइण्णावि,इतरहा जइ उवईसिऊण न तहा आयरंतो तो नो सुपण्णत्ता होंतित्ति,**सेयं** नाम पत्थं,'मे'त्ति अत्तणो निद्देसे, अहिज्जिउं नाम अज्झाइउं, **अज्झयणं** नाम 'अज्झप्पस्साणयणं कम्माणं अवचयो उवचियाणं । अणुवचयो य नवाणं तम्हा अज्झयणमिच्छंति ॥ १ ॥ धम्मो पण्णविज्जमाणो विज्जति जत्थ सा **धम्मपन्नत्ती**, एत्थ सीसो तमज्झयणमजाणमाणो आह- **'कयरा खलु सा छज्जीवणिया णामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेण कासवेण जाव पन्नत्ती ?**, आयरिओ भण्णइ-'**इमा खलु सा**

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ४ अ० ॥१३३॥

छज्जीवणियाणाम जाव पन्नत्ती, तं०- पुढवीकाइया आउक्काइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया तस-काइया,' 'प्रथु प्रत्यारूयाने' धातुः, अस्य धातोः 'प्रथेः षिवन् संप्रसारणं चे' (उपादि २ पादः) ति षिवन्प्रत्ययो भवति संप्रसारणं च, अनुबन्धलोपः परगमनं पृथिवः स्त्र्यधिकारे 'षिद्गौरादिभ्यश्चे'ति (पा. ४-१-४१) ङीप्रत्ययः पृथिवी, 'चिञ् चयने' धातुः अस्य ' निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च क ' इति (पा. ३-३-४१) घञ् प्रत्ययः आदेश्च ककारः अनुबन्धलोपः परगमनं कायः पृथिवीकायः, मध्ये शेषलक्षणा षष्ठी ङस्, 'अण् नद्याः' (पा. ७-३-११२) अडागमः 'इको यणचि' (पा. ६-१-७७) इति यणा-देशः, कायशब्दस्य प्रथमासोर्विसर्जनीयः, पृथिव्याः कायः 'षष्ठी' (पा. २-२-८) सुबन्तेनोत्तरपदेन सह समस्यते तत्पुरुषश्च समासो भवति 'धातुप्रतिपदिकयो'रिति (पा. २-४-७१) सुब्लुक् एकपदमेकस्वरविभक्तित्वं च, पृथिवी कायः- निवासोऽस्य 'तस्य निवासे'ति (पा. ४-२-६९) अणि प्राप्ते ठक् प्रत्ययः तस्य इकादेशः 'यस्येति चे'ति (पा. ६-४-१४८) अकारलोपः, पृथिवी-काइकाः, 'आप्लृ प्राप्तौ' धातुः, अस्य धातोः 'आप्नोतेर्हस्वश्चे'ति (उपादि २-५८) क्विप् प्रत्ययः ह्रस्वश्च भवति, अनुबन्धलोपः परगमनं अप्कायः, मध्ये प्रथमाबहुवचनं जस्, कायशब्दस्य, पुनरपि कायशब्दः, अप्कायः कायो येषां 'अनेकमन्यपदार्थे' इति (पा. २-२-२४) बहुव्रीहिसमासः, 'सुपो धातुप्रातिपदिकयो'रिति (पा. २-४-७१) सुब्लुक् एकस्य कायशब्दस्य लोपः परगमनं एकपदमेकस्वरविभक्तित्वं च अप्कायः, अप्कायः निवासोऽस्य 'तस्य निवासे'ति (पा. ४-२-६९) अणि प्राप्ते ठक् प्रत्ययः तस्य इकादेशः 'यस्येति चे'ति (पा. ६-४-१४८) अकारलोपः अप्कायिकाः, आउक्काओ सरीरं जेसिं जीवाणं ते जीवा आउक्काइया, 'तिज निशामने' धातुः, अस्य धातोः असुन् प्रत्ययः अनुबन्धलोपः, गुणः परगमनं तेजस्कायः, मध्ये षष्ठी जस् कायशब्दात्सुः,

अध्ययनो-पोद्घातः

॥१३३॥

तेजसः कायः 'षष्ठी'(पा. २-२-८) सुबन्तेनोत्तरपदेन सह समस्यते अधिकारात्तत्पुरुषश्च समासः 'सुपो धातुप्रातिपदिकयो'- (पा. २-४-७१) रिति सुब्लुक् परगमनं एकपदमेकस्वरविभक्तित्वं च, तेजस्कायः निवासोऽस्य सोऽस्य निवासे'ति (पा. ४-२-६९) अणि प्राप्ते ठक् प्रत्ययः तस्य इकादेशः परगमनं तेजस्कायिकाः, 'वा गतिगन्धनयोः' धातुः, अस्य धातोः 'कृवापाजिमिस्वदिसाधूभ्य उण्' इत्युण् प्रत्ययः (उणादि पा.१-१) 'आतो युक्चिण्कृतो'रिति (पा. ७-३-३३) युक् परगमनं वायुकायः, मध्ये षष्ठी ङस् 'घेर्ङी' ति (पा. ७-३-१११) गुणः, 'ङसिङसोश्चे'ति (पा ६-१-११०) परपूर्वत्वं कायशब्दस्य प्रथमासुः, वायोः कायः षष्ठीसमासः, 'सुपो धातुप्रातिपदिकयो'(पा. २-४-७१) रिति सुब्लुक् एकपदमेकस्वरविभक्तित्वं च, वायोः कायः वायुकायः वायुकायः निवासोऽस्य 'तस्य निवास' इति (पा. ४-२-६९) अणि प्राप्ते ठक् प्रत्ययः, अस्य इकादेशः, परगमनं वायुकायिकाः, 'वन षण संभक्तौ' धातुः, अस्य धातोः 'नन्दिग्रहिपचादिभ्य' इति (पा ३-१-१३४) अच् प्रत्ययः अनुबन्धलोपः परगमनं वनः, 'पा रक्षणे' धातुः, अस्य धातोः 'पातेर्डती'ति (उणादि ४-५७) डतिः प्रत्ययः, डकारादकारमपकृष्य डकारस्य 'टेः' (पा. ६-४-१४३) रिति टिलोपः, दितश्च (प्रत्ययस्य) स्याप्यनुबन्धकरणसामर्थ्यादीप(दाकार) लोपः परगमनं पतिः। इदाणिं समासः वन पति, मध्ये षष्ठी ङस्, पतिशब्दस्य प्रथमासु रुत्वं विसर्जनीयः वनस्पतिः 'षष्ठी' (पा. २-२-८) सुबन्तेनोत्तरपदेन सह समस्यते तत्पुरुषश्च समासो भवति, समासे 'सुपो धातुप्रातिपदिकयो'रिति (पा २-४-३१) सुब्लुक् सुलुकि कृते 'तद्बृहतोः करपत्योश्चौरादेवतयोः तलोपश्च' (पा. ६-१-१२७) सुट्, वनस्य च पतौ परतः सुट्, टकारश्च 'आद्यन्तौ टकिता'विति (पा. १-१-४६) विशेषणार्थः, उकार उच्चारणार्थः, परगमनं वनस्पतिकायः, मध्ये षष्ठी, 'घेर्ङिती'ति (पा. ७-३-१११) गुणः 'ङसिङसोश्चे'ति (पा. ६-१-११०) परपूर्वत्वं कायः प्रथमासुः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

वनस्पतेः कायः षष्ठीसमासः 'सुपो धातुप्रातिपदिकयो'रिति (पा. २-४-७१) सुब्लुक् वनस्पतिकायः २ निवासः एषां सोऽस्य निवासेति अणि प्राप्ते ठक् प्रत्ययः ठस्य इकादेशः 'यस्येति चे'ति (पा. ६-४-१४८) इकारलोपः परगमनं वनस्पतिकायिकाः, 'त्रसी उद्वेजने' धातुः, अस्य धातोः 'नन्दिग्रहिपचादिभ्य' इति (पा ३-१-१३४) अच्प्रत्ययः अनुबन्धलोपः त्रसः, त्रस काय इति स्थिते मध्ये षष्ठीवचनं आम् 'ह्रस्वनद्यापो नुडिति (पा. ७-१-४) नुड् अनुबन्धलोपः, नामि दीर्घत्वं, कायशब्दस्य प्रथमा सुः त्रसानां कायः स च षष्ठीसमासः 'सुपो धातुप्रातिपदिकयो'रिति (पा. २-४-७१) सुब्लुक् त्रसकायः २ निवासः एषां 'सोऽस्य निवासे'ति अणि प्राप्ते ठक् तस्य इकादेशः 'यस्येति चे'ति (पा. ६-४-१४८) अकारलोपः परगमनं त्रसकायिका, त्रसंति सरीराणि जेसिं ते त्रसकायिकाः ॥

तत्थ पढमं पुढविकाओ, किं कारणं ?, जम्हा पुढविकाओ सव्वभूताणं सरणं पइट्ठाणं च तम्हा पुढविकाओ भणिओ, तत्थ अणंतरं पुढविपइट्ठिओत्तिकाऊणं आउक्काओ भणिओ, ततो तस्सेव पडिवक्खोत्तिकाऊण तेउक्काओ भणिओ, सो य तेउक्काओ वाउक्काएण विणा ण संजलइ तओ वाउक्काओ भणिओ, वाउक्काओ जम्हा वणप्फइउवग्गहे वट्टइ तओ वणप्फइकाओ भणिओ, वणप्फई तसाणं उवग्गहे वट्टइ तओ तसकाओ भणिओ, तत्थ पुढवी ' चित्तमंता अक्खाया ' चित्तं जीवो भण्णइ, तं चित्तं जाए पुढवीए अत्थि सा चित्तमंता, चेयणाभावो भण्णइ, सो चेयणाभावो जाए पुढवीए अत्थि सा चित्तमंता, अहवा एवं पढिज्जइ 'पुढवि चित्तमंता अक्खाया' चित्तं चेयणाभावो चेव भण्णइ, मत्तासद्दो दोसु अत्थेसु वट्टइ, तं०-थोवे वा परिणामे वा, थोवओ जहा सरिसवतिभागमत्तमणेण दत्तं, परिमाणे परमोही अलोगे लोगप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ, इह पुण मत्तासद्दो थोवे वट्टइ,

॥१३५॥

*** षड् जीवनिकाय मध्ये पृथ्वीकायस्य प्रथमत्वस्य कारणं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

चित्तमात्रमेव तेषां पृथिवीकायिनां जीवितलक्षणं, न पुनरुच्छ्वासादीनि विद्यन्ते, अहवा चित्तमंता नाम जारिसा पुरिसस्स मज्जपीतविसोवसुत्तस्स अहिभक्खियसुच्छादीहिं अभिभूतस्स चित्तमत्ता तओ पुढविकाइयाणं कम्मोदएणं पावयरी, तत्थ सव्वजहण्णयं चित्तं एगिंदियाणं, तओ विसुद्धयरं बेइंदियाणं, तओ विसुद्धतरागं तेइंदियाणं, तओ विसुद्धयरागं चउरिंदियाणं, तओ असण्णीणं पंचेंदियाणं संमुच्छिममणुयाण य, तओ सुद्धतरागं पंचिंदियतिरियाणं, तओ गब्भवक्कंतियमणुयाणं, तओ वाणमंतराणं, तओ भवणवासीणं ततो जोइसियाणं, ततो सोधम्माणं जाव सव्वुक्कोसं अणुत्तरोववाइयाणं देवाणंति, अक्खाया णाम तित्थगरेहिं परूविया, न अम्हारिसेहिं इच्छाए परूवितत्ति, अणेगे जीवा नाम न जहा वेदिएहिं एगो जीवो पुढवित्ति, उक्तं-"पृथिवी देवता आपो देवता" इत्येवमादि, इह पुण जिणसासणे अणेगे जीवा पुढवी भवति, सीसो भणति-केवइया पुण होज्जा ?, आयरिओ भणइ-असंखेज्जाणं पुण पुढविजीवाणं सरीराणि संहिताणि चक्खुंविसयमागच्छंतित्ति, पुढो सत्ता नाम पुढविकम्मो दएण सिलेसेण वट्टिया वट्टी पिहप्पिहं चऽवत्थियात्ति वुत्तं भवइ, सीसो आह- जइ पुढवी चित्तमंतमक्खाया उच्चाराईणि सव्वाणि पुढवीए कीस कीरंतित्तिकाऊणं अहिंसगत्तं साहणं कहं भविस्सइ ?, आयरिओ आह- 'अण्णत्थ सत्थपरिणएणं' अण्णत्थसद्दो परिवज्जणे वट्टइ, किं परिवज्जइयइ ?, सत्थपरिणयं पुढविं मोत्तूणं जा अण्णा पुढवी सा चित्तमंता इति तं परिवज्जयति, सीसो आह- तं सत्थं ण जाणामो जेण सत्थेण परिणामिया पुढवी चित्तमंता न भवइ, आयरिओ भणइ- सत्थं दुविहं, तं०- दव्वसत्थं भावसत्थं च, तत्थ दव्वसत्थं- 'सत्थग्गिविस' माहा (२३२-१३९) तत्थ सत्थं णाम परसुवासिमादी अग्गिविसाणि लोगपसिद्धाणि णेहसत्थं च सघयतेल्लादी अंबिलं लोगपसिद्धं खारसत्थं नाम जे खाररुक्खा निंबपीलुकरीराइं तं खारसत्थं, तं च भावो य दुप्पउत्तो संजमस्स

॥१३६॥

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ||३२-५९||

दीप अनुक्रम [३२-७५]

सत्थं भवइ, दुप्पउत्तो नाम अकुशलमणोत्ति वुत्तं भवइ, एवं काया वायावि दुप्पउत्ता संजमस्स सत्थाणि भवंति, तथा अविरती संजमस्स सत्थं भवति. न तेण भावसत्थेण अधिगारो, दव्वसत्थेण अधिगारो, तस्स दव्वसत्थस्स तिन्नि पगारा भवंति, तं०- 'किंची सकायसत्थं' गाहा (२३३-१३९) किंची ताव दव्वसत्थं सकायसत्थं किंचि परकायसत्थं किंचि उभयकायसत्थंति, तत्थ सकायसत्थं जहा किण्हमट्टिया नीलमट्टियाए सत्थं, एवं पंचवण्णावि परोप्परं सत्थं भवति, जहा य वण्णा तहा गंधरसफासावि भाणियव्वा, परकायसत्थं नाम पुढविकायो आउक्कायस्स सत्थं पुढविकायो तेउक्कायस्स पुढविकाओ वाउकायस्स पुढविकाओ वणस्सइकायस्स पुढविकाओ तसकायस्स, एवं सव्वे परोप्परं सत्थं भवंति, उभयसत्थं णाम जाहे किण्हमट्टियाए कलुसियमुदगं भवइ जाव परिणया, ण य लोगे करीसादिणा उवघातो दीसइ सावि परिहरिज्जइ, कम्हा ?, जम्हा सो केवलिपच्चक्खो भावोत्ति, तम्हा साहवो सत्थपरिणयाए पुढवीए उच्चाराईणि कुव्वमाणा अहिंसगा भवंतीति, कश्चिदाह- अचेतना पृथिवी, कस्माद् ?, उच्छ्वासनिश्वासगमनाद्यभावाद् घटवत्, असदेतद्, अनैकान्तिकत्वादण्डकादिवत्, प्राणिनामंडकावस्थायां कललार्बुदाद्यवस्थायां वा उच्छ्वासाद्यभावः तदभावात्तेषामचेतनत्वं प्रसज्यते, अनिष्टं चैतत्, तस्मादनैकान्तिकादिदोषः, शिष्य आह- तावदेषामेकेन्द्रियाणां चैतन्यमाज्ञया ग्रहीतव्यमाहोश्वित् काचिदुपपत्तिरस्ति ?, अस्तीति, उक्तं च- 'आगमश्चोपपत्तिश्च, संपूर्णं दृष्टिलक्षणम् । अतीन्द्रियाणामर्थानां, सद्भावप्रतिपादने ॥ १ ॥' आचार्याह- उभयथापि, आज्ञया तावदाप्तवचनप्रामाण्यादिति, आह च- 'आगमो ह्याप्तवचनमाप्तं दोषक्षयाद्विदुः । वीतरागोऽनृतं वाक्यं, न ब्रूयात् हेत्वसंभवात् ॥१॥' उपपत्तिमप्यंगीकृत्येदमुच्यते-सात्मिका पृथ्वी विद्रुमलतासमानजातीयरूपांकुरोत्पत्युपलंभाद् देवदत्तमांसांकुरवत् । इदाणिं आऊ-आउ चित्तमंतमक्खाया जाव अण्णत्थ

*** अत्र पृथ्वीकाय-आदीनां सचेतनत्व निरूप्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

सत्थपरिणएणं, सात्मकं जलं भूमिखातस्वाभाविकसंभवाद् दर्दुरवत्, तेऊ चित्तमंतमक्खाया जाव अण्णत्थ सत्थपरिणएणं सात्मकोऽग्निः आहारेणाभिवृद्धिदर्शनाद्बालकशरीरवत्, वाऊ चित्तमंतमक्खाया जाव अण्णत्थ सत्थपरिणएणं सात्मको वायुःअपरप्रेरिततिर्यगनियमितानैर्गमनाद्गोवत्। इदाणिं वणस्सती भण्णइ, तत्थ अग्गबीया नाम अग्ग-बीयाणि जेसिं ते अग्गबीया जहा कोरेंटगादी, तेसिं अग्गाणि कप्पंति,मूलबीया नाम उप्पलकंदादी, पोरबीया नाम उक्खुमादी, खंधबीया नाम अस्सोत्थकविड्डसल्लादिमायी,बीयरुहा नाम सालीवीहीमादी, संमुच्छिमानाम जे विणा बीयेण पुढविवरिसादीणि कारणाणि पप्प उट्ठेंति,तत्थ तणग्गहणेण तणभेया गहिया, लतागहणेण लताभेदा गहिया, वणस्सइकाइयगहणेण जावंति केइ पत्तेयसरीरा साहारणसरीरा य सुहुमा य बादरा य सव्वलोगे परियावण्णा ते सव्वे गहितात्ति, वणस्सइकायभेददरिसणेण य सेसाणंपि पुढविकाइयाईणं भेदा सूइया भवंति, तत्थ पुढवीय सक्करा वालुगा य एवमादी आउस्स हिमादी अगणिकायस्स इंगाले जलण एवमादी वाउकायस्स उक्कलियावाए मंडलियावाए एवमादी, सबीयग्गहणेण एतस्स चेव वणस्सइकाइयस्स बीयपज्जवसाणा दस भेदा गहिया भवंति-'तं०-मूले कंदे खंधे तया य साले तहप्पवाले य। पत्ते पुप्फे य फले बीए दसमे य नायव्वा ॥ १ ॥' सीसो आह-जो बीए जीवो आसी तंमि वोक्कंते समाणे किं अण्णो तत्थ उववज्जइ अह सो चेव य जीवो विरोहइ ?, आयरिओ भणइ- 'जोणिब्भूए य बीए' (बीए जोणी २३४-१४०) गाहा, बीयं दुविहं- जोणिब्भूयं अजोणिब्भूयं च, तत्थ जोणिभूयं नाम अविद्धत्थजोणीयं, जहा लोगे पंचपंचासिया नारी अजोणिब्भूया भवइ, नो पजणेइ, एवं बीयाणिवि कालंतरेण अचीयीभवंति, जं च अजोणीभूतं तं नियमा निज्जीवं, जोणीभूतं सजीवं होज्जा णिजीवं वा, तंमि जोणिब्भूए बीए सो चेव बीयजीवो मरित्ता उववज्जति अण्णो वा उववज्जेज्जा, पुणोवि तत्थ अण्णेवि जीवा

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

वक्कमंति, भणियं च "सव्वोऽवि किलसओ खलु उग्गममाणो अणंतओ भणिओ। सो चेव य वड्ढंतो होइ अणंतो परित्तो वा ॥१॥" जो सो बीयसरीरी जीवो सो जहा जहा वड्ढइ कायो तहा तहा पत्तं निवत्तेइ मूलं खंधं, साहाओ पुण अण्णे पच्छोववण्णगा निवत्तेंति, सेसं सुत्तप्फासं गाहा (६०-१४१) सेसं जमेतेसु छसु कायेसु सुत्तफासियनिज्जुत्तीए भणियं तं सुत्तं काये अणुफासंतेहिं अहक्कमं भाणियव्वं, पगरणे पदेहिं वंजणेहि य सुविसुद्धत्ति, तत्थ पगरणं अहिगारो जेण भण्णति, पदं लोगपसिद्धं चेव, वंजणं अक्खरं मण्णइ, ते य पंच अज्झयणत्था इमे, तं०- जीवाभिगमे अजीवाभिगमो धम्मो जयणा उवदेसो धम्मफलमिति छट्ठो, जीवाभिगमो कहं इमाए गाहाए ण भणिओ ?, आयरिओ भणइ-णणु 'काए काए अहक्कम्मं बूया' इति एतेण चेव छट्ठो अधिगारो भणिउत्ति, सचेतनास्तरवः अशेषत्वगपगमे मरणोपलंभादेवदत्तवत्, श्रोत्रस्पर्शवान् अशोकः सनूपुरविभूषिताङ्गनाङ्गसंस्पर्शनेन विकारदर्शनात् प्रतनुरागपुरुषवत्, चक्षुरिंद्रियवती चित्रा आदित्योदयास्तमयाभ्यां स्वप्नप्रबोधदर्शनादेवदत्तवत्, रसनावान्बकुलः संपर्केण विकारदर्शनान्मद्यपपुरुषवत्, प्राणवत्येा कर्कटिकादयः पशुकरीषास्थिधूपगंधेन दौर्हृदापगमाद्नारीवत् । इत्यादि 'तसा चित्तमंता अक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं' एतेसिं वक्खाणं जहा पुढवीए तहा भाणियव्वं, 'से' त्ति निद्देसो 'जे'त्ति य विसेसियाणं गहणं, पुणसद्दो विसेसणे, 'इमे' त्ति सव्वलोगपसिद्धा बालादीणमवि पच्चक्खा अणेगभेदभिण्णा द्विंदियादिपाणिणो णायव्वा, अणेगे नाम एकंमि चेव जातिभेदे असंखेज्जा जीवा इति, तसंतीति तसा, पाणा नाम भूतेति वा एगट्ठा, ते य इमे, तं०-अंडया पोतया जराउया रसया संसेइमा संमुच्छिमा उब्भिदया उववाइया, तत्थ अंडसंभवा अंडजा जहा हंसमयूरायिणो, पोतया नाम वग्गुलिमाइणो, जराउया नाम जे जरवेढिया जायंति

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ अ० ॥१४०॥

जहा गोमहिसादि, रसया नाम तक्कंबिलमाइसु भवंति, संसेयणा नाम जूयादी, संमुच्छिमा नाम करीसादिसंमुच्छिया, उब्भिया नाम भूमिं भेत्तूणं पंखालया सत्ता उप्पज्जंति, उववाइया नाम नारगदेवा,एते अंडयादयो अट्ठविहाए जोणीए उप्पण्णा तसा भवंति, तेसिं च तसाणं लक्खणाणि लोगपसिद्धाणि तहावि थिरीकरणणिमित्तं भण्णइ--'जेसिं केसिंचि पाणाणं' जेसिं केसिंचित्ति अविसेसियाणं गहणं, पाणा पुव्वभणिता, इदाणिं जाणि लक्खणाणि भणिहिंति ताणि जेसिं अत्थि ते जीवा तसा जाणियव्वा, सीसो आह--काणि पुण ताणि लक्खणाणि ?, आयरियो भणइ, इमाणि, तं०- 'अभिकंतं पडिकंतं संकुचियं पसारियं रुयं भंतं तसियं पलाइयं' आलावगा उच्चरियव्वा, अभिकंतं णाम अभिमुखं कंतं अभिकंतं, पण्णवगं पडुच्च अभिमुखमागमणंति वुत्तं भवति, परम्मुहं कंतं परकंतं, गमणंति वुत्तं भवइ, संकुचियं णाम हत्थपादादीणं अंगाणं, पसारियं जं आउण्टणं तं संकुचितं भण्णइ, तेसिं चेव आकुंचियाणं जं विमोक्खणं तं पसारियं भण्णइ, रुयं नाम सद्दकरणं भण्णइ, भंतं नाम जं देसाओ देसंतरं भमइ, तसियं नाम जं सारीरमाणसाणं दुक्खाणं उव्वियणं, पलाइयं णाम जं भयाभिभूयस्स नासणं, आगमणं आगई, गमणं गती, एत्थ सीसो आह--जं अभिकंतं सा चेव आगती जं पडिकंतं सा चेव गइत्ति, एत्थ पुणरुत्तदोसो भवइ, आयरिओ भणइ-जेसिं अभिकंतादीणि लक्खणाणि अत्थि तेहिं ताणि जति विण्णायाणि जहा वयं अभिक्कमामो एवमादी तो सो तसो भण्णइ, इतरहा अलाबुतवुसादिणोवि वल्लिविसेसा रुक्खं वाडिं वा अभिमुहा अभिक्कमंति, तेसिं रुक्खवाडीयाईणं अग्गं पाविऊण पुणो पडिक्कमंति, तओ तेसिंपि तसत्तं पावति, अतो पुणरुत्तं न भवइ, जे चेव अभिक्कमणाईणि जाणंति ते चेव तसा भण्णंति, न पुण अलाबुतवुसाईणो वितितिविसेसा ओहसण्णाए वट्टमाणा अभिक्कमणादीणि कुव्वंता तसा भवंति, सीसो आह--

पृथ्व्या-दीनां-सचेतनता

॥१४०॥

विगलिंदियावि न जाणंति जहा अम्हे अभिक्कमणपडिक्कमणादीणि कुव्वामो तहा पंचिंदियावि अव्वत्तव्वयत्तणेण केइ ण जाणंति जहा वयं अभिक्कमणपडिक्कमणादीणि कुव्वामोत्ति तो किं ते तसा न भण्णंति?, आयरिओ भणइ-सतिवि य सण्णिभावे ते आहा--रादीसु इंदियत्थेसु इट्ठेसु अभिक्कमंति अभिलसंतित्ति वुत्तं भवइ, अणिट्ठेसु य पडिक्कमंति, उव्वियंतित्ति वुत्तं भवइ, न पुण तहा एगेंदियाण फुडाणि ताणि अभिक्कमणपडिक्कमणादीणि लक्खणाणित्ति, तम्हा सिद्धाणि अभिक्कमणपडिक्कमणादीणि ताणि लक्ख-णाणि तसाणंति, ते य इमे तसा पत्तेयं भण्णंति, तत्थ कीडग्गहणेण किमियाण, 'एगग्गहणे तज्जाईयाणं गहणं भवइ' त्ति न केवलं किमिस्सेगस्स, किंतु सव्वेसिं बेइंदियाणं गहणं कयमिति, पतंगगहणेणं सव्वेसिं चउरिंदियाणं गहणं कयं, कुंथुपिपीलिया-गहणेणं तेइंदिया गहिया, सव्वे नेरइया सव्वे पंचेंदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे मणुया सव्वे देवा सव्वे पाणा परमाह--म्मिया, जमेतं सव्वगहणं एयं अपरिसेसनिमित्तं कयं, कहं ?, जे एते भणिया ते सव्वे तसा भवंति, तओ जहा तिरिक्खजोणि--याणं भेदा भणिता तं० तसा थावरा य, किंतु एते सव्वे तसा भण्णंति, परमाहाम्मिया नाम अपरमं दुक्खं परमं सुहं भण्णइ, सव्वे पाणा परमाधम्मिया--सुहाभिकंखिणोत्ति वुत्तं भवइ, अहवा एयं सुत्तं एवं पढिज्जइ 'सव्वे पाणा परमाहम्मिया' इक्किक्कस्स जीवस्स सेसा जीवभेदा परा, ते य सव्वे सुहाभिकंखिणोत्ति वुत्तं भवति, जो तेसिं एक्कस्स धम्मो सो सेसाणंपित्ति-काऊण सव्वे पाणा परमाहम्मिया, जे एते अभिक्कमणादिलक्खणा जीवा भणिया एतेसिं ते पुढविकातियाईणं पंचण्ह कायाणं छट्ठो जीवनिकायो तसकायोत्ति पवुच्चइ, पवुच्चइ नाम विविहेहिं पगारेहिं वुच्चइ, एस जीवाभिगमो भणिओ, विद्यमान-कर्तृकमिद शरीरं आदिमत्प्रतिनियताकारत्वाद् घटवत् ।

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

इयाणिं अजीवाभिगमओ भण्णइ-अजीवा दुविहा, तं०-पोग्गला नोपाग्गला य, पोग्गला छव्विहा,तं०-सुहुमसुहुमा सुहुमा सुहुमबादरा बादरसुहुमा बादरा बादरबादरा, सुहुमसुहुमा परमाणुपोग्गला, सुहुमा दुपएसियाओ आढत्ता जाव सुहुमपरिणओ अणंतपएसिओ खंधो, सुहुमबादरा गंधपोग्गला, बादरसुहुमा वाउकायसरीरा, बादरा आउकायसरीरा उस्सादीण, बादरबादरा तेउवणस्सइपुढवितससरीराणि, अहवा चउव्विहा पोग्गला, तं०-स्कंधा स्कंधदेशा खंधपएसा परमाणुपोग्गला य, एस पोग्गलत्थिकाओ गहणलक्खणो। णोपोग्गलत्थिकायो तिविहो, तं०-धम्मत्थिकायो अधम्मत्थिकायो आगासत्थिकायो, तत्थ धम्मत्थिकायो गतिलक्खणो अधम्मत्थिकाओ ठिइलक्खणो आगासत्थिकाओ अवगाहलक्खणो, अजीवाभिगमो भणिओ ॥

इयाणिं चरित्तधम्मो 'इच्चेएहिं छहिं जीवनिकाएहिं' (२-१४३) इतिसद्दो अणेगेसु अत्थेसु वट्टइ, तं०-आमंतणे परिसमत्तीए उवप्पदरिसणे य, आमंतणे जहा धम्मएति वा उवएसएति वा एवमादी, परिसमत्तीए जहा 'इति खलु समणे भगवं ! महावीरे' एयमादी, उवप्पदरिसणे जहा 'इच्चेए पंचविहे ववहारे' एत्थ पुण इच्चेतेहिं एसो सद्दो उवप्पदरिसणे दट्ठव्वो, किं उवप्पदरिसयति ?, जे एते जीवाभिगमस्स छ भेया भणिया इच्चेएहिं छहिं जीवनिकाएहिं 'णेव सयं डंडं समारभेज्जा' तत्थ नकारो पडिसेहे वट्टइ, एवसद्दो पायपूरणे, सयमिति-अत्तणो णिद्देसे, डंडो संघट्टणपरितावणादि, समारभणं नाम तस्स संघट्टणादिडंडस्स पवत्तणं, एवं णेवण्णेहिं डंडं समारंभावेज्जा डंडं समारंभंतेवि अन्ने न समणुजाणेज्जा, सीसो भणइ-केच्चिरं कालं ?, आयरिओ भणइ-जावजीवाए,ण उ जहा लोइयाणं विन्नवओ होऊण पच्छा पडिसेवइ, किंतु अम्हाणं जावजीवाए वट्टति, 'तिविहं तिविहेणं'ति सयं मणसा न चिंतयइ जहा वहयामीत्ति, वायाएवि न एवं भणइ-जहा एस वहेज्जउ, काएण सयं न

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

परिहणति, अन्नस्सवि णेत्तादीहिं णो तारिसं भावं दरिसयइ जहा परो तस्स माणसियं णाऊण सत्तोवघायं करेइ, वायाएवि संदेसं न देइ जहा तं घाएहित्ति, काएणवि णो हत्थादिणा सण्णेइ जहा एयं मारयाहि, घातंतंपि अण्णं दट्ठूणं मणसा तुट्ठिं न करेइ, वायाएवि पुच्छिओ संतो अणुमइं न देइ, काएणावि परेण पुच्छिओ संतो हत्थुक्खेवं न करेइ, तस्स भंते ! पडिक्कमामित्ति 'तस्स'त्ति नाम जो सो परितावणादि दंडो, 'भंते !' त्ति भयवं भवान्त एवमादी भगवतो आमंतणं, कहं ?, गणहरा भगवओ सगासे अत्थं सोऊण वताणि पडिवज्जमाणा एवमाहु, पडिक्कमामि नाम ताओ दंडाओ नियत्तामित्ति वुत्तं भवइ, जं पुण पुव्विं अन्नाणभावेण कयं तं णिंदामि नाम 'हा ! दुट्ठु कयं हा ! दुट्ठु कारियं अणुमयंपि हा दुट्ठु। अंतो २ डज्झइ हिययं पच्छाणुतावेण ॥ १ ॥' गरिहामि णाम तिविहं तीताणागतवट्टमाणेसु कालेसु अकरणयाए.अब्भुट्ठेमि, आह–जो एसो दंडनिक्खेवो एवं महव्वयारुहणं तं किं सव्वेसिं अविसेसियाणं महव्वयारुहणं कीरति उदाहो परिक्खिऊणं ?, आयरिओ भणइ- जो इमाणि कारणाणि सद्दहइ, जीवे पुढविकाए न सद्दहइ जे जिणेहिं पण्णत्ते। अणाभिगयपुण्णपावो ण सो उवट्ठावणे जोगो॥१॥एवं आउक्काइए जीवे एवं जाव तसकाइए जीवे, एयारिसस्स पुण समारुभिज्जति, तं०-'पुढविकाइए जीवे सद्दहइ जे जिणेहिं पण्णत्ते। अभिगतपुण्णपावो सो उवट्ठावणाजोगो ॥ १ ॥ एवं आउक्काइए जीवे एवं जाव तसकाइए जीवे, अभिगतपुण्णपावो सो उवट्ठावणाजोगो, छज्जीवनिकाए पढियाए ताहे परिक्खिज्जइ, किं?-परिहरइ ण परिहरइत्ति, जइ परिहरइ तो उवट्ठाविज्जइ, इतरो न उवट्ठाविज्जति, कहं ?, जह महलो पडो रंगिओ न सुंदरो भवइ सो, इयरो रंगिज्जमाणो सुंदरो भवइ, एवं जइ असद्दहियाए छज्जीवनियाए उवट्ठाविज्जइ तो महव्वयाणि न धरेइ, सद्दहियाए छज्जीवणियाए उवट्ठाविज्जमाणे थिरया भवंति सुंदरो य भवइ, जहा वा पासादो कज्जमाणो जइ

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ अ० ॥१४४॥

कयवरं सोहित्ता कज्जइ तो सुंदरो य थिरो य भवइ, असोहिए पुण अथिरो भवइ, एवं कयवरथाणीए मिच्छत्ते असोहिए उव-ट्ठाविज्जइ तो महव्वयाणि न थिराणि भवंति, जहा आउरस्स ओसहं वियरिज्जइ तं जइ वमणविरेयणाणि काऊण दिज्जइ तो लग्गइ, एवं जइ सद्दहितादिसु उवट्ठाविज्जति ता धरेइ महव्वए, असद्दहितासु अथिराणि भवति, जम्हा एते दोसा तम्हा पढियाए कहि-याए सद्दहियाए परिक्खिते परिहरिए, अभिगते णाम जति अपव्वावणिज्जाणं णण्णतरो ण भवति ताहे विसुद्धो उवट्ठाविज्जति, तस्स य महव्वयाणि अभणियाणि न णज्जंति तओ ताणि भण्णंति जहा-'पढमे भंते ! महव्वए' त्ति (३-१४४) पढमंति नाम सेसाणि मुसावादादीणि पडुच्च एतं पढमं भण्णइ, भंते ! त्ति आमंतणं सीसो वएसु उच्चारिज्जंतेसु गुरुणो करेइ, महव्वयं नाम महंतं वतं, महव्वयं कथं ?, सावगवयाणि खुड्डगाणि, ताणि पडुच्च साहूण वयाणि महंताणि भवंति, एत्थ निदरिसणे 'सीयालं भंगसयं' गाहा, न करेइ न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १, न करेइ न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा २ अहवा न करेइ न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ३ न करेइ न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा ४ एते तिण्णिवि भंगा पायसो सुण्णा, तिविहं एगविहेण न करेइ न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा ५ अथवा न करेइ न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ वयसा ६ अहवा न करेइ ण कारवेइ करंतं नाणुजाणइ कायसा ७ एते तिण्णिवि भंगा पायसो सुण्णा, एते सत्त भंगा तिविहं अणमुयंतेण लद्धा, इयाणिं दुविहं तिविहेण-न करेइ न कारवेइ मणसा वयसा कायसा अहवा न करेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा अहवा न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा, एते तिण्णि भंगा दुविहं तिविहेण लद्धा, इदाणिं दुविहं दुविहेण-ण करेइ ण कारवेइ मणसा वयसा १ अहवा न करेइ ण कारवेइ वयसा कायसा २ न करेइ न कारवेइ

व्रतभंगाः ॥१४४॥

*** प्रथम महाव्रतस्य निरूपणं

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

मणसा कायसा ३ अहवा न करेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा ४ अहवा न करेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा ५ अहवा न करेइ करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ६ अहवा न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा ७ अहवा न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा ८ न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा ९, एते नव भंगा दुविहं दुविधेण लद्धा, इदाणिं दुविहं एकविधेण, न करेइ न कारवेइ मणसा अहवा न करेइ न कारवेइ वयसा अहवा न करेइ न कारवेइ कायसा अहवा ण करेइ करंतं णाणुजाणइ मणसा अहवा न करेइ करंतं नाणुजाणइ वयसा अहवा न करेइ करंतं नाणुजाणइ कायसा अहवा न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ मणसा अहवा न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ वयसा अहवा न कारवेइ करंतं नाणुजाणइ कायसा, एते नव भंगा दुविहं एकविहेण लद्धा, इयाणिं एकविहं तिविहेण-ण करेइ मणसा वयसा कायसा अहवा न कारवेइ मणसा वयसा कायसा अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा, एते तिण्णिवि भंगा एकविहं तिविहेण लद्धा, इयाणिं एकविहं दुविधेण-न करेइ मणसा वयसा अहवा न करेइ वयसा कायसा अहवा न करेइ मणसा कायसा अहवा न कारवेइ मणसा वयसा अहवा न कारवेइ मणसा कायसा अहवा न कारवेइ वयसा कायसा अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा अहवा करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा, एते नव भंगा एगविहं दुविहेण लद्धा, इदाणिं एकविहं एकविहेण–न करेइ मणसा अहवा न करेइ वयसा अहवा न करेइ कायसा अहवा न करावेइ मणसा अहवा न करावेइ वयसा अहवा न करावेइ कायसा अहवा करंतं नाणुजाणइ मणसा अहवा करंतं नाणुजाणइ वयसा अहवा करंतं नाणुजाणइ कायसा, एते नव भंगा एकविहं एकविहेण लद्धा, इयाणिं एते सव्वेवि एगओ पिंडिज्जंति, तत्थ तिविहं अणुमुयंतेण सत्त लद्धा, तिविहेण तिण्णि लद्धा, एते संपिंडिया जाया दस,

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

दुविहं दुविहेण णव लद्धा, ते दससु पक्खित्ता, जाया एगूणवीसं, तिविहं एगविहेण णव लद्धा, एते एगूणवीसाए पक्खित्ता, जाया अट्ठवीसं, एकविधं तिविहेण तिण्णि लद्धा, ते अट्ठावीसाए पक्खित्ता, जाया एकतीसा, एकविहं दुविहेण णव लद्धा, ते एकतीसाए पक्खित्ता जाया चत्तालीसं, एकविहं एकविहेण लद्धा णव, तेवि चत्तालीसाए पक्खित्ता, जाया एगूणपण्णं, एते पडुप्पण्णे काले पच्चक्खायंतेण लद्धा, अतीतेवि एत्तिया चेव, अणागएवि एत्तिया चेव, एयाओ तिण्णि एगूणपण्णाओ सत्तचत्तालं भंगसयं भवइ, एत्थ य जो साहूणं भंगो जुज्जइ तेण अधिगारो, सेसा उच्चारियसरिसत्तिकाऊणं परूविया, जम्हा य भगवंतो साधवो तिविहं तिविहेण पच्चक्खायंति तम्हा तेसिं महव्वयाणि भवंति, सावयाणं पुण तिविहं दुविहं पच्चक्खायमाणाणं देसविरईए खुड्डलगाणि वयाणि भवंति, पाणाइवाओ नाम इंदिया आउप्पाणादिणो छव्विहो पाणा य जेसिं अत्थि ते पाणिणो भण्णंति, तेसिं पाणाणमइवाओ, तेहिं पाणेहिं सह विसंजोगकरणन्ति वुत्तं भवइ, तओ पाणाइवायाओ वेरमणं, पाणाइवायवेरमणं नाउं सद्दहिऊण पाणातिवायस्स अकरणं भण्णइ, सव्वं नाम तमेरिसं पाणाइवायं सव्वं–निरवसेसं पच्चक्खामि नो अद्धं तिभागं वा पच्चक्खामि, संपइकालं संवरियप्पणो अणागते अकरणणिमित्तं पच्चक्खाणं, सीसो आह–सो पुण पाणाइवाओ केसु भवइ जओ सो साहू पच्चक्खाणं करेइ ?, आयरिओ भणइ–'से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा' 'से'त्ति निद्देसे वट्टइ, किं निद्दिसति ?, जो सो पाणातिवाओ तं निद्देसेइ, से य पाणाइवाए सुहुमसरीरेसु वा बादरसरीरेसु वा होज्जा, सुहुमं नाम जं सरीरावगाहणाए सुट्ठु अप्पमिति, बादरं नाम थूलं भण्णइ, तत्थ जे ते सुहुमा बादरा य ते दुविहा तं०–तसा य थावरा वा,

३३३	२२२	१११
३२१	३२१	३२१
१३३	३९९	३९९

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

तत्थ तसंतीति तसा, जे एगंमि ठाणे अवट्ठिया चिट्ठंति ते थावरा भण्णंति, तसा वा थावरा वा जीवा पाणेहिं णो विसंजोएज्जा, सुहुमबादरगहणेण दव्वओ गहणं कयं, एगगहणे गहणं तज्जाईयाणमितिकाउं तिण्णिवि खेत्तकालभावा गहिया, इयाणिं एस एव पाणाइवाओ चउव्विहो सवित्थरो भण्णइ,तं०-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, दव्वओ छसु जीवनिकाएसु सुहुमबादरेसु भवति, खेत्तओ सव्वलोगे, किं कारणं?, जेण सव्वलोए तस्स पाणाइवायस्स उपपत्ती अत्थि, कालओ दिया वा राओ वा ते चेव सुहुमबादरा जीवा ववरोविज्जंति, भावओ रागेण वा दोसेण वा, तत्थ रागेण मंसादीणं अट्ठाए, अहवा रागेण कोइ कंचि अणुमरति, दोसेण बितियं मारेइ, जो पुण रागदोसविरहिओ अप्पमत्तो सत्तं घाएइ तस्स पाणाइवाओ ण भवइ, कहं?, जम्हा दव्वओ नामेगे पाणाइवाते णो भावओ १ भावओ नामेगे पाणाइवाते नो दव्वतो २ एगे दव्वओवि भावओवि ३ एगे णो दव्वओ णो भावओ ४, एतेसिं भंगाण णिदरिसणं जहा दुमपुप्फियाए, तमेतं पाणाइवायं णेव सयं मणसा करेज्जा एवं वायाए काएणवि, णो मणसा अण्णं कारवेज्जा णो वायाए अण्णं कारवेज्जा णो काएणं अन्नं कारवेज्जा, पाणाइवायं करंतंपि णो समणुजाणेज्जा मणेणं वायाए काएणं, 'तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि' एतेसिं पयाणं वक्खाणं जहा हेट्ठा, सीसो आह -किमत्थं पाणाइवायवेरमणं कीरइ ?, आयरिओ आह-इहलोगे चेव पाणाइवायं कुव्वमाणो गरहिओ होइ बंधवहादिणो य दोसे कयाइ पावेज्जा, परलोगेसु णियमा दोग्गयं गच्छति, तम्हा पाणाइवायवेरमणं कायव्वंति,सीसो आह–किं कारणं सेसाणि वयाणि मोत्तूण पाणाइवायवेरमणं पढमं भणियंति ?, आयरिओ भणइ-एयं मूलवयं 'अहिंसा परमो धम्मो'त्ति, सेसाणि पुण महव्वयाणि उत्तरगुणा, एतस्स चेव अणुपालणत्थं परूवियाणि, 'पढमे भंते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं'

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

'अहावरे दोच्चे भंते ! महव्वए मुसावायाओ वेरमणं' (४-१४६) तत्थ अहसद्दो अणंतरभावे वट्टइ, कहं ?, पढम-महव्वआ इमं बिइयं अणंतरंति, सेसं तहेव जहा पाणाइवायवेरमणे, णवरं जो विसेसो सो भण्णइ, तत्थ मुसावाओ चउव्विहो, तं०-सब्भावपडिसेहो असब्भूयुब्भावणं अत्थंतरं गरहा, तत्थ सब्भावपडिसेहो णाम जहा णत्थि जीवो नत्थि पुण्णं नत्थि पावं नत्थि बंधो णत्थि मोक्खो एवमादी, असब्भूयुब्भावणं नाम जहा अत्थि जीवो(सव्ववावी) सामागतंदुलमेत्तो वा एवमादी, पयत्थंतरं नाम जो गावि भणइ एसो आसोत्ति, गरहा णाम 'तहेव काणं काणित्ति' एवमादी, सो य मुसावाओ एतेहिं कारणेहिं भासिज्जइ--'से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा' कोहग्गहणेण माणस्सवि गहणं कयं, लोभग्गहणेण माया गहिया, भयहासग्गहणेण पेज्ज-दोसकलहअब्भक्खाणाइणो गहिया, कोहाइग्गहणेण भावओ गहणं कयं, एगग्गहणेण गहणं तज्जातीयाणमितिकाउं सेसावि दव्वखेत्तकाला गहिया । इयाणिं एस चउव्विहो मुसावाओ सवित्थरो भण्णइ, तं०-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, तत्थ दव्वओ सव्वदव्वेसु मुसावाओ भवइ, खेत्तओ लोगे वा अलोगे वा, णो भणेज्जा अणंतपएसिओ लोगो एवमादी, अलोगे अत्थि जीवा पोग्गला एवमादी, कालओ दिया वा राओ वा मुसावायं भणेज्जा, भावओ कोहेणं अज्झक्खाणं देज्जा एवमादी, तत्थ दव्वओ नामेगे मुसावादे नो भावओ१ भावओ नामेगे मुसावादे नो दव्वओ २ एगे दव्वओवि भावओवि ३ एगे णो दव्वओ णो भावओ४ मुसावाओ, तत्थ दव्वओ मुसावाओ णो भावओ, जहा कोई भणिज्जा-अत्थि ते कोई पसुमिगाइणो दिट्ठा ?, ताहे भणइ-णत्थि, एस दव्वओ मुसावाओ णो भावओ, भावओ नो दव्वओ जहा मुसं भणीहामित्ति, तओ तस्स वंजणाणि सहसत्ति सच्चगाणि विणिग्गयाणि ताणि, एस भावओ नो दव्वओ, दव्वओऽवि भावओऽवि जहा मुसावादपरिणओ कोयि तमेव मुसावादं वदिज्जा,

*** द्वितिय् महाव्रतस्य निरूपणं

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

चउत्थो भंगो सुण्णे, सीसो आह-मुसावादे भासिज्जमाणे को दोसो भवइ ?, आयरिओ भणइ–इहलोगे ताव गरहिणिज्जो भवइ, सव्वस्स अविस्ससणिज्जो य जिब्भाछेदणाणि य इहलोगे पावेज्जा, परलोगे पुण नियमा दोग्गइगमणभयं भवति, ' दोच्चे भंते ! जाव वेरमणं ' ।

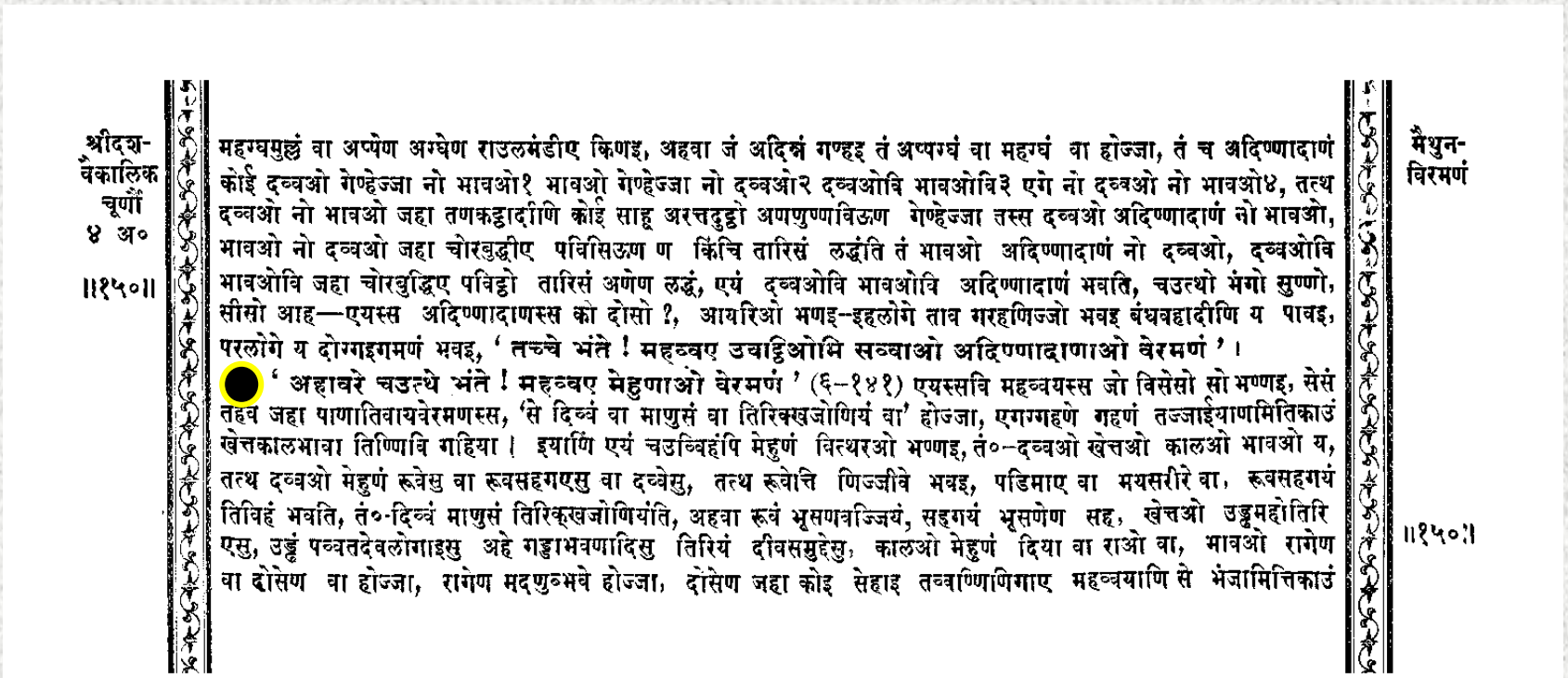
'अहावरे तच्चे भंते! महव्वए अदिण्णादाणाओ वेरमणं'(५-१४१) एतस्सवि महव्वयस्स जो विसेसो सो भण्णइ, सेसं तहेव जहा पाणाइवायस्स, सीसो भणइ-तं अदिण्णादाणं केरिसं भवइ?, आयरिओ भणइ-जं अदिण्णादाणबुद्धीए परेहिं परिगहियस्स वा अपरिग्गहियस्स वा तणकट्ठाइदव्वजातस्स गहणं करेइ तमदिण्णादाणं भवइ, से य अदिण्णादाणे खेत्तं पडुच्च गामे वा नगरे वा रण्णे वा होज्जा, अप्पबहुगहणेण दव्वओ अदिण्णादाणस्स गहणं कयंति, एगगहणेण गहणं तज्जातियाणमितिकाउं खेत्त-कालभावा गहिया, एयं चेव चउव्विहंपि अदिण्णादाणं वित्थरओ भण्णति, तं०-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, तत्थ दव्वओ ताव अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा गेण्हेज्जा, अप्पं परिमाणओ य मुल्लओय, तत्थ परिमाणओ जहा एगं एरंडकट्ठं एवमादि, मुल्लओ जस्स एगो कवड्डओ पूणी वा अप्पमुल्लं, बहुं नाम परिमाणओ मुल्लओ य, परिमाणओ जहा तिण्णि चत्तारिवि वइरा वेरुलिया, मुल्लओ एगमवि वेरुलियं महामोल्लं, अणु मूलगपत्तादी अहवा कट्ठं कलिंचं वा एवमादि, थूलं सुवण्णखोडी वेरुलिया वा उवगरणं, चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा, सव्वंपेयं सचित्तं वा होज्जा अचित्तं वा होज्जा मिस्सयं वा, तत्थ सचित्तं मणुयादि अचित्तं काहावणादि मीसगं ते चेव मणुयाइ अलंकियविभूसिया, खेत्तओ जमेतं दव्वओ भणियं एयं गामे वा णगरे वा गेण्हेज्जा अरण्णे वा, कालओ दिया वा राओ वा गेण्हेज्जा, भावओ अप्पग्घे वा अप्पग्घस्स रायकुलमंडीए महग्घं मोल्लं करेई,

*** तृतिय् महाव्रतस्य निरूपणं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ अ० ॥१५०॥

महग्घमुल्लं वा अप्पेण अग्घेण राउलमंडीए किणइ, अहवा जं अदिन्नं गण्हइ तं अप्पग्घं वा महग्घं वा होज्जा, तं च अदिण्णादाणं कोई दव्वओ गेण्हेज्जा नो भावओ१ भावओ गेण्हेज्जा नो दव्वओ२ दव्वओवि भावओवि३ एगे नो दव्वओ नो भावओ४, तत्थ दव्वओ नो भावओ जहा तणकट्ठादीणि कोई साहू अरत्तदुट्ठो अणणुण्णविऊण गेण्हेज्जा तस्स दव्वओ अदिण्णादाणं नो भावओ, भावओ नो दव्वओ जहा चोरबुद्धीए पविसिऊण ण किंचि तारिसं लद्धंति तं भावओ अदिण्णादाणं नो दव्वओ, दव्वओवि भावओवि जहा चोरबुद्धिए पविट्ठो तारिसं अणेण लद्धं, एयं दव्वओवि भावओवि अदिण्णादाणं भवति, चउत्थो भंगो सुण्णो, सीसो आह—एयस्स अदिण्णादाणस्स को दोसो ?, आयरिओ भणइ–इहलोगे ताव गरहणिज्जो भवइ बंधवहादीणि य पावइ, परलोगे य दोग्गइगमणं भवइ, ' तच्चे भंते ! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं '।

' अहावरे चउत्थे भंते ! महव्वए मेहुणाओ वेरमणं ' (६–१४१) एयस्सवि महव्वयस्स जो विसेसो सो भण्णइ, सेसं तहेव जहा पाणातिवायवेरमणस्स, 'से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा' होज्जा, एगग्गहणे गहणं तज्जाईयाणमितिकाउं खेत्तकालभावा तिण्णिवि गहिया। इयाणिं एयं चउव्विहंपि मेहुणं वित्थरओ भण्णइ, तं०–दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ य, तत्थ दव्वओ मेहुणं रूवेसु वा रूवसहगएसु वा दव्वेसु, तत्थ रूवेत्ति णिज्जीवे भवइ, पडिमाए वा मयसरीरे वा, रूवसहगयं तिविहं भवति, तं०-दिव्वं माणुसं तिरिक्खजोणियंति, अहवा रूवं भूसणवज्जियं, सहगयं भूसणेण सह, खेत्तओ उड्ढमहोतिरि एसु, उड्ढं पव्वतदेवलोगाइसु अहे गड्डाभवणादिसु तिरियं दीवसमुद्देसु, कालओ मेहुणं दिया वा राओ वा, भावओ रागेण वा दोसेण वा होज्जा, रागेण मदणुब्भवे होज्जा, दोसेण जहा कोइ सेहाइ तव्वण्णिणिगाए महव्वयाणि से भंजामित्तिकाउं

मैथुन-विरमणं

॥१५०॥

*** चतुर्थ महाव्रतस्य निरूपणं

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ अ० ॥१५१॥

मेहुणं सेवेज्जा, तत्थ दोससमुत्थो रागो, रागो पुण णियमा अत्थि, तं च मेहुणं दव्वओ सेवेज्जा णो भावओ, पढमो भंगो मेहुणे णत्थि, किं कारणं ?, जेण भावेण विणा तस्स संभवो नत्थि, भणियं च- " कामं सव्वपदेसुवि उस्सग्गववायधम्मया दिट्ठा। मोत्तुं मेहुणभावं ण विणा सो रागदोसेहिं ॥ १ ॥ " अण्णे पुण आयरिआ भणंति, जहा इत्थियाए अकामियाए पुरिसेण सेविज्जमाणीए दव्वओ मेहुणं णो भावओ भवइ, तत्थ जे से भावओ ण दव्वओ सो मेहुणसन्नापरिणयस्स असंपत्तीए लब्भति-त्ति, दव्वओवि भावओवि मेहुणसन्नापरिणयस्स मेहुणसंपत्तीए भवइ, चउत्थो भंगो सुण्णो, सीसो आह—मेहुणे को दोसो ?, आयरिओ भणइ–बिब्भमुब्भन्तचित्तयस्स पकिन्निंदियस्स ताव सुहं चेव णिच्छययो णत्थि, रागदोसा य तंमि अवस्समेव उदि-ज्जंति, ते य रागदोसा संसारहेउणो भणिया, अतो सव्वपयत्तेण तं वज्जेयव्वंति, ' चउत्थे भंते! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं '।

अहावरे पंचमे भंते ! महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं (७-१४८) एतस्सवि महव्वयस्स जो विसेसो सो भण्णइ, सेसं तहेव जहा पाणाइवायवेरमणे, सो य परिग्गहो चेयणाचेयणेसु दव्वेसु मुच्छानिमित्तो भवइ, से गामे वा इति एतेण खेत्तगहणं कयं, अप्पं वा एवमादिग्गहणेणं एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाणमितिकाउं कालभाववावि गहिया,इदाणिं एसो चउव्विहोवि परिग्गहो वित्थरओ भण्णइ-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, तत्थ दव्वओ सव्वदव्वेहिं, मुत्ताणऽमुत्ताण य समुदायो लोगो भवइ, तंपि अनियत्ततण्ह-त्तणेण पत्थयति, खेत्तओ सव्वलोगे, सव्वं लोगं ममायति, (कालओ दिया वा राओ वा) भावओ अप्पग्घं वा महग्घं वा ममाएज्जा, सो य परिग्गहो कस्सइ दव्वओ होज्जा णो भावओ १ कस्सइ भावओ णो दव्वओ २ कस्सइ भावओवि दव्वओवि ३ कस्सइ न

परिग्रह-विरमणं

॥१५१॥

*** पंचमं महाव्रतस्य निरूपणं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ अ० ॥१५२॥

भावओ न दव्वओ४, तत्थ पढमे भंगे साहुणो मुच्छमगच्छंतस्स दव्वओ परिग्गहो भवइ णो भावओ, भणियं च-'ण सो परिग्गहो वुत्तो, इइ वुत्तं महेसिणा ।' बिइओ भंगो मुच्छियस्स असंपत्तीए भवति, तइओ भंगो उवकरणे मुच्छियस्स जइणो संपत्तीए दव्वओवि भावओवि परिग्गहो भवइ, चउत्थो भंगो सुण्णो, सीसो आह-परिग्गहे परिगिज्झमाणे को दोसो ?, आयरिओ आह-जो परिगिण्हतो भवइ सो जहा सउणो मंसपेसीगहियहत्थो अन्नेहिं मंसासीहिं सउणेहिं णिव्वुइं न लहति तहा सोवि रायतक्करमा-दीएहिं णिव्वुइं न लहइ, अज्जणरक्खणनिमित्तं च दोससहस्साइं पावइ, परलोगे य दोग्गयं साहेइ, **'पंचमे भंते ! महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं'** ।

अहावरे छट्ठे भंते ! वए राईभोयणाओ वेरमणं (८-१४९) सेसं तहेव जहा पाणाइवायवेरमणे, णवरं इह जो विसेसो सो भण्णइ, तत्थ राई पसिद्धा, तीए राईए भोयणं राईभोयणं, तं पुण राई घेत्तुं दिवसओ भुंजइ ४, से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, असणादिग्गहणेण दव्वओ गहणं कयं भवइ, एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाणमितिकाउं सेसा तिण्णिवि खेत्त-कालभावा गहिया, इयाणिं चउव्विहंपि राईइ भोयणं वित्थरओ भण्णइ, तं०- दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, तत्थ दव्वओ असणं वा, असिज्जइ खुहितेहिं जं तमसणं जहा कूरो एवमादीति, पिज्जंतीति पाणं, जहा मुद्दियापाणगं एवमाइ, खज्जतीति खादिमं, जहा मोदओ एवमादि, सादिज्जति सादिमं, जहा सुंठिगुलादी, खेत्तओ समयखेत्ते, समयो कालो भण्णइ, सो जम्मि अत्थि तं समयखेत्तं, सो य अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु भवइ, कालओ राइं भुंजेज्जा, भावओ चउभंगो, तत्थ दव्वओ नो भावओ जहा उग्गओ वा सूरिओ अणत्थमिओ वत्तिकाऊणं अरत्तो अदुट्ठो वा भुंजेज्जा, अहवा आगाढे कारणे तस्स दव्वओ राईभोयणं

रात्रिभोजन विरमणं

॥१५२॥

*** षष्ठं व्रतं 'रात्रिभोजनस्य' निरूपणं

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

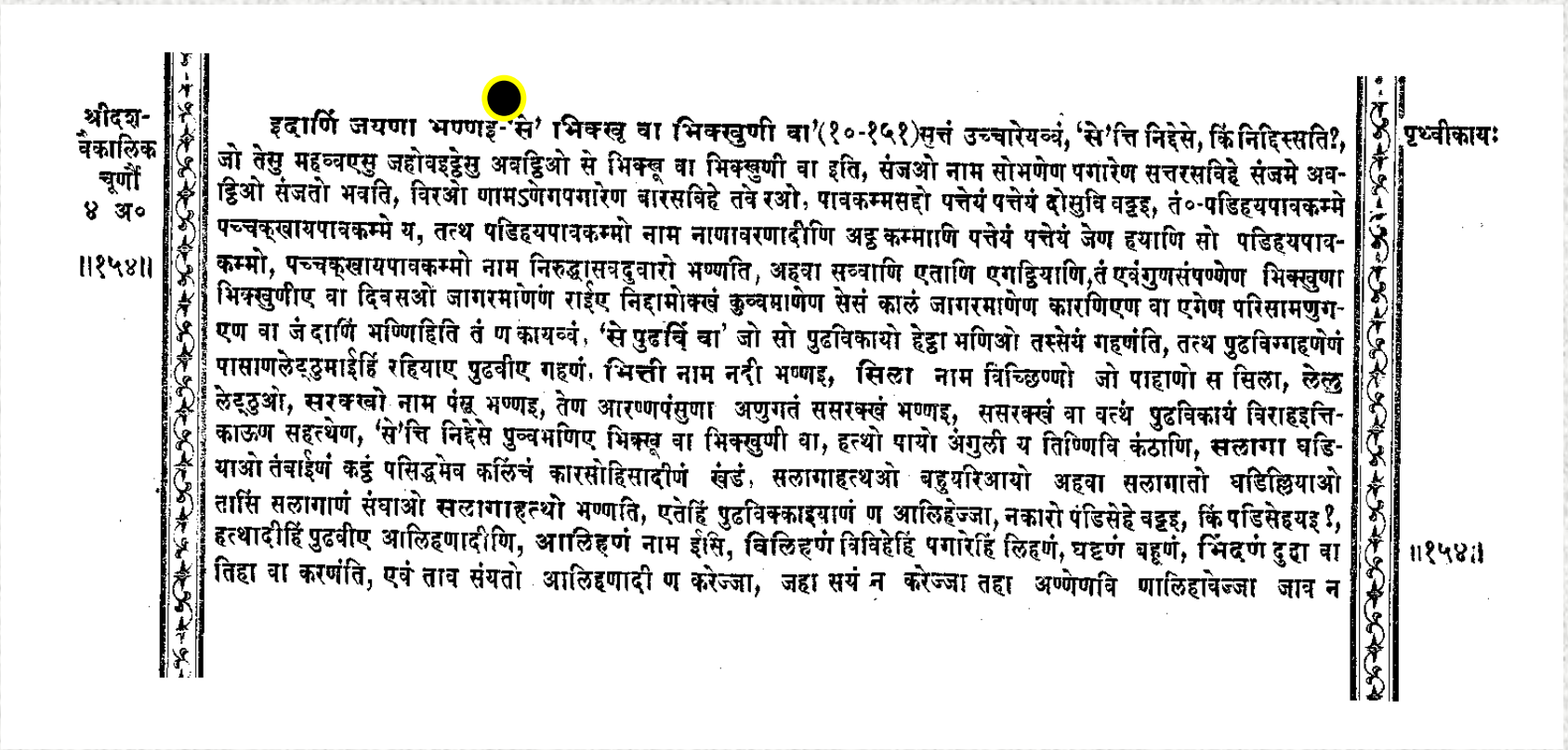
दीप अनुक्रम [३२-७५]

नो भावओ, भावओ नो दव्वओ जहा कोऽवि चिंतेति-को जाणइ कयावि सूरो उद्वेइ ? इयाणिं चेव भुंजामि, सो य सूरो पुव्विं चेव उट्ठिओ मेहादिणा आवरिओ नावधारिज्जइ जहा उट्ठिओत्ति, अहवा रात्तिं भुंजामीत्ति संकप्पेति, न चेव संपत्ती जाया, तस्स भावओ राईभोयणं णो दव्वओ, दव्वओवि भावओवि आउट्टियाए राइं भुंजइ, चउत्थो भंगो सुन्नो, 'छट्ठे भंते! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं' एत्थ सीसो आह- पंच महव्वयाणि जिणपवयणे सिद्धाणि, तो किमेयं राईभोयणं महव्वएसु वण्णिज्जमाणेसु भणियंति ?, आयरिय आह- पुरिमपच्छिमगाण जिणवराणं काले पुरिसविसेसं पप्प पट्ठवियं, तत्थ पुरिमजिणकाले पुरिसा उज्जुजडा पच्छिमजिणकाले पुरिसा वंकजडा, अतो निमित्तं महव्वयाण उवरिं ठवियं, जेण तं महव्वयमिव मन्नंता ण पिल्लेहिंति, मज्झिमगाणं पुण एयं उत्तरगुणेसु कहियं, किं कारणं ?, जेण ते उज्जुपण्णत्तणेण सुहं चेव परिहरंति 'इच्चेयाति' (९-१४९) इतिसद्दो परिसमत्तीए वट्टइ, एयाइं नाम जाणि इयाणिं चेव हेट्ठा भणियाणि एताणि पंचवि रातीभोयणवेरमणछट्ठाणि 'अत्तहियट्ठाए उवसंपज्जित्ताण विहरामि' अत्तहियं नाम मोक्खो भण्णइ, सेसाणि देवादीणि ठाणाणि बहुदुक्खाणि अप्पसुहाणि य, कहं?, जम्हा तत्थवि इस्सरो इस्सरतरो इस्सरतमो एवमादी हीणमज्झिमउत्तिमविसेसा उवलब्भंति, अणेगंतियाणि य सोक्खाणि, मोक्खे य एते दोसा नत्थि, तम्हा तस्स अट्ठयाए एयाणि पंच महव्वयाणि राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठाए उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, उवसंपज्जित्ताणं विहरामि नाम ताणि आरुहिऊण अणुपालयंतो अब्भुज्जएण विहारेण अणिस्सियं गामनगरपट्टणाईणि विहरिस्सामि, अहवा गणहरा भगवतो सगासे पंचमहव्वयाणं अत्थं सोऊण एयं भणंति- 'उवसंपज्जित्ताणं विहरिस्सामि' ॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ अ० ॥१५४॥

इदाणिं जयणा भण्णइ-'से' भिक्खू वा भिक्खुणी वा'(१०-१५१)सुत्तं उच्चारेयव्वं, 'से'त्ति निद्देसे, किं निद्दिस्सति?, जो तेसु महव्वएसु जहोवइट्ठेसु अवट्ठिओ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इति, संजओ नाम सोभणेण पगारेण सत्तरसविहे संजमे अवट्ठिओ संजतो भवति, विरओ णामऽणेगपगारेण बारसविहे तवे रओ, पावकम्मसद्दो पत्तेयं पत्तेयं दोसुवि वट्टइ, तं०-पडिहयपावकम्मे पच्चक्खायपावकम्मे य, तत्थ पडिहयपावकम्मो नाम नाणावरणादीणि अट्ठ कम्माणि पत्तेयं पत्तेयं जेण हयाणि सो पडिहयपावकम्मो, पच्चक्खायपावकम्मो नाम निरुद्धासवदुवारो भण्णति, अहवा सव्वाणि एताणि एगट्ठियाणि,तं एवंगुणसंपण्णेण भिक्खुणा भिक्खुणीए वा दिवसओ जागरमाणेण राईए निद्दामोक्खं कुव्वमाणेण सेसं कालं जागरमाणेण कारणिएण वा एगेण परिसामणुगएण वा जं दाणिं भण्णिहिति तं ण कायव्वं, 'से पुढविं वा' जो सो पुढविकायो हेट्ठा भणिओ तस्सेयं गहणंति, तत्थ पुढविग्गहणेणं पासाणलेट्ठुमाईहिं रहियाए पुढवीए गहणं, भित्ती नाम नदी भण्णइ, सिला नाम विच्छिण्णो जो पाहाणो स सिला, लेलु लेट्ठुओ, सरक्खो नाम पंसू भण्णइ, तेण आरण्णपंसुणा अणुगतं ससरक्खं भण्णइ, ससरक्खं वा वत्थं पुढविकायं विराहइत्तिकाऊण सहत्थेण, 'से'त्ति निद्देसे पुव्वभणिए भिक्खू वा भिक्खुणी वा, हत्थो पायो अंगुली य तिण्णिवि कंठाणि, सलागा घडियाओ तंबाईणं कट्ठं पसिद्धमेव कलिंचं कारसोहिसादीणं खंडं, सलागाहत्थओ बहुयरिआयो अहवा सलागातो घडिल्लियाओ तासिं सलागाणं संघाओ सलागाहत्थो भण्णति, एतेहिं पुढविक्काइयाणं ण आलिहेज्जा, नकारो पडिसेहे वट्टइ, किं पडिसेहयइ?, हत्थादीहिं पुढवीए आलिहणादीणि, आलिहणं नाम ईसि, विलिहणं विविहेहिं पगारेहिं लिहणं, घट्टणं बहूणं, भिंदणं दुहा वा तिहा वा करणंति, एवं ताव संयतो आलिहणादी ण करेज्जा, जहा सयं न करेज्जा तहा अण्णेणवि णालिहावेज्जा जाव न

पृथ्वीकायः

॥१५४॥

*** अत्र 'जयणाया:' स्वरुपम् दर्शयते

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ अ० ॥१५५॥

भिंदाविज्जा, तहा अन्नंपि आलिहंतं वा जाव भिंदंतं वा ण समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणसा वयसा कायसा तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि जाव वोसिरामि ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा जाव परिसागओ वा' इमं परिहरेज्जा'से उदगं वा' 'से'त्ति जो सो आउक्कायो हेट्ठा भणिओ तस्स निद्देसो, उदगग्गहणेण भोमस्स आउक्कायस्स गहणं कयं, उस्सा नाम निसिं पडइ, पुव्वण्हे अवरण्हे वा, सा य उस्सा तेहो भण्णइ, हिमं लोगपसिद्धं, जो सिसिरे तुसारो पडइ सो महिया भण्णइ, करगा लोगपसिद्धा, हरतणुओ भूमिं भेत्तूण उट्ठेइ, सो य उवुगाइसु तिंताए भूमीए ठविएसु हेट्ठा दीसति, अंतलिक्खपाणियं सुद्धोदगं भण्णइ, जं एतेसिं उदगभेएहिं बिंदुसाहियं भवइ तं उदउल्लं भन्नइ, ससिणिद्धं जं न गलति तिंतयं तं ससणिद्धं भण्णइ, एतेहिं उदउल्लससणिद्धेहिं अणुगतं कायं वा वत्थं वा णामुसेज्जा, आमुसणं नाम ईषत्स्पर्शनं आमुसनं अहवा एगवारं फरिसणं आमुसणं, पुणो पुणो संफुसणं, ईसिं निपीलणं आपीलणं, अच्चत्थं पीलणं पवीलणं, एगं वारं जं अक्खोडेइ, तं बहुवारं पक्खोडणं, ईसित्ति तावणं आतावणं, अतीव तावणं पतावणं, एवं ताव सयं णो आमुसाईणि करेज्जा, जहा सयं न करेज्जा तहा अण्णेणावि नामुसावेज्जा जाव न पयावेज्जा, तहा अण्णंपि आमुसंतं वा जाव पयावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहंतिविहेण वोसिरामि ॥

'से भिक्खू वा भिक्खुणी संजतविरतपडिहतपच्चक्खायपावकम्मे जाव परिसागओ वा' इमं परिहरेज्जा 'से अगणिं वा' (१२-१५३) 'से'त्ति निद्देसे वट्टति, जो जो अगणिक्कातो हेट्ठा भणितो तस्स निद्देसो, अगणी नाम

अप्कायः

॥१५५॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ अ० ॥१५६॥

जो अयपिंडाणुगयो फरिसगेज्झो सो आयपिंडो भण्णइ, इंगालो नाम जालारहिओ, मुम्मुरो नाम जो छाराणुगओ अग्गी सो मुम्मुरो, अच्ची नाम आगासाणुगआ परिच्छिण्णा अग्गिसिहा, अलायं नाम उम्मुआहियं पंज(पज्ज)लियं, जाला पसिद्धा चेव, इंधणरहिओ सुद्धागणी उक्काविज्जुगादि, एतारिसं अगणिक्कायं ण उंजेज्जा, उंजणं णाम अवमंतुअणं, घट्टणं परोप्परं उम्मुगाणि घट्टयति, अण्णेण वा तारिसेण दव्वजाएण घट्टयति, उज्जलणं नाम वीयणमाईहिं जालाकरणमुज्जालणं, निव्वावणं नाम विज्झावणं, एवं ताव सयं णो उंजणाईणि करेज्जा, जहा य सयं न करेज्जा तहा अन्नं न उंजावेज्जा, जहा न उंजावेज्जा तहा अण्णं उंजंतं वा जाव निव्वावेंतं वा ण समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणसा वयसा कायसा तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय जाव परिसागओ वा इमं परिहरेज्जा 'से सीएण वा विधुवणेण वा' (१३-१५४) 'से'त्ति निद्देसे वट्टइ, जो वाउकाओ हेट्ठा भणिओ तस्स निद्देसे, सीतं चामरं भण्णइ, विद्धुवणं वीयनं णाम, तालियंटो नाम लोगपसिद्धो, पत्तं नाम पोमिणिपत्तादी, साहा रुक्खस्स डालं, साहाभंगओ तस्सेव एगदेसो, पेहुणं मोरपिच्छगं वा अण्णं वा किंचि तारिसं पिच्छं, पिहुणहत्थओ मोरिगकुच्चओ, गिद्धपिच्छाणि वा एगओ बद्धाणि, चेलं नाम सगलं वत्थं, चेलकण्णो तस्सेव एगदेसो, हत्थमुहादीणि लोगपासिद्धाणि, एतेहिं कारणभूएहिं अप्पणो वा कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं- उसिणोदगं वा सयं ताव न फुमेज्जा न वीएज्जा, जह सयं तहा अण्णं ण फुमावेज्जा न वीयावेज्जा, अण्णं फुमंतं वा वीयंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणसा वयसा कायसा जाव वोसिरामि ॥

तेजःकायः वायुकायः

॥१५६॥

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ४ अ० ॥१५७॥

● से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय जाव परिसागओ वा इमं परिहरेज्जा 'से बीएसु वा बीयपइट्ठेसु वा' (सू.१४-१५४) 'से'त्ति निद्देसे वट्टइ, जो सो वणस्सइकाओ हेट्ठा भणिओ तस्स निद्देसो, बीयं नाम सालिवीहादीणं भण्णइ, पइट्ठियं नाम आहारसेज्जाफलगादीणि बीयाणं उवरिट्ठियाणित्ति, रूढं णाम बीयाणि चेव फुडियाणि, ण ताव अंकुरो निप्फज्जइ, रूढपइट्ठियं नाम जं तेसिं उवरिं आहारसेज्जाऽऽसणफलगपीढगादि ठवियं तं रूढपतिट्ठियं भण्णइ, जायं नाम एताणि चेव थंबीभूयाणि, जातपतिट्ठियं नाम तेसु चेव थंबेसु जं किंचि आहारसेज्जासणफलगपीढगाई ठवियंति, हरिताणि नाम वच्चादीणि, हरियपतिट्ठियं नाम जं किंचि आहारसेज्जासणफलगपीढगादि ठवितं, छिण्णग्गहणेणं वाउणा भग्गस्स अण्णेण वा परसुमाइणा छिण्णस्स अद्दभावे वट्टमाणस्स अपरिणयस्स गहणं कयमिति, छिण्णपइट्ठियं नाम तंमि चेव अपरिणए किंचि आहारसेज्जासणफलगपीढगादी ठवितं, सचित्तकोलपडिणिस्सियसद्दो दोसु वट्टइ, सचित्तसद्दे य कोलसद्दे य, सचित्तपडिणिस्सियाणि दारुयाणि सचित्तकोलपडिनिस्सिताणि, तत्थ सचित्तगहणेण अंडगउद्देहिगादीहिं अणुगताणि जाणि दारुगादीणि सचित्तणिस्सियाणि, कोलपडिनिस्सियाणि नाम कोलो घुणो भण्णति, सो कोलो जेसु दारुगेसु अणुगओ ताणि कोलपडिनिस्सियाणि, तेसु सचित्तेसु कोलपडिनिस्सितेसु णो सयं गच्छेज्जा जाव न तुयट्टेज्जा, तत्थ गमणं आगमणं वा चंकमणं भण्णइ, चिट्ठणं नाम तेसिं उवरिं ठियस्स अच्छणं, निसीयणं उवट्ठियस्स जं आवेसणं, तुयट्टणं निवज्जणं, जहा य सयं गमणादीणि न करेज्जा तहा अन्नं न गच्छावेज्जा जाव न तुयट्टावेज्जा तहा अन्नमवि गच्छंतं वा जाव तुयट्टंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए जाव वोसिरामि ॥

तेजःकायः वायुकायः

॥१५७॥

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

'से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय जाव परिसागओ वा' "से कीडं वा पयंगं वा" (सू.१५-१५५) 'से'त्ति निद्देसे वट्टइ, जो सो तसकायो हेट्ठा भणिओ तस्स निद्देसे, कीडपयंगा कुंथुपिपीलियाओ य पुव्वभणिया, तेसिं अन्नतरो कीडगाईणं जइ होज्जा हत्थंमि वा जाव संथारगंमि वा, तत्थ पादो बाहू ऊरुतो पसिद्धाओ, सेज्जा सव्वंगिया, संथारो अट्ठाइज्जा हत्था आयतो हत्थं सचउरंगुलं विच्छिण्णो, अण्णतरग्गहणेण बहुविहस्स तहप्पगारस्स संजतपायोग्गस्स उवगरणस्स गहणं कयंति, एतेहिं अत्थादीहिं पुव्वभणियाणं कीडाण अण्णतरो पाणो उवच्छिएज्जा, तओ तं उवच्छीणं जाणिऊणं संजयामेवत्ति जहा तस्स पीडा ण भवति तहा घेत्तूणं एगंते नाम जत्थ तस्स उवघाओ न भवइ तत्थ एगंते अवणेज्जा, जहा णो णं संघातमावज्जइ, संघातं नाम परोप्परतो गत्ताणं संपिंडणं, एगग्गहणेण गहणं तज्जाईयाणंतिकाऊणं सेसावि परितावणकिलावणादिभेदा गहिया, आवज्जणा नाम नो तहा गिण्हेज्जा जहा संघातणाइ दोसो संभवति, एसा पुढविमादीणि पडुच्च पाणतिवातवेरमणअणुपालणत्थं जयणा भणिया, चउत्थो छज्जीवणियाए अधिगारो गओ ॥

इयाणिं उवएसोत्ति पंचमो अहिगारो भण्णइ, तं० 'अजयं चरमाणो उ, पाणभूयाइं हिंसओ। बंधई पावतं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं (३२-१५६) अजयं नाम अणुवएसेणं, चरमाणो नाम गच्छमाणो, द्रुतं गच्छमाणो संतो वग्घाइयं करेज्जा, कदाइ सरीरविराहणावि होज्जा, पाणाणि चेव भूयाणि, अहवा पाणग्गहणेण तसाणं गहणं, सत्ताणं विविहेहिं पगारेहिं हिंसमाणो बंधए पावगं कम्मं, बंधइ नाम एक्केक्कं जीवप्पदेसं अट्ठहिं कम्मपगडीहिं आवेढियपरिवेढियं करेति, पावगं नाम असुभकम्मोवचयो घणचिक्कणो भण्णइ, परतित्थियाण य गच्छमाणाणं चिट्ठमाणाण य कम्मबंधो न भवति, अतो तप्पडि-

॥१५८॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ अ० ॥१५९॥

सेहनिमित्तं सीसस्स भयुव्वेयनिमित्तं पावगहणंति, कडुयं फलं नाम कुदेवत्तकुमाणुसत्तनिव्वत्तकं पमत्तस्स भवइ, एवं 'अजयं चिट्ठमाणो उ, पाणभूयाइं हिंसई। बंधती' सिलोगो (३३-१५६) चिट्ठमाणो णाम ठितओ, सो अजओ अच्छमाणो हत्थपादादीणि छुभति, ताणि नित्थुब्भमाणो सत्तोवरोहे वट्टइ, सेसं तहेव। एवं 'अजयं आसमाणो उ, पाणभूयाइ हिंसई। सिलोगो (३४-१५६) आसमाणो नाम उवट्ठिओ, सो तत्थ सरीराकुंचणादीणि करेइ,हत्थपाए विच्छुभइ, तओ सो उवरोधे वट्टइ, सेसं तहेव, एवं 'अजयं सुयमाणो उ, पाणभूयाइ हिंसई' सिलोगो (३५-१५६) अजयंति आउंटमाणो पसारेमाणो य ण पडिलेहइ ण पमज्जइ, सव्वराइं सुवइ दिवसओवि सुयइ, पगामं निगामं वा सुवइ, सेसं तहेव। अजयं भुंजमाणो उ, पाणभूयाइं हिंसई। बंधई' सिलोगो (३६-१५६) अजयं कायसिगालखइयाईहिं भुंजइ तं च खद्धं एवमादि, सेसं तहेव 'अजयं भासमाणो उ, पाणभूयाइं हिंसई। बंधई' सिलोगो (३७-१५६) अजयं गारत्थियभासाहिं भासइ दड्डुरेण वेरत्तियासु एवमादिसु, सेसं तहेव। सीसो आह- 'कहं चरे कहं चिट्ठे, कहमासे कहं सए। कहं भुंजंतो भासंतो,पावकम्मं न बंधइ? (३८-१५५) जइ एवं गमणादीणि कुव्वमाणस्स पावओ कडुगफलविवागो भवइ तो कहं जीवाउले लोगे कायव्वंति?, आयरिओ भणइ-सइ जीवबाहुल्ले ओवाएण सक्कइ अत्तणो हियं काउं, दिट्ठंतो नावा, जहा जलमज्झे गच्छमाणा अपरिस्सवा नावा जलकंतारं वीईवयइ, न य विणासं पावइ, भणियं च- "जलमज्झे जहा नावा, सव्वओ निपरिस्सवा। गच्छंति चिट्ठमाणा वा, न जलं परिगिण्हइ ॥ १ ॥" एवं साहूवि जीवाउले लोगे गमणादीणि कुव्वमाणो संवरियासवदुवारत्तणेण संसारजलकंतारं वीईवयइ, संवरियासवदुवारस्स न कुओवि भयमत्थि, भणियं च- "एवं जीवाउले लोगे, साहू संवरियासवो। गच्छंतो चिट्ठमाणो वा, पावं नो

यत्नोपदेशः ॥१५९॥

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

परिगेण्हइ ॥ १ ॥" सो य उवाओ इमो, तं०- 'जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए। जयं भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बंधइ ॥ (३९-१५६) तत्थ पढमं जयं चरे, जयं नाम उवउत्तो जुगंतरदिट्ठी दट्ठूण तसे पाणे उद्धट्टु पाए रीएज्जा, एवं जयणं कुव्वंतो कुम्मो इव गुत्तिंदिओ चिट्ठेज्जा, एवं आसेज्जावि, एवं निद्दामोक्खं करेमाणो आउंटणपसारणाणि पडिलेहिय पमज्जिय करेज्जा, एवं दोसवज्जियं भुंजेज्जा, एताणि गमणचिट्ठणादीणि जयणाए कुव्वमाणो पावं कम्मं न बंधइ ।

किंच- 'सव्वभूयप्पभूयस्स, सम्मं भूताइं पासओ । पिहियासवस्स दंतस्स, पावं कम्मं न बंधइ। (४०-१५६) सव्वभूता- सव्वजीवा तेसु सव्वभूतेसु अप्पभूतो, कहं ?, जहा मम दुक्खं अणिट्ठं इह एवं सव्वजीवाणंतिकाउं पीडा णो उप्पायइ, एवं जो सव्वभूएसु अप्पभूतो तेण जीवा सम्मं उवलद्धा भवंति, भणियं च "कट्ठेण कंटएण व पादे विद्धस्स वेदणा तस्स । जा होइ अणेव्वाणी णायव्वा सव्वजीवाणं ॥ १ ॥" पिहियाणि पाणिवधादीणि आसवदाराणि जस्स सो पिहियासवदुवारो तस्स पिहियासवदुवारस्स, दंतो दुविहो- इंदिएहिं नोइंदिएहि य, तत्थ इंदियदंतो सोइंदियपयारनिरोहो सोइंदियविसयपत्तेसु य सद्देसु रागदोसविनिग्गहो, एवं जाव फासिंदिय विसयपत्तेसु य फासेसु रागदोसविनिग्गहो, नोइंदियदंतो नाम कोहोदयनिरोहो उदयपत्तस्स य कोहस्स विफलीकरणं, एवं जाव लोभोत्ति, एवं अकुसलमणनिरोहो कुसलमणउदीरणं च, एवं वयीवि काएवि भाणियव्वं, एवंविहस्स इंदियनोइंदियदंतस्स पावं कम्मं न बंधइ, पुव्ववद्धं च बारसविहेण तवेण सो झिज्झइ। सीसो आह- चरित्त-धम्मो अणुट्ठेतव्वो किं कारणं अहिज्जिएणंति, आयरिओ भणइ- 'पढमं नाणं तओ दया,एवं चिट्ठइ सव्वसंजए । अन्नाणी किं काहिति, किं वा णाहिति छेयपावगं । (४१-१५७) पढमं ताव जीवाभिगमो भणितो, तओ पच्छा जीवेसु दया, एव-

सद्दोऽवधारणे, किमवधारयति ?, साधूणं चेव संपुण्णा दया जीवाजीवविसेसं जाणमाणाणं, ण उ सक्कादीणं जीवाजीवविसेसं अजाणमाणाणं संपुण्णा दया भवइत्ति, चिट्ठइ नाम अच्छइ, सव्वसद्दो अपरिसेसवादी, संजओ पसिद्धो चेव, सव्वसंजताणं अपरिसेसाणं जीवाजीवादिसु णातेसु सतरसविधो संजमो भवइ, जो पुण अजाणी सो किं काहिई ?, कहं वा सो छेयपावगाणं विसेसं णाहिति ?, तत्थ छेयं नाम हितं, पावं अहियं, ते य संजमो असंजमो य, दिट्ठंतो अंधलओ, महानगरदाहे नयणविउत्तो ण याणाति केण दिसाभाएण मए गंतव्वंति, तहा सोवि अजाणो नाणस्स विसेसं अयाणमाणो कहं असंजमदवाउ णिग्गच्छिहिति ?, किंच- 'सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं। उभयंपि जाणई सोच्चा, जं छेयं तं समायरे (४२-१५७) सोच्चा नाम सुत्तत्थतदुभयाणि सोऊण णाणदंसणचरित्ताणि वा सोऊण जीवाजीवादी पयत्था वा सोऊण जाणइ कल्लाणं पावयं च, कल्लं नाम नीरोगया, सा य मोक्खो, तमणेइ ज तं कल्लाणं, ताणि य णाणाईणि, जेण य कएण कम्मं वज्झइ तं पावं सो य असंजमो, तंपि सोऊण जाणइ. उभयं नाम कल्लाणं पावयं च दोवि सोच्चा जाणइ, केइ पुण आयरिया कल्लाणपावयं च देसविरयस्स पावयं इच्छंति, तमवि सोऊण जाणति, एवं सोच्चा जाणिऊण किं कायव्वंति आह- 'जं छेयं तं समायरे' एताणि कल्लाणपावयाणि जाणिऊण जमिह परंमि य लोए हितं तं समायरिव्वंति। किंच- 'जो जीवेवि न याणाइ, अजीवेवि न याणई। जीवाजीवे अयाणंतो, कहं से णाहिति संजमं (४३-१५७) जो जीवे वि वियाणाइ, अजीवेवि वियाणइ। जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु नाहिति संजमं (४४-१५७) एत्थ निदरिसणं जो साहुं जाणइ सो तप्पडिपक्खमसाधुमवि जाणइ, एवं जस्स जीवाजीवपरिण्णा अत्थि सो जीवाजीवसंजमं वियाणइ, तत्थ जीवा न हंतव्वा एसो जीवसंजमो भण्णइ,

॥१६१॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

अजीवावि मंसमज्जहिरण्णादिदव्वा संजमोवघाइया ण घेत्तव्वा एसो अजीवसंजमो, तेण जीवा य अजीवा य परिण्णाया जो तेसु संजमइ। किंच-"जीवा जस्स परिन्नाया, वेरं तस्स न विज्जइ। न हु जीवे अयाणंतो, वहं वेरं च जाणइ ॥ १ ॥" तहा 'नाणं पगासगं सोहओ तवो संजमो य गुत्तिकरो। तिण्हंपि समाओगे, मोक्खो जिणसासणे भणिओ ॥ २ ॥

इयाणिं धम्मफलं भण्णइ--' जया जीवे अजीवे य, दोवि एए वियाणइ। तया गइं बहुविहं, सव्वजीवाण जाणइ। (४६।५०--१५७) गतिं बहुविहं नाम एक्केका अणेगभेया जाणति, अहवा नारगादिसुगतिसु अणेगाणि तित्थगरादिउवएसेण जाणइ, जया गतिं बहुविहं जाणति तदा पुण्णपावादीणं विसेसं जाणइ, सीसो आह--कहं सो गइं बहुविहं जाणति तदा पुण्णपावादीणं विसेसं जाणइ, आयरिओ भण्णइ--बहुविधग्गहणेण नज्जइ जहा समाणे जीवत्ते ण विणा पुण्णपावादिणा कम्मविसेसेण नारगदेवादिविसेसा भवंतीति। जया पुण्णपावाईणि जाणइ तदा णिव्विंदई भोए जे दिव्वे जे य माणुसे। भुंजंतीति भोगा,णिच्छियं विंदतीति णिव्विंदति विवहमणेगप्पगारं वा विंदइ निव्विंदइ, जहा एते किंपागफलसमाणा दुरंता भोगत्ति, ते य निव्विंदमाणो दिव्वा वा णिव्विंदइ माणुस्सावा, सीसो आह-किं तेरिच्छा भोगा न निव्विंदइ ?, आयरिओ आह--दिव्वग्गहणेण देवनेरइया गहिया, माणुस्सग्गहणेण माणुसा, चकारेण तिरिक्खजोणिया गहिया, जदा य भोगे णिव्विंदइ तदा जहति संजोगं, जहइ नाम छड्डई, किं तं जहाति ?, बाहिरं अब्भंतरं च गंथं, तत्थ बाहिरं सुवन्नादी अब्भंतरं कोहमाणमायालोभाइं, जदा संजोगं जहइ 'तदा मुंडे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं' अणगारियं नाम अगारं--गिहं भण्णइ तं जेसिं नत्थि ते अणगारा, ते य साहुणो, ण उद्देसियादीणि भुंजमाणा अन्नतित्थिया अणगारा भवंति, जया मुंडे भवित्ताणं पव्वाति अणगारियं तदा संवरमुक्किट्ठं, संवरो नाम पाणवहादीण

*** अत्र धर्मफ़लम् कथयति

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

आसवाणं निरोहो भण्णइ, देससंवराओ सव्वसंवरो उक्किट्ठो, तेण सव्वसंवरेण संपुण्णं चरित्तधम्मं फासेइ, अणुत्तरं नाम न ताओ धम्माओ अण्णो उत्तरोत्तरो अत्थि, सीसो आह--णणु जो उक्किट्ठो सो चेव अणुत्तरो?, आयरिओ भणइ--उक्किट्ठगहणं देसविरइपडिसेहणत्थं कयं, अणुत्तरगहणं एसेव एको जिणप्पणीओ धम्मो अणुत्तरो ण परवादिमताणित्ति, जदा संवरमुक्किट्ठं, धम्मं फासे अणुत्तरं। तदा धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसंकडं (५१-१५८) तदा सव्वत्थगं नाणं, दंसणं चाभिगच्छइ (५२-१५८) सव्वत्थ गच्छतीति सव्वत्थगं तं केवलनाणं दरिसणं च, यदा य सव्वत्थगाणि नाणदरिसणाणि भवंति तदा लोगमलोगं च दोवि एते वियाणइ, यदा लोगं अलोगं च दोवि एए वियाणइ तदा जोगे निरुंभिऊण सेलेसिं पडिवज्जइ, भवधारणिज्जकम्मक्खयट्ठाए, जदा जोगे निरुंभिऊण सेलेसिं पडिवज्जति तदा भवधारणिज्जाणि कम्माणि खवेउं सिद्धिं गच्छइ, कहं ?, जेण सो नीरओ, नीरओ नाम अवगतरओ नीरओ, जया य खीणकम्मंसो सिद्धिं गच्छइ तदा लोगमुद्धे ठिओ सिद्धो भवति सासयोत्ति, जाव य ण परिणेव्वाति ताव अकुच्छियं देवलोगफलं सुकुलुप्पत्तिं च पावतित्ति, छज्जीवनिकाए छट्ठो अधिगारो धम्मफलं।

इयाणिं एतं धम्मफलं जहा दुल्लहं सुलहं च भवइ तहा भणामि, तत्थ दुल्लहं जहा 'सुहसातगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसायस्स। उच्छोलणापहोतिस्स, दुलहा सोग्गती तारिसगस्स (५७-१५९) सातं सुहं भण्णइ, सुहं सायतीति सुहसायगो, सायति णाम पत्थयतित्ति, जो समणो होऊण सुहं कामयति सो सुहसायतो भण्णइ, सायाउलो नाम तेण सातेण आकुलीकओ, कहं सुहीहोज्जामित्ति ? सायाउलो, सीसो आह--सुहसायगसायाउलाण को पतिविसेसो ?, आयरिओ आह--सुहसायगहणेण अप्पत्तस्स सुहस्स जा पत्थणा सा गहिया, सायाउलग्गहणेण पत्ते य साते जो पडिबंधो तस्स गहणं कयं,

प्रत सूत्रांक [१-१५] गाथा ॥३२-५९॥

दीप अनुक्रम [३२-७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ४ अ० ॥१६४॥

निगामं नाम पगामं भण्णइ, निगामं सुयतीति निगामसायी, उच्छोलणापहावी णाम जो पभूओदगेण हत्थपायादी अभिक्खणं पक्खालयइ, थोवेण कुरुकुचियत्तं कुव्वमाणो (ण) उच्छोलणापहोवी लब्भइ, अहवा भायणाणि पभूतेण पाणिएण पक्खालयमाणो उच्छोलणापहोवी, तस्स सुहसायादिदोसे वट्टमाणस्स दुल्लभा सोग्गती भवति। इयाणिं जहा सुलभा सोग्गती भपति तहा भण्णइ-'**तवोगुणपहाणस्स उज्जुमतीखंतिसंजमरयस्स। परीसहे जिणंतस्स सुलभा सोगती तारिसगस्स** (५८-१५९) तवोगुणप्पहाणो, अज्जवा मती जस्स सो उज्जुमती, अज्जवखंतिगहणेण दसविधो समणधम्मो गहिओ, एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाणमितिकाउं, संजमग्गहणेण सत्तरसविहस्स संजमस्स गहणं कयंति, अज्जवखंतिसंजमेसु रओ सो उज्जुमती खंतिसंजमरओ, परीसहा-दिगिंच्छादि बावीसं ते अहियासंतस्स, एवं तवोगुणाइजुत्तस्स सुग्गई सुलभा भवति। इयाणिं एयस्स छज्जीवनिकायस्स एगट्ठियाणि भण्णंति--'जीवाजीवाभिगमो' गाथा पढियव्वा, इच्चेयं छज्जीवणियं **सम्मद्दिट्ठी सया जए। दुल्लहं लभित्तुं सामन्नं, कम्मुणा न विराहेज्जासि** ॥ (५९-१६७) **त्तिबेमि**। इतिसद्दो परिसमत्तीए वट्टइ, एतं नाम जं मया हेट्ठा भणियं, छज्जीवणिया नाम पुढविकायआउक्कायतेउक्कायवाउक्कायवणस्सइकायतसकाय छहिं जीवनिकाएहिंतो णो अण्णो सत्तमो जीवनिकाओ अत्थित्ति जाणिऊण सम्मादिट्ठी सया जएज्जा, जएज्जा नाम जयणाए पयट्टेज्जा, दुल्लहं सामण्णं लद्धूण कम्मुणा णाम जहोवएसो भण्णइ तं छज्जीवणियं जहोवइदिट्ठं तेण णो विराहेज्जा, बेमि णाम तित्थगरोवदेसेण बेमि, ण पुण अप्पणा इच्छाएत्ति। इयाणिं णया-'णायंमि गेण्हियव्वे अगेण्हियव्वंमि चेव अत्थंमि' गाथा--'सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं निसामेत्ता। तं सव्वनयविसुद्धं जं चरणगुणट्ठिओ साहू॥१॥' छज्जीवनिकायज्झयणचुण्णी॥४॥

सद्दतेदुर्लभ सुलभत

॥१६४॥

अध्ययनं -४- परिसमाप्तं

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥६०-१५९॥

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ५ अ० ॥१६५॥

एते ताव मूलगुणा भणिया, इदाणिं उत्तरगुणा भण्णंति, एतेणाभिसंबंधेणागतस्स पंचमज्झयणस्स चत्तारि अणुओगदारा भाणियव्वा, जहा आवस्सए, नवरं इहं नामनिप्फण्णो भण्णइ--**नामं ठवणापिंडो दव्वपिंडो य भावपिंडो य** ' गाथा, णामनिप्फण्णे पिंडनिज्जुत्ती भाणियव्वा, सा य सव्वावि नवहिं कोडीहिं समोयरइ, तं०-ण हणइ ण हणावेइ हणंतं नाणुजाणइ ण पयति ण पयावेइ पयंतं नाणुजाणइ न किणइ न किणावेइ किणंतं नाणुजाणइ, एत्थ गाथा ' कोडीकरणं ' गाथा (६२-१६१ भा०) एता नवकोडीओ दुहा कीरंति-उग्गमकोडी य विसुद्धिकोडी य, तत्थ उग्गमकोडी नाम अविसोहिकोडी, तत्थ जा सा उग्गमकोडी सा छव्विहा, तं०-आहाकम्मं पढमा उग्गमकोडी, उद्देसिया पासंड समणनिग्गंथाण य कम्मं समोयरइ बितिया उग्गमकोडी, पूती कम्मं भत्तपाणपूतियं तातिया, मीसजाए घरमीसपासंडाणं चउत्था, बादरपाहुडियाए पंचमी, अज्झोयरए छट्ठा, एसा छव्विहा अविसोधिकोडी, सेसा विसोधिकोडी, तत्थ जा सा अविसोधिकोडी सा न हणइ न हणावेइ हणंतं नाणुजाणइ न पयति न पयावेइ पयंतं नाणुजाणइ न पयंति एतेसु समोयरइ, ' नव चेवट्ठारस ' गाहा (२६।५-१६१) नव कोडीओ दोहिं रागदोसेहिं गुणिया अट्ठारस भवंति, ताओ चेव नव तिहिं मिच्छत्ताणाणअविरतीहिं गुणियाओ सत्तावीसं भवंति, सत्तावीसा दोहिं रागदोसेहिं गुणियाओ चउप्पण्णा भवंति, ताओ चेव नव दसविधेण धम्मेण गुणियाओ विसुद्धाओ नउइं भवंति, सा नउई तिहिं नाणदंसणचरित्तेहिं गुणिया दो सत्तरा भवंति, गओ नामनिप्फण्णो निक्खेवो, सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं, अक्खलियं अमिलियं अविच्चामेलियं जहा अणुयोगदारे, तं च सुत्तं इमं—

उद्देशक-१

संपत्ते भिक्खुकालंमि असंभंतो अमुच्छिओ। इमेण कम्मजोगेण, भत्तपाणं गवेसए (६०-१६३) 'आप्लृ व्याप्तौ'

पिण्ड-स्वरूपं

॥१६५॥

अध्ययनं -५- 'पिंडैषणा' आरभ्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||६०-१५९||

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

धातुः,अस्य धातोः संपूर्वस्य प्रपूर्वस्य च 'क्तक्तवतू निष्ठे' ति (पा. १-१-२६) क्तः प्रत्ययः अनुबन्धलोपः परगमनं 'अकः सवर्णे दीर्घः' (पा. ६-१-१०१) संप्राप्त इति स्थिते प्रातिपदिकार्थे सप्तम्यधिकारे तस्य एकवचनं ङि अनुबन्धलोपः 'आद् गुणः (पा. ६-१-८७) संप्राप्ते, तत्थ संपत्ते नाम सोभणेण पगारेण पत्ते संपत्ते 'भिक्ष भिक्षायामलाभे लाभे च' धातुः, अस्य धातोः अधिकारे अप्रत्ययान्ते 'गुरोश्च हल' इति (पा. ३-३-१०३) अप्रत्ययः अनुबन्धलोपः परगमने भिक्ष इति स्थिते 'अजाद्यतष्टापू' (पा. ४-१-४) सु भिक्षा, भिक्षा पसिद्धा चेव, ताए भिक्खाए कालो भिक्खाकालो तंमि भिक्खकाले संपत्ते अण्णस्स अट्ठाए गच्छेज्जा, जइ पुण भिक्खाकाल ऊणे अहिगे वा ओयरइ तो भिक्खं न लभइ, 'भ्रम अनवस्थाने' धातुः, अस्य धातोः 'क्तक्तवतू निष्ठे' ति (पा. १-१-२६) क्तः प्रत्ययः अनुबन्धलोपः 'अनुनासिकस्य क्विझले ङ्किती' ति (पा. ६-४-१५) अनुनासिकस्याङ्गस्य आकारो भवति परगमनं संभ्रान्तः, असंभंतो नाम सव्वे भिक्खायरा पविट्ठा तेहिं उज्झिए भिक्खं न लभिस्सामित्तिकाउं मा तूरेज्जा, तुरमाणो य पडिलेहणापमादं करेज्जा, रियं वा न सोधेज्जा, उवयोगस्स ण ठाएज्जा, एवमादी दोसा भवंति, तम्हा असंभंतेण पडिलेहणं काऊण उवयोगस्स ठायित्ता अतुरिए भिक्खाए गंतव्वं, 'मूर्च्छा मोहसमुच्छ्राययोः' धातुः, अस्य धातोः क्तप्रत्ययः, अस्य धातोः सेड्हलादिति इडागमः अनुबन्धलोपः परगमने मूर्च्छितः न मूर्च्छितः अमूर्च्छितः,अमूर्च्छितो नाम समुयाणे मुच्छं अकुव्वमाणो सेसेसु य सद्दाइवसएसु, इदं प्रातिपदिकं, अस्य प्रातिपदकस्य 'कर्तृकरणयोस्तृतीयेति (पा. २-३-१८) तृतीया, तस्या एकवचनं टा, अनुबन्धलोपः त्यदाद्यत्वं अतो गुणः परः पूर्वः 'टाङसिङसामिन्स्तस्याः (पा. ७-१-१२) टा इत्येतस्य इनादेशः 'अनाप्यक' इति (पा. ७-२-११२) इदमः अनादेशः परगमनं अनेन, इमेण नाम जो इदाणिं भन्निहिति, 'क्रमु पादविक्षेपे'

*** भोजन-पानस्य गवेषणा वर्णयते

धातुः, अस्य धातोः अच् प्रत्ययः अनुबन्धलोपः परगमने क्रमः, क्रमो नाम परिवाडी भण्णइ, 'युजिर् जोगे' धातुः, अस्य धातोः अकर्तरि च कारके संज्ञायां (पा. ३-३-१९) घञ् प्रत्ययः अनुबन्धलोपः 'चजोः कुर्घिण्यतो' रिति (पा. ७-३-५२) कुत्वेन जकारस्य गकारः, 'पुगंतलघूपधस्य चे'ति (पा. ६-३-८६) गुणः योगः, तस्स कमस्स जोगो कमजोगो, भत्तपाणाणि लोग-पसिद्धाणि, 'इषु इच्छायां' धातुः, 'हेतुमति चे'ति (पा. ३-३-२६) णिच् प्रत्ययः अनुबन्धलोपः, 'पुगन्तलघूपधस्य चे' ति (पा. ६-३-८६) गुणः एष 'सनाद्यन्ता धातव' इति (पा. ३-१-३२) धातुसंज्ञायां ल्युट् 'युवोरनाका'विति (पा. ७-२-२) अनः एषण स्त्रीविवक्षायां 'अजाद्यत्तष्टाप् (पा. ४-१-४) एषणा, गोः एषणा (पा.३-३-१७) अवङ् स्फोटायनस्य (पा.६-१-१२३) गोशब्दस्य अवङादेशः गवेषणा, गवेसणा मग्गणा भण्णइ, सा य भिक्खा कत्थ गवेसियव्वत्ति ?, भण्णति- **'से गामे वा नगरे वा, गोयरग्गगओ मुणी । चरे मंदमणुव्विग्गो, अव्वक्खित्तेण चेयसा॥** (६१-१६३) 'से'त्ति निद्देसे, किं निद्दिसति?, जो सो संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मो भिक्खू तस्स निद्देसोत्ति, गामनगरग्गहणेण सेसावि खेडकव्वडमडंबनिग-मादिभेदा गहिया, गोयरो नाम भ्रमणं चर गत्यर्थः धातुः, अस्य धातोः 'पुंसि संज्ञाया'मिति (पा. ३-३-१२८) घप्रत्यये वर्त्त-माने 'गोचरसंचरवहव्रजव्यजापणनिगमाश्चे'ति (पा. ३-३-११९) घप्रत्ययान्तः निपात्यते, गावश्चरंति अस्मिन् देशे गोचरः, जहा गावीओ सद्दादिसु विसएसु असज्जमाणीओ आहारमाहारेंति, दिट्ठंतो वच्छओ वाणिगिणीए अलंकियविभूसियाए चारुवे-साएवि गोभत्तादी आहारं दलयंतीति तंमि गोभत्तादिम्मि उवउत्तो ण ताए इत्थियाए रूवेण वा तेसु वा आभरणसद्देसु ण वा गंधफासेसु मुच्छिओ, एवं साधुणावि विसएसु असज्जमाणेण समुदाणे उग्गमउप्पायणासुद्धे निवेसियबुद्धिणा अरत्तदुट्ठेण भिक्खा

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ५ अ० ॥१६८॥

हिंडियव्वत्ति, गोयरो चेव अग्गं २ तंमि गओ गोयरग्गगओ, अग्गं नाम पहाणं भण्णइ, सो य गोयरो साहूणमेव पहाणो भवति, न उ चरगाईणं आहाकम्मुद्देसियाइभुंजगाणंति, मुणीणाम णाणित्ति वा मुणित्ति वा एगट्ठा, सो य मुणी चउव्विहो भणिओ, णाममुणी ठवणामुणी दव्वमुणी भावमुणी, नामठवणाओ गयाओ, दव्वमुणी जहा रयणपरिक्खगा एवमादि, भावमुणी जहा संसारसहावजाणगा साहुणो सावगा वा, एत्थ साहूहिं अधिगारो, सेसा उच्चारियसरिसत्तिकाऊण परूविया, चरसद्दो गमणे वट्टइ, मंदो चउव्विहो-नाममंदो ठवणामंदो दव्वमंदो भावमंदो य, नामठवणाओ गयाओ, दव्वमंदो जो तणुयसरीरो एवमाइ, भावमंदो जस्स बुद्धी अप्पा एवमादी, एते उच्चारियसरिसत्तिकाऊणं परूविया, इह पुण गतिमंदेण अहिगारो, उव्विग्गो नाम भीतो, न उव्विग्गो अणुव्विग्गो, परीसहाणं अभीउत्ति वुत्तं भवति, अव्वक्खित्तेण चेतसा नाम णो अट्टज्झाणोवगओ उक्खेवादि-णुवउत्तो, कहं गंतव्वं ?, भण्णइ- 'पुरओ जुगमायाए,पेहमाणो महिं चरे । वज्जेंतो बीयहरियाणिं, पाणे य दगमट्टियं (६२-१६३) पुरओ नाम अग्गओ, जुगं सरीरं भण्णइ, तावमेत्तं पुरओ अंतो संकुडाए बाहिं वित्थडाए सगडुद्धिसंठियाए दिट्ठीए, दूरनिपायदिट्ठी पुण विप्पगिट्ठं सुहुमसरीरं वा सत्तं न पासइ, अतिसन्निकिट्ठदिट्ठीवि सहसा दट्ठूण ण सक्केइ पादं पडिसाहरिउं, चक्कारेण य सुणमादीण रक्खणट्ठा पासओवि पिट्ठओवि उवओगो कायव्वो । अन्ने पढंति- 'सव्वत्तो जुगमायाए' नातिदूरं गंतूणं पासओ पिट्ठओ य निरिक्खियव्वं, पेहमाणो णाम णिरिक्खमाणो, महिं पुढवीं, चरे नाम गच्छे, पुरओ जुगमेत्तं पेहमाणेण किं परिहरियव्वं ?, भण्णइ- 'वज्जेंतो बीयहरियाइं' वज्जेंतो नाम परिहरंतो, बीयगहणेण बीयपज्जवसाणस्स दसभेद-भिण्णस्स वणप्फइकायस्स गहणं कयं, अहवा हरियगहणेण सव्ववणप्फई गहिया, पाणग्गहणेणं बेइंदियाईणं तसाणं गहणं,

गमन-विधिः

॥१६८॥

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||६०-१५९||

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ५ अ० ॥१६९॥

दगग्गहणेण आउक्काओ सभेदो गहिओ, माट्टियागहणेणं जो पुढविक्काओ अडवीओ आणिओ संनिवेसे वा गामे वा तस्स गहणं, एगग्गहणे गहणं तज्जाईयाणामितिकाउं अगणिवाउणोवि गहिया, संजमविराहणा भणिया। इदाणिं आतविराहणा संजमविराहणा य दोवि भण्णंति- 'ओवायं विसमं खाणुं, विज्जलं परिवज्जए। संकमेण न गच्छेज्जा,विज्जमाणे परक्कमे (६३-१६३) ओवायं नाम खड्डा, जत्थ हेट्ठाभिमुहेहिं अवयरिज्जइ, विसमं नाम निण्णुण्णयं, खाणू नाम कट्ठं उद्धाहुत्तं, विगयं जलं जत्थ तं विजलं, सो य चिक्खल्लो, परिवज्जए नाम सव्वेहिं पगारेहिं वज्जए परिवज्जए, संकमिज्जंति जेण संकमो, सो पाणियस्स व गड्डाए वा भण्णइ, तेण संकमेण विज्जमाणे परिक्कमे णो गच्छेज्जा, असई पुण गच्छेज्जा, विसमे य पंथे गच्छमाणस्स इमे दोसा भवंति, तं०-पवडंते व से तत्थ, पक्खलंते व संजए। हिंसिज्ज पाण भूते य, तसे अदुव थावरे (६४-१६३) ते तत्थ पवडंते वा पक्खलंते वा हत्थाइलूसणं पावेज्जा, तसथावेर वा जीवे हिंसेज्जा, एवं णाऊण साधुणा किं कायव्वंति ?, भण्णइ- 'तम्हा तेण न गच्छेज्जा, संजए सुसमाहिए। सति अण्णेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे (६५-१६३) जम्हा एते दोसा तम्हा विज्जमाणे गमणपहे ण सपच्चवाएण पहेण संजएण सुसुमाहिएणं गंतव्वं, 'सति'त्ति जदि अण्णो मग्गो अत्थि तो तेण न गच्छेज्जा, जयमेव परक्कमे णाम जति अण्णो मग्गो णत्थि ता तेणवि य पहेण गच्छेज्जा जहा आयसंजमविराहणा ण भवइ, भिक्खायरियाए गच्छमाणो इमं पुढविक्कायजयणं करेज्जा- इंगालं छारियं रासिं, तुसरासिं च गोमयं। ससरक्खेहिं पाएहिं, संजओ तं नऽइक्कमे (६६-१६६) ससरक्खेहिं- सचित्तरयाइण्णेहिं मा तस्स सचित्तरयविराहणा भवइ, अतो एयाणि परिहरिज्जंति, एवं किण्हमट्टियातो परिहरियव्वाओ, नीलमट्टियामएण सेसमट्टियाओ परिहरियव्वाओ, एवं सेसावि वण्णा

आत्मसंयम विराधना पृथ्वी-यतना

॥१६९॥

*** आत्म-संयम विराधना वर्णयते

भाणियव्वा, जहा वण्णा एवं गंधरसफासावि परोप्परविरुद्धा परिहरणिज्जइ, जत्थ य अण्णो मग्गो नत्थि तत्थ पादपुंछणेण पमज्जित्ता गच्छइ, जइ सागारियं तो ताव अच्छइ जाव तं गतं ताहे पमज्जइ, अह थिरं सागारियं ताहे पमज्जित्ता पादपुंछणेण कायं अफुसंतो ताव अच्छइ जाव अप्पसागारियं जायंति, एसा पुढविक्कायजयणा भणिया। इयाणिं गोयरग्गगयस्स जयणाहिकारे वट्टमाणे इमावि जतणा एव भण्णइ–

ण चरेज्ज वासे वासंते, महियाए व पडंतिए। महावाए व वायंते, तिरिच्छसंपाइमेसु वा (६७-१६४) नकारो पडिसेहे वट्टइ, चरेज्ज नाम भिक्खस्स अट्ठा गच्छेज्जत्ति, वासं पसिद्धमेव, तंमि वासे वरिसमाणे ण उ चरियव्वं, उत्तिण्णेण य पवुट्ठे अहाछन्नाणि सगडगिहाईणि पविसित्ता ताव अच्छइ जावद्धिओ ताहे हिंडइ, महिया पायसो सिसिरे गब्भमासे भवइ, ताएवि पडंतीए नो चरेज्जा, महावातो रयं समुद्धुणइ, तत्थ सचित्तरयस्स विराहणा, अचित्तोवि अच्छीणि भरेज्जा एवमाई दोसत्तिकाऊण ण चरेज्जा, तिरिच्छं संपयंतीति तिरिच्छसंपाइमा, ते य पयंगादी, तस्स तेसु नो चरेज्जा, गोयरग्गगतस्स पढमव्वयजयणाहिकारे वट्टमाणे इमा चउत्थव्वयजतणा–' ण चरेज्ज वेससामंते, बंभचेरवसाणुए। बंभयारिस्स दन्तस्स, होज्जा तत्थ विसोत्तिया (६८-१६५) णकारो पडिसेधे वट्टइ, चरेज्ज णाम गच्छेज्जा, वेसाओ दुवक्खरियाओ, अण्णाओवि जाओ दुवक्खरियाकम्मेसु वट्टंति ताओवि वेसाओ चेव, सामन्तं नाम तासिं गिहसमीवं, तमवि वज्जणीयं, किमंग पुण तासिं गिहाणि?, जम्हा तंमि वेससामंते हिंडमाणस्स बंभचेरव्वयं वसमाणिज्जतित्ति तम्हा तं वेससामंतं बंभचेरवसाणुगं भण्णइ, तंमि बंभचेरवसाणुए नो चरेज्जा, वेसाओ इंदियणोइंदिएहिं दंतस्सवि बंभचारिस्स विसोत्तिया भवति, सा विसोत्तिया चउव्विहा- णामविसोत्तिया ठवणा-

विसोत्तिया दव्वविसोत्तिया भावविसोत्तिया, नामठवणाओ गताओ, दव्वविसोत्तिया जहा सारणिपाणियं कयवराइणा आगमसोते निरुद्धे अण्णतो गच्छइ, तओ तं सस्सं सुक्खइ, सा दव्वविसोत्तिया, तासिं वेसाणं भावविप्पेक्खियं णट्ठहसियादी पासंतस्स णाण-दंसणचरित्ताणं आगमो निरुंभति, तओ संजमसस्सं सुक्खइ, एसा भावविसोत्तिया। सीसो आह-को तत्थ दोसो ?, आयरिओ भणइ, **अणायतणे चरंतस्स, संसग्गीय अभिक्खणं। होज्ज वयाणं पीला, सामन्नंमि य संसओ।** (६९-१६५) तंणं वेससामंतं अभिक्खणं अभिक्खणं एंतजंतस्स ताहिं समं संसग्गी जायति, भणियं च- "संदंसणाओ पीई पीतीओ रती रती य वीसंभो। वीसंभाओ पणओ पंचविहं वड्ढए पेम्मं ॥ १ ॥" तओ तस्स वयाणं मेहुणविरमणादीणं पीडा नाम विणासो, सामण्णं नाम समणभावो, तंमि समणभावे संसयो भवइ, किं ताव सामण्णं धरेमि ? उदाहु उप्पव्वयामित्ति ? एवं संसयो भवइ, जइ उण्णिक्ख-मइ तो सव्ववया पीडिया भवंति, अहवि ण उण्णिक्खमइ तोवि तग्गयमाणसस्स भावाओ मेहुणं पीडियं भवइ, तग्गयमाणसो य एसणं न रक्खइ, तत्थ पाणाइवायपीडा भवति, जोएमाणो पुच्छिज्जइ-किं जोएसि ?, ताहे अवलवइ, ताहे मुसावायपीडा भवति, ताओ य तित्थगरेहिं णाणुण्णायाउत्तिकाउं अदिण्णादाणपीडा भवइ, तासु य ममत्तं करेंतस्स परिग्गहपीडा भवति। तम्हा **एयं वियाणित्ता, दोसं दोग्गइवड्ढणं। वज्जए वेससामन्तं, मुणी एगंतमस्सिए** (७०-१६५) तेण य भिक्खाए पवि-ट्ठेणं इमाणि परिहरियव्वाणि 'साणं सूवियं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं। संडिब्भं कलहं जुद्धं, दूरओ परिवज्जए (७१-१६५) साणो लोगपसिद्धो, सूविया गावी पायसो आहणणसीला भवइ, दित्तो कसाओ मत्तो वा, आह च- "दित्तो दप्पिओ" ते य इमे दित्ता परिहरणिज्जा, तं०-गोणो हयो गयोत्ति, गोणो बलिवद्दो, हयो-आसो, गयो-हत्थी, सो दित्तो परिहरणिज्जो, संडिब्भं नाम

बालरूवाणि रमंति धणुहिं, कलहो नाम वाइओ, जुद्धं नाम जं आउहकट्ठादीहिं, एताणि साणादीणि दूरओ परिवज्जेज्जा, सीसो आह-तत्थ- को दोसो ? जेण परिवज्जिज्जंति, आयरिओ आह--सुणओ घाएज्जा, गावी मारिज्जा, गोणो मारेज्जा, एवं हय-गयाणवि मारणादिदोसा भवंति, बालरूवाणि पुण पाएसु पडियाणि भाणं भिंदिज्जा, कट्ठाकट्ठिवि करेज्जा, धणुविप्पमुक्केण वा कंडेण आहणेज्जा, कलहे किं ?, तारिसं अणहियासंतो भणिज्जा, एवमादि दोसा भवंतित्ति । इदाणिं आतगया दोसा जहा न भवंति तं भण्णइ–' अणुण्णए णावणए, अप्पहिट्ठे अणाउले । इंदियाणिं जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे ॥ (७२-१७५) अकारो पडिसेधे वट्टइ, उण्णतो चउव्विहो, तं०- णामुण्णओ ठवण० दव्व० भावुण्णओ, णामठवणाओ गयाओ, दव्वुण्णओ जो उण्णतेण मुहेण गच्छइ, भावुण्णओ हिट्ठो विहसियं करेंतो गच्छइ, जातिआदिएहिं वा अट्ठहिं मदेहिं मत्तो, एवं ओणओवि चउव्विधो, तं०- णामोणयो ठव० दव्व० भावोणयोत्ति, तत्थ नामठवणाओ गयाओ, दव्वोणओ जो ओणयसरीरो खुज्जो वा, भावोणयो जो दीणदुम्मणो, कीस गिहत्था भिक्खे न देंति ?, णवा सुंदरं देंति ?, असंजते वा पूयति. सीसो भणइ-उन्नतेऽवनते वा को दोसो ?, आयरिओ भणइ-दव्वुन्नतो इरियं न सोहेइ, लोगोवि भण्णइ- उम्मत्तओविव समणओ वजइ सविगारोत्ति, भावेवि अत्थि से माणो, तुट्ठत्तेणं अत्थि, संबंधो अत्थित्ति, अहवा मदावलित्तो ण सम्मं लोगं पासति, सो एवं अणुवसंतत्तणेण न लोगसंमतो भवति, दव्वो-णतेणवि उड्डुवंति जहा अहो जीवरक्खणुवउत्तो सुव्वत्त एस (तेण) गो, अहवा सव्वपासंडाणं नीययरं अप्पाणं जाणमाणो वक्कमति एव-मादि, एवं करेज्जा, भावोणते एवं चेवेति, जहा किमेतस्स पव्वइतेण ? कोहोऽणेण न णिज्जिओत्ति एवमादी, जम्हा एए ते दोसा तम्हा दव्वओ अणुण्णतेण अणवणतेण य भमियव्वं, भावओवि ' अप्पहिट्ठ 'त्ति अप्पसद्दो अभावे वट्टइ, थोवे य, इहं पुण अप्पसद्दो

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||६०-१५९||

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ५ अ० ॥१७३॥

अभावे दट्ठव्वो, अहसंतोत्ति वुत्तं भवति, मज्झत्थभावमहिट्ठिऊण समुदाणस्स गच्छेज्जा, अणाउलो नाम मणवयणकायजोगेहिं अणाउलो माणसे अट्टदुहट्टाणि सुत्तत्थतदुभयाणि वा अचिंतंतो एसणे उवउत्तो गच्छेज्जा, वायाए वा जाणिवि ताणि अट्टमट्टाणि ताणि अभासमाणेण पुच्छणपरियट्टणादीणि य अकुव्वमाणेण हिंडियव्वं, कायेणावि हत्थणट्ठादीणि अकुव्वमाणो संकुचियहत्थपाओ हिंडेज्जा, इंदियाणि-सोयादीणि जहाभावो नाम तेसिंदियाणं पत्तेयं जो जस्स विसयो सो जहभावो भण्णइ, जहा सोयस्स सोयव्वं चक्खुस्स दट्ठव्वं घाणस्स अग्घाइयव्वं जिब्भाए सादेयव्वं फरिसस्स फरिसणं, एवं जहाभावं इंदियाइं दमइत्ता मुणी चरे, चरे नाम गच्छेज्जात्ति, ण य सक्का सद्दं असुणिंतेहिं हिंडिउं, किं तु जे तत्थ रागदोसा ते वज्जेयव्वा, भणियं च- " न सक्का सद्दमस्सोउं, सोतगोयरमागयं। रागद्दोसा उ जे तत्थ, ते बुहो परिवज्जए ॥ १ ॥ " एवं जाव फासोत्ति , किं च- गोयरग्गगतो इमाणि वज्जेज्जा, तं०- दवदवस्स न गच्छेज्जा, भासमाणो य गोयरे। हसंतो णाभिगच्छेज्जा, कुलं उच्चावयं सया (७३-१६५) दवदवस्स नाम दुयं दुयं, सीसो आह–णणु असंभंतो अमुच्छिओ एतेण एसो अत्थो गओ, किमत्थं पुणो गहणं ?, आयरिओ भणइ-पुव्वभणियं तु जं भण्णति तत्थ कारणं अत्थि, जं तं हट्ठा भणियं तं अविसेसियं पंथे वा गिहंतरे वा, तत्थ संजमविराहणा पाहण्णेण भणिया, इह पुण गिहाओ गिहंतरं गच्छमाणस्स भण्णइ, तत्थ पायसो संजमविराहणा भणिया, इह पुण पवयणलाघवसंकणाइदोसा भवंतित्ति ण पुणरुत्तं, किं च- जहा चेव दवदव्वस्स न चरेज्जा तहा भासमाणो तहा लोगविरुद्धं काउं हसंतोवि णो, कुलं उच्चावयं पवेसेज्जा, कुलं पसिद्धं चेव, उच्चं चउव्विधं, तं०-णामुच्चं ठव०दव्व०भावउच्चं च, णामठवणाओ गयाओ, दव्वुच्चंपि भूमादि, भावुच्चं जातिधणविज्जादी हट्ठतुट्ठीवयंसियमुहो जाति , तत्थ अंतेपुरइस्साइ

गोचर-विधिः

॥१७३॥

*** अत्र गोचर-विधि वर्णयते

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||६०-१५९||

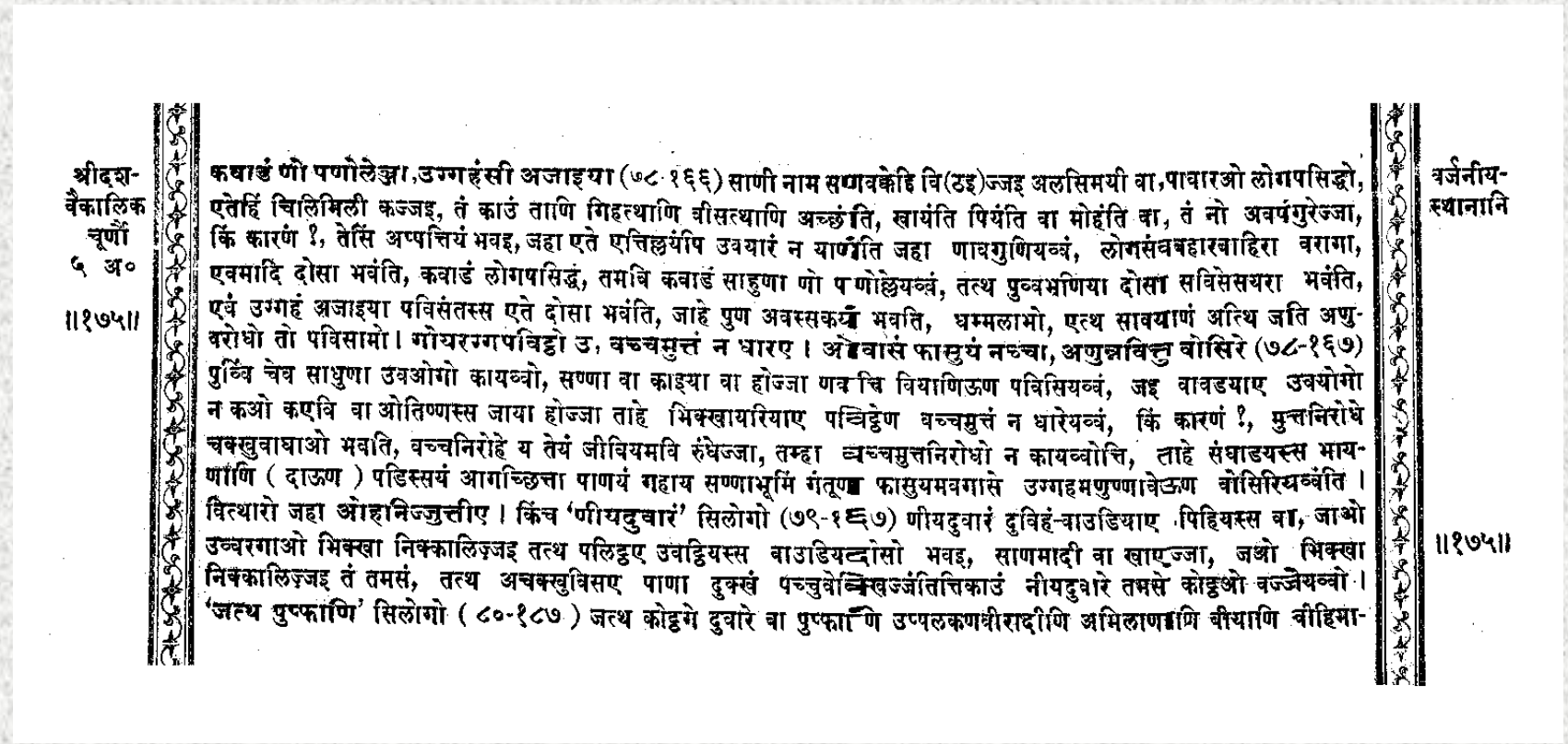
दीप अनुक्रम [७६-१७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ५ अ० ॥१७४॥

दोसा, अवचंपि चउविधं, तं०- णामठवणदव्वभावावयं, णामठवणाओ गयाओ, दव्ववचं तणकुडी, भाववचं जातिधणविज्जादीहीणं, सदा नाम सव्वकालं, किंच-वज्जणाधिकारे वट्टमाणे इदमवि वज्जणियं— 'आलोयं थिग्गलं दारं, संधिं दगभवणाणि य। चरंतो न विनिज्झाए, संकट्ठाणं विवज्जए (१४-१६५)' आलोगं नाम चोपलपादी, थिग्गलं नाम जं घरस्स दारं पुव्वमासी तं पडिपूरियं, दारं दारमेव, संधी खत्तं पडिढक्कियं, दगभवणाणि-पाणियघराणि पहाणगिहाणि वा, एताणि भिक्खं हिंडमाणो ण णिज्झाएज्जा ॥ विवज्जणाहिगारे वट्टमाणे इमाणि वज्जिज्जा-रण्णो गिहवतीणं च, रहस्सारक्खियाणं च। संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए (७५--१६५) रण्णो रहस्सट्ठाणाणि गिहवईणं रहस्सट्ठाणाणि आरक्खियाणं रहस्सट्ठाणाणि, संकणादिदोसा भवंति, चकारेण अण्णेवि पुरोहियादि गहिया, रहस्सट्ठाणाणि नाम गुज्झोवरगा, जत्थ वा राहस्सियं मंतेंति, एताणि ठाणाणि संकिलेसकराणि भवंति, भवणगएत्थ इत्थियाइए हियणट्ठे संकणादिदोसा भवंति, तम्हा दूरं परिवज्जए। पडिकुट्ठकुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए। अचियत्तकुलं न पविसे, चियत्तं पविसे कुलं (१७-१६५) तत्थ पडिकुट्ठं दुविधं-इत्तिरियं आवकहियं च, इत्तिरियं मयगसूतगादी, आवकहियं अभोज्जा डोंबमायंगादी, मामयं नाम जत्थ गिहपती भणति- मा मम कोई घरमयिउ, पन्नत्तणेण मा कोई मम छिड्डं लहिहेति, इस्सालुगदोसेण वा, अचियत्तकुलं नाम न सक्केति वारेउं, अचियत्ता पुण पविसंता, तं च इंगिएण णज्जति, जहा एयस्स साधुणो पविसंता अचियत्ता, अहवा अचियत्तकुलं जत्थ बहुणावि कालेण भिक्खा न लब्भइ, एतारिसेसु कुलेसु पविसंताणं पलिमंथो दीहा य भिक्खायरिया भवति, चियत्तं पविसेज्जत्ति, चियत्तं नाम जत्थ चियत्तो निक्खमणपवेसो चागसीलं वा, एयारिसाणि पविसेज्जा। 'साणीपावारापिहियं, अप्पणा णावपंगुरे। ॥१७४॥

वर्जनीय-स्थानानि

*** अत्र गौचरी विषयक वर्जनिय स्थानानि दर्शयते



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ५ अ० ॥१७५॥

कवाडं णो पणोल्लेज्जा, उग्गहंसी अजाइया (७८-१६६) साणी नाम सणवक्केहि वि(ठइ)ज्जइ अलसिमयी वा, पावारओ लोगपसिद्धो, एतेहिं चिलिमिली कज्जइ, तं काउं ताणि गिहत्थाणि वीसत्थाणि अच्छंति, खायंति पियंति वा मोहंति वा, तं नो अवपंगुरेज्जा, किं कारणं ?, तेसिं अप्पत्तियं भवइ, जहा एते एत्तिल्लयंपि उवयारं न याणंति जहा णावगुणियव्वं, लोगसंववहारवाहिरा वरागा, एवमादि दोसा भवंति, कवाडं लोगपसिद्धं, तमवि कवाडं साहुणा णो पणोल्लियव्वं, तत्थ पुव्वभणिया दोसा सविसेसयरा भवंति, एवं उग्गहं अजाइया पविसंतस्स एते दोसा भवंति, जाहे पुण अवस्सकर्यं भवति, धम्मलाभो, एत्थ सावयाणं अत्थि जति अणुवरोधो तो पविसामो। गोयरग्गपविट्ठो उ, वच्चमुत्तं न धारए। अहवासं फासुयं नच्चा, अणुन्नवित्तु वोसिरे (७८-१६७) पुव्विं चेव साधुणा उवओगो कायव्वो, सण्णा वा काइया वा होज्जा णवरि वियाणिऊण पविसियव्वं, जइ वावडयाए उवयोगो न कओ कएवि वा ओतिण्णस्स जाया होज्जा ताहे भिक्खायरियाए पविट्ठेण वच्चमुत्तं न धारेयव्वं, किं कारणं ?, मुत्तनिरोधे चक्खुवाघाओ भवति, वच्चनिरोहे य तेयं जीवियमवि रुंधेज्जा, तम्हा वच्चमुत्तनिरोधो न कायव्वोत्ति, ताहे संघाडयस्स भायणाणि (दाऊण) पडिस्सयं आगच्छित्ता पाणयं गहाय सण्णाभूमिं गंतूण फासुयमवगासे उग्गहमणुण्णावेऊण वोसिरियव्वंति। वित्थारो जहा ओहनिज्जुत्तीए। किंच 'णीयदुवारं' सिलोगो (७९-१६७) णीयदुवारं दुविहं-वाउडियाए पिहियस्स वा, जाओ उव्वरगाओ भिक्खा निक्कालिज्जइ तत्थ पलिट्ठए उवट्ठियस्स वाउडियदोसो भवइ, साणमादी वा खाएज्जा, जओ भिक्खा निक्कालिज्जइ तं तमसं, तत्थ अचक्खुविसए पाणा दुक्खं पच्चुवेक्खिज्जंतित्तिकाउं णीयदुवारे तमसे कोट्ठओ वज्जेयव्वो। 'जत्थ पुप्फाणि' सिलोगो (८०-१८७) जत्थ कोट्ठगे दुवारे वा पुप्फाणि उप्पलकणवीरादीणि अमिलाणाणि वीयाणि वीहिमा-

वर्जनीय-स्थानानि

॥१७५॥

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||६०-१५९||

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ५ अ० ॥१७६॥

दीणि, विप्पइण्णाणि नाम विविहेहिं पगारेहिं पतिण्णाणि णाणाविहाणि वा पक्खित्ताणीत्ति परिहरिउं धणत्तणेण ण सक्कंतित्ति-काउं वज्जेज्जा, जं च उल्लं अहुणोवलित्तं तं सरसं दट्ठूण संपातिमसत्तविराहणत्थं अपरितावियाओ वा आउक्काओत्तिकाउं वज्जेज्जा । 'एलगं दारगं' सिलोगो (८१-१६७) एलओ छागो, सो कोट्ठगदारे बद्धओ, दारओ दिक्करादिरूवं, साणो-सुणओ, वच्छउ–वच्छउ, गोणमहिसीणं भवति, उल्लंघणा उल्लंडणा भण्णाति, विऊहणा पेल्लणा, पेल्लिओ सिंगेहिं आहणेज्जा, पडुं वा वहेज्जा, दारए अप्पत्तियं सयणो करेज्जा, उप्फासणहाणकोउगाणि वा, पदोसेण वा पंतावेज्जा, पडिभग्गो वा होज्जा ताहे भणेज्जा-समण-एण ओलंडिओ एवमादी दोसा, सुणए खाएज्जा, वच्छओ आहणेज्जा वित्तसेज्ज वा, वितत्थो आयसंजमविराहणं करेज्जा, विऊ-हणे ते चेव दोसा, अण्णे य संघट्टणाइ, चेडरूवस्स हत्थादी दुक्खावेज्जा एवमाइ दोसा भवंति । किं च ' असंसत्त ' सिलोगो (८२-१६०) असंसत्तं पलोएज्जा नाम इत्थियाए दिट्ठिं न बंधेज्जा, अहवा अंगपच्चंगाणि अणिमिस्साए दिट्ठीए न जोएज्जा, किं कारणं ?, जेण तत्थ बंभव्वयपीला भवइ, जोएंतं वा दट्ठूण अविरयगा उड्डाहं करेज्जा- पेच्छह समणयं सवियारं, तत्थ य ठिएण णातिदूरं पलोएयव्वं, तावमेव पलोएइ जाव उक्खेवनिक्खेवं पासई, तओ परं घरकोणादी पलोयंतं दट्ठूण संका भवति, किमेस चोरो पारदारिओ वा होज्जा ? एवमादि दोसा भवंति,उप्फुलं नाम विगसिएहिं णयणेहिं इत्थीसरीरं रयणादी वा ण निज्झा-इयव्वं, जदा य पडिसेहिओ भवति तदा अयंपिरेण णियत्तियव्वं, अज्झंखमाणेणंति वुत्तं भवति । किं च— ' अतिभूमिं न गच्छेज्जा ' सिलोगो (८३-१६८) अणणुण्णाता भूमी गोयरग्गगओ साहू न पविसेज्जा, केवइयाए पुण पविसियव्वं ?, कुलस्स भूमिं नाऊणं, जत्थ तेसिं गिहत्थाणं अप्पत्तियं न भवइ, जत्थ अण्णेवि भिक्खायरा ठायंति, ताहे एवं नाऊण मियं भूमिं परक्कमे

कुलभूमिः ॥१७६॥

मियं नाम अणुन्नायं, परक्कमे नाम पविसेज्जा, किंच-'तत्थेवं पडिलेहेज्जा' सिलोगो, (८४- १६८) तत्थ तत्तियाए मियाए भूमीए उवयोगो कायव्वो पंडिएण, कत्थ ठातियव्वं कत्थ न वत्ति, तत्थ ठातियव्वं जत्थ इमाइं न दीसंति, आसिणाणस्स संलोयं परिवज्जए, सिणाणसंलोगं वचसंलोगं व, तत्थ आसिणाणं णाम जंमि ठाणे अविरतिया अविरतगा वा ण्हायंति, संलोगं जत्थ ठिएण हि दीसंति, ते वा तं पासंति, तत्थ आयपरसमुत्था दोसा भवंति, जहा जत्थ अम्हे ण्हाओ जत्थ य मातिवग्गो अम्हं ण्हायइ तमेसो परिभवमाणो कामेमाणो वा एत्थ ठाइ, एवमाई परसमुत्था दोसा भवंति, आयसमुत्था तस्सेव ण्हायंतिओ अवाउडियाओ अविरतियाओ दट्ठूण चरित्तभेदादी दोसा भवंति, वच्चं नाम जत्थ वोसिरंति कातिकाइसन्नाओ, तस्सवि संलोगं वज्जेयव्वो, आयपरसमुत्था दोसा पवयणविराहणा य भवति, तम्हा संलोगं आसिणाणवच्चाणं परिवज्जेज्जा। किंच- 'दगमट्टिय' सिलोगो (८५-१६८) दगं पाणियं, मट्टिया अडवीओ सचित्ता आणीया, आदाणं नाम गहणं, जेण मग्गेण गंतूण दगमट्टिय-हरियादीणि घेप्पंति तं दगमट्टियआयाणं भण्णइ, तं च विवज्जेज्जा, बीयाणि वीहिमाईणि, हरियग्गहणेणं सव्वे रुक्खगुच्छाइणो वणप्फइविसेसा गहिया, एताणि दगमट्टियाईणि गिहदारे ठियाणि परिवज्जेंतो चिट्ठेज्जा, सव्विंदियसमाहितो नाम नो सद्दरूवा-ईहिं अक्खित्तो, एवं तस्स कालाइगुणसुद्धस्स अणिट्ठकुलाणि वज्जेंतस्स चियत्तकुले पविसंतस्स जहोवदिट्ठे ठाणे ठियस्स आय-समुत्था दोसा वज्जेंतस्स दायगसुद्धी भण्णइ। 'तत्थ से चिट्ठमाणस्स' सिलोगो (८६-१६८) तत्थत्ति तीए मिताए भूमीए 'से' त्ति निद्देसो दगमट्टीयादीणि परिहरंतो चिट्ठइ तस्स निद्देसो, आहरे नाम आणेज्जा, पाणगं भोयणं च पसिद्धं चेव, अक-प्पियं न इच्छेज्जा, जं पुण बायालीसद्दोसपरिसुद्धं तं कप्पियं पडिग्गहेज्जा। किंच- 'आहरंती' ति सिलोगो (८७-१६८)

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||६०-१५९||

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ५ अ० ॥१७८॥

जइ कदाइ भोयणमाणंती परिसाडयइ तं देंतियं पडियाइक्खे– न मे कप्पइ तारिसं, पायसो इत्थियाओ भिक्खं दलयंति तेण इत्थियाए निद्देसो कओ, पडियाइक्खे णाम पडिसेहेज्जा, जहेरिसं मम ण कप्पइत्ति, जइ सा भणेज्जा अण्णो वा कोइ-भगवं ! को दोसो एत्थत्ति ?, तओ देसं कालं पुरिसं च पडुच्च दोसे कहेज्जा, पडिसेहंतेण ताव सत्ताणि वहिज्जंति, पडिए य तम्मुवजीविणो सत्ता अणेगे घातिज्जंति, एवमादिणो दोसा भाणितव्वा। किंच ' सम्मद्दमाणी ' सिलोगो (८८-१६८) सम्मद्दमाणी णाम अक्कम्ममाणी, पाणाणि–कीडियादीणि, बीयाणि-सालिमाईणि, हरियग्गहणेण सेसस्स वणप्फइकायस्स गहणं, एगग्गहणे गहणं तज्जातियाणमितिकाउं सेसावि एगिंदिया, असंजमं करेंतीति असंजमकरी तं, असंजमं साधुणिमित्तं आवज्जंती य करेइत्ति, तारिसं भत्तपाणं तु परिवज्जए। किं च ' साहट्टु ' सिलोगो (८९-१६९) साहट्टु नाम अन्नंमि भायणे साहरिउं देंति तं फासुगंपि विवज्जए, तत्थ फासुए फासुयं साहरइ १ फासुए अफासुयं साहरइ २ अफासुए फासुयं साहरइ ३ अफासुए अफासुयं साहरति ४, तत्थ जं फासुयं फासुएसु साहरति तं थेवं थेवे साहरति बहुए थेवं साहरइ थेवे बहुयं साहरइ बहुए बहुयं साहरइ, एतेसिं भंगाणं जहा पिंडनिज्जुत्तीए, णिक्खिवित्ता सचित्तं अलायं पुप्फफलादी वा घट्टेऊण देइ, तधेव समणट्ठाए उदगं संपणोल्लिया नाम आउक्कायं छड्डेऊण दलयइ, ' ओगाहयित्ता चलयित्ता, आहरे पाणभोयणं। देंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं (९०-१६९) तमेव आउक्कायं ओगाहइत्ता नाम समणट्ठाए अत्तणो जतो आयरिसेत्ता भिक्खं दलयति, चलयित्ता नाम चलेऊण देई, एयाणि ओगाहणादीणि काऊण देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं। 'पुरेकम्म' सिलोगो, (९१-१६९) पुरेकम्मं नाम जं साधूणं दट्ठूणं हत्थं भायणं धोवइ तं पुरेकम्मं भण्णइ, तेण पुरकम्मकएण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा, तत्थ

अकल्प्य-निषेधः

॥१७८॥

*** अत्र अकल्प्य आहारादिनां निषेध: प्रदर्शयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥६०-१५९॥

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

हत्थो पसिद्धो, दव्वी- कडुच्छुओ, भायणं कंसभायणादि, दिज्जमाणिं पडिसेहेज्जा न मे कप्पइ तारिसं । 'एवं उदउल्ले' सिलोगो (९२-१६९) उदउल्लं नाम जलतिंतं उदउल्लं, सेसं कंठ्यं, एवं ससिणिद्धं नाम जं न गलइ, सेसं कंठ्यं, ससरक्खेण ससरक्खं नाम पंसुरजगुंडियं, सेसं कंठ्यं । मट्टिया कडउमट्टिया चिक्खल्लो, सेसं कंठ्यं, एतेण पगारेण सव्वत्थ भाणियव्वं, ऊसो णाम पंसुखारो, हरियालहिंगुलमणोसिलाअंजणाणि पुहविभेदा, लोणं सामुद्दसेंधवादि, गेरूअ सुवण्ण (रसिया), वण्णिया पीयमट्टिया, सेढिया-गंडरिया, सोरट्ठिया उवरिया, जीए सुवण्णकारा उप्पं करेंति सुवण्णस्स पिंडं, आमलोट्ठो सो अप्पेंधणो पोरिसिमित्तेण परिणमइ बहुइंधणो आरतो परिणमइ, कुक्कुसा चाउलातया, उक्किट्ठ नाम दोद्धियकालिंगादीणि उक्खले छुब्भंति, ' असंसट्ठेण ' सिलोगो (९४-१७०) असंसट्ठो णाम अण्णपाणादीहिं अलित्तो, तेण अलेवेणं दव्वं दधिमाइ देज्जा, तत्थ पच्छाकम्मदोसोत्ति-काउं न घेप्पइ, सुक्खपूयलिया दिज्जइ तो घेप्पइ । ' संसट्ठेण ' सिलोगो (९५-१७०) एत्थ अट्ठ भंगा- हत्थो संसत्तो मत्तो संसट्ठो निरवसेसं दव्वं एवं अट्ठ भंगा कायव्वा, एत्थ पढमो भंगो सव्वुक्किट्ठो, अण्णेसुवि जत्थ सावसेसं दव्वं तत्थ गेण्हति । किं च ' दोण्हं तु भुंजमाणाणं ' सिलोगो (९६-१७०) दोन्नि संखा, तुसद्दो विसेसणे, किं विसेसियति ?, भुंजसद्दो पालणे अब्भवहारे च एयं विसेसयति, तत्थ पालने ताव एगस्स साहुपायोग्गस्स दोन्नी सामिया, तत्थ एगो निमंतयति, एगो तुण्हिक्को अच्छइ, तस्स छंदं पडिलेहए, छंदो नाम इच्छा, णेत्तादीहिं विगारेहिं अभणंतस्सवि नज्जइ जहा एयस्स दिज्जमाणं चियत्तं न वा इति, अचियत्तं तो णो पडिगेहेज्जा, अब्भवहारे दो जधा एक्कंमि वट्टियाए बे जणा भोत्तुकामा, ते ण ताव कवलगहणं करेंति, साहू य आगओ, तत्थ एगो निमंतयइ, सेसं तहेव । ' दोण्हं तु भुंजमाणाणं ' सिलोगो (९७-१७०) जत्थ दोवि निमंतेज्जा

तत्थ फासुएसणिज्जं णाऊण पडिगाहेज्जा । किंच 'गुव्विणीए उवन्नत्थं' सिलोगो (९८-१७१) गब्भो जीए अत्थि सा गुव्विणी, तीय दोहलगादीणिमित्तं विविहमणेगप्पगारं, उवन्नत्थं नाम उवकप्पियं, तं पुण भोयणं पाणं वा होज्जा, तत्थ जं सा भुंजइ कोइ ततो देइ तं ण गेण्हियव्वं, को दोसो?, कदाइ तं परिमियं भवेज्जा, तीए य सद्धा ण विणीया होज्जा, अविणीये य डोहले गब्भपडणं मरणं वा होज्जा, भुत्तसेसं पडिच्छइ- जं से भुत्तुव्वरियं तं पडिच्छेज्जा। किं च 'सिया य समणट्ठाए' सिलोगो (९९-१७१) सिया णाम कदायि गुव्विणी समणट्ठाए-समणनिमित्तं, कालमासिणी नाम नवमे मासे गब्भस्स वट्टमाणस्स, जइ उट्ठिया संजतट्ठाए निसीएज्जा, जहा निसण्णा सुहं भिक्खं दाहामित्ति निसीयइ, निसण्णा संजतट्ठाए उट्ठेति, तमेतेण पगारेण देंतियं पडियाइक्खे- न मे कप्पइ तारिसं, जा पुण कालमासिणी पुव्वुट्ठिया परिवेसेंती य थेरकप्पिया गेण्हंति, जिणकप्पिया पुण जद्दिवसमेव आवन्नसत्ता भवति तओ दिवसाओ आरद्धं परिहरंति, तम्हा देंतियं पडियाइक्खे-न मे कप्पइ तारिसं। किं च- 'थणगं पेज्जमाणी' सिलोगो (१०१-१७१) थणे अद्धदिन्ने जइ सा तं साहुणो अट्ठाए दारगं वा दारिगं वा अद्धपज्जियं निक्खिविऊण पाणगं भत्तं वा आहरेज्जा, तत्थ गच्छवासी जति थणजीवी णिक्खित्तो तो ण गेण्हंति रोवतु वा मा वा, अह अन्नंपि आहारेति तो जति न रोवइ तो गेण्हंति, अह अपियंतओ णिक्खित्तो थणजीवी रोवइ तो ण गेण्हंति, गच्छनिग्गया पुण जाव थणजीवी ताव रोवउ वा मा वा अपियंतओ पियंतिओ वा न गेण्हंति, जाहे अन्नंपि आहारेउं पयत्तो भवति ताहे जइ पियंतओ तो रोवइ मा वा ण गेण्हंति, अपियन्तओ जदि रोवइ परिहरंति अरोवंते गेण्हंति, सीसो आह- को तत्थ दोसोत्ति?, आयरिओ आह-तस्स निक्खिप्पमाणस्स खरेहिं हत्थेहिं घेप्पमाणस्स य अपरित्तत्तणेण परितावणादोसो मज्जारा-

इ वा अवधरेज्जा, तम्हा देंतियं पडियाइक्खे- न मे कप्पइ तारिसं। किंच किंत्तियं भणीहामि- 'जं भवे भत्तपाणं तु' सिलोगो (१०३-१७१) जं भत्तपाणं उग्गमउप्पायणेसणेहिं सुद्धं वा निस्संकियं न भवइ, सव्वेहिं पगारेहिं गविस्समाणं संकियं, तमेवप्पकारं कप्पाकप्पे संकियं दंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं। किं च 'दगवारएण' सिलोगो (१०४-१७२) दगवारओ पाणीयगडुयओ, जत्थ अन्नपाणं भायणे छूढं तं तेण दगवारएण पिहियं, निस्सा-पेसणी तीय पिहियं होज्जा, पीठेण कट्ठादिम-तेणवि पिहियं होज्जा, लोढो सिलापुत्तओ जंतगं वा लोढो मद्दियादी सिलेसो- जउमयणादी, जं एवमादीहिं लित्तं 'तं च उब्भिंदिया' सिलोगो (१०५-१७२) पिहितमेतेहिं वारगादीहिं लेवेहिं वा लित्तं दारयं उब्भिंदिऊण समणट्ठा देइ, देंतियं पडियाइक्खे- न मे कप्पइ तारिसं। किं च- 'असणं पाणगं वावि, खाइमं साइमं तहा'। सिलोगो (१०६-१७२) दाणट्ठापगडं नाम कोति वाणियगमादी दिसासु चिरेण आगम्म घरे दाणं देतित्ति सव्वपासंडाणं तं दाणट्ठं पगडं भण्णइ, सा पुण तं साहुं सड्ढियत्तणेण देइ धम्मनिमित्तं, तं पुण सयं वा जाणेज्जा अन्नओ वा सोच्चा, सेसं कंठ्यं। किं च-- 'असणं पाणगं वावि, खातिमं साइमं तहा' सिलोगो (१०८-१७३), पुन्नत्थापगडं नाम जं पुण्णनिमित्तं कीरइ तं पुण्णट्ठं पगडं भण्णइ, सेसं कंठ्यं। किं च-- 'असणं पाणगं' सिलोगो (११०-१७३) वणिमट्ठापगडं नाम सक्काइभत्तेसु जे अप्पाणं वण्णेंति, सेसं कंठ्यं, तहा 'असणं पाणगं' सिलोगो (११२-१७३) समणट्ठापगडं नाम समणा पंच, तेसिं अट्ठाए जं कयं तं समणट्ठापगडं, सेसं कंठ्यं। तं च इमेसिं एगतरं होज्जा तं० 'उद्देसियं' सिलोगो (११४-१७६) कंठ्यो, जंति संकितं, किंच 'उग्गमं से य पुच्छेज्जा' सिलोगो (११५-१७४) उग्गमं जा पभूयं तो पुच्छेज्जा जहा कस्सट्ठा पकयंति,

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||६०-१५९||

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

जत्थ बहुं च पासेज्जा तत्थ जो देति सो चेव पुच्छिज्जइ जहा कस्सट्ठा पकडंति, केण वा कडंति, सा पुच्छिओ जइ भणइ- तुज्झट्ठाए, ताहे ण पडिगाहिज्जति, अह भणइ- अण्णस्स कस्सइ पाहुणगादिस्स अट्ठाए, तमेवं सोच्चा निस्संकियं सुद्धं साहुणा पडिगाहेयव्वंति, तहा 'असणं पाणगं' सिलोगो (११६-१७६) पुप्फेहिं उम्मिस्सं नाम पुप्फाणि कणवीरमंदरादीणि तेहिं बलिमादि असणं उम्मिस्सं होज्जा, पाणए कणवीरपाडलादीणि पुप्फाणि परिकप्पंति, अहवा बीयाणि जहिं छाए पडियाणि होज्जा, अक्खयमीसा वा धाणी होज्जा, पाणिए दालिमपाणगाइसु बीयाणि होज्जा, हरिताणि विरयसयाणेसु अल्लगमूलगादीणि पक्खित्ताणि होज्जा, जहा य असणपाणाणि उम्मिस्सगाणि पुप्फादीहिं भवंति एवं खाइमसाइमाणिवि भाणियव्वाणि । किंच 'असणं पाणगं' सिलोगो (११८-१७६) उदगंमि णिक्खित्तं दुविहं, तं०- अणंतरणिक्खित्तं जधा नवनीतपोग्गलियमादि, परंपरनिक्खित्तं दहिपिंडो संपातिमादिभयेण छोढूण जलकुंडस्स उवरिं ठवितं, एयं परंपरनिक्खित्तं, एवमादि, उत्तिंगो नाम कीडियानगरयं, तत्थवि अणंतरं भाणियव्वं, पणओ उल्ली भण्णइ, उल्लिए फलए वा भूमीए वा अणंतरपरंपरट्ठवियं देंतियं पडियाइक्खे- न मे कप्पइ तारिसं ॥ तहा 'असणं पाणगं' सिलोगो (१२०-१७६) संघट्टिया नाम जाव अहं साहूणं भिक्खं देमि ताव मा उब्भराइऊणं छड्डिज्जिहिति तेण आवट्टेऊण देइ, हत्थपादादीहिं उम्मुगाणि संघट्टेत्ता देइ, सेसं कंडयं । तहा 'असणं सिलोगो (१२२-१७६) उस्सक्किया नाम अवसंतुइय साधुनिमित्तं उस्सक्किकज्जा तहा जहा अहं भिक्खं दाहामि ताव मा उब्भावेतित्ति, देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं । तहा 'असणं पाणगं' सिलोगो (१२२) उज्जालिया नाम तणाईणि इंधणाणि परिक्खिविऊण उज्जालयइ, सीसो आह- उस्सक्किकयउज्जालियाणं को पइविसेसो ?, आयरिओ आह–उस्सक्केति

जलंतमवि, उज्जालयइ पुण संजतट्ठाए उट्ठिता सव्वहा विज्झायं अगणिं तणाईहिं पुणो उज्जालेति, सेसं कंठ्यं। तहा। ' असणं पाणगं ' सिलोगो (१२२) णिव्वाविया नाम जाव भिक्खं देमि ताव उदणादी डज्झिहिति ताहे तं अगणिं विज्झवेऊण देइ, सेसं कंठ्यं। तहा ' असणं पाणगं वा ' सिलोगो (१२२) उस्सिंचिया नाम तं अइभरियं मा उब्भूयाएऊण छड्डिज्जिहिति ताहे थोवं उक्कड्ढीऊण पासे ठवेइ, अहवा तओ चेव उक्किड्ढिऊणं उण्होदगं दोच्चगं वा देइ, सेसं कंठ्यं। तहा 'असणं पाणगं वा' सिलोगो (१२२)निस्सिंचिया णाम तं अइहियं दव्वं अण्णत्थ निस्सिंचिऊण तेण भायणेण ऊणं देइ तं अहवा तमइहियगं उदणपत्त-सागादी जाव साहूणं भिक्खं देमि ताव मा उब्भूयावेउत्तिकाऊण उदगादिणा परिसिंचिऊण देइ, सेसं कंठ्यं । तहा ' असणं पाणगं ' सिलोगो (१२२) उव्वत्तिया नाम तेणेव अगणिनिक्खित्तं ओयत्तेऊण एगपासेण देति, सेसं कंठ्यं। तहा ' असणं पाणगं ' सिलोगो (१२२) ओयारिया नाम जमेतमइहियं जाव साधूणं भिक्खं देमि ताव नो उज्झिहितित्ति उत्तारेज्जा, तं वा दव्वं अन्नं वा न कप्पइ, सेसं कंठं, दाणट्ठाए पविसंतस्स ' हुज्ज कट्ठं सिलं० ' ॥ १२४ ॥ सिलोगो, कट्ठं वा सिलं वा कयाइ संकमट्ठाए ठवियं होज्जा , तं कट्ठाइ चलाचलं नाऊण ' ण तेण भिक्खू गच्छेज्जा० ' ॥ १२५ ॥ तं च होज्जा चलाचलं, तेहिं कट्ठादीहिं भिक्खुणा ण गच्छियव्वं, किं कारणं ?, तत्थ असंजमदोसो दिट्ठोत्ति, जहा कट्ठादीहिं न गच्छेज्जा तहा गंभीरज्झुसिराणिवि सव्विंदियसमाहिओ वज्जेज्जा, गंभीरं–अप्पगासं ज्झुसिरं–अंतोसुण्णयं तं जंतुआ-लओ भवति, सव्विंदियसमाहिओ नाम नो सद्दाइउवउत्तो। किञ्च–' निस्सेणिं फलगं पीढं० ' ॥ १२६ ॥ सिलोगो, णिस्सेणी लोगपासिद्धा फलगं-महल्लं सुवण्णयं भवइ, पीढयं ण्हाणपीढाइ, उस्सवित्ता नाम एताणि उड्ढुहुत्ताणि काऊण तिरिच्छाणि वा आरु-

हेज्जा, मंचो-लोगपसिद्धो, कीलो उड्ढं व खाणुं, पासाओ पसिद्धो, एतेहिं दायये संजतट्ठाए आरुहेत्ता भत्तपाणं आणेज्जा तं न साधुणा पडिगाहेयव्वं, किं कारणं ?, जेण तत्थ इमे दोसा भवन्ति- ' दुरूहमाणी पवडिज्जा, हत्थं पायं व लूसए० ' ॥ १२७ ॥ सिलोगो, सा कदाइ दुरूहमाणी पवडिज्जा, पंडतीए य हत्थपादादी लूसेज्जा, पुढविकाइयादी विराधेज्जा, ण केवलं पुढविकाइयादी, किन्तु ' जे अ तन्निसिया जगे ' तेऽवि हिंसेज्जा, जगा नाम जीवा । ' एआरिसे महादोसे० ' ॥ १२८ ॥ सिलोगो, सेसं कण्ठयं, वज्जणाधिकारो अणुवट्टइ । ' कंदं मूलं पलंबं वा० ' ॥ १२९ ॥ सिलोगो, कन्दमूलफला पसिद्धा, पलंबं-फलं भन्नति, सन्निरं पत्तसागं, तुंबागं नाम जं तयामिलाणं अब्भंतरओ अद्दयं, सिंगबेरं-अछुयं भन्नइ, आमगं-सचित्तं, परिवज्जए नाम सव्वेहिं पगारेहिं वज्जए परिवज्जए । किं च ' तहेव सत्तुचुन्नाइं, कोलचुन्नाइं आवणे० ' ॥ १३० ॥ सिलोगो, जहेव कंदमूलादीणि वज्जेयव्वाणि तहेव इमाणिवि, सत्तुचुण्णाणि नाम सत्तुगा, ते य जवविगारो, कोलाणि- बदराणि तेसिं चुण्णो कोलचुण्णाणि, आवणे पसिद्धो चेव, सक्कुलीति पप्पडिकादि, फाणिअं दवगुलो, पूयओ पसिद्धो, एताणि सत्तुचुण्णाणि अन्नं वा किंचि मोयगादि आवणे ' विक्कायमाणं० ' ॥ १३१ ॥ सिलोगो, तं पसढं नाम जं बहुदेवसियं दिणे दिणे विक्कायंते तं, तत्थ वायुणा उद्धुएण आरण्णेण सचित्तेण रएण सव्वओ गुंडियं-पडिफासियं भण्णइ तमेवप्पगारं दिंतिअं पडिआइक्खे- न मे कप्पइ तारिसं । किं च ' बहुअट्ठियं० ' ॥ १३२ ॥ सिलोगो, मंसं वा णेव कप्पति साहूणं, कंचि कालं देसं पडुच्च इमं सुत्तमागतं, बहुअट्ठियं व मंसं मच्छं वा बहुकंटयं परिहरितव्वा, किं च- अच्छियतिंदुगादीणि वज्जेयव्वाणि, अच्छियं नाम रुक्खस्स फलं, तिंदुयं-टिंबरुयं, ' बिल्लं ' बिल्लमेव, उच्छुखंडं लोगपसिद्धं, सिंबलि-सिंगा, सीसो आह-णणु पलंब-

गहणेण एयाणि गहियाणि, आयरिओ भणइ- एताणि सत्थोवहताणिवि अन्नंमि समुदाणे फासुए लब्भमाणे ण गिण्हियव्वाणि, किं कारणं- ' अप्पे सिआ० ' ॥ १३३ ॥ सिलोगो कंठो चेव, भोयणं भाणियव्वं । इदाणिं पाणगं भन्नइ- ' तहेवुच्चावयं पाण० ' ॥ १३४ ॥ सिलोगो, ' तहेव ' त्ति जहा भोयणं अकप्पियं पडिसिद्धं कप्पियमणुण्णायं तहा पाणगमवि भण्णइ, उच्चं च अवचं च उच्चावचं, उच्चं नाम जं वण्णगंधरसफासेहिं उववेयं, तं च मुद्दियादिपाणगादी,चउत्थरसियं वावि जं वण्णओ सोभणं गंधओ अपूयं रसओ परिकप्परसं फासओ अपिच्छिलं तं उच्चं भण्णइ, तं कप्पइ, अवयं णाम जमेतेहिं वण्णगंधरसफासेहिं विहीणं, तं अवयं भन्नति, एवं ता वसतीए घेप्पति, अहवा उच्चावयं णाम णाणापगारं भन्नइ, वारयो नाम घडओ, रकारलकाराणमेगत्तमितिकाउं वारओ वालओ भन्नइ, सो य गुलफाणियादिभायणं तस्स धोवणं वारधोवणं । किंच-संसेइमं नाम पाणियं अद्धहेऊण तस्सोवरि पिट्ठे संसेइज्जंति, एवमादि तं संसेदियं भन्नति, तमवि अन्नंमि लब्भमाणे ण पडिगाहेज्जा, चाउलोदगादीण धोवं विवज्जए । किंच-'जं जाणेज्ज चिरोधायं, मईए दंसणेण वा। सोच्चा निस्संकियं सुद्धं, पडिगाहेज्ज संजए ॥१३५॥ तं च पाणयं चिराधोयं इमेहिं कारणेहिं जाणेज्जा, तं०- मतीए व जाणेज्जा पच्चक्खं पासित्ता व जाणेज्जा, मतीए नाम जं कारणेहिं जाणइ, तत्थ केई इमाणि तिण्णि कारणाणि भणंति, जहा जाव पुप्फोदया विरायंति ताव मिस्सं, अण्णे पुण भणंति- जाव फुसियाणि सुक्कंति, अण्णे भणंति- जाव तंदुला सिज्झंति, एवइएण कालेण अचित्तं भवइ, तिण्णिवि एते अणाएसा, कहं ?, पुप्फोदया कयाइ चिरमच्छेज्जा, फुसियाणि वरिसारत्ते चिरेण सुक्कंति, उण्हकाले लहुं, कलमसालितंदुलावि लहुं सिज्झंति, एतेण कारणेण, तम्हा जदा पडिपुच्छियं तेण य से दायएण कहियं ताहे सोऊण जं निस्संकियं भवति, अपुच्छिए वण्णगंधरस-

फासेहिं णज्जंति, जया य पाणस्स य कुक्कुसावया हेट्ठीभूया सुट्ठु य पसण्णं भवति, फासुयं भवति, उसिणोदगमवि जदा तिन्नि वारे उव्वत्तं ताहे कप्पइ । तहा ' अजीवं परिणयं नच्चा० ' ॥ १३६ ॥ अद्धसिलोगो, अजीवभावे परिणयं नाऊण साहुणा पाणयं गहेयव्वं । इयाणिं चउत्थरसियस्स पडिगाहणविहिं भण्णति, तत्थ इमं सिलोगो पच्छद्धं– ' अह संकियं भवेज्जा, आसाइत्ताण रोयए । ' तत्थ एसो जाहे ण याणइ किमेयं सुब्भिं दुब्भिं वा ?, ताहे संकियं भवे, इमेण उवाएण- ' थोवमासायणट्ठाए, हत्थगंमि दलाहि मे । मा मे अच्चंबिलं पूअं, नालं तण्हं विणित्तए ॥ १३७ ॥ तं च अच्चंबिलं पूयं, नालं तण्हं विणित्तए । दितिअं पडिआइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥ १३८ ॥ तं च पाणियं अचंबिलत्तणेण पूयत्तणेण य तण्हाछेदणे असमत्थंति नाऊण देंतियं पडियाइक्खे- न मे कप्पइ तारिसं । ' तं च होज्ज० ' ॥ १३८ ॥ सिलोगो, तमेरिसं दुब्भिगुणेहिं जुत्तं जहा अकामेण पडिगाहियं होज्जा, अकामेण नाम तुहारियायाए ण पडिसेहियं होज्जा, बलाभियोगेण वा से दिण्णं होज्जा, ' विमणेण पडिच्छिअं ' विमणेण वा अणुवउत्तेण, तं अप्पणो णो पिवेज्जा, न वा अन्नेसिं साहूणं दलएज्जा, किं कारणं न ?, तेसिं असमाधिमरणादयो दोसा भवेज्जा, एवं भोयणंपि अतीव बावण्णं ण गिण्हियव्वंति, तं च अकामेण अणुवउत्तेण वा गहियं होज्जा तओ इमाए परिवाडीए परिट्ठावेयव्वं, ' एगंतमवक्कमित्ता, अचित्ते बहुफासुए । जयं परट्ठविज्जा, परिट्ठप्प पडिक्कमे ॥ १४० ॥ [एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं० ॥ १४० ॥] सिलोगो, अचित्तं नाम जं सत्थोवहयं अचित्तं, तं च आगमणथंडिलादी, पडिलहणागहणेण पमज्जणावि गहिया, चक्खुणा पडिलेहणा, रयहरणादिणा पमज्जणा, जयं नाम अतुरियं, अप्पक्खोडेंतो विहिणा तिण्णि पुंजे काऊण वोसिरामि उच्चारेत्ता परिट्ठवेज्जा, परिट्ठवेऊण उवस्सयमागंतूण ईरिया-

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥६०-१५९॥

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

वहियाए पडिक्कमेज्जा । इदाणीं भोयणविही भण्णइ, तं च भोयणं गोयरे वा होज्जा सण्णियट्टस्स वा, तत्थ गोयरे जहा– 'सिआ अ गोयरग्गगओ०' ॥ १४९ ॥ सिलोगो, जो य सो गोयरग्गगओ भुंजइ सो अन्नं गामं गओ बालो बूढो छाआलू खमओ वा, अहवा तिसिओ तो कोई विलंबणं काऊण पाणयं पिबेज्जा, एवमादि, इच्छेज्जा नाम अभिकंखेज्जा पढमालियं काउं, तं पुण अण्णसाधुउवस्सगडसतीए कुड्डए भित्तिमूले वा समुद्दिसेज्जा, कोट्ठओ नाम वट्टमढो सुन्नओ, एवमादि, भित्ती नाम कुडो कुड्डो, एवमादि, तथा फासुयं अप्पपाणप्पबीयादि, तं च चक्खुणा पडिलेहेज्जा, भुज्जो रयहरणादिणा पमज्जित्ता तत्थ ठायंति, किं च 'अणुन्नवित्तु मेहावी०' ॥ १४२ ॥ सिलोगो, तेण तत्थ ठायमाणेण तत्थ पहु अणुन्नवेयव्वो-- धम्मलाभो ते सावगा ! एत्थ अहं मुहुत्तागंमि विस्समामि, ण य भणयति जहा समुद्दिस्सामि आययामि वा, कोउएण पलोएहिंति, तेण य भत्तपाणं पडिलेहित्ता तारिसे पडिच्छण्णे संवुडे ठातियव्वं जहा सहसात्ति न दीसती, जहा य सागारियं दूरओ जं न पासति तहा ठातियव्वं, हत्थगं मुहपोत्तिया भण्णइत्ति, तेण हत्थएण सीसोवरियं कायं पमज्जिऊण साधुणा भुंजियव्वं। किं च— 'तत्थ से भुंजमाणस्स०' ॥ १४३ ॥ सिलोगो, जइ तस्स साहुणो तत्थ भुंजमाणस्स देसकालादीणि पडुच्च गहिए मंसादीए अन्नपाणे अट्ठी कंटका वा हुज्जा इयरंमि वा अन्नपाणे तणं कट्ठं सकरा वा हुज्जा 'अन्नं वावि तहाविहं' पयरकक्कड़गाइवि हुज्जा 'तं उक्खिविउ्तु०' ॥ १४४ ॥ सिलोगो, तं अट्ठिगादि हत्थादिणा णो उक्खिविऊण णिक्खिवेज्जा, आसिज्जते जेण तं आसयं, तं च मुहं, तेण आसएणावि ण छड्डेज्जा, ताणि य अजयणाए खिविज्जमाणाणि जत्थ पडंति तत्थ पाणविराहणा होज्जा, मुहेण छड्डेज्जा तस्स सत्तघातो भवति वाउक्कायसंघट्टो य, तणकट्ठाईणि घेत्तूण मतिमा णियए दट्ठूण कोइ भणेज्जा–एतेहिं चेव वल्लिकरेहिं

*** अत्र भोजन-विधि: दर्शयते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥६०-१५९॥

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

भुत्तो एसत्ति, तम्हा हत्थेण अप्पसागारियं गहेऊण एगंतमवक्कमेज्जा ' एगंतमवक्कमित्ता० ' ॥ १४५ ॥ सिलोगो, जाहे एगंतमवक्कंतो ताहे निरुवरोहे अवगासे पडिलेहिय पमज्जिय अचित्ते थंडिले जयणाए पडिट्ठवेज्जा, जइ अतिच्छिउंकामो विस्समणट्ठं ताहे इरियाए पडिक्कमेइ, किंच- जत्थ परिट्ठविज्जइ तत्थ हत्थसयब्भंतरे पडिक्कमियव्वं । इदाणिमागतस्स समुद्दिसंतस्स विधी भण्णइ- ' सिआ य भिक्खू इच्छिज्जा० ' ॥ १४६ ॥ सिलोगो, कयाति तस्स साधुणो चित्तं भवेज्जा उवस्सए गंतूणं भोक्खामि, तओ ' सपिंडपातमागम्म ' सह पिंडवाएण पडिस्सयं गंतूण, उंडुयं ठाणं भवइ, तं पडिलेहइ, तत्थ विहिणा ठाविऊण भत्तपाणं पडिलेहित्ता- ' विणएणं पविसित्ता० ' ॥ १४७ ॥ सिलोगो, विणओ नाम पविसंतो णिसीहियं काऊण 'नमो खमासमणाणं ' ति भणंतो जति से खणिओ हत्थो, एसो विणओ भण्णइ, एतेण विणएण सो मुणी पविसिऊण गुरुसगासे ठाणं ठाइउं, इरियावहियमादाय णाम जाहे गुरुसगासमागओ ताहे पडिक्कमामि इरियावहियाए विराहणाए० तत्थ अरहं उच्चारेत्ता काउस्सग्गं ठिओ- ' आभोइत्ताण० ' ॥ १४८ ॥ सिलोगो, आभोएत्ताण णाम णाऊणं, जो अइआरो कओ तमतियारं अहक्कमं तंमि काउस्सग्गे ठितो हियए ठविज्जा, सो य अतियारो साधुणो गमणागमणे पडुच्च होज्जा भत्तपाणे वा घेप्पमाणे, जो अतियारो तमणुचिंतेऊण उस्सारेइ, ताहे ' लोगस्सुज्जोयगरं ' कड्ढिऊण तमतियारं आलोएइ, तं च इमेण पगारेण आलोएज्जा । ' उज्जुप्पन्नो० ' ॥ १४९ ॥ सिलोगो, उज्जु पण्णा तस्स सोऽयं उज्जुप्पण्णो, अणुव्विग्गो णाम ण नीयं तुरियं वा आलोएइ, अव्वक्खित्तेण चेतसा नाम तमालोयंतो अण्णेण केणइ समं न उल्लावइ, अवि वयणं वा अन्नस्स न देई, ततो वंदित्ता जं जहा गहियं तं तहा एव हत्थं वा मत्तं वा दावारं वा आलोएइ ' न सम्ममालोइयं० ' ॥ १५० ॥ सिलोगो, जाहे आलोइयं भवइ

अत्र गौचरी-आलोचना विधि: दर्शयते

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥६०-१५९॥

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

ताहे जइ किंचि अजाणयाए ण सम्ममालोइयं पुरेकम्मपच्छाकम्मादि तस्स पुण पडिक्कमेज्जा, तत्थ य पडिक्कमाणेण वोसट्ठ-देहेन काउस्सग्गे चिंतेज्जा ' अहो जिणेहिं असावज्जा० ' ॥ १५१ ॥ सिलोगो, ताहे– ' णमुक्कारेण० ' ॥ १५२ ॥ सिलोगो " नमोक्कारेण " "नमो अरिहंताणं" तिएतेण नमोक्कारेण काउस्सग्गं उस्सारेत्ता जिणसंथवो ' लोगस्स उज्जो-अगरे ' भन्नइ, तं काड्ढिऊण जइ पुव्वं ण पट्ठवियं ताहे पट्ठविऊण सज्झायं करेइ, जाव साधुणो अन्ने आगच्छंति, जो पुण खमणो अत्तलाभिओ वा सो मुहुत्तमेत्तं वा सज्झो (वीसत्थो) इमं चिंतेज्जा-'वीसमंतो इमं' ॥१५३॥ सिलोगो, साहूसु य आगएसु आयरियं आमंतेहि (ति), जेण परिग्गहणं सोहणं, अह न गाहियं ताहे भणइ-खमासमणो! देह इओ जस्स दायव्वं इच्छाकारेण, ताहे जइ तेहिं दिन्नं तो सोहणं, अह भणंति-तुमं चेव देहि, ताहे ' साहवो तो चिअत्तेणं० ' ॥ १५४ ॥ सिलोगो, चिअत्तं णाम अन्नपाणे अप-डिबद्धो सव्वभावेण, जहावत्थुं भणइ--इच्छाकारेण अणुग्गहं करेह, न रायवेट्ठिमिह मण्णमाणो निमंतेति, जइ कोइ इच्छइ सोहणं, तेहिं सद्धिं भुंजिज्जा । ' अह कोई न इच्छिज्जा० ' ॥ १५५ ॥ सिलोगो, अह पुण तेसिं साहूणं कोईवि न इच्छेज्जा ताहे एक्क-ओ उ भुंजेज्जा, किंच- तेण साहुणा आलोय भायणे समुद्दिसियव्वं, जयं नाम तदुवउत्तेण, अपरिसाडियं दुविहं--लंबणाओ (हत्थाओ) मुहाओ य, उवायं चेव जतं जं न परिसाडइ, तं पुण भोयणं--'तित्तगं व' ॥ १५६ ॥ सिलोगो, तत्थ तित्तगं एल-गवालुगाइ, कडुमस्सगादि, जहा पभूएण अस्सगेण संजुत्तं दोद्धगं, कसायं निप्फावादी, अंबिलं तक्कंबिलादि, मधुरं जलखीरादि, लवणं पसिद्धं चेव, एताणि कस्सइ हितइच्छिताणि जहा पुव्वमुसिणभावियसरीरस्स सीताहितत्तणे वा उसिणं मधुरमेव पडिहाइ, एवं सव्वत्थ जाणियव्वं, तम्हा साहुणा सब्भावाणुकूलेसु रागो ण कायव्वो, पडिकूलेसु य दोसो, ' एयलद्धमन्नत्थपउत्त ' -मिति

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥६०-१५९॥

दीप अनुक्रम [७६-१७५]

अण्णो-मोक्खो तण्णिमित्तं आहारेयव्वंति, तम्हा साहुणा सब्भावाणुकूलेसु २ साधुत्ति (न) २ जिब्भिंदियं उवालभइ, जहा जमेतं मया लद्धं एतं सरीरसगडस्स अक्खोवंगसरिसन्तिकाऊण पउत्तं, न वण्णरूवबलाइनिमित्तंति, तं मधुघयमिव भुंजियव्वं साहुणा, जहा महुघयाणि भुंजंति तहा तं असोहणमवि भुंजियव्वं, अहवा जहा महुघयं हणुगाओ हणुगं असंचारेहिं भुंजितव्वं। 'अरसं विरसं०' ॥१५७॥ सिलोगो, अरसं नाम असंपत्तरसं, हिंगुलवणादीहिं संभारेहिं रहियं, विरसं नाम सभावओ विगतरसं विरसं भण्णइ, तं च पुराणकण्हवन्नियसीतोदणादि 'सूचियं' तं पुण मंथुकुमासा ओदणो वा होज्जा, मंथू नाम बोरचुन्नजवचुन्नादि, कुम्मासा जहा गोल्लविसए जवमया करेंति, तेन तप्पमारं भोयणं। 'उप्पण्णं णाइ०' ॥ १५८ ॥ सिलोगो, उप्पण्णं नाम जं अप्पं वा बहुं वा फासुगं लद्धं तं णातिहीलेज्जा, णगारो पडिसेहे वट्टइ, अतिसद्दो अतिक्कमे, हीलणा-णिंदणा, तत्थ साहुणा इमं आलंबणं कायव्वं, जहा मम संथवपरिधारिणो अणुवकारियस्स अप्पमवि परो देति तं बहु मण्णियव्वं, जं विरसमवि मम लोगो अणुवकारिस्स देति तं बहु मन्नियव्वं, अहवा इमं आलंबणं कायव्वं-- 'सुहालद्धं सुहाजीवी' सिलोगद्धं, सुहालद्धं नाम जं कोंटलवेंटलादीणि मोत्तूणमितरहा लद्धं तं सुहालद्धं, सुहाजीवि नाम जं जातिकुलादीहिं आजीवणविसेसेहिं परं न जीवति तेण सुहालद्धं आहाकम्माईहिं दोसेहिं वज्जियं भोत्तव्वंति। किंच-' दुल्लहा उ सुहादाई०' ॥ १५९ ॥ सिलोगो, सोम! सुहादायि एरिसो, जहा एगो परिव्वायगो, सो एगं भागवतं उवट्ठिओ-अहं तव गिहे वासारत्तं करेमि, मम उदंतं वहाहि, तेण भणिओ--जइ मम उदंतं न वहसि, एवं होउत्ति, से सो भागवओ सेज्जभत्तपाणाहरणा उदंतं वहइ, अण्णदा य तस्स घोडओ चोरेहिं हिओ, अतिप्पभायंतिकाऊण जालीए बद्धो, सो य परिव्वायओ तलाए ण्हायओ गओ, तेण सो घोडओ दिट्ठो,

आगंतुं भणई--मम पाणियतडे पोत्ती विस्सरिया, गोहो विसज्जिओ, तेण घोडगो दिट्ठो, आगन्तुं कहियं. तेण भागवएण णायं-जहा परिच्वायएण उवाएण कहियं, तेण परिव्वायओ भण्णइ- जहा जाहि, णाहं तव निव्विट्ठं उदंतं वहामि, निव्विट्ठं अप्पफलं भवइ, एरिसो मुहादायी दुल्लभो । महाजीविमि उदाहरणं--एगो राया धम्मं परिक्खति, को धम्मो ?, जो अनिव्विट्ठं भुंजई, तो तं परिक्खेमित्तिकाउं मणुस्सा संदिट्ठा- राया मोदए देति, तत्थ बहवे कप्पाडियादयो आगया, पुच्छिज्जंति--तुब्भे (केण) भुंजह ?, अण्णो भणति--अहं मुहेण भुंजामि, अण्णो-अहं पाएणं, अन्नो-अहं हत्थेहिं, अण्णो-अहं लोगाणुग्गहेण, सव्वे ते रन्नो कहिज्जंति, चेल्लओ आगओ, सो पुच्छिओ- तुमं केण भुंजाहि ?, भणइ- 'अहं मुहा भुंजामि,' रण्णो कहियं, ताहे रण्णा चेल्लओ पुच्छिओ भणइ-जो जेण उल्लग्गइ सो तेण भुंजइ, कहं ?, जेण जे ताव भवंतं आउहेहिं आराहेंति ते आउधेहिं भुंजंति, लेहगाहिणो करेहिं, दूता पाएहिं, गंधव्विया गीएण, सूयमागधादिणो वायाए, कुतित्थियावि मुहमंमलादीहिं, अहं मुहाए भुंजामित्ति, ताहे सो राया एस धम्मोत्तिकाऊणं आयरियसगासे धम्मं सोऊण पव्वइओ, एरिसो मुहाजीवी भण्णइ, जो य मुहादायी जो य मुहाजीवी एते दोऽवि सिज्झंति, जाव य ण परिणिव्वायंति ता देवलोगेसु य पच्चायायंति, बेमि नाम तीर्थकरस्य सुधर्मस्वामिनो(वो)पदेशाद् ब्रवीमि, न स्वाभिप्रायेणेति ॥ ॥ पिण्डैषणाध्ययनप्रथमोद्देशकचूर्णी समाप्ता ॥

उद्देशक-२

पिंडेषणाअध्ययनस्य पढमउद्देसए ण जं भणियं तमिदाणिं भण्णति, तंजहा— 'पडिग्गहं संलिहित्ताणं' ॥ १६० ॥ सिलोगो, ' ग्रह उपादाने ' धातुः, अस्य धातोः प्रतिपूर्वस्य 'ऋदोरपि' (पा. ३-३-५७) त्यनुवर्त्तमाने 'ग्रहवृदनिश्चिगमश्चे'ति (पा. ३-३-५८) अप्प्रत्ययः, पकारः 'अनुदात्तौ सुप्पितौ' (पा. ३-१-४) विति विशेषणार्थः, परगमनं प्रतिग्रहं, परिगिज्झाति

जम्मि भायणे असणादिदा सो पडिग्गहो, 'लिह आस्वादने' धातुः, अस्य धातोः संपूर्वस्य 'अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः प्राक्त्वे'त्य- (पा. ३-४-१८) नुवर्त्तमाने 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाल' (पा. ३-४-२१) इति क्त्वा प्रत्ययः, ककारः 'क्ङिति चे'ति (पा.१-१-५) गुणवृद्धिप्रतिषेधार्थः, 'हो ढ' इति (पा. ८-२-३१) हकारस्य ढकारः 'झषस्तथो धोऽधः' इति (पा. ८-२-४०) तकारस्य धकारः, 'ष्टुना ष्टु'रिति (पा. ८-४-४१) ष्टुत्वेन धकारस्य ढकारः, 'ढो ढे लोपः' इति (पा. ८-३-१३) ढकारस्य लोपः, 'ढलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽण' इति (पा. ६-३-१११) दीर्घत्वं, समेकीभावेन लीढ्क्त्वा इति 'प्रादय' इति (पा. १-४-५८) समासः 'गतिकारकोपपदानां कृद्भिः समासवचन'मिति (पा. ६-२-१३९) 'सुपो धातुप्रातिपदिकयो'रिति (पा. २-४-७१) सुबलुक्, अकृतव्यूहाः पाणिनीयाः कार्यं दृष्ट्वा प्रतिनिवर्त्तंत इति निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः, संलिह इति स्थिते 'समासे नञ्पूर्वे क्त्वो ल्यपि'ति (पा. ७-१-३७) क्त्वाप्रत्ययस्य ल्यप् आदेशः, पकारः पूर्ववत्, लकारः लिहतिप्रत्ययात्पूर्व उदात्तार्थः, परगमनं, संलिह्य, तं पडिग्गहं संलिहित्ता नाम पदेसणीए भत्तावयवाणमसेसाणं वयणे पक्खेवो, 'लिप उपदेहे' धातुः, अस्य धातोः भावे (पा. ३-३-१८) घञ्प्रत्ययः अनुबन्धलोपः पुगंतलघूपधगुणपरगमनानि, लिप्यते तस्य लेपः, लेवमायाए नाम जाव लेपदेशाव-सेसं ताव संलिहेज्जा, यम उपरमे धातुः, अस्य धातोः सम्पूर्वस्य 'क्तक्तवतू निष्ठे'ति (पा. १-१-२६) क्तप्रत्ययः, ककारः 'क्ङिति चे'ति (पा. १-१-५) विशेषणार्थः, 'अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिती'ति (पा.६-४-३७) अनुनासिकान्तस्य झलि क्ङिति परतः अनुनासिकस्य लोपो भवति, परगमनं, संजओ नाम अप्पमत्तो, दुट्ठो गन्धः दुर्गन्धः अशो-भनः अप्रीतिकरः अमनोज्ञो, दुर्गन्धं च सुगंन्धं वा, सर्वशब्दो अशेषवाची, सर्वं प्रातिपदिकं, नपुंसकविवक्षायां सु 'स्वमोर्नपुंसका-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥१६०-२०९॥

दीप अनुक्रम [१७६-२२५]

दि'ति (पा. ७-१-२३) वर्त्तमाने 'अतोऽम् (पा. ७-१-२४), अतः अकारान्तात्प्रातिपदिकात् अम्, अतो गुणः, परपूर्वत्वं, सर्वं, भुज पालनाभ्यवहारयोः धातुः, अस्य धातोः 'वर्त्तमाने लटि'ति (पा. ३ २-१२३) लट् प्रत्ययः, टकारलकारयोरनुबन्धलोपः, लस्य तिपादयो भवन्तीति सर्वतिप्यतिप्रसंगे प्राप्ते 'अनुदात्तङित आत्मनेपदं' (पा. १-३-१२) भवति, किं पुनरात्मनेपदं भवति ?, तङानावात्मने (पा. १-४-१००) तत्र सर्वात्मनेपदप्रसंगे प्राप्ते तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमानि (पा.१-४-१०१) इ प्रथमपुरुषस्यैकस्मिन्नर्थे एकवचनमुपादीयते, तं तकारादकारमपकृष्य 'टित आत्मनेपदानां टेरेत्व'मिति (पा. ३-४-७९) अकारस्य एकारः 'कर्त्तरि शपि' ति (पा. ३-१-६८) शपि प्राप्ते 'रुधादिभ्यः श्नम्' (पा. ३-१-७८) मकारः 'मिदचोऽन्त्यात्परः' (पा. १-१-४७) इति विशेषणार्थः, अकार उच्चारणार्थः, लस्य तिपादयो भवन्तीति प्रातिपदिकप्रसंगे प्राप्ते शेषात् कर्त्तरि परस्मैपदं' (पा. १-३ ७८) भवति, किं पुनः परस्मैपदं भवति ?, प्रातिपदिकसत्कः इत्येवमादि, तत्र प्रथमपुरुषस्य एकस्मिन्नर्थे एकवचनमुपादीयते, तिप्, पकारलोपः इकारः'नित्यं ङित' (पा. ३-४-९९) इतश्चेति (पा. ३-४-१००) इकारलोपः 'कर्त्तरि शपि'ति (पा. ३-१-६८) शप् प्राप्ते 'तुदादिभ्यः शः' (पा ३-१-७७) प्रत्ययः, शकारादकारमपकृष्य शकारः सार्वधात्वर्थः यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्चे'ति (पा. ३-४-१०३) यासुट्, टकारस्य 'आद्यन्तौ टकितौ' इति (पा. १-१-४६) विशेषणार्थः, उकार उच्चारणार्थः, ' लिङः सलोपोऽनन्त्यस्ये ' वेति सकारलोपः, 'अतो या इयः' अतः-अकारान्तादङ्गादुत्तरस्य या इत्येतस्य इय आदेशः, ' लोपो व्योर्बली'ति (पा. ६-१-१६) यकारलोपः 'आद् गुण' इति (पा. ६-१-८१) गुणः भवत्येकश्च पूर्वपरयोः, परगमनं, उत्सृजेत्, नकारादकारस्य उकारेण सह आद् गुण (पा. ६-१-८७) नोत्सृजेत्-न छड्डए, ण सुब्भि सुब्भि भोच्चा

दुर्गन्धं परिठवेज्जा, एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाणमितिकाउं दुग्गंधगहणेण दुवण्णदुरसादीवि भेदा गहिया, सुगन्धगहणेणावि पसत्थवण्णरसाइभेदा गहिया । सीसो आह—जइ एवं सिलोगपच्छद्धं पुव्विं पढिज्जइ पच्छा पडिग्गहं संलिहित्ताणं, तो अत्थो सुहगेज्झयरो भवति, आयरिओ भणइ--सुहमुहोच्चारणत्थं, वाचत्ता य सुत्तबन्धा, पसत्थं च पडिग्गहगहणं उद्देसगस्स आदितो भण्णमाणं भवतित्तिअतो एयं सुत्तं एवं पढिज्जति, तं पुण दुगंधं वा सुगन्धं वा कत्थ भत्तं होज्जा ?, 'सेज्जा निसीहियाए०' ॥ १६१ ॥ सिलोगो, सेज्जा-उवस्सताादि मट्ठकोट्ठयादि, तहा निसीहिया जत्थ सज्झायं करेंति, अहवा सेज्जाए वा निसीयाहिएत्ति, तासु सेज्जानिसीहियासु भुत्तो होज्जा गोयरग्गसमावण्णो बालवुड्ढखवगादि मट्ठकोट्ठगादिसु समुद्दिट्ठो होज्जा, ततो सो अयावयट्ठं नाम ण यावयट्ठं, उट्ठं(ऊणं)ति वुत्तं भवति, 'जइ तेण न संथरे' सिलोगो, सो पुण खमओ वा होज्जा दोसीणो वा गंधितो, एए वा बालकेसु विधरेसु एतेहिं गंधियं, तं च अयावयट्ठं 'ततो०' ॥ १६२ ॥ पुण भत्तपाणगवेसणट्ठाए उत्तरइ, उत्तरमाणो य तेणेव विहिणा पुव्वभणिएणं जो पढमुद्देसएणं 'संपत्ते भिक्खुकालंमि' एत्तो आरब्भ जो विही भणिओ तेण विहिणा इमेण उत्तरेण य गवेसेज्जा, उत्तरो नाम पुव्वभणियातो इदाणिं जो विधी भण्णिहिति, सो य उत्तरो इमो— 'कालेण निक्खमे भिक्खू०' ॥ १६३ ॥ सिलोगो, 'कालेणं'ति गामनगराइसु भिक्खावेलाए उवस्सयाओ निक्खमेज्जा, तहेव य कालेण चेव उच्चे जोतिसिए (चिओ जो तंमि) पडिक्कमेज्जा, पडिक्कमेज्जा नाम नियसेज्जा, णियं च खेत्तं पहुप्पति, कालो पहुप्पति, भायणं पहुप्पति, तं हिंडिउं, एत्थ अट्ठ भंगा, 'अकालं च विवज्जेत्ता' णाम जहा पडिलेहणवेलाए सज्झायस्स अकालो, सज्झायवेलाए पडिलेहणाए अकालो एवमादि अकालं विवज्जित्ता 'काले कालं समायरे' तं भिक्खावेलाए भिक्खं समायरे, पडिलेहणवेलाए

*** अत्र 'जयणा' वर्णयते

पडिलेहणं समायरे, एवमादि, भणियं च—'जोगो जोगो जिणसासणंमि दुक्खक्खया पउज्जंतो। अण्णोऽण्णमबाहंतो असवत्तो होइ कायव्वो ॥ १ ॥' किंच 'अकाले चरसी०' ॥ १६४ ॥ सिलोगो, तमकालचारिं आउरीभूतं दट्ठूण अण्णो साहू भणेज्जा, लद्धा ते एयंमि निवेसे भिक्खत्ति ?, सो भणइ- कुओ एत्थ थंडिल्लगामे भिक्खत्ति, तेण साहुणा भण्णइ- तुमं अप्पणो दोसे परस्स उवरिं निवाडेहि, तुमं पमाददोसेण सज्झायलोभेण वा कालं न पच्चुवेक्खसि, अप्पाणं अइहिंडीए ओमोदरियाए किलामेसि, इमं सन्निवेसं च गरिहसि, जम्हा एते दोसा तम्हा– 'सइ काले चरे भिक्खू० ॥ १६५ ॥ सिलोगो, सति नाम विज्जमाणे काले हिंडियव्वं, पुरिसकारो नाम जंघाबलादिसु बलं ताव हिंडियव्वं, अण्णायपिंडेसणयस्स पुरिसकारेण विणा वित्ती तु ण भवति, कयाइ पुरिसकारे कीरमाणेऽवि भिक्खं न लभेज्जा, तत्थ इमं आलंबणं कायव्वं- 'अलाभुत्ति न सोइज्जा' हा न लहामित्ति, निद्धम्मो उ खरंटइ लोगे, एरिसं न भाणियव्वं न चिंतेयव्वंति, किन्तु 'तवुत्ति अहियासए' ओमोयरिया अणसणाइ बारसविहतवअब्भंतरत्तिकाऊणं अधियासेयव्वं, कालजयणा गता। इदाणिं खेत्तजयणा भण्णइ 'तहेवुच्चावया पाणा० ॥ १६६ ॥ सिलोगो, 'तहेव'त्ति जहा अकालो वज्जेयव्वो तहा इमंपि वज्जेयव्वं, उच्चावया नाम नाणापगारा, अहवा उच्चावया पसत्थजातिदेहरूपवंससरीरसंठाणादीहिं उववेता, अवया नाम जे एतेहिं चेव परिहीणा, ते उच्चावया पाणा पंथे वा पंथब्भासे भत्तट्ठाए बलिपाहुडियादिसु समागया दट्ठूण णो उज्जुयं गच्छेज्जा, किन्तु 'जयमेव परक्कमे' जयं नाम परिहरइ, अहवा नो उज्जुयं गच्छति, एत्तो संयतस्स अन्तराइयअधिकरणादयो दोसा भवंति। 'गोअरग्गपविट्ठो अ०' ॥ १६७ ॥ ॥ सिलोगो, गोयरग्गगएण भिक्खुणा णो णिसियव्वं कत्थइ घरे वा देवकुले वा सभाए वा पवाए वा एवमादि. जहा य न निसिएज्जा तहा ठिओऽवि धम्मकहावाद-

कहा-विग्गहकहादि णो 'पथंधिज्जा' नाम ण कहेज्जइ, णण्णत्थ एगणाएण वा एगवागरणेण वा, 'संजए'त्ति आमंतणं, खेत्त-जयणा गता। इदाणिं दव्वजयणा भण्णइ—'अग्गलं फलिहं०' ॥१६८॥ सिलोगो, अर्गला-गोवाडादीदारेसु भवति, फलिहो नगरदुवारादिषु, दारं- दारमेव, कवाडं- बारत्तवत्तं, एताणि अग्गलादीणि 'अवलंबिया ण चिट्ठेज्जा' अवलंबिया नाम अवथंभि-ऊणंति वुत्तं भवति, मुणिसद्दो आमंतणे वट्टइ, इमे दोसा-कयाति दुब्बद्धे पडेज्जा, पडंतस्स य संजमविराहणा आयविराहणा वा होज्जत्ति, दव्वजयणा गया। इयाणिं भावजयणा भण्णइ, तं०- 'समणं माहणं वावि०' ॥ १६९ ॥ सिलोगो, समणा पंच, माहणा धिज्जाइया, किविणा- पिंडोलगा, वणीमगा पंच, एतेसिं पुव्वं किंचि पविट्ठं पुरओ वा पविसमाणं पासित्ता अइक्कमिऊण ण पविसेज्जा, ण य तेसिं दायगपडिच्छगाण चक्खुफासे चिट्ठेज्जा, किं कारणं ?, इमे दोसा भवन्ति 'वणीमगस्स वा०' ॥ १७० ॥ सिलोगो, वणीमगगहणेण सेसावि माहणादिणो एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाणमितिकाउं गहिया भवन्ति, तस्स भिक्खागस्स दायगस्स वा दोण्हंपि वा दायगपडिगाहगाणं अप्पत्तियं कदायि भवेज्जा पवयणलाघवं वा, एवमादि दोसा भवंति तम्हा- 'पडिसेहिए व दिन्ने वा०' ॥ १७१ ॥ सिलोगो, जाहे समणमाहणादीणं अण्णतरो पडिसेधिओ भवइ, दिण्णं वा से, सयं वा विणियत्ता भवंति, ताहे साहुणो भत्तपाणट्ठाए उवसंकमियव्वंति, सत्तपीडाधिकारोऽणुवट्टइ- 'उप्पलं पउमं०' (१७३) सिलोगो, उप्पलंनीलोत्पलादि पउमं पसिद्धमेव कुमुदं- गद्दभुप्पलं मदगंतिआ-मेत्तिया, अण्णे भणंति-धियइच्छो मदगंतिया भण्णइ, न केवलमेतासिं जो संलुंचिऊणं देति तस्स हत्थाओ ण घेप्पइ, किं तु अण्णंपि जं पुप्फं सचित्तं संलुंचिऊण देइ तमवि न घेप्पइ, संलुंचिया णाम छिंदिऊण, तमेवंपगारं दिंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं' ॥ १७४ ॥ सीसो आह-

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥१६०-२०९॥

दीप अनुक्रम [१७६-२२५]

णणु एस अत्थो पुव्वि चेव भणिओ जहा 'सम्मद्दमाणी पाणाणि बीयाणि हरियाइं'ति हरियग्गहणेण वणप्फई गहिया, किमत्थं पुणो गहणं कयंति ?, आयरिओ भणइ-तत्थ अविसेसियं वणप्फइग्गहणं कयं, इह पुण सभेदभिण्णं वणप्फइकायमुच्चारियं, जं जहा अकप्पियं भवति तं तहा इमा पडिसेहेइ, तहा 'उप्पलं पउमं वावि ०' ॥ १७५ ॥ सिलोगो, सम्मद्दिया नाम पुव्वच्छिण्णाणि जाणि ताणि अपरिणयाणि संमद्दणसंघट्टणाणि काऊण देइ, तमेवंपगारं दिंतियं पडियाइक्खे-न मे कप्पइ तारिसं। किंच जहा उप्पलादीणि सत्ताणि परिवज्जिज्जंति तहा इमाणिवि--सालुअं वा विरालियं० ॥ १७७ ॥ सिलोगो, 'सालुगं' नाम उप्पलकन्दो भण्णइ, 'विरालियं' नाम पलासकंदो भण्णइ, जहा बीए वस्सी जायंति, तीसे पत्ते, पत्ते कंदा जायंति, सा विरालिया भण्णइ, कुमुदा उप्पला य पुव्वभणिया, तेसिं दोण्हवि णाली--णालिया भण्णइ, एयाणि लोगो खायति अतो पडिसेहणनिमित्तं नालियागहणं कयंति, मुणालिया-गयदंतसन्निभा पउमिणिकंदाओ निग्गच्छति, 'सासवनालिअं' सिद्धत्थगणालो, तमवि लोगो ऊणसंतिकाऊण आमगं चेव खायति, उच्छुखंडमवि पव्वेसु घरमाणेसु ता नेव अनवगतजीवं कप्पइ। किंच-'तरुणगं वा पवालं०' ॥१७८॥ सिलोगो, 'तरुणगं' नाम अहुणुट्ठियं 'पवालं' पल्लवो, सो रुक्खस्स वा हरियस्स वा होज्जा, रुक्खे जहा अंबिलयाईणं, तणस्स जहा अज्जगमूलादीणं, आमगं नाम सचित्तं, परिवज्जए (परितो) वज्जए परिवज्जए। 'तरुणिअं वा छिवाडिं' ॥ १७९ ॥ सिलोगो, 'तरुणिया' नाम कोमलिया, 'छिवाडी' नाम संगा, 'आमिया' नाम सचेतणा, 'सइं भज्जिया' नाम एक्कसिं भज्जिया, तं तहप्पगारं छिवाडिं देंतियं पडियाइक्खे०। किंच-'तहा कोलमणुस्सिन्नं'० ॥ १८० ॥ सिलोगो, कोलं वज्जरं भण्णइ, अण्णे पुण भणंति-वंसकिरिल्लो वेलुयं, तमवि अणुस्सिन्नं न कप्पइ, 'कासवनालियं' सीवणिफलं भण्णइ, तमवि

अणुस्सिण्णं न कप्पइ, 'तिलपप्पडगं' जो आमगेहिं तिलेहिं कीरइ, तमवि आमगं परिवज्जेज़्जा, 'नीमं' नीमरुक्खस्स फलं, तमवि आमगं परिवज्जए। किंच 'तहेव चाउलं पिट्ठं' ॥ १८१ ॥ सिलोगो, चाउलं पिट्ठं भट्ठं भण्णइ, तमपरिणतधम्मं सचित्तं भवति, सुद्धमुदयं वियडं भण्णइ, 'तिलपिट्ठं' नाम तिलवट्टो, सो य अद्धाइहिं तिलेहिं जो कओ तत्थ अभिण्णता तिला होज्जा दरभिन्ना वा, एवमादी नो पडिग्गहेज्जा, 'पूतियं' नाम सिद्धत्थपिंडगो, तत्थ अभिन्ना वा सिद्धत्थगा भोज्जा, दर-भिन्ना वा, एवं चाउलपिंडादी आमगं परिवज्जए। 'कविट्ठं माउलिंगं च०' ॥१८२॥ सिलोगो, कविट्ठमाउलिंगाणि पसिद्धाणि, मूलओ सपत्तपलासो, मूलकत्तिया-मूलकंदा चित्तलिया भण्णइ, एतेसिं कविट्ठाईणं अन्नतरं लब्भमाणं आमगं--असत्थपरिणतं मण-सावि न पत्थए, किमंग पुण अकप्पमाणा पडिगाहेत्तए ?। किंच--'तहेव फलमंथूणि'० ॥ १८३ ॥ सिलोगो, मंथू-बदरचुण्णो भण्णइ, फलमंथू बदरओंबरादीणं भण्णइ, 'बीयमंथू' जवमासमुग्गादीणि, एवमादि, बिहेलगरुक्खस्स फलं बिहेलगं, पियालो रुक्खो तस्स फलं पियालं, एवं फलमंथुं लब्भमाणमवि परिवज्जेज्जा, सांसो आह-किमम्हेहिं घेत्तव्वं ?, भन्नइ--'समुआणं चरे भिक्खू०' ॥ १८४ ॥ सिलोगो, समुदाया णिज्जइत्ति, थोवं थोवं पडिवज्जइत्ति वुत्तं भवइ, 'चरे' नाम हिंडेज्जा, भिक्खु-गहणेण साधुणो णिद्देसो कओ, साहुणा समुयाणट्ठा पविट्ठेण उच्चावयं कुलं सदा पविसियव्वं, 'उच्चं' नाम जातितो णो सारतो, सारतो णो जातीतो, एगं सारतोवि जाइओवि, एगं णो सारओ नो जाइओ, अवयमवि जाइओ एगं अवयं नो सारओ सारओ एगं अवयं नो जाइओ एगं जाइओऽवि अवयं सारओऽवि एगं नो जाइओ अवयं नो सारओ, अहवा उच्चं जत्थ मणु-स्साणि लब्भंति, अवयं जत्थ न तारिसाणीत्ति, तहप्पगारं कुलं उच्चं वा भवउ अवयं वा भवउ, सव्वं परिवाडीय समुदाणितव्वं,

ण पुण नीयं कुलं अतिक्कमिऊण ऊसढं अभिसंधारिज्जा, 'णीयं' नाम णीयंति वा अवयंति वा एगट्ठा, दुगुंछियकुलाणि वज्जे-ऊण जं सेसं कुलं तमतिक्कमिऊणं नो ऊसढं गच्छेज्जा, ऊसढं नाम ऊसढंति वा उच्चंति वा एगट्ठं, तंमि ऊसढे उक्कोसं लभीहामि बहुं वा लब्भीहामित्तिकाऊण णो णीयाणि अतिक्कमेज्जा, किं कारणं ?, दीहा भिक्खायरिया भवति, सुत्तत्थपलिमंथो य, जड्ड-जीवस्स य अण्णे न रोयंति, जे ते अतिक्कमिज्जंति ते अप्पत्तियं करेंति जहा परिभवति एस अम्हेत्ति, पव्वइयोवि जातिवायं ण मुयति, जातिवाओ य उववूहिओ भवति । तम्हा--'अदीणो वित्ति०' ॥ २८५ ॥ सिलोगो, 'अदीणो' नाम अविमणो, तेसु उच्चनीयेसु कुलेसु वित्तिमेसेज्जा, एसेज्जा नाम गवेसेज्जा, णो विसीएज्जा णाम विसादो न कायव्वो, जहा हिंडंतस्सऽवि मे जो (नो सं) पडइ, घरसयमवि गंतुं एगमवि भिक्खं न लहामि, पडिस्सयं गच्छामित्ति,'पंडिते'त्ति आमंतणं, मुच्छिओ इव मुच्छिओ (मुच्छिओ) न किंचि कज्जाकज्जं जाणइ तहा सोऽवि अन्नपाणगिद्धो ईरियाईसु उवयोगं न करेइ,तम्हा अमुच्छिएण भोयणे भवियव्वंति, मायण्णि नाम 'ज्ञाऽवबोधने धातुः' अस्य धातोः मात्रापूर्वस्य मात्राशब्दस्य 'कर्म्मणि द्वितीयेति (पा. २-३-२) कर्म्मणि उप-पदे द्वितीया विभक्तिर्भवति, का पुनर्द्वितीया ?, अम्, प्रथमयोः पूर्वः सवर्णदीर्घः, मात्रां जानातीत्येवं विगृह्य 'आतोऽनुपसर्गात् क' इति (पा. ३-२-३) कप्रत्ययः, ककारादकारमपकृष्य ककारः 'ङ्किती' ति विशेषणार्थः, 'आतो लोप इति च' 'ङ्किति चे'-(पा. ६-४-६४) त्याकारलोपः, गतिकारकोपपदानां कृद्भिः समासवचनं प्राक् सुप्प्रत्ययः, उपपदमिदं तं सुपा सह समस्यते तत्पुरुषश्च समासो भवति, सति समासे 'सुपो धातुप्रातिपदिकयो' रिति (पा. २-४-७१) सुप् लुक्, 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' (पा. ४-१-१) इति ङीप

एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाणामितिकाउं उग्गमउप्पायादिणोऽवि गहिया, अलभमाणेण किमालंबणं कायव्वं?, 'बहुं परघरे०' ॥१८६॥ सिलोगो, बहुंनाम परिमाणओ तं दव्वं बहुतं, 'विविहं' नाम अणेगप्पगारं, खज्जतित्ति खादिमं, सातिज्जतीति सातिमं, एतंमि खाइमे साइमे वा अलब्भमाणे ण तत्थ पंडिओ कुप्पेज्जत्ति, किं कारणं?, इच्छा देज्जा परो न वा, परो नाम असंजओ सावओ वा, अण्णो वा कोइवि वितकिज्जति सो परो, तंमि ओ (अदी) यमाणे एवं चिंतेयव्वं जयं, एतस्स अप्पज्जत्तियं बहुं च से अणुवकारी, एतेण त इच्छा दिज्ज परो न वा देज्जत्ति । किंच 'सयणासण०' ॥१८७॥ सिलोगो, पठितसिद्धो चेव, किंच 'इत्थिअं पुरिसं वावि०' ॥ १८८ ॥ सिलोगो, मग्गिज्जेज्जा पुरिसे वा, सा य इत्थिया नवतरा वा होज्जा थेरी वा, एवं पुरिसोऽवि, तं इत्थिं पुरिसं वा डहरभावे वट्टमाणं थेरभावे वट्टमाणं 'वंदमाणं न जाइज्जा' जहा अहमेतेण वंदिउत्ति अवस्समेसो दाहेति, तत्थ विपरिणामादिदोसा संभवंति, पुरिसं पुण वंदमाणं २ अन्ने किंचि वक्खेवं काऊण अण्णतो वा मग्गिऊण पुणो तत्थेव गंतूण मग्गइ, जइ ताहे पुणो वंदति तो मग्गिओ जइ कदापि पडिसेहेज्जा तत्थ नो अण्णं फरुसं वए, जहा हीणं ते वंदितं, तुमं अवंदओ चेव, एवमादि, अथवा एस आलावओ एवं पढिज्जइ 'वंदमाणो ण जाएज्जा' वंदमाणो णाम वंदमाणो सिराकंपं पंजलियादीहि णो जाएज्जा, वायाएवि वंदणसरिसाए ण जातिव्वो, जहा सामि भट्टिदेवए वाऽसि, केणति वंदणसीलेण पमादयो अणाभोगओ वा वंदिओ न होज्जा तत्थ-'जे न वंदे न से कुप्पे' ॥ १८९ ॥ सिलोगो, तत्थ जो न वंदति तस्स उवरिं कोहो ण कायव्वो, वंदिओऽवि रायादीहिं णो समुक्कसेज्जा, जहा को मए समाणो संपतित्ति ?, 'एवमन्नस्समाणस्स' त्ति एवसद्दो अवधारणे वट्टइ, किमवधारयति ?, पुव्वोवइट्ठं विधिं अवधारयति, सो एसो विही भण्णइ--एतेण विहिणा पुव्वायरिएहिं

समुदाणमेसितं, तमणुएसमाणस्स णाम तमेव जिणुवदिट्ठं मेरमणुलंबमाणस्स सामण्णमणुचिट्ठइ नाम अहितं चिट्ठति । इदाणिं स-पक्खे तेणिया पडिसेहिज्जंति- 'सिआ एगइओ लद्धुं' ॥ १९० ॥ सिलोगो, सिया नाम कदाइ, एगो नाम संतेसु जति एगो कोइ एरिसं करेज्ज, सो य वण्णगंधरसादीहिं उववेयं भोयणं लद्धूण 'लोभेणं विणिगूहति' लोभेण नाम तंमि भोयणे गिद्धे-मुच्छिओ, विविहेहिं पगारेहिं गूहति विणिगूहति, अप्पसारियं करेइ, अन्नेण अंतपन्तेण ओहाडेति, मा मेयमुक्कस्सयं आयरिओ अण्णो वा कोइ दट्ठूणं सयं आइएज्जा नाम गेण्हेज्जा, जइ पुण पच्छन्नं करेमि तो पढमालियाभिसेणं मंडीए वा तातो अवगासाओ गिण्हामीत्ति, तस्सेवं कुव्वमाणस्स इमे दोसा भवंति , तं० 'अत्तट्ठा गुरुओ लुद्धो' ॥ १९१ ॥ सिलोगो, अत्तणो अत्थो गुरुओ, लुद्धो पसिद्धो चेव, तओ सो अत्तट्ठगुरुयत्तं कुव्वमाणो सपक्खे तेणिया मायापच्चत्तियं 'बहुं पावं पकुव्वति' नाम अतीव कुव्वइ पकुव्वइ, तस्स तं संसारगमणाय भवइ, एस ताव परलोइओ अवाओ भण्णइ, इमो पुण इहलोइओ जहा दुत्तोसओ भवति, कहं ?, तस्स मणुण्णाहारसमुत्तस्स उक्कोसो दव्वअलाभो पायसो, भत्तस्सावि ण तुट्ठी उप्पज्जइ, अपरितुट्ठो य कहं णिव्वुतिं लभि-स्सति ?, अहवा 'णिव्वाणं च न गच्छइ' एसोऽवि परलोगावायो, णिव्वाणं सव्वकम्मक्खयो, मोक्खो सव्वकम्मपगडीणं, णण्णभवे गच्छइ, तमेवंगुणविसिट्ठं निव्वाणं न गच्छइ, एस ताव पच्चक्खो अपच्चक्खमवहरति । इयाणिं अपच्चक्खो पच्चक्ख-मवहरति सो भण्णइ 'सिआ एगइओ लद्धुं०' ॥ १९२ ॥ सिलोगो, कदाचि कोइ लुद्धो भिक्खायरियाए अडमाणो विविहं पाण-भोयणं लद्धूणं जं भद्दगं तं भोत्तुं विवण्णं विरसं च तमाहरइ, तत्थ भद्दगंति वा कल्लाणंति वा सोभणंति वा एगट्ठा, 'विवण्णं' अंबक्खलगकव्वडंडकुरादीयं विवण्णं, विरसं नाम जं समावओ विगतं रसं तं विरसं भण्णइ, तं च सीतोदणादी, सो पुण किमत्थं

भद्दगं भोत्तूणं विवण्णविरसाणि आहरइ ?, 'जाणंतु ता इमे' ॥१९३॥ सिलोगो, जाणंतु ता इमे समणा जहा एस साधू आयतो-मोक्खो भण्णइ, तं आययं अत्थयतीति आययट्ठी, अहोऽयं संतुट्ठो नाम जइ अत्थि तो भुंजति, अलब्भमाणेऽवि समो चेव, अहो य अंतपंतं निसेवइ, लूहाइ से वित्ती, एतस्स ण णिहारे गिद्धी अत्थि, 'सुतोसओ' नाम थोवेणावि आहारेण लद्धेण ण चेव आउलीभवति । किंच-'पूअणट्ठा जसो० ॥ १९४ ॥ सिलोगो, सो पच्छन्नभोई पूयणट्ठी जसोकामी य इमं महंतं अवायं पावइ, तत्थ पूयणट्ठी जहा जइ अहमेव करेमि तो सपक्खपरपक्खओ मे पूया भविस्सइ, 'जसोकामी' नाम एवं कुव्वमाणस्स जसो मे भविस्सइ, जहा अहो महप्पा एसत्ति, एवमादी, 'माणसम्माणकामए' माणो वंदणअब्भुट्ठाणपच्चयओ, सम्माणो तेहिं वंदणादीहिं वत्थपत्तादीहि य, अहवा माणो एगदेसे कीरइ, सम्माणो पुण सव्वप्पगारेहिं इति, माणसम्माणे कामयतीति मानसंमाणकामए, कामयति नाम पत्थयति, सो एवंविहसहावो बहुं 'विविहं' अणेगप्पगारं पावं पसवति, पसवति नाम प्रसूयते, कम्मगरुययाए वा सो लज्जाए वा अणालोएंतो मायासल्लमवि कुव्वति । कहं ?, 'सुरं वा मेरगं वावि०' ॥ १९५ ॥ सिलोगो, तत्थ सुरं पिट्ठकम्मादि दव्वसंजोगओ भवति, मेरगो पसन्नो सुरापायोग्गेहिं दव्वेहिं कीरइ, ण केवलं सुरमेरगा परिहरियव्वा, किन्तु अण्णेऽवि जे मज्जप्पगारा तेऽवि परिहरणिज्जत्ति, जति नाम गिलाणनिमित्तं ताए कज्जं भविज्जा ताहे 'ससक्खं नो पिबेज्जा' ससक्खं नाम सागारिएहिं पडुप्पाइयमाणं, किं कारणं ससक्खं ण पिबेज्जा ?, भण्णति- 'जसं सारक्खमप्पणो' जसो संजमो भण्णइ कित्ती वा, तेण य पीएण मत्तो भवति, मत्तो य संजमं णो पेक्खइ । इयाणिं ससक्खं ण पायव्वं, एगागिणो पायव्वमिति?, अतो भण्णति-'पियए एगओ तेणो०' ॥ १९६ ॥ सिलोगो, पियति नाम पियतित्ति वा आपियइत्ति वा एगट्ठा,

||२०२||

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥१६०-२०९॥

दीप अनुक्रम [१७६-२२५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ५ अ० ॥२०३॥

उद्देश: २

एगइओ णाम कोइ रसलोलुयाए गिलाणादीहिं कारणेहिं तेणियाए 'ण मे कोइ विजाणायि'त्तिकाऊणं सुरमरगादीणि पिएज्जा; अहवा गिहत्थे तेणियं इमेणप्पगारेण करेज्जा, आयरियस्स गिलाणस्स वा दाहामि, मा नाम कोइ वियाणति'त्तिकाऊण आइएज्जा, तस्सेवंपगारस्स दोसा इहलोइयाइया भण्णमाणा सुणसुत्ति, तत्थ नियडी माया भण्णइ, ते य दोसा इमे-'वड्ढइ सुंडिआ तस्स०' ॥ १९७ ॥ सिलोगो, सुंडिया नाम जा सुरातिसु गेही सा सुंडिआ भण्णति, ताणि सुरादीणि मोत्तूणं ण अन्नं रोयइ, मायामोसं च वड्ढइ, कहं?, जाहे सो पुच्छिओ भवति ताहे भणइ-चाल्लोवाउलोऽवि एसो नत्थि,किंच-अयसो य से सपक्खे परपक्खे य भवति, जहा एस सो विघडपाउ एवमादि, 'अनिव्वाणी' नाम जाहे ताणि सुरादीणि ण लब्भति ताहे तेसिं अभावे परमं दुक्खं समुप्पज्जतित्ति, अहवा अणिव्वाणी मोक्खाभावो भण्णति, तहा असाधुता से भवति, असाधुया नाम असंजतत्तं भण्णइ, सा य असाहुआ सययं भवति, सययं णाम सव्वकालं, सो य 'निच्चुव्विग्गो जहा तेणो० ॥ १९८ ॥ सिलोगो, किंच-'आयरिए नाराहेइ०' ॥ १९९ ॥ सिलोगो, इदाणिं तद्दोसविसुद्धाणं भत्तपाणादीणं जो भोत्ता सो भण्णइ, जहा-तवं कुव्वइ मेहावी० ॥ २०१ ॥ सिलोगो, मेधावी दुविहो, तं०-गंथमेधावी मेरामेधावी य, तत्थ जो महंतं गंथं अहिज्जति सो गंथमेधावी, मेरामेधावी णाम मेरा मज्जाया भण्णति तीए मेराए धावातीत्ति मेरामेधावी, पणीतस्स नाम नेहविगतीओ भण्णति, ते पणीए रसे विवज्जति, न केवलं पणीतरसं वज्जति, किन्तु मज्जप्पमादविरओ, तवस्सीत्ति वा साहुत्ति वा एगट्ठा, 'अइउक्कसो' ण तस्स एवमुक्करिसो भवइ जहाऽहमेव एगो साहू, को अण्णो ममाहिंतो सुंदरोत्ति?, एवमाइगुणजुत्तस्स साधुणो इहलोइए परलोइए य गुणे भणिहामि, तं०-'तस्स पस्सह०' ॥ २०२ ॥ सिलोगो, 'तस्स'त्ति तस्स अमाइणो, कल्लाणंति वा सोहणंति वा एगट्ठा, 'कल्लाणं' मोक्खो

॥२०३॥

भण्णति कल्लाणं, सो य संजमो, अणेगं नाम इहलोइयपरलोइयं, जं च साधूहिं पूजियं, पूजियं नाम आतिण्णंति पूजितंति वा, अण्णेहिं वा साहूहिं पूजियं भण्णइ, ' विउलं अत्थसंजुत्तं' नाम विपुलं विसालं भण्णति, सो य मोक्खो, तेण विउलेण अत्थेण संजुत्तं विउलत्थसंजुत्तं, अत्थसंजुत्तं णाम सभावसंजुत्तं, ण पुण णिरत्थियंति, 'किंचिज्जमाणं सुणेह य' त्ति । 'एवं तु गुणप्पेही०' ॥२०३॥ सिलोगो, गुणा अट्ठारससीलंगसहस्साणि ते पेहमाणो णाम सेवमाणो, तहा नागज्जुणिया तु एवं पढंति-'एवं तु अगुणप्पेही अगुणाणं विवज्जए' अगुणा एव अणं अगुणाणं, अणंति वा रिणंति वा एगट्ठा, तं च अगुणरिणं अकुव्वंतो, सो य सव्वकालमेव मोक्खहेउमाराहयमाणो तारिसो आराहइ परिकम्मवितगुणेण मरणंतेऽवि संपत्ते संवरो णाम संजमो तमाराधयति । किंच--'आयरिए०' ॥ २०४ ॥ सिलोगो , तेणाधिगारे वट्टमाणे इमं भण्णइ-तवतेणे वय० ॥ २०५ ॥ सिलोगो, तत्थ तवतेणो णाम जहा कोइ खमगसरिसो केणावि पुच्छिओ-तुमं सो खमओत्ति ?, तत्थ सो पूयासक्कारनिमित्तं भणति--ओमिति, अहवा भणइ--साहूणो चेव तवं करेंति, तुसिणो संचिक्खइ, एस तवतेणे, वयतेणे णाम जहा कोइ धम्मकहिसरिसो वाईसरिसो अण्णेण पुच्छिओ जहा तुमे सो धम्मकहि-वादी वा ?, पूयासक्कारणिमित्तं भण्णइ-आमं, तोण्हिक्को वा अच्छइ, अहवा भणइ-साधुणो चेव धम्मकहिणो वादिणो य भवंति, एस वयतेणे, रूवतेणे णाम रूवस्सी कोइ रायपुत्तादी पव्वइओ, तस्स सरिसो केणइ पुच्छिओ, जहा तुमं सो अमुगोत्ति ?, ताहे भण्णति-आमंति, तुसिणीओ वा अच्छइ, रायपुत्तादयो एरिसा वा, एस रूवतेणे, आयारभावतेणे णाम जहा महुराए कोउहल्लति जहा आवस्सयचुण्णीए स आयारतेणो, भावतेणो णाम जो अन्नमुवगतं किंचि सुत्तं अत्थं वा माणावलेवेण न पुच्छइ, वक्खाणंतं वाएंतस्स वा सोऊण गेण्हइ, एवं तवतेणादि भावोवहम्मचणेण इहलोगे चेव अयसादिदोसा ॥२०४॥

पावइ, परलोगेऽवि सो अणालोइयपडिक्कंतो कालगओ देवकिब्विसियत्ताए कम्मं पकरेति । सीसो आह-जइ तारिसेहिं देवत्तं लब्भइ, किमेवड्ढेण जत्तेणं?, भण्णइ-तारिसस्स बंभवयाइयाण पालणादीणं तं फलं, तहविऽत्थ असोहणं । अतः-'लद्धूणवि देवत्तं' ॥ २०६ ॥ सिलोगो, किं तेण देवत्तेण जत्थ सो ओहिनाणलद्धीए न जाणइ-कोऽहं पुव्वं आसी ? किं वा कर्यति ?, अहवा सो इमे न याणइ-जहा इमं दुक्कडं कयं जेणाहं देवत्तेणवि सति आभियोगो अंतत्थो वा जातोत्ति, एस ताव देवलोगे अवायो भणिओ । इदाणिं ताओ देवलोगाओ चुतस्स भण्णइ-'तत्तोऽवि से चइत्ताण'० ॥ २०८ ॥ सिलोगो, जइवि कहवि सो तओ चइत्ता देवलोगाओ माणुस्सेसु उववज्जइ जत्थ बहुणावि कालेण बोधिलाभो न भवति । 'एअं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासिअं०' ॥ २०८ ॥ सिलोगो, एवं नाम जो हेट्ठा इयाणिं देवकिब्विसादि दोसो भणिओ, एयं दट्ठूणं, चकारेण सूचयति जहा कित्तियं भणिहामि ?, अण्णेऽवि भगवया णायपुत्तेण एत्थ बहवे दोसा भासिया, तम्हा तेसिं दोसाणं परिहरणनिमित्तं 'अणुमायंपि मेहावी, मायामोसं विवज्जए' तत्थ अणुसद्दो थोवे वट्टइ, थोवमवि मायामोसं विवज्जए, किमंग पुण बहुगंति ? । इदाणिं दोण्हंपि उद्देसगाणं उवसंहारो कीरइ, जहा-'सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं०' ॥२०९॥ सिलोगो, सिक्खिऊणणाऊणं, भिक्खाए एसणा भिक्खेसणा, भिक्खमग्गणत्ति वुत्तं भवति, ताए भिक्खाए उग्गमुप्पायणेसणादीहिं सिक्खिऊण संजता साधुणो भण्णन्ति बुद्धा नाम अरहंतो भगवंतो, तेसिं संजतबुद्धाणं समासे पिंडेसणज्झयणं सिक्खिऊणं 'तत्थ' त्ति ताए भिक्खेसणसुद्धीए साहुणो 'सुप्पणिहिइंदिए तिव्वलज्जेण गुणवया विहरियव्वं' सुट्ठु पणिहिताणि इंदियाणि जस्स सो सुप्पणिहिइंदिओ, लज्जसंजमो-तिव्वसंजमो, तिव्वसद्दो पकरिसे वट्टइ, उक्किट्ठो संजमो जस्स सो तिव्वलज्जो भण्णइ, गुणो जस्स अत्थि सो

उद्देशः २

||२०५||

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥१६०-२०९॥

दीप अनुक्रम [१७६-२२५]

गुणवं, विहरेज्जासि, त्तिबेमि नाम तीर्थकरोपदेशात् सुधर्म्मस्वामि, न स्वाभिप्रायेण ब्रवीमि। इदाणिं-णायंमि गिण्हियव्वे, अगिण्हियव्वंमि चेव अत्थंमि। जइतव्वमेव इइ जो उवएसो सो णयो णाम ॥ १ ॥ सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं निसामेत्ता। तं सव्वनयविसुद्धं जं चरणगुणट्ठिओ साहू ॥ २ ॥ पिण्डैषणाध्ययनचुण्णी संमत्ता ॥

अथ आचारकथा-धर्मार्थकामाध्ययनं ॥

इदाणिं भिक्खुं भिक्खापविट्ठं जइ कोइ पुच्छेज्जा-केरिसो तुम्ह धम्मोत्ति ?, ततो सो तेण भाणियव्वो, जहा-आयरियो उज्जाणे अण्णत्थ वा जत्थ, विइत्ता, तँ कहेयव्वं, ततो ते धम्मसोयव्वनिमित्तमागच्छंति, एतेण संबंधेणागस्स अज्झयणस्स चत्तारि अणुयोगदारा भाणियव्वा, जहा आवस्सगचुण्णीए, नवरं इह नामनिप्फन्नो महान्तियायारकहा, महंतं णिक्खिवियव्वं, आयारो णिक्खिवियव्वो, कहा निक्खिवियव्वा, एते तिण्णि जहा खुड्डुयायारकहाए, इत्थ इमा णिद्दरिसणगाहा भाणियव्वा, पुव्वं 'जधा य' (जो पुव्विं० वृ० २४७) गाहा कण्ठ्या, इदाणिं सुत्ताणुगमे सुत्तं वक्खाणितव्वं, तं अक्खलियं अमिलियं अविच्चामेलियं जहा अणुयोगदारे तं च इमं सुत्तं—

नाणदंसणसंपन्नं, संजमे अ तवे रयं। गणिमागमसंपन्नं, उज्जाणंमि समोसढं ॥ सू० २१० ॥

'ज्ञा अवबोधने' धातुः, अस्य लट् वर्त्तमाने, 'करणाधिकरणयोश्चे'ति (पा. ३-३-११७) करणे ल्युट्प्रत्यये टकार उच्चारणार्थः लकारः लिटि प्रत्ययात्पूर्व उदात्तार्थः, 'युवोरनाकौ' वितिं (पा. ७-१-१) अनादेशः, अकः सवर्णदीर्घत्वं, ज्ञायते अनेन ज्ञान स्थिते न इति नपुंसकविवक्षायां प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा, तस्य एकवचनं सु, 'अतोऽमि'ति

अध्ययनं -५- परिसमाप्तं **अध्ययनं -६- 'महाचारकथा' आरभ्यते**

*** अत्र धर्म-कथकस्य स्वरुपम् वर्णयते

(पा. ७-१-२४) अम् भवति, 'अमि पूर्वः' (पा. ६-१-१०७) अमि परतः पूर्वसवर्णः, ज्ञानं, तच्च पञ्चप्रकारं, ततोऽसौ श्रुत-ज्ञानेन वा सम्पन्नः त्रिभिर्वा चतुर्भिर्वा पञ्चभिर्वा इति, दृशिर् प्रेक्षणे धातुः, अस्य धातोः इकाररकारलोपाभ्यां लोपे 'हरितो वे' ति (पा. ३-१-५७) विशेषणार्थः, ल्युटिति वर्त्तमाने 'करणाधिकरणयोश्च' ति (पा ३३११७) ल्युट् प्रत्ययः पूर्ववत्, 'मिदेर्गुण' इति (पा. ७-३-८२) वर्त्तमाने 'सर्वधातुकार्धधातुकयो' रिति (पा. ७-३-८४) 'पुगंतलघूपधस्य चे' ति (७-३-८६) गुणः 'अदेङ् गुणः' (पा. १-१-२) ऋकारस्य स्थाने 'इको गुणवृद्धी' इति (१-१-३) वचनात् इकः स्थाने अकारे गुणः, उरण् रपर इति (पा. १-१-५१) रेफपरो भवति, परगमनं, दृश्यते अनेन दर्शन इति स्थिते नपुंसकविवक्षायां पूर्ववत्, दर्शनं द्विप्रकारं-क्षायिकं क्षायोपशमिकं च, अतस्तेन क्षायिकेण क्षायोपशमिकेन वा संपन्नं, 'पद गतौ' धातुः, अस्य 'क्तक्तवतू निष्ठे' ति (पा. १-१-२६) निष्ठा प्रत्ययः, ककार उच्चारणार्थः, 'रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च द' (पा. ८२४२) इति रेफदकारादुत्त-रस्य निष्ठातकारस्य नकारो भवति, पूर्वस्य च दकारस्य नकारः, परगमनं, सम्पन्न इति स्थिते नपुंसकविवक्षायां पूर्ववत्, संयमत-पसी पूर्ववद् वाच्ये, ते, 'रम क्रीडायां' धातुः सैव निष्ठाक्तप्रत्ययः अनुबन्धलोपः 'अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिती ति (पा. ६-४-३७) [अनुनासिकान्तस्य गस्य] अनुदात्तोपदेशानां तकारादौ ङिति प्रत्यये परतः अनुनासिकस्य लोपो भवति रतं, तयोः संयमतपसो रतं, 'गुण गण संख्याने' धातुः चुरादौ पठ्यते, अस्य धातोः स्वार्थिको णिच्, अचश्च प्रत्ययः परगमनं च गणः, गण इति स्थिते प्रथमैकवचनं सु रुत्वविसर्जनीयौ गणः अस्यास्ति 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति (पा. ५-२-९४) मतुपि प्राप्ते स्थिते 'अत इनि ठनौ' (पा. ५-२-११५) अतः अकारान्तात् प्रातिपदिकाद् इन् प्रत्ययो भवति, 'सुपो

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२१०-२७७||

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]

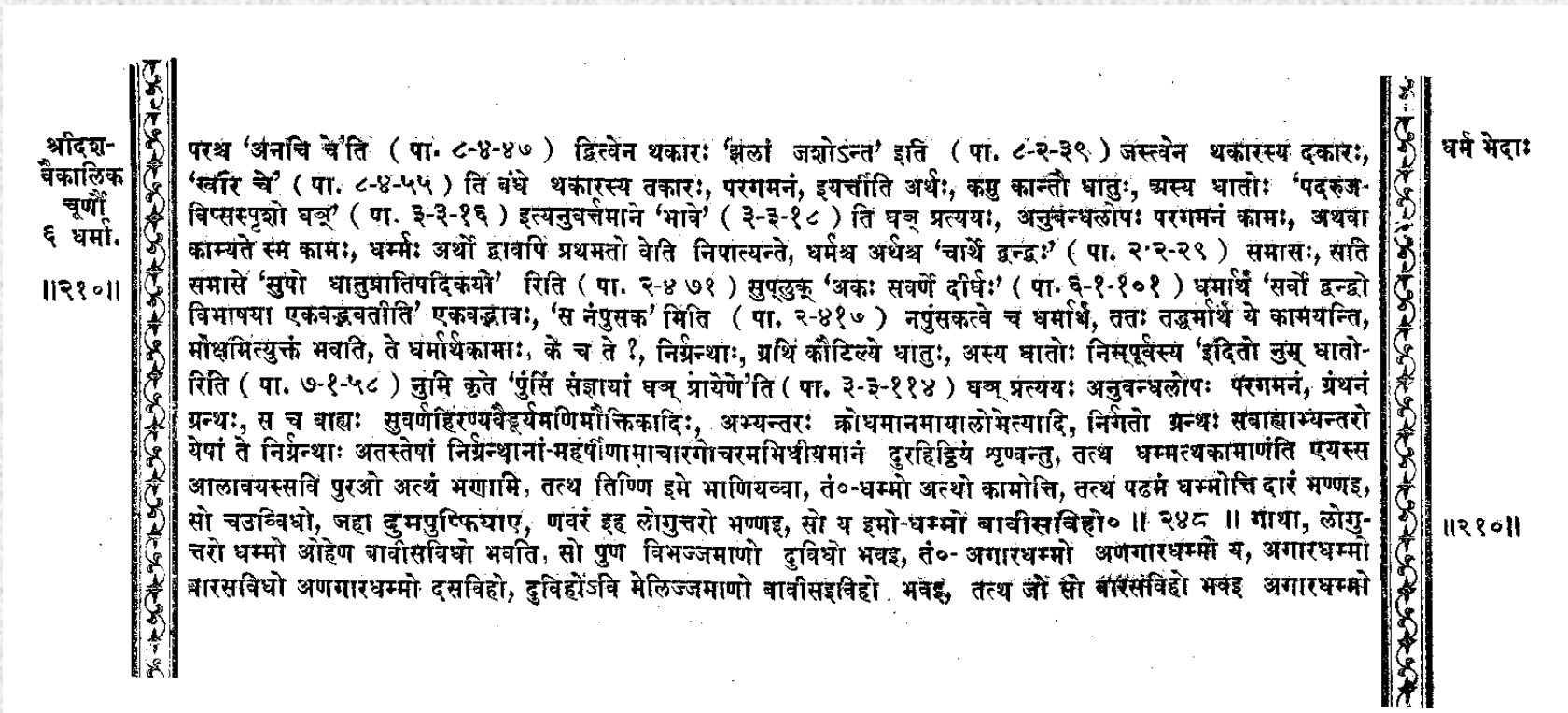
धातुप्रातिपदिकयो' (पा. २-४-७१) रिति सुपलुक, नकारस्य 'हलन्त्य' मिति (पा. १-३-३) (हलन्त्याविति) संज्ञा-प्रयोजनं निञित्यादिर्निमित्यादुदार्थः (त्तव्युदासार्थः) 'यस्येति चे' ति (पा.६-४-१४८) अकारलोपः, गणिन् इति स्थिते 'कर्म्मणि द्वितीया' (पा. २-३ २) अम् परगमनं गणिनं, 'गम्लृ गतौ,' अस्य धातोः आङ्पूर्वस्य 'करणाधिकरणयोश्चे' त्यनुवर्त्तमाने 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेणे' ति (पा.३-३-११८) घप्रत्ययो भवति, घकारादकारमपकृष्य घकारस्य 'लशक्वतद्धिते इदिती' (पा. १-३-८)-न्त्संज्ञा, प्रयोजनं 'चजोः कु घिण्यतो' रिति (पा.७-३-५२) विशेषणार्थः, प्रायेण आगम्यतेऽनेनेति आगमः, तं गणिमागम-संपन्नं नाम वायगं, एकारसंगं च, अन्नं वा ससमयपरसमयवियाणगं, उज्जाणे, सद्धातुः स्वरादौ पठ्यते, सरमाचष्टे तत्करोति तदाचष्टे तेनातिक्रामति धातुरूपं चेति चूर्णं, [सत्या०] 'चुरादिभ्यो णिः' (पा. ३-१-२५) अणुबन्धलोपः 'अत उपधाया' इति (पा. ७-२-११६) वृद्धिः प्राप्ता अदन्तत्वान्न भवति, सर्वे अदन्ताः अज उपदेशाः, तेनोपधावृद्धिप्रतिषेधः, 'अतो लोप आर्द्ध-धातुके' (पा. ६-४-४८) अत (पा. ६-४-४६) अकारस्य लोपो भवति अर्द्धधातुके परतः, सति 'सनाद्यन्ता धातव' इति धातुसंज्ञा, अस्य धातोः संपूर्वस्य अवपूर्वस्य च 'क्तक्तवतू निष्ठे' ति (पा. १-१-२६) क्तः प्रत्ययः ककारः किदिति विशे-षणार्थः, 'आर्द्धधातुकस्येड् वलादे' रिति (पा. ७-२-३५ इडागमः, टकारः उच्चारणार्थः 'सार्वधातुकार्द्धधातुकयो' रिति (पा. ७-३-८४) अङ्गस्य गुणः प्राप्तः किच्चात्प्रतिषेधे 'निष्ठायां सेटि' ति (पा. ६-२-४५) लोपः परगमनं समवसरितं तं च, ते आगं-तूणं । रायाणो रायमच्चा य० ॥ ३११ ॥ सिलोगो, तत्थ रायाणो बद्धमउडा, रायमच्चा अमच्चा, डंडणायगा सेणावइप्प-भितयो, माहणा धीयारा, तेसिं उप्पत्ती जहा सामाइयनिज्जुत्तीए, 'अदुव खत्तिया' नाम कोइ राया भवइ ण खत्तियो अन्नो

खत्तियो भवति, ण उ राया, तत्थ जे खत्तिया ण तेसिं गहणं कयं, तं तमायरियं विणयपुव्वगं उवक्कमिऊणं णिहुयपाणिपाया इमं पुच्छंति-भगवं !, कहं तुब्भं आयारगोयरो जिणेहिं उवदिट्ठोत्ति । तओ-तेसिं सो निहुओ दंतो० ॥ २१२ ॥ सिलोगो, तेसिं रायादीणं सो णाणदंसणादिगुणसंपन्नो णिहुअणाम हत्थादीहिं संजओ, दंतो इंदियनोइंदिएहिं, सव्वाणि भूयाणि २ तेसिं सव्व-भूयाणं सुहमावहतीति सव्वभूतसुहावहो, सव्वभूतसुहावहो नाम सव्वसत्तदयावरो, सिक्खा दुविधा, तंजहा-गहणसिक्खा आसे-वणासिक्खा य, गहणसिक्खा नाम सुत्तत्थाणं गहणं, आसेवणासिक्खा नाम जे तत्थ करणिज्जा जोगा तेसिं काएणं संफासणं, अकरणिज्जाण य वज्जणया,एताए दुविहाए सिक्खाए सुट्ठु समाउत्तो, आइक्खइ वियक्खणोत्ति, चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि धातुः, अस्य धातोः विपूर्वस्य चलनशब्दार्थादकर्म्मकाद्युचि (पा. ३-३-१४८) त्यनुवर्त्तमाने 'गश्च (अनुदात्तेतश्च) हलादे'रिति (पा. ३-२-१४९) युच्प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः 'युवोरनाका' विति (पा. ७ १-७) अनादेशः 'रषाभ्यां नो णोऽसमानपद' इति (पा. ८-४-१) 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपीति' (पा. ८-४-२) नकारस्य णकारः परगमनं, विविधमनेकप्रकारमाचष्टे विचक्षणः, आचष्टे इति कथयति, विचक्षणः पंडितः । 'हंदि धम्मत्थकामाणं० ॥२१३॥ सिलोगो, हंदिशब्द उपप्रदर्शने वर्त्तते, किमुपप्रदर्शयति ?, ये भवन्तः श्रोतव्याभिकांक्षितयोपस्थिताः ते कथ्यमानं धर्म्मं शृण्वंतु, धृङ्-धारणे धातुः, अस्य 'आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्चे'-(पा. ३-२-७४) त्यनुवर्त्तमाने 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्त' इति (पा. ३-२-७५) मनिन् प्रत्ययः, नकारेकारलोपः' 'सार्वधातुकार्द्ध-धातुकयो' रिति (पा. ७-३ ८४) गुणः परश्च, नरकतिर्यग्योनिकुमानुषकुदेवत्वे पतंतं धारयतीति धर्म्मः, 'ऋ गतौ' धातुः, अस्य धातोः 'उषिकुषिगार्त्तिभ्यः थनि'ति (उ० २) अर्त्तेः थन् प्रत्ययः, नकारलोपः अर्द्धधातुकत्वाद् गुणः, अकारो गुणः र-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥२१०-२७७॥

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ६ धर्मा. ॥२१०॥

परश्च 'अनचि चे'ति (पा. ८-४-४७) द्वित्वेन थकारः 'झलां जशोऽन्त' इति (पा. ८-२-३९) जस्त्वेन थकारस्य दकारः, 'खरि चे' (पा. ८-४-५५) ति बंधे थकारस्य तकारः, परगमनं, इयर्त्तीति अर्थः, कमु कान्तौ धातुः, अस्य धातोः 'पदरुज-विप्लस्पृशो घञ्' (पा. ३-३-१६) इत्यनुवर्त्तमाने 'भावे' (३-३-१८) ति घञ् प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः परगमनं कामः, अथवा काम्यते स्म कामः, धर्म्मः अर्थो द्वावपि प्रथमतो वेति निपात्यन्ते, धर्मश्च अर्थश्च 'चार्थे द्वन्द्वः' (पा. २·२-२९) समासः, सति समासे 'सुपो धातुप्रातिपदिकयो' रिति (पा. २-४ ७१) सुप्लुक् 'अकः सवर्णे दीर्घः' (पा. ६-१-१०१) धर्मार्थं 'सर्वो द्वन्द्वो विभाषया एकवद्भवतीति' एकवद्भावः, 'स नंपुसक' मिति (पा. २-४१७) नपुंसकत्वे च धर्मार्थं, ततः तद्धर्मार्थं ये कामयन्ति, मोक्षमित्युक्तं भवति, ते धर्मार्थकामाः, के च ते ?, निर्ग्रन्थाः, ग्रथि कौटिल्ये धातुः, अस्य धातोः निस्पूर्वस्य 'इदितो नुम् धातो-रिति (पा. ७-१-५८) नुमि कृते 'पुंसि संज्ञायां घञ् प्रायेणे'ति (पा. ३-३-११४) घञ् प्रत्ययः अनुबन्धलोपः परगमनं, ग्रंथनं ग्रन्थः, स च बाह्यः सुवर्णहिरण्यवैडूर्यमणिमौक्तिकादिः, अभ्यन्तरः क्रोधमानमायालोभेत्यादि, निर्गतो ग्रन्थः सबाह्याभ्यन्तरो येषां ते निर्ग्रन्थाः अतस्तेषां निर्ग्रन्थानां-महर्षीणामाचारगोचरमभिधीयमानं दुरहिट्ठियं शृण्वन्तु, तत्थ धम्मत्थकामाणंति एयस्स आलावयस्सवि पुरओ अत्थं भणामि, तत्थ तिण्णि इमे भाणियव्वा, तं०-धम्मो अत्थो कामोत्ति, तत्थ पढमं धम्मोत्ति दारं भण्णइ, सो चउव्विधो, जहा दुमपुप्फियाए, णवरं इह लोगुत्तरो भण्णइ, सो य इमो-धम्मो बावीसविहो० ॥ २४८ ॥ गाथा, लोगु-त्तरो धम्मो ओहेण बावीसविधो भवति, सो पुण विभज्जमाणो दुविधो भवइ, तं०- अगारधम्मो अणगारधम्मो य, अगारधम्मो बारसविधो अणगारधम्मो दसविहो, दुविहोऽवि मेलिज्जमाणो बावीसइविहो भवइ, तत्थ जो सो बारसविहो भवइ अगारधम्मो

धर्म भेदाः

॥२१०॥

*** अत्र धर्मस्य भेदा: वर्णयन्ते

सो इमो-पंच य अणुव्वयाइं० ॥ २४९ ॥ गाथा, पंच अणुव्वया थूलाओ पाणातिवायाओ वेरमणं थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं सदारसंतोसो इच्छापरिमाणं, तिण्णि गुणव्वयाणि, तं०-दिसिवयं उवभोगपरिभोगपरिमाणं अणत्थदंडपरिहारो, चत्तारि सिक्खावयाणि, तंजहा-सामाइयं देसावगासिअं पोसहोववासो अतिथिसंविभागो, अपच्छिममारणंतिय-संलेहणाझूसणाराहणा, एतस्स बारसविहस्स सावगधम्मस्स वक्खाणं जहा पच्चक्खाणनिज्जुत्तीए, तत्थ जो सो दसविधोऽवि साहूणं, सो य इमो, तं०-'खंती अ मद्दवऽज्जव०' ॥ २५० ॥ गाथा, कण्ठ्या, एसो दसविधोऽवि समणधम्मो जहा दुमपुप्फि-याए,धम्मो गओ, इदाणिं अत्थो भण्णइ-'धम्मो एसुवइट्ठो०' ॥२५१॥ गाथा,धम्मो, इदाणिं च अत्थो भवइ, चउव्विहो, तं-जहा-नामत्थो ठवणत्थो दव्वत्थो भावत्थो य, नामठवणाओ गयाओ, दव्वे हिरण्णादि, भावत्थो दुविहो-पसत्थो अप्पसत्थो य, तत्थ पसत्थो णाणदंसणचरित्ताणि, अप्पसत्थो अन्नाणअविरतिमिच्छत्ताणि, तत्थ जो सो दव्वत्थो सो संखेवेण छव्विहो भवति, वित्थरओ पुण चउसट्ठिविधोत्ति, तत्थ जो सो छव्विधो सो इमो-धन्नाणि रयण० ॥ २५२ ॥ (वृत्ता समग्रेयं) गाथा, धन्नाणि रयणाणि थावरं दुपदं चउप्पदं कुवियंति, एत्थ ओहेणं छव्विधो अत्थो गतो। इदाणिं पयाणतो चेव छव्विहातो अत्थाओ चउसट्ठिविधो अत्थो निप्फज्जइ, सो य इमेण गाथापच्छद्धेण भण्णइ-'चउवीसा चउवीसा०' ॥ २५२ ॥ (वृत्तौ समग्रेयं) गाथापच्छद्धं, तत्थ धन्नाणि चउव्विसं रयणाणि चउवीसं थावरं तिविहं दुपयं दुविहं चउप्पयं दसविहं कुवियं अणेगविहं, तं च अणेगविहमवि एगं चेव गणिज्जति, सव्वे ते भेया पिंडिया चउसट्ठी भवंति । तत्थ धन्नाणि चउव्वीसं इमाहि दोहिं गाहाहिं भण्णन्ति-धन्नाणि चउव्वीसं० ॥ २५४ ॥ गाथा, अयसि हरिमन्थ तिउडग० ॥ २५५ ॥ गाथा, तत्थ जवगोधूमसालिवीहि-

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ, ६ धर्मा, ॥२१२॥

साली (सट्ठि) णो पसिद्धा, सट्ठीगा सालिभेओ, कोद्दवअणुया पसिद्धा, कंगूगहणेण उड्डकंगूए गहणं, जे पुण अवसेसा कंगूभेया ते रालओ भण्णइ, तिल्लमुग्गमासा अतसी य एताणि पसिद्धाणि, हरिमन्था कालचणया, तिउडया लंगचनया, णिप्फावा वल्ला, मसूरा मालवविसयादिसु चवलगा, रायमासा इक्खतुंडगादि, सासियो राइआतो, तुवरी आढगी, कुलत्था पसिद्धा, धण्णया कुंकुभरीओ, कलाया वट्टचणया, चउवीसं धण्णा भणिया। इदाणिं दोहिं गाहाहिं चउवीसं रयणाणि भण्णंति–'रयणाणि चउवीसं०' ॥ २५६ ॥ गाहा, 'संखो तिणिसागुरु०' ॥ २५७ ॥ गाहा, सुवण्णतउयतंबा पसिद्धा, रयतं-रुप्पयं भण्णइ, लोह-सीसगाणि पसीयाणि, हिरण्णं रूवगादि, पासाणग्गहणेण वियातिपासाणग्गहणं कयं, 'वइरं' वइरमेव, मणिग्गहणेण जावंति केइ पासाणभेदा एए सव्वे गहिया, मोत्तियपवालसंखा लोगप्पसिद्धा, तिणिसरुक्खोऽवि रयणं, अगरुचंदणा पसिद्धा, वत्थगहणेण सोत्थियवागयादीणि, अमिलागहणे सव्वेसिं उन्नियाणं गहणं कयं, कट्ठगहणेणं सागरुक्खादीणं गहणं कयं, दंता हत्थीणं, चम्मा महिसिगाईणं, वाला चमरीणं, गंधा सोगंधियाणि दव्वाणि दव्वोसही पिप्पिलीमिरियादी, चउवीसइविहाणिवि रयणाणि भणियाणि, इयाणिं थावरं भण्णइ--भूमि घरा० ॥ २५८ अद्धगाथा, तिविहं थावरं भवति, 'भूमिघर तरुगणा' इति तत्थ भूमिखत्तं तिविधं-सेतुं केतुं उभयं, घरं तिविहं-खातं उस्सितं खाओसितं, तत्थ खायं जहा भूमिघरं, उस्सितं जहा पासाओ, खातउस्सितं जहा भूमिघरस्स उवरि पासादो,तरुगणा जहा नालिकेरिकदलीमादी, थावरं गतं। इयाणिं दुपदं भण्णइ 'चक्कारबद्धमाणुस' गाधापच्छद्धं, दुपदं दुविहं-चक्कारबद्धं माणुसं च, चक्कारबद्धं णाम सगडरहादीणि, माणुसं ण्हुसादासभयदादी, गयं दुपदं। इयाणिं चउप्पदं भण्णइ, तं दसविधं, 'गावी महिसी उट्टा अयएलग०' ॥२५९॥ गाथा (गावीमाइआओ) पसिद्धाओ, आसो नाम

अर्थभेदाः ॥२१२॥

जच्चस्सा जे पक्खलिविसयादिसु भवन्ति, अस्सतरा नाम जे विजातिजाया जहा महामद्दएण दीलवालियाए, जे पुण अज्जवजाति-जाता ते घोडगा भवंति, चउप्पदं गयं । इदाणिं कुवियं भण्णइ- **'नाणाविहोवगरणं०'** ॥ २६० ॥ गाथा, तत्थ कुवियं नाम घडघडिउदुंचणियं सयणासणभायणादि गिहवित्थारो कुवियं भण्णइ, कुवियं गतं, एसो य अत्थो छव्विहो चउसट्ठिपडोयारोऽवि गतो । इयाणिं कामो भण्णइ, तत्थ इमा सुत्तफासियनिज्जुत्ती, तं०-**'कामो चउवीसविहो०'** ॥ २६१ ॥ गाथा, ओहेण ताव चउवीसइविधो कामो भवति, सो पुण विभज्जमाणो दुविधो-संपत्तो असंपत्तो य, तत्थ संपत्तो चउद्दसविधो, एते दोऽवि मिलिया चउवीसइविधो कामो भवति, तत्थ असंपत्तो वायरउत्तिकाऊणं पढमं भन्नइ, सो इमाए गाथाए अद्धगाथाए य भण्णइ, तं०-**'तत्थ असंपत्तो अत्थी चिंता०'** ॥ २६२ ॥ गाथा, तब्भावणा, मरणं दसमो, अद्धगाथा, सो य असंपत्तो दसविधो इमो, तं० अत्थी चिंता सद्धा संसरणं विक्कवया लज्जानासो पमायो उम्मायो मरणं तब्भावणा, तत्थ अत्थो नाम अभिप्पाओ जहा कस्सइ अ दट्ठूणवि इत्थीरूवं सोऊणं वा इच्छा उप्पज्जइ, एवमादी, चिंतानाम तत्थेव अभिनिवेसो गच्छओ वा भवइ इहेव रूवाइगुणा इति, सद्धा नाम तेहिं रूवादीहिं अक्खित्तो तमेव कंखइ, कहं नाम मम तीए सह समागमो होज्जा?, संसरणं णाम जो तमेव इच्छितभुत्तं समाणिं भुज्जो विप्पयोगे सरइ, विक्कवया नाम तीए विप्पयोगे विक्कवी भवति, सोमाभिभूयो य जहोचियाणि आहाराच्छायणादीणि णाभिलसइ, लज्जणासो नाम मुहुत्ते २ तीए नामगहणं करेइ, मातिपितिनातिमादीयाणवि गुरूण पुरओ तीए नामगहणं करेमाणो ण लज्जइ, पमादो नाम सव्वारंभपवत्तणपरिच्चागो अभिनिवेसेणं, उम्मादो नाम कज्जाकज्जवच्चा-वच्चाणं अजाणया, मरणं नाम उम्मादस्स अंते मरणं भवति, तब्भावणा नाम रागवसगत्तणेण तमित्थियं मण्णमाणो थंभादीणि

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ६ धर्मा. ॥२१४॥

उवगूहइ आयासोवग्गहं वा करेइ,(मरणतःद्भावयोःक्रमविपर्यासो वृत्तौ) **असंपत्तो गओ**। इदाणिं संपत्तो इमेण गाहाए पच्छद्धेण गाहाए य भण्णइ, तं०- **दिट्ठीए संपाओ०**' अद्धगाथा, **हसिअललिअउवगूहिअ०** ॥२६४॥ गाथा, चोद्दसविहो संपत्तो, तं०-दिट्ठिसंपातो दिट्ठिसेवणं संभासो हसितं ललियं उवगूहणं दंतनघनिवातो चुंबणं आलिंगणं आदाणं करणं आसेवणं अणंगकिड्डा य,तत्थ दिट्ठिसंपातो नाम जमित्थियाए अंगे दिट्ठिं णिवाडेऊण पडिसाहरणं, दिट्ठिसेवणं णाम जं दिट्ठीए दिट्ठिं निवेसयइ, संभासणा नाम दिट्ठिआदि-विगारेहिं भावाणुरत्तं नाउं संभासइ, जहा एयं कज्जं भवउत्ति, हासियं नाम पणए कोवपसादेसु हासो पवत्तइ, ललियं नाम कयाइ जुद्धं कयाइ गंधव्वं कदाइ नट्टंति एवमादि, अहवा अगुट्ठफोडगादीहिं उवललणातो सहिं वा उवललति, उवगूहं णाम परिष्वक्कं, दंतनिवातो णाम दसणेहिं दसणाधरादि लुंपणं, णहनिवाओ णाम जं नहेहिं छेदणं, अहवा नहग्गेहिं थणोदररोमराइमा-दीणं आसुअणं, चुंबणं नाम अवरोप्परतो वदणसमागमो, आलिंगणं णाम ईसिंत्ति संफरिसणमालिंगणं, आयाणं णाम गहणं, तं च सिरकरचरणथणउदरादिसु भवति, करणं नाम अवाओणीकरणं, जेण वा पगारेणं काउं पाविहिति तं करणं, आसणं नाम मेहुणासेवणं, अणंगकिड्डा नाम जो आसणा-गोसया-पोसयादिसु भवति, **संमत्ता य कामकहा**। इदाणिमेतेसिं सवत्ता असवत्तया य भण्णइ, तं०- '**धम्मो अत्थो कामो**' ॥ २६५ ॥ गाथा पाठ्या, धम्मत्थं कामादि एगओ पिंडिज्जमाणा पडिसवत्तया भवन्ति, अवरोप्परओ विभज्जंतित्ति वुत्तं भवइ, कहं ?, 'अर्थस्य मूलं निकृतिः क्षमा च, कामस्य वित्तं च वपुर्वयश्च । धर्मस्य दानं च दया दमश्च, मोक्षस्य सर्वोपरमः क्रियासु ॥ १ ॥ ' नियडी ताव धम्मेण सह विरुज्झइ, दाणदमादीणि अत्थेण कामेण य सह विरुज्झंति, एत्थं वित्थरओ विरोहो भावियव्वो, एवं गिहत्थेसु कुपासंडेसु य विरुद्धा धम्मत्थकामा भवंति, '**जिणवयणं**

जिनमते धर्मार्थ-कामा-विरोधः ॥२१४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥२१०-२७७॥

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ६ धर्मा. ॥२१५॥

उत्तिन्ना असवत्ता होंति नायव्वा', जिणाणं वयणं जिणवयणंतिवुत्तं भवइ, ते धम्मत्थकामा जिणपवयणमोइण्णा अविरुद्धा भवंति, कहं ?, जम्हा- 'धम्मस्स फलं मोक्खो' गाथा, सो य सासओ अतुलो सिवे अणाबाहो, सो चेव अत्थो अहिप्पाएतीति धम्मत्थकामा, अभिप्पायंति नाम अभिलसंति वा पत्थयंति वा कामयंति वा अभिप्पायंति वा एगट्ठा, लोगाइयाइणो एवं भणंति, जहा 'परलोगु मुत्तिमग्गो०' ॥ २६८ ॥ गाथा, जं ते लोगाययमादि एवं पन्नावयंति, जो परलोगो मुत्तिमग्गो मोक्खो य नत्थित्ति, तत्थ परलोगमोक्खा पसिद्धा, मुत्ति (मग्गो) नाणदंसणचरित्ताणि भवंति, अवितहा इहेव जिणवयणे, णो अन्नेसु कुप्पावयणेसुत्ति, सीसो आह-कहं नज्जति जहा जीवो न(अ)त्थि, जीवे पसिद्धे सेसा परलोगादिभावा भविस्संति, आयरिओ भणइ धम्मत्थकामग्गहणाओ णज्जइ जहा जीवो अत्थि, ण जीवाभावे धम्मत्थकामाणं सिद्धी इच्छिज्जइ, पसिद्धा य लोगे धम्मत्थकामा, तम्हा अत्थि जीवोत्ति । 'हंदि धम्मत्थकामाणं'ति एतस्स वक्खाणं सम्मत्तम् । इयाणिं 'निग्गंथाण सुणेहि'त्ति, विगओ बाहिरब्भंतरो ग्रन्थो जेसिं ते निग्गथा तेसिणं सुणेह 'आयारगोयरं'ति आयारस्स गोयरो आयारगोयरो, गोयरो णाम विसओ, भीमं णाम सो आयारगोयरो कहिज्जमाणो सोआरस्स रोमहरिसं करेइ, किमंग पुण कीरमाणोत्ति?, 'सकलं' णाम संपुण्णं, सो य आयारो सयलो दुक्खं अहिट्ठिज्जइत्ति दुरहिट्ठियं, अओ एवं दुरहिट्ठियं सुणेहत्ति। इदाणिं नवधम्माणं पच्चयनिमित्तं परवादिमतिनिरहरणनिमित्तं च इमं भन्नइ- 'नन्नत्थ एरिसं०' ॥ २१४ ॥ सिलोगो, णकारो पडिसेधे वट्टइ, अन्नत्थसद्दो परिवज्जे, कुतित्थाणि परिवज्जयति, जहा जमिदाणिं भन्नति तं एरिसं न अन्नेसु कुप्पावयणेसुत्ति एयं परिवज्जयति, परमं नाम अणुत्तरं, दुक्खं चरिज्जातित्ति दुच्चरं, सव्वदुच्चराणि अतिकम्म वट्टतीति परमदुच्चरं, विउलं नाम विच्छिन्नंति वा अणंतंति वा विउलंति

अन्यत्रा-चाराभावः

॥२१५॥

वा एगट्ठा, विउलं ठाणं भावयतीति विउलट्ठाणभावी, विउलठाणभाइस्स, भावयति नाम निव्वत्तेतीत्ति वुत्तं भवति, विउलट्ठाण-भाइस्स सीलं चरित्तं वा जिणपवयणं मोत्तुं अन्नं न भविस्सति, कहं ?, जेण हरिहरहिरन्नगब्भसक्कोलुगादिसु कहावि एसा णत्थि, तत्थ सक्काणं ताव सक्कारणेणं असुते असुते राउले पव्वइए बहूणि अकप्पियाणि अणुण्णायाणि, तहा अण्णेसिंपि बालो दुक्खंतो वा हिंसादीणि आयरंतो अबंधओ, तम्हा कुतित्थियाणं सच्छंदपरिट्ठियाणं संपुण्णस्स अभावो भवइ, इहं पुण जिणसासणे- 'सखुड्डगविअत्ताणं०' ॥ २१५ ॥ सिलोगो, सह खुड्डगेहिं सखुड्डगा, वियत्ता नाम महल्ला, तेसिं 'सखुड्डगवियत्ताणं' बाल-वुड्ढाणंति वुत्तं भवइ, वाही जेसिं अत्थि ते वाहिया, चकारेण अवाहियाणवि गहणं, तेसिं सबालवुड्ढाणं वाहियावाहियाणं जे गुणा ते इयाणिं भन्निहिंति, ते तेहिं अक्खंडफुडा कायव्वत्ति, तत्थ तेसिं पडिवक्खभूता अगुणा भन्नंति, तेसु य परिहरिएसु गुणा अखंडफुडा कया चेव, ते इमे- 'दस अट्ठ य ठाणाइं०' ॥ २१६ ॥ सिलोगो, एताइं ताइं अट्ठारसट्ठाणाइं जाइं बालयाए अवरज्झइ, अवरज्झति नाम आयरइ, तत्थ एगतरमवि आयरंतो निग्गन्थभावाओ भण्ण(स्स)ति, एस चेव अत्थो सुत्तफासियनिज्जुत्तीए भण्णति, तं०- 'अट्ठारस ठाणाइं०' ॥ २६९ ॥ गाथा भाणियव्वा, कयराणि पुण अट्ठारस ठाणाइं ?, एत्थ इमाए सुत्तफासियनिज्जुत्तीए भण्णइ- 'वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो०' ॥ २७० ॥ गाथा, वयछक्कं रातीभोयणछक्काणि वयाणि पंच, काया पुढविकाइय-माइणो छ, 'अकप्पो गिहिभायणं पलियंको गिहिणिसेज्जा सिणाणं सोहवज्जणं' वज्जणसद्दो एतेसु सव्वेसु पत्तेयं पत्तेयं दट्ठव्वो, तं०- सोहवज्जणं सिणाणवज्जणं गिहिनिसेज्जवज्जणं एवं सव्वत्थ भाणियव्वं, भणियाणि अट्ठारसवि ठाणाणि, जाइं अखंडफुल्लाणि कायव्वाणि, न सो विधी भणिओ जेण विहिणा ताणि अखंडफुल्लाणि कीरंति, अओ वयछक्कस्स ताव विधिं भणामि,

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥२१०-२७७॥

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]

तं०- 'तत्थिमं पढमं ठाणं० ॥ २१७ ॥ सिलोगो, 'तत्थिमं' नाम तंमि अट्ठारसविहे ठाणे वयछक्के वा इमं नाम जमिदाणिं भणिहिति 'पढमं' णाम सुत्तक्कमपडिवाडीए इमं पढमं चिट्ठंति जत्थ साहुणो तं ठाणं 'महावीरेण देसिअं' तेण भगवया तिलोगबंधुणा देसियं, ण अहमेव अप्पणो इच्छाए भणामित्ति, 'अहिंसा निउणा दिट्ठ' त्ति 'निउणा' नाम सव्वजीवाणं, सव्वे वाहिं अणववाएण, जे णं उद्देसियादीणि भुंजंति ते तहेव हिंसगा भवन्ति, जीवाजीवेहिं संजमोत्ति सव्वजीवेसु अविसेसेण संजमो जम्हा अओ अहिंसा जिणसासणे निउणा, ण अण्णत्थ, आह- कहं सो सव्वजीवेसु संजमो भवति ? कहमेव ते जीवा?, भण्णंति- 'जावंति लोए पाणा०' ॥ २१८ ॥ सिलोगो, 'जावंति लोए पाणा' कयमेव, तसथावरपाणे जाणमाणो अजाणमाणो वा नो हणेज्जा नेव अन्नेण घाएज्जा. 'जाणमाणो' नाम जेसिं चिंतेऊण रागदोसाभिभूओ घाएइ, अजाणमाणो नाम अपदुस्समाणो अणुवओगेण इंदियाइणावी पमातेण घातयति, एवं ते तसपाणा थावरा पाणा जाणमाणा अजाणमाणा वा नो घाएज्जइ, सो जाणओ वा अजाणओ वा होज्जा, सन्नी वा असन्नी वात्ति वुत्तं भवइ, तं सयं जोगतिएण व हणेज्जा णेव अन्नेण हणावेज्जा, 'एगग्गहणे गहणं तज्जाईयाण' मितिकाउं हणंतमवि अन्नं न समणुजाणेज्जा, किं पुण कारणं?, भण्णइ-'सव्वे जीवावि इच्छंति०' ॥ २१९ ॥ सिलोगो, सव्वजीवा अपरिसेसा जीवितुं इच्छंति, ण मरिज्जिउं, भणियं च "जो जाए जातीए जीवो आयाति सो तहिं रमइ । इच्छेइ जीवियं जो सेण अहिंसं पसंसेमि ॥ १ ॥" तम्हा पाणवहं घोरं नाम भयाणगं णाऊण सुहुमचायरं पाणवहं वयगयगंथा वज्जयंतित्ति पढमं पाणाइवायतिरत्ती भण्णति। अप्पणट्ठा परट्ठा वा० ॥२२०॥ सिलोगो, 'अप्पणट्ठा वा,' जहा कोइ अभिलाणो गिलाणो अहमितिकाऊण किंचि णेहादीणंति नियएसु वा उवसंतएसु वा अन्नेसु वा एवंविहेसु मग्गइ,

॥२१७॥

*** अत्र षड् भेदे व्रत-वर्णनं क्रियते

परट्ठाए सन्नियगादिसु परस्स अट्ठाए ओभासइ, 'कोहा' जहा तुमं दासो जुंगितो एवमादि, कोहगहणेण माणमायालोभावि गहिया, तत्थ माणेणं जहा अबहुस्सुतो भणति बहुस्सुए उ अहमिति, मायाए अलसियत्तणेण पादो दुक्खिस्सइत्ति गामे ण हिंडइ एवमादि, लोभेण जहा कोइ भत्तं घेत्तूणं धुवं अण्णं लाभं चेतिमाणो एसणिज्जंपि भणइ, इमं मायाए जाहे (अणेसणिज्जंति, अहवा भयओ वितहं काऊण पच्छित्तभया न कयमिति, एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाणंति हासादिणोऽवि गहिया)गहियं, तओ एते 'हिंसगं, न मुसं बूआ' 'हिंसगं' नाम जेण सच्चेण भणिएण पीडा उप्पज्जइ तं हिंसगं,जहा अत्थि ते केऽवि मिया वा पसुया वा दिट्ठा?, तत्थ भाणियव्वं-ण पस्सामित्ति, सच्चमेव तं अपि, अपि च न तच्चवचनं सत्यमतच्चवचनं न च, यद् भूतहितमत्यन्तं तत्सत्य-मितरं मृषा, जहा सयं मुसावायं नो ब्रूयात् तहा नोवि अन्नं वयावए, 'एगग्गहणे गहणं तज्जाइयाण' मितिकाउं वदंतमवि अन्नं न समणुजाणेज्जा, किं कारणं ?, भण्णइ-'मुसावाओ उ लोगम्मि, सव्वसाहूहिं०' ॥ २२१ ॥ सिलोगो, जो सो मुसावाओ एस सव्वसाहूहिं गरहिओ, सक्कादिणोऽवि मुसावादं गरहंति, तत्थ सक्काणं पंचण्हं सिक्खावयाणं मुसावाओ भारियतरोत्ति, एत्थ उदाहरणं- एगेण उवासएण मुसावायवज्जाणि चत्तारि सिक्खावयाणि गहियाणि, तओ सो ताणि भंजिउमारद्धो, अण्णेण य भणिओ, जहा-किमेयाणि भंजसि ?, तओ सो भणइ- मिच्छा, णाहं भंजामि, ण मए मुसावायस्स पच्चक्खायं, तेसिंपि सव्वा-हियया णिच्छिता, एतेण कारणेणं तेसिंपि मुसावाओ भुज्जो सव्वसिक्खापदेहिंतो, किंच- 'अविस्सासो य भूताणं' मुसावादो भवइ, यथा किमनेन यत्किंचित्प्रलापिनेति?, तम्हा एते दोसा जाणिऊण मम्मं सव्वपयत्तेण वज्जेज्जा । मुसावादाविरती गता, इदाणिं अदिन्नादाणविरती भण्णइ, तं०- चित्तमंतमचित्तं वा० ॥ २२२ ॥ सिलोगो, चित्तं नाम चेतणा भण्णइ, सा च

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२१०-२७७||

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]

चेतणा जस्स अत्थि तं चित्तमंतं भण्णइ, तं दुपयं चउप्पयं अपयं वा होज्जा, 'अचित्तं' नाम हिरण्णादि, अप्पं नाम पमाणओ मुल्लओ य, बहुमवि पमाणओ मुल्लओ य, किं बहुणा ?, दंतसोहणमित्तमवि उग्गहं अणुण्णवेऊण कप्पइ पडिगाहेउं, जस्स तं दव्वं परिग्गहे वट्टइ तं अणुजाणेविऊणं पडिगाहेज्जा, दंता सोहिज्जंति जेण तं दंतसोहणं-तणगादि तं दंतसोधणमेत्तमवि अदिण्णं ण कप्पइ । किंच- 'तं अप्पणा ण गिण्हंति नोऽवि गिण्हावए परं० ॥ २२३ ॥ सिलोगो पाठ्यो, अदिण्णादाण-विरती गता । इदाणिं अबंभविरती भण्णइ, तं०-अबंभचारिअं घोरं० ॥२२४॥ सिलोगो, अबंभचरियं घोरं नाम निरणुकोसं, कहं ?, अबंभपवत्तो हि ण किंचि तं अकिच्चं जं सो न भणइ, जम्हा एतेण पमत्तो भवति अतो पमादं भणइ, तं च सव्वपमादाणं आदी, अहवा सव्वं चरणकरणं तंमि वट्टमाणे पमादेतित्ति पमादं भणइ, दुरहिट्ठियं नाम दुगुञ्छं पावइ तमहिट्ठियंतोत्ति दुरहि-ट्ठियं, अहवा तेण संजतवेसेण दुक्खं अच्छिज्जतीति दुरहिट्ठियं, अथवा कामा चउव्विधा, तं०- सिंगारा कलुणा बीभच्छा रोद्दा, तत्थ सिंगारकामा देवाणं, कलुणाकामा माणुसाणं, बीभच्छाकामा तिरियाणं, रोद्दा कामा णेरइयाणं, अतो ते बीभच्छा कामा सव्वसो अवि हेट्ठा, तहप्पगारं 'नायरंति' णाम णासेवंति, मुणिग्गहणेण साधुग्गहणं कयं, लोगग्गहणेण समयखेत्तस्स गहणं कयं, भिज्जइ जेण चरित्तपाली सो भेदो तस्स भेदस्स पवत्तती आयतणं मेहुणंति, तं भेदायतणं वज्जंति- साधवो सव्वपगारेण णायरंति-त्ति । किंच- 'मूलमेयमहम्मस्स० ॥ २२५ ॥ सिलोगो, मूलं नाम बीयंति वा पइट्ठाणंति वा मूलंति वा एगट्ठा, अधम्मो पसिद्धो, महन्ताणं महन्ताणं दोसाणं समुस्सयं, समुस्सयोत्ति वा रासित्ति वा एगट्ठा, तत्थ दोसा कलहवेरपहारमारणादीया, जम्हा एते दोसा तम्हा एवं नाऊण निग्गन्था सव्वपयत्तेण मेहुणसंसग्गिं वज्जयंतित्ति, मेहुणविरती गता। इदाणिं परिग्गहविरई-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२१०-२७७||

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]

'बिडमुब्भेइमं लोणं०' ॥ सिलोगो, तत्थ लोणं दुविधं, तं०- विडं च उब्भेइमं च, तत्थ बिलं (डं) गोमुत्तादीहिं पविऊण कित्तिमं कीरइ, उब्भेइमग्गहणेण सामुद्दादीण गहणं कयं, अहवा बिलग्गहणेण फासुगलोणस्स गहणं कयं, उब्भेइमग्गहणेण अफासुगस्स लोणस्स, तेल्लं लोगपसिद्धं, सप्पी घयं भण्णइ, फाणियगहणेण सव्वस्स गुडस्स गहणं कयंति, एतेसिं लोणादीणं गहणं सारोऽधवा आधारोत्ति गहिऊण कयंति, एताणि अविणासिदव्वाणि न कप्पंति, किमंग पुण रसादीणि विणासिदव्वाणित्ति ?, एवमादि सण्णिधिं न ते साधवो भगवन्तो णायपुत्तस्स वयणे रया इच्छंति, 'सन्निधि' नाम एतेसिं दव्वाणं जा परिवासणा सा सन्निधी भण्णति, परिवासंतस्स य इमे इमे दोसा भवन्ति-लोहस्सेस अणु० ॥ २२७ ॥ सिलोगो, अणुफासो नाम अणुभावो भण्णति, जहा सुकालाणुफासो, एवं एसोऽवि लोभाणुभावोत्ति वुत्तं भवति, मन्ने णाम तित्थंकरो वा एवमाह-जहा जमेताणं बिलमुब्भेइमादीणं सन्निही णामेसो महालोहाणुफासो मच्चामित्ति, अन्नतरं णाम तिलतुसतिभागमेत्तमवि, अहवा अन्नयरं असणादी, अविसद्दो संभावणे वट्टइ, किं सम्भावयति ?, जहा जइ ताव थोवमवि असणाइ गेण्हमाणे दोसाणमायतणं भवति, किं पुण जे बहु गेण्हति ? सव्वाणि वा असणादीणि गिण्हति ? एतं सम्भावयति, 'जे' त्ति अविसेसिताणं गहणं भवति, सिया कदापि, सण्णिहिं कामयतीति सन्निहिकामी, गिहं जेसिं अत्थि ते गिही, पव्वइयावि होऊण गिही य गिहतुल्ला वा, आह-जइ ताव लवणाईणं संचएणं गिही भवइ तो कहं वत्थादी गिण्हमाणा साधुणो गिहिणो ण भविस्संति ?, भण्णइ-जंपि वत्थं व पायं वा० ॥ २२८ ॥ सिलोगो, जामितिसद्दो निद्देसे वट्टइ, अविसद्दो संभावणे, किं सम्भावयति ?, वत्थादीणं निरत्थयगहणेण दोसा भवंति संजमाणुपालणत्थं लज्जानिमित्तं वा घेप्पमाणाणि ण दोसकराणि भवंति एवं संभावयति, वत्थपाया पसिद्धा, कंबलग्गहणेण

पायणिज्जोगो (गहिओ) भवति उब्भियकप्पो वा, पादपुंछणं-रयहरणं, एतेसिं वत्थादीणं जं धारणं तमवि, संजमनिमित्तं वा वत्थस्स गहणं कीरइ, मा तस्स अभावे अग्गिसेवणादि दोसा भविस्संति, पाताभावेऽवि संसत्तपरिसाडणादी दोसा भविस्संति, कंबलं वासकप्पादी तं उदगादिरक्खणट्ठा घेप्पति, लज्जानिमित्तं चोलपट्टको घेप्पति, अहवा संजमो चेव लज्जा, भणितं च-"इह तो लज्जा नाम लज्जामंतो भण्णइ, संजममंतोत्ति वुत्तं भवति," एताणि वत्थादीणि संजमलज्जट्ठा 'धारयंति परिहरंति य', धारणापरिहरणाण को पइविसेसो?, तत्थ धारणा णाम संपयोअणत्थं धारिज्जइ, जहा उप्पण्णे पयोयणे एतं परिभुंजिस्सामित्ति, एसा धारणा, परिहरणा नाम जा सयं वत्थादी परिभुंजइ सा परिहरणा भण्णइ, तं पुण घेप्पमाणं परिभुंजमाणं वा कहं ण परिग्गहो भविस्सइत्ति?, भन्नइ, (अ) परिगहणभोगतो असारमुल्लग्गहणायो य अभिभूतसाधारणतो य देसकालाद्यभोगेण य परिग्गहदोसो न भविस्सइत्ति । किंच--'न सो परिग्गहो वुत्तो०'॥२२९॥ सिलोगो, णकारो पडिसेहे वट्टइ, 'सो' त्ति जो सो वत्थादीण भणिओ, वुत्तं नाम वुत्तंति वा भणितंति वा, धारयंति वा संजमंति वा निमित्तंति वा एगट्ठा, णाया नाम खत्तियाणं जातिविसेसो, तस्मिं संभूओ सिद्धत्थो, तस्स पुत्तो णायपुत्तो, अन्नाणं अप्पं च तारयतीति तायी तेण तायिणा, ण सो पडिग्गहो भणिओत्ति, जा पुण तेसु वत्थादीसु मुच्छा सो परिग्गहो भवति, अरत्तदुट्ठस्स परिभुंजंतस्स ण परिग्गहो भवइ, इतिसद्दो उवप्पदरिसणे वट्टइ, गणधरा भणगपिया वा एवमाहुः--जहा एतेसु परिग्गहिएसु अपरिग्गहिएसु वा वत्थादिसु जा गेही सो परिग्गहो महेसिणा भणियो, न केवलं नायपुत्तेण उवधिगहणं कयं, किंच-सव्ववत्थुवहिणा० ॥ २३० ॥ सिलोगो· सव्वेसु अतीताणागतेसु सव्वभूमिएसुत्ति, ते बुद्धा--तित्थयरा उवहिणा--एगदूसेण सचेलो धम्मो पन्नवेयव्वोत्तिकाऊणं णिग्गता, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण' मितिकाउं

पत्तेयबुद्धजिणकप्पियादिणो सो अधियो भवति ' संरक्खण परिग्गहो ' नाम संजमरक्खणणिमित्तं परिगिण्हंति, ण दप्पपरिभूसणादिणिमित्तंति। किंच-'अवि अप्पणोऽवि देहम्मि तेहिं भगवंतेहिं, ते हि भगवंतो सदेहेवि'नायरंति ममाइयं''णायरंति'नाम न करेंति, ' ममाइयं ' ममत्तं, ते कओ बाहिरे उवगरणे मुच्छं करेहिंति ?, अमुच्छियस्स परिग्गहो कहं भविस्सई ?, जहेव सरीरं धम्मसाहणत्थं अमुच्छिया धारयंति तहा वत्थादीणिवि । परिग्गहविरई गया, इयाणिं राईभोयणविरती भण्णइ, तं०—' अहो निच्चं तवो कम्मं० ॥२३१॥ सिलोगो, अहो सद्दो तिसु अत्थेसु वट्टइ, तंजहा--दीणभावे विम्हए आमंतणे, तत्थ दीणभावे जहा अहो अहमिति,जहा विम्हए अहो सोहणं एवमादी,आमंतणे जहा आगच्छ अहो देवदत्तत्ति एवमादि, एत्थ पुण अहोसद्दो विम्हए दट्ठव्वो, गणधरा मणगपिता वा एवमाहु-जहा अहो कट्ठं'निच्चं तवो कम्मं'ति णिच्चं नाम निययं'तवोकम्मं'तवो कीरमाणो, कथं तवो भवति? 'सव्वबुद्धेहिं वण्णियं' वण्णियं नाम वण्णियंति वा देसियंति वा एगट्ठा, किंच तेहिं वण्णियं ?, भण्णइ ' जा य लज्जासमावित्ती ' ' जा ' इति अविसेसिया, चकारो सावेक्खे, अत्थि च वृत्ति, किमवेक्खइ, ? जमेगभत्तं उवरिं भण्णिहिति एतं अवेक्खइ, लज्जा संजमो भण्णइ, जाए वित्तीए सो संजमो स समो भण्णइ, न विरुज्झइत्ति वुत्तं भवइ, किं च—' एगभत्तं च भोअणं ' एगस्स रागदोसरहियस्स भोअणं अहवा इक्कवारं दिवसओ भोयणंति । अहो राईभोयणे को दोसो ?, इत्थ भण्णइ—' संतिमे सुहुमा पाणा० ' ॥ २३२ ॥ सिलोगो, ' संति ' नाम विद्यन्ते, इमे नाम जे पच्चक्खमेवोपलब्भन्ते, सुहुमा, तसा थावरा य, तत्थ तसा कुंथुमाई, थावरा बीयपरागादी, ' एगग्गहणेण गहणं तज्जातीयाण'मितिकाउं सुहुमग्गहणेण बादराणवि, तसाणं गहणेण वणप्फइमाई गहिया, सो ताणि सुहुमबादराणि पाणाणि राओ अपासंतो कथमेषणीयं चरिष्यतीति ?, एषणीयं

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२१०-२७७||

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]

नाम सत्वोपघातमकुर्वन् कथं गमिष्यतीति, एवं ताव सो सयं तसथावरजंगमे विराधयति। किंच- एसणमवि सोहेउं न तरइ, कहं ?- 'उदउल्लं०' ॥ २२३ ॥ सिलोगो, उदउल्लं पुव्वभणियं, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण' मितिकाउं ससिणिद्धादीणिवि गाहयाणि, 'बीयसंसत्तं' नाम जाणि सालिमादीणि बीयाणि तेहिं संसत्तं बीयसंसत्तं, बीयमिस्सियंति वुत्तं, अहवा बीयगहणं पिहं संसत्तगहणमवि पिहं, तत्थ बीयाणि चेव दलिज्जा अहवा ताणि बीयाणि असणादि लाएज्जा, तक्कसो-वीरादीणि दलेज्जा, जे य तीए महीए पाणा णिवतिता संपातिमादी, अन्नादीसु वा पडिया, तेऽवि न पासइ, एताणि उदउल्ला-दीणि दिवसओ सचक्खुविसए विवज्जेज्जा, राओ तत्थ कहं हिंडियव्वंति ?। अतो- एअं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेण भासिअं। सव्वाहारं न भुंजंति, निग्गंथा राइभोअणं ॥२२४॥ सिलोगो, एयं नाम जो एसो सुहुमपाणातिवायदोसो एयं दट्ठूणं, चकारेण य भूमीअग्गिणे(पण)गाहिसावयादिणो दोसा गहिया भवन्ति, सेसं कण्ठ्यं ॥ रातीभोयणविरती गता, गतं वयछक्कं। इदाणिं कायछक्कं भण्णइ- तत्थ पढमं पुढविक्कायविरती भण्णति- 'पुढविकायं०' ॥ २२५ ॥ सिलोगो, पुढवि चेव कायो पुढविक्कायो तं पुढविकायं सच्चित्तं भगवंतो साधुणोत्ति णो हिंसंति नाम णो आलिहविलिहणादी कुव्वंति, तं च इमेहिं तिहिं जोगेहिं ण हिंसंति-मणसा वयसा कायसा तिविहेण ण करेंति, एवं काये(अन्ने)णवि,संजता साधुणो भण्णन्ति, तिन्नि करणजोगा पण्णत्ता, तं०-करणं कारावणं अणुमोदणंति, तत्थ मणसा हिंसं न करेंति न कारवेंति करेंतं न समणुजाणंति, एवं वायाएवि हिंसं न करेंति न कारवेंति करेंतं नाणुजाणंति, एवं कायेणवि, संजता साधुणो भण्णंति, सुसमाहिया णाम सोभणेण पगारेण संज-मोवकारीएहिं समाहिया, सुसमाहिया नाम उज्जुत्ता, पुढविक्कायसमारंभे को दोसो ?, भण्णति- 'पुढविकायं०' ॥ २२६ ॥

॥२२३॥

*** अत्र पृथ्वीकायादि षट् कायानां वर्णनं क्रियते

सिलोगो,पुढविकायं विविहं अणेगप्पगारं हिंसंतो भण्णइ तन्निसिया आउकायादि थावरे विहिंसंति,तुसद्दो विसेसणे, किं विसेसयति?, न केवलं सचित्तमेव पुढविं हिंसेज्जा, किंतु इतरमवि हिंसेज्जा, जहा य सचित्ताए पुढविए हिंसिज्जमाणिए थावरा जीवा आउकायादि तण्णिस्सिता हिंसिज्जंति तहा अचित्ताएवि एयं विसेसयति, न केवलं सचित्तं वा पुढविं हिंसमाणो थावरा हिंसति, किंच ' —तसे बेइंदियाई अणेगप्पगारे चक्खुसाऽचक्खुसे हिंसति । ' तम्हा एअं विआणित्ता० ' ॥ २३७ ॥ सिलोगो, पुढविक्कायविरती गता। इदाणिं आउकायविरईएऽवि तिण्हं सिलोगाणं एस चेव अत्थो, नवरं आउकायं० ॥२३८॥ २३९ ॥ २४० ॥ आउकायाभिलावो भाणियव्वो, एवं आउक्कायविरई गया । इदाणिं तेउकायविरई भण्णति, तं, 'जायतेअं०' ॥ २४१ ॥ सिलोगो, जायतेजो जायते तेजमुप्पत्तीसमकमेव जस्स सो जायतेयो भवति, जहा सुवण्णादीणं परिकम्मणाविसेसेण तेयाभिसंबंधो भवति, ण तहा जायतेयस्स, नकारो पडिसेधे वट्टति, इच्छा रुई भण्णति, लोइयाणं पुण जं हूयइ तं देवसगासं(पावइ) अओ पावगो भण्णइ, तमेरिसं पावगं भगवंतो साधवो नो इच्छंति जालित्तएत्ति। ' तिक्खमन्नयरं सत्थं ' मिति, सासिज्जइ जेण तं सत्थं, किंचि एगधारं दुधारं तिधारं चउधारं पंचधारं, सव्वतो धारं नत्थि मोत्तुमगणिमेगं, तत्थ एगधारं परसु, दुधारं कणयो, तिधारं असि, चउधारं तिपडतो कणीयो,पंचधारं अजाणुफलं, सव्वओ धारं अग्गी, एतेहिं एगधारदुधारतिधारचउधारपंचधारेहिं सत्थेहिं अण्णं नत्थि सत्थं अगणिसत्थाओ तिक्खतरमिति, सव्वओवि दुरासयं नाम एतं सत्थं सव्वतोधारत्तणेण दुक्खमाश्रयत इति दुराश्रयं, कहं पुण दुरासयं?, 'पाइणं पडिणं वावि०' ॥ २४२ ॥ सिलोगो, तत्थ पडिणं अवरं, सेसाणि पसिद्धाणि, एतेसु पुव्वावरेसु उड्ढे य विदिसासु य ' अहे दाहिणओ ' णाम विणासयति, न केवलं पाईणाइसु डहइ, किन्तु उत्तरओ-

वि डहइ । सव्वओ दाहित्तणेण य 'भूआणमेसमाघाओ०' ॥ २४३ ॥ सिलोगो, भूता सम्पातिमादी, तेसिं भूताणं आपादे आघातो णाम जावंतो भूता अगणिसगासमल्लियंते ते सव्वे घातयतीति आघातो, हव्वं वहतीति हव्ववाहो, तत्थ लोगसिद्धंते हव्वं देवाणं अहावरं दिव्वा तिप्पंतीति, वहतीति वाहो, वहति णाम णेति, हव्वं नाम जं हूयते घयादी तं हव्वं भण्णइ, अम्हं पुण जम्हा हव्वाणि जीवाणं जीवियाणि वधति अजीवदव्वाण य मुत्तिमंताणं विणासं वहतीति हव्ववाहो, ण संसओ णास एत्थ संसओ न कायव्वो, जहा-एसो हव्ववाहो भूयाणं आघायं न करेतित्ति, पदीवनिमित्तं पयावणतिमित्तं वा कोयि आरभेज्जा, तत्थ पदीवनिमित्तं जहा अन्धकारे पगासत्थं पदीवो कीरई, पयावणनिमित्तं हिमागमे वरिसासु वा अप्पाणं तावंति, वत्थाणि वा ओदणादीणि वा पयावंति, एतेहिं कारणेहिं स हव्ववाहं-अग्गिं, किंचि णाम संघट्टणपरितावणाणिव्ववणादि । जम्हा भूयाण एस आघातो 'तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं । तेउकायसमारंभं, जावज्जीवाइ वज्जए' ॥ २४४ ॥ तेउक्कायविरति गता । इदाणिं वाउक्कायविरती भण्णति— अणिलस्स समारंभं० ॥ २४५ ॥ सिलोगो, निलओ जस्स नत्थि सो अणिलो तस्स अनिलस्स समारंभं, 'समारंभं' नाम उक्खेवतोयतालियंटादीहिं भवति, 'बुद्धा' तित्थगरगणधरादी, 'तारिसं' नाम ते बुद्धा 'अनिलसमारंभं' आणिल(वाउस)मारंभं असरिसं भणंति,कथं ?, सो विराधिज्जमाणो अणेगे विराधेति संपाइमे असंपाइमे य, अओ 'सावज्जबहुलं चेयं'ति सह वज्जेण सावज्जं, वज्जं नाम वज्जंति वेरंति वा परंति वा एगट्ठा, बहुलं नाम सावज्जदोसाययणं, चकारः पादपूरणे, 'एअं' नाम जमेयं वाउकायसमारंभणं भणियं, तारयन्तीति ताइणो तेहिं तातीहिं, ण एयं वाउकायसमारंभणं सेवितंति, तं च वाउक्कायं भगवंतो साधवो णो

इमेहिं उदीरंति, तं० ' तालिअंटेण पत्तेण० ' ॥ २४६ ॥ सिलोगो, तालियंटादीणि जहा छज्जीवणियाए, न केवलं तालियंटादीहिं वाउकायं न उदीरयंति, किन्तु—' जंपि वत्थं व पायं वा, कंबलं पायपुंछणं० ॥ २४७ ॥ सिलोगो, जमवि वत्थादि तेणावि वाउजीवसंपाइमरक्खणट्ठा णो वाउकायं अविहिपक्खोडणादीहिं उदीरंति भगवंतो साधवो, किन्तु जयणाए परिभोग-परिहारेण धारणापरिहारेण य परिहरन्तीति । तम्हा एअं विआणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं । वाउकायसमारंभं, जावजीवाइ वज्जए ॥ २४८ ॥ सिलोगो कण्ठ्यः, वाउकायविरती गता । इदाणिं वणप्फइकायविरई भण्णइ,तं०-'वणस्सइं न हिंसंति० ' ॥ २४९ ॥ सिलोगो, ' तम्हा एअं विआणित्ता० ' ॥ २५१ ॥ सिलोगो, एएसिं सिलोगाणं अत्थो जहा पुढविकायस्स, एवं तसकाएवि तिण्हवि सिलोगाणं वक्खाणं भाणियव्वं। ' तसकायं० ' ॥ २५२ ॥ २५३ ॥ २५४ ॥ जहा पुढविकाए, कायछक्कं गतं, गया य मूलगुणा, इदाणिं उत्तरगुणा, अकप्पादिणि छट्ठाणाणि, ताणि मूलगुणसारक्खयभूताणि, तं ताव जहा पंचमहव्वयाणं रक्खणनिमित्तं पत्तेयं पंच पंच भावणाओ तह अकप्पादीणि छट्ठाणाणि वयकायाणं रक्खणत्थं भणियाणि, जहा वा गिहस्स कुड्डकवाडजुत्तस्सवि पदीवजागरमाणादि रक्खणाविसेसा भवन्ति तह पंचमहव्वयजुत्तस्सवि साहुणो तेसिमणुपालणत्थं इमे उत्तरगुणा भवन्ति, तत्थ पढमं उत्तरगुणो अकप्पो, सो दुविधो, तं०-सेहट्ठवणाकप्पो अकप्पट्ठवणाकप्पो य, तत्थ सेहट्ठवणाकप्पो नाम जेण पिण्डणिज्जुत्ती ण सुता तेसु आणियं न कप्पइ भोत्तुं, जेण सेज्जाओ ण सुयाओ तेण वसही उग्गमिता ण कप्पइ, जेण वत्थेसणा ण सुया तेण वत्थं, उड्ढबद्धे अणला ण पव्वाविज्जंति, वासासु सव्वेऽवि, अकप्पठवणा गया, कप्पो इमो, जहा—

जाइं चत्तारि भुज्जाइं, इसिणाऽऽहारमाइणि । ताइं तु विवज्जंतो, संजमं अणुपालए ॥ २२५ ॥ (सूत्रं)

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२१०-२७७||

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]

'जाणि' त्ति अनिद्दिट्ठाण गहणं, 'चत्तारि' त्ति संखा, 'अभोज्जाणि' अकप्पियाणि 'इसिणा' षाम साधुणा, आहारो आई जेसिं ताणि आहारमादीणि ताणि अ भोज्जाणि विवज्जयंतो साधु संजमं सत्तरसविहं अणुपालयेत्, सीसो आह-काणि पुण ताणि आहारादीणि ?, भण्णति, इमाणि—'पिंडं सिज्जं च वत्थं च०' ॥ २५६ ॥ सिलोगो पठितसिद्धो. एतेसिं आहारादीणं जे **नियागं ममायंति, कीयमुद्देसियाहडं । वहं ते समणुजाणंति, इअ उत्तं महेसिणा** ॥ २५७॥ नियागं कीयमुद्देसियाहडं च जहा खुड्डयायारकहाए जे एताणि कीयादीणि 'ममायंति' नाम परिगेण्हंति ते तसथावराणं वहं समणुजाणांतीत्ति, न याहं अप्पणो इच्छाए एवं भणामि, किंतु ' इति वुत्तं महेसिणा' इतिसद्दो परिसमत्तीए वट्टइ, कहं ?, ण एयाओ विसिट्ठयरं अन्नेण केणवि भणियं, जम्हा तसथावरोवघातादि दोसा णियागादिसु भवन्ति । **'तम्हा असणपाणाइं'** (दि)० ॥ २५८ ॥ सिलोगो जम्हा तसथावराणं वधो नियागादिसु भवति तम्हा असणपाणादीणि तमुद्देसियाहडादीहिं दूसियाणि वज्जयंति(त्ति) भण्णइ, **ठियप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणोत्ति**, सोभणो सुट्ठिओ अप्पा जेसिं ते ठिअप्पाणो, जेसिं गंथो णत्थि ते निग्गंथा, धम्मेण जीवतित्ति । दारं। गिहिभायणदारं तं०-**'कंसेसु कंसपाएसु०'**॥२५९॥ सिलोगो, **कंसेसु** नाम कंसाओ जायाणि कंसाणि, ताणि पुण थालाणि हवा खोरगाणि वा तेसु **कंसेसुत्ति**, कंसपाएसु नाम कंसपत्तीओ भण्णंति, जं वा किंचि अन्नं तारिसं कंसमयं तं कंसपाएण सव्वं गहियंति, 'कुंडमोयो' नाम हत्थपदागितीसंठियं कुंडमोयं, पुणोसद्दो विसेसणे वट्टति, किं विसेसयति ?, जहा अन्नेसु सुवन्नादिभायणेसुत्ति, अन्ने पुण एवं पठंति 'कुंडकोसेसु वा पुणो' तत्थ कुण्डं पुढविमयं भवति, कोसग्गहणेण सरावादीणि गहियाणि, एतेसु जो भुंजइ असणपाणाइ सो आयाराओ परिभस्सइ- सव्वहा भस्सइ, कहं पुण सो आयाराओ भस्सइ ?, भन्नति--

*** अत्र गृहिभाजनस्य अकल्प्यत्वं दर्शयते

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ, ६ धर्मा. ॥२२८॥

सीतोदएण परिरंभे (सीओदगसमारम्भे (ह०) ॥ २६० ॥ सिलोगो, एतेसु भावणेसु संजता समुद्दिट्ठन्तिकाऊण ते य गारत्था सीएण उदगेण पक्खालेंति, सीतग्गहणेण सचेयणस्स उदगस्स गहणं कयं, समारंभग्गहणेण सो चेव पक्खालणादिं दोसो घेप्पइ, 'मत्तधोअणछड्डणे' नाम तत्थ मत्तं-भायणं भण्णइ, तं मत्तं धोविऊण जत्थ छड्डेइ तत्थवि घाएइ, अहवा धोवणमेव छड्डणं, जं तत्थ पुव्वण्णत्थं तं छड्डेऊण देंति, 'जाणि' त्ति अणिद्दिट्ठाणं गहणं, छण्णसद्दो हिंसाए हट्ठइ, भूयाणि नाम पाणाणि वा भूयाणि वा एगट्ठा, 'से' त्ति अणिद्दिट्ठस्स असंजमस्स गहणं कयं, सो य इमो-जेण आउक्काएण धोव्वंति सो आउक्काओ विराहिओ भवति, कदापि पूयरगादिवि तसा होज्जा, धोवित्ता य जत्थ छड्डिज्जति तत्थ पुढविआउतेउवरियतसविराहणा वा होज्जा, वाउक्काओ अत्थि चेव, अजयणाए वा छड्डिज्जमाणे वाउक्काओ विराहिज्जइ, एवं छण्हं पुढविमाईणं विसहणा भवति, एसो अयंजमो तित्थगरेहिं दिट्ठो। किंच- 'पच्छेकम्मं पुरेकम्मं' ॥ २६१ ॥ सिलोगो, पच्छाकम्मं जमिदाणिं हेट्ठा भणियं, 'पुरेकम्मं' पुव्वमेव संजयट्ठाए धाविऊण ठवेति, अहवा पच्छाकम्मं भुंजंतु ताव समणा वयं पच्छा भोक्खामो ततो भोक्खंति साधवोत्ति एवं उस्सक्कयंतस्स पुरेकम्मं भवति, सियासद्दो आसंकाए वट्टइ, जहा कदापि एते पच्छाकम्मपुरेकम्माइ दोसा भवेज्जात्ति तत्थ न कप्पइ। किंच 'एअमट्ठं न भुंजंति' एयसद्दो पच्चक्खीकरेइ, जम्हा एस पच्छाकम्मादिदोससमुदयो भवति तम्हा भगवंतोपि णिग्गंथा निहिभायणं ण भुंजंति, आसंदिगग्गहणेण आसंदिगहणं कतं, पलियंको पल्लंको भण्णइ, आसालओ नाम ससावंगमं (सावट्ठंभं) आसणं, तत्थ किर अवड्ढा आवणि ताणिगा ववहरंति, अन्नेसु वा एवमादिसु 'अणायरियमज्जाणं'ण आयरियं अणाचिन्नंति वुत्तं भणइ, अज्जा आयरिया भण्णंति, अहवा, अज्जा-उज्जुयं भण्णइ, आसणं उववेसणं, सयणं सुवणं भण्णइ। अहवा इदाणिं इमं सुत्तं भवइ-

अकल्पगृहि भाजना-दीनि ॥२३८॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२१०-२७७||

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]

नासंदीपलिअंकेसु॥२६३॥ सिलोगो आसंदीपलियंका पुव्वभणिता 'निसिज्जा' नाम एगे कप्पो अणेगा वा कप्पा, पीढगं पलालं पीठगादि, एतेसु ण साधवो आसणसयणादीणि कुव्वंति, जया पुण कारणं भवइ तदा निग्गंथा पडिलेहाणन्ति. (एत्ति) धम्म-कहारायकुलादिसु पडिलेहेऊण निसीयणादीणि कुव्वंति, पडिलेहाए णाम चक्खुणा पडिलेहेऊण सयणादीणि कुव्वंति, 'बुद्धवुत्त-महिट्ठगा' णाम बुद्धेण वुत्तमहिट्ठगा, अधिट्ठंति नाम आयरंति वा, आह-तेसु आसंदगादिसु को दोसो ?, 'गंभीरविजया एए'० ॥ २६४ ॥ सिलोगो, गंभीरं अप्पगासं भण्णइ, विजओ नाम मग्गणंति वा पिथकरणंति वा विवेयणंति वा विजओत्ति वा एगट्ठा, गंभीरविजयत्तणेण जे तत्थ पाणा ते दुप्पडिलेहगा दुव्विसोहगा भवंति, अहवा विजओ उवस्सओ भण्णइ, जम्हा तेसिं पाणाणं गंभीरो उवस्सओ तओ दुव्विसोधगा, कहं ?, चसुपा (आसंदिया) दीणं अण्णतरेसु मंकुणकुंथुमादिणो जीवा भवंति ते दुक्खं विसोधिज्जंति, विसोधिज्जंति नाम अवणिज्जंति, अवक्कमंते य ते जीवा जंतएव पीलिज्जंति, जम्हा एवमादी दोसा भवंति अतो साधूहिं आसंदीपलियंकादी विवज्जिता। किंच- 'गोअरग्गपविट्ठस्स०' ॥ २६५ ॥ सिलोगो, णिसीयंति जत्थ सा णिसिज्जा, गोयरग्गपविट्ठस्स साहुणो ण कप्पइ, साहु 'इमेरिसमणायारं आवज्जंति अबोहियं' इमेरिसं नाम जो इदाणिं अणायारो भण्णिहिति तमावज्जति, ण आयारो अणायारो, आवज्जति नाम पावति, अबोहियं नाम मिच्छत्तं, कोऽसौ अणायारो ?, भण्णति- 'विवत्ती बंभचेरस्स०' ॥ २६६ ॥ सिलोगो, कहं बंभचेरस्स विवत्ती होज्जा ?, अवरोप्परओसंभासअन्नोऽन्नदंसणादीहिं बंभचेरविवत्ती भवति, पाणाणं अवधे वहो भवति, तत्थ पाणा णाम सत्ता, तेसिं अवधे वधो भवेज्जा, कहं ?, सो तत्थ उल्लावं करेइ, तत्थ य तिच्चिरओ आणीओ जीवंतओ विक्काणओ, सो चिंतेति-कहमेतस्स अग्गओ जीवंतं गेण्हिस्सामि, ताहे ताए सण्णा

कया, दसिया वलिया, आगलियं, सेवि जा गिण्हामि ताहे मारिज्जेज्जा, एवं पाणाण अवधे वधो भवति, 'वणीमगपडिग्घाओ' य इमेण पगारेण होज्जा, सो ताए समं उल्लावेइ, तत्थ य बहवे भिक्खायरा एंति, सा चिंतेति- कहमेतस्स सगासाओ उट्ठेहामित्ति अपत्तियं से भविस्सति, ताहे ते अतित्थाविज्जंति, तत्थ अंतराइयदोसो भवति, ते तस्स अवण्णं भासंति, 'पडिकोहो य अगारिणं' समंता कोहो पडिकोहो, समंता नाम सव्वत्तो, तकारडकारलकाराणामेयत्तमितिकाउं पडिकोहो पढिज्जइ, सो य पडिकोधो इमेण पगारेण भवति--जे तीए पतिससुरपुत्तादी ते अपडिगणिज्जमाणा मण्णेज्जा-एसा एतेण समणएण पंसुलाए कहाए अक्खित्ता अम्हे आगच्छमाणे वा भुक्खियतिसिए वा णाभिजाणइ, न वा अप्पणो णिच्चकरीणज्जाणि अणुट्ठेइ, अतो पडिकोधो अगारिणं भवइ । किंच-'अगुत्ती बंभचेरस्स' ॥२६७॥ सिलोगो, इत्थीणं अंगपच्चंगेसु दिट्ठिनिवेसमाणस्स इंदियाणि मणुन्नाणि निरिक्खंतस्स बंभवतं अगुत्तं भवइ, जाओ संकणिज्जाओ, इत्थी वा पप्फुल्लवयणा कडक्खविक्खत्तलोयणा संकिज्जेज्जा, जहा एसा एयं कामयति, चकारेण तथा सुभणियसुरूवादीगुणेहिं उववेतं संकेज्जा, उभयं व संकेज्जा; जम्हा एते दोसा 'कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरओ परिवज्जए'कुच्छियं सीलं जंमि ठाणे वड्ढइ तं कुसीलवड्ढणं,दूरओ साहुणा परिवज्जियव्वमिति । इयाणिं एताण चैव अववातो भण्णति--'तिण्हमन्नयरागस्स०' ॥ २६८ ॥ सिलोगो, तिण्ह इति संखा, अन्नतरातस्स नाम जे इदाणिं तयो भण्णिहिंति तेसिं, अन्नतरस्सत्ति जस्स अविसेसियगहणं, ते य इमे तिण्णि, तं०-जराभिभूओ 'वाहिअस्स तवस्सिणो' त्ति अभिभूयग्गहणं जो अतिकट्ठपत्ताए जराए वज्जइ,जो सो पुण वुड्ढभावेऽवि सति समत्थो ण तस्स गहणं कयंति, एते तिन्निवि न हिंडाविज्जंति,तिन्नि हिंडाविज्जाति सेधो अत्तलाभिओ वा अविकिट्ठतवस्सी वा एवमादि, तिहिं कारणेहिं हिंडेज्जा,तेसिं च तिण्हं णिसेज्जा अणु-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥२१०-२७७॥

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]

ज्ञाया, तत्थ थेरस्स बंभचेरस्स विवत्तीमादि दोसा नत्थि, सो मुहुत्तं अच्छइ, जहा अन्तरातपडिघातादओ दोसा न भवंति, वाहि-ओऽवि मग्गति किंचि तं जाव निक्कालिज्जइ ताव अच्छइ, विस्समणट्ठं वा, तवस्सीवि आतवेण किलामिओ विसमिज्जा, णिसेज्जत्ति दारं गयं । इदाणिं सिणाणंति दारं भण्णइ- तस्स इमो अभिसंबंधो-मा जराभिभूतादीणि सेज्जाणुण्णापसंगेण सिणाणादीणि आयरियस्संति धम्मत्ता तिसापरिगता वा, अओ इमं भण्णइ-जढो होइ, 'बाहिओ वा अरोगी वा०' ॥ २६९ ॥ सिलोगो, बाधीपरिगओ बाधितो, अवगतो रोगा अरोगो, सिणाणंति वा ण्हाणंति वा एगट्ठा, जोत्ति अणिद्दिट्ठस्स गहणं, इच्छए नाम सेवए, 'वोक्कंतो होइ आयारो' तेण सिणायंतेण विविहं-अणेगप्पगारं उक्कंतो वोक्कंतो अतिक्कंतोत्ति वुत्तं भवइ, जयमारियव्वयं सो आयारो भण्णइ, 'जढो होइ संजमो' जढो नाम छड्डिउत्ति वा जढोत्ति वा एगट्ठा, संजमो पुव्वभणिओ, आह- आयारसंजमाणं को पइविसेसो ?, भण्णइ, आयारग्गहणेण कायकिलेसादिणो बाहिरतवस्स गहणं कयं, संजमगहणेणं सत्तरसविहस्सवि संजमस्स गहणं कयं, सिणातंतस्स इमो असंजमो भवइ, तं०- ' संतिमे सुहुमा पाणा० ' ॥ २७० ॥ सिलोगो, संति नाम विज्जंते 'इमे' त्ति पच्चक्खा अतीव सण्हा सुहुमा पाणा-जीवा, ते य दुविधा, तं०- तसा थावरा य, तसा कुंथुपिप्पीलियादि थावरा बीय-पणगादि, ते पुण घसाहि भिलुगाहि य होज्जा, घसा नाम जत्थ एगदेसे अक्कममाणे सो पदेसो सव्वो चलइ सा घसा भण्णइ, भिलुगा राई, अन्नेसु वा गंभीरेसु अवगासेसु 'जे' त्ति अणिद्दिट्ठस्स गहणं, तुसद्दो विसेसणे, किं विसेसयति ?, जहा पायसो घसाइसु सत्ता विज्जंति एवं विसेसयइ, वियडं पाणयं भण्णइ, तेणं पाणएण जीवे उप्पिलावइ, उप्पिलावइ णाम उप्पिलावणंति वा प्लावणंति वा एगट्ठा, जम्हा एस दोसो ' तम्हा ते न सिणायंति० ' ॥ २७१ ॥ सिलोगो, उप्पिलावणादिदोसपरिहरणत्थं

॥२३१॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥२१०-२७७॥

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]

साहवो सीएण उसिणेण दवेण व णेह सिणायंतित्ति, आह- जइ उप्पीलावणादिदोसा न भवंति ?, तहावि अन्ने ण्हायमाणस्स दोसा भवंति, कहं ?, ण्हायमाणस्स बंभचेरे अगुत्ति भवति, असिणाणपच्चइयो य कायकिलेसो तवो सो ण हवइ, विभूसादोसो य भवतित्तिकाऊण जावज्जीवं वयं घोरं असिणाणमहिट्ठेयव्वंति, जहेव साहूणं ण्हाणं पडिसिद्धं, तहा ' सिणाणं अदुवा कक्कं० ' ॥ २७२ ॥ सिलोगो, सिणाणं ण्हाणं भण्णइ, कक्को लवन्तयो कीरइ, वण्णादी कक्को वा, उव्वलयं अट्ठगमादि कक्को भण्णइ, लुद्दं कसाओ जं वासेडयादी कीरइ, पउमं कुंकुमं भण्णइ, चक्कारेण अण्णाणिवि एवमादि गहियाणि, ताणि गायस्स उव्वट्टणत्थं णायरंति साधवो, कयाइवित्ति कयाइगहणेण णज्जइ जाव आउ ताव सेसं नायरंति, को पुण सिणाणादिसु दोसो ?, भण्णइ, विभूसाइ दोसा भवंतित्ति, एतेण अभिसम्बन्धेण सोभवज्जणं दारं पत्तं, तं०, ' नगिणस्स वावि मुंडस्स० ' ॥ २७३ ॥ सिलोगो, णगिणो णग्गो भण्णइ, मुंडो चउव्विधो, तं०- नाममुंडो ठवणामुंडो दव्वमुंडो भावमुंडो यत्ति, णामठवणाओ गयाओ, दव्वमुंडो आइच्चमुंडाई, भावमुंडो जस्स इंदियणोइंदिया दंता सो भावमुंडो भवति, दीहाणि रोमाणि कक्खीवत्थ-जंघादीसु जस्स, णहावि अलत्तयप्पाडणपायोगा, ण छज्जंति ते दीहा धारेउं, जिणकप्पियादीण दीहावि, एवंविहरूवस्स मेथुणोवरयस्स साहुणो न किंचि विभूसा साधयइ, केवलं विडचेट्ठणं करेइ, अतो- **विभूसावत्तियं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं। संसारसायरे घोरे, जेण पडई दुरुत्तरे ॥ २७४ ॥** सिलोगो, ' विभूसावत्तियं ' नाम विभूसा वत्तियं पच्चइयं रागाणुगयस्स भिक्खुणो चिक्कणो कम्मबंधो भवइ, चिक्कणंति वा दारुणंति वा एगट्ठा, तं कम्मं बंधई जेण कम्मेण बद्धेण संसारसागरे भमति, इदाणिं गणधरा मणगपिता वा एवमाहु, विभूसावत्तियं नाम विभूसावत्तियं पच्चइयं, जमेयं विभूसावत्तियं कम्मं हेट्ठा

निषद्या निषेधः ॥२३२॥

वर्णितं तयं तित्थगरादि बुद्धा मन्नंति, मन्नंति वा जाणंति वा एगट्ठा, तारिसं नाम जमिदाणिं चिक्कणंति भणियं तहप्पगारं संसारसागरमडयं बज्झतीति, न किंचन केवलं विभूसादोसो सो एगो, किन्तु सावज्जं बहुलं चेतंति, सहऽवज्जेण सावज्जं, जा तत्थ व ण्हाणादीणि मग्गमाणस्स-गवीसमाणस्स सावज्जकिरियाए सावज्जबहुलं चेव विभूसावत्तियं कम्मं बंधइत्तिकाऊण मा एयं तित्थकराईहिं ताईहिं सेवियंति, सोभणवज्जणन्ति दारं गतं। संमत्ता य उत्तरगुणा अट्ठारसट्ठाणाणि य, उत्तरगुणाधिकारे इमं भण्णइ— ' खवंति अप्पाणममोहदंसिणो० ' ॥ २७६ ॥ सिलोगो, अहवा जो सो अट्ठारससु ठाणेसु संजमो उवदिट्ठो, जे य तम्मि संजमे ठिया ते खवंति अप्पाणं अमोहदंसिणोत्ति, आह-किं ताव अप्पाणं खवेंति उदाहु सरीरंति?, आयरिओ भणइ— अप्पसद्दो दोहिवि दीसइ–सरीरे जीवे य, तत्थ सरीरे ताव जहा एसो संतो दीसई मा णं हिंसिहिसि, जीवे जहा गओ सो जीवो जस्सेयं सरीरं, तेण भणितं खवेंति अप्पाणंति, तत्थ सरीरं औदारिकं कम्मगं च, तत्थ कम्मएण अधिगारो, तस्स य तवसा खए कीरमाणे औदारियमवि खिज्जइ, अमोहं पासंतीत्ति अमोहदंसिणो सम्मदिट्ठी, सम्मवन्ताण वुत्तं भवति, तवो बारसविहो तम्मि तवे रया, संजमो सत्तरसविहो, उज्जुताभावो अज्जवं, अज्जवगहणेण अणासंसओ संजमतवे कुव्वतीति, गुणग्रहणेण एते चेव गुणा गहिया, एवं ते चरणगुणसंजमतवेसु अवट्ठिया चिरसंचिताणि पावाणि पुरेकडाणि कम्माणि धुणंति, अण्णाणि नवाणि ण साहवो करेंति॥ ' सओवसंता अममा० ' ॥ २७७ ॥ सिलोगो, सदा–सव्वकालं उवसंता सदोवसंता, अममा णाम बज्झब्भंतरेहिं गंथेहिं विप्पमुक्का अममा भण्णंति, किंचणं चउव्विहं, तं०-णामकिंचणं ठवणाकिंचणं दव्वकिंचणं भावकिंचणं च, तत्थ नामं तहा ठवणाओ गयाओ, दव्वकिंचणं हिरण्णादि, भावकिंचणं अन्नाणकिंचणं अविरईमिच्छत्ताईणि, अप्पणो विज्जा सविज्जा तया

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२१०-२७७||

दीप अनुक्रम [२२६-२९३]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ७ वाक्य शुद्धि अ० ॥२३४॥

अप्पणिज्जया विज्जया अणुगया सविज्जविज्जणुगया, केवलसुयणाणादिसु उवउत्तत्ति वुत्तं भवति, बीयं विज्जागहणं लोइयविज्जा-पडिसेहणत्थं कतं, जसो जेसिं अत्थि ते जसंसिणो, ते भगवंतो ' उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा ' उउगहणेण छण्हवि रिऊणं गहणं, पसण्णगहणेण सरओ विसेसिज्जति, जहा सरए चंदिमा विसेसेण निम्मलो भवति एवं ते विमलं सिद्धिं गच्छंति, सावसेस-कम्माणो य विमाणेसु उववज्जंति, विमाणगहणेण विमाणियगहणं कयं, उवेंति वा वयंति वा एगट्ठा, ताइणो पुव्वभणिता, एतं फलं तेसिं अट्ठारसण्हं ठाणाणं सम्ममणुपालियाणं, ति बेमि नाम तीर्थकरोपदेशात् ब्रवीमि, न स्वाभिप्रायेणेति ॥ इदाणिं णया, ' णाणंमि गिण्हियव्वे ' ॥ ॥ गाथा, ' सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं० ' ॥ ॥ गाथा, एताओ पढित-सिद्धाओ !! षष्ठधर्मार्थकामाध्ययनचूर्णिः समाप्ता ॥

तेण णाणदंसणादिगुणजुत्तेण आयरिएण धम्मं कहंतेण भासा जाणियव्वा, केरिसा वत्तव्वा ण केरिसा वा वत्तव्वा ?, गुणदोसे य जाणमाणे सुहं धम्मं कहिस्सतीतिएतेण अभिसंबंधेणागतस्स अज्झयणस्स चत्तारि अणुओगदाराणि जहा आवस्सगचुन्नीए, नवरं नामनिप्फन्ने वक्कसुद्धी भण्णइ, वक्कं निक्खिवियव्वं सुद्धी निक्खिवियव्वा, तत्थ पढमं वक्कं भण्णइ- ' निक्खेवो उ चउक्को० ' ॥ २७१ ॥ गाथा, चउव्विहं वक्कं, तं०- णामवक्कं ठवणावक्कं दव्ववक्कं भाववक्कं च, णामठवणाओ गयाओ, दव्ववक्कं नाम जाणि दव्वाणि भासत्ताए गहियाणि ण ताव उच्चारिज्जंति सा भासा, तेण चेव उच्चारिज्जमाणाणि तमत्थं भासयंती भावभासा भवति, तस्स वक्कस्स एगट्ठियाणि इमाणि— ' वक्कं वयणं च गिरा० ' ॥ २७२ ॥ गाथा, वाच्यत इति वाक्यं, वयणिज्जं वयणं, गिज्जतीति गिरा, सरो जीसे अत्थि सा सरस्सति, भारो णाम अत्थो, तमत्थं धारयतीति भारही, पुरच्छिमासो

निषद्या निषेधः ॥२३४॥

➡ अध्ययनं -६- परिसमाप्तं अध्ययनं -७- 'वाक्यशुद्धि' आरभ्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२७८-३३४||

दीप अनुक्रम [२९४-३५०]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ७ वाक्य शुद्धि अ० ॥२३५॥

लोगंताओ पच्चत्थिमिल्लं लोगंतं गच्छतीति गो, वदिज्जते वयणिज्जा वा वाणी, भणिज्जतीति भासा, पण्णविज्जती जीए सा पण्णवणी, अत्थं देसयतीति देसणा, वायापरिणामेण जीवस्स जोगो तेण कडुगफरुसादिपरिणामजोयणं जोगो। तत्थ जा सा पुव्वुद्दिट्ठा दव्वभासा सा इमा— ' दव्वे भावे तिविहा गहणे अ निसिरणे० ' ॥ २७३ ॥ गाथापुव्वद्धं, तिविहा भासा, तंजहा— गहणं निसिरणं पराघातोत्ति, तत्थ गहणं नाम वयजोगपरिणओ अप्पा भासादव्वाणि गिण्हेउं ण जाव निसिरइ तांव गहणं भण्णइ, निसिरणं नाम ताणि चेव उरकंठसिराजिब्भमूलदंतनासिकातालुउट्ठेहिं जहा विभागओ णिसिरिज्जमाणा णिसरणं भण्णति, पराघाओ जाणि तेहिं भासादव्वेहिं निस्सट्ठेहिं तप्पयोगाणि अन्नाणि पेलिज्जमाणाणि भासाविसयसमत्थाणि भवंति सा पराघातदव्वभासा भण्णइ, दव्वभासा गया। इयाणिं भावभासा इमेण गाथापच्छद्धेण भण्णइ–'भावे दव्वे य सुते०' ॥ २७३ ॥ अद्धगाथा, 'भावभासा' नाम जेणाहिप्पाएण भासा भवइ सा भावभासा, कहं ?, जो भासिउमिच्छइ सो पुव्वामेव अत्ताणं पत्तियावेइ जहा इमं मए वत्तव्वंति, भासमाणो परं पत्तियावेइ, एयं भासाए पयोयणं, जं परमप्पाणं च अत्थे अवबोधयति, सा य भावभासा तिविधा, तं०- दव्वभावभासा, सुयभावभासा चरितभावभासा य, तत्थ दव्वभावभासा नाम दव्वं पडुच्च जा भासिज्जइ सा दव्वभावभासा, जहा घडे जं णाणं तं घडनिमित्तंतिकाउं घडनाणं भण्णइ, एवं जा दव्वं पडुच्च भासिज्जइ सा दव्वभावभासा, सा य आराहणादिया चउव्विधा दव्वभावभासा भवति, तं०-दव्वाराहणी सा य भवति सच्चा, दव्वविराधणी सा य मोसा भवति, सच्चामोसा आराधणविराधणी भण्णति, असच्चामोसा पुण पडिसेहे, पडिसेहे णाम णो आराधणा णो विराहणित्ति, तत्थ दव्वाराहणी नाम जं जहावत्थियं दव्वं तं तहेव आराहयति, जहाभावि भावि चेव सच्चं भासतित्ति वुत्तं भवति, तं

भाषा निक्षेपाः ॥२३५॥

*** अत्र भाषाया: निक्षेपा: दर्शयते

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ७ वाक्य शुद्धि अ० ॥२३६॥

च सच्चं दसविधं---'जणवयसम्मयठवणा०' ॥ २७५ ॥ तत्थ जणवयसच्चं नाम जहा एगम्मि चेव अभिधेए अत्थे अण्णयाणं जणवयाणं विप्पडिवत्ति भवति, ण च तं असच्चं भवति, तं०--पुव्वदेसयाणं पुग्गलि ओदणो भण्णइ, लाडमरहट्ठाणां क्करो, द्रविडाणां चोरो, अन्धाणां कनायु, एवमादि जणवयणसच्चं भवति, सम्मतसच्चं नाम अहा अण्णाणि णलिनकुमुदनीलुप्प-लसालिमादीणि पंके जायंति तहावि न तेसिं पंकयसन्ना सम्मया जहा अरविंदस्स, अरविंदे आगोपालादि सम्मतं जहा पंकयंति, एवमादि सम्मतसच्चं भण्णइ, ठवणासच्चं नाम जहा अक्खं निक्खिवइ, एसो चेव मम समयो एवमादि, नामसच्चं नाम जं जीवस्स अजीवस्स वा सच्चीमिति नामं कीरइ, जहा सच्चो नाम कोइ साधु एवमादि, रूवसच्चं णाम जो असाधुं साहुरूवधारिणं दट्ठुं भणइ दीसइ वा, पडुच्चसच्चं नाम दिग्घं पडुच्च हस्वं सिद्धं हस्वं पडुच्च दिग्घं सिद्धं जहा कणिट्ठंगुलियं पडुच्च अणामिया दीहा अणामियं पडुच्च काणंगुलिया हस्वा एवमादि, ववहारसच्चं नाम जहा अम्ह गामो, पिट्ठस्स वा सच्चीमिति कहणं , छत्त-एण आगमणं डज्झति गिरी गलइ भायणं लोगप्पसिद्धाणि, तहा गावी पिज्जइ, गावीए खीरं पिज्जइ, ण गावी सव्वा पिज्जइत्ति, एवमादि, भावसच्चं नाम जमहिप्पायतो, जहा घडमाणेहित्ति अभिप्पाईते घडमाणेहित्ति भणियं, गावीअभिप्पायेण गावी, अस्सो वा अस्सो भणिओ, एवमादि, जोगसच्चं नाम जहा छत्तेण छत्ती मउडेण मउडी एवमादि, ओवम्मसच्चं नाम चन्द्रमुखी देवदत्ता, समुद्र इव तडागं भणितमित्येवमादि, सच्चं गतं॥ इदाणिं मोसं भण्णइ, तं०-कोहे माणे माया लोभे०॥ २७६ ॥ गाथा, तत्थ कोहस्सिया जं कोहाभिभूयो भासति भासं सा मोसा भण्णइ, आह- णणु आराधणी सच्चा विराधणी मोसा भणिया, कहं इदाणिं भणह- जं कुद्धो भासइ सा मोसा, कुद्धोऽपि कोवि गावीं गाविमेव भणइ, अस्सं अस्समेव. सा कहं मोसा भविस्सतीति ?,

जनपदादि-सत्यं

॥२३६॥

*** अत्र सत्य, मृषा, सत्यामृषा आदि भाषाया: भेदानां वर्णयन्ते

आयरिओ आह- तस्स कोहाउलचित्तत्तणेणं घुणक्खरमिव तं अप्पमाणमेव भवति, जहा घुणक्खरं सच्चमवि पंडियाणं चित्तगाहगं न भवति, कोवाकुलचित्तो जं संतमवि भासति तं मोसमेव भवति, तत्थ कोहेण ताव अनेन प्रकारेण मृषामभिधास्यते, जहा कोइ साहुणा धीवाराई पुच्छिओ-अमुगं नगरं कतरो पंथो वच्चइ ?, तओ सो अप्पवरद्धकुद्धो अन्नमेव पंथं वदिसइ, ण याणामि वा भणति, पिया कुद्धो पुत्तं भणइ-न तुमं मम पुत्तोत्ति, एवमादि, माणनिस्सिया जहा गामनगरसमवाएसु कस्स कत्तिओ अत्थोत्ति पुच्छिए अप्पधणोऽवि भणइ-जहाऽहं कोणी(डी)धणोत्ति एवमादि,मायाणिस्सिता जहा मायाकारो चक्खुमोहणं काउं भणइ-आगासं लोगओ पविट्ठो, एवमादि, लोभणिस्सिता जहा कूडमाणवचहारिणो वाणियगा, कोइ लोभेणं मोसं भासेज्जा एवमादि, पेज्ज-णिस्सिया जहा णेहाणुरागेण भणइ-दासोऽहं तव एवमादि, दोसणिस्सिता जहा भगवओ वद्धमाणसामिणो संता गुणा केइ पावकम्मा छादयंति,जहा न एसो सव्वण्णू,ण एयं सक्कमादी सुरा पज्जुवासंति, किन्तु एसो इंदियालियप्पयोगो विज्जातिसओ वा एवमादि, हासणिस्सिया जहा कस्सइ किंचि तारिसं गोवेऊण पुच्छिज्जमाणो भणइ-न याणामित्ति, एवमादि, भयणिस्सिया जहा चोरो तालिज्जमाणोऽवि मरणभयाभिभूओ भणइ- णाहं चोरोत्ति एवमादि, अक्खाइयानिस्सिया जहा भारहरामायणादि, उवघायनिस्सिया जहा अचोरं चोरेमिति एवमादि। मोसा गता। इदाणिं सच्चामोसा भण्णइ,किंचि तीए सच्चं किंचि मोसंति, सा इमा दसविधा, तं०- उप्पन्नविगयमीसग० ॥ २७७ ॥ गाथा, उप्पण्णमीसिया विगतमीसिया उप्पन्नविगतमीसिया जीव-मीसिया अजीवमीसिया जीवाजीवमीसिया अणंतमीसिया परित्तमीसिया अद्धामीसिया अद्धद्धामीसिया इति, तत्थ उप्पन्नमीसिया जहा कोइ भणेज्ज-एयंमि नगरे दस दारगा जाता, तत्थ कदाइ ऊणा अधिगा वा होज्जा एवमादि उप्पण्णमीसिया, विगयमी-

सिया जहा एतंमि नगरे दस दारगा मया, तत्थ कयाइ अहिगा ऊणा वा होज्जा एवमादी विगतमीसिया, उप्पन्नविगतमीसिया जहा एतम्मि नगरे दस दारगा जाया दस मया, तत्थ कदाइ ऊणा अहिगा वा होज्जा एवमादी उप्पण्णविगतमीसिया, जीवमिस्सिया जहा कोइ किमिरासिं दट्ठूणं भणेज्जा-अहो जीवरासित्ति जेण सव्वे जीवंति, तत्थ जे जीवंति तेसु सच्चा, जे मया तेसु मोसा भवइ, अतो जीवमिस्सिया भण्णइ, अजीवमिस्सिया जहा तमेव किमिरासिं पायसो मयं पासिऊण भणेज्जा-अहो इमे सव्वे मया, तत्थ केइ जीवंति, जे ण जीवंति तेसु सच्चा, जे जीवंति तेसु मोसा, अओ अजीवणिस्सिया भण्णइ, जीवाजीवमिस्सिया जहा मयाणं अमयाणं च रासिं दट्ठूण भणेज्जा, जहा-सव्वो एस रासी जीवइ मओ वा, एवमादि, अणंतमीसिया जहा कोइ मूलगच्छोढं दट्ठूणं अन्नं वा किंचि तारिसं भणेज्जा-जहा-सव्वो एस अणंतकायोत्ति,तस्स मूलपत्ताणि जिण्णत्तणेण परिभूयाणि,केवलं तु जलसिंचणगुणेण केइ तस्स किसलया पाउब्भूता, अओ अणंतपरित्तत्तेण मिस्सिया भण्णइ, परित्तमीसिया जहा अभिनवउक्खयं मूलगं कोऽवि परिमिलाणंतिकाऊण भणेज्जा जहा सव्वो एस परित्तो, तत्थ अंता परित्तीभूया मज्झपएसो अणंतो चेव, एसा परित्तमीसिया, अद्धामीसिया नाम अद्धा कालो भण्णइ, सो य रायि वा होज्जा दिवसो वा, तत्थ वट्टमाणं कालं अणागएण कालेण सह मिस्सीकरेइ, जहा कोयि पंथं वच्चमाणो थेवावसेसे दिवसे सेहए भणइ, जहा-तुरियमागच्छह, ण ता पेच्छह इमं कालियं रत्तिं एवमादि अद्धामीसा भण्णइ, अद्धद्धामीसिया नाम तेसिं चेव दिणरातीणं एगदेसो अद्धद्धा भण्णइ, तं वट्टमाणं कालं अणागतकालेण सह मीसीकरेइ जहा पुव्वपोरिसीए भण्णइ-मज्झण्हीभूतं तहावि वयं न भुंजामोत्ति एवमादि अद्धद्धामीसिया, सच्चामोसा गता। इदाणिं असच्चमोसा भण्णइ, सा नेव सच्चा णेव मोसा, केवलं वयणमेव, सा दुवालसविहा दोहिं

गाहाहिं भण्णइ, तं०- 'आमंतणि०' ॥ २७८ ॥ गाथा, 'अणभिग्गहिआ भासा०' ॥ २७९ ॥ गाथा, तत्थ 'आमंतणि' जहा हे देवदत्त! एवमादि, आणवणी णाम जो जस्स आणत्तियं देइ सा आणवणी भवति, जहा गच्छ, पच पठ, कुरु, भुङ्क्ष्व एवमादि, जायणि मग्गणी भण्णति, यथाऽस्माकं भिक्षां प्रयच्छ एवमादि, पुच्छणी जहा कओ आगच्छसि ?, कत्थ वा गच्छसित्ति, तथा- 'कतिविधा णं भंते! जीवा पण्णत्ता' एवमादि, 'इच्छाणुलोमा' नाम जहा केणइ भणिया जहा साधुसगासं गंतव्वंति, ततोऽसौ भणति-ता सोभणं भवइ गच्छामो इच्चेवमादि, 'अणभिग्गहिया' णाम जा भासा अत्थं अणभिगेण्हिऊण केवलं वायमित्तमेव उदाहरिज्जति जहा डित्थो डवित्थो अमट्ठो पार्थेन इति, अहवा-ऊससियं नीससियं निच्छूढं खासियं च छीयं च । णिस्सिंघियमणुस्सारं अणक्खरं छेल्लियादीयं ॥ १ ॥ जा पुण भासा अत्थं अभिगिज्झ भासिया सा अभिग्गहिया, जहा घयं रसं एवमादि, संसयजयणी णाम जहा सेन्धवमाणेहित्ति भणिए ण णज्जइ किं तावत्पुरिसो सिंधवो आणेतव्वो उदाहु लवणं आसो वा एवमादि, वोयडा नाम जा पगडत्था, भावियत्थत्ति वुत्तं भवइ, जहा एस माया देवदत्तस्स एवमादि, अव्वोयडा नाम जा सोतारेहिं भासिज्जमाणा ण संविज्जइ जहा वागाणं एवमादि, एवमसच्चामोसा बारसविधा गता। इयाणिं 'सच्चाविअ सा दुविधा' ॥ २८० ॥ गाथा, जा एसा दुविधा चउव्विधावि भासा भणिया सा सव्वावि दुविधा भवइ, तं०-पज्जत्तिगा अपज्जत्तिगा य, तत्थ आदिल्लियाओ दोण्णि पज्जत्तिगाओ, इतरा दोवि अपज्जत्तिगाओ, पज्जत्तिगा णाम जा अवहारिउं सक्कइ, जहा सच्चा मोसा वा, एसा पज्जत्तिगा, जा पुण सच्चावि मोसावि दुपक्खगेवि सा न सक्कइ विभावेउं जहा एसा सच्चा मोसा वा, अओ सा अपज्जत्तिगा भण्णइ, जहा समइए सच्चामोसा अवहारेउं न सक्कइ तहा असच्चामोसावित्ति साऽवि अपज्जत्ता

चेव भणिया, **दव्वभावभासा गया। इयाणिं सुतभावभासा भण्णइ, तं च-'सुअधम्मे पुण तिविहा०'** ॥ २८१ ॥ अद्धगाथा, जा सुतधम्मोवउत्तस्स भासा सा तिविधा-सच्चा मोसा असच्चमोसा, सच्चा इमेण गाहापच्छद्धेण भण्णइ— जं सम्मदिट्ठी सुते उवउत्तो भासं भासइ सा णियमा सच्चा। इयाणिं मोसा भण्णइ, तं०— **'सम्मदिट्ठी उ सुअंमि०'** ॥२७२॥ गाथा, सो चेव सम्मदिट्ठी सुते अणुवउत्तो जया अहेउज्जुत्तं भासइ तया मोसा भण्णइ, जहा तंतूहिं घडो निप्फाइज्जइ मट्टियापिंडाओ पडो एवमादि मोसा, सा सम्मदिट्ठिस्स भवति, मिच्छादिट्ठी पुण उवउत्तो अणुवउत्तो वा चउव्विधंपि भासं भासमाणो मोसामेव भासइ, कहं ?, तस्स वयणं उम्मत्तवयणमिव सच्चासच्चत्तणेण अप्पमाणं भण्णइ। इयाणिं असच्चामोसा भण्णइ, तं-' **हवइ उ असच्चमोसा०** ' ५ २८४ ॥ गाथा, सच्चा मोसा य, एतातो दोऽवि भासाओ चरित्ते भवंति, तत्थ सच्चा नाम जं भासं भासंतस्स सच्चं मोसं वा चरित्तं विसुज्झइ, सव्वावि सा सच्चा भवति, जं पुण भासमाणस्स चरित्तं न सुज्झति सा मोसा भवति, अथवा जं भासं भासमाणो सचरित्तो भवति सा सच्चा, जं भासं भासमाणो सो अचरित्तो भवइ सा मोसा, असच्चामोसा एवं दुविहा भण्णइ, वक्कं गतं। इयाणिं सुद्धी भण्णइ—**'णामंठवणासुद्धी०'** ॥२८५॥ गाथा, चउव्विहा सुद्धी भवइ, तंजहा—णामसुद्धी ठवणसुद्धी दव्वसुद्धी भावसुद्धित्ति, तत्थ नामठवणाओ गताओ। दव्वसुद्धी इमा, तंजहा—**तिविहा उ (य) दव्वसुद्धी०** ॥ २८६ ॥ गाथापुव्वद्धं, तिविधा दव्वसुद्धी भवइ, तंजहा--दव्वसुद्धी आदेससुद्धी पहाणसुद्धी य, तत्थ दव्वसुद्धी आदेससुद्धी य इमेण गाथापच्छद्धेण भण्णइ, तं०—**तद्दव्वगमाइसो अणण्णमीसा हवइ सुद्धी** ॥ २८६ ॥ अद्धगाथा, तत्थ दव्वसुद्धी नाम जं दव्वं अन्नेण दव्वेण सह असंजुत्तं सुद्धं भवइ जहा खीरं दधि वा, आदेसदव्वसुद्धी दुविधा-अण्णत्ते य अणण्णत्ते य,

*** शुद्धे: नाम-आदि निक्षेपा: दर्शयते

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ॥२४१॥

अण्णत्ते जहा सुद्धवंसो सो देवदत्तो, अणण्णत्ते जहा सुद्धदंतो, **आदेसदव्वसुद्धी गता**। **वण्णरसगंधफासे०** ॥२८७॥ **गाथा**, पहाणदव्वसुद्धी इमेसु ठाणेसु भवइ, तं०-वण्णेसु गंधेसु रसेसु फासेसु जा समणुन्नया सा पहाणवक्कसुद्धी भवति, समणुन्ना नाम दरिसणिज्जत्ता, तत्थ वन्नेसु सुकिल्लो वन्नो पहाणो गंधेसु सुरभी पहाणो रसेसु महुरो पहाणो फासेसु मउयलहुयउण्हणिद्धा पहाणा, अहवा वन्नरसगंधफासेसु जो जस्स संमतो सो तस्स पहाणो, संमओ नाम अभिप्पेतो, पहाणसुद्धी गता, **गया य दव्व-सुद्धी**। **इयाणिं भावसुद्धी भण्णइ**, तंजहा- **'एमेव भावसुद्धी०'** ॥२८८॥ गाथापुव्वद्धं, 'एवमेव' त्ति जहा दव्वसुद्धी तिविधा दव्वादि एवं भावसुद्धीवि तिविधा, तं०-तब्भावसुद्धी आदेसभावसुद्धी पहाणभावसुद्धी य, तत्थ तब्भावसुद्धी आदेस-भावसुद्धी य इमेण गाथापच्छद्धेण भण्णंति, तंजहा-**तब्भावगमाएसो अणण्णमीसा हवइ सुद्धी०** ॥ २८८ ॥ गाथा-पच्छद्धं, तस्य तब्भावसुद्धी जहा तंमि गतो भावे सो अहिकंखइ, जहा बुभुक्खिओ अन्नं तिसिओ पाणं एवमादि। इदाणिं आदेस-भावसुद्धी, सा दुविधा, तंजहा-अण्णत्ते अणण्णत्ते य, तत्थ अण्णत्ते जहा सुद्धभावस्स साहुस्स एस आयरिओ, अणण्णत्ते जो जेण भावेण आदिस्समाणो न विरुज्झइ, जहा सुद्धसभावो साहू। इयाणिं पहाणभावसुद्धी भण्णइ, तंजहा— **'दंसणनाणचरित्ते०'** ॥ २८९ ॥ गाथा, पहाणभावसुद्धी जं दंसणादीण आदिस्समाणाणं सा पहाणभावसुद्धी भण्णइ, तत्थ दंसणपहाणसुद्धी खाइगं दंसणं, नाणपहाणसुद्धी खाइगं नाणं, चरित्तपहाणसुद्धी य अहक्खायं चरित्तं, तवपहाणसुद्धी य अब्भितरतवस्स सम्ममाराहणाए, तेहिं दंसणाईहिं परिसुद्धेहिं जम्हा साहू विसुद्धकम्ममलो भवइ अओ अविसुद्धो सुद्धो भवइत्ति, एत्थ भावविसुद्धीय अधिकारो, सेसा उच्चारितसरिसत्तिकाऊण परूविया, **सुद्धी गया**। सीसो आह- वक्कसुद्धीए किं पओयणंति ?, आयरिओ भणइ- **सुद्धेण**

वाक्य-शुध्ध्ययने शुद्धि-निक्षेपाः ॥२४१॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२७८-३३४||

दीप अनुक्रम [२९४-३५०]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ॥२४२॥

वक्केण आयारसुद्धी भवति, वक्कसुद्धीए इमा णिरुत्तगाथा भवइ, ‘ जं वक्कं वदमाणस्स० ’ ॥२९०॥ जं वक्कं वयमाणस्स साधुणो संजमे सुद्धी भवइ, ण य सच्चेण भणिएण हिंसा जायइ, ण य अत्तणो कलुसभावो भवइ, जहा किं मए एतं एवंविहं भणियं ?, तेण वक्कसुद्धी भण्णइ, किं कारणं वक्कसुद्धीए एत्तिओ आयरो कीरइ ?, आयरिओ आह-‘वयणविभत्तीकुसलस्स०’ ॥ २९१ ॥ गाथा, वयणविभत्तीए कुसलया जस्स अत्थि सो वयणविभत्तीकुसलो, तस्स वयणविभत्तीकुसलस्स, न केवलं वयणविभत्तीकुसलस्सेव, किंतु ‘संजमंमि उवट्ठितमतिस्स’ तत्थ सम्मं नाम संजमो, तंमि संजमे उवट्ठिया मती जस्स, उवट्ठिया नाम थिरीभूता, जम्हा तस्स वयणविभत्तीकुसलस्स संजमंमि य उवट्ठितमइस्स साहुणो एक्केणावि दुब्भासिएण विराधणा होज्जा, अओ वक्कसुद्धीए सव्वपयत्तेण जतितव्वंति, आह- जइ भासमाणस्स दोसो तो मोणं कायव्वं, आयरिओ भणइ- मोणमवि अणुवाएण कुव्वमाणस्स दोसो भवइ, कहं ?, ‘वयणविभत्तिअकुसलो०’ ॥ २९२ ॥ गाथा, कोयि वयणविभत्ती अकुसलो सो वओगतं बहुविधं-अणेगप्पगारं अयाणमाणो जइ दिवसं पइ न किंचि भासइ ‘तहावि न वयिगुत्तयं पत्तो’त्ति, जो भासागुणदोसविहिण्णू तस्स इमो गुणो भवइ, तंजहा- ‘ वयणविभत्तीकुसलो० ’ ॥ २९३ ॥ गाथा, जो कोइ वयणविभत्तीकुसलो वओगतं बहुविधं अणेगप्पगारं जाणमाणो जइ दिवसमणुबद्धं भासइ तहावि वयगुत्तत्तं पत्तोत्ति । इयाणिं सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं, अक्खलियं अमिलियं जहा अणुयोगद्दारे, तं च सुत्तं इमं-‘चउण्हं खलु भासाणं, परिसंखाय पन्नवं। (दो) दुण्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासिज्ज सव्वसो’(२३८)सिलोगो, चतुर, प्रातिपदिकः,‘षष्ठी शेषे’ विभक्तिर्भवति शेषे कारके, तस्या बहुवचनं आम्, षष्ठी चतुर्थीश्चेतिलुट् आगमः परगमनं चतुर्णां, भाषाणां चतुर्णां, खलुनिपातः परकीयमर्थमद्योते, (भाख्याति) खलुसद्दो

वचन-विभक्तेः फलं

॥२४२॥

⊗ अत्र सप्तमं अध्ययनस्य सूत्र (गाथा:) आरभ्यते

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ

॥२४३॥

विसेसणे, किं विसेसयइ ?, जहा चउरो भासाओ मोत्तूण अण्णो वायागोयरो णत्थित्ति एवं विसेसयति, 'भाष व्यक्तायां वाचि' धातुः, अस्य धातोः 'अः प्रत्यय।'दित्यनुवर्तमाने 'गुरोश्च हल' इति अकारः, प्रत्ययः, स्त्रीविवक्षा, वर्त्तमाने चर्श्वि, ख्याङ् आदेशः, ङ्कार उच्चारणार्थः, अनुबन्धलोपः, 'युवोरनाकौ' विति अनादेशः, अकः सवर्णे दीर्घः' (पा०) इति दीर्घत्वं, परिसंख्यानं, परिसंख्याय नाम परिजाणिऊण, ज्ञा अवबोधने धातुः, अस्य धातोः प्रपूर्वस्य षिद्भिदादिभ्यः इत्यनुवर्त्तमाने 'आतश्चोपसर्गे' इति अट्प्रत्ययः, टकार उच्चारणार्थः, 'आतो लोप इटि च क्ङिति चे' ति आकारलोपः, [अनुस्वारस्य] स्त्रीविवक्षायां ' अजाद्यतष्टापि ' ति टाप् प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः, ' अकः सवर्णे दीर्घत्वं ' प्रज्ञा बुद्धिरभिधीयते, सा जस्स अत्थि सो पण्णवं, प्रज्ञावतु इति स्थिते प्रथमैकवचनं सु, उकारः उच्चारणार्थः 'उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः' (पा. ७-१-१०) इति नुम्, मकार उच्चारणार्थः, ' नश्चापदान्तस्य झली ' (पा. ८-३-२६) त्यनुस्वारः, अनुस्वारस्य यपि परसवर्णः परगमनं च ' हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हलि'ति सुलोपः, 'संयोगान्तस्य लोपः' (पा. ८-२-२३) ' नोपधाया ' इति (पा. ६-४-७) दीर्घत्वं स प्रज्ञावान्, तेन बुद्धिमता, एताओ चत्तारि भासाओ य परिगणेऊण दोण्हं, द्वि सर्वनाम द्विचनाभिधायी ' कर्तृकरणयोस्तृतीये' ति (पा. २-३-१८) तृतीया विभक्तिः, तस्या द्विचनं स्यात्, ' त्यदाद्यामिति (त्यदादीनामः पा. १-२-१०२) इकारस्य अकारः ' सुपि चे ' ति (पा० ७-३-१०२) दीर्घत्वं, द्वाभ्यां, ' अय वय नय तय गतौ ' नय धातुः, तस्य धातोः विपूर्वस्य 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेणे'ति (पा० ३-३-११८) घप्रत्ययः अनुबन्धलोपः, विनयनं इति विनयः, दोण्हं विनयं ' सिक्खेज्ज ' त्ति 'शक्ल शक्तौ' धातुः, अस्य ' धातोः 'कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां ' (पा. ३-१-३) सन् प्रत्ययः, शक्तुमि-

भाषाधिकारः

॥२४३॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२७८-३३४||

दीप अनुक्रम [२९४-३५०]

च्छतीत्येवं विगृह्य सनः अनुबन्धलोपः आर्द्धधातुकस्येड्वलादि ' रिति (पा. ७-२-३५) इट् प्राप्तः ' एकाजनुपदेशेऽनुदात्तादि'ति (पा. ७-२-१०) प्रतिषिद्धः, ' सन्यङो ' रिति (पा. ६-१-९) द्विर्वचनं, शशक अत्र लोपोऽभ्यासस्य, तिप वर्त्तमाना, 'सनि मीमाघुरभलभशकपदपदामच इस्' इति (पा. ७-४-५४) शकारस्य अकारस्य इस् आदेशो भवति, अस्य सलोपश्च, सकार उच्चारणार्थः, इको ' आदेशप्रत्यययो'रिति (पा. ९-३-५९) सकारस्य ककारः परगमनं शिक्षे इति स्थिते ' सप्तम्यधिकरणे ' इति (पा.२-३-३६) सप्तमी, तस्या एकवचनं ङि, ङकारलोप 'आद् गुण' इति (पा.६-१-८१) गुणो भवति 'एकश्च पूर्वपरयोः' एकारः, शिक्षे, दोत्ति संख्या, सा य इमा सच्चा असच्चामोसा य, एतासिं दोण्हं विणयं सिक्खेज्जा, विणयो नाम किमेताण दोण्हवि वत्तव्वं जं भासमाणो धम्मं णातिक्कमइ, एसो विणयो भण्णइ, सिक्खेज्जा नाम सव्वप्पगारेहिं उवलभिऊण दो विसुद्धाओ भासेज्जा, **'दो न भासिज्जा सव्वसो'** त्ति बितियततियाओ दोऽवि सव्वावत्थासु सव्वकालं नो भासेज्जा । इगाणिं सो विणओ भण्णइ-जा असच्चा अवत्तव्वा, असच्चामोसा सच्चा य अवत्तव्वा, सच्चामोसा अ जा मुसा । जा अ बुद्धेहिं नाइण्णा, न तं भासिज्ज पन्नवं ॥ ॥७९ ॥ ' जा अ ' इति अणिद्दिट्ठा ' **अवत्तव्वा** ' पुव्वभणिया, ण वत्तव्वा सावज्जात्ति वुत्तं भवइ, तं अवत्तव्वं मोसं सच्चामोसं च, एयाओ तिण्णिवि, चउत्थीवि जा अ बुद्धेहिं णाइण्णागहणेणं असच्चामोसावि गहिता, उक्कमकरणे मोसावि गहिता, एवं वंधानुलोमत्थं, इतरहा सच्चाए उवरिमा भाणियव्वा, गंथाणुलोमताए विभत्तिभेदो होज्जा वयणभेदो वसु(थी)पुमलिंग-भेदो व होज्जा अत्थं अमुंचंतो, जा य बुद्धेहऽणाइण्णा ण तं भासेज्ज पण्णवं, तो तासिं चउण्हं भासाणं बितियततियाओ नियमा न वत्तव्वाओ, पढमचउत्थीओ जा य बुद्देहऽणाइण्णात्ति, तत्थ ' बुद्धा ' तित्थकरगणधरादी तेहिं णो आइण्णा अणाइण्णा, अणा-

चित्रा णाम नोवदिट्ठा भासिया वा, बुद्धा हि भगवंतो सच्चं सच्चमायरंति, जहा अत्थि केइ गाहा पक्खी वा दिट्ठा?, तत्थ भण्णंति णत्थि, असच्चामोसाए य जाओ सावज्जाओ आमंतणादीणीओ ताओ अणाचिन्नाओ बुद्धाणंति, उच्चेण वा सद्देण परियट्टणं रातीए, एवमादि, जं सावज्जं ण तं बुद्धिमता भासियव्वंति, जाओ अभासणिज्जाओ ताओ भणियाओ, जाओ भणियव्वाओ ताओ भण्णंति, तं च-' **असच्चमोसं सच्चं च** ' ॥ २८० ॥ सिलोगो, असच्चमोसं सच्चं च, एतासिं अण्णतरं भासमाणो अणवज्जं अककसं च, सम्मं उपेहिया समुपेहिया, किं मए वत्तव्वमिति एवं मणसा संचितिऊणं जाहे णिस्संदिद्धं जायं जहा अणवज्जमेतमककसं च ताहे गिरं भासेज्जा पण्णवंति, आह—अणवज्जअककसाण को पतिविसेसो ?, भण्णइ-वज्जं गरहितं भण्णति, ण वज्जं अणवज्जं, अथवा वज्जं कम्मं भण्णइ, जाए भासियाए कम्मस्स आगमो भवइ सा सावज्जा, तम्हा अणवज्जं भासेज्जा, (ककसं) किसं कायं भासिया करेइ, कहं?, तस्स लोगविरुद्धं धम्मविरुद्धं च भासिऊण पच्छा तु भावेण तप्पमाणस्स किसो कायो भवइत्ति, अओ ककसा भण्णइ, अहवा जो भण्णइ तस्स तं फरुसवयणं अणुचिंतयंतस्स किसो कायो भवइत्ति ककसा, तमककसं भासिज्जत्ति । इयाणिं असच्चासच्चामोसापडिसेहणत्थं इमं भण्णइ, तं०-'एअं च अट्ठमन्नं वा०' ॥ २८१ ॥ सिलोगो, जो इयाणिं अणवज्जमककसो अत्थो भणिओ तस्स पडिवक्खभूओ सावज्जो ककसो य तेण भणिएण भणिओ चेव, तमेयं सावज्जं अककसं च अत्थं अण्णं वा एयप्पगारंति, 'ज' मिति अविसेसितस्स गहणं, तुसद्दो विसेसणे, किं विसेसयति ?, जहा जं थोवमवि थुणणादि तं च सोयारस्स अप्पियं भवइ, नामइ पाडिज्जइ, जहा नामिओ मल्लो नामिओ रुक्खो, अओ 'स भासं सच्चमोसंपि' स इति भिक्खुणो णिद्देसो, स भिक्खू ण केवलं जाओ पुव्वभणियाओ सावज्जभासाओ वज्जेज्जा, किन्तु जावि असच्चमोसा भासा तमवि धीरो

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ

||२४६||

विविहं अणेगप्पगारं वज्जए विवज्जएत्ति। इयाणिं मोसरक्खणनिमित्तं इमं भण्णइ-' **वितहंपि तहा मुत्ति०** ' ॥२८२॥ सिलोगो, वितहं नाम जं वत्थुं न तेण सभावेण अत्थि तं वितहं भण्णइ, मुत्ती सरीरं भण्णइ, तत्थ पुरिसं इत्थिणेवत्थियं इत्थिं वा पुरिसनेवत्थियं दट्ठूण जो भासइ-इमा इत्थिया गायति णच्चइ वाएइ गच्छइ, इमो वा पुरिसो गायइ णच्चइ वाएति गच्छइत्ति, अविसद्दो संभावणे, किं संभावयति ?, जहा पुरिसं जो जुवाणं वुड्ढणेवत्थं वुड्ढं भण्इ, इत्थिं वा जोव्वणत्थं वुड्ढनेवत्थियं वुड्ढितं भणइ सोवि वितहा मुत्ती भण्णइ, एयं संभावयति, '**तम्हा सो पुट्ठो पावेण**' ति, तम्हा वितहमुत्तिभासणाओ सो भासओ पुव्वामेव पुट्ठो, पच्छा ताणि अक्खराणि उच्चारियाणित्ति, जइ ताव सो पत्तभावमवि भासमाणो पावेण पुट्ठो, किं पुण जो जीवोवघाइयं मुसं वदेति?, मुसावायवज्जणाहिगारे इमं भण्णइ ' **तम्हा गच्छामो०** ॥ १८३ ॥ सिलोगो, जम्हा वेसविरुद्धमवि आलवंतस्स दोसो भवइ तम्हा साहुणा ण एगंतेण एवं भासियव्वं, जहा-'गच्छामो वक्खामो' त्ति, ' निज्झुमत्तु (च्चमत्त) णो गुरुसु य बहुवयणमविरुद्धं ' ति, अहवा न एगस्स साहुणो निक्कारणे कप्पइ गंतुं तेण बहुवयणं उवात्तामिति, तत्थ गच्छामो नाम जहा अहं अण्णं अमुकं गामं अवसस्सं गमिस्सामि एवमादि, वक्खामो नाम जहा कल्ले अमुगं वयणं भणीहामि मग्गीहामो वा, एवमादि, अमुगं वा कज्जं एवं भविस्सइ, ' **अहं वा णं करिस्सामि** ' नाम जहा कोइ किंचि तारिसं करेति सो न एवं वत्तव्वो, जहा-अच्छाहि तुम कल्ले मुहुत्ते वा करिस्सामित्ति, जहा संथारगं बज्झमाणं पासित्ता कोइ भणेज्जा--किं संथारगं वावि(बज्झसि) अहमेयं कल्ले मुहुत्ते वा बंधीहं, एवं लोगं ते करिस्सामि, वेयावच्चं ते करिस्सामि, एवमादि, ' **एसो वा णं करिस्सइ** ' णाम जहा कोयि किंचि तारिसं करेइ तं करेंतं अण्णो भणिज्जा-मा एयं तुमं करेह, एसो अमुगो कल्ले करिस्सतीति, एयाणि ण भाणितव्वाणि, किं कारणं ?,

भाषाधिकारः

||२४६||

जम्हा बहुविधा उ मुहुत्ता अहोरत्ता य भवंति । अतो–'एवमाई उ जा भासा० ॥२८४॥ सिलोगो, एवमादिगहणेण दाहामि पढीहामित्ती एवमादि, एस्सकालंमि जा संकिया भासा सा गहिया, एस्से नाम आगमिस्सतीति, एस्सकाले संकिया नाम तहा वा होज्जा वितहा वा होज्जा, ण केवलं जं संकियं तमेसकाले ण भाणियव्वं, किंतु संपयमवि जो अतीते वा काले संकिओ सोऽवि न निस्संकिओ भाणिएव्वो, तत्थ संपइकाले जहा गच्छामो वक्खामो अमुगं दव्वं अमुगस्स अत्थि कहं करोमि एवमादि, अतीतेऽवि ण निरुत्तं संभरइ, तहावि भणति-अहं तुब्भेहिं समं अमुगत्थ गओ तदा य मते इमं वयणं भणियं जेण सो परप्पवादी णट्ठे, मए तव तहा आदेसो दिण्णो तेण तवस्स फली संपत्ती जहा, एवमेतप्पगारं संकियं भासं तीताणागएसु कालेसु न भासेज्ज, तहा जावि परणिस्सिया सावि संकिया, जहा देवदत्तो इदाणिं आगमिस्सइ, इमं वा सो करिस्सइ, एवं तिसुवि कालेसु परणिस्सिया ण भाणियव्वा, कहं पुण वत्तव्वं?, जहा सो एवं भणियाइओ, ण पुण णज्जइ-किमागमिस्सइ (ण वा आगमिसइ) ? इमं काहिति न काहिति वा ? एवमाइया, एवं पव्वइयाण गिहत्थाण य सामण्णेण य भणितं, तत्थ गिहत्थाणं पुव्वभावमाणाणं कहिंचि सावज्जं(न)कहणीयं, भणियं च उवरिं-'नक्खत्तं सुमिणं जोगं'सिलोगो, कारणजाए पुण जया भणिज्ज तदा इमेणप्पगारेण, जहा-जहेत्थ निमित्तं दीसइ तहा अज्ज वासेण भवियव्वं, अमुको वा आगमिस्सइ, एवमादि, जदा पुण[अणा]गंतुकामो तदा ण निस्संकियं भाणियव्वं-जहा अहं कल्ले गमिस्सामि, किं कारणं ?, तत्थ वाघातो भवेज्जा, तओ तेसिं गिहत्थाणं एवं चित्तमुप्पज्जइ, जहा मुसावादी एसत्ति, अहवा वायगेण गणीणा वा आपुच्छिओ ताहे तेसिं गिहत्थाणं एवं चिंतया भवेज्जा, जहा एत्तिल्लगमवि एते ण जाणंति जहा वाघाओ भविस्सइ न वा भविस्सइत्ति, न कोऽवि एतेसिं णाणविसओ अत्थित्ति, एवमाइ बहवे दोसा भवंतित्तिकाऊण ससंदिद्ध-

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ.

॥२४८॥

मेव आपुच्छियव्वं, तहा वक्खामो अमुगं वा णो भविस्सइ अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सइ, एतेसु पएसु अण्णेसु य एवमादिसु, एतेसु विसेसदोसा भाणियव्वा। इयाणिं एतस्स अत्थस्स उवसंहारसुत्तं भण्णइ,'तहेव अइअंमि अ तं कालंमि०'॥२८५॥ (१ अस्या अग्रेतनाश्चाश्च स्थाने गाथायुगलमीदृशं संभाव्यते-तं तहेव अईयंमि, कालंमिऽणवधारियं। जं चण्णं संकियं वावि, एवमेवंति नो वए ॥ १ ॥ तहेवाणागयं अद्धं, जं होइ उवहारियं। निस्संकियं पडुप्पन्ने, एवमेयंति निद्दिसे ॥ २ ॥ न च वृत्तिवृद्धपुस्तकादिषु दृश्यते इदमेवं, तत्र तु 'अईअंमी' त्यादि गाथात्रयं दृश्यते) सिलोगो, 'तं तहेव' त्ति जेणप्पगारेण जहा हेट्ठा भाणियं गच्छामो वक्खामो तहप्पगारमणागयकालीयं अत्थं णो वएज्जा, 'जं चण्णं' ति जमिति अणिद्दिट्ठस्स गहणं, अण्णग्गहणेण तीयाणागयकालगहणं कयं, अणवधारियं णाम जं सव्वहा अपरिण्णायं तं अणवधारियं भवइ, तत्थ अणागतं जहा जो सव्वधा अणवधारिओ अणागओ अत्थो सो विधिणा णिमित्ताईहिं ण अप्पणो इच्छाए वत्तव्वो, जहा अमुगे काले अमुगं भविस्सइत्ति, तहा अतीतमवि अणवधारियं तहावि णो वदेज्जा, जहा परेण पुट्ठो किं तेण भाणियं ? उदाहु भणितंति वओ मे सुतं ?, तत्थ असरमाणो भणइ-ण सरामि, एवं तुमं रूवं दिट्ठं?, ण दिट्ठंति वा, तत्थ असरमाणो भणइ-ण सरामि, एवं गंधरसफासा भाणियव्वा, पडुप्पण्णेऽवि जइ कोऽवि भणेज्जा जहा सद्दो तुमे सुतो न सुओ वा ?, तत्थ स अणुवलब्भमाणं णो अप्पणो इच्छाए भासेज्जा, किंतु तत्थ एवं भाणियव्वं--जहा न विभावयामित्ति, एवं रूवं पुच्छिओ--किमेयं दीसइ ?, तत्थवि अणुवलब्भमाणो ण जाणामित्ति बूया, गंधेऽवि कस्सेस गंधोत्ति ?, (तत्थ अणुवलब्भमाणो ण जाणामित्ति, रसेऽवि कस्सेस रसत्ति, तत्थवि अणुवलब्भमाणो न जाणामित्ति, फासे) जहा अंधकारे अप्पणिज्जअन्नवत्थफरिसा आसंसिओ, केणवि पुच्छिओ,

भाषा-धिकारः

॥२४८॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ॥२४९॥

जहा- कस्स एतं वत्थं ? किं तव उदाहु ममत्ति, तत्थ सब्भावओ अयाणमाणेण वत्तव्वं, जहा-न याणामित्ति, एवं ताव अणवधारिए अत्थे भणियं । इदाणिं जो निस्संकिओ अत्थो तत्थ भण्णइ--' संकियं वा पडुप्पन्नं ' ति, जं संकियं पडुप्पन्ने काले तमवि णो भाणियव्वं जहा ' एवमेअं ' ति, पडुप्पण्णगहणेण अतीतणागएसुवि कालेसु जं संकियं तं न वत्तव्वंति । इदाणिं एतेसु कालेसु जमेगंतेण उवधारियं भवइ, तत्थ का पडिवत्ती ?, भण्णइ--'तहेवागागयं अद्धं०' ॥ सिलोगो, तहेवत्ति जहा हेट्ठा भणियं एवमणागयकालियं अण्णं वा तीतमट्ठं उवधारियं जाहे भवइ ताहे भासेज्जा-एवं एतंति, पडुप्पन्नमवि निस्संकियं जाहे भवति ताहे भणेज्जा जहा ' एवमेअं ' ति, जं पुण संकियमेव अप्पंतरितामितिकाउं ण वत्तव्वंति, आह--अवधारितनिस्संकियाणं कोई पइविसेसो?, आयरिओ भणइ-अवधारियमुवलद्धं ण सव्वप्पगारेण, निस्संकियं जं सव्वप्पगारेहिं उवलद्धं, थोवथोवाए निद्देसे णाम अतिक्कंतवट्टमाणीणमणागयं वा अत्थं हियए ठाविय दिसेज्जा । किंच--' तहेव फरुसा भासा० ' ॥ २८८ ॥ सिलोगो, जहा दोसपरिहरणनिमित्तं थोवथोवाए निद्दिसियव्वं, तहेव जा फरुसा भासा सा दोसपरिहरणनिमित्तमेव न वत्तव्वा, ' फरुसा ' णाम णेहवज्जिया, जीए भासाए भासियाए गुरुओ भूयाणुवघाओ भवइ, सा ' गुरुभूओवघाइणी ' जहा दासो एसोत्ति, सो तत्थ कुलपुत्तओत्तिकाऊण संजोगं कुलपुत्तेहिं समं करेयाइओ, तेण य साधुणा पुट्ठेणऽपुट्ठेण वा भणिओ होज्जा, ताहे सो तत्थ मारेज्जेज्ज वा, एवमादि सच्चावि भासा ण वत्तव्वा जाए भासाए पावगमो भवति, किमंग पुण मोसंति?, सो य पावगमो इहलोइओ वा होज्जा, पारलोइओ वा, तत्थ इहलोइआ ताव अयसादि दोसा भवंति, पारलोइयावि जम्ममरणादी दोसा भवंति । किं च--' तहेव काणं काणत्ति० ॥ १८९ ॥ सिलोगो, भिण्णक्खोऽवि काणो न भाणियव्वो, किमंग पुण पुप्फियक्खो

भाषा-धिकारः

॥२४९॥

केकरक्खो वा ?, पंडगो नपुंसगो भण्णइ, सो पंडगो पंडगं चेव न भाणियव्वो, तहा वाधितमवि णो रोगिणं आलावेज्जा, जहा कोढी गंडी वा एवमादि, तहा तेणमवि चोरमिति नो ब्रूयात् , तत्थ काणपंडगा अप्पत्तियादिदोसा भवेज्जा, एवमादि । ' तहेव होले गोलित्ति० ' ॥ २९० ॥ सिलोगो, आमंतणं देसीभासाए विच्छूढं भवइ, तहा साणेवसुलादीणिवि निट्ठुराणि, वसुलो भूतत्थो भण्णइ, दमगदूसिया पसिद्धा, एताणि होलादीणि पण्णवगो णो भासेज्जा, इत्थिपुरिसो अविसेसेण वत्तव्वो । इयाणिं इत्थियामंतणनिद्देसो भण्णइत्ति-'अज्जिए पज्जिए वावि०'॥२९२॥सिलोगो, अज्जिया माऊ पिऊ वा जा माता सा अज्जिया भण्णति, पज्जिता अज्जियाए माया सा पज्जिता भण्णइ, अम्मोत्ति माऊए आमंतणं, माउस्सिया जा माओ भगिणिओ, पिउस्सिया पिऊ भगिणी, धूया पसिद्धा, णत्तुगा पोत्ती भण्णइ, एयाणि अज्जियादीणि णो भासेज्जा, किं कारणं?, जम्हा एयं भणंतस्स णेहो जायइ परोप्परं, लोगो य भणेज्जा,एवं वा लोगो चिंतेज्जा,एसज्जवि लोगसन्नं ण मुयइ, चाटुकारी वा,संगो वा परोप्परं होज्जा, नियगा वा जाणेज्जा, एस खोहितुकामोत्ति, रूसेज्ज वा जहा समणाया एवं भणइ, को जाणइ-कोऽवि एसोत्ति, एवमादि दोसा भवेज्जा । किंतु 'हले हलित्ति०' ॥२९३॥ सिलोगो, 'हले हलित्ति अम्मे' त्ति एयाणिवि देसं पप्प आमंतणाणि, तत्थ वरदातडे हलेत्ति आमंतणं, लाडविसए समाणवयमण्णं वा आमंतणं जहा हलित्ति, अण्णेत्ति मरहट्ठविसए आमंतणं, दोमूलक्खरगाण चाटुवयणं अण्णेत्ति, मट्ठेति लाडाणं पतिभगिणी भण्णइ, सामिणी गोमिणिओ चाटुए वयणं, होलेत्ति आमंतणं, जहा--होलवणिओ ते पुच्छइ, सयकऊ परमेसाणो इंदो । अण्णंपि किर बारसा इंदमहसतं समतिरेकं ॥ १ ॥ एवं गोलवसुगावि महुरं सप्पिवासं आमंतणं, एतेहिं हलेहलादीहिं इत्थीतो न आलवेज्जा, किं कारणं ?, जम्हा तत्थ चटुमादिदोसा भवंति, उक्तंच--"अनिश्चिसु(त)-

मतीवर्जुमल्पमात्रमपि प्रियम्। नैतत् प्राज्ञेन वक्तव्यं, बुद्धिस्तेषां विशारदा ॥१॥" जइ पुणो कारणे अवस्सवत्तव्वं तया एवं वत्तव्वं ' नामधिज्जेण णं बूआ० ' ॥२९४॥ सिलोगो, जं तीए नामं तेण नामधिज्जेण सा इत्थी आलवियव्वा, जाहे नामं न सरेज्जा ताहे गोत्तेण आलवेज्जा, जहा कासवगोत्ते ! एवमादि, ' जहारिहं ' नाम जा वुड्ढा सा अहोत्ति वा तुज्झेति वा भाणियव्वा, जा समाणवया सा तुमंति वा वत्तव्वा, वच्छं पुणो पप्प ईसरीति वा, समाणवया ऊणा वा तहावि तुब्भोत्ति भाणियव्वा, जेणप्पगारेण लोगो आभासइ जहा भट्टा गोमिणित्ति वा एवमादि, अभिगिज्झ नाम पुव्वमेव दोसगुणे चिंतेऊण तओ पच्छा आलवेज्जा संलविज्जा वा, ईसित्ति लवणं आलवणं, संलवणं आभासणं भण्णइ, एवमादि इत्थीआमंतणनिद्देसो भणिओ । इदाणिं पुरिसामंतणनिद्देसो भण्णइ, तं--' अज्जए पज्जए वावि० ' ॥ २९५ ॥ सिलोगो, चुल्लपिता पित्तियओ भण्णइ, किंच--' हे भो हलित्ति अन्नि ' त्ति० ॥ २९६ ॥ एते सद्दा देसं पप्प आमंतणाणि भवंति, भट्टा सामिया गोमिया एते पुण आमंतणे पवदंति णिद्देसे य, तत्थ आमंतणे जहा भो भट्टी सामिया, णिद्देसे जहा भट्टी चिट्ठति, सामि चिट्ठति, गोमीओ चिट्ठंति, होले गोले वसुलादि देसं देसं पप्प आमंतणाणि भवंति, एत्थवि ते चेव बहुवयणे लाघवाइ बहवे दोसा भवंतीति नो एवमालवेज्जा, जदा पुण किंचि कारणं भवेज्जा, ताहे इमेणप्पगारेण वत्तव्वं, तं०--' नामधिज्जेण णं बूआ० ' ॥ २९७ ॥ सिलोगो, निगदसिद्धो, भणिओ पुरिसामंतणणिद्देसो । इदाणिं तिरियनिद्देसो भण्णइ, ते य तिरिया पंचविधा--एगिंदियमादि, तत्थ पंचिंदिया पहाणा, इतरेसु पुरिसित्थिविसेसो नत्थित्तिकाऊणं पंचिंदियाणं निद्देसो भण्णइ, तं०-' पंचिंदिआण पाणाणं० ' ॥ २९८ ॥ सिलोगो, सोयादी पंच इंदिया जेसिं अत्थि ते पंचिंदिया, पाणा णाम पाणत्ति वा भूयत्ति वा एगट्ठा, तेसु पंचिंदिएसु पाणेसु दूरओ अव-

त्थिएसु जइ ताव कारणं णत्थि ततो अव्वावारो चेव साहूणं, (अह पओयणं) किंचि भवइ, तं पंथं वा ण जाणइ उवदिसइ जाहे वा तेसिं पाणाणं इत्थीपुरिसविसेसे अजाणमाणो वा णो एवं वदेज्जा, जहा-एसा इत्थी अयं पुरिसोत्ति, पायसो य लोगो अविसेसियं आलवेइ, अभिहाणेण भाणियव्वं जहा गोजातियाइ चरंति कागजातिया वा हरंति, एवं महिसपसुआदिवि भाणियव्वा । आह--जति एवं तो कम्हा एगिंदियविगलिंदिएसु सइ णपुंसगभावे इत्थिणिद्देसो पुरिसनिद्देसो य दीसइ ?, तत्थ एगिंदिएसु पुढविकाए पासाणे पुरिसणिद्देसो, जा सा मट्टिया इत्थिणिद्देसो, आउकाएवि करओ पुरिसनिद्देसो उस्सा इत्थीनिद्देसो, अग्गिकाएवि अग्गी पुरिसणिद्देसो, जाला इत्थिणिद्देसो, वाउकाएवि वाओ पुरिसनिद्देसो वाउलाए इत्थिणिद्देसो, वणस्सइकाएवि पुरिसणिद्देसो जहा णग्गोहो उनिरो, इत्थिनिद्देसोऽवि जहा सिंसवा अंबिलिया पाडला एवमादि, बेइंदिएसु पुरिसणिद्देसो जहा संखो संखाणओ, इत्थिणिद्देसो जहा असुगा सिप्पा एवमादि,तेइंदिएसु पुरिसणिद्देसो जहा मक्कोडा, इत्थिणिद्देसो जहा उवचिका पिपीलिका एवमादि, चउरिंदिएसु पुरिसणिद्देसो जहा भमरो पतंगो इत्थिणिद्देसो जहा मधुकरी मच्छिया एवमादि,आयरिओ आहसइविह नपुंसगभावे जणवयसच्चेण ववहारसच्चेण य एस दोसपरिहारओ भवइत्ति, पंचिंदिएसु पुण सतिवि एवमादि जणवयसच्चादीहिं तहावि जाईओ चेव वत्तव्वा, कहं ?, गोवालादीणमचित्तिया भवेज्जा, जहा एते ण सुदिट्ठधम्मा जम्हा इत्थिपुरिसविसेसमजाणाणा एगयरनिद्देसं कुव्वंति एवमादि दोसा भवंतित्तिकाऊण पंचिंदियाण एगतरनिद्देसे एस पडिसेहो सव्वपयत्तेण कीरइत्ति, किंच'तहेव माणुसं पक्खिंव पसुं०' ॥२९९॥ सिलोगो, जहेव हिट्ठा भणिताणि अवयणिज्जाणि वयणिज्जाणि य तहा इमाणि न भाणियव्वाणि, तत्थ मनुस्सा पक्खिणो पसिद्धा, पसुगहणेण य महिसअयएलगादीणं गहणं कतं, सिरीसवगहणेण अयगरादीणं, एते

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ॥२५३॥

मणुस्साइ परिवूढकाये दट्ठूण महप्पाणा पासित्ता णो एवं वत्तव्वं, जहा-थूलो अयं मणुस्सो थूलो महिसो थूलो पक्खी थूलो अइकरो, तहा पमेइलो मणुस्सो, 'पमेइलो' नाम अतीव मेदो जस्स सो पमेइलो महिसो, एवं पक्खी अइकरो, वहणिज्जो पुरिसो वहणिज्जो महिसो, किंच-'तहेव गाओ दुज्झाओ०'॥३०१॥ सिलोगो,'तहेव' त्ति जहा हट्ठिल्लाणि अवत्तव्वाणि तहेव इमाणिवि, तत्थ गोगहणेण महिसीउट्टमादीण गहणं कतं, दोहणिज्जा दुज्झा, जहा गावीणं दोहणवेला वट्टइ, दमणीया दम्मा, दमणपयोग्गत्ति वुत्तं भवइ, गाओ जे (रहजोग्गा) रहमिव वा धावंति ते गोरहगा भण्णंति, अहवा गोयरगा य पसवसमण्णा भवंति, वाहिमा नाम जे सगडादीभरसमत्था, ते य साधू दट्ठु णो एवं भणेज्जा, जहा पत्ता एते सगडादिसु वाहेउंति, रथजोग्गा णाम अहिणवजोव्वणत्तणेण अप्पकाया, ण ताव बहुभारस्स समत्था, किन्तु संपयं रहजोग्गा एतेत्ति, तेसु इमे दोसा भवंति, तत्थ गावीसु जहा साधुणा भणियंति गावीओ दुहेज्जा, ततो अधिकरणपवत्तणादि दोसा भवंति, दम्मेसुवि साहू जाणंति एवमादि, वाहिमावि सगडादिसु सभरेसु णिजुंजिज्जा, रहजोग्गोवि रहेसु वहणिज्जो, पक्खा वहणिज्जो अइगिरो, तहा पाइगो एस मणुस्सो, पागपत्तोत्ति वुत्तं भवइ, तहा पागपायोगो आयगरो, तत्थ मणुस्सो अप्पत्तियं करेज्जा, अक्कोसेज्ज वा, लुणणडहणाणि वा करेज्जा, एवमादि, महिसादि तिरिया तस्स वयणं सोऊण मंसादीणं अट्ठाए मारेजेज्जा, न केवलमेतं धम्मविरुद्धं, किन्तु लोगविरुद्धमवि, कहं ?, तमेरिसं भासमाणं सोऊण लोगस्स चिन्तिया भवेज्जा, जहा किमेतस्स पव्वतियस्स एयारिसाए अहिद्रोहाए वयाए निसिरियाएत्ति?, जहा य पुण कारणं भवेज्जा ताहे इमेणप्पगारेण भणेज्जा, जहा- 'परिवूढात्ति णं बूआ०' ॥ ३०० ॥ सिलोगो, पओयणे उप्पण्णे परिवूढं वा उवचितदेहं वा संजातदेहं वा पाणितदेहं वा पीणितदेहं वा आलवेज्जा, तहा कस्सइ साधुणो किंचित् तारिसं

भाषा-धिकारः

॥२५३॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ॥२५४॥

वइतव्वं ताहे भण्णइ, जहा- जो एस परिवूढसरीरो एयं मग्गाहि पुच्छाहि वा, तिरिक्खजोणियस्स वा एवं मग्गाहि, अहवा एयं तिरिक्खजोणियं परिवूढं दूरओ परिवज्जत्ति, मारणादिसु णिउज्जेज्जा तओ परितावणादि दोसा पावेज्जत्तिकाउं ण एवं भासिज्जा पण्णवंति, कारणे पुण एवं भासेज्जा तं०-'जुवं गवित्ति णं बूआ०' ॥ ३०२ ॥ सिलोगो, तत्थ जो दम्मो तं जुवं गवमालवेज्जा, जुगं गवो नाम जुवाणगोणोत्ति, चउहाणगो वा, गावी तहा रसदा एसा गोणित्ति भणेज्जा, जो गोरहगो तं हु हस्समालवेज्जा, हस्सो णाम पोतलओ, जो वाहिमो तं महल्लयं भणेज्जा, जो रहजोगो तं संवहणं भणेज्जा, किंच-'तहेव गन्तुमुज्जाणं०'॥३०३॥ सिलोगो, 'तहेव' त्ति जहा हेट्ठिल्लाणि ण भाणियव्वाणि साधुणा तहा एताणिपि, गंतुं नाम गच्छिऊण, तत्थ पव्वतउज्जाणवणसंडा पसिद्धा, तंमि पव्वए तंमि उज्जाणे तंमि वा वणसंडे गंतूणं जइ रुक्खो महालयो साहू पासेज्जा, तं दट्ठूण णो एवं पण्णदे-नो भासेज्जा, जहा अलं पासादस्स एगक्खंभस्स करणाएत्ति, पसीयंति जंमि जणस्स णयणाणि पासादो भण्णइ, अलं खंभाणं एते रुक्खा, अलं तोरणकट्ठाणं एते रुक्खा, अलं पुरवरफलिहाणामेते रुक्खा. अलं दारयकट्ठाणमेते रुक्खा, अलं णावाकट्ठाण-मेते रुक्खा, अलं उदगदोणीणमेते रुक्खा, उदगदोणी अरहट्टस्स भवति, जीए उवरिं घडीओ पाणियं पाडेंति, अहवा उदगदोणी घरांगणए कट्ठमयी अप्पोदएसु देसेसु कीरइ, तत्थ मणुस्सा ण्हातंति आयमंति वा, तयो दोसा भवंतित्ति । तहा-'पीढए चंगबेरे अ०' ॥ ३०५ ॥ सिलोगो, अलं पीढगस्स एते रुक्खा होज्जा, पीढगं- भिसियादि उवेसणयं भवति, अथवा ण्हाणं पीढं, अलं चंगबेरस्स एते रुक्खा होज्जा, 'चंगबेरं' त्ति चंगबेरं कट्ठमयभायणं भण्णइ, अहवा चंगेरी वंसमयी भवति, अलं नंगलस्स एए रुक्खा होज्जा, णंगलं णाम लंगलंति वा हलंति वा एगट्ठा, अलं एते रुक्खा महयाय, महया नाम वाहेऊण बीयाणि पच्छा ताए

भाषा-धिकारः ॥२५४॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ॥२५५॥

ऊहाडिज्जंति, जंतलट्ठी पसिद्धा, णाभी सगडरहाईणं भवति, गंडिया णाम सुवण्णगारस्स भण्णइ जत्थ सुवण्णगं कुट्टेइ। किंच-'आसणं सयणं जाणं०' ॥३०६॥ सिलोगो, आसणं आसंदगादी तप्पायोगं कट्ठं एतेसु रुक्खेसु होज्जा, सयणं-पल्लंकादि तप्पाओग्गं कट्ठं एतेसु रुक्खेसु होज्जा, जाणं णाम जुग्गादि, तप्पयोगं कट्ठं एतेसु रुक्खेसु होज्जा, तहा उवस्सयपायोग्गं वा किंचि कट्ठं एतेसु रुक्खेसु होज्जा, तत्थ उवस्सयो-पडिस्सयो, अहवा उवस्सए फलिहाइ कीरइ, सव्वगं वा आसणं उवस्सयो भण्णइ, एवमादि 'भूओवघाइणिं भासं' भूयाणि उवहम्मंति जाए भासाए भासियाए सा भूतोवघाइणी भण्णइ, तं भूओवघाइणीं भासं ण भासेज्जा पण्णवंति, तत्तण्णिवासिणी वा देवया रूसेज्जा, जो वा तस्स वणस्स सामी सो वा रूसेज्जा, साहु वा (णा) एस रुक्खो पसंसिओ नियमा लक्खणविउत्तिकाऊण सो चेव साहू घेप्पेज्जा, एवमादि, रुक्खे जया आलवेज्जा ताहे इमेहिं उवाहिं, तं०-'तहेव गंतुमुज्जाणं०' ॥३०७॥ सिलोगो,'तहेव' त्ति जहा हेट्ठिल्लगाण पंडगाईणं मुसावायो भणिओ सेसं कंण्ठ्यं, सो य उवायो इमो- 'जाइमंता इमे रुक्खा०' ॥ ३०८ ॥ सिलोगो, जाइमंता नाम जाए जातीए उत्तमाए जाइमंता भण्णंति, बहवे जत्थ रुक्खप्पगारा अत्थित्ति, इमेत्ति नाम जे पच्चक्खेण दीसंति, दीहा जहा नालिएरतालमादी, वट्टा जहा असोगमाई, महालया नाम वडमादि, अहवा महसदो बाहुल्ले वट्टइ, बहूणं पक्खिसिंघाण आलया महालया, 'पयायसाला' अतीव जाताणि सालाणि जेसिं ते पयायसाला, अणेगप्पगाराणि 'विडिमा' विडिमाणि जेसिं ते विडिमा, तत्थ जे खंधओ ते साला भण्णंति, सालाहिंतो जे णिग्गया ते विडिमा भण्णंति, दरिसणिज्जा वा एते रुक्खत्ति भणेज्जा, ते य निक्कारणे न कप्पंति भासिऊण, जाहे पुण कारणं किंचि भवइ जहा साहवो पत्ता, कारणेण इमं भणेज्जा, जहा अम्हे एतेसिं जाइमंताणं हेट्ठा विस्समामो, एतेसिं

भाषा-धिकारः

॥२५५॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ॥२५६॥

वा अदूरेण पंथा गच्छइ। किंच- 'तहा फलाणि पक्काणि ॥ ३०९ ॥' सिलोगो, 'तहेव' त्ति जहा हेट्ठा भणियं, फलाणि-अंबादीणि पक्काणि दट्ठूणं णो एवं भासेज्जा-पक्काणि इमाणि फलाणित्ति, तह घाइं(पाइ)खज्जाणिवि णो वएज्जा, पाइखज्जाणि णाम जहा एताणि फलाणि बद्धट्ठियाणि संपयं कारसपलादिसु पाइऊण खाइयव्वाणीत्ति, 'वेलोइयाणि' नाम वेला-कालो, तं जा णिति वेला तेसिं उच्चिणिऊणंति, अतिपक्काणि एयाणि पडंति जइ न उच्चिणिज्जंति, टालाणि नाम अबद्धट्ठिगाणि भवंति, 'वेहिमं' नाम वेधा कीरंति तं वेहिमं, अबद्धट्ठिगाणं अंबाणं पेसियाओ कीरंति, तत्थ इमो अवायो-तण्णिस्सिया देवया कुप्पेज्जा, पक्काणि वा फलाणित्तिकाऊग कोए(रा)को तेहिं पओयणं कुज्जा, एवमादि, इमेण पुण उवाएण भणेज्जा, तं०-'असंथडा इमे अंबा०'॥३१०॥ सिलोगो, साहूणं अहावरे रुक्खेहिं कज्जे पुण पत्ते जहा तेण पंथोत्तिकाऊण ताहे अन्नस्स साहुस्स इमेण पगारेण उवदिसेज्जा, तं०-असंथडत्ति वा बहुणिव्वडिमाफलत्ति वा बहुसंभूतत्ति भूतरूवत्ति वा, तत्थ असंथडा अतीवकारणे(भारेण)ण संथरंति, फलाणि धारेउं न तरंतित्ति वुत्तं भवइ, 'इमे' त्ति जे इमे लोगपच्चक्खा, अंबगहणं पहाणा लोगसंमता य (त्ति) काऊण अतो तेसिं गहणं कयंति, बहूणि निव्वडियफलाणि, 'बहुसंभूया' णाम बहुणिप्फन्नफलाणि, 'भूतरूवा' णाम फलगुणोववेया, पुणसद्दो विसेसणे, किं विसेसयति?, जहा एतेसिमण्णतरेण परियायसद्देण कारणे भासेज्जा एवं विसेसयति। किंच-'तहेवोसहिओ पक्काओ०' ॥ ३११ ॥ सिलोगो, 'तहा' णाम जहा हेट्ठा भणियं, तत्थ सालिव्रीहिमादियातो ताओ पक्काओ नीलियाओ वा णो भणेज्जा, छविग्गहणेण णिप्पवालिसेंदगादीणं सिंगातो छविमंताओ णो भणेज्जा, लुणणपायोग्गाओ लाइमा, भुज्जण-पायोग्गाओ भुज्जिमा, पिहुखज्जाओ नाम जवगोधूमादीणं पिहुगा कीरंति ताधे खज्जंति, एताए अविधीए भणमाणस्स इमे

भाषा-धिकारः

॥२५६॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ

||२५७||

दोसा भवंति, तं०- पक्कत्तिकाऊण भणेज्जा समयो, साहुणा भणियाओत्तिकाऊण थालीपागं करेज्जा, एवमादि दोसा भवंति, इमेण पगारेण ओसहिओ आलवेज्जा, तंजहा- 'विरूढा बहुसंभूया०' ॥ ३१२ ॥ सिलोगो, 'विरूढा' णाम जाता, बहुसंभूया णाम निप्पन्ना, थिरा णाम निब्भयीभूया, उवगया यत्ति उस्सिया भण्णंति, गब्भिया णाम जासिं ण ताव सीसयं निप्फिडइत्ति, निप्फाडिएसु पसूताओ भण्णंति, संसारातो नाम सह सारेण संसारातो, सतंदुलाओत्ति वुत्तं भवइ, एवमादीहिं नामेहिं वत्तव्वा-ओत्ति । किंच 'तहेव संखडिं नच्चा०' सिलोगो, टहासद्दो पुव्वभणिओ, एवसद्दो पायपूरणे, छण्हं जीवनिकायाणं आउयाणि संखंडिज्जंति जीए सा संखडी भण्णइ, तं संखडिं किर णाऊण साहुणा किं करणिज्जं ?, ण एवं वत्तव्वं- जहा किच्चमेयं जं पि-तीण देवयाण य अट्ठाए दिज्जइ, करणिज्जमेयं जं पियकारियं देवकारियं वा किज्जइ, एवमादि, पणियट्ठे तेण उ भण्णइ, तं०- पणियट्ठं वज्झं णीणिज्जमाणं दट्ठूणं णो एवं वएज्जा, जहा एसो वज्झोत्ति, किं कारणं ?, तस्स एवं भणियस्स अप्पत्तियं होज्जा, निस्सासी भवेज्जा वा जाव एतेसिं चोरग्गाहाणं एवं चिन्तायां भवेज्जा जहा एस साधुणा वज्झो भणिओ, अवस्सं पत्ता-वराहोत्तिकाऊण मारिज्जा। 'सुतित्थित्ति अ आवगा' आवगाओ- नदीओ भण्णंति, तत्थ गिरिनदं वा सुक्कगड्डा वा जइ पारिपहिया पुच्छेज्जा जहा किं सुतित्था एसा नदी विसमतित्था वत्ति ?, तत्थ न वत्तव्वयं जहा एता ण सुतित्था विसम-तित्था, कम्हा ?, तत्थ अधिगरणमादयो बहवे दोसा भवंति, कज्जे पुण संपत्ते संखडियमाईण इमेण कारणेण भणेज्जा, तं०- 'संखडिं संखडिं बूआ०' ॥ ३१४ ॥ सिलोगो, जा संखडी सा कारणे संखडी चेव वत्तव्वा, जहा सा बहुआवाया संखडी, मा तत्थ साधवो गच्छंतु एवमादि, तहा चोरोवि वज्झो णीणिज्जमाणो पणियट्ठो भणियव्वो, जहा सो वा तेणो अण्णो वा कोइ-

भाषा-धिकारः

||२५७||

भणिए एवं ण विभासइ, किमेस भणइत्ति?, सो पुण सेहस्स वा तं दाएज्जा, जहा एस पावकारिणो विपाकोत्ति, अहवा एतेण पहेण पणियट्ठो णिज्जइ, जणाउले एस पहो ण एतेण गंतव्वं एवमादि, जत्थ आवगाणं तित्थाणि पुच्छिज्जंति तत्थ भाणितव्वं- जहा बहुसमाणित्ति, काणि समाणि तित्थाणि काणि विसमाणित्ति भाणियव्वाणि तहा स दूरओ परिवज्जति, मा एयासु णदिसु णिउज्जेज्जा, तओ परितावणादि दोसा हवेज्जत्तिकाऊण न एवं भासिज्जा पण्णवंति, कारणे पुण एवं भासेज्जा, 'तहा नईओ पुण्णाओ' सिलोगो,(३१५)तहासद्दो पुव्वभणिओ, नदीओ पसिद्धाओ, पूरागयाओ पुन्नाओ, काएण तरिज्जंतित्ति कायतिज्जाओ, अण्णे पुण एवं पढंति, जहा-कायपेज्जंति नो वदे, काआ तडत्था पिबंतीति कायपेज्जाओ, नावाहिं तारिमात्ति नावातारिमा, तडत्थिएहिं पाणीहिं पिज्जतीति पाणिपिज्जाओ, तत्थ इमे दोसा, तं०- नदीओ पुन्नाओत्ति सोऊण कारणेहिं पधाइया गिहित्था णियत्तेज्जा तओ कट्ठादीणं वा उदीरणं कुज्जा काएण, एया तारिमाओत्ति सोऊण णियत्तिउकामावि न नियत्तेज्जा, तंजहा- 'बहुवाहडा अगाहा०' ॥ ३१६ ॥ सिलोगो, 'बहुवाहडा' णाम पायं सोभणियातो भण्णंति, बहु अगाहाओ वा भणेज्जा, बहुसलिलाओ भणेज्जा, बहुउप्पिलोदगा वा भणेज्जा, 'बहुउप्पिलोदगा' नाम जासिं परनदीहिं उप्पीलियाणि उदगाणि, अहवा बहुउप्पिलोदओ जासिं अइभरियत्तणेण अण्णओ पाणियं वच्चइ, बहु वित्थरियं जासु नदीसु उदगं ताओ बहुवित्थडो- दगाओ भन्नंति, एवं पन्नवं भासेज्जा, जइ पुण भणइ-न याणामि ताहे उड्डाहं करेंति, पउसेज्ज वा जहा मुसावादी एसोत्ति, इदाणिं चेव उत्तिण्णो तहवि भणइ न जाणामित्ति एवमाइ बहवे दोसा भवंतीति, तम्हा बहुवाहडा भणेज्जा, तमवि तुरियमवक्क- मंतो भणेज्जा, जहा ण विभावेइ किमत्ति एस भणतित्ति। किंच- 'तहेव सावज्जं जोगं०' ॥ ३१७ ॥ सिलोगो, तहसद्दो

पुव्वभणिओ, एवसद्दो पादपूरणे, सह वज्जेणं सावज्जो, जोगं- आरंभो भण्णइ, जहा मम अमुगो कम्मजोगो कायव्वोत्ति, तं सावज्जं जोगं परस्स अट्ठाए णिट्ठियं सावज्जाए भासाए णालवेज्जा, किमंग पुणो अट्ठाए अप्पणोत्ति, णिट्ठियं णाम परिसमत्तं, ण केवलं परिसमत्तमेव सावज्जाए भासाए नालवेज्जा, किन्तु कीरमाणमवि न सावज्जाए, सुट्ठु लट्ठी कोवो चिक्कदोरिया एवमादि, एत्थ अणुमोदणादि दोसा भवंति, एयप्पगारं सावज्जं वज्जेयव्वं साहुणा इति, अणवज्जे पुण आलवेज्जा, तत्थ सुकडं जहा सुट्ठु साहुणो लोयो कडो, सुट्ठु भायणं लेहियं एवमादि, सुपक्कं जहा सुविपक्कं बंभचारिणो बंभचेरफलंति, एवमादि, सुछिण्णं जहा सुछिण्णा णेहपासा इमेण साहुणा एवमादि, सुहडे जहा सुहरितो सण्णायगादीहिं उवसिक्खिज्जमाणो सेहोत्ति एवमादि, सुमए जहा सुमतं तस्स अमुकणामस्स साधुस्स पंडितमरणेणंति एवमादि, सुनिट्ठितं णाम जहा सुणिट्ठितं एतस्स साहुस्स कम्ममट्ठविधंति एवमादि, सुलट्ठं नाम सुलट्ठं कहं कथयंतीत्ति एवमादि, किंच, एवं वत्तव्वं- 'पयत्तपक्कत्ति व पक्कमालवे०' ॥ ३१९ ॥ वृत्तं, गिलाणणिमित्तमेवमालवेज्जा, जहा- जं तुब्भं पयत्तपक्कं तेल्लं तं दलयह एवमादि, तत्थ छिन्नमवि कारणेण एवं भणेज्जा, सो य अत्थो भणिओ ण य अणुमइदोसो अप्पत्तियदोसो वा भवति, पयत्तयं जहा पयत्तलट्ठी य संभारघया दीयंति, अहवा एवमेवं अत्थं 'कम्महेतुअं'ति भणेज्जा, कम्महेउयं नाम सिक्खापुव्वगंति वुत्तं भवति, 'पहारगाढत्ति य गाढमालवे' त्ति जो गाढपहारीकओ सो गाढप्पहारित्ति भाणियव्वो, इतरहा अप्पत्तियमादि दोसा भवंति । किंच- 'सव्वुक्कसं परग्घं वा०' ॥ ३२० ॥ सिलोगो, तत्थ पणिधीए अण्णत्थ वा विकिज्जमाणे जति कोइ साहुं आपुच्छेज्जा, जहा- एतेसिं कतरं सुंदरंति?, तत्थ न वत्तव्वं-इमं सुंदरंति, 'परग्घं' नाम जहा एतस्स को अग्घोत्ति पुच्छिए ण वत्तव्वं, जहा एयस्स एयं मोल्लं

पत्तो, जहा एयस्स परं कवाडियंपि ण लब्भइ, एय (सो) परमो अग्घोत्ति 'अतुलं नत्थि एरिसं' ति ण एतेहिंतो अन्नं विसिट्ठतरंति एयं गिण्हाहि, अहवा विक्किणमाणं ण भणेज्जा-ण अण्णत्थ विक्किणमाणो तुमं मोल्लं लब्भसि, अविक्किये नाम असक्कं, जहा कइएण विक्कायएण वा पुच्छिओ इमस्स मोल्लं करेहित्ति, ताहे भणियव्वं- को एतस्स मोल्लं करेउं समत्थोत्ति, एवं अविक्किये भण्णइ, अवत्तव्वं नाम जहा को एतस्स गुणे समत्थो वोत्तुं ?, एवंविहमवत्तव्वं भण्णइ, अचिअत्तं णाम ण एतस्स गुणा अम्हारिसेहिं पागएहिं चिंतिज्जंति, एताणि सव्वुक्कसादीणि अधिगरणमंतराइयादीदोसवज्जणट्ठा णो वएज्जा, किंच- 'सव्वमेअं वइस्सामि०' ॥ ३२१ ॥ सिलोगो, जहा कोइ कत्थइ गच्छमाणो केणइ भणेज्जा, जहा-मम वयणेण देवदत्तं इमं भणेज्जासित्ति, तत्थ न वत्तव्वं, जहा-सव्वमेयं वइस्सामित्ति, किं कारणं ?, जेण सो सव्वं सरवंजणमधुरकडुयादीहिं गुणेहिं उववेयं तहेव अविसेसियं सव्वं भणिउं ण समत्थोत्ति, तहा सव्वमेतंति णो वएज्जा, जहा सव्वमेतं मम वयणेण अमुकं नामधेयं भणिज्जासित्ति एवमादि भासं णो वदेज्जा, अणुवीयि सव्वं नाम जहा कोइ पुच्छेज्जा, ते सव्वे साधवो गता, तहा अणुवीइ चिंतिय भाणियव्वं, जहा सव्वे गता अगता वा, सव्वे नाम सव्वेसु कारणेसु सव्वं कालं अणुचिंतेऊण बुद्धिमंतेण भासियव्वं, 'सुक्कीअं वा सुविक्कीअं०' ॥ ३२२ ॥ सिलोगो, ह जति कोयि कइओ भणेज्जा, जहा- इमं मए एत्तिएण मोल्लेण गहियं, किं सुगहियं दुग्गहियंति ?, तत्थ न एवं वत्तव्वं, जहा-जति एएण मोल्लेण लद्धं तो सुक्कीयंति, जहा अक्केज्जंति कीयं न एयं किंचिवि अग्घइ, अहो मुद्धोऽसि. एवंपि णो वएज्जा, जहा किज्जमेयंति एवमादि णो भासेज्जा, जहा अहो सारं भंडं लद्धं ते, काया सुहोऽसि अज्ज सइतोत्ति, किंच इमं गिण्ह इमं मुंच इमं अप्पीहात्ति एयं सुवाहित्ति पणियमेवं नो वदेज्जा, पुच्छेज्जा ताहे इमो उवाओ

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२७८-३३४||

दीप अनुक्रम [२९४-३५०]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ॥२६१॥

'अप्पग्घे वा महग्घे वा०' ॥ ३२३ ॥ सिलोगो, अप्पग्घं बहुअग्घं भण्णइ बहुअग्घं अप्पग्घं भण्णइ, तं तु किणमाणो वा एयं मन्नेज्जा, तओ एयारिसे पणियट्ठे समुप्पण्णे जमणवज्जं तं साहुणा वियाकरेयव्वं, अहवा सव्वमेयं पण्णं णो वियाकरेयव्वं, अहवा सव्वमेयं पण्णं अप्पग्घं किज्जमाणं विकिज्जमाणं पणियट्ठे समुप्पण्णे अणवज्जं भवति, तंजहा- नाहं भंडमोल्लविसेसं जाणामि, न वा इहं देमि, कयविक्कयविरयाणं किं अम्हाण एरिसेण वा परेणंति ?, किंच- 'तहेवासंजयं धीरो०' ॥ ३२४ ॥ सिलोगो, तहासद्दो पुव्वभणिओ, एवसद्दो पायपूरणे, ण संजतो असंजतो, धीरो पसिद्धो, तेण धीरादिगुणजुत्तेण साहुणा सो असंजओ न एवं वत्तव्वो, जहा एत्थ आस नाम उवेहाहि, तहा इत्थं एहि, इमं वा करेहि, एत्थ वा सुवयाहि, चिट्ठाहि वा किंचिकालं पच्छा गमिस्ससि, किंची अच्छाहि इय वयाहित्ति णो एवं भासेज्जा पण्णवं, किं कारणं ?, अस्संजतो सव्वतो दोसमावहति चिट्ठंतो तत्तायगोलो, जहा तत्तायगोलो जओ छिवइ ततो डहइ तहा असंजओवि सुयमाणोऽवि णो जीवाणं अणुवरोधकारओ भवति, किं पुण जागरमाणोत्ति। किंच- 'बहवे इमे असाहू०' ॥ ३२५ ॥ सिलोगो, तत्थ साधू ताव चउव्विधो भवइ, तंजहा- णामसाहू ठवणसाहू दव्वसाहू भावसाहू य, नामठवणाओ गयाओ, दव्वसाहू घडपडाईणि साधयंतो दव्वसाहू भण्णइ, तहा बोडियणिण्हवगादि दव्वसाधू, जे णिव्वाणसाहए जोगे साधयंति ते भावसाधवो भण्णंति, तत्थ बहवे नाम बहवेत्ति वा अणेगेत्ति वा एगट्ठा, इमे णाम जे इमे इदाणिं पच्चक्खा आजीवगादि असाधवो भवंति, तमेवंविधं साहुं साहुं णालवेज्जा, सो य भावसाधू इमेण सुत्तेणेव भण्णइ, तंजहा- 'नाणदंसणसंपन्नं०' सिलोगो, नाणदंसणसंपन्नं संजमभावेसु जो रतो सो सुसाधू भण्णइ 'एवं गुणसमाउत्तं' ति जो एतेहिं णाणादीहिं गुणेहिं समाउत्तो भवति, समाउत्तो नाम सोभणेण

भाषा-धिकारः

॥२६१॥

श्रीदश-वैकालिक-चूर्णौ.

॥२६२॥

पगारेण जुत्तो, तमेरिसं संजयं साधुमालवेज्जा, किंच- 'देवाणं मणुआणं च०' ॥ ३२७ ॥ सिलोगो, तत्थ देवाणं देवासुरसंगामो मणुयाणं जहा रायादीणं, तिरियाणं जहा गोमहिसकुक्कडलावगादीणं, एतेसिं वुग्गहे समुप्पण्णे, तत्थ वुग्गहो णाम वुग्गहोत्ति वा विवादोत्ति वा कलहोत्ति वा एगट्ठा, एयंमि वुग्गहे वट्टमाणे ण वट्टइ एवं वोत्तुं-देवा जयंतु मा वा, एवं मणुस्सेसुवि अमुयो राया जयतु मा वा एवमादि, तहा तिरिएसु एसो महिसो जयतु मा वा एवमादि, तत्थ अमुयाणं जतो होउत्ति भणिए अणुमइए दोसो भवति, तप्पक्खिओ वा पओसमावज्जेज्जा, अओ एरिसं भासं णो वएज्जा, किंच- 'वाओ वुट्ठं च सीउण्हं०' ॥३२८॥ सिलोगो, तत्थ पमत्तो भणेज्जा, जहा-जइ वाओ वाएज्जा तो सुंदरं होउत्ति णो वदेज्जा, किं कारणं ?, जम्हा अणिट्ठवाओ णाम सोवघाओ होज्जा, रुक्खादिभंगो वा होज्जा, एवमाई दोसा भवंति, वुट्ठेणवि पिपीलिगादि विणासेज्जा, उण्हजोणिओ वा वणप्फइ कुहेज्जा एवमादि, सीएण तिरियावि मणुयावि पायसो परितावेज्जंति, अगणिं वा उज्जालेज्जा एवमाई, उण्हेणवि तिरियमणुयाणं परितावणादि दोसा भवंति, खेमेऽवि चोरसेवगादीणं अंतराइयदोसा भवंति, एते य निब्भया तेसु कम्मेसु पवत्तभाणा एगिंदियाईणं भयङ्करा भवंति, घातेऽवि संनिचयकारिणो वाणियगा पीलिज्जंति, ण य एताणि तस्स वयणेण भवंति, मोत्तूणं अतिसयपयत्ते, इतरस्स केवलं भणंतस्सवि दोसा भवंति। किंच- 'तहेव मेहं व नहं व माणवं०' ॥ ३२९ ॥ सिलोगो, तहासद्दो पुव्वभणिओ, एवसद्दो पायपूरणे, मेहं णभं माणवं एतेसिं तिण्हवि अण्णतरं नो अदेवं देवत्ते आलवेज्जा, तत्थ मेहं समुप्पन्नं दट्ठूण ण एवं वदेज्जा-समुण्णतो देवो परिवसइ वा देवाइ, एवमादी, णभं आगासं, तम्मि ण एवमालवेज्जा, तहावि रायादीवि माणवो ण देवो वत्तव्वो, किं कारणं ?, तत्थ मिच्छत्तथिरीकरादि दोसा भवंति, तत्थ मेहमेवं आलवेज्जा, समुच्छिओ

भाषा-धिकारः

॥२६२॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२७८-३३४||

दीप अनुक्रम [२९४-३५०]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ॥२६३॥

मेहो नियतं पयोदो, पयोदो णाम पयं-पाणीयं भण्णति तं पओ ददातीति पयोदो, अहवा वुट्ठे बलाहएत्ति वएज्जा, पवरासिओ वा बलाहगोत्ति वएज्जा, आह- कहं पुण नभं वत्तव्वं ?, भण्णइ-'अंतलिक्खत्ति णं बूआ०' ॥ ३३० ॥ सिलोगो, तत्थ नभं अंतलिक्खंति वा वदेज्जा, गुज्झाणुचरितंति वा तं, अंतियं अंतलिक्खं अब्भियं 'गुज्झणुचरियं' ति, मेहोवि अंतरिक्खो भण्णइ, गुज्झगाणुचरिओ भण्णइ, महामाणवरायादि दट्ठूण रिद्धिमंतमालवेज्जा, भणियाणि अवयणिज्जाणि वयणिज्जाणि य। सव्वसंखेवो इमो, तंजहा-'तहेव सावज्जणुमोअणीगिरा०' ॥ ३३१ ॥ वृत्तं, 'तहेव' त्ति जहा हेट्ठिल्लाणि अवयणिज्जाणि परिहरियव्वाणि तहा काइ सावज्जणुमोअणी भासा ण भाणियव्वा, इह सा सव्वपयत्तेण वज्जेयव्वा, जहा सुट्ठु हडो गमो, सुट्ठु सेणा णिघातिया एवमादि, ओहारिणी णाम संकिया, भणियं- से नूणं भंते ! मन्नामीति ओहारिणी भासा ?, आलावगो, परोवघातिणी नाम जीवोवघातसहिता, जीवए वा परो हालिज्जइ सा परोवघाइणी ॥ किंच- 'से कोह लोह भय हास माणवो, न हासमाणो' तत्थ सेत्ति साहुस्स णिद्देसो, तत्थ कोहो आदी लोभो अंते, आईअंतग्गहणेण मज्झे वट्टमाणा माणमाया गहिया, भयहास-गहणेणं पेज्जादिदोसा गहिता, माणवा इति मणुस्सजातीए एस साहुधम्मोत्तिकाऊण मणुस्सामंतणं कयं, जहा हे माणवा ! अवि हसंतोऽवि मा अभासं भासेज्जा, किं पुण कोहादीहिंति, इयाणिं वक्कसुद्धीय फलं भण्णइ,तंजहा-'सवक्कसुद्धिं समुपेहिआ मुणी०' ॥ ३३२ ॥ सिलोगो, 'सवक्कसुद्धिं' ति स इति साधुणो णिद्देसो, जहा कोइ समिक्खू, एवं विविधं वक्कसुद्धी, सम्मं उवेहिया समुपेहिया, अहवा सकारो सोहणअत्थे वट्टइ, सोहणं वक्कसुद्धिसमं उवेहिया, अहवा सगारो अत्तणो णिद्देसे वट्टइ, जहा अत्तणो वक्कसुद्धि समं उवेहिया समुपेहिया, 'मुणी' नाम मुणित्ति वा णाणित्ति वा एगट्ठा, जा य गिरा दुट्ठा हेट्ठा भणिया,

भाषा-धिकारः

॥२६३॥

दुट्ठा नाम विरुद्धा, तहेव वक्कसुद्धिं जाणमाणेण दुट्ठं गिरं वज्जयंतेण सता मितं अदुट्ठं अणुवीइ भासियव्वंति, मितं दुविधंति-सद्दओ परिमाणओ य, तत्थ सद्दओ अणुच्चं उच्चारिज्जमाणं मितं भवइ, परिमाणओ कारियं माणमितं भवइ, अदुट्ठं नाम देसकालोवक्कादी, अणुवीइ णाम पुव्विं बुद्धीए अणुचिंतिय भासियव्वंति, स एवं भासमाणो 'सयाण मज्झे लहई पसंसण'-मिति तत्थ सया णाम जे गुणदोसविहण्णू तेसिं सयाण मज्झे पसंसणं लब्भइत्ति, जहा अहो सुसिलिट्ठसुअधीयवयणोत्ति, एवमाइ, जम्हा य पसंसणमादी गुणा लब्भंति अतो 'भासाइ दोसे य गुणे य०' ॥३३३॥ जम्हा भासदोसगुणण्णे साधू, तीसे भासाए जा दुट्ठा भासा तां विवज्जेज्जा, सा पुढविमादिएसु छसु काएसु, संजए, समाणभावे अवत्थिए सामणिए, सदा सव्वकालं जए, स एवंगुणसमाउत्ते, वदेज्जा 'बुद्धे हिअमाणुलोमिअं' तत्थ हितं नाम अपीडाकरं, अणुलोमियं नामाकडुगं फरिसादि-दोसवज्जियं, अहवा अणुलोमियं नाम तं भासं भासेज्जा जं भासमाणो अभासओ लब्भइ, एस ताव इह लोए पसंसणादी गुणो भणिओ । इयाणिं इहलोइओ पारलोइओ य भण्णइ- 'परिक्खभासी०' ॥ ३३४ ॥ वृत्तं, 'परिज्जभासी' नाम परिज्ज-भासित्ति वा परिक्खभासित्ति वा एगट्ठा, सुट्ठु सम्मं सोतादीणि इंदियाणि अहियाणि जस्स सो सुसमाहिइंदिओ, चउरो कोहादिकसाया अवगता जस्स उवसंता वा सो चउक्कसायावगए, 'अणिस्सिओ' नाम न निस्सिए अणिस्सिए, सव्वपडिबंध-विप्पमुक्केत्ति वुत्तं भवति, स एवंविहो साहू 'निहणिऊण धुन्नमलं पुरेकडं' ति, तत्थ धुण्णंति वा पावंति वा एगट्ठा, धुण्ण-मेव मलो, पुव्विं कयं पुरेकयं, धुणिऊण इमं लोगं आराहइ, न केवलं इमं लोगं आराहयति, परलोगाराहणाओ मोक्खो, तमवि आराहयति, सावसेसकम्माणो पुण देवलोगसुकुलपच्चायातिं लद्धूण पच्छा सिज्झंति । त्ति बेमि नाम तीर्थंकरोपदेशाद् ब्रवीमि,

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||२७८-३३४||

दीप अनुक्रम [२९४-३५०]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ८ आचार प्रणिधौ ॥२६५॥

न स्वाभिप्रायेणेति । इदाणिं नया-'णायंमि गिण्हियव्वे०'गाहा, 'सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं निसामित्ता०'गाहा, पूर्ववद् ॥

॥ वाक्यशुद्धयध्ययनचूर्णिः समत्ता ॥

एवं सो मासासमिओ धम्मं कहेइ, तो तस्स सोऊण जइ कोई पव्वएज्जा ताहे तस्स इमं आयारपणिधिं उवइसेज्जा, अहवा तेण धम्मं कहयंतेण अपसत्थपणिधाणं वज्जयंतेण पसत्थेण आयारपणिधाणेण कहेयव्वंति, एतेणभिसंबंधेणागतस्स अज्झयणस्स चत्तारि अणुयोगदाराणि वत्तव्वाणि, जहा आवस्सए, णवरं इह णामनिप्फन्नो भण्णइ, सो य णामणिप्फण्णो दुविधो, तं०-आयारो पणिही य, तत्थ पढमं आयारो भण्णइ—' सो पुव्विं उद्दिट्ठो० ' ॥ २९५ ॥ गाथापुव्वद्धं, जहा जो खुड्डियायारए भणिओ एत्थ सो चेव अहीणाइरित्तो भवतित्ति। इयाणिं पणिधी भण्णइ, सो य चउव्विहो, तंजहा--णामपणिही ठवण०दव्व०भावपणिहीत्ति, णामठवणाओ गताओ, दव्वपणिही य इमेण गाथापच्छद्धेण भण्णइ--' दुविधो य होइ पणिधी ' सो इमो, तं०—'दव्वे निहाणमाई० ' ॥ २९६ ॥ गाथा, पुव्वद्धं, दव्वपणिधी जहा णिहाणगं, पणिहि णाम निक्खिविर्यंति वा पणिहाणंति वा एगट्ठा, आदिगहणेण अन्नाणिवि गहियाणि मायापक्खित्ताणि दव्वाणि, दव्वपणिधी जहा पुरिसो आयापच्छादणनिमित्तं इत्थिवेसं काऊण णासेज्ज वा पविसेज्ज वा, जहा मायाकारो चक्खुमोहणं काऊण सव्वमेक्कतरं व पक्खिवइ एवमाइ दव्वपणिधी, भावे इंदिअनोइंदिअ पच्छद्धं, भावपणिधी दुविधो, तंजहा--इंदियपणिधी नोइंदियपणिधी य, इंदियपणिधी दुविधो-पसत्थो अप्पसत्थो य, तत्थ पसत्थो इंदियपणिधी इमो--' सद्देसु अ रूवेसु अ० ' ॥ २९७ ॥ गाथा, सोयचक्खुघाणजीहाफासाणं पंचण्हं

इन्द्रियादि-प्रणिधिः

॥२६५॥

अध्ययनं -७- परिसमाप्तं

अध्ययनं -८- 'आचार प्रणिधि' आरभ्यते

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ८ आचार प्रणिधौ

॥२६६॥

इंदियाणं सद्दरूवरसगंधफासा पंच विसया, तेसु सद्दादिसु विसएसु मणुन्नामणुन्नेसु जो रागद्दोसविणिग्गहो सो पसत्थो इंदिय-पणिधी, आह–को दोसो अपसत्थइंदियपणिधिस्स ?, आयरिओ भणइ—' **सोइंदिअरस्सोहि०** ' ॥ २९८ ॥ गाथा, सद्दंमि अतीव मुच्छिओ गिद्धो जीवो सोइंदियरस्सीहिं सद्दगुणसमुट्ठिए दोसे आययइत्ति, तत्थ सद्दो चेव गुणो सद्दगुणो, गुणो नाम गुणोत्ति वा पज्जतोत्ति वा एगट्ठा, सद्दो जीवस्स इंदियगुणो तेण सद्दगुणेण मारणादि बहवे दोसा समुट्ठाविज्जंति, ते '**आदिअंति**'-त्ति आदियंति नाम आदियंतित्ति वा गेण्हंतित्ति वा तेसिं दोसाणं आयरणंति वा एगट्ठा, न केवलं सद्दगुणमुच्छिओ दोसाय-तणं भवइ, किंच--' जहा एसो सद्देसु० ॥ २९९ ॥ गाथा, जहा सोइंदियरज्जूहिं पावमादियइ तहा सेसेहिं चउहिवि इंदिएहिं अप्पणो जे दोसा तेसु समुट्ठिते आदियंतित्ति, किंच- '**जस्स पुण०**' ॥ ३०० ॥ गाथा, जस्स पुण तवमवि चरंतस्स दुप्पणिधिया इंदिया भवंति सो जहा सारही तुरंगेहिं अन्नओ असाहीणेहिं हीरइ, **असाहीणेहिं** णाम दुद्दंतेहिं, तहा सोऽवि इंदियतुरंगेहिं आ-इंछिया मोक्खसुहाओ अन्नओ हीरतित्ति । इयाणिं णोइंदियपणिधी भण्णति- '**कोहं माणं माय लोहं च०**' ॥ ३०१ ॥ गाहा, एताणि चउरो संसारकारणाणि महब्भयाणि जाणिऊण जो सुद्धप्पा ताणि निरुंभइ, तत्थ जा सा सम्मं णिरुंभणकिरिया सो णोइंदियपणिधी, आह- कहं पुण कोहादीणि चत्तारि कारणाणि महब्भयाणित्ति ?, आयरिओ भणइ- अणंताणुबंधीणं कोहमाण-मायालोभाणं उदएणं भवसिद्धिओऽवि सम्मत्तं न लहइ, अपच्चक्खाणकसायाण उदएणं देसविरतिं न लहइ, पच्चक्खाणोदएणं सव्वविरतिं न लभइ, संजलणकसायाणोदएणं अहक्खायचरित्तलाभो ण भवइ, अओ महब्भयाणि, एतेणप्पगारेण कोहादीहिं निरुंभियव्वा, तं०- कोहोदयनिरोधो उदयपत्तस्स वा कोधस्स विफलीकरणं, एवं जाव लोभोदयनिरोधो उदयपत्तस्स वा लोभस्स

इन्द्रियादि-प्रणिधिः

॥२६६॥

विफलीकरणंति, तेसिं च कसायाणं दुप्पणिहियाण दोसो भण्णइ- 'जस्सवि अ दुप्पणिहिआ०' ॥ ३०२ ॥ गाथा, जो तवं कुव्वमाणो कोहादीहिं कारणेहिं कुव्वइ, तत्थ कोहेण जहा एयस्स सावं दिस्सामित्ति तवं कुव्वइ, एवं माणेणावि तवे मज्जइ, जहा को मए समाणो ?, मायावी छद्धे कए भणइ- जहा वयं अट्ठमभत्तिया एवमादि, लोभेणावि पूयासंसादिअट्ठाए तवं कुव्वंति, एवं ते कोहादि तवं कुव्वमाणस्स दुप्पणिहिया, सो बालतवस्सीवि य गयण्हाणपरिस्समं कुणइ, कहं बालतवस्सीओ ?, अण्णाणदोसेण उववासं काऊण पारणए बहूणं जीवाणं आउया विराहेऊण भुंजइ, तस्स तं गयण्हाणसरिसं भवइ, एवं तवसंजमावत्थिओ कसायनिग्गहे अवट्ठमाणो बालतवस्सीविय गयण्हाणसरिसं परिस्समं करेइत्ति। किंच 'सामण्णमणुचरंतस्स'० ॥ ३०३ ॥ गाथा कण्ठ्या, एताए पसत्थाए विविधाए पणिधीए य वट्टेयव्वं, एयंमि अत्थे इमं गाहापुव्वद्धं भण्णइ, तंजहा- 'एसो दुविहो पणिहीं०' ॥ ३०४ ॥ अद्धगाथा, एसा इति इदाणिं जा भणिया, दुविधा णाम इंदियपणिधी णोइंदिपणिधी य, सुद्धा णाम अदोससंजुत्ता, जइसद्दो असंकिते अत्थे वट्टइ, जहा जइ एवं भणेज्जा तो पसत्था पणिधी भवेज्जत्ति, दोसु नाम अब्भितरओ बाहिरओ य, इंदियपणिधी णोइंदियपणिधी य वत्ति, तस्स नाम इंदियमंतस्स कसायमंतस्स य, तेसिं इंदियाणं, वत्तिकारो समुच्चये, किं समुच्चिणइ ?, जहा बाहिरब्भंतराहिं चिट्ठाहिं इंदियकसायमंतेण इंदियकसायाणं णिग्गहो पसत्थपणिही भण्णइ एवं समुच्चिणइ । इदाणिं पसत्थं अप्पसत्थं च लक्खणं अज्झत्थनिप्पन्नं भवइ, तत्थ इमं गाहापच्छद्धं, तंजहा-'एत्तो य पसत्थ०' अद्धगाथा, दुविहं तित्थकरेहिं भणियं, तं०-बाहिरं अब्भितरं च, जं अब्भितरं एत्तो पणिधीए पसत्थं अपसत्थं च लक्खणनिप्फन्नंति, निप्फण्णं णाम अज्झवसाणप्पं भवति, तंजहा- अपसत्थं पसत्थं च लक्खणं अज्झत्थनिप्फण्णं भवइ, तत्थ अप्पसत्थं इमेण

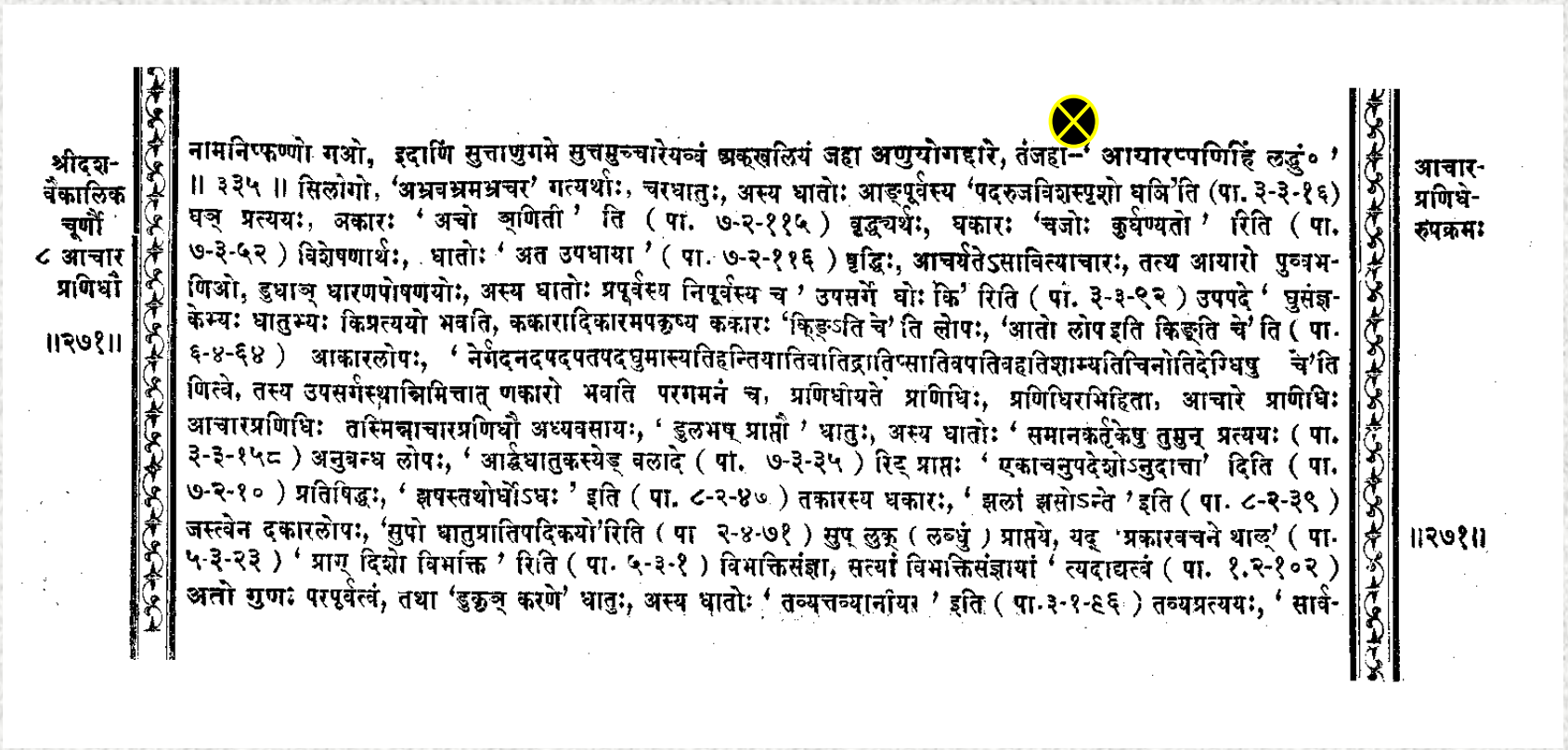
गाहापुव्वद्धेण भण्णइ, तंजहा- 'मायागारवसाहिओ०' ॥ ३०५ ॥ अद्धगाथा, जोऽवि मायासहिओ य इंदियणोइंदियाणं निग्गहं करेइ सो अप्पसत्थे पणिधी, तत्थ मायासहिया इंदियपणिही इमा, तंजहा- सुणमाणोऽवि ण आलवेज्जा, वरं लोगो जाणंतो जहा अहो झाणोवगओ एसोत्ति, उक्तं च-"निमीलयेदक्षि निमीलितेन, आकुप्यमानो बधिरा(भ)भावात् । प्रत्यक्षवादी न भवेत् कदाचित्, (सं) प्राप्तकाले असिवत्थिते य (तृ छिनत्ति) ॥ १ ॥" तहा चोरो व दव्वकारणा य गोविव पसंतादिट्ठी अच्छइ, मा मे हुन्तं दिट्ठिं पासिऊण कोइ गिण्हेज्जा, तहा कोइ पुरिसो माहिलाए संसत्तो पागडं दिट्ठिविगारं ण दरिसयइ जो घेप्पति, भणियं च- 'विरहे अंजलिकरे परे, जणाउले अणवयक्ख वच्चंतं । वीर! विणीय! वियक्खण!, को णाम तुमे न कामेज्जा ? ॥१॥' तहा अग्घायमाणोऽवि कोइ परित्थियाई जिंतिंदेयाऽहमिति लोगपत्थि(न्ति)णिमित्तं दुब्भिगंधस्स णो उव्वियइ, तहा उक्कडोऽवि रसे लब्भमाणे मायाए णो गेण्हइ, गोमयं सेवालं च भक्खेइ, तहा कडमुच्छिओ कोयि फरिसमाणोऽवि ण वेदेत्ति, एवमादि मायासंविस्स पंचविधा इंदियपणीधी अप्पसत्था भवति, तथा गारवेणावि, कोयि मणुस्सो सद्दे सुणमाणेवि ण आयरं करेइ, वरं लोगो जाणंतो अणुभूयकल्लाणो एसोत्ति, एवं कंताणि रूवाणि वा पासंतो गारवेण अणादरं करेइ, वरं लोगो जाणंतो जहा एतस्स एतेसु जहा न विम्हयत्ति, एवं गंधरसफासावि भाणियव्वा, भणिया इंदियपणिधी । इदाणिं णोइंदियपणिधी भण्णइ, तत्थ मायाए संकिट्ठोऽवि आकासं दरिसइ, मा सो पडिसंवादी णासिहित्ति उत्तरं वा देहित्ति एवमादि, गारवे जहा मा मे अमुगो जाणिहित्ति जहा एसो कोवित्तिकाऊण संकिट्ठभावो अच्छइ ण आकारं करेति, माणेवि, मायाए, कोऽवि कुलवंसउद्धरणनिमित्तं णीयछिद्दण्णेसी वक्कमइ, गारवे उदाहरणं नत्थि, जम्हा जो चेव माणो सो चेव गारवो, लोभे जइ कोइ पुव्वं मायासहियं जिणा-

वेंति ताहे लोभविवड्ढयं इतरं तहा कुव्वंति जहा बहुयं सेकालं अविसरिसं भवइ, गारवेणवि अणुवसंतभावो होऊण पुव्वं माऽहं अमुकेहिंतो ऊणओ होहिमित्ति पसंतसब्भावं काऊण लोहेण अत्थं अज्जिणइ, एवमादि, मायागारवसहिए जीवे इंदियणो-इंदियपणिधी अप्पसत्था भणिता, सो पुण बाहिरकरणसुद्धो, जो वा अब्भितरओ संकिलिट्ठकत्तणेण संसारगमणाभिमुहो भवति, जहा य बाहिं विसुद्धो अब्भितरओ असुद्धत्तणेण,अपसत्था पणिही भवति तहा भणियं, पणिही अपसत्था गया। इदाणिं पसत्था इमेण गाहापच्छद्धेण भण्णइ, तंजहा-'धम्मत्था अ पसत्थो०'॥ अद्धगाथा, जो धम्माणिमित्तं इंदियविसयपयारनिरोधो इंदियविसयपत्ताणं च अत्थाणं रागदोसविणिग्गहो कसायोदयनिरोधो उदयपत्ताण कसायाणं विणिग्गहो सा पसत्था पणिधी भण्णइ, आह--अरहंतपूयाइसु कहं इंदियणोइंदियपणिधी भवति ?, आयरिओ आह-अरहंतसगासे दिव्वतुडियसद्दा य सोऊण जइऽवि कोइ साधू हरिसं गच्छइ, जहा अहो अयं तित्थगरो उवगिज्जइ, तहावि सो धम्माणुरागेण हरिसुप्फुल्लणयणोऽवि तं कालं मणुण्णे सद्दे सुणमाणो णच्चमाणो य तगराइसमाणा मणुण्णा य गंधा अग्घायमाणो, जत्थ गंधा तत्थ रसावि, सुगंधजुत्तपु-त्तसंघडिए य भूमीए इट्ठे फरिसे वेदेमाणो पणिहीतइंदियो लब्भइ, कहं पुण?, तस्स (अप्पसत्था) नत्थि, किंच-'अरहंतेसु य रागो रागो साहूसु बंभयारीसु। एस पसत्थो रागो अज्ज सरागाण साहूणं॥ १॥' तहा णोइंदिएसुवि, जइ सोऽवि कोई वीतरागवयणं अक्कोसइ हीलेइ वा, तत्थ कोइ पयणुअकसायो साहू तस्स मिच्छदिट्ठिस्स उत्तमं धम्मं दूसयंतस्स कुप्पेज्जा, निरु-च्चरे वायंमि कीरमाणे उन्नतिणिमित्तं माणोऽवि होज्जा, तहा परवादिविस्सासणणिमित्तं सव्वभियारं हेउं उच्चारेउं तओ पच्छा णिग्गहेज्जा, तहा परवादि सव्वं पणिहिं णाऊण अंतो तन्निमित्तं मायावि होज्जा, एवं चेइयपूयादीहिं लोभोऽवि होज्जा, तस्स एवं-

विधे परिणामंतरे वट्टमाणस्स पुव्वोवचयो भवइ, एवं पसत्थे अप्पणोऽवि होज्जा, तहा परवादि सव्वं पणिहिं णाऊण अप्पसत्थं पणिहिं वज्जेत्ता पसत्थाए पणिहीए पणियोएज्जा अप्पाणं, तत्थ अप्पसत्थपणिहीए दोसा पसत्थपणिहीए य जे गुणा ते इमाए गाहाए भण्णंति, तं--' अट्ठविहं० ' ॥ ३०६ ॥ गाहा, इह अट्ठप्पगारं कम्मं अपसत्थपणिधिसमाउत्तो जीवो समादियतित्ति, जो पुण पसत्थपणिहिसमाउत्तो भवइ सो तमेव अट्ठप्पगारं परमचिक्कणं कम्मं खयतित्ति, सो य पसत्थो पणिधी इमस्स अत्थस्स निमित्तं पउंजियव्वत्ति, 'दंसणनाणचरित्ताणि०' ॥ ३०७ ॥ गाहा, दंसणं च नाणं च चरित्तं च दंसणणाणचरित्ताणि समुदिताणि संजमो भवइ, तस्स संजमस्स साहणट्ठा भवइ पणिधी पउंजियव्वत्ति, ' अणाययणाइं च वज्जाइं ' णो आययणाणि अणायतणाणि, ताणि य मिच्छादरिसणाणि, जो य दुप्पणिहितो भवइ तस्स इमो दोसो--' दुप्पणिहिअजोगी पुण० ' ॥ ३०८ ॥ गाहा, जो जीवो दुप्पणिहियजोगी सो दुप्पणिहियत्ति दोसो नत्थित्ति संभावयति, तओ सो संजमस्स दूरे वट्टइ, संजमं च अजाणमाणो लंछिज्जइ, जहा कोइ विसमकंटकाइण्णाए भूमीए विसत्थो निसट्ठेहिं अंगेहिं चंकम्ममाणो णिण्णए पदेसे पक्खलिओ पडमाणो तिक्खकंटगपागडादीहिं लंछिज्जइ, एवं सोऽवि संजमभूमीतले इंदिएहिं आवडिओ णाणावरणादीहिं कम्मकंटकेहिं लंछिज्जइत्ति । जो पुण सुनिहिअप्पा तस्स इमो गुणो, तं०--' सुप्पणिहिअजोगी पुण० ' ॥ ॥ ३०९ ॥ गाहा, जो पुण सुपणिहियजोगी सो सुभासुभविवागं जाणइ, जाणमाणो सुप्पणिहियजोगी विहरमाणो तेहिं पुव्वभणिएहिं दोसेहिं णोवलिप्पति, सुसंवरियासवदुवारत्तणेण वारसविधे तवे अब्भुज्जुत्तो पुव्वोवचिताणि कम्माणि णाणावरणादीणि सुकतणमिव अग्गी डहइ, जम्हा दुप्पणिहियस्स दोसो सुपणिहियस्स गुणो भवति तओ 'तम्हा०' ॥ ३१० ॥ गाथा कण्ठ्या ।

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥३३५-३९८॥ दीप अनुक्रम [३५१-४१४]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ८ आचार प्रणिधौ ॥२७१॥

नामनिष्पण्णो गओ, इदाणिं सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं अक्खलियं जहा अणुयोगद्दारे, तंजहा–' आयारप्पणिहिं लद्धुं० ' ॥ ३३५ ॥ सिलोगो, 'अभ्रवभ्रमभ्रचर' गत्यर्थाः, चरधातुः, अस्य धातोः आङ्पूर्वस्य 'पदरुजविशस्पृशो घञि'ति (पा. ३-३-१६) घञ् प्रत्ययः, अकारः ' अचो ञ्णिती ' ति (पा. ७-२-११५) वृद्ध्यर्थः, घकारः 'चजोः कुर्घण्यतो ' रिति (पा. ७-३-५२) विशेषणार्थः, धातोः ' अत उपधाया ' (पा. ७-२-११६) वृद्धिः, आचर्यतेऽसावित्याचारः, तत्थ आयारो पुव्वभणिओ, डुधाञ् धारणपोषणयोः, अस्य धातोः प्रपूर्वस्य निपूर्वस्य च ' उपसर्गे घोः किं' रिति (पा. ३-३-९२) उपपदे ' घुसंज्ञकेभ्यः धातुभ्यः किप्रत्ययो भवति, ककारादिकारमपकृष्य ककारः 'क्ङिति चे' ति लोपः, 'आतो लोप इति किङ्ति चे' ति (पा. ६-४-६४) आकारलोपः, ' नेर्गदनदपदपतपदघुमास्यतिहन्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्धिषु चे'ति णित्वे, तस्य उपसर्गस्थान्निमित्तात् णकारो भवति परगमनं च, प्रणिधीयते प्राणिधिः, प्रणिधिरभिहिता, आचारे प्राणिधिः आचारप्रणिधिः तस्मिन्नाचारप्रणिधौ अध्यवसायः, ' डुलभष् प्राप्तौ ' धातुः, अस्य धातोः ' समानकर्तृकेषु तुमुन् प्रत्ययः (पा. ३-३-१५८) अनुबन्ध लोपः, ' आर्द्धधातुकस्येड् वलादे (पा. ७-३-३५) रिट् प्राप्तः ' एकाचनुपदेशोऽनुदात्ता' दिति (पा. ७-२-१०) प्रतिषिद्धः, ' झषस्तथोर्धोऽधः ' इति (पा. ८-२-४७) तकारस्य धकारः, ' झलां झसोऽन्ते ' इति (पा. ८-२-३९) जस्त्वेन दकारलोपः, 'सुपो धातुप्रातिपदिकयो'रिति (पा २-४-७१) सुप् लुक् (लब्धुं) प्राप्तये, यद् 'प्रकारवचने थाल्' (पा. ५-३-२३) ' प्राग् दिशो विभक्ति ' रिति (पा. ५-३-१) विभक्तिसंज्ञा, सत्यां विभक्तिसंज्ञायां ' त्यदादित्वं (पा. १.२-१०२) अतो गुणः परपूर्वत्वं, तथा 'डुकृञ् करणे' धातुः, अस्य धातोः ' तव्यत्तव्यानीयरः ' इति (पा.३-१-९६) तव्यप्रत्ययः, ' सार्व-

आचार-प्रणिधे-रुपक्रमः ॥२७१॥

*** अत्र अष्टमं अध्ययनस्य सूत्राणि आरब्धा:

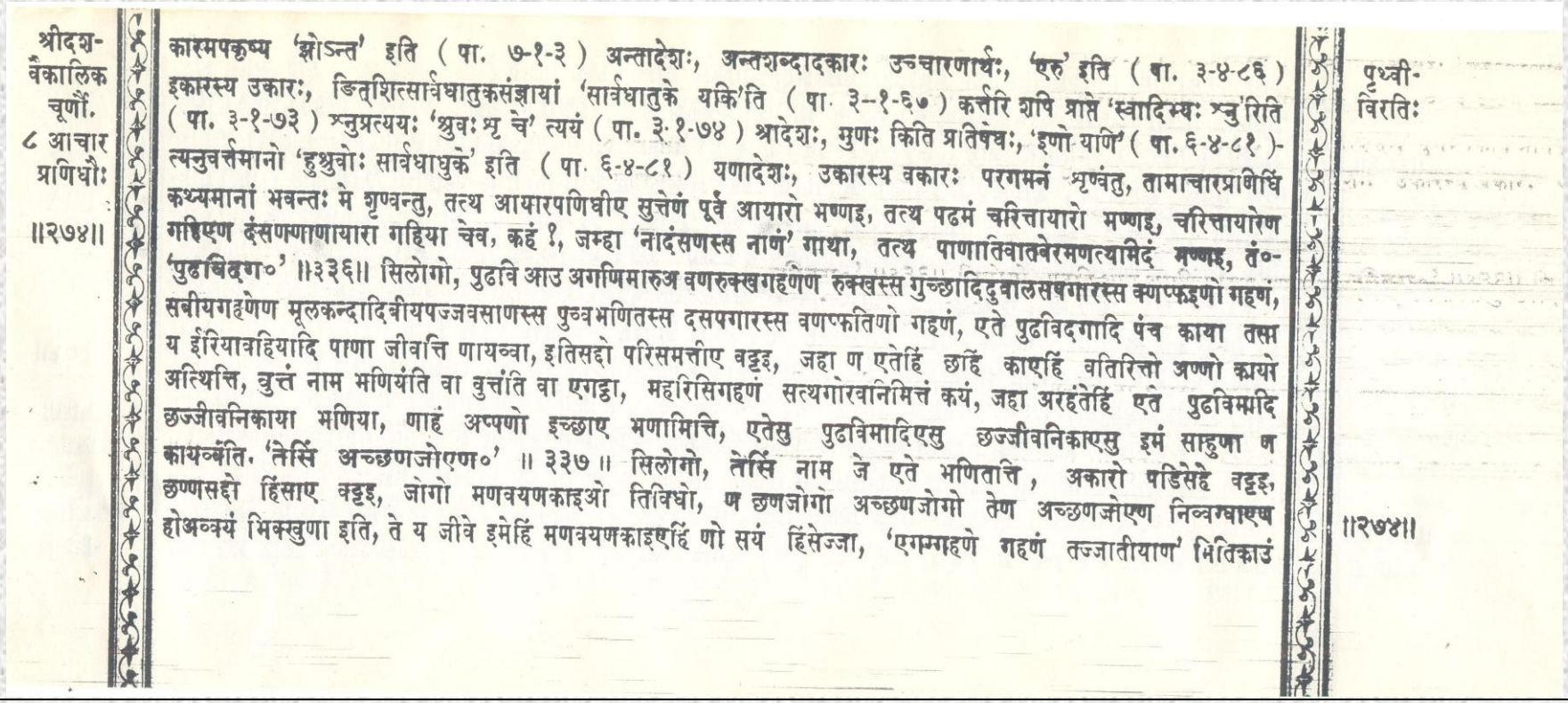
धातुकार्द्धधातुकयो ' रिति (७-३-८४) गुणः ' उरण् रपरः ' इति (१-१-५१) रपरत्वं च कर्त्तव्यं, स्त्रीविवक्षायां 'अजाद्यतष्टाप् ' इति (पा.४-१-४) टाप् प्रत्ययः कर्त्तव्यः, ' भिक्ष भिक्षायामलाभे लाभे च ' धातुः, ' सनाशंसभिक्ष उः ' इति (पा. ३-२-१६८) उः प्रत्ययः भिक्षु इति स्थिते ' कर्त्तृकरणयोस्तृतीये ' ति (पा. २-३-१८) तृतीया, टकारलोपः, (आङो नाऽस्त्रियाम् (पा. ७-३-१२०) इदितो नुम्धातो ' (पा. ७-१-५८) रित्यनुवर्त्तमाने ' इकोऽचि विभक्तौ ' विति (पा. ५-१-७३) नुम्, मकारस्य उकारस्य च लोपः, ' रषाभ्यां नो णः समानपद ' इति (पा.८-४-१) ' अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपीति ' (पा. ४-२) नकारस्य णकारः भिक्षुणा, तत् प्रातिपदिकं स्त्रीविवक्षायां ' कर्मणि द्वितीये ' ति (पा. २-३-२) अम् ' त्यदाद्यत्वम् (पा. ७-२-१०२) अजाद्यतष्टाप् ' (पा. ४-१-४) अनुबन्धलोपः, त्रयाणामपि ' अकः सवर्णे दीर्घत्वं (पा.६-१-१०१) ताम्, 'हृञ् हरणे' धातुः, अस्य धातोः उत्पूर्वस्य आङ्पूर्वस्य च ' भविष्यती ' त्यनुवर्त्तमाने (३-३-३) ' लट् शेषे चे ' ति (पा. ३-३-१३) लट् प्रत्ययः, टकारस्य ' हलन्त्य ' मिति संज्ञा प्रयोजनं, टेरेत्वार्थः, लकाराट्टकारमपकृष्य अकारस्य ' उपदेशोऽजनुनासिक ' इति (पा. १-३-२) संज्ञा प्रयोजनं, ' लटः सद्वेति (पा. ३-३-१४) विशेषणार्थः, लस्य तिपादयो भवंतीति तिपादिप्रसङ्गे प्राप्ते ' शेषात् कर्त्तरि परस्मैपदं ' (पा. १-३-७८) भवति, अस्मद्युपपदे समानाधिकरणे प्रयुज्यमाने उत्तमपुरुषो भवति, तस्य उत्तमपुरुषस्य एकस्मिन्नर्थे एकवचनमुपादीयते मिप्, पकारलोपः कर्त्तरि शपि प्राप्ते ' स्यतासी लृलुटो ' रिति (पा. ३-१-३३) स्यप्रत्ययः ' आर्द्धधातुकस्येड् वलादे ' रिति (पा.७-२-३५) इट् प्राप्तः 'एकाच उपदेशेऽनुदात्तेत ' इति (पा. ७-२-१०) प्रतिषेधः, तत ' ऋद्धनोः स्ये स्य ' (पा. ७-२-७०) ति इडागमः, ' सार्वधातुकार्धधातुकयो ' रिति (पा. ७-३-६४)

॥२७२॥

गुणः टश्च लोपः ' आदेङ्गुणः ' (पा. १-१-२) ऋकारस्य स्थाने, ' इको गुणवृद्धि ' रिति (पा. १-१-३) वचनात् इकः स्थाने ऋकारस्य आकारो गुणः, 'ऊरण् रपरः (पा. १-१-५१) इति रपरः ' अतो दीर्घो यमी ' ति (पा. ७-३-१०१) दीर्घत्वं, ततः तकारजस्त्वेन दकारस्य परगमनं उदाहरिष्यामि, गणहरा अप्पणो से मणगपिता वा आहुः जहा सामिसगासे नाऊणं तं मे उदाहरिस्सामि, उदाहरिज्जमाणं च अनुपूर्व प्रातिपदिकं ब्राह्मणादौ पठ्यते, अनुपूर्वस्य भावः ' तस्य भाव ' (पा. ५-१-११९) इत्यनुवर्त्तमाने ' गुणवचना ब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि चे ' ति (पा. ५-१-१२४) ष्यञ् प्रत्ययः, अकारः ' तद्धितेष्वचामादे ' रिति (पा. ७-२-११७) आदिवृद्धयर्थः, षकारः ' षिद्गौरादिभ्यश्चे ' ति (पा. ४-१-४१ दीर्घत्वार्थः, षलुकि कृते ' तद्धितेष्वचामादे '-रिति (पा. ७-१-११७) आदौ वृद्धिः आकारः, ' यस्येति चे'ति (पा. ४-४-१४८) लोपः, परगमनं, आनुपूर्व्य इति स्थिते स्त्री-विवक्षायां ' षिद् गौरादिभ्यश्चे ' ति (पा. ४-१-१४१) ङीष् प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः, ' यस्येति चे ' ति (पा. ६ - ४ - १४८) अकारलोपः, ' हलस्तद्धितस्य ' (पा. ६-४-१५०) हल उत्तरस्य प्रत्ययययकारस्य लोपो भवति (तद्धितयकारस्य) इकारे परतः आनुपूर्वी 'कर्तृकरणयोस्तृतीये' ति (पा. २-३-१८) तृतीया, टकारलोपः ' इको यणची ' ति (पा. ६-१-७७) यणादशः आनुपूर्व्या, 'आणुपुव्वि, सुणेहत्ति, आनुपूर्वी नाम जहाणुक्कमो, जहा परिवाडीए सुणेहत्ति वुत्तं भवति, ' श्रु श्रवणे ' धातुः, अस्य धातोः 'विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनातिसर्ज्जनेषु लिङिति (पा. ३-३-१६१) लोट् प्रत्ययः, टकारस्य पूर्ववल्लोपः, लकारादकारमपकृष्य उकारस्य लुप्तस्य प्रयोजनं 'लोटो लङ्वदि'ति (पा. ३-४-८५) विशेषणार्थस्य लस्य तिपादयो भवंतीति, 'शेषे प्रथम' इति (पा. १ ४-१०८) प्रथमः पुरुषो भवति, तस्यापि त्रिके प्राप्ते बहुष्वर्थेषु बहुवचनमुपादीयते झिः, झिप्रत्ययादि-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥३३५-३९८॥ दीप अनुक्रम [३५१-४१४]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ८ आचार प्रणिधौः ॥२७४॥

कारमपकृष्य 'झोऽन्त' इति (पा. ७-१-३) अन्तादेशः, अन्तशब्दादकारः उच्चारणार्थः, 'एरु' इति (पा. ३-४-८६) इकारस्य उकारः, ङित्शित्सार्वधातुकसंज्ञायां 'सार्वधातुके यकि'ति (पा. ३-१-६७) कर्त्तरि शपि प्राप्ते 'स्वादिभ्यः श्नु'रिति (पा. ३-१-७३) श्नुप्रत्ययः 'श्रुवः शृ चे' त्ययं (पा. ३-१-७४) श्रादेशः, मुणः किति प्रतिषेधः, 'इणो यणि' (पा. ६-४-८१)-त्यनुवर्त्तमानो 'हुश्नुवोः सार्वधातुके' इति (पा. ६-४-८१) यणादेशः, उकारस्य वकारः परगमनं शृण्वंतु, तामाचारप्राणिधिं कथ्यमानां भवन्तः मे शृण्वन्तु, तत्थ आयारपणिधीए सुत्तेणं पूर्वं आयारो भण्णइ, तत्थ पढमं चरित्तायारो भण्णइ, चरित्तायारेण गहिएण दंसणणाणायारा गहिया चेव, कहं ?, जम्हा 'नादंसणस्स नाणं' गाथा, तत्थ पाणातिवातवेरमणत्थामिदं भण्णइ, तं०-'पुढविदग०' ॥३३६॥ सिलोगो, पुढवि आउ अगणिमारुअ वणरुक्खगहणेण रुक्खस्स गुच्छादिदुवालसण्हगारस्स वणप्फइणो गहणं, सबीयगहणेण मूलकन्दादिबीयपज्जवसाणस्स पुव्वभणितस्स दसपगारस्स वणप्फतिणो गहणं, एते पुढविदगादि पंच काया तस्स य ईरियावहियादि पाणा जीवत्ति णायव्वा, इतिसद्दो परिसमत्तीए वट्टइ, जहा ण एतेहिं छहिं काएहिं वतिरित्तो अण्णो कायो अत्थित्ति, वुत्तं नाम भणियंति वा वुत्तंति वा एगट्ठा, महरिसिगहणं सत्थगोरवनिमित्तं कयं, जहा अरहंतेहिं एते पुढविमादि छज्जीवनिकाया भणिया, णाहं अप्पणो इच्छाए भणामित्ति, एतेसु पुढविमादिएसु छज्जीवनिकाएसु इमं साहुणा ण कायव्वंति. 'तेसिं अच्छणजोएण०' ॥ ३३७ ॥ सिलोगो, तेसिं नाम जे एते भणितात्ति, अकारो पडिसेहे वट्टइ, छण्णसद्दो हिंसाए वट्टइ, जोगो मणवयणकाइओ तिविधो, ण छणजोगो अच्छणजोगो तेण अच्छणजोएण निव्वग्घाएण होअव्वयं भिक्खुणा इति, ते य जीवे इमेहिं मणवयणकाइएहिं णो सयं हिंसेज्जा, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण' मितिकाउं

पृथ्वी-विरतिः

॥२७४॥

*** प्राणातिपात विरते: वर्णनं मध्ये पृथ्वीकायादिनाम् विरति: निरूप्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥३३५-३९८॥

दीप अनुक्रम [३५१-४१४]

परेणावि न हिंसेज्जा, हिंसंतंपि अण्णं न समणुजाणेज्जा, एवं च कुव्वमाणस्स संजतत्तं भवति। इयाणिमेतेसिं छण्हं जीवनिकायाणं पत्तेयं वेरमणं भण्णइ, तत्थ पुढविकायवेरमणं पुव्वं भण्णइ, तं- 'पुढविं भित्तिं०' ॥ ३३८ ॥ सिलोगो, तत्थ पुढविगहणे लेट्ठुगादिविकप्परहियाए पुढविए गहणं कयंति, भित्तिमादि णदितडीतो जावेवद्दलिया सा भित्ती भन्नति, सिला नाम जो विच्छिण्णो पासाणो सा सिला भण्णइ, लेलू लेट्ठुओ भण्णइ, एयाणि पुढविमादीणि णो भिंदेज्जा, णो व संलिहेज्जा, तत्थ भिंदणं दुहा वा तिहा वा अणेगहाकरणं भिंदणं भण्णइ, संलिहणं अंगुलीसलागादीहिं, तत्थ अचित्ताए तन्निस्सिया विराधिज्जंति, सचित्ताए पुढवी जीवा तण्णिस्सिया य विराहिज्जंति, तिविहेण करणजोएण संजए सुसमाहिए, अप्पणा णो भिंदणं संलिहणं वा कायव्वंति। किंच- सुद्धपुढविए ण निसिए (सुद्धपुढवीं न निसीए) ॥ ३३९ ॥ सिलोगो, सुद्धपुढवी नाम न सत्थोवहता, असत्थोवहयावि जा णो वत्थंतरिया सा सुद्धपुढवी भण्णइ, तीए सुद्धपुढवीए न निसीएज्जा, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण'मिति-काउं ठाणविवज्जणादीणिवि गहियाणि, तहा ससरक्खंमि जमासणं पीढमादी, तंमि ससरक्खे ण वट्टति णिसिउं उरुं, ससरक्खं नाम जंमि सच्चित्तरतो वाउद्धुतो तमासणं ससरक्खं भण्णइ, तत्थ सचित्तपुढवीए गायउण्हाए विराधिज्जइ, अचित्ताए एवाए पति(गायउण्हा)सण्णाणी गुंडिज्जंति, हेट्ठिल्ला वा तण्णिस्सिता सत्ता उण्हाए विराधिज्जंति, ससरक्खाए सचित्तरयो विराधिज्जति-त्तिकाऊण सुद्धपुढवीमादिसु पमज्जिऊण निसीइज्जति जाणिऊण जहा एसा अचित्तजयणा, अगणिमाई उवहयस्स य जस्स सो परिग्गहो तस्स उग्गहं अणुजाणावेऊण निसीदणादीणि कुज्जा इति पुढविक्कायविरती गया। इयाणिं आउक्कायविरती भण्णइ, तं०- 'सीओदगं न सेविज्जा०' ॥ ३४० ॥ सिलोगो, सीतोदगगहणेण सचेतणस्स उदयस्स गहणं कयं, सिला करगा

भन्नंति, वुट्ठग्गहणेण सेसअंतरिक्खोदगस्स गहणं कयं, हिमं पाउसे उत्तरापहे भवति, चकारेण फुसारादीणं गहणं कयंति, ताणि सीतोदगादीणि नो से सेविज्जा, तं पुण उण्होदगं जाहे तत्तं फासुगं भवति ताहे संजतो पडिग्गाहिज्जत्ति, आह-उण्होदगमेव वत्तव्वं तत्तफासुगगहणं न कायव्वं, जम्हा जं उण्होदगं तमवस्सं तत्तं फासुयं च भविस्सइ ?, आयरिओ आह- न सव्वं उण्होदगं तत्त-फासुयं भवति, जाहे सव्वत्ता डंडा ताहे फासुयं भवति, अतो तत्तफासुयगहणं कयं भवति, जया भिक्खादी णिग्गतो वरिसेणं तिमेज्जा णदिमाईणि वा उत्तरंतो ताहे इमे णो कुज्जा, तंजहा- 'उदउल्लं०' ॥ ३४१ ॥ सिलोगो, तत्थ उदउल्लं बिन्दुसहितं भन्नइ, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण'मितिकाउं ससिणिद्धमचिरट्ठियं, उदउल्लं ससणिद्धं वा कायं णो पुञ्छेज्जा ण वा संलि-हेज्जा, तत्थ पुंछणं वत्थेहिं तणादीहिं वा भवइ, संलिहणं जं पाणिणा संलिहिऊण णिच्छोडेइ एवमादि, समुप्पेहे नाम सम्मं उवेहे, संमं णिरिक्खतित्ति वुत्तं भवइ, तहाभूअं णाम जं उदउल्लं ससनिद्धं वा जाहे अपरिणतं जाणिऊण णो हत्थादीहिं संघट्टेज्जा, मुणित्ति वा णाणित्ति वा एगट्ठा, उदउल्लेण काएण जाव सो आउक्काओ ण परिणओ ताव निरासणादीणि न कुज्जा, आउ-क्कायविरती गता । इदाणिं अगणिकायवेरमणं भण्णइ, तं०- 'इंगालं अगणिं अच्चिं०' ॥ ३४२ ॥ सिलोगो, तत्थ इंगालो जालारहिओ, अगणिं नाम जो अयपिंडाणुगओ फरिसगेज्झो, अच्ची णाम आगासाणुगता परिच्छिन्ना अग्गिसिहा, अलायं नाम उम्मुयं, तं जइ सजोइयं भवति तो उंजणादीणि णो कुज्जा, सजोतियं नाम अविज्झायंतं, सजोइअमलायं इंगालादीणि य णो उंजेज्जा, णो वा घट्टेज्जा, ण वा णिव्वावेज्जा, तत्थ उंजणं अवसंतुयाणं, घट्टणं पराप्परं उम्मुयणं, अप्फोडणं निव्वावणं, मुणित्ति वा णाणित्ति वा एगट्ठा, उंजणादीसु जहा नो अ सयं कुज्जा 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण' मितिकाउं परेणवि ण

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥३३५-३९८॥ दीप अनुक्रम [३५१-४१४]

कारवेज्जा करेंतंपि अन्नं न समणुजाणेज्जा, अगणिकायविरई गया। इदाणिं वाउक्कायविरई भण्णइ- 'तालिअंटेण०' ॥३४३॥ सिलोगो, तत्थ तालिअंटो लोगपसिद्धो, पत्तं पोमिणिपत्तादी, साहा रुक्खडाणं, विहूवणं वियणगं, एतेसिं अन्नतरेण 'न वीइज्ज अप्पणो कायं बाहिरं वावि पोग्गलंति' तत्थ अप्पणो कायं नाम अत्तणो सरीरं, बाहिरपोग्गलग्गहणेणं उसिणोदयादीणं गहणं, जहा णो सयं वीइज्जा 'एगग्गहणे गहणं तज्जातियाण'मितिकाउं परेणावि न वीइज्जा, वीयंतमवि अन्नं न समणुजाणेज्जा, वाउक्कायविरई गया। इदाणिं वणप्फइवेरमणं भण्णइ- 'तणरुक्खं न छिंदिज्जा०' ॥ ३४४ ॥ सिलोगो, तत्थ तणं दब्भादि, रुक्खगहणेण एगट्ठियाण बहुबीयाण य गहणं, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण'मितिकाउं सेसावि गुच्छगुम्मादि गहिया, आमगं नाम असत्थुवहतं, विविधं अणेगप्पगारं 'बीयं' सालिमाइ मणसावि न पत्थए, किमंग पुण कंमुणा ?, 'गहणेसु न चिट्ठिज्जा०' ॥ ३४५ ॥ सिलोगो, तत्थ गहणं गुविलं भण्णइ, तत्थ उव्वत्तमाणो परियत्तमाणो वा साहादीणि घट्टेइ तं गहणं, तत्थ नो चिट्ठेज्जा, जत्थ बीयाणि हरियाणि य अकिन्नाणि तत्थवि न चिट्ठेज्जा, तत्थ उदगं नाम अणंतवणप्फई, से भणियं च- 'उदए अवए पणए सेवाले' एवमादि, अहवा उदगग्गहणेण उदगस्स गहणं करेंति, कम्हा?, जेण उदएण वणप्फइकाओ अत्थि, उत्तिंगगहणेणं सप्पछत्तादीण गहणं, पाणगो पसिद्धो, एतेसु गहणादिसु पणगपज्जवसाणेसु वणप्फइजीवणट्ठाए णो चिट्ठेज्जा, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण'मितिकाउं अन्नंपि नो चिट्ठावेज्जा, चिट्ठंतमवि अन्नं न समणुजाणेज्जा किंच- 'तसे पाणे न हिंसिज्जा०' ॥ ३४६ ॥ सिलोगो, 'तसे पाणे' थूथुमादी ण हिंसेज्जा, ते वायाए कम्मुणा वा णो हिंसेज्जा, मणो तदंतग्गओ दट्ठव्वो, न केवलं तसे पाणे न हिंसेज्जा, किंच-तिविहेण मणवयणकाइएण करणकारणवणुमोदणेहिं सव्वभूएसु वधो-

वरतो भवेज्जा, 'पासेज्ज विविहं जगं' गामनगरतिरियमणुयदेवेसु विविहं कम्ममलमणुभवमाणंति इमं जगं पासेज्जा, पासिऊण य उवरतो भवेज्जा, एसा ताव थूलसरीरेसु विरती भणिया । इयाणिं सुहुमाण भण्णति-'अट्ठ सुहुमाइ (णि०) ॥३४७॥ सिलोगो, अट्ठत्ति संखा, अतीव सण्हाणि सुहुमाणि, ताणि पेहाए णाम उवयोगं दाऊण, 'जाइं' ति अणिद्दिट्ठाणि, जाणित्तु णाम उवलभिऊण, संजए साधू, तत्थ आस णाम दयाहिकारी निसीए, चिट्ठ नाम उद्दिओ दयाहिकारी अच्छेज्जा, सए णाम दयाहिकारी णिद्दामोक्खं करेज्जा, अह कतराणि अट्ठ सुहुमाणि?, भण्णइ-'सिणेहं पुप्फसुहुमं च०' ॥ ३४९ ॥ सिलोगो, सिणेहसुहुमं पुप्फसुहुमं पाणसुहुमं उत्तिंगसुहुं पणगसुहुमं बीयसुहुमं हरितसुहुमं अंडगसुहुमंति, तत्थ सिणेहसुहुमं पंचपगारं, तं०-ओसा हिमए महिया करए हरतणुए, पुप्फसुहुमं नाम वडउम्बरादीनि संति पुप्फाणि, तेसिं सरिवन्नाणि दुव्विभावणिज्जाणि ताणि सुहुमाणि, पाणसुहुमं अणुद्धरी कुंथू जा चलमाणा विभाविज्जइ थिरा दुब्बिभावा, एयं तं पाणसुहुमं, उत्तिंगसुहुमं कीडियानगरं, तत्थ पिपीलियाणा(ण्डा)दि अणायसुहुमा सत्ता दुव्विभावणिज्जा भवंति, पणगसुहुमं णाम पंचवन्नो पणगो वासासु भूमिकट्ठउवगरणादिसु तद्दव्वसमवन्नो पणगसुहुमं, बीयसुहुमं नाम सरिसवादि सालिस्स वा मुहमूले जा कणिया सा बीयसुहुमं, सा य लोगेण उ सुमहु(धुम)त्ति भण्णइ, हरितसुहुमं णाम जो अहुणुट्ठियं पुढविसमाणवण्णं दुव्विभावणिज्जं तं हरियसुहुमं, अंडसुहुमं पंचप्पगारं, तंजहा उद्देसियंडो पिपीलियंडो उक्कलियंडे हलियंडो हलिहोलियंडो, तत्थ उद्देसिया मच्छिया तीए अंडं उद्देसियंडं, पिपीलियाअंडयं नाम कीडियअंडगं, उक्कलियाअंडं वक्खोहलियाअंडगं, हलियंडगं भणियाअंडयं, हलोहलिअंडं सरडीअंडगंति। 'एवमेआणि जाणित्ता०' ॥ ३५० ॥ सिलोगो, एवमेयाणि अट्ठ सुहुमाणि सव्वप्पगारेहिं वण्णसंठाणाईहिं णाऊणंति, अहवा ण

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||३३५-३९८|| दीप अनुक्रम [३५१-४१४]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ८ आचार प्रणिधौ ॥२७९॥

सव्वपरियाएहिं छउमत्थो सक्केइ उवलभिउं, किं पुण जो जस्स विसयो ?, तेण सव्वेण भावेण जाणिऊणंति, संजए साधू 'अप्पमत्तो जए निच्चं'ति तत्थ अप्पमत्तो जए नाम निद्दाकसायाईहिं पमादविवज्जओ अप्पमत्तो, जए नाम मणवयणकाय-जोगेहिं तेसिं सुहुमाण रक्खणत्थं पयत्तमंतो, णिच्चं णाम सव्वं कालं, 'सव्विंदिअसमाहिए' नाम सद्दादिसु विसएसु अपडि-वज्झमाणो। इयाणिं सुहुमाण धूलाण य जीवाणमणुपालणत्थमिदमुच्यते- 'धुवं च पडिलेहिज्जा०' ॥ ३५१ ॥ सिलोगो, धुवं णाम जो जस्स पच्चुवेक्खणकालो तं तंमि णिच्चं पडिलेहिज्जा, जोगसा नाम सति सामत्थे, अहवा जोगसा णाम जं पमाणं भणितं ततो पमाणाओ ण हीणमहितं वा पडिलेहिज्जा, जहा जोगरत्ता साडिया पमाणरत्तित्ति वुत्तं भवइ तहा पमाणपडिलेहा जोगसा भण्णइ, पायग्गहणेण दारुअलाउयमट्टियपायाणं गहणं, कंबलग्गहणेण उन्नियसोत्तियाण सव्वेसिं गहणं, सेज्जाओ वसइओ भण्णइ, तमवि दुकालं तिकालं वा पडिलेहिज्जा, उच्चारभूमिमवि अणावायमसंलोयादिगुणेहिं जुत्तं गयमाणो गाम-नगरादिसु पडिलेहिऊण पाए पविसे, जाहे उच्चारभूमी ताहे पडिलेहिय पमज्जिय वा पविसिज्जा, तहा संथारभूमिमवि पडिलेहिय पमज्जिय अत्थुरेज्जा, तहा आसणमवि पडिलेहिऊण उवविसेज्जत्ति । किंच- 'उच्चारं पासवणं०' ॥३५२॥ सिलोगो, उच्चार-पासवणखेलसिंघाणगा पसिद्धा, जल्लियं नाम मलो, णो कप्पइ उवट्टेउं, जो पुण भिम्हकाले पस्सेयो भवति, अण्णंमि गिलाणादि-कारणे मलत्थे के(ओ क)रिसो कीरइ तस्स तं गहणं कयंति, एवं वा उरादी अन्नं वा सरीरावयवं आहारोवकरणादि वा, फासुयं ठाणं 'पडिलेहिऊण परिट्ठवेज्ज संजए' त्ति, एस उवस्सए विधी भणिओ । इदाणिं भिक्खागतस्स भण्णइ, तं०- 'पविसित्तु परागारं०' ॥ ३५३ ॥ सिलोगो, अगारं गिहं भण्णइ, परस्स अगारं परागारं, साधू पविट्ठो भोयणट्ठं अन्नेसु वा कारणेसु पवि-

प्रति लेखनादि भिक्षागत-विधिः

॥२७९॥

*** अत्र प्रतिलेखना आदि विधि: उपदर्शयते

सिऊण 'जयं चिट्ठेज्जा ण य रूवेसु मणं करेज्जा' तत्थ जयं चिट्ठे नाम तंमि गिहदुवारे चिट्ठे, णो आलोयत्थिग्गलाईणि, वज्जयंति अक्खेवं सोहयंतो चिट्ठेज्जा, मितं भासेज्जा णाम पुच्छिओ संजओ जयणाए एक्कं वा दो वा वारे भासेज्जा, कारण-णिमित्तं वा भासइ, अणेसणं वा पडिसेहयइ, 'ण य रूवेसु मणं करे' रूवं दायगस्स अण्णोसिं वा दट्ठूणं तेसु मणं ण कुज्जा, जहा अहो रूवं, जति नाम एतेण सह संजोगो होज्जत्ति एवमादि, 'एगग्गहणे गहणं तज्जाइयाण'मितिकाउं सद्दा रसा गंधा फासा गहिया, तेसुवि मणं णो कुज्जा। इदाणिं असावज्जसावज्जकहणे अकहणत्थमिदमुच्यते-'बहुं सुणेइ कन्नेहिं०' ॥ ३५४ ॥ सिलोगो, बहु णाम अणेगप्पगारं भण्णइ, तं च असावज्जं सावज्जं च, तत्थ असावज्जं-अत्थि ते अज्ज सुतं जहा तित्थगरो अमुगं देसमागओ, परवादी वा अज्झावएण वादिणा पराजिओ, अमुगनामधेयो वा साधू करथइ सुओ तस्साहं सगासे पव्वइउ-कामो, दिट्ठोवि अत्थि ते अज्ज कोवि संतुट्ठप्पा साहू दिट्ठो जा णं पडिलाभयामि, अहवा तमहं पज्जुवासिउकामो आगओ, णिक्खमिउकामो वा, एवमादि, असावज्जं पुट्ठो वा अपुट्ठो वा भासेज्जा, सावज्जं पुण सव्वप्पगारेण परिहरिज्जइ, तं च सावज्जं इमं जहा कोइ पुच्छेज्जा-हे साहु ! किमेय घोसणिज्जं घोसिज्जति, एवमादि, दिट्ठोवि जहा तुमए राया अण्णेण पहेण गच्छंतो दिट्ठतो, मंसविक्कीओ वा मातंगा वा तित्तिरहत्थकया दिट्ठा?, एत्थ उदाहरणं-एक्को धीयारो उब्भामयविलयाए समं भोगे भुंजंतो दिट्ठो एगेण साहुणा, लज्जिओ सो अण्णोसिं कहेहित्ति ता णं मारेमि सो अग्गओ पंथं बंधिऊण अच्छइ, आगओ तस्स ओगासं, भणिओ अणेण-भो साधु! अज्ज भमंतेण किं दिट्ठं साहुहिं?. साहू भणइ-अम्हं भणियं-'बहुं सुणेहि कन्नेहीं, बहुं अच्छीहिं पिच्छइ। न य दिट्ठं सुअं सव्वं, भिक्खु अक्खाउमरिहइ ॥१॥ ततो मारणज्झवसायाओ णियत्तो धीयारो, धम्मपएसु णिक्खंतो य, जइ पुण

अक्खायं होंतं तो मारिओ होंतो, जहा(ओ) एवमादि दोसा अतो 'सुअं वा जइ वा दिट्ठं०' ॥४५५॥ सिलोगो, तत्थ सुतं जहा-तुमं मए सुओ अट्ठाबद्धो चोरो एवमादि, दिट्ठो-दिट्ठोसि मए परदव्वं हरमाणो एवमादि, एरिसं परोवग्घाइयं पुट्ठो अपुट्ठो वा लोगविरुद्धं धम्मविरुद्धं च णो भासेज्जा, तह 'ण य कोइ उवाएण गिहिजोगं समायेर'त्ति, गिहीहिं समं जोगं गिहिजोगं, संसग्गित्ति वुत्तं भवति, अहवा गिहिकम्मं जोगो भण्णइ, तस्स गिहीकम्माणं कयाणं अकयाणं च तत्थ उवेक्खणं सयं वाऽकरणं, जहा एस दारिया किं न दिज्जइ ? दारगो वा किं न निवेसिज्जइ ?, एवमादि, किंच- 'निट्ठाणं रसनिज्जूढं०' ॥ ३३५६ ॥ सिलोगो, णिट्ठाणं णाम जं सव्वगुणोववेयं सव्वसंभारसंभियं तं णिट्ठाणं भण्णइ, रसाणिज्जूढं णाम जं कदसणं ववगयरसं तं रसणिज्जूढं भण्णइ, एतेसिं रसणिज्जूढं, जाहे निट्ठाणं लद्धं ताहे पुट्ठो वा हरिसागओ ण लाभं णिद्देसेज्जा, जहा पसोहिया मो केरिसं अद्दभद्दगं लद्धं, तेणं बालत्थितिलएण अज्ज इमं भद्दगं दिन्नं, जाहे रसनिज्जूढं लद्धं भण्णइ ताहे णो दीणगमणसो होज्जा, ण अलाभं णिद्दिसेज्जा, जहा पसोहियामो केरिसं पावगं लद्धं दिवसं हिंडंतेणं?, तेण वा जंममरणपावकम्मेण केरिसं पावगं दिण्णंति?, एवमादि, किंच- 'न य भोअणंमि गिद्धो०' ॥ ३५७ ॥ सिलोगो, गोयरग्गगओ साधू भोयणे गिद्धो उंछं अयंपिरो चरेज्जा' तत्थ नकारो पडिसेहे वट्टइ, भोयणगहणेण चउव्विहस्सवि आहारस्स गहणं कयं, तस्स भोयणस्स गेहीए ण णीयकुलाणि अतिक्कममाणो उच्चकुलाणि पविसेज्जा, चरे नाम हिंडेज्जा, उंछं चउव्विधं, तं०- णामुंछं ठवणुंछं दव्वुंछं भावुंछं च, णामठव-णाओ गयाओ, दव्वुंछं तावसादीणं, भावुंछं जं अण्णमण्णातेणेव णीयमज्झिमेण हिंडंति तं भावुंछं, एत्थ भावउंछेण अधिगारो, सेसा उच्चारियसरिसत्तिकाऊण परूविया, अयंपिरो नाम अजंपणसीलो, तहा जं अफासुयं कीयमुद्देसियं आहडं च तं णो

भुंजेज्जा, 'एगग्गहणे गहणं तज्जतीयाण'मितिकाउं सेसावि अफासुएसु दोसा गहिया। किंच- 'संनिहिं च न कुव्विज्जा०' ॥ ३५८ ॥ सिलोगो, सन्निहिज्जतीति सन्निधी-गुलघयतिल्लादीणं दव्वाणं परिवासणंति, अणुसद्दो थोवत्थे वट्टइ, तं थोवमवि णो परिवसेज्जा, किमंग पुण बहुयंति ?, मुद्दाजीवी जहा पढमाए पिंडेसणाए, असंबद्धे णाम जहा पुक्खरपत्तं तोएणं न संबज्झइ एवं गिहीहिं समं असंबद्धेण भवियव्वंति, 'जगनिनिस्सिए' णाम तत्थ पत्ताणि लभिस्सामोत्तिकाऊण गिहत्थाण णिस्साए विहरेज्जा, न तेहिं समं कुंटलाइं करेज्जा। किंच- 'लूहवित्ती सुसंतुट्ठे०' ॥ ३५९ ॥ सिलोगो, तत्थ लूहं चउव्विहं, तंजहा-णाम०ठवणा०दव्व०भावलूहंति, णामठवणाओ गयाओ, दव्वलूहं निप्फावकोद्दवादी, भावलूहं कलहं अब्भक्खाणमादि, एत्थ पुण दव्वलूहेण अधिगारो, सेसा उच्चारियसरिसत्तिकाऊण परूविया, ते णिप्फावकोद्दवातिलूहदव्वे वित्ती जस्स सो लूहवित्ती भण्णइ, णिच्चं साहुणा लूहवित्तिणा भवियव्वं, सुसंतुट्ठो णाम जो जेण वा तेण वा आहारिएण संतोसं गच्छइ सो सुसंतुट्ठो भण्णइ, सव्वकालं संतुट्ठो भवेज्जा, न दीणमणसोत्ति, भणियं वेहं-'जं च तं च आसिया' गाहा, तहा अप्पिच्छोवि होज्जा, अप्पिच्छो णाम जो जस्स आहारो ताओ आहारयमाणाओ ऊणमाहारेमाणो अप्पिच्छो भवति, सुभगे नाम अप्पिच्छित्तणेण सुभगो भवइ, सिया नाम भविज्जत्ति वुत्तं भवति, तहा 'आसुरत्तमवि न गच्छिज्जा' तत्थ आसुरो कोहो भण्णइ, तस्स आसुरस्स भावो आसुरत्तं, तमासुरत्तं साहूहिं गिहीहिं वा आसाइओ न गच्छेज्जा, 'सुच्चा णं जिणसासणं'ति, जिणस्स सासणं जिणसासणं, तंमि जिणसासणे कोहविकारं सोऊण, जहा"चउहिं ठाणेहिं जीवा आसुरत्ताए कम्मं पकरेंति, तं०-कोहसीलयाए तहा माणा जाव जं मए एस पुरिसे अन्नाणी मिच्छादिट्ठी अक्कोसवधरई वा तं ण मम एस किंचि अवरज्झति, किन्तु मम एयाणि वेदणिज्जाणि कम्माणि अवरज्झंतित्ति

सम्ममहियासेमाणस्स णिज्जरा एव भविस्सति'त्ति एवमाइ जिणस्स सासणं सोऊण न आसुरत्तं गच्छियव्वंति। किंच-'कन्नसुक्खेहिं सद्देहिं' ॥ ३६० ॥ सिलोगो, कण्णा पसिद्धा तेसिं कन्नाणं सुहा कन्नसोक्खा तेसु कन्नसोक्खेसु वंसीवीणाइसद्देसु 'पेमं णाभिणिवेसएत्ति' पेमं नाम पेमंति वा रागोत्ति वा एगट्ठा, दारणंणाम दारुणसीलं दारुणं, कक्कसं नाम जो सीउण्हकोसादिफासो सो सरीरं किसं कुव्वईति कक्कसं, तं कक्कसं फासं उदिण्णं काएण अहियासएत्ति, अहवा दारुणसद्दो कक्कससद्दोऽविय एगट्ठा, अच्चत्थनिमित्तं पउञ्जमाणा णो पुणरुत्तं भवइ, तत्थ कण्णसोक्खेहिं सद्देहिंति एतेण आदिल्लस्स सोइंदियस्स गहणं कयं, दारुणं कक्कसं फासंतिएतेण अंतिल्लस्स फासिंदियस्स गहणं कयं, आदिल्ले अंतिल्ले य गहिए ससावि तस्स मज्झपडिया चक्खूघाणजीहा गहिया, कन्नेहिं विरूविहिं रागं ण गच्छेज्जा, एवं गरहा, सेसेसुवि रागं न गच्छेज्जत्ति, जहा एतेसु सद्दाइसु मणुण्णेसु रागं न गच्छेज्जा तहा अमणुण्णेसुवि दोसं न गच्छेज्जा, जहा बाहिरवत्थूसु रागदोसनिग्गहो कम्मखवणत्थं कीरइ तहा कम्मखवणत्थमेव अन्तवट्टियमवि दुक्खं सहियव्वं, तंजहा--' खुहं पिवासं० ' ॥ ३६१ ॥ सिलोगो, खुहा--भुक्खा भण्णइ, पिवासा नाम पाउमिच्छा पिवासा, दुस्सिज्जा नाम विसमभूमि फलगमादी, सीउण्हा पसिद्धा, अरती एतेहिं खुप्पिवासादीहिं भवइ, ' भयं ' सप्पसीहवाघादि वा भवति, एयाणि खुप्पिवासादीणि अहियासेज्जा, ' अव्वहिए (ओ)' त्ति अव्वहिओ नाम अहीणो अविकीवो असीयमाणोत्ति वुत्तं भवति, ' देहदुक्खं महाफलं ' तत्थ देहो सरीरं भन्नइ, तंमि देहे दुक्खं महाफलं--महा मोक्खो भण्णइ, तं मोक्खपज्जवसाणं फलमितिकाऊण खुद्दादिउण्ह(दुक्ख)मधियासेज्जा, सा पुण खुहा कहं सहियव्वात्ति,? 'अत्थंगयंमि आइच्चे०' ॥ ३६२ ॥ सिलोगो, अत्थो णाम पव्वओ, तंमि गतो आदिच्चो अत्थगओ, अहवा अचक्खुविसयपत्थो, अत्थंगते आदिच्चे,

पुरत्थाय अणुदिते, '**आहारमाइयं सव्वं मणसावि ण पत्थए**' जहा कहमेवंविहं आहारं लब्भए?, किमंग पुण वायाए कम्मुणा इति, जहावि इच्छियं आहारं नो लभेज्जा '**अतिंतिणे अचवले०**' ॥ ३६३ ॥ सिलोगो, अलब्भमाणे आहारे पंते वा लब्भमाणे णो टिंबरुयदारुगमिव तिन्तिणो भवेज्जा, कहं ?, जहा टिंबरुदयदारुअं अगणिंमि पक्खित्तं तडतडेती ण साहुणा तहावि तडतडियव्वं, तहा भासियव्वे य कारणे साहुणा अचवलेण भणियव्वंति, **अप्पवादी** नाम कज्जमेत्तभासी, मितासणे नाम मियं असतीति मियासणे, परिमितमाहारातित्तिवुत्तं भवति, अहवा मियासणे भिक्खट्ठाए णिग्गओ कारणे उवट्ठातुं मितं इच्छइ, '**भवेज्ज उदरे दंते**' उदरं पोट्टं, तंमि दंतेण होयव्वं, जेण तेणेव संतुसियव्वंति, '**थोवं लद्धं न खिंसए**' तं वा अण्णं पाणं दायगं वा नो खिंसेज्जा। इयाणिं मदवज्जणट्ठा इमं भन्नइ–'**न बाहिरं परिभवे०**' ॥ ३६४ ॥ सिलोगो, णकारो पडिसेधे वट्टइ, बाहिरो नाम अत्ताणं मोत्तूण जो सो लोगो सो बाहिरो भण्णइ, बाहिरं णो परिभवेज्जा, अत्तुक्करिसं च इमेहिं ठाणेहिं न कुज्जा, तं०-सुतं पाटवं लाभं लद्धं जातिं तवं बुद्धिं, तत्थ सुएण उक्करिसं गच्छेज्जा, जहा बहुस्सुतोऽहं को मए समाणोत्ति, (पाटवेण) लाभेणऽवि को मए अण्णो?, लद्धीएवि जहा को मए समाणोत्ति एवमादिएअहियत्ति लज्जा (द्वी) संजमो भण्णइ, तेणवि संजमेण उक्करिसं गच्छेज्जा, को मए संजमेण सरिसोत्ति?, जातीएवि जहा उत्तमजातीओऽहं, तवेण को अण्णो बारसविधे तवे समाणो मएत्ति ?, बुद्धीएवि जहा को मए समाणोत्ति एवमादि, एतेहिं सुयादीहिं णो उक्करिसं गच्छेज्जा ॥ इदाणिं आभोगणाभोगासेवियत्थमिदमुच्यते– '**से जाणमजाणं वा०**' ॥ ३६५ ॥ सिलोगो, सोत्ति साधुनिद्देसे, तेण साहुणा जाहे जाणमाणेण रागद्दोसवसएण मूलगुणउत्तरगुणाण अण्णतरं आधम्मियं

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ८ आचार प्रणिधौ

॥२८५॥

पयं पडिसेवियं भवइ, अजाणमाणेण वा अकप्पिय बुद्धी ए पडिसेवियं होज्जा, तओ आसवदारेहिं उग्घाडिएहिं कम्ममसुहं आदियमाणमप्पाणं संवरे नाम वितितं च वारं तमकिच्चं नो समायरेज्जा। इयाणिं तस्स सेवियस्स सोहणत्थमिदमुच्यते--' अणायारं परक्कम्मं० ' ॥ ३६६ ॥ सिलोगो, ण आयारो अणायारो उम्मग्गोत्तिवुत्तं भवइ, तं परक्कमं पडिसेविऊण तं पडिविरओ गुरुसगासे आगओ आलोएज्जा, ण पुण गूहेज्जा णिण्हवेज्ज वा, तत्थ गूहणं किंचि कहणं भण्णइ, णिण्हवो णाम पुच्छिओ संतो सव्वहा अवलवइ। 'सुयी सया वियडभावे असंसत्ते जिइंदिए' त्ति सुयीणाम अकलुसमयी, अहवा सो चेव सुई जो सदा वियडभावो, जिइंदिओ णाम जिताणि सोयाईणि इंदियाणि जेण सो जिइंदिओ, गिहीहिं संवसणदाणकारणाईहिं वट्टमाणो संसत्तो, न संसत्तो असंसत्तो, जियाणि सोइंदियादीणि जेण सो जिइंदिओ, सो य साहू आयरियकुले वसमाणो-'अमोहं वयणं कुज्जा' ॥ ३६७ ॥ सिलोगो, अमोहं णाम अवंझंति वुत्तं भवति, आयरिया पसिद्धा, महप्पणो नाम महंतो अप्पा सुयादीहिं जेसिं ते महप्पा तेसिं महप्पणो, अमोहं वयणं कुज्जात्ति, तेहिं जया संदिट्ठो भवइ, जहा मम अमुगं कज्जं करेहि, तओ तेसिं वयणं सिरसा पणमिऊण तहत्ति वायाए परिगिण्हिऊण कम्मुणा उववाएज्जा, आह--किमत्थमयं पयासो?-, आयरिओ भणइ--' अधुवं जीविअं नच्चा० ' ॥ ३६८ ॥ सिलोगो, अधुवं असासयं जीविअं जाणिऊण, सिद्धिमग्गं च णाणदंसणचरित्तमइयं तित्थंकरोवएसेण जाणिऊण, परिमितं च आउं अत्तणो णाउं भोगेहिं कडुयफलविवागेहिं विविहं-अणेगप्पगारं णिव्विसेज्जा, किंच--' जाव जरा न पीलेई० ' ॥ ३७० ॥ सिलोगो, जाव जरा विरूवकारिया नागच्छति, जाव वाधी दुरंतो ण जायति, जाव सोतादि इंदिया अप्पणो पडुच्च विसयं ण हायंति ताव जिणोवदिट्ठं धम्ममायरेज्जात्ति, तस्स य धम्मस्स विप्परिजाणणत्थमिदमुच्यते--'कोहं माणं

आलोचनादि

॥२८५॥

च मायं च०' ॥ ३७१ ॥ सिलोगो, तेसिं कोहादीणमणिग्गहियाणं [च] इहलोइओ इमो दोसो भवइ, तंजहा--' कोहो पीतिं पणासेइ० ' ॥ ३७२ ॥ सिलोगो, कुद्धो तारिसं जोगं जुंजई जेण चिराणुगतावि पीतिं भाइमाइपितादीणं णासइ, ' माणो विणयनासणो ' आयरियाइणं अब्भुट्ठाणादीविणयं नासेइ, मायाए उवचरमाणो सहदारदरिसिणमवि मित्तं, किं पुण जे सेस-मित्तत्ति, लोभो पुण सव्वाणि एयाणि पीतिविणयमित्ताणि नासेइत्ति, तं०-मिउणोविय तायस्स पुत्तो लोभेण रूसेइ, लोभे य अदिज्ज-माणेण पडिण्णमारुभेज्जा, जहा अवस्सं मए भागं दवावेमि, मायाए तमत्थं गिण्हिऊण अवलवेज्जा, अओ लोभो सव्वविणासणो, अहवा इमं लोगं परं वा लोगं दोऽवि लोभेण णासयइत्ति सव्वविणासणो य, जम्हा एते दोसा कोहादीणं अओ--'उवसमेण हणह कोहं०' ॥३७३॥ सिलोगो, उवसमो खमा भण्णइ; तीए कोहस्स उदयनिरोधो कायव्वो, उदयपत्तस्स (वा) विफलीकरणं, माणमवि मद्दवयाए जिणेज्ज, मद्दवया अणुस्सित्तया भण्णइ, तीए मद्दवयाए माणोदयनिरोधो कायव्वो, उदयपत्तस्स विफलीकरणं, मायमवि अज्जवभावेणं, लोभमवि ' संतुट्ठिये जिणे ' ' संतुट्ठी ' णाम संतुट्ठयाए लोभोदयनिरोहो कायव्वो, उदयपत्तस्स विफलीकरणं । इदाणिं तेसिं कोहादीणं परलोगापायोवदरिसणत्थमिदमुच्यते--' कोहो अ माणो अ अणिग्गहीआ० ' ॥ ३७४ ॥ सिलोगो, कोहादि अणिग्गहिता विवड्ढंति, विवड्ढमाणा य चउरोऽवि एते पच्चक्खा ' कसिणा कसाया सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ' कसिणा नाम संपुण्णात्ति, अहवा संकिलिट्ठा कसिणा भवंति, पुणब्भवो संसारो भण्णइ, तस्स पुणब्भवदुमस्स मूलाणि सिंचंति त्ति, तेण य साहुणा कसायनिग्गहपरेण इमं कायव्वं--' रायाणिएसु विणयं पउंजे० ' ॥ ३८५ ॥ सिलोगो, रायाणिआ पुव्वदि-क्खिया सब्भावोवदेसगा वा, जे वा अन्ने पूया, ते सव्वरायाणिएसु विणयं पउंजेज्जा, तहा धुवसीलयमवि णो हावएज्जा, धुवसी-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||३३५-३९८|| दीप अनुक्रम [३५१-४१४]

लयं णाम अट्ठारससीलंगसहस्साणि, तेसु समयं उज्जुत्तो भवेज्जा, ' कुम्मोव्व अल्लीणपलीणगुत्तो, परक्कमिज्जा तवसंजमंमि ' त्ति, जहा कुम्मो सए सरीरे अंगाणि गोवेऊण चिट्ठइ, कारणेवि सणियमेव पसारेइ, तहा साहूवि अल्लीणपलीणगुत्तो परक्कमेज्जा तवसंजमंमित्ति, आह–आलीणाणं पलीणाणं को पइविसेसो ?, भण्णइ, ईसिं लीणाणि आलीणाणि, अच्चत्थलीणाणि पलीणाणित्ति, किंच–' णिद्दं च न बहुमन्निज्जा० ' ॥ ३७६ ॥ सिलोगो, ' णिद्दं च न बहुमन्निज्ज ' त्ति बहुमनिज्जा नाम नो पकामसायी भवेज्जा, तहा ' सप्पहासं विवज्जए ' सप्पहासो नाम अतीव पहासो सप्पहासो, परवादिउद्धंसणादिकारणे जइ हसेज्जा तहावि सप्पहासं विवज्जए, तहा–' मिहोकहाहिं न रमे ' त्ति मिहोकहाओ रहसियकहाओ भण्णंति, ताओ इत्थिसंबद्धाओ वा होज्जा अण्णाओ वा भत्तदेसकहादियाओ तासु ण रमेज्जा, ' अज्झयणंमि रओ सया ' अज्झयणं सज्झाओ भण्णइ, तंमि सज्झाए सदा रतो भविज्जत्ति, ' जोगं च समणधम्मंमि० ॥ ३७७ ॥ सिलोगो, जोगो विविहो तस्स जत्तत्थि दसविहे समणधम्मे उवयोगो तत्थ जुंजेज्जा । इदाणिं समणधम्मफलोवदरिसणत्थमिदमुच्यते–' जुत्तो अ समणधम्मंमि '-त्ति, जुत्तो दसविधे समणधम्मे साहू, इहलोइयं परलोइयं अत्थं अणुत्तरं णाम अणुत्तरंति अणुत्तमंति वा एगट्ठा, तं च फलमिमेण भण्णइ, तं०–'इहलोगपारत्तहिअं' ॥ ३७८ ॥ सिलोगद्धं, इहलोगपरलोइयं सुहनिवहं फलं पावइ सो, जेण सुगतिमरणं भवतित्ति, किंच—' बहुस्सुयं पज्जुवासिज्जा० ॥ ३७८ ॥ सिलोगपच्छद्धं, बहुसुयगहणेणं आयरियउवज्झायादीयाण गहणं, एवंविहं बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा, पज्जुवासमाणो य अत्थविणिच्छयं पुच्छिज्जा, विणिच्छओ णाम विणिच्छओत्ति वा अवितहभावोत्ति वा एगट्ठं, सो य पज्जुवासणोवायो इमो, तं०—'हत्थं पायं च०,' ॥ ३७९ ॥ सिलोगो,

*** अत्र श्रमणधर्मस्य फ़लम् वर्णयते

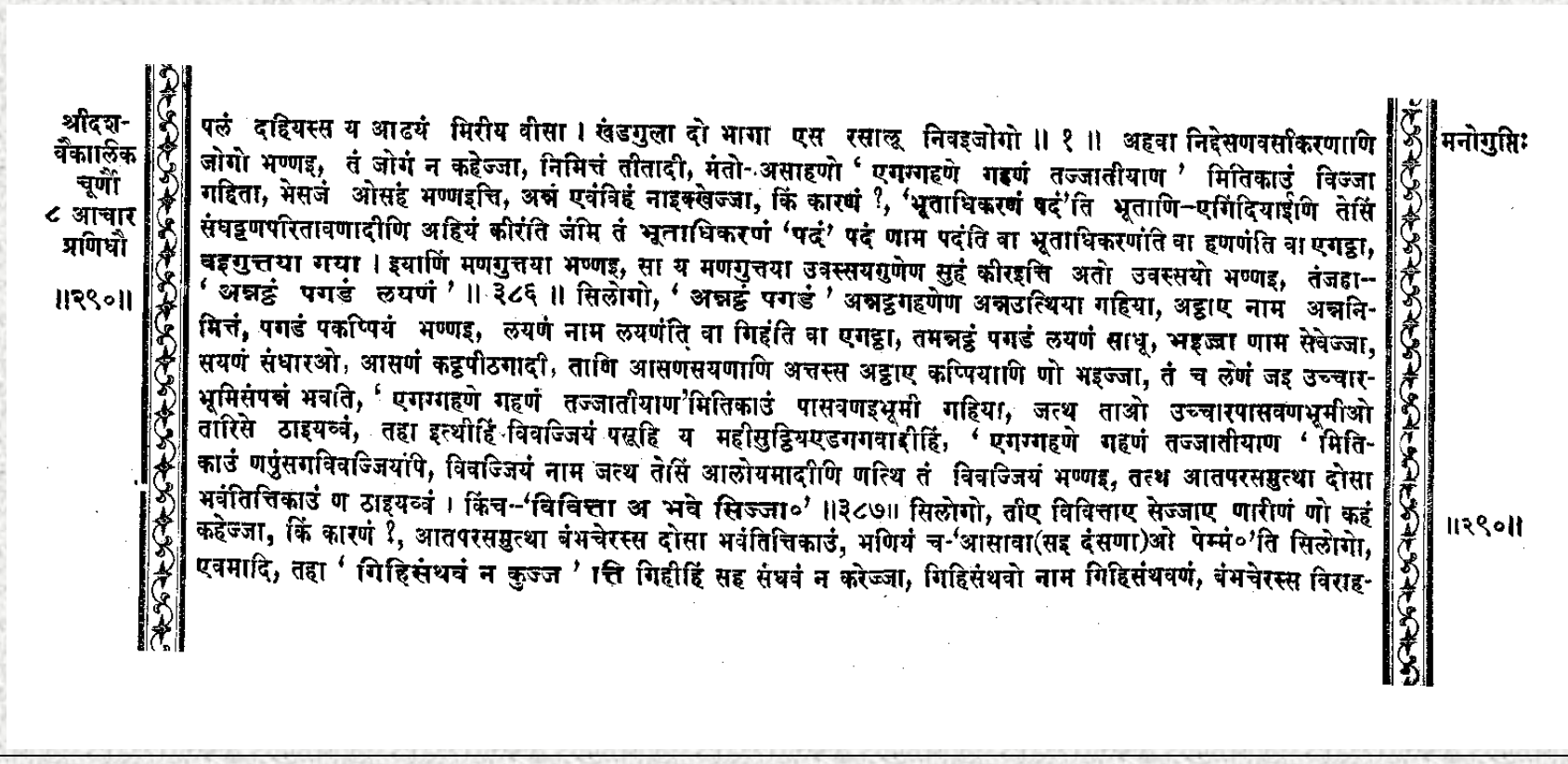
हत्थो पायो कायो य पसिद्धा, ते हत्था पाया काया पणिहाय 'जिइंदिए' त्ति, पणिहाय णाम हत्थेहिं हत्थवट्टगादीणि अकरं पाएहिं पसारणादीणि अकुव्वंतो कारणं सासणट्ठगादीणि अकुव्वंतो, जियाणि इंदियाणि जेण सो जिइंदिओ, अल्लीणो नाम ईसिलीणो अल्लीणो, णातिदूरत्थो ण वा अच्चासण्णो, गुत्तो णाम मणसा असोभणं संकप्पं वज्जयंतो वायाए कज्जमेत्तं भासंतो, णिसीएज्जा णाम उवविसेज्जत्ति, सकासे नाम समीवे, गुरू पसिद्धो, गुणित्ति वा णाणित्ति वा एगट्ठा। किंच-'न पक्खओ न पुरओ०' ॥ ३८० सिलोगो, णकारो पडिसेहे वट्टइ, पक्खओ नाम पासओ, पासओ चिट्ठमाणस्स इमे दोसा भवंति, तं०-कच्चसमं भासमाणस्स सहा पोग्गला कच्चं अणुपविसंति, तेसिं च कण्णं अणुपविसमाणेहिं अणेगता भवइ, एवमादि, तहा पुरओऽवि न वट्टइ, पुरओ नाम अग्गओ, तत्थवि अविणओ वंदमाणाणं च वग्घाओ, एवमादि दोसा भवंतित्तिकाऊण पुरओ गुरूण नवि चिट्ठेज्जत्ति, 'णेव किच्चाण' किच्चा आयरिया तेसिंपि पिट्ठओ न चिट्ठणादीणि कुज्जा, तत्थ अविणयदोसा भवंतित्ति, 'ण य ऊरुं समासिज्जा' णाम ऊरुगं ऊरुस्स उवरिं काऊण ण गुरुसगासं चिट्ठेज्जत्ति, तत्थवि अविणयदोसा भवंतित्ति, कायपणिधी गया। इदाणिं वायाए पणिधी भण्णइ-'अपुच्छिओ न भासेज्जा०' ॥ ३८१ ॥ सिलोगो, 'अपुच्छिओ' णिक्कारणे ण भासेज्जा, भासमाणस्स अंतरा भासं ण कुज्जा, जहा जं एयं ते भणितं एयं न, एवं 'पिट्ठिमंसं ण खाएज्जा', जं परंमुहस्स अवबोलिज्जइ तं तस्स पिट्ठिमंसभक्खणं भवइ, तहा-'मायामोसं विवज्जए' मायाए सह मोसं मायामोसं, न मायामंतरेण मोसं भासइ, कहं?, पुव्विं भासं कुडिलीकरेइ पच्छा भासइ, अहवा जं मायासहियं मोसं तं विवज्जए, जं पुण इतरहा भासेज्जा, जहा जं एयं ते भणितं एयं न, एवं पिट्ठिमंसाण अह अप्पत्तियआसुकोवाण को पतिविसेसो ?, भण्णइ-'अप्पत्तियं०' ॥ ३८२ ॥ सिलोगो, अप्पत्तियमेव

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

आसुकोहो पुणा तक्खणमेव अकोसइ आहणति वा, **'सव्वसो तं न भासेज्जा, भासं अहिअगामिणिं'** ति, सव्वसो नाम सव्वकालं सव्वावत्थासु, अहितगामिणिं भासं ण भासेज्जा, अहियगामिणी नाम इहलोगपरलोगमहितगामिणी । इदाणिं भासणोवायो भन्नति-**'दिट्ठं मितं०'** ॥ ३८३ ॥ सिलोगो, दिट्ठं नाम जं चक्खुणा सयं उवलद्धं, मितं दुविहं-सद्दओ परिमाणओ य, सद्दओ अणुव्वं उच्चारिज्जमाणं मितं, परिमाणओ कज्जमेत्तं उच्चारिज्जमाणं मितं, **असंदिद्धं** णाम निस्संकियं, पडुप्पन्नं णाम सरवंजणपयादीहिं उववेअं, **वियंजितं** णाम वियंजिसंति वा तत्थंति वा एगट्ठा, अजंपिरं नाम जं नो अलग्गविलग्गं, अणुव्विग्गं नाम अवलं अभीयं, भासा पसिद्धा णिसिरे णाम भासतित्ति वुत्तं भवति, अत्तवं नाम अत्तवंति वा विन्नवंति वा एगट्ठा, एस वइपणिधी अविसेसेण भणिता, इमा सपक्खे भण्णइत्ति-**'आयारपन्नत्तिधरं०'** ॥ ३८४ ॥ सिलोगो, **'आयारपन्नत्तिधरं'** ति आयारधरो इत्थिपुरिसणपुंसगलिंगाणि जाणइ, अधिज्जियगहणेण अधिज्जमाणस्स वयणखलणा पायसो भवइ, अधिज्जिए पुण निरवसेसे दिट्ठिवाए सव्वपयोयजाणणत्तणेण अप्पमत्तणेण य वतिविक्खलियमेव नत्थि, सव्ववयोगतवियाणया असद्दमवि सद्दं कुज्जा, वायविक्खलियं नाम विविधमनेगप्पगारं वइणं खलियं भण्णइ, जहा घडं आणेहित्ति (भाणियव्वे घडं आणेमित्ति) भणियं, पुव्वाभिहाणं वा पच्छा उच्चारयइ, जहा सोमसम्मोत्ति भणियव्वे सम्मसोमोत्ति भणियं च, एवमादि वायविक्खलियं नाऊण न तं उवहसे मुणित्ति, जइ आयारपन्नत्तिधरा दिट्ठिवायमधिज्जगा य भाणियव्वे स्खलंति किमंग पुण सेसगा ? । किंच-- **' नक्खत्तं सुमिणं '** ॥ ३८५ ॥ सिलोगो, गिहत्थाण पुच्छमाणाण णो णक्खत्तं कहेज्जा, जहा चंदिमा अज्ज अमुकेण णक्खत्तेण जुत्तोत्ति, अहातच्चे पदाणे चिंता, सुमिणे अव्वत्तदंसणे, एतेसिं सुमिणादीणं विवागं फलं च, जोगो जहा ' दो घयपला मधु

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||३३५-३९८|| दीप अनुक्रम [३५१-४१४]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ८ आचार प्रणिधौ ॥२९०॥

पलं दहियस्स य आढयं मिरीय वीसा । खंडगुला दो भागा एस रसालू निवइजोगो ॥ १ ॥ अहवा निद्देसणवसीकरणाणि जोगो भण्णइ, तं जोगं न कहेज्जा, निमित्तं तीतादी, मंतो-असाहणो ' एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण ' मितिकाउं विज्जा गहिता, भेसजं ओसहं भण्णइत्ति, अन्नं एवंविहं नाइक्खेज्जा, किं कारणं ?, 'भूताधिकरणं पदं'ति भूताणि-एगिंदियाईणि तेसिं संघट्टणपरितावणादीणि अहियं कीरंति जंमि तं भूताधिकरणं 'पदं' पदं णाम पदंति वा भूताधिकरणंति वा हणणंति वा एगट्ठा, वइगुत्तया गया । इयाणिं मणगुत्तया भण्णइ, सा य मणगुत्तया उवस्सयगुणेण सुहं कीरइत्ति अतो उवस्सयो भण्णइ, तंजहा-- ' अन्नट्ठं पगडं लयणं ' ॥ ३८६ ॥ सिलोगो, ' अन्नट्ठं पगडं ' अन्नट्ठगहणेण अन्नउत्थिया गहिया, अट्ठाए नाम अन्ननिमित्तं, पगडं पकप्पियं भण्णइ, लयणं नाम लयणंति वा गिहंति वा एगट्ठा, तमन्नट्ठं पगडं लयणं साधू, भइज्जा णाम सेवेज्जा, सयणं संधारओ, आसणं कट्ठपीठगादी, ताणि आसणसयणाणि अत्तस्स अट्ठाए कप्पियाणि णो भइज्जा, तं च लेणं जइ उच्चारभूमिसंपन्नं भवति, ' एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण'मितिकाउं पासवणइभूमी गहिया, जत्थ ताओ उच्चारपासवणभूमीओ तारिसे ठाइयव्वं, तहा इत्थीहिं विवज्जियं पसूहि य महीसुट्ठियएडगगवादीहिं, ' एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण ' मितिकाउं णपुंसगविवज्जियंपि, विवज्जियं नाम जत्थ तेसिं आलोयमादीणि णत्थि तं विवज्जियं भण्णइ, तत्थ आतपरसमुत्था दोसा भवंतित्तिकाउं ण ठाइयव्वं । किंच--'विवित्ता अ भवे सिज्जा०' ॥३८७॥ सिलोगो, तीए विवित्ताए सेज्जाए णारीणं णो कहं कहेज्जा, किं कारणं ?, आतपरसमुत्था बंभचेरस्स दोसा भवंतित्तिकाउं, भणियं च-'आसावा(सइ दंसणा)ओ पेम्मं०'ति सिलोगो, एवमादि, तहा ' गिहिसंथवं न कुज्ज ' त्ति गिहीहिं सह संथवं न करेज्जा, गिहिसंथवो नाम गिहिसंथवणं, बंभचेरस्स विराह-

मनोगुप्तिः

॥२९०॥

वचन-मनो-कायगुप्ते: वर्णनं क्रियते

णादि दोसा भवंतित्ति, तं गिहिसंथवं वज्जयंतो कुज्जा साहूहिं संथवं, समणाणं संथवंति, (वज्जणिज्जा) वसहीसु सव्वपगारेण इत्थीओ, कम्हा?,'जहा कुक्कुडपोअस्स०'॥३८८॥सिलोगो, कुक्कुडो पसिद्धो, पोतो णाम अपक्खजायओ, जहा तस्स कुक्कुड-पोतस्स निच्चं-सव्वकालं ' कुललओ भयं ' तत्थ कुललो मज्जारो भण्णइ, एवं बंभयारिस्स सव्वकालं इत्थीविग्गहओ भयंति, विग्गहो सरीरं भण्णइ, आह- इत्थीओ भयंति भाणियव्वे ता किमत्थं विग्गहग्गहणं कयं ?, भण्णइ, न केवलं सज्जीवइत्थी-समीवायो भयं, किन्तु ववगतजीवाएवि सरीरं ततोऽवि भयं भवइ, अओ विग्गहगहणं कयंति। किंच 'चित्तभित्तिं न णिज्झाए०' ॥ ३८९ ॥ सिलोगो, जाए भित्तीए चित्तकया नारी तं चित्तभित्तिं ण णिज्झाएज्जा, जीवंतिं च जाहे सोभणेण पगारेण हारद्ध-हाराईहिं अलंकिया दिट्ठा भवइ ताहे तं नारिं सुयलंकितं तं वा तं वा चित्तभित्तिगयं **'भक्खरंपिव दट्ठूणं दिट्ठिं पडिसमा-हरे '** त्ति, तत्थ भक्खरो आइच्चो भण्णइ, जहा तंमि भक्खरे निवइया दिट्ठी उवघायभया पडिया साहरिज्जइ तहा चित्तकम्म-गयंकं नारीं सजीवं वा अभूसियं भूसियं वा दट्ठूणं बंभचेराविराहणभया दिट्ठीं पडिसाहरेज्जा। ' **हत्थपादपलिच्छिन्नं०** ' सिलोगो, जीए नारीए हत्थपाया पलिच्छिन्ना सा हत्थपायपलिच्छिन्ना, न केवलं हत्थपादपलिच्छिन्ना, किन्तु कण्णनासा विविधं-अणेगप्पगारं कप्पिया जीए सा कन्ननासाविकप्पिया, तमेवप्पगारं हत्थादिछिन्नं अवि वाससयमवि नारिं दूरओ परिवज्जए, अविसद्दो संभावणे वट्टइ, किं संभावयति ?, जहा जइ हत्थादिछिन्नावि वाससयजीवी दूरओ परिवज्जणिज्जा, किं पुण जा अपलिच्छिन्ना वयत्था वा?, एयं संभावयति। किंच— ' **विभूसा इत्थिसंसग्गी०** ' ॥३९१॥ सिलोगो, विभूसा नाम ण्हाणु-व्वलणउज्जलवेसादी, इत्थिसंसग्गी नाम अक्खाइगउल्लावादी, पणियं निद्धपेसलं वण्णादिउववेयं, पणीय एव रसो जस्स

भोयणस्स तं पणीतरसभोयणं, एताणि विभूसाईणि ' घारस्सऽत्तगवेसिस्स ' त्ति तत्थ **अत्तगवेसणो** णाम णरगेसु पडमाणं अत्ताणं गवेसतीति अत्तगवेसिणो, अहवा मरणभयभीतस्स अत्तणो उवायगवेसित्तेण अत्ता सुट्ठु वा गवेसियो जो एएहिंतो अप्पाणं विमोएइ तस्स नरस्स हियगवेसियस्स एताणि विभूसाईणि ' **विसं तालपुडं जहत्ति** ' **तालपुडं** नाम जेणंतरेण ताला संपुडिज्जंति तेणंतरेण मारयतीति तालपुडं, जहा जीवियकंखिणो नो तालपुडविसभक्खणं सुहावहं भवति तहा धम्मकामिणो नो विभूसाईणि सुहावहाणि भवंतित्ति । तहा— ' **अंगपच्चंगसंठाणं०** ' ॥ ३९२ ॥ सिलोगो, तत्थ अंगाणि हत्थपायादीणि, पच्चंगाणि णयणदसणाईणि, संठाणं समचउरंसाइं, अहवा तेसिं चेव अंगाणं पच्चंगाण य संठाणगहणं कयंति, चारुसद्दो सोहणत्थे वट्टइ, लवियं भासियं पेहियं, एतेहिं जं अंगपच्चंगसंठाणादीणं अण्णतरं तं णो इत्थीणं निज्झाएज्जा, किं कारणं ?, जम्हा— ' **कामरागविवड्ढणं** ' ति । किंच— ' **विसएसु मणुण्णेसु०** ' ॥ ३९३ ॥ सिलोगो, सद्दादिसु विसएसु मणुन्नेसु ण पेमं अभिनिवेसेज्जा, पेमं नाम पेमंति वा रागोत्ति वा एगट्ठा, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण'मितिकाउं अमणुन्नेसुवि दोसं न गच्छेज्जा, आह-ननु कण्णसोक्खेहिं चेव एस अत्थो भणिओ, किमत्थं पुणो गहणं कयंति?, आयरिओ आह—' पुव्वभणियं तु जं भण्णइ तत्थ कारणं अत्थि, पडिसेधो अणुण्णा कारणं च विसेसोवलंभत्थं, पुणरुत्तदोसो न भवइ सो य विसेसोवलंभो इमो, तं०-' **अणिच्चं तेसिं विन्नाय, परिणामं पुग्गलाण उ** ' सद्दादीणं इंदियविसयाणं जे पोग्गला तेसिं जो परिणामो, मणुन्ना नाम निच्चं नाऊण रागो ण कायव्वो, अमणुन्नपरिणामे य दोसो न कायव्वो, भणियं च ' ते चेव सुब्भिसद्दा पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, दुब्भिसद्दा पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, ण पुण जे मणुन्ना ते मणुन्ना

*** अत्र 'विषय'वर्जनं वर्णयते

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ८ आचार प्रणिधौ

॥२९३॥

चेव भवंति, अमणुन्ना वा अच्चंतममणुन्ना एव भवंति, एवं रूवादिसुवि भाणियव्वं,' अतो 'पोग्गलाणं तु परिणामं०' ॥३९४॥ सिलोगो, पोग्गला पसिद्धा, परिणामो भावंतरगमणं, तेसिं पुव्वभणियाणं गहणं कयं, णच्चा णाम णाऊणंति, जहा तहा णाम जहा तेसिं वण्णगंधादीणं परिणामो जिणेहिं भणिओ तहा णाऊणं, 'विणीयतण्हो विहरेज्जा' तेसु सद्दादिसु विसएसु तण्हं विणेऊण विहरेज्जा, 'सीईभूएण अप्पणा' इति, तत्थ सीओ विज्झाओ भण्णइ, जहा अगणी सीतो अदाहगो भवइ, विणीयतण्हो विहरेत्ति, कोहादीहिं सीतभूअप्पणा विहरियव्वंति। आह–केवइयं विहरियव्वं?, भण्णइ–'जाए(इ)सद्धाइ निक्खंतो०' ॥ ३९५ ॥ सिलोगो, 'जाए' त्ति आणिद्दिट्ठाए गहणं, सद्धा परिणामो भन्नइ, निक्खंतो णाम णिक्खंतोत्ति वा पव्वइओत्ति वा एगट्ठा, 'परियायट्ठाणं' णाम पव्वज्जाठाणं, उत्तमं णाम पधाणं, तमेव अणुपालिज्जत्ति, तमेव परिआयट्ठाणमणुपालेज्जा, तं च परियायट्ठाणं मूलगुणा उत्तरगुणा य, ते गुणा अणुपालेज्जा, 'आयरिअसंमओ' त्ति आयरिया नाम तित्थकरगणधराई तेसिं संमए नाम संमओत्ति वा अणुमओत्ति वा एगट्ठा। इयाणिं आयारपणिधीए फलं भण्णइ–'तवं चिमं संजमजोगयं च' सिलोगो, तवंपि संजमट्ठं, जो खुहपिवासाई तवो भणिओ तं तवं, पुढविकायादिसंजमजोगो तं च, पंचविहसज्झायजोगं च सदा अहिट्ठए, आह–णणु तवगहणेण सज्झाओ गहिओ?, आयरिओ आह–सच्चमेयं, किन्तु तवभेदोपदरिसणत्थं सज्झायगहणं कयं, सो एवं तवसंजमस्स य जोगजुत्तप्पा 'सूरे व सेणाइ समत्तमाउहे, अलमप्पणो होइ अलं परेसिं' ति, जहा कोई पुरिसो चउरंगबलसमन्नागताए सेणाए अभिरुद्धो संपन्नाउहो असं (सूरो अ) सो अप्पाणं परं च ताओ संगामाओ नित्थारेउन्ति अलं नाम समत्थो, तहा सो एवंगुणजुत्तो अलं अप्पाणं परं च इंदियकषायसेणाए अभिरुद्धं नित्थारेउंति। तहा 'सज्झायसज्झा-

विषयवर्जनं

॥२९३॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||३३५-३९८||

दीप अनुक्रम [३५१-४१४]

णरतस्स० ' ॥ ३९७ ॥ सिलोगो, सज्झाओ चेव सज्झाणं तंमि रतस्स, अहवा सज्झाए य झाणे य सज्झायज्झाणे य रयस्सत्ति, ' ताइणो ' तायतीति ताया तस्स ताइणोत्ति, अपावो भावो जस्स सो अपावभावो तस्स अपावभावस्सत्ति, तवो बारसविहो तंमि रतस्स गहणं, सित्ति साहुणो निद्देसो, मलंति वा पावंति वा एगट्ठा, पुव्विं कयं पुरेकयं तस्स पिहियासवस्स नवं ण उवचिज्जइ, पुरेकडं विसुज्झइ, ' **समीरियं रुप्पमलं व जोइणा** ' (जहा रुप्पमलं जोइणा) समीरिअं भवइ, तत्थ जोती अगणी भण्णइ, **समीरियं** नाम सामं, अगणी मलावकरिसणसमत्थेण ताव तं ' **से तारिसं** ' (स)० ॥३९८॥ सिलोगो, सेत्ति साधुणो निद्देसो, तारिसो जो इदाणिं हेट्ठा तवसंजमादिजुत्तप्पा भणिओ, दुक्खं सारीरं वा सहतीति दुक्खसहे, सोतादीणि जियाणि इंदियाणि जेण सो जिइंदिए, सुतं दुवालसंगं गणिपिडगं तेण जुत्तेण, तस्स ममत्तं कत्थ भवतीति अतोऽममे अकिंचणे, किंचणं चउव्विधं तं०–णाम० ठवण० दव्व० भाव० भेदात्, तत्थ दव्वकिंचणं हिरण्णादि, भावकिंचणं मिच्छत्तअविरतीमादि, तं दव्वकिंचणं भावकिंचणं च जस्स णत्थि सो अकिंचणो, एवंगुणजुत्तो साहू विमुच्चइ पुव्वकडेण कम्मुणत्ति, अट्ठविधेण कम्मुणा विसेसेण मुच्चइ विमुच्चइ । कहं ?, जहा– '**कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमि**' ति कसिणाणं अब्भाणं पुडं कसिणब्भपुडं कसिणब्भपुडमुक्को जहा सरए ससी सोभति सोऽवि कम्ममेहपुडावग्गमे विरायतित्ति, बेमि नाम तीर्थंकरोवदेशात् सुधर्मस्वामिन उपदेशाच्च ब्रवीमि, न स्वाभिप्रायेणेति । इयाणिं णया–' णायंमि गिण्हियव्वे अगिण्हियव्वंमि चेव अत्थंमि । जइतव्वमेव इइ जो उवएसो सो णयो नाम ॥१॥ सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं निसामेत्ता । तं सव्वनयविसुद्धो, जं चरणगुणट्ठिओ साहू ॥२॥

इति दशवैकालिकचूर्णौ आचारप्रणिध्यध्ययनचूर्णी समाप्ता ॥

अध्ययनं -८- परिसमाप्तं

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ९ अध्य. ॥२९५॥

एतेण य आयारविणयो नायव्वो, नाऊण य जेसिं पभावेण आयारे ठिओ तेसिं संबंधेणागयस्स अज्झयणस्स चत्तारि अणुयोगद्दारा भाणियव्वा जहा आवस्सए णवरं णामणिप्फन्ने विणयसमाधी, दो पदा-विणओ समाधी य, दोण्हंपि पदाणं इमो निक्खेवो **'विणयस्स समाहीए०'** ॥ ३११ ॥ गाथापुव्वद्धं, विणयस्स समाहीए य दोण्हवि चउक्कओ निक्खेवो भवइ, तत्थ विणयस्स ताव चउक्कओ निक्खेवो भन्नइ, तं०-णामविणओ ठवणाविणओ दव्वविणओ भावविणओत्ति, नामठवणाओ गयाओ, दव्वविणओ इमेण गाहापच्छद्धेण भण्णइ- तं०- **दव्वविणयंमि तिणिसो**, जं दव्वं इच्छिएण परिणामेण परिणमइ तं दव्वविणयं भण्णइ, जहा तिणिसो रहंगेसु जत्थ जत्थ पडिहायइ तत्थ तत्थ परिकम्मेऊण कीरइ, तहा सुवण्णदव्वमवि विणयं, तत्थवि जं जं कुंडलाई पडिहायति तं तं कीरइ, आदिग्गहणेण अन्नाणिवि रूप्पमाईणि गहियाणि, **दव्वविणओ गओ**। इदाणिं भावविणओ भण्णइ- **'लोगोवयारविणओ०'** ॥ ३१२ ॥ गाथा, लोकोपचारविणओ अत्थविणओ कामविणओ भयविणओ मोक्खविणओ य, तत्थवि लोगोपचारविणओ इमो, तं०- **'अब्भुट्ठाणं अंजलि०'** ॥ ३१३ ॥ गाहा, अब्भुट्ठाणं णाम जं अब्भुट्ठाणारिहस्स आगयस्स अभिमुहं उट्ठाणं, अंजलियं उट्ठिओ वा निसन्नो वा कुज्जा, आसणदाणं पायसो सव्वस्स गिहमागयस्स कीरइ, तहा अतिहिस्स आगतस्स दिवसं दो वा दिवसे भत्तवसहिमादीहिं संपूयणं कीरइ, तहा जो जस्स देवो तस्स पुव्वं बलिवइस्सदेवाति काउं जहाविभवेण पच्छा भुंजइ, एस अब्भुट्ठाणाइ देवयपूयापवज्जसाणो लोगोपचारविणओ भणिओ। इदाणिं अत्थविणओ भण्णइ- **'अब्भासवित्तिछंदाणुवत्तणं०'**॥३१४॥ गाहा, जं अत्थं भावे निवेसिऊण रायाईणं विणयं करेइ सो अत्थविणओ भण्णइत्ति, तत्थ पढमं अब्भासे विणओ भण्णइ-अब्भासं णाम आसन्नं, तंमि आसन्ने वट्टतीति अब्भासवत्ती, जहा अमच्चो रायादीणं, किंकरा आणत्तियं

लोकोपचार विनयः ॥२९५॥

अध्ययनं -९- 'विनय-समाधि' आरभ्यते

*** अत्र विनयस्य विविध-भेदा: वर्णयते

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ९ अध्य. ॥२९६॥

पडमाणं पडिच्छमाणा अच्छंति जं तं छंदाणुवत्तणं, छंदाणुवत्तणं णाम छन्दो अभिप्पाओ भण्णइ, तस्स अणुवत्तणं छन्दाणुवत्तणं, जहा एक्को रायाणं उलग्गइ, रन्ना भणियं- निप्पयोयणाणि एताणि वातिंगणाणि, ओलगएण भणियं-देव! छड्डियव्वनिमित्तं एतेसिं एतेंडा कया, अन्नया रन्ना भणियं-लट्ठाणि वातिंगणाणि, ततो ओलग्गएण भणियं--देव ! अहट्ठगा एते तरंति, एवमादि छंदाणुवत्तणाविणओ भवइ, 'देसकालदाणं' णाम जदा रण्णो विदेसगतस्स कालं वा तारिसं पप्प णाणएण कज्जं भवइ तदा भण्णति-सामि ! तुब्भंचएणं पभावेण इमं अत्थि एयं घेप्पउ, सो तं गिण्हिउं पच्छा बहुतरगं देइ, णिओए वा तारिसे वा वयति, तत्थ बहुतरं उप्पज्जति, एवमादि, तहा अत्थनिमित्तमेव राईसराईणं उलग्गया अब्भुट्ठाणं कुव्वंति, तहा 'अञ्जलिं' देवत्ति अंजलिं कुव्वंति, तहा उवेसिउकामस्स आसणं उवणेंति, एयाणि अब्भासवत्तिमादीणि आसणपदाणपज्जवसाणाणि अत्थस्स कारणे कुव्वंतित्ति, अत्थविणओ गओ। इदाणिं कामविणओ भण्णइ, कामविणओ य इमेण गाहापुव्वद्धेण भण्णइ, तंजहा- 'एमेव कामविणओ०' ॥ ३१५ ॥ गाहा, जहा अत्थनिमित्तं अब्भासवत्तिमाईणि कुव्वंति तहा कामनिमित्तं इत्थीणं अब्भासवत्तिचत्तणं कुव्वंति, भणियं च- 'अंबं वा निंबं वा अब्भासगुणेण तु णूणमल्लियइ। वल्लिसमा किर महिला मा हु पवासे चिरं कासी ॥ १ ॥' ततो माहुज्जेण महिलाजणो हीरइत्तिकाउं छन्दाणुवत्तणमवि कुव्वंति, देसे काले च वासादीणि अत्थं दलयंति, एवं अब्भुट्ठाणं अंजलिपग्गहआसणप्पदाणेण गणियादीहिं हीरंति, भयविणए दासभयगादि अब्भासवत्तिचत्तणमादीणि कुव्वंति, कामविणयभयविणया गया दोऽवि। इदाणिं मोक्खविणओ भण्णइ-तं०-'मोक्खंमिऽवि पंचविहो०'॥ गाथापच्छद्धं, मोक्खविणओ पंचविधो भवति, तस्स इमा परूवणा-तंजहा-'दंसणनाणचरित्ते०' ॥३१६॥ गाहा, सो पंचविहो मोक्खविणओ इमो, तंजहा-दंसणविणओ

अर्थादि-विनयाः

॥२९६॥

नाणविणओ चरित्तविणओ तवविणओ उवयारविणओत्ति, तत्थ नादंसणिस्स नाणं चरित्तं च भवतित्तिकाउं दंसणविणओ पुव्वं भणइ, सो य इमो, तंजहा–'दव्वाण सव्वभावा०' गाहा, (३१७) दव्वा दुविधा, तंजहा–जीवदव्वा अजीवदव्वा य, तेसिं दव्वाणं 'सव्वभावा' सव्वभावा णाम सव्वपज्जायत्ति, ते दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ य, जे जहा जिणवरेहिं दिट्ठा भावा ते तहा सद्दहमाणस्स दंसणविणओ भवति, दंसणविणओ गओ। इदाणिं णाणविणओ भण्णइ, तंजहा—'नाणं सिक्खइ०' ॥३१८॥ गाहा, जं नाणं साहू सिक्खेइ(अ)पुव्वागमं करेइ, तमेव सिक्खितं गुणाति, गुणाति णाम गुणेतित्ति वा परियट्टतित्ति वा एगट्ठा, तेण णाणेण किच्चाणि-संजममाइयाणि कुव्वति, तदुवएसेणंति वुत्तं भवति, तदुवउत्तो य नाणी णवं अट्ठविधं कम्मं न बंधई, पुराणं च निज्जरेइ, जतो य एवं अतो णाणविणओ भण्णइ, णाणविणओ गओ। इयाणिं चरित्तविणओ भण्णइ--अट्ठविहं कम्मचयं (रयं)० ॥ ३१९ ॥ गाथा, जम्हा चरित्ते जयमाणो अट्ठविहकम्मचयं--पुंजं जाव रित्तं करेइ, अन्नं च नवं न बंधति, तम्हा चरित्तमेव विणओ भण्णतित्ति, चरित्तविणओ गओ। इदाणिं तवविणओ भण्णइ, तंजहा—'अवणेति०' ॥ ३२० ॥ गाथा कण्ठ्या, तवविणओ गओ। इदाणिं उवयारविणओ भण्णइ, तंजहा—'अह ओवयारिओ खलु (पुण)०' ॥ ३२१ ॥ गाहा, अहसद्दो अधिगारे वट्टइ, जहा तवविणआ ओवयारिओ अणंतरोत्ति, सो य ओवयारियविणओ दुविधो, तंजहा—'पडिरूवजोग-जुंजण तहय अणासायणाविणओ' त्ति, तत्थ पडिरूवजोगजुंजणाविणओ भण्णइ, तंजहा—'पडिरूवो खलु विणओ०' ॥ ३२२ ॥ गाहा, पडिरूवविणओ तिविधो, तंजहा—काइओ वाइओ माणसिओ, तत्थ काइओ अट्ठविधो, चउव्विहो वाइओ, माणसिओ दुविधो, एतेसिं तिण्ह परूवणा कायव्वा, तत्थ काइयस्स इमा परूवणा, तंजहा—' अब्भुट्ठाणं अंजलि० ' ॥३२३॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ९ अ उ.१

॥२९८॥

गाहा, सो य अट्ठप्पगारो कायविणओ, तंजहा—अब्भुट्ठाणं अंजलि आसणदाणं अभिग्गहो किईकम्मं सुस्सूसणा अणुगच्छणं संसाहणंति, तत्थ अब्भुट्ठाणं अभिमुहमागच्छंतस्स उट्ठाणं अब्भुट्ठाणं, अंजली हत्थुस्सेहो भण्णइ, आसणदाणं कट्ठपीढगाईणं अणुप्पयाणं भण्णइ, अभिग्गहो जहा आयरियाणं अमुगं कायव्वं एवमादि, किइकम्मं वंदणयं भण्णइ, तस्स णातिदूरे ठाइउं जं पज्जुवासणं सा सुस्सूसा भण्णइ, अभिमुहमागच्छंतस्स आसणपच्चुग्गहणं तमणुगच्छणं भवति, गच्छमाणस्स जं अणुव्वयणं तं संसाहणं भण्णइ, कायविणओ अट्ठविहो गओ। इयाणिं वाइयविणओ इमेण गाहापुव्वद्धेण भण्णइ, तंजहा—'हिअमिअ०' ॥ ३२४ ॥ अद्धगाथा, सो पुव्वसूइओ चउव्विहो विणओ इमो, तंजहा–हियभासी मितभासी अफरुसभासी अणुवीयिभासी, तत्थ हिअं जहा आयरियमाई इहलोगहितं भन्नइ, इह लोगे ताव अपत्थं भुंजमाणं निवारेइ, अन्नं वा किंचि उवइस्सइ, परलोगहियं सीदंतं दितुं)नो देइ, एवमादि, मितं नाम परिमितिएहिं अक्खरेहिं अणुच्चेण सद्देण भणइ, अफरुसवादी णाम तं चेव पियं भणंतो भणइ जहाऽहं तव सीसो, आह (तुम्हे) य वक्खाया वरं तो मा अन्नेण केणइ, एवं सिणेहजुत्तं उल्लावंतो अफरुसवादी भवइ, एवमादि, अणुवीइभासी नाम देसकालादीणि अणुचिंतिय २ भणइ, वाइअविणओ गओ। इयाणिं मणविणओ इमेण गाहापच्छद्धेण भण्णइ, तंजहा—' अकुसल० ' ॥ गाहापच्छद्धं, ' अकुसलमणनिरोहो कुलमणउदीरणा चेव ' एसो दुविहो मणविणयो भवतित्ति, मणविणओ गणो। आह--किं निमित्तं एस पडिरूवविणओ कस्स वा एस भवइ?, भण्णइ-'पडिरूवो खलु विणओ०' ॥ ३२५ ॥ गाथा, पडिरूवो णाम जो वत्थुं वत्थुं पडुच्च अणुरूवो पउंजइ सो पडिरूवो भण्णइ, सो य छउमत्थाणं पायसो पराणुवत्तिणिमित्तं अब्भुट्ठाणादी कीरइ, केवलीणं पुण अप्पडिरूवो णायव्वो. णो पराणुवत्तिणिमित्तन्ति वुत्तं भवति, ण ते

प्रतिरूप विनयः

॥२९८॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||३९९-४१५||

दीप अनुक्रम [४१५-४३१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ९अ.उ.१ ||२९९||

अणुवत्तिनिमित्तं विणयं कुव्वंति, पुव्वपउत्तं पुण उवयारं जाव न केणइ पच्चभिण्णाओ ताव करेंति। इदाणिं एयस्स तिविहस्स पडिरूवविणयस्स इमो उवसंहारो-गाहापुव्वद्धं, भगवंतो तित्थकरा बावण्णभेदभिन्नं अणच्चासातणाविणयं कहेंति, ते य बावण्ण भेदा इमेहिं तेरसहिं कारणेहिं भवंति, तंजहा—' तित्थगरासिद्धकुलगण० ' ॥ ३२७ ॥ गाहा, तित्थकरा सिद्धा कुलं गणो संघो किरिया नाम अत्थित्तं भण्णइ, तं०-अत्थि माया अत्थि पिया अत्थि जीवा अत्थि अजीवा एवमादि, धम्मो णाणं णाणी आयरिया थेरा उवज्झाया गणी, एतेसिं तित्थगराईणं गणिपज्जवसाणाणं तेरसण्हं पयाणं भत्तिमादीणि चउरो कारणाणि कीरमाणाणि अणासायणाविणओ बावण्णाविधो भवति, ते य भत्तिमादी चउरो कारणा इमे, तंजहा—'अणासायणा य०' ॥ ३२८ ॥ गाहा, अणासातणा भत्ती बहुमाणो वन्नसंजलया, एतेहिं चउहिं कारणेहिं एते बावण्णा भवंति, तित्थकराणं अणासायणाए जाव गणिणं अणासायणाए, एक्को तेरसओ अणासायणाए गओ, इदाणिं भत्तीए भण्णइ, तं०-तित्थकराणं भत्ती जाव गणीणं भत्ती, बितिओ तेरसओ, एते दोऽवि मिलिया छव्वीसा भवंति, इदाणिं बहुमाणेणं भण्णइ, तित्थगरेसु बहुमाणो जाव गणीणो बहुमाणो, ततितो तेरसओ, पुव्विल्लाए छव्वीसाए तेरस मिलिया जाया एकूणचत्तालीसं, इदाणिं वण्णसंजलणयाए भण्णइ, वण्णसंजलणा णाम गुणकित्तणे, तं तित्थगराणं वन्नसंजलणा जाव गणीणं वण्णसंजलणा, पुव्विल्लाए एगूणचत्तालीसाए तेरस मिलिया जाया बावण्णंति। **अणासायणाविणओ गओ, गओ य ओवयारिओ विणओ** ॥ इदाणिं समाधी भण्णइ-सा य चउव्विधा-णामसमाधी ठवणसमाधी दव्वसमाधी भावसमाधी, नामठवणाओ पूर्ववत्, दव्वसमाधी इमेण गाथापुव्वद्धेण भण्णइ, तंजहा-'दव्वं जेण व दव्वेण०' ॥ ३२९ ॥ अद्धगाथा, दव्वसमाधी णाम जहा समाहिमत्तओ, जाण व दव्वाण मिलियाणं

अनाशातनाविनय भेदाः ५२ समाधि-निक्षेपाः

||२९९||

*** अत्र 'समाधि' शब्दस्य निक्षेपा:, भेदा: आदि वर्णयन्ते

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥३९९-४१५॥

दीप अनुक्रम [४१५-४३१]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ ९अ.उ.१ ॥३००॥

अविरोधो भवति, जहा खीरगुडाणं एवमादि, जेण दव्वेण आहारिएण समाधी भवति, जहा खुहियस्स अण्णेण, आहियं जं दव्वं सावि दव्वसमाधी, आधियं नाम आरुहियं, जेण दव्वेण तुलाएवि आरुहितेण ण इओ ण इओ तुला णमती समाहेइ य सा दव्वसमाही, दव्वसमाही गया। इदाणिं भावसमाही इमेण गाहापच्छद्धेणं भण्णइ, तं०–'भावसमाधी०' अद्धगाहा, चउव्विधा भावसमाधी भवइ, तंजहा—दंसणसमाही णाणसमाही तवसमाधी चरित्तसमाधी, णामणिप्फण्णो गओ। इदाणिं सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेयव्वं तं जहा अणुओगदारे, तं च सुत्तं इ[redacted]थंभा व कोहा व०'॥३९९॥ वृत्तं, स्तंभु स्तंभे, अस्य धातोः अच् सार्वधातुकेभ्य इति, 'नंदिग्रहिपचादिभ्यो वा ल्युणिन्यचः' (पा. ३-१-१३४) इति सर्वे धातवः पचादौ पठ्यन्ते, तेन पचादि-पाठात् अच् प्रत्ययः, चकारः 'चित' इति (पा. ६-१-१६३) अन्तोदात्तार्थः, स्तम्नातीति स्तम्भः एवमवस्थिते 'ध्रुवमपायेऽपा-दान' मिति (पा. १-४-२४) अपादानसंज्ञा, सत्यामपादानसंज्ञायां अपादाने पंचमी विभक्तिर्भवति, तस्या एकस्मिन्नर्थे एक-वचनं ङसि, अनुबन्धलोपः 'टाङसिङसामिनात्स्युः' इति (पा. ७-१-१२) ङसेरात् आदेशः, 'अकः सवर्णे दीर्घत्वं' स्तम्भात्, थंभो नाम जेण थंभो व ण नमति जातितो सरीरओत्ति सो थंभो भण्णति, माणोत्ति वुत्तं भवइ, सो य थंभो जाति मयादीणं अन्नतरावट्ठंभेण गुरूणं सगासे विणएं ण चिट्ठइ, जहाऽहं उत्तमजातीयस्स विणयं करेहामित्ति एवमादि, 'क्रुध् क्रोधे' धातुः, अस्य धातोः 'पदरुजविशस्पृशो घ' ञिति (पा. ३-३-१६) 'अकर्त्तरि च कारके संज्ञाया' मिति (पा. ३-३-१९) घञ् प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः, अस्य धातोः, 'पुगंतलघूपधस्ये' ति (पा. ७-३-८६) गुणः, उकारस्य ओकारो गुणः, परगमनं, क्रुध्यन्ति तमिति क्रोधः, एवं स्थिते पंचमीविधानं स्तम्भवत् क्रोधात्, क्रोधा हि विणए जिणवइदिट्ठे ण चिट्ठइ, 'मीङ् हिंसायां'

विनया-करणहेतवः ॥३००॥

*** अत्र नवमं अध्ययनस्य सूत्राणि आरब्धा:

धातुः, ' हेतुमति चे ' ति (पा. ३-१-२६) णिच् प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः, अतो ञ्णितीति वृद्धिः, इकारस्य ऐकारः ' एचोऽयवायाव ' इति (पा. ६-१-७८) आय आदेशः परगमनं मायि, इदानीं ' सनाद्यन्ता धातव ' इति (पा. ३-१-३२) धातुसंज्ञा स्वचधिकारे ' ण्यासश्रन्थो युचि प्राप्ते (पा. ३-३-१०७) भिदादि (पा. ३-३-१०४) पाठात् अङ् प्रत्ययो निपात्यते ङकारलोपः ' णेरनिटी ' ति (पा. ६-४-५१) णेर्लोपः परगमनं माय ' अजाद्यतष्टाबि ' ति (पा. ४-१-४) टाप् प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः, ' अकः सवर्णे दीर्घत्वं ' माया, मयगहणेण मायागहणं, मयकारहस्सत्तं बंधाणुलोमकयं, तीए मायाए गुरूणं विणए ण वट्टइ, मा अब्भुट्ठाणं कायव्वं भविस्सइत्ति भण्णइ-कडी मे दुक्खइ, सूलं सीसं वा एवमादि, ' मद हर्षे ' धातुः अस्य धातोः प्रपूर्वस्य ' अकर्त्तरि च कारके संज्ञाया ' मिति (पा. ३-३-१९) घञ्प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः, ' अत उपधाया ' (पा. १-२-११६) इति वृद्धिः, आकारः, प्रमाद्यति तमिति प्रमादः, एवमवस्थिते स्तम्भवज्ज्ञेयं प्रमादाद्, प्रमादग्रहणेण णिद्दाविकहादिपमादट्ठाणा गहिया, जो एतेहिं कारणेहिं गुरूणं आयरिअउवज्झायाईणं सगासे, ' णीञ् प्रापणे ' धातुः, अस्य धातोः विपूर्वस्य पचाद्यचिति इवर्णान्तधातोः अच् प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः, ' सार्वधातुकार्धधातुकयो ' रिति (पा. ७-३-८४) अस्य गुणः, इकारस्य एकारो गुणः ' एचोऽयवायाव ' इति (पा. ६-१-१८) अय आदेशः परगमनं विनयः, विणये दुविहे-गहणविणए आसेवणाविणये, नकारो निपातः, प्रतिषेधे वर्त्तते, ष्ठा गतिनिवृत्तौ ' धात्वादेः षस्स ' इति (पा. ६-१-६४) सकारः, निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः इति तकारस्य थकारः, स्था अस्य धातोः ' वर्तमाने लटि ' ति (पा. ३-२-१२३) लट् प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः, अंगस्येत्यधिकृत्य ' पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्त्तिसर्त्तिसदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौ-

शीयसीदा ' इति (पा. ७-३-१८) स्था इत्येतस्य तिष्ठ आदेशो भवति, परगमनं तिष्ठति इति, ' आधारोऽधिकरण ' मिति (पा. १-४-४५) अधिकरणसंज्ञा, सत्यां अधिकरणसंज्ञायां ' सप्तम्यधिकरणे चे ' ति (पा. ३-३-३६) सप्तमी विभक्तिर्भवति, तस्या एकवचनं ङि, ङकारलोपः, तिष्ठति नञ् पूर्वः, तस्मिन् गुरुमूले विनयेन न तिष्ठति, तद् प्रातिपदिकं, अस्य प्रातिपदिकस्यार्थे प्रथमैकवचनं सु, अकारलोपः त्यदाद्यत्वेन दकारस्याकारः, अतो गुणः पररूपत्वं 'तदोः सः सावनंतयो' रिति (पा. १-२-१०६) तकारस्य सकारः ' **ससजुषोरुः** ' (पा. ८-३-३६) ' **विसर्जनीयस्य सः** ' (पा. ८-३-३४) चकारः समुच्चयार्थः, सो चेव तु तस्य, अस् भुवि धातुः, अस्य धातोः स्त्रियामित्यधिकृत्य स्त्रियां क्तिन् प्रत्ययो भवति, नकारस्य लोपः, ककारः गुणवृद्धि-प्रतिषेधार्थः, ' आर्द्धधातुकस्येड्वलादे ' रिति (पा १-२-२५) इट् प्राप्तः ' तितुत्रतथसिसुसरकसेषु चे ' ति (पा. ७-२-९) प्रतिषिद्धः, ' अस्तेर्भूः ' (पा. ४-४-५२) अस्तेर्धातोः भू इत्ययमादेशो भवति आर्द्धधातुके परतः, गुणः प्राप्तः किता प्रतिषिद्धः, भूतिः, नञ् पूर्वः न भूतिः ' नञ् ' (पा. २-२-६) सुपा सह समस्यति तत्पुरुषश्च समासः, नकारादकारमपकृष्य नकारस्य न-लोपो, ' नञ् ' इति विशेषणार्थः, अभूतिः, सा चैवं-विनयः आचार्योपाध्यायादीनामक्रियमाणः तस्यैव साधोः अभूतिभावो भवति, अभूतिभावो नाम अभूतिभावोत्ति वा विणासभावोत्ति वा एगट्ठा, आह--कहं तस्स अभूतिभावो भवइ ?, भण्णइ--'फलं च कीअस्स वहाय होइ' ' हन् हिंसागत्योर्धातुः, ' क्रदोरपि ' (पा. ३-३-५७) त्यनुवर्त्तमाने ' हन् वध ' इति (पा. ३-३-७६) हन्तेर्धातोः अप् प्रत्ययो भवति वध इत्ययं चादेशः वध, एवमवस्थिते ' क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोप ' इति (पा. १-४-३७) संप्रदानसंज्ञा, ' चतुर्थी सम्प्रदाने ' (पा. २-३-१३) संप्रदाने कारके चतुर्थी विभक्तिर्भवति, तस्याः एकवचनं

॥३०२॥

ङे, ङकारादेकारमपकृष्य ङकारः 'ङेर्य' इति (पा. ७-१-१३) विशेषणार्थः, ङेर्यः इति एकारस्य यकारः 'सुपि चे' ति (पा. ७-३-१०२) दीर्घत्वं वधाय, फलं व कीयस्स वहाय होतित्ति, कीयो नाम वंसो, जहा फलेति तहा युक्त इति, उक्तंच--'पक्षाः पिपीलिकानां फलानि तदकलमिवणुवेत्राणाम् । ऐश्वर्यं चापि विदुषां उत्पद्यन्ते विनाशाय ॥ १ ॥' जहा तस्स कीयस्स फलं वधाय भवति एवं सो बंभादीहिं आयसमुत्थेहिं इहभवे परभवे विणासं पावति । किंच 'जे आवि मंदित्ति०' ॥ ४०० ॥ वृत्तं, जेत्ति अणिद्दिट्ठस्स गहणं, चकारो पादपूरणे, अविसद्दो संभावणे वट्टइ, किं संभावयति ?, जहा आदिल्ले अभूइभावो दोसो भणिओ तहा एत्थवि सो चेव अभूतिभावदोसो भवइ एयं संभावयति, मंदो चउव्विहो, तंजहा—नाममंदो ठवणमंदो दव्वमंदो भावमंदो यत्ति, नामठवणाओ गयाओ, दव्वमंदो दुविहो, तंजहा—उवचए अवचए य, जहा थूलो सरीरेण उवचए, तणुओ सरीरेण अवचए, भावमंदो दुविधो, तं०-उवचए अवचए य, जस्स बहुइ बुद्धि उवचए, अवचए जस्स थोवा बुद्धि, एवमादि, तत्थ दव्वभावेहिं अधिगारो, सेसा उच्चारियसरिसत्तिकाऊण परूविया, तत्थ दव्वमंदे जहा कोई बालो आयरिओ सव्वलक्खणोववेओत्तिकाऊण ठविओ होज्जा, तमेवप्पगारं विइत्ता नाम जाणिऊणंति, तं मिच्छं पडिवज्जमाणो सूयाए हीलति, 'मिच्छं पडिवज्जमाणो' नाम तं गुरूहिं कयं मेरं अतिक्कमंतोत्ति, सूयाए जहा जइ वयं डहरया न होंता तो ण एवं करेंता, अहवा किं वयं बालमिव न जाणामो ? एवमादि, असूयाए फुडं चेव भण्णइ, जहा डहरो इमो होऊण अम्हे एवं करेइ, जदा य तुट्ठो भविस्सइ तदा न नज्जइ किंपि काहिति ?, अजातपंखो उड्डेउमिच्छइ एवमादि, तहा भावमन्दोवि कोऽवि अप्पसुओ किंचि कारणं लक्खेऊण ठविज्जति, तमवि अप्पसुयं नच्चा मिच्छं पडिवज्जमाणा सूयाए असूयाए वा हीलंति, सूयाए जहा जइ वयं बहुस्सुया होंता तो

॥३०३॥

तुब्भेहिं समं अहं अप्पसुताणं ण आलावेंतोत्ति एवमादि, असूयाए जहा अज्जवि ताव तुमं अप्पसुओ न जाणसि साहूणमकज्जं कज्जं वा, पढाधि ताव पच्छा अम्हं उवरिं गच्छं मा ठवेज्जाहि एवमादि, एवं ते हीलमाणा जमायरिएहिं पमाणं कयं तमइक्कमाणा तेसिं गुरूण आसायणं करेंति, गुणेहि य गुरू भवंतित्तिकाउं एगमवि गुरुं आसादेंतेहिं सव्वे हि अतीताणागतवट्टमाणा य गुणासेविणो गुरवो आसाइया भवंतीति, जइवि गुरू मंदो बुद्धीमादीहिं कारणेहिं बालो वा तहावि णो हीलियव्वं, कहं ?, जम्हा—' **पगईइ मंदावि०** ' ॥ ४०१ ॥ वृत्तं, केऽवि आयरिया पगतीए बुद्धिमादीहिं कारणेहिं मंदावि भवंति, अवरा डहरा चेव सुओववेया बुद्धिउववेया य भवंति, ते य णाणदंसणादीहिं आयारमंता संगहादिसु य आयारगुणेसु ठिअप्पा, किं बहुना?, जे हीलिया संता भगवंतो सिहिरिव भासकरणसमत्था ते कहं हीलणिज्जत्ति?, तत्थ य सिही अग्गी भण्णइ, जहा सो अग्गी सुमहल्लमवि कयवरादिरासिं खणेण च्छारीकरेइ, तहा तेवि भगवंतो आयरियाइगुणजुत्तप्पा हीलिया संतो भासकरणसमत्था नाऊण बुद्धिमंताण न हीलणिज्जा, किंच-जहा अप्पयोऽवि हीलिओ अभूयभावाय भवति तदुपदरिसणत्थमिदमुच्यते--' **जे आवि नागं डहरंति नच्चा०** ' ॥ ४०२ ॥ सिलोगो, जेत्ति अनिद्दिट्ठस्स गहणं, चकारो पायपूरणे, अविसद्दो संभावणे वट्टइ, किं सम्भावयति ? जहा जइ ताव डहरे बहवो दोसा भवंति, किं पुण महल्लोत्ति ?, एवं संभावयति, तत्थ णागो सप्पो, तं बालं णाऊण जो परिभवइ, जहा किं मम एसो बालो वरायो काहितित्ति तं कट्ठेण वा अंगुलीए वा आसातयति, आसाइओ सो तस्स अहियाय भवति, एमेवायरिओ हीलिमाणो ' **नियच्छती जाइपहं खु मंदो** ' नियच्छई नाम अत्थत्तं (गच्छइ) बेइंदियाईसु जातीसु गच्छइ निगच्छतीति, मंदगहणेण मंदबुद्धिगहणं कयं, किंच--गुरुणो आसातना गुरुगी भवइ, जहा--' **आसीविसो वावि०** '

उद्देशकः ॥३०४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||३९९-४१५|| दीप अनुक्रम [४१५-४३१]

॥ ४०३ ॥ वृत्तं, जोत्ति अणिद्दिट्ठस्स गहणं, पावगो अगणी भण्णइ, आसीविसो पसिद्धो, तं पावगं पभूतिंधणं जलमाणं जो कोइ काएण अकम्म चिट्ठेज्जा, आसीविसं वा जो पसन्नभावं अच्छमाणं कोवएज्जा, जो वा जीविहामित्ति कामओ विसं खाएज्जा, जहा एते अगणिमादि न सुहावहा 'एसोवमा आसातणया गुरूणं' ति, उवमा नाम उवम्मत्ति वा सरिसत्ति वा एगट्ठा, अवि य--'सिआ हु से०' ॥ ४०५ ॥ वृत्तं, सियासद्दो आसंकाए वट्टइ, जहा कयाइ मन्तपयोगसच्चतवदेवयाकारणेण पावगो णो डहेज्जा, कयाइ कुविओवि आसीविसो मंतपयोगादिकारणेण ण भक्खेज्जा, तथा कदायि हालाहलमवि विसं णो मारेज्जा, हालाहलं नाम विसजातिभेओ, आसेविताणि पावगादीणि खेमंकराणि भवंति, ण य गुरुआसायणं कुव्वमाणो मोक्खपज्जवसाणाणं गुणाणं आभागीभवइ। किंच--'जो पव्वयं सिरसा०' ॥ ४०६ ॥ वृत्तं, जोत्ति अणिद्दिट्ठस्स गहणं कयं, कोइ पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छइ वा, कोइ सीहं गुहाए सुत्तं पडिबोहेज्जा, जो वा सत्तिअग्गे-सत्तिआयुहस्स अग्गे हत्थतलाहीहिं पहारं दलएज्जा, 'एसोवमाऽऽसायणया गुरूणं'ति जहा ते पव्वयाईणि विणासकारणाणि सिरादीहिं कुव्वमाणो विणासं पावति तहा गुरुआसातणावि अणाइयं अणवदग्गं संसारं संपावया भवंतित्ति। अवि य--'सिआ हु०' ॥ ४०७ ॥ वृत्तं, सियासद्दो आसंकिए अत्थे वट्टइ, जहा कदाइ चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा विज्जाहरतवोसिज्झा वा पव्वयं सिरसा भिंदेज्जा, तहा कयाई य सुत्तोऽवि सीहो पडिबोहिओ कुविओ विज्जत्थंभणावि नो भक्खेज्जा, तहा सत्तिअग्गमवि कयाइ पहारे दिज्जमाणेऽवि ण तस्स किंचि पीडं उप्पाएज्जा, ण यावि आयरियहीलणेण मोक्खो भवइत्ति। किंच, जा एसा पावगादिआसायणा एस एगभविया अप्पविवागा, गुरुआसायणा य पुण अणेगभविया बहुविवागा, तदुपदरिसणत्थमिदमुच्यते--'आयरिय०' ॥ ४०८ ॥ वृत्तं, आयरियपाया

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||३९९-४१५||

दीप अनुक्रम [४१५-४३१]

पुण अप्पसन्ना अबोधिकरा, आसायणा दोसावहा मोक्खाभावकरा य काऊण 'तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी गुरुप्पसायाभिमुहो रमिज्ज' त्ति तत्थ अणाबाहो मोक्खो भण्णइ, 'जहाहिअग्गी०' ॥४०९॥ वृत्तं, जहा आहियअग्गी बंभणो णाणाविहेण घयादिणा मंतं उच्चारेऊण आहुइं दलयइ, पयं खीरं भण्णइ, तेण अभिमुहो सित्तो अभिसित्तो, जहा तं घयसित्तं सो आहितग्गी उवयरइ, एवं आयरियमवि वेयावच्चविणयमाईहिं अणंतनाणातिगमातिसयजुत्तोऽवि उवचिट्ठेज्जा, किमंग पुण सेसोत्ति ?, अणंतनाणाइगओ नाम अणंतं जेण नज्जइ णाणेण तं अणंतनाणं तं उवगओ तो सो अणंतणाणोवगओ भण्णइ, उवगओ णाम तीसे णाणलद्धीए उववेयोत्ति, उवचिट्ठेज्जा णाम सुस्सूसेज्जात्ति। किंच--' जस्संतिए० ' ॥ ४१० ॥ वृत्तं, जस्संतियं आयरियस्स वा सगासे धम्मियाणि सिक्खेज्जा ' तस्स सगासे वेणइयं पउंजेज्ज ' त्ति, तत्थ विणयस्स भावो वेणइयं, पउंजेज्जा नाम पउंजेज्जत्ति वा कुव्विज्जत्ति वा एगट्ठा, तं च वेणइयं इमं--सक्कारए तए सिरसा पंजलीग्गहणेण पंचंगियस्स वंदणस्स गहणं कयं, तमायरियं पुव्वभणिएण अब्भुट्ठाणाइणा विणएण सक्कारए, इमेण पंचंगीएण वंदणिएण, तंजहा---जाणुदुगं भूमीए निवडिएण हत्थदुएण भूमीए अवट्ठंभिय ततो सिरं पंचमं निवाएज्जा, तेण अब्भुट्ठाणाइणा इमेण य सिरपंचमेण काएण गिराए वंदणनिमित्तं आसमाणो, भो इति सीसामंतणं, मणसा तदुवउत्तेण, णिच्चं णाम सव्वकालं, ते गुरवो पूयणिज्जा, तंजहा--' लज्जा दया० ' ॥४११॥वृत्तं तत्थ लज्जा अववादभयं, दया अणुकंपा, संजमो सत्तरसविधो, बंभचेरं मेहुणविरई,'एगग्गहणे गहणं तज्जातियाण'-मितिकाऊणं सेसाण मूलगुणउत्तरगुणाण गहणं, ' कल्लाणभागिस्स विसोहिट्ठाणं ' ति कल्लाणं-मोक्खो भण्णइ, तस्स आभागी जो जीवो तस्स इमाणि लज्जाईणि पदाणि कम्माण विसोधिट्ठाणंति, जे मे गुरु--आयरिया सततं-सव्वकालं लज्जादीणि,

उद्देशकः

॥३०६॥

अणुसासयंति णाम जहा लज्जा ताव संजतत्तं, उवदीसति, तीए य फलं, तहा दयं दयाए फलं, एवमादीणि अणुसासिज्जमाणा सीसा पायसो अत्तणो निस्सेसपारगा भवंतित्तिकाऊण 'ते अहं गुरू सततं पूययामि'त्ति ॥ इतो य गुरू पूयणिज्जा, कहं ?, जम्हा ते भगवंतो--' जहा निसंते० ' ॥ ४१२ ॥ वृत्तं, ' जहा निसंते तवच्चिमाली ' ति, तत्थ जेणप्पगारेण जहा, णिसा णाम रत्ती भण्णइ, तीए निसाए अंतो निसंतो दिवसोत्ति वुत्तं भवइ, तवइ नाम पगासेइ, अच्चिओ व रस्सीओ भण्णंति, तासिं रस्सिणं माला जस्स अत्थि, सो य णाइच्चो पभासई भारहं केवलं तु, पभासती णाम पभासइत्ति वा उज्जोएइत्ति वा एगट्ठा, भारहं पसिद्धं, केवलं णाम संपुण्णं, तुसद्दो विसेसणे वट्टइ, किं विसेसयति ?, न केवलं भारहं पगासइ, किंतु सव्वमेव जम्बूदीवदाहिणड्ढं एयं विसेसयति, एवं आयरिओऽवि सुएण सीलेण बुद्धीए य उववेओ वियलीकयअण्णाणपडलो जीवाजीववादओ य पदत्था पगासति इति ॥ किंच--' विरायई सुरमज्झे व इंदो ' त्ति, जहा इंदो सामाणियादिपरिवुडो समंतओ विरायइ एवं आयरिओऽवि सीसगणसंपरिवुडो सपक्खाणं परतित्थियाणं च पुरओ विरायइत्ति । किंच--' जहा ससी कोमुइ-जोगजुत्तो०' ॥ ४१३ ॥ ' जहा ससी कोमुदिजोगजुत्तो ' त्ति, तत्थ जहा णाम जेण पगारेण जहा, ससी चंदो भण्णइ, ' कोमुइजोगजुत्तो ' नाम कत्तियपुन्निमाए उइओ, ' नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ' णाम णक्खत्तेहिं तारागणेण य परिवुडो अप्पा जस्स सो णक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा, ' खे ' त्ति आगासस्स गहणं, जेण पगारेण आगासे विमले अब्भमुक्को ससी सोभइ एवं गणी सोभइ सीसमज्झे । किंच ' महागरा आयरिया० ' ॥ ४१४ ॥ वृत्तं, महंताणं णाणाईणं गुणाणं आगरा महागरा, महागरा चउव्विहा भवंति, तंजहा-नाममहागरा ठवण० दव्व० भावमहागरत्ति, नामठवणाओ गयाओ, दव्वमहागरा

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥३९९-४१५॥

दीप अनुक्रम [४१५-४३१]

लवणादीया समुद्दा, भावमहागरा महंताणं णाणदंसणचरित्ताणं आगरा आयरिया तेसिं गहणं कयं, सेसा उच्चारियसरिसत्ति-काऊण परूविया, ' **महेसी** ' नाम महंतमेसतीति महेसीणो, सो य मोक्खो, ते य आगरा समाधिजोगाणं सुयस्स बारसंगस्स सीलस्स य-अट्ठारससीलंगसहस्समइयस्स बुद्धीए--उप्पत्तियादियाए, तं एयप्पगारगुणजुत आयरिए अणुत्तराणि-अतिसयमाईणि संपाविउकामो उवट्ठियभावो आराहेज्जा आयरियं जाव तुट्ठे, उवट्ठिओ नाम उवट्ठिओत्ति वा अब्भुट्ठिओत्ति वा एगट्ठा, 'धम्मकामे' नाम धम्मनिमित्तं आराहेज्जा, ण पुण भएण वित्तिहेउं वा, जाणि एयंमि अज्झयणे भणियाणि ताणि ' **सुच्चाण मेहावि०** ' ॥४१५॥वृत्तं, सोच्चा णाम सोउं, मेहावी मेहावी भण्णइ, सोभणाणि भासियाणि सुभासियाणि, सुस्सूसए णाम तस्स आणाणिद्देसे चिट्ठेज्जत्ति, आयरिओ पसिद्धो, अप्पमत्तो णाम णो णिद्दादीहिं पमादेहिं वक्खित्तो, तेसिं सगासेणं वसमाणो गुणा आराहेऊण णिरवसेसखीणकम्मो सिद्धिमणुत्तरं पावइ, सेसकम्मोदया देवलोगसुकुलपच्चायातिं लद्धूण पच्छा अट्ठभवग्गहणअंतरतो सिज्झतित्ति, बेमि णाम तीर्थकरोपदेशात्, न स्वाभिप्रायेणेति । **विणयसमाहीए पढमो उद्देसो समत्तो** ॥

बितियउद्देसगाभिसंबंधो—विणयमूलो धम्मो काऊण तग्गोरवोपदरिसणत्थमिदमुच्यते—'**मूलाउ खंधप्पभवो दुमस्स०**' ॥ ४१६ ॥ वृत्तं, जहा दुमस्स जाहे मूलो उप्पण्णो भवइ ताहे ताओ मूलाओ खंधो भवइ, ताओ खंधाओ पच्छा साला, समुविंति नाम जायंति, साला नाम सालत्ति वा साहत्ति वा एगट्ठा, तासु साहासु साहप्पसाहाविकप्पा, विरुहंति नाम विविधं अणगप्पगारं फलाणि, रुहंति विरुहंति, जायंतित्ति वुत्तं भवइ, तासु पसाहासु पत्ता विरुहंति, तओ उत्तरकालं पुप्फा, पुप्फेसु तेसिं परिपक्काण रसो भवति, जहा य एसो मूलादी रसपज्जवसाणो अणुपरिवाडिक्कमो '**एवं धम्मस्स विणओ०**' ॥४१७॥

अत्र नवमे अध्ययने प्रथम उद्देशक: परिसमाप्त: तथा द्वितीय उद्देशक: आरब्ध:

सिलोगो, इमस्स जिणप्पणीयस्स संथुयस्स भगवओ धम्मस्स विणओ 'मूलं, परमो से मुक्खो' परमो णाम तस्स विणयमूलस्स मोक्खोत्ति वा फलंति वा, कहं ?, जहा दुमस्स फलं, तस्स कालंतरविपक्कस्स जो रसो सो परमो, अपरमाणि उ खंधो साहा पत्त-पुप्फफलाणित्ति, एवं धम्मस्स परमो मोक्खो, अपरमाणि उ देवलोगसुकुलपच्चायायादीणि खीरासवमधुयासवादीणित्ति, कथं च सो विणयो कायव्वो ?, जेण विणएण किंचिं पावति, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण' मितिकाउं जसमवि पावइ, आह-कित्तिजसाणं को पतिविसेसो ?, आयरिओ आह—कित्ती अविसेसिया, जहा अमुगनामधेयो साधू विणीओत्ति, जसो विसेसिओत्ति, जहा अमुगं विणयं अमुगो साधू कुव्वइत्ति, तहा दुवालसंगं सिग्घं पावइ, सिग्घं नाम सलाहणिज्जं, सलाहणिज्जो वा जेण सुएण भवइ तं सुयं सिग्घं भण्णति, जहा अहो बहुस्सुओ ण एतस्स किंचि अविहितंति, एवमादि, निस्सेसं अभिगच्छतीति, इदाणिं णीसेसा अविणीयस्स दोसा भन्नंति, वरं ते दोसा णाऊण तेसु उव्वेगं गच्छंतोत्ति, लोगेऽवि दिट्ठं-पुव्वं आतुरस्स अपत्था-हारो निवारिज्जइ, दोसा य से कहिज्जंति, ते तेसिं दोसाणं उव्विज्जमाणो परिहरतोत्ति, ते य अविणीयदोसा इमे, तंजहा— 'जे अ चंडे०' ॥ ४१८ ॥ सिलोगो, जेत्ति अणिद्दिट्ठस्स गहणं, चकारो पादपूरणे, चंडो रोसणो भण्णइ, जहा इमं एवं करेहि, इमं मा एवं करेहित्ति भणिओ रूसइ, मिगभूतो मिगो, जहा मिगो णिबुद्धी तहा सोऽवि हितोवएसं ण पुच्छइत्तिकाऊण मिग इव दट्ठव्वो, थद्धो नाग अट्ठहिं जातिमदादीहिं मदट्ठाणेहिं मत्तो विनयं न पडिवज्जइ 'दुव्वाई' दुट्ठा वाया जस्स सो दुव्वायी, अकारणे साहवो कडुगफरुसाणि ण भणंति, 'णिग्गडी' नाम माइल्लो, जाणमाणोऽवि अप्पणो अवराहं पडिचोइओ भणइ ण मए णायं जहा एयं न कायव्वंति, गिलाणमाइयाओ नियडीओ पउंजइ, अहियं विणयं भंसेति, 'सढो' णाम सिढिलो संजमाइसु,

'बुज्झइ से अविणीअप्पा' एवं सो विणेओ चंडादिसु वट्टमाणो अविणीअप्पा बुज्झइ, कहं ?, जहा नदीसोयमज्झगयं कट्ठं नदीए सोतेण बुज्झइ एवं सो संसारसोतेण बुज्झतित्ति । किंच-'विणयंपि जो उवाएणं०' ॥ ४१९ ॥ सिलोगो, सो चंडाइदोससंजुत्तो उवाएण देसकालोववन्नं विणयं 'चोइओ कुप्पई नरो' त्ति, देसे ताव विराहओ भणिओ, कालो-वेला तक्खणमेव, तंपि परिमितं अफरुसं भणिओ कुप्पइत्ति, ततो सो एवं कुप्पमाणो दिव्वं सिरिमागच्छमाणं डंडेण पडिसेहयइ, एत्थ उदाहरणं--दसारपमुहा किर महासुरा सभागता अप्पप्पणो कज्जाणि संपहारेमाणा अच्छंति, इओ य सिरी देवी परिणयवयवेसा होउं विकृतशरीरा मच्छियावन्दाणुगयमग्गा तं सभमागता, ते सव्वे समुद्दविजयउग्गसेणपमुहा पत्तेयं २ एवमाहु—जहा एतेण अहं तवसंतएण देवकुमारातिरेगेण रूवेण उम्माहिया समाणी लज्जं मोत्तूणं भवंतं सरणमुवगतत्ति भण्णमाणा कंठे लग्गइ, तेहिं सव्वेहिं पत्तेयं पत्तेयं पडिसेहिया, सव्वेहिं णिप्पणयीकया णारायणमुवट्ठिया, तेण णाया जहा एसा णो पागतेल्लत्ति अहिलसिया, दिव्वं रूवं दंसेऊण तमणुपविट्ठत्ति, एवं सो विणयं उवाएण बोहिओ समाणो इहलोगपरलोगहियं किर विणयसिरिं अवमन्नइ, ण तं तस्स आयतिक्खमं भवइ, जहा तेसिंतो ताण । इदाणिं अविणयदोसोपदरिसणत्थमिदमुच्यते 'तहेव अविणीअप्पा०' ॥ ४२० ॥ सिलोगो, 'तहेव' त्ति, जहा हेट्ठा अविणीयदोसा भणिया, एवसद्दो पादपूरणे, 'अविणीअप्पा' णाम णो विणीओ अप्पा जेसिं ते अविणीअप्पा, 'उववज्झा' नाम कारणमकारणे वा उवेज्ज वाहिज्जंति उववज्झा हया गया य, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाणमितिकाउं' गलिबलिवद्दावि गहिया, तेण अविणयकम्मदोसेण वाहिज्जंति इहभवे गलित्तणदोसेण, अन्नेसिं आसाणं हत्थीण य आहारं बंहायिज्जंति, अन्ने य बहुविहप्पगारे विणयंति, तहा महिस-

माइणोवि केइ अव्वत्तभागभूया पच्चक्खमेव दीसंति दुहं ' एहंता ' नाम अणुभवंता, सारीरमाणसाणि दुक्खाणि, ते य आभिओगभावं सुदूसहं उवट्ठिया, तेण य इहभविएण पच्चक्खेण अविणयदोसेण दिट्ठेण अदिट्ठं साहिज्जइ-जहा ते आसादिणो पुव्वभवे अविणयमंता आसी जेण आभिओगं ' उवट्ठिया ' नाम पत्ता, तह विणयगुणो तिरिएसु इमो, तंजहा—'तहेव सुविणीअप्पा० ' ॥ ४२१ ॥ सिलोगो, ' तहेव ' त्ति जहा हेट्ठा विणयगुणा भणिया, एवसद्दो पायपूरणे, सुट्ठु विणीओ अप्पा जेसिं ते सुविणीअप्पा, ते चेव हयादी पुव्वसुकयगुणेण इहभविएण य विधेलगादिणा विणीयभावेण इट्ठाणि जवसजोगासणादीणि भुंजमाणा चिट्ठंति, निवायपवायादियायो वसहीओ पावंति, अलंकिया य रायमग्गमोगाढा केइ बहुजणणयणहरमहुरवयण-परिगीयमाणा णिग्गच्छंति, एवमाईहिं इट्ठिं पत्ता पच्चक्खमेव सुहमेहंता महायसा दीसंति, सुभासुभं तिरिएसु विणयाविणयफलं भणियं । इदाणिं मणुएसु भन्नइ, तत्थवि पुव्वं अविणयफलं भण्णइ, तं च इमं, तंजहा—' तहेव अविणीअप्पा० ' ॥४२२॥ सिलोगो, ' तहेव ' त्ति जहा हेट्ठा तिरियाणं अविणयदोसो भण्णइ, एवसद्दो पादपूरणे, णो विणीओ अप्पा जेसिं ते अविणीअप्पा, लोगग्गहणेण मणुयलोगग्गहणं कयं, तंमि मणुयलोगंमि, अविणीयनरनारीओ य पुव्वं अविणयदोसेण इहभविएण य वंकभावेण दीसंति दुक्खाणि सारीरमाणसाणि एधमाणया नाम कसादीहिं पहारेहिं वणसंजातसरीरा भन्नंति, विगलितेंदिया णाम हत्थपायाईहिं छिन्ना, उद्धियणयणा य विगलिंदिया भन्नंति, ते पुण चोरपारदारिकिच्चयाई । ' दंडसत्थपरिजुन्ना० ' ॥ ४२३ ॥ सिलोगो, दंडग्गहणेण लट्ठिमाईण गहणं कयं, सत्थगहणेण भल्लगमादिआउहस्स गहणं कतंति, तेऽवि दंडेहिं तालिया सत्थेहि य आहया ' परिजुण्णा ' णाम परि-समंतओ जुण्णा परिजुण्णा दुब्बलभावमुवगतात्ति वुत्तं भवइ, न केवलं दंडसत्थेहिं परिजुण्णा,

किंतु असब्भवेहिं-असरिसेहिं वयणेहिं सरीरपरिहाणी भवति, 'कलुणा' णाम दीणंति वा कलुणंति वा एगट्ठा, 'विचण्णछंदा' नाम परव्वसा, 'खुप्पिवासाइपरिगया' परिगता णाम खुहापिपासाभिभूता, ते य भत्तपाणनिरुद्धा वा होज्जा, परिमितभत्त-पाणभोगी वा, जहा एयस्स एगं भत्तं दायव्वं एग उदयसरावंति, एवं ताव तेसिं अविणीयाणं इहभवे पुप्फं, फलं पुण नरगा-दिसु, णाऊण अविणयो न कायव्वोत्ति। इदाणिं विणयमूलं तेसु चेव मणुएसु भण्णइ, तंजहा-'तहेव सुविणीअप्पा०' ॥४२४॥ सिलोगो, 'तहेव' त्ति जहा हेट्ठा विणयफलं तहेव भणियं इहमवि, एवसद्दो पादपूरणे, सुट्ठु विणीओ अप्पा जेसिं ते सुविणी-अप्पा, लोगगहणेण मणुस्साण गहणं कयं, तंमि लोए णरा णारीयो य रायादीणं दासविणयजुत्तत्तणेण भोगसंविभत्ता दीसंति, गंधव्वाइयाओ कलाओ उवज्झाएहिं गाहिंता दीसंति, सुहाइं एहंता मणुया इड्ढिं पत्ता महाजसा, इति सुभासुभं मणुएसु फलं भणियं। इदाणिं देवेसु भण्णइ-तत्थ अविणयं पुव्वं भण्णइ, तं च इमं, तंजहा--' तहेव अविणीअप्पा० ' ॥ ४२५ ॥ सिलोगो, तहासद्दो एवसद्दो य पुव्वभणिया, ण विणीअप्पा अविणीअप्पा, देवग्गहणेण जोतिसियवेमाणियाण देवीसहियाण गहणं कयं, जक्खग्गहणेण वंतराणं गहणं कयं, गुज्झगगहणेणं भवणवासीणं गहणं कयं, ते तित्थगरकाले एरावणादि पच्चक्खमेव दुक्खाइ एधमाणा आभिओगभावमुवट्ठिया दीसंति, इदाणिं विज्जाभिचारुगेहिं अभिउत्तकम्मेहिं अभिउत्ता दीसंति, अणुमाणेण साहिज्जंति, जहा इहं मणुयलोए अविणयफलाइं पावेंति तहा णूणं अविणयदेवा पुव्वेण दुक्कएण आभिओगा भवंति, भणियं च--' चउहिं ठाणेहिं जीवा आभिओगियं जणयंति--कोहणसीलयाए पाहुडसीलयाए कोउयकम्मेण भूइकम्मेण य '। इदाणिं विणयफलं तेसु चेव देवेसु भण्णइ, तंजहा--' तहेव सुविणीअप्पा० ' ॥ ४२६ ॥ सिलोगो, सुविणीअप्पा पुव्वविणयसुभकम्मोदएण इमेसु

इंदसामाणियतायतीसगादिठाणेसु उववण्णा,तित्थगरकाले पायसो दीसंति, सेसं तस्स सिलोगस्स कंठ्यं। एवमादीणि तिरियमणुय-देवलोगे सुभासुभाणि विणयाविणयफलाणि भणियाणि, नरयेसु सुभासुभा कहा णत्थि, ते हि एगंतेण पुव्वोवज्जियं अविणय-फलमसुभमणुभवंति, ण य ते पच्चक्खमुवलब्भंति, सव्वण्णुवएसेण ते छउमत्थेहिं णज्जंति। इदाणिं लोगुत्तरस्स विणयस्स फलं भण्णइ, तंजहा—'जे आयरिउवज्झायाणं' ० ॥ ४२७ ॥ सिलोगे, 'जे' त्ति अणिद्दिट्ठाणं गहणं कयं, आयरियउवज्झाया पसिद्धा, जे केइ आयरियाणं उवज्झायाणं च सुस्सूसाकरा वयणकरा य भवंति, अहवा सुस्सूसाणाम (ए) आयरियउवज्झाएहिं वयणं भण्णंतं कुव्वंति सुस्सूसावयणकरा, तेसिं एवंविहसीसाणं साहूणं सिक्खा दुविहा-गहणसिक्खा आसेवणसिक्खा य, विविहमणेगप्पगारं वड्ढंति, दिट्ठंतो—'जलसित्ता इव पायवा' जलेण सित्ता समाणेव जहा पायवा वड्ढंति तहा तेसिमवि सिक्खा विवड्ढंतीत्ति। किंच -इओ य आयरियोवज्झायाणं विणओ कायव्वो, कहं ?, जइ ताव असंजया 'अप्पणट्ठया' ० ॥ ४२८ ॥ सिलोगो, 'अप्पणट्ठया' नाम हंत एतेण जीविहामोत्तिकाऊण सिप्पाणि-कुंभारलोहारादीणि सिक्खंति, णेउणिआणि लोइयाओ कलाओ सिक्खंति, परट्ठाएवि पव्वयितुकामा पुत्तं गेहे ठामोत्ति सिक्खंति, कदाइ पुण अप्पणो परस्स य दोण्ह य अट्ठाइ सिक्खंति गिहिणोत्ति, एसो असंजयणिद्देसो कओ, 'उवभोगट्ठा' णाम अण्णपाणवत्थसयणासणरयणकुवियाइयउवभोगस्स अट्ठाए सिक्खंति, तं च इहलोगस्स इह जललवबिन्दूहिं संनिभस्स कारणाणि सिक्खंति, ते य एवं सिक्खावासं वसमाणा 'जेणं बंधं' ० ॥ ४२९ ॥ सिलोगो, 'जेणं' ति जेण सिक्खापडिबंधेण बंधादीणि पावंति, तमवि सिप्पाणि णेउणियाणि य कारणा-णि सिक्खावासमावसंताचि, तत्थ निगलादीहिं बंधं पावेंति, वेत्तासयादिहि य बंधं घोरं पावेंति, तओ तेहिं बंधेहिं वधेहि य

परितावो सुदारुणो भवइत्ति. अहवा परितावो निद्दुरचोयणतज्जियस्स जो माणि संतावो सो परितावो भण्णइ, तं च परितावं सुदारुणं 'निअच्छंति' नाम निग्गच्छंति वा पावंति वा एगट्ठा, जुत्ता नाम तंमि सिक्खियव्वे निजुज्जंतित्ति, ललिइंदिया णाम आगब्भाओ ललियाणि इंदियाणि जेसिं ते ललिइंदिया, अचन्तसुहितत्ति वुत्तं भवति, ते य रायपुत्तादि, किंच,— 'तेऽवि तं गुरु' ० ॥ ४३० ॥ सिलोगे, तेऽवि ताव सच्छंदललिया रायपुत्तादि तमुवरोहपहारादि विसहंति, तमायरियं च पूजयंति 'तस्स सिप्पस्स कारणा,' ते य पूयाइया तं 'सक्कारेंति नमंसंति तुट्ठा निद्देसवत्तिणो' अहवा पूया महुरवयणाभिनंदणी भन्नइ, सक्कारो भोजणाच्छादणादिसंपादणओ भवइ, णमंसणा अब्भुट्ठाणंजलिपग्गहादी, तुट्ठा णाम परोक्खमवि णमोक्कारादीहिं णमंसंति, 'निद्देसवत्तिणो' णाम जमाणवेति तं सव्वं कुव्वंतीति णिद्देसवत्तिणो, जति तावेवं लोइया सुहलिच्छाए कारणाए कुव्वंति। 'किं पुण जे सुअग्गाही' ० ॥ ४३१ ॥ सिलोगे, किमिति एसो पुच्छाए वट्टइ, पुणसद्दो विसेसणे, किं विसेसयति ?, जहा गाहयंति भगवंतो साधवो सीसाण उवट्ठावणादीण कुव्वंतित्ति एवं विससयति, सुअं दुवालसंगं गणिपिडगं, सुतं गाहयंतीति सुयग्गाही, अणंतं हितं कामयतीति अणंतहितकामए, मोक्खसुहकामएत्तिवुत्तं भवति, जम्हा ते इहलोगे परलोगे हितं सुयं गाहयंति तम्हा जं ते आयरिया वदेज्जा तं भिक्खू 'नाइवत्तए' णाम णातिकमेज्जत्ति। इदाणिं विणओवाओ भण्णइ—'नीयं सिज्जं गइं ठाणं' ० ॥ ४३२ ॥ सिलोगो, सेज्जा संथारओ भण्णइ, सो आयरिअस्संतियाओ णीयतरो कायव्वो, तहा णीया गति कायव्वा, 'णीया' नाम आयरियाण पिट्ठओ गंतव्वं, तमवि णो अच्चासण्णं, नवा अतिदूरत्थेण गंतव्वं, अच्चासन्ने ताव पादरेणुण आयरियसंघट्टणदोसो भवइ, अइदूरे पडिणीयआसायणादि बहवे दोसा भवंतीति, अतो णच्चासण्णे

णातिदूरे य चंकमितव्वं, तहा जंमिवि ठाणे आयरिया उवाचिट्ठा अच्छंति तत्थ जं नीययरं ठाणं तंमि ठाइयव्वं, तहा नीययरे पीढगा-इंमि आसणे आयरिअणुन्नाए उवविसेज्जा, जइ आयरियो आसणे इतरो भूमिए नीययरे भूमिप्पदेसे वंदमाणो उवट्ठिओ न वंदेज्जा, किन्तु जाव सिरेण फुसे पादे ताव णीयं वंदेज्जा, तहा अंजलिमवि कुव्वमाणेण णो पहाणंमि उवविट्ठेण अंजली कायव्वा, किंतु ईसिअवणएण कायव्वा, एसो काइगो विणयसमाधी भवइ। इदाणिं काइया वाइया य भण्णइ, तंजहा—'संघट्टइत्ता काएणं' ० ॥ ४३३ ॥ सिलोगे, जाहे पविसमाणेण वा णिक्खममाणेण वा गुरू हत्थपादाइणा काएण तहा वासकप्पपडलाइणा वा उवाहिणा संघट्टिओ भवइ, अविसट्ठो संभावणे वट्टइ, किं संभावयति ?, जहा दोहिंवि कायोवहीहिं जया जमगसमगं घट्टिओ भवइ, तहा जो इदाणिं उवाओ भण्णिहिति सो कायव्वो तं संभावयति, सो य उवाओ इमो-सिरं भूमीए निवाडेऊण एवं वएज्जा, जहा-अवराहो मे, मिच्छामि दुक्कडं, खंतव्वमेयं, णाहं भुज्जो करिहामित्ति, जो सुद्धो भवइ सो अभणिओ आयरियस्स एताणि इंगियाईणि णाऊण करेति, जो पुण मंदबुद्धी सो—'दुग्गओ व पओएणं' ० ॥ ४३४ ॥ सिलोगो, दुग्गओ णाम दुग्गवोत्ति वा दुट्ठगोणोत्ति वा गलिवइोत्ति वा एगट्ठा, पयोओ तेजणो भण्णइ, जहा सो दुग्गवो तिक्खेणं तोत्तएण पुणो २ चोइज्जमाणो रहं वहइ, एवं दुब्बुद्धी जाणि आयरियउवज्झायाईणं किच्चाइं मणरुइयाणि ताणि वुत्तो वुत्तो पकुव्वइ। आह—कहं तेसिं अणे-गगुणसंपावगाणं आयरियाणं किच्चाइं से साहू कुव्वइत्ति ?, भण्णइ—'कालं छंदोवयारं च० ॥ ४३५ ॥ सिलोगो, तत्थ कालं पडुच्च आयरियो वुड्ढवयत्थो तत्थ सरदि वातपित्तहराणि दव्वाणि आहरति, हेमंते उण्हाणि, वसंते हिंभरहाणि (सिंभह-राणि) गिम्हे सीयकराणि, वासासु उण्हवण्णाणि, एवं ताव उडुं उडुं पप्प गुरूण अट्ठाए दव्वाणि आहरिज्जा, तहा उडुं पप्प

सेज्जमवि आणेज्जा, एवमादि, छन्दो णाम इच्छा भण्णइ, कयाइ अणुदुप्पयोगमवि दव्वं इच्छति, भणियं च—'अण्णस्स पिया छासी मासी अण्णस्स आसुरी किसरा। अण्णस्स घारिया पूरिया य बहुडोहलो लोगो ॥ १ ॥ तहा कोई सत्तुए इच्छइ कोति एगरसं इच्छइ, देसं वा पप्प अण्णस्स पियं जहा कुदुक्काणं कोंकणयाण पेज्जा, उत्तरापहगाणं सत्तुया, एवमादि, 'उवयार' णाम विधी भण्णइ, जहा कोई धम्मकाहिणो कोई वेयावच्चकरस्स केइ भासिणो केइ आसन्नसेविणो एवमादि, उवचारछन्द-कालं 'पडिलेहित्ताण हेउहिं' ति, पडिलेहित्ता णाम जाणिऊण, हेउणा नाम कारणेण, एतेसिं कालछन्दोवयाराणं जेण २ उवाएण कालछन्दपाउग्गा दव्वा लब्भंति जेण वा उवायकरणेण तूसइ तेण तेण उवाएण तं तं संपाडिवायन्ति। किंच—'विवत्ती अविणीअस्स' ० ॥ '४३६॥ सिलोगो, विवत्ती नाम विगया संपत्ती नाणादिगुणेहिं अविणीयस्स भवइ, अट्ठेहिं विणीयस्स संपदा भवति, 'जस्सेयं दुहओ णायं' 'जस्स' त्ति अविसेसियस्स गहणं, दुहओ णाम उभओत्ति वा दुहओत्ति वा एगट्ठा, अविणयाओ गुणविवत्ती विणयाओ गुणसंपत्ती भवइत्ति णायं, दुविधं सिक्खं-गहणसिक्खं आसेवणासिक्खं च अभिगच्छइ, सिक्खातो य मोक्खं, अभिगच्छइ नाम अभिगच्छतित्ति वा पावइत्ति एगट्ठा, भणिया विणीया। इदाणिं अविणीया भन्नंति, तेसिणं अविणयाणं अविणयफलं भण्णइ, तंजहा—'जे आवि चंडे' ० ॥ ४३७ ॥ वृत्तं, 'जे' त्ति अणिद्दिट्ठस्स गहणं, चकार पादपूरणे, अविसद्दो संभावणे वट्टइ, जहा सुदुट्ठु दुलहं निवयणिज्जगुणजुत्तमवि जिणाणुवयणाणुवयणं लद्धूण केऽवि सत्ता इमेसु दोसेसु वट्टंतित्ति एवं संभावयति, चंडो कोहणो भण्णइ, जातीए इड्ढिगारवं वहति, जहाऽहं उत्तमजातीओ कहमेतस्स पादे लग्गिहामित्ति मति इदृशी गारवो भण्णति, पीतिसुण्णं करोतित्ति पिसुणो, सो य जो पच्छा अगुणकित्तणं करेई, नरेसु मोक्खो भवइत्तिकाऊण णरग-

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥४१६-४३८॥

दीप अनुक्रम [४३२-४५५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ९ विनयाध्य-यने ॥३१७॥

हणं, साहसो णाम जं किंचि तारिसं तं असंकिओ चेव पडिसेवतित्तिकाऊण साहस्सिओ भण्णइ, 'हीणपेसणं' णाम जो य पेसणत्तं आयरिएहिं दिन्नं तं देसकालादीहिं हीणं करेतित्ति हीणपेसणे 'अदिट्ठधम्मे' णाम सुतधम्मचरित्तधम्मअजाणए भण्णइ, विणए जिणोवइट्ठे अकोविए, जहा इमं आयरियस्स कायव्वं, इमं पाहुणगगिलाणादीणंति, 'असंविभागी' णाम संविभायणा-सीलो संविभागी, ण संविभागी असंविभागी, एवंविहसीलस्स तस्स सुचिरेसु व कालेण च मोक्खो न अत्थित्ति । इदाणिं विणीओ विणयफलं च दोन्नि भण्णंति, तंजहा—'निद्देसवित्ती पुण' ० ॥ ४३८ ॥ वृत्तं, निद्देसो णाम आणा भण्णइ, पुणसद्दो विसेसणे वट्टइ, किं विसेसयइ ?, जहा विसेसेण आयरियस्स विणयो कायव्वो, सेसाणवि जहाणुरूवो कायव्वोत्ति एयं विसेसयति, जेत्ति अणिद्दिट्ठाण गहणं, गुरवो पसिद्धा, सुयोऽत्थधम्मो जेहिं ते सुतत्थधम्मा, गीयत्थित्ति वुत्तं भवइ, अहवा सुओ अत्थो धम्मस्स जेहिं ते सुतत्थधम्मा, विणए जहारिहे पउंजियव्वे कोविदा, जम्हा एवंगुणजुत्ता अतो 'तरंति ते ओघमिणं दुरुत्तरं'-ति, तरंतिगहणेण तिण्हं गहणं कयं, तं०-तरगस्स तरणयस्स तरियव्वस्सत्ति, एतेसिं निदरिसणं जहा दव्वतरओ देवदत्तो, तरणं नावा, तरियव्वयं समुद्दो, एवं भावतरओ साहू तरणं णाणदंसणचरित्ताणि तरियव्वयं इमो पच्चक्खो संसारोत्ति, ते य भगवंतो साधवो खवित्तु कम्माणि णाणावरणाईणि संसारसागरं तरंतीति, तरिऊण य 'गइमुत्तमं गया' आह—पुव्विं 'खवित्तु कम्ममिति' वत्तव्वे कहं तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरंति पुव्वभणियं ?, आयरिओ आह—पच्छादीवगो णाम एस सुत्तबंधोत्तिकाऊण न दोसो भवइ, सावसेसकम्मुणो य देवलोगे सुकुलेसु पयायंति, पुणो य बोहिं लद्धूण पच्छा गतिमुत्तमं गच्छतीति, बेमि नाम तीर्थ-करोपदेशात्, न स्वाभिप्रायेण ब्रवीमीति ॥ **विणयसमाहिअज्झयणे बिईओ उद्देसो सम्मत्तो** ॥

२ उद्देशकः

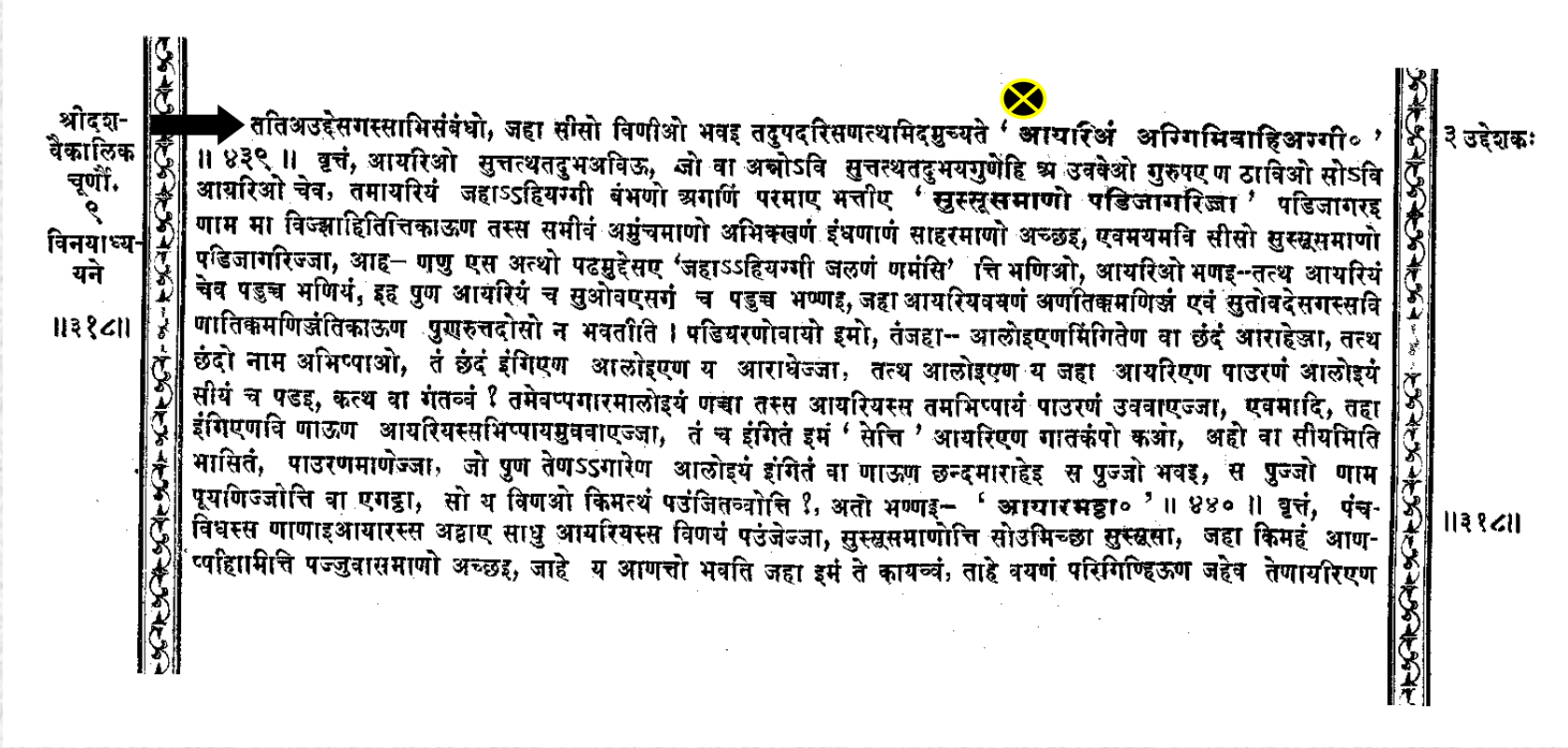
॥३१७॥

अत्र नवमे अध्ययने द्वितीय उद्देशक: परिसमाप्त:

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ||४३९-४५३||

दीप अनुक्रम [४५६-४७०]



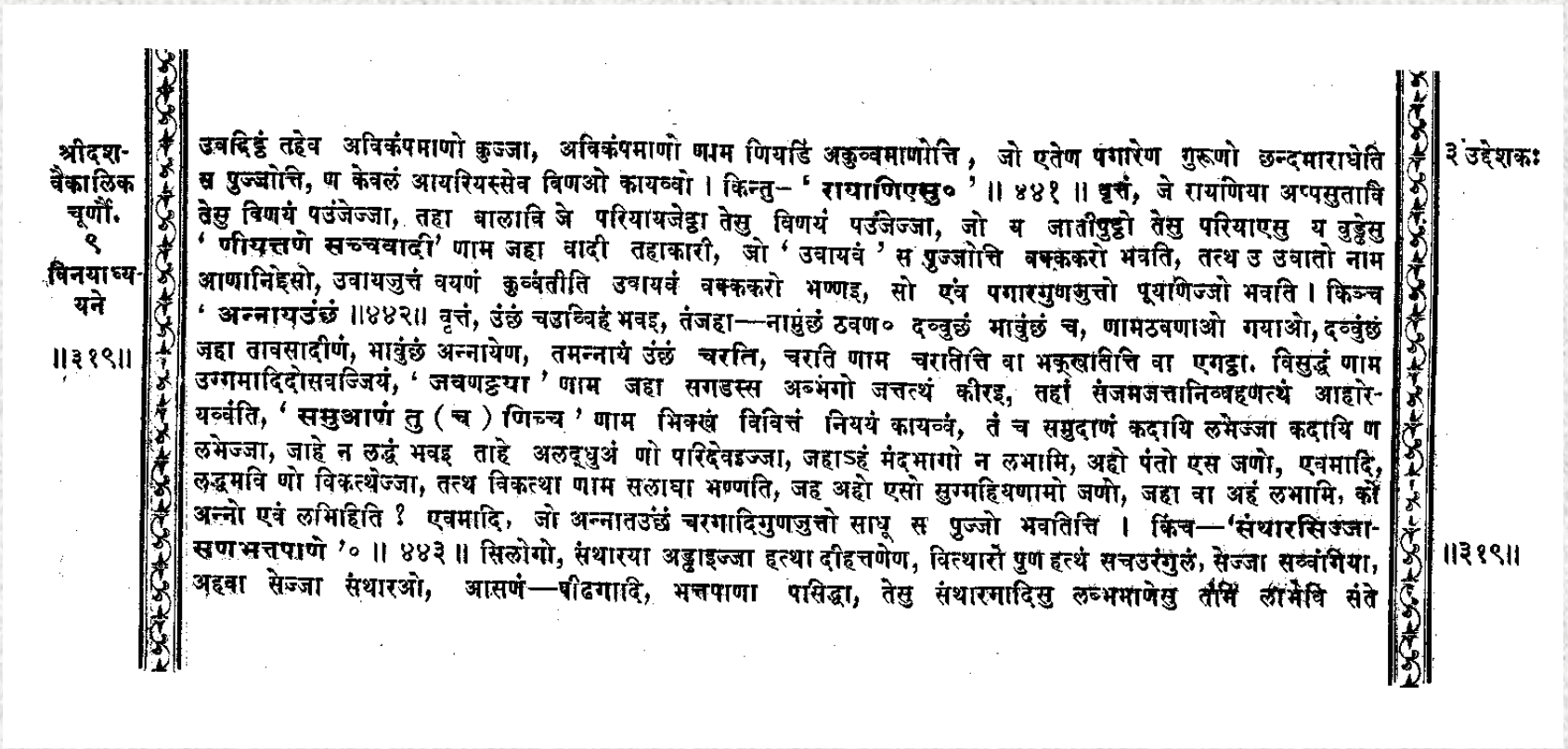
श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ, ९ विनयाध्ययने ॥३१८॥

ततिअउद्देसगस्साभिसंबंधो, जहा सीसो विणीओ भवइ तदुपदरिसणत्थमिदमुच्यते ‘ आयरिअं अग्गिमिवाहिअग्गी० ’ ॥ ४३९ ॥ वृत्तं, आयरिओ सुत्तत्थतदुभअविऊ, जो वा अन्नोऽवि सुत्तत्थतदुभयगुणेहि अ उवक्केओ गुरुपए ण ठाविओ सोऽवि आयरिओ चेव, तमायरियं जहाऽऽहियग्गी बंभणो अगणिं परमाए भत्तीए ‘ सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा ’ पडिजागरह णाम मा विज्झाहितित्तिकाऊण तस्स समीवं अमुंचमाणो अभिक्खणं इंधणाणं साहरमाणो अच्छइ, एवमयमवि सीसो सुस्सूसमाणो पडिजागरिज्जा, आह– णणु एस अत्थो पढमुद्देसए ‘जहाऽऽहियग्गी जलणं णमंसि’ त्ति भणिओ, आयरिओ भणइ--तत्थ आयरियं चेव पडुच्च भणियं, इह पुण आयरियं च सुओवएसगं च पडुच्च भण्णइ, जहा आयरियवयणं अणतिक्कमणिज्जं एवं सुतोवदेसगस्सवि णातिक्कमणिज्जंतिकाऊण पुणरुत्तदोसो न भवतीति । पडियरणोवायो इमो, तंजहा-- आलोइएणमिंगितेण वा छंदं आराहेज्जा, तत्थ छंदो नाम अभिप्पाओ, तं छंदं इंगिएण आलोइएण य आराधेज्जा, तत्थ आलोइएण य जहा आयरिएण पाउरणं आलोइयं सीयं च पडइ, कत्थ वा गंतव्वं ? तमेवप्पगारमालोइयं णच्चा तस्स आयरियस्स तमभिप्पायं पाउरणं उववाएज्जा, एवमादि, तहा इंगिएणवि णाऊण आयरियस्सभिप्पायमुववाएज्जा, तं च इंगितं इमं ‘ सेत्ति ’ आयरिएण गातकंपो कओ, अहो वा सीयमिति भासितं, पाउरणमाणेज्जा, जो पुण तेणऽऽगारेण आलोइयं इंगितं वा णाऊण छन्दमाराहेइ स पुज्जो भवइ, स पुज्जो णाम पूयणिज्जोत्ति वा एगट्ठा, सो य विणओ किमत्थं पउंजितव्वोत्ति ?, अतो भण्णइ– ‘ आयारमट्ठा० ’ ॥ ४४० ॥ वृत्तं, पंच-विधस्स णाणाइआयारस्स अट्ठाए साधु आयरियस्स विणयं पउंजेज्जा, सुस्सूसमाणोत्ति सोउमिच्छा सुस्सूसा, जहा किमहं आण-प्पेहामित्ति पज्जुवासमाणो अच्छइ, जाहे य आणत्तो भवति जहा इमं ते कायव्वं, ताहे वयणं परिगिण्हिऊण जहेव तेणायरिएण

३ उद्देशकः

॥३१८॥

अत्र नवमे अध्ययने तृतीय उद्देशक: आरब्ध:



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ९ विनयाध्ययने ॥३१९॥

उवदिट्ठं तहेव अविकंपमाणो कुज्जा, अविकंपमाणो णाम णियडिं अकुव्वमाणोत्ति, जो एतेण पगारेण गुरूणो छन्दमाराधेति स पुज्जोत्ति, ण केवलं आयरियस्सेव विणओ कायव्वो । किन्तु- ' रायाणिएसु० ' ॥ ४४१ ॥ वृत्तं, जे रायणिया अप्पसुतावि तेसु विणयं पउंजेज्जा, तहा बालावि जे परियायजेट्ठा तेसु विणयं पउंजेज्जा, जो य जातीपुट्ठो तेसु परियाएसु य वुड्ढेसु ' णीयत्तणे सच्चवादी' णाम जहा वादी तहाकारी, जो ' उवायवं ' स पुज्जोत्ति वक्ककरो भवति, तत्थ उ उवातो नाम आणानिद्देसो, उवायजुत्तं वयणं कुव्वंतीति उवायवं वक्ककरो भण्णइ, सो एवं पगारगुणजुत्तो पूयणिज्जो भवति । किञ्च ' अन्नायउंछं ॥४४२॥ वृत्तं, उंछं चउव्विहं भवइ, तंजहा—नामुंछं ठवण० दव्वुंछं भावुंछं च, णामठवणाओ गयाओ, दव्वुंछं जहा तावसादीणं, भावुंछं अन्नायेण, तमन्नायं उंछं चरति, चरति णाम चरातित्ति वा भक्खातित्ति वा एगट्ठा. विसुद्धं णाम उग्गमादिदोसवज्जियं, ' जवणट्ठया ' णाम जहा सगडस्स अब्भंगो जत्तत्थं कीरइ, तहा संजमजत्तानिव्वहणत्थं आहारेयव्वंति, ' समुआणं तु (च) णिच्च ' णाम भिक्खं विवित्तं नियतं कायव्वं, तं च समुदाणं कदायि लभेज्जा कदायि ण लभेज्जा, जाहे न लद्धं भवइ ताहे अलद्धुअं णो परिदेवइज्जा, जहाऽहं मंदभागो न लभामि, अहो पंतो एस जणो, एवमादि, लद्धमवि णो विकत्थेज्जा, तत्थ विकत्था णाम सलाघा भण्णति, जह अहो एसो सुग्गहियणामो जणो, जहा वा अहं लभामि, को अन्नो एवं लभिहिति ? एवमादि, जो अन्नातउंछं चरगादिगुणजुत्तो साधू स पुज्जो भवतीत्ति । किंच—'संथारसिज्जासणभत्तपाणे '० ॥ ४४३ ॥ सिलोगो, संथारया अड्ढाइज्जा हत्था दीहत्तणेण, वित्थारो पुण हत्थं सचउरंगुलं, सेज्जा सव्वंगिया, अहवा सेज्जा संथारओ, आसणं—पीढगादि, भत्तपाणा पसिद्धा, तेसु संथारगादिसु लब्भमाणेसु तंमि लाभेवि संते

३ उद्देशकः

॥३१९॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१५...] गाथा ॥४३९-४५३॥

दीप अनुक्रम [४५६-४७०]

' अप्पिच्छया ' अप्पिच्छया णाम णो मुच्छं करेइ, ण वा अतिरित्ताण गिण्हइ, जो एएणप्पगारेण ' अप्पाणं आभिओसएज्जा ' अभितोसएज्जा णाम जेण व तेण व संतुट्ठमप्पाणं कुव्विज्जात्ति वुत्तं भवति, भणियं च—हे जं च तं च आसित जत्थ व तत्थ व सहोवगयानिह ! । जेण व तेण व संतुट्ठ धीर मुणिओ हु ते अप्पा ॥१॥ 'संतोसपाहन्नरए' त्ति संतोसो सव्वपहाणं पहाणे एयंमि संतोसपाहण्णे जो रतो स पूयणिज्जो भवइत्ति । इदाणिं इंदियसमाही भण्णइ, तंजहा—'सक्का सहेउं आसाइ कंटया० ' ॥४४४ ॥ वृत्तं, सक्का णाम सक्कत्ति वा सहयात्ति वा एगट्ठा. सहिउं णाम अधियासेउं, आसाए णाम एतेण कएण इमा अत्थसिद्धी भवइत्ति, जहा कोयि लोहमयकंटया पत्थेरऊण सयमेव उच्छहमाणा ण पराभियोगेण तेसिं लोहकंटगाणं उवरिं णुविज्जति, ते य अण्णे पासित्ता किवापरिगयचेतसा अहो वरागा एते अत्थहेउं इमं आवइं पत्तत्ति भन्नंति जहा उट्ठेह उट्ठेहात्ति, जं मग्गह तं भे पयच्छामो, तओ तिक्खकंटाणिभिन्नसरीरा उट्ठेंति, अविय ते आसापडिबद्धा सक्का सहिउं, णाइदुक्करं, दुक्करं तु आणासाए जो उ सहेज्ज कंटए वयोमए कन्नसरे स पुज्जोत्ति, ' अणासाए ' णाम विणा आसाए, ण आसाए अणासाए, ' जो उ ' अणिद्दिट्ठस्स गहणं, तुसद्दो विसेसणे वट्टइ, किं विसेसयति ?, जहा सो महंतो पसंसियव्वो जो अणासाए सहतित्ति एयं विसेसयति, ' सहिज्ज ' णाम अहियासेज्जात्ति, कंटगा पसिद्धा, के य ?, वतीमया, वाया कडुगफरुसा कंटगा भवंति, ते य वतीमए कंटए सहइ, कन्नं संरंतीति कन्नसरा, कन्नं पविसंतीति वुत्तं भवइ, जहा ते कंटगा कायाणुगया दुरुद्धरा भवंति तहा अणासया वायाकंटगा कण्णसोयमणुगया दुरुद्धरा भवंतीति । ' मुहुत्तदुक्खा उ भवंति कंटया ०' ॥ ४४५ ॥ वृत्तं, ते य वओमया कंटगा मुहुत्तदुक्खा भवंति सुहं च उद्धरिज्जंति, वणपरिकम्मणादीहि य उवाएहिं रुज्झविज्जंति

वायादुरुत्ताणि पुण दुरुद्धराणि भवंति, वेराणुबंधीणि य भवंति, 'महब्भयाणि य' भणियव्वंति सोयारस्स कहमाणस्स य दोण्हवि, तत्थ सोयारस्स जहा चोरोत्ति भणिए किं परेण सुतं होज्जात्ति भयमुप्पज्जति, तहा भासगस्सवि एवं गिरा दोसादि महंतं भवतित्ति। ते एवं ' समावयंता ०' ॥ ४४६ ॥ वृत्तं, ' समावयंता ' नाम अभिमुहमावयंताणि वयणाणि कडुगफरुसाणि णेहविवज्जियाणि अभिघाया वयणाभिघाता ' **कन्नं गया दुम्मणिअं** जणंति ' त्ति, ' **दुम्मणिअं** ' नाम दोमणस्संति वा दुम्मणियंति वा एगट्ठा, वयणाभिघाए कोयि असत्तिओ सहइ कोइ धम्मोत्ति, जो पुण धम्मोत्तिकाऊण सहइ सो य ' **परमग्गसूरे** ' भवइ, परमग्गसूरे णाम जुद्धसूर-तवसूर-दाणसूरादीणं सूराणं सो धम्मसद्धाए सहमाणो परमग्गसूरो भवइ, सव्वसूराणं पाहण्णयाए उवरि वट्टइत्ति वुत्तं भवति. ' जिइंदिए ' त्ति साहुस्स गहणं, जो एवं वयणाभिघाए सहइ सो पूयणिज्जो भवइत्ति। एते वयणदोसे णाऊण ' **अवण्णवायं** ०' ॥ ४४७ ॥ वृत्तं, अवन्नो नाम अयसा, तस्स अवन्नस्स वयणं अवन्नवाओ भण्णइ, तं अवन्नवादं परम्मुहस्स नो भासेज्जा, पच्चक्खमवि जा य पडिणीयभासा, जहा तुमं चोरो पारदारिओ वा, तहा ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च भासं नो भासेज्जा, तत्थ ओहारिणी संकिया भण्णति, जहा एसो चोरो पारदारिओ ?, एवमादि, भणियं च-' से मंते! मण्णामित्ति ओहारिणी भासा ' आलावगो, ' **अप्पियकारिणी** ' नाम भासिज्जमाणी अदेसकालपयत्तत्तेण अण्णेण वा केणइ कारणेण सोतारस्स णो पीइमुप्पाएइ सा अधि(प्पिय)कारिणी भण्णइत्ति, तमेवप्पगारं जो ण भासइ सदा सो पूयाणिज्जो भवइत्ति। ' **अलोलुए** ०' ॥ ४४८ ॥ वृत्तं, 'अलोलुए' नाम उक्कोसेसु आहारादिसु अलुद्धो भवइ, अहवा जो अप्पणोवि देहे अप्पडिबद्धो सो अलोलुओ भण्णइ, तथा कुहगं-इंदजालादीयं न करेइत्ति अकुहएत्ति, अहवा वाइ-

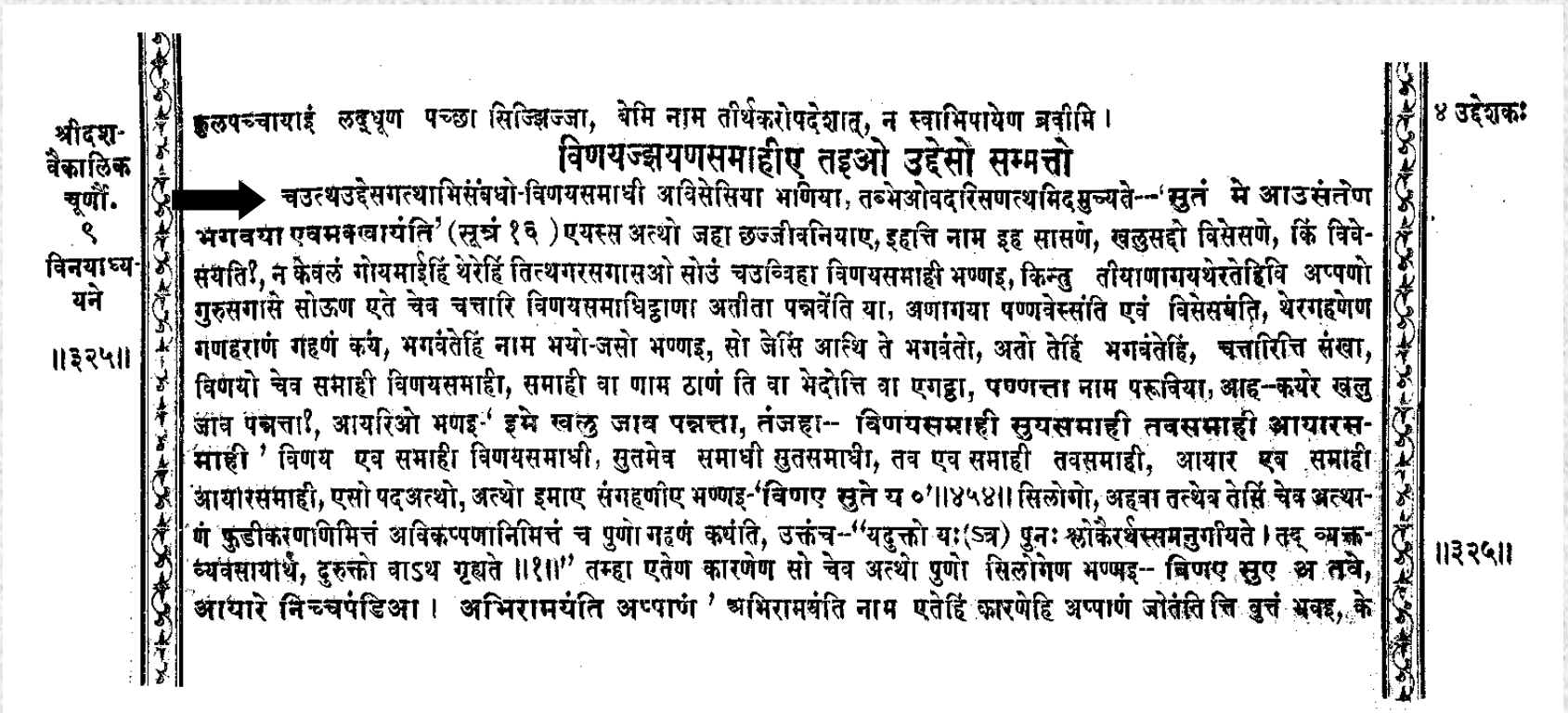
तहिं कुद्धंग भण्णइ, तं न करेइ अकुहएत्ति, अज्जवसंपण्णो अमाई भण्णइ, तहा अपिसुणे यादि 'अपिसुणे' णाम नो मनोधीति-भेदकारए, अदीणवित्ती नाम आहारोवहिमाइसु अलब्भमाणेसु णो दीणभावं गच्छइ, तेसु लद्धेसुवि अदीणभावो भवइत्ति 'अदीणवित्ती नो भावए' नाम नो अन्नं एवं वएज्जा, जहा तुमं मए अन्नउत्थियाणं गिहत्थाण य पुरओ ठविज्जासि, जहा अहो तवस्सी विज्जातिसयपत्तो नेमित्तिओ एवमादि य,सयमवि अप्पणो नो एवं वएज्जा जहा धम्मी खमओ नाणी वा णेमित्तिओ वा विज्जासिद्धो वा असुगकुलिगो वा एवमादि, तहा नडनट्टगादिसु णो कुउहलं करेइ, जो एयगुणजुत्तो साहू सो सदा पूयाणिज्जो भवइ ॥ किंच-'गुणेहिं साधू०'॥४४९॥ वुत्तं, जे एते विणयगुणा भणिया जो एतेहिं गुणेहिं जुत्तो सो साधू भवइ, तव्विवरीएहिं अगुणेहिं असाधु भवइत्तिणाऊण साहूणं जे गुणा ते गेण्हाहि, मुंचहि असाहुअगुणे गंथलाघवत्थमकारलोवं काऊण एवं पढिज्जइ जहा मुंचऽ-साधुत्ति. विविधं-अणेगप्पगारं अप्पगं कम्मुणा अट्ठविधेण बज्झमाणं अप्पणो विजाणिय जो रागदोसेहिं समो से पूयाणिज्जो भवति-त्ति । आह-वियाणिया अप्पगंति भाणियव्वे सइ किमत्थं अप्पगेणंति भण्णति ?, आयरिओ आह-केसिंचि उलूगादीण णाणस्स णाणिणोऽविहु अभावो, तप्पडिसेहणत्थं अप्पकहणंति, किंच-' तहेव डहरं च महल्लगं वा० ' ॥४५०॥ वृत्तं, ' तहेव ' त्ति जहा अवण्णवायादी ण कप्पंति आयरिउं तहा इदमवि, एवसद्दो पायपूरणे, डहरो-बालो भण्णइ, 'महल्लो' थेरो भण्णइ, चकारगहणेण मज्झिमवओऽवि गहिओ, एतेसिं एक्केक्को इत्थी पुरिसो वा होज्जा, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण' मितिकाउं नपुंसगोऽवि गहिओ, तत्थ इत्थी गिहत्था वा होज्जा पव्वइगा वा, एवं पुरिसोऽवि, नपुंसगोऽवि, सो ण कप्पइ पव्वावेउं, जाहे अणाभोगादिणा कारेणण पव्वाविओ होज्जा ताहे सव्वप्पगारेण विवेचणिज्जो, अहवा सोऽवि चरगादिपव्वज्जाए पव्वइओ होज्जा,

तं साहू एक्केक्कओ डहरं मज्झिमं महल्लं वा इत्थिं वा पुरिसं वा नपुंसगं वा पव्वइयं गिहत्थं वा न हीलेज्जा, तत्थ हीलणा जहा सूया अणीसरं ईसरं भण्णइ, दुट्ठं भद्दगं भण्णइ, एवमादि, खिंसीद असूयाइ जाइतो कुलओ कम्मायो सिप्पयो वाहिओ वा भवति, जाइओ जहा तुमं मच्छजाइजातो, कुलओ जहा तुमं जारजाओ, कम्मओ जहा तुमं जट्ठेहिं भयभीज्जो, सिप्पओ जहा तुमं सो चम्मगारो, वाहिओ जहा तुमं सो कोढिओ, अहवा हीलणाखिंसणाण इमो विसेसो-हीलणा नाम एक्कवारं दुव्वयणियस्स भवइ, पुणो २ खिंसणा भवइ, अहवा हीलणाऽतिफरुसं भणियस्स भवइ, सुट्ठु निट्ठुरं भासितस्स खिंसणा भवइ, सा य हीलना खिंसणा य थंभाओ कोहाओ वा हवेज्जा, तेहिं थंभकोहेहिं पुव्वमेव हीलणाखिंसणाओ जढाओ भवंति, जो अहीलणो अखिंसणो य सो य पूयणिज्जोत्ति । किंच—'जे माणिया०'॥४५१॥ वृत्तं, 'जे' त्ति अणिद्दिट्ठाणं गहणं, 'माणिया' नाम अब्भुट्ठाणसक्कारादीहिं, सययंति वा अणुबद्धंति वा एगट्ठा, अणुबद्धमेव ते आयरिया तेसु सीसेसु उवएसपरिचोदणाहिं पडिमाणयंति, तहा ' जत्तेण कन्नं व निवेसयंति ' जहा मातापितरो कन्नं आबालभावाओ आरब्भ महता पयत्तेण संवड्ढेऊण सारक्खेऊण पयत्तेण निवेसंति, निवासो नाम भत्तारागुप्पयाणं भण्णइ, एवं ते आयरियावि तं सीसं विणयमूलं धम्मं सिक्खावेऊण सुत्तत्थतदुभओवएसेण य आयरियत्ते ठायंति, जम्हा ते एवंविधं पच्चुवगारं कुव्वंति अतो ते अब्भुट्ठाणेण माणणोवाएण माणेज्जा , ' माणरिहे ' नाम जो सो अब्भुट्ठाणसक्कारादिसंमाणो तस्स परमत्थओ ते अरहा, ण कुतित्थियाईण आयरियत्ति, तवस्सी णाम तवो बारसविधो सो जेसिं आयरियाणं अत्थि ते तवस्सिणो, जिइंदिए णाम जियाणि सोयाईणि इंदियाणि जेहिं ते जिइंदिया, सच्चं पुण भणियं जहा वक्कसुद्धीए तंमि रओ सच्चरओ, ते एवंगुणजुत्ता माणणिज्जत्ति, जो ते माणियइस पूयणिज्जो भवतित्ति । इदाणिं सपूयणिज्जेसु जं

भण्णइ, तंजहा-- ' तेसिं गुरूणं ०'॥४५२॥ वृत्तं, तेसिं णाम जे ते विणओवएससक्कारादिगुणजुत्ता भणिया, गुरवो पसिद्धा, गुणेहिं सागरो विव अपरिमिया जे ते गुणसागरा तेसिं गुणसागराणं, सोच्चाण णाम सोऊण वा सोच्चाण वा एगट्ठा, मेहावी पुव्वभणिओ, सोभणाणि भासियाणि सुभासियाणि, ' चरे ' णाम आयरिओवएसमायरिज्जा, मुणिगहणं मुणित्ति वा नाणित्ति वा एगट्ठा, पंचसु महव्वएसु जयणाए रओ भवेज्जा, सारक्खणजुत्तोत्ति वुत्तं भवइत्ति, गुत्ते--मणवयणकाइएहिं गुत्तो भवेज्जा, कोहाईहिं चउहिं कसाएहिं उवसंतेहिं चत्तेहिं आयरियाणं सुभासियाइं गेण्हिऊणमायरेज्जात्ति, जो एयप्पगारगुणजुत्तो साहू सपूयणिज्जो भवइ, इदाणिं विणयफलं भण्णइ-- ' गुरुमिह सययं०'॥४५३॥ वृत्तं, तत्थ गुरू पसिद्धो, इहग्गहणेण मनुस्सलोगस्स गहणं, कम्मभूमीए वा गहणं कयंति, सययंनाम सययंति वा सव्वकालंति वा एगट्ठा, ' पडियरिय ' नाम जिणोवइट्ठेण विणएण आराहेऊणत्ति वुत्तं भवइ, 'मुणी 'नाम मुणित्ति वा णाणित्ति वा एगट्ठा, जिणाणं वयणं२ तंमि जिणवयणे णिउणो जिणवयणणिउणे, तहा ' अभिगमकुसले ' अभिगमो नाम साधूणमायरियाणं जा विणयपडिवत्ती सो अभिगमो भण्णइ, तंमि कुसले, विदियं कुसलगहणं कुत्थियाओ कारणाओ स लसइत्ति कुसलो, अहवा अच्चत्थानीमित्तं वा पुणो भण्णमाणो कुसलसद्दो पुणरुत्तं ण भवतीति, सो एयप्पगारेण धुनिउं अट्ठविहं कम्मरयमलं पुव्वकयं नवस्स आगमं पिहिऊणं ' भासुरमउलं गइं वइ' त्ति तत्थ पभासतीति भासुरा, अउला नाम अण्णेण केणवि कारणेण समाणगुणेहिं न तीरइ तुलेउं सा अतुला भण्णइ, सा सिद्धी, तं भासुरं अतुलं गइं वयंतीति, वइंति नाम वयंतित्ति वा गच्छंतित्ति वा एगट्ठा, सावसेसकम्माणो देवलोगे सु-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-५] गाथा ॥४५४-४६०॥ दीप अनुक्रम [४७१-४८४]



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ९ विनयाध्ययने ॥३२५॥

कुलपञ्चायाइं लद्धूण पच्छा सिज्झिज्जा, बेमि नाम तीर्थकरोपदेशात्, न स्वाभिपायेण ब्रवीमि।

विणयज्झयणसमाहीए तइओ उद्देसो सम्मत्तो

४ उद्देशकः

चउत्थउद्देसगत्थाभिसंबधो-विणयसमाधी अविसेसिया भणिया, तब्भेओवदरिसणत्थमिदमुच्यते--'सुतं मे आउसंतेण भगवया एवमक्खायंति' (सूत्रं १६) एयस्स अत्थो जहा छज्जीवनियाए, इहत्ति नाम इह सासणे, खलुसद्दो विसेसणे, किं विवे-संयति?, न केवलं गोयमाईहिं थेरेहिं तित्थगरसगासओ सोउं चउव्विहा विणयसमाही भण्णइ, किन्तु तीयाणागयथेरेहिंवि अप्पणो गुरुसगासे सोऊण एते चेव चत्तारि विणयसमाधिट्ठाणा अतीता पन्नवेंति या, अणागया पण्णवेस्संति एवं विसेसयंति, थेरगहणेण गणहराणं गहणं कयं, भगवंतेहिं नाम भयो-जसो भण्णइ, सो जेसिं अत्थि ते भगवंतो, अतो तेहिं भगवंतेहिं, चत्तारित्ति संखा, विणयो चेव समाही विणयसमाही, समाही वा णाम ठाणं ति वा भेदोत्ति वा एगट्ठा, पण्णत्ता नाम परूविया, आह--कयरे खलु जाव पन्नत्ता?, आयरिओ भणइ-' इमे खलु जाव पन्नत्ता, तंजहा-- विणयसमाही सुयसमाही तवसमाही आयारस-माही ' विणय एव समाही विणयसमाधी, सुतमेव समाधी सुतसमाधी, तव एव समाही तवसमाही, आयार एव समाही आयारसमाही, एसो पदअत्थो, अत्थो इमाए संगहणीए भण्णइ-'विणए सुते य०'॥४५४॥ सिलोगो, अहवा तत्थेव तेसिं चेव अत्था-णं फुडीकरणणिमित्तं अविकप्पणानिमित्तं च पुणो गहणं कयंति, उक्तंच--"यदुक्तो यः(ऽत्र) पुनः श्लोकैरर्थस्समनुगीयते। तद् व्यक्त-व्यवसायार्थं, दुरुक्तो वाऽथ गृह्यते ॥१॥" तम्हा एतेण कारणेण सो चेव अत्थो पुणो सिलोगेण भण्णइ-- विणए सुए अ तवे, आयारे निच्चपंडिआ। अभिरामयंति अप्पाणं ' अभिरामयंति नाम एतेहिं कारणेहि अप्पाणं जोतंति त्ति वुत्तं भवइ, के

॥३२५॥

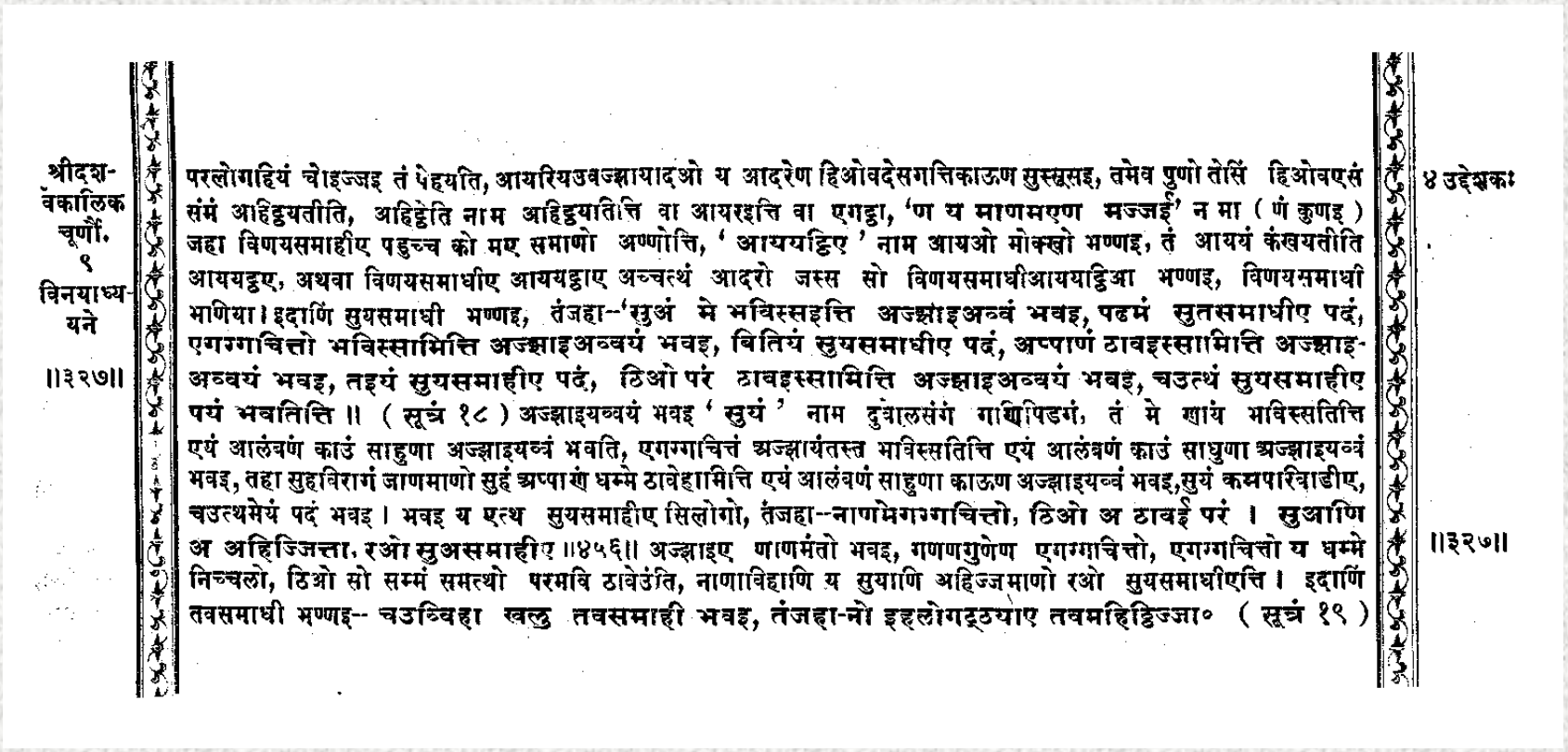
अत्र नवमे अध्ययने तृतीय उद्देशक: परिसमाप्त: तथा चतुर्थ उद्देशक: आरब्ध:

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-५] गाथा ||४५४-४६०||

दीप अनुक्रम [४७१-४८४]

पुण ते अभिरामयंति ?, एत्थ भण्णइ--' जे भवंति जिइंदिय ' त्ति, जेत्ति अणिद्दिट्ठाण गहणं कयंति, एतेसु चउसु ठाणेसु ते अप्पाणं अभिरामयंति जे य जिइंदिआ भवंति, न पुण अजितिंदियत्ति, विणयमूलो एस जिणप्पणीओ धम्मोत्तिकाऊण अतो पुव्विं विणयसमाही भणिया, तंमि विणए अवत्थिओ सुतं गेण्हइत्ति, अतो विणय (समाहीए परओ) सुयसमाही भणिया, तंमि य सुए तवो वण्णिज्जातित्ति अओ तवसमाही भणिया, तवो य आयारादुवत्थियस्स सुद्धो भवइत्ति अतो आयारस्स समाधी भणिया । इदाणिं एतेसिं एक्केकं चउव्विहं भण्णइ, तत्थ ' चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइत्ति (सूत्रं १७) ' ' चउव्विहा ' नाम चउव्विहत्ति वा चउभेदत्ति वा एगट्ठा, खलुसद्दो पायपूरणे, विणओ चेव समाधी विणयसमाधी, अहवा विणयसमाधी भवति णाम हवइत्ति वा एगट्ठा, सा य चउव्विहावि इमा, तंजहा-अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ, पढमं विणयसमाधीए पदं, सम्मं संपडिवज्जतित्ति बितियं पदं, वेयमाराहइत्ति ततियं पयं भवति, ण य भवइ अत्तसंपग्गहिए, चउत्थं पदं भवति, तत्थ अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ णाम अणुसासणा पडिचोदणा भण्णइ, पडिचोइज्जंतो ममेव हितमुवइसंतित्ति सुस्सूसइ, ' सुस्सूसइ ' नाम तदेव पडिचोदणं पुणो पुणो सोउमिच्छति,' संमं संपडिवज्जई ' नाम तं पडिचोदणं तत्तओ पडिवज्जइ, ' वेयमाराहइ ' नाम वेदो---नाणं भण्णइ, तत्थ जं जहा भाणितं तहेव कुव्वमाणो तमायरइत्ति, ' न य भवइ अत्तसंपग्गहिए ' नाम नो अत्तुक्कारिसं करेइत्ति, जहा विणीयो जहुत्तकारी य एवमादि, सुत्तक्कमपरिवाडीए चउत्थमेयं पदं भवइ । भवइ य एत्थ विणय-समाहीए सिलोगो, तंजहा--पेहेइ हिआणुसासणं, सुस्सूसई तं च पुणो अहिट्ठए । न य माणमएण मज्जई, विणय-समाही आययट्ठिए ॥ ४५५॥ 'पेहेइ' नाम पेहतित्ति वा पेच्छतित्ति वा एगट्ठा, ' हिआणुसासणं ' नाम जं इहलोगहियं



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. ९ विनयाध्ययने ॥३२७॥

परलोगहियं चोइज्जइ तं पेहयति, आयरियउवज्झायादओ य आदरेण हिओवदेसगत्तिकाऊण सुस्सूसइ, तमेव पुणो तेसिं हिओवएसं संमं अहिट्ठयतीति, अहिट्ठेति नाम अहिट्ठयातित्ति वा आयरइत्ति वा एगट्ठा, 'ण य माणमएण मज्जई' न मा (णं कुणइ) जहा विणयसमाहीए पडुच्च को मए समाणो अण्णोत्ति, 'आययट्ठिए' नाम आयओ मोक्खो भण्णइ, तं आययं कंखयतीति आययट्ठए, अथवा विणयसमाधीए आययट्ठाए अच्चत्थं आदरो जस्स सो विणयसमाधीआययट्ठिआ भण्णइ, विणयसमाधी भाणिया। इदाणिं सुयसमाधी भण्णइ, तंजहा--'सुअं मे भविस्सइत्ति अज्झाइअव्वं भवइ, पढमं सुतसमाधीए पदं, एगग्गचित्तो भविस्सामित्ति अज्झाइअव्वयं भवइ, बितियं सुयसमाधीए पदं, अप्पाणं ठावइस्सामित्ति अज्झाइअव्वयं भवइ, तइयं सुयसमाहीए पदं, ठिओ परं ठावइस्सामित्ति अज्झाइअव्वयं भवइ, चउत्थं सुयसमाहीए पयं भवतित्ति ॥ (सूत्रं १८) अज्झाइयव्वयं भवइ 'सुयं' नाम दुवालसंगं गणिपिडगं, तं मे णायं भविस्सतित्ति एयं आलंबणं काउं साहुणा अज्झाइयव्वं भवति, एगग्गचित्तं अज्झायंतस्स भविस्सतित्ति एयं आलंबणं काउं साधुणा अज्झाइयव्वं भवइ, तहा सुहविरागं जाणमाणो सुहं अप्पाणं धम्मे ठावेहामित्ति एयं आलंबणं साहुणा काऊण अज्झाइयव्वं भवइ,सुयं कमपरिवाडीए, चउत्थमेयं पदं भवइ। भवइ य एत्थ सुयसमाहीए सिलोगो, तंजहा--नाणमेगग्गचित्तो, ठिओ अ ठावई परं । सुआणि अ अहिज्जित्ता, रओ सुअसमाहीए ॥४५६॥ अज्झाइए णाणमंतो भवइ, गणणगुणेण एगग्गचित्तो, एगग्गचित्तो य धम्मे निच्चलो, ठिओ सो सम्मं समत्थो परमवि ठावेउंति, नाणाविहाणि य सुयाणि अहिज्जमाणो रओ सुयसमाधीएत्ति। इदाणिं तवसमाधी भण्णइ-- चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तंजहा-नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा० (सूत्रं १९)

४ उद्देशकः

॥३२७॥

तवो बारसविधो, तं इहलोगकारणा जो अहिट्ठेज्जा, जहा ममं तवोजुत्तं णाउं सपक्खो परपक्खो य वत्थादीहिं पूएइ, इहलोइया वा कामभोगा माणुस्सगा लभिस्सामित्ति, तत्थ उदाहरणं धम्मिलो, पढमं तवसमाधीपदं गतं। तहा णो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, जहा देवलोगे मे असुगा रिद्धी भवउ, असुगे विमाणे उववज्जेज्जा, असुगं वा चक्कवट्टिमादि माणुस्सियं रिद्धिं परभवे लभेज्जा, एत्थ उदाहरणं बंभदत्तो, बितियं तवसमाधि पदं गतं। तहा ' णो **कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा**' कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठया एगट्ठा, अच्चत्थनिमित्तं आयरनिमित्तं च पउंजमाणा धुणरुत्तं न भवतीति, ततियं तवसमाधि पदं गतं। ' **नन्नत्थ कम्मनिज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जात्ति** ' णगारो पडिसेधे वट्टइ, अन्नत्थसद्दो परिवज्जणे वट्टइ, जहा कम्मनिज्जरामेगां मोत्तूण अण्णस्स न कस्सइ. अत्थस्स अट्ठाए तवमहिट्ठिज्जा, तवकमपरिवाडीए चउत्थमेयं पदं भवातित्ति। भवइ य एत्थ तवसमाधीए इमो सिलोगो, तंजहा 'विविहगुणतवोरए य **निच्चं, भवइ निरासए निज्जरट्ठिए। तवसा धुणइ पुराणपावगं, जुत्तो सया तवसमाहिए** ॥४५७॥ विविधेसु अणेगप्पगारेसु गुणेसु तवे य बारसविधे रओ णिच्चं भवइ, णिरासए णाम निग्गता आसा अप्पसत्था जस्स सो निरासए, निज्जराए अट्ठो जस्स से निज्जरट्ठीए, एतप्पगारो साहू तवेण बारसविहेण अट्ठप्पगारं पावं तवसमाधीए जुत्तो धुणतित्ति चउव्विहा तवसमाही भणिता। एवमायारसमाधी चउव्विहा भाणियव्वा णिरवसेसा, णवरं णण्णत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठिज्जा, एयंमि आलावगे सिलोगे य विसेसो, जे आरहंतेहिं अणासवत्तणकम्मणिज्जरणमादि मोक्खहेतवो भणिता आचिन्ना वा ते आरहंतिए हेऊ मोत्तूण णो अन्नस्स साहणट्ठा मूलगुणउत्तरगुणमयीयं आयारमहिट्ठिज्जात्ति। सो य पुव्वसूइओ सिलोगे इमो, तंजहा-- ' जिणवयणरए ' ०॥ ४५८ ॥ सिलोगो, जिणा पुव्वभणिया,

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-५] गाथा ||४५४-४६०||

दीप अनुक्रम [४७१-४८४]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. १० सभिक्षवध्य ॥३२९॥

जहा दुमपुप्फियाए, एतेसिं जिणाणं वयणं तंमि रती जस्स से जिणवयणरए, ' रए ' नाम रुइयंति वा सेयंति वा एगट्ठा, 'अतिंतिणे' अचवले वा (पडिपुण्णाययमाययट्ठिए) पडिपुन्नं ' नाम पडिपुन्नंति वा निरवसेसंति वा एगट्ठा. सुत्तत्थेहिं पडिपुण्णो, आयया (अच्चत्थं, आयओ मोक्खो तमत्थेइ अभिलसतित्ति) सुयाइ आयारे चेव समाही आयारसमाही, ताए आयारसमाहीए संवुडे भवति, संवुडे णाम संवरियासवदुवारे, चकारो समुच्चये वट्टइ, न केवलं आयारसमाधिसंवुडे, किन्तु पुव्विल्लाहिं समाहीहिं उवेए, दंते दुविहे-इंदिएहि य नोइंदिएहि य, नोइंदिएहिं ' भावसंधए ' णाम भावो मोक्खो तं दूरत्थमप्पणा सह संबंधए। इदाणीं एयाए चउव्विहाए समाहीए फलं भण्णइ, तंजहा--' अभिगम चउरो समाहिओ ०॥४५९॥ वृत्तं, अभिगयाओ समेयातो विणयसमाधिमादियाओ चउरो समाहीओ जस्स सो अभिगम चउरो समाधीओ, 'सुविसुद्धो' नाम तेहिं मणवयणकाएहिं जोगेहिं सुट्ठु विसुद्धो सुविसुद्धो, सुट्ठु सत्तरसविहे संजमे समाहिओ अप्पा जस्स सो सुसमाधिअप्पा, विउलं विच्छिन्नं भण्णइ, विपुलं तं हितं च विपुलहितं, सुहमावहतीति सुहावहं, पुणसद्दो विसेसणे वट्टइ, किं विसेसयति?, जहा एयाओ चउरो समाहिओ समणा आयरिऊण य पच्छा अयं विपुलं हितं सुहमावहंति णाम कुव्वइत्ति वा घडइत्ति वा एगट्ठा, सेत्ति साधुस्स निद्देसो, पदं-ठाणं ' खेमं ' णाम खेमंति वा सिवंति वा एगट्ठा, सो य मोक्खो, अत्तणो गहणेण एयं परूवियं भवइ, जहा चेत्तो कम्मं करेइ, सो चेव अविणट्ठो अण्णेण परियाएण जुंजइ, ' जाइमरणाओ ' ०॥ ४६० ॥ वृत्तं, जाती मरणं संसारो ताओ संसारातो मुच्चइत्ति, ' इत्थत्थं ' णाम जेणं भण्णइ एस नरो वा तिरिओ मणुस्सो देवो वा एवमादि, सव्वं तं सो जहातीति, सव्वसो नाम ण पुणो सरीरं गेण्हइत्ति, सो एतप्पगारगुणजुत्तो सिद्धो भवइ, सासयो, अप्परए वा देवे, तेण थोवावसेसेसु कम्मत्तणेण देवो लवसत्तमेसु

४ उद्देशकः

॥३२९॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१-५] गाथा ॥४५४-४६०॥

दीप अनुक्रम [४७१-४८४]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. १० सभिक्खुवध्य ॥३३०॥

परममहिड्ढिएसु भवइ, अन्नेसु वा वेमाणिएसु इंदसामाणियादिसु महिड्ढिओ भवइ, बेमि नाम तीर्थकरोपदेशात्, न स्वाभिप्रायेणेति, इदाणीं णया—' णायंमि गिण्हियव्वे० ' ॥ गाहा, ' सव्वेसिंपि णयाणं० ' ॥ गाहा, पूर्ववदिति ॥

विणयसमाहीअज्झयणं सम्मत्तम्

एतेसु नवसु अज्झयणत्थेसु जो वट्टइ सो भिक्खू, एतेण अभिसंबंधेणागतस्स दसमज्झयणस्स चत्तारि अणुयोगदारा जहा आवस्सए, नवरं नामनिप्फण्णो निक्खेवो सभिक्खू, सगारो निक्खिवियव्वो, भिक्खू य निक्खिवियव्वो, तत्थ पुव्वं सगारो भण्णइ, सो चउव्विहो, तंजहा—नामसकारो ठवण० दव्व० भावसगारो यत्ति, णामठवणाओ गयाओ, दव्वसगारो दुविहो, तंजहा—आगमओ णोआगमओ य, आगमओ जाणए अणुवउत्ते, नोआगमओ तिविहो, तंजहा—जाणयसरीरदव्वसगारो भवियसरीरदव्वसगारो जाणयसरीरभवियसरीरवइरित्तो दव्वसगारोत्ति, तत्थ जाणगसरीरदव्वसगारो जीवो सगारजाणओ तस्स जं सरीरगं जीवरहियं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च, जहा अयं घयकुंभे आसि, एस जाणगसरीरदव्वसगारो, इयाणीं भवियसरीरदव्वसगारो जो जीवो सगारं जाणिहित्ति अणागयभावपण्णवणं पडुच्च, जहा अयं घयकुंभे भविस्सइ अयं महुकुंभे भविस्सइ, इदाणिं जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्तो इमेण गाथापुव्वद्धेण भण्णइ–' निद्देसपसंसाए० ' ॥ ३३१ ॥ अद्धगाथा, सगारो तिसु अत्थेसु वट्टइ–निद्देसे पसंसाए अत्थिभावे य, निद्देसे जहा से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे एवमादि, पसंसाए जहा पुरिसा सप्पुरिसेहिं समं वसंता भवंति पुरिसुत्तिमा वइरिंदनीलमरगयमणिणो इव जच्चकणगसहसंबद्धा एवमादि, अत्थिभावे जह सद्धयं अमुगं कज्जति एवमादि, दव्वसगारो भणिओ, भावसगारो णाम जो जीवो सगारोवउत्तो सो भावसगारो

सकार-भिक्षुपदयो निक्षेपाः

॥३३०॥

अध्ययनं -९- परिसमाप्तं **अध्ययनं -१०- 'स-भिक्षु' आरभ्यते**

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [५...] गाथा ॥४६१-४८१॥ दीप अनुक्रम [४८५-५०५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. १० सभिक्षुवर्ण्य ॥३३१॥

भण्णइ, एते नामठवणभावसगारा उच्चारितसरिसत्तिकाऊण परूविया, इह पुण दव्वसगारेण पओयणं, तत्थवि जे इमेहिं दोहिं वट्टंति तेण अहिगारो, तंजहा—' णिद्देसपसंसाए० ' ॥ ३३१ ॥ गाथापच्छद्धं, णिद्देसे पसंसाए य एतेहिं दोहिं कारणेहिं इमंमि दसमज्झयणे पयोयणं, कहं ?, ' जे भावा दसवेआलिअंमि० ' ॥ ३३२ ॥ गाथा, जे भावा दसवेयालिए करणिज्जा भगवंतेहिं जिणेहिं वण्णिया तेसिं भावाणं जेण समावज्जणं कयं सो भिक्खू भण्णइ, सो भिक्खुत्ति सोभणो वा भिक्खुत्ति, तत्थ समावज्जणं णाम जं तेसिं गुणाणं करणं तं भण्णइ, सगारो भणिओ। इदाणिं भिक्खू भण्णइ, तस्स इमा दारगाहा 'भिक्खुस्स य निक्खेवो० ' ॥ ३३४ ॥ दारगाहा, भिक्खुस्स य णिक्खेवो भाणियव्वो, णिरुत्तं भाणियव्वं, एगट्ठियाणि भाणियव्वाणि, लिंगाणि भाणियव्वाणि, अगुणेसु ठितो भिक्खू न भवइ, अगुणेसु य अट्ठितो भिक्खू भवइ, एयाणि पयाणि, एतेहिं दोरेहिं भिक्खुस्स वक्खाणं कायव्वंति, तत्थ निक्खेवो इमो, तंजहा—' णामं ठवणा भिक्खू० ' ॥ ३३५ ॥ गाथापुव्वद्धं, चउव्विहो भिक्खू भवति, तंजहा--नामभिक्खू ठवण० दव्व० भावभिक्खुत्ति, नामठवणाओ गयाओ, दव्वभिक्खू इमो, तंजहा—' दव्वंमि आगमाई० ' ॥ ३३५ ॥ गाहापच्छद्धं, दव्वभिक्खू दुविधो, तंजहा--आगमओ णोआगमओ य, आगमओ जाणए उवउत्तो, णोआगमओ तिविधो-जाणगसरीरदव्वभिक्खू भवियसरीरदव्वभिक्खू जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्तो दव्वभिक्खू, तत्थ जाणगसरीरदव्वभिक्खू भिक्खुपदत्थाहिगारे जाणगस्स मयसरीरो, जहा अयं घयकुंभे आसि अयं महुकुंभे आसि, भवियसरीर-दव्वभिक्खू जो भिक्खुपदत्थाहिगारं जाणिहित्ति, जहा अयं घयकुंभे भविस्सति अयं मधुकुंभे भविस्सइ, जाणगसरीरभवियसरीर-वइरित्तो दव्वभिक्खू तिविधो, तंजहा-एगभविओ जो अणंतरभवे भिक्खू भविस्सइ, बद्धाउओ णाम जेण आउयं बद्धं, अभिमुहनामगुत्तो

सकार-भिक्षुपदयो निक्षेपाः

॥३३१॥

प्रत सूत्रांक [५...] गाथा ॥४६१-४८१॥

दीप अनुक्रम [४८५-५०५]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. १० सभिक्षुवध्य ॥३३२॥

जेण पएसा णिच्छूढा, अथवा इमो दव्वभिक्खू भण्णइ-'भेदओ भेअणं चेव०' ॥३३६॥ गाथा, दव्वं भिंदतीति दव्वभेदओ, सो दव्वभेदो परूवेयव्वो, दव्वभेदणं परूवेयव्वं, जं दव्वं भिंदियव्वं तं च, परूवणं एतेसिं तिण्हवि पत्तेयं २ वोच्छामि, सा य परूवणा इमा --' जह दारुकम्मगारो०' ॥३३७॥ गाहापुव्वद्धं, जहासद्दो पुव्वसूइअतिविहपरूवणअभिनिद्देसओ, दारुकम्मकारो वड्ढति, सो दव्वभेदओ भण्णइ, भेदणं परसू, भेत्तव्वयं कट्ठं, सो य दारुकम्मकारो एतेहिं भिंदएहिं संजुत्तो दव्वभिक्खू भवइ। किंच 'अन्नेऽवि दव्वभिक्खू०' ॥ ३३७॥ गाथापच्छद्धं, न केवलं दारुकम्मकारो दव्वभिक्खू भवइ, किन्तु ?, अन्नेऽवि दव्वभिक्खवो जे मूलगुणउत्तरगुणेहिं विरहिया लोगमुवजीवंति ते दव्वभिक्खवो भण्णंति, देवा अम्हे तिलोगनित्थारणत्थं मणुस्सलोए अवयरिया ते एवं बंभणा णाम कोधी माणी मायी मिच्छादिट्ठी उज्जुपन्ने धम्ममि अविकोविया मता याजणगा दुपदादीणि मग्गमाणा दव्वभिक्खवो भण्णंति, तहा अन्नेऽवि जीवणियनिमित्तं तारिसा कप्पाडियादीणं दीणा किविणा सिप्पतो भिक्खमडमाणाऽविज्जा दव्वभिक्खवोत्ति पासंडिणोऽवि ' मिच्छदिट्ठी० ' ॥ ३३९ ॥ गाहा, रत्तपडपरिवायगमादीवि मिच्छादिट्ठी वधपरा तसाणं बेइंदियादीणं थावराण य पुढविमाईणं णिच्चमेव वधकारणे रत्ता, अबंभचारित्तणेण संचइयदोसेण य दव्वभिक्खवो भवंति, आह-कहं ते अबंभचारी भवंति ?, आयरिओ आह-सक्काण ताव जे तत्थ असीलमंता तेसु मग्गणा णत्थि, जे पुण सीलमंता ते मणवइओ पडुच्च पेसदासिपरिग्गहा कहं बंभचारी भविस्संति ?, संखावि पत्ताणं सद्दादीणं विसयाणं उवभोगो कायव्वोत्ति एवं उवइसंता कहं बंभचारी भविस्संति ?, एवं अण्णेसुवि आजीवगाइसु पासंडेसु जहा संभवं भाणियव्वं, तहा इमेण संचएण संचइया, तंजहा--' दुपयचउप्पय० ' ॥ ३४० ॥ गाथा, दुपदं दासी दासा य, चउप्पयं गोमहिसादी, धणं- हिरण्णसुवण्णादी, धण्णं

सक्कार-भिक्षुपदयो निक्षेपाः ॥३३२॥

सालीवीहिमादि, कुवियं घडघडियउडुंचणियआसणसयणाइयंति, तेसु च दुप्पयादिसु तिगतिअपरिग्गहे णिरया सचित्ताणि भुंजमाणा पयमाणा य उद्दिट्ठभत्ताणि य भुंजमाणा दव्वभिक्खुणो भवंति, कहं पुण ते तिगतिगपरिग्गहे निरयात्ति ?, एतस्स अत्थस्स इमा वक्खाणगाथा–' करणतिए जोअतिए० ' ॥ ३४१ ॥ गाहा, करणकारावणअणुमोदणमइएण तिविधेण करणेण तिविधेण मणवइकाएण जोएण सावज्जे आरंभे आयहेउं सरीरठवभोगकारणे पवत्तमाणा तह परहेतुगमवि करणतिएण जोगतिएण य सावज्जेसु पवत्तमाणा, एयस्स उभयस्स अट्ठाए पवत्तमाणा भणिया, अणट्ठाएवि कं लक्खं विंधीहामित्ति अन्नतरं सत्तं विंधंति, पक्खिवाएसु वा एवमादि, एवं अणट्ठाए पवत्तमाणा तेऽवि जाव दव्वभिक्खुत्ति 'विउज्जा' नाम जाणेज्जा, दव्वभिक्खू भणिओ । इदाणिं भावभिक्खू इमेण गाथापुव्वद्धेण भण्णइ, तंजहा–'आगमओ उवउत्तो०' ॥ ३४३ ॥ गाथा, भावभिक्खू दुविधो, तंजहा–आगमओ णोआगमओ य, आगमओ जाणए उवउत्तो, णोआगमओ तग्गुणसंवेदए नाम जे भिक्खुगुणे संवेदयइ सो तग्गुणसंवेदओ भण्णइ, तेण भावभिक्खुणा इहमधिगारो, सेसा उच्चारियसरिसात्तिकाऊण परूविया, भावभिक्खू भणिओ, गयं णिक्खेवत्तिदारं । इदाणिं णिरुत्तमिति, 'तस्स णिरुत्तं भेद०'॥३४३॥ गाथाऽच्छद्धं, 'तस्स' त्ति तस्स पुव्वभणितस्स भिक्खुस्स निरुत्तं भेदगेण भेदणेण भित्तव्वएण य तिविधं भवति,एतेसिं तिण्हंवि इमं निदरिसणं–'भेत्ता ऽऽगमओवउत्तो०' ॥३४४॥ गाहा, भेत्ता) साधू, भेदणं दुविहं बाहिरब्भंतरओ, भेत्तव्वं अट्ठविहं कम्मं, तं च खुहं भण्णइ, अम्हा तं भिंदइ अतो निरुत्तं स भिक्खूत्ति । किंच-'भिंदंतो अ जहा खुदं०' ॥ ३४५ ॥ गाथा, जहा खुहं भिंदंतो भण्णइ भिक्खू तहा जयमाणो साधू जइ भण्णइ, तहा संजमं सत्तरसपगारं चरमाणो चरओ भण्णइ, तहा भवं चउप्पगारं खवेमाणो खवणो भण्णइ, अहवा भिक्खुसद्दस्स

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [५...] गाथा ||४६१-४८१||

दीप अनुक्रम [४८५-५०५]

इमेण अक्खेण पज्जाएण निरुत्तं भण्णइ, तंजहा—'जं भिक्खणमेत्तवित्ती०' ॥३४६॥ गाहा, जम्हा भिक्खणमेत्तविधी अतो भिक्खू भण्णइ, अणं कम्मं भण्णइ, जम्हा अणं खवयइ तम्हा खवणो भण्णइ, तवसंजमेसु वट्टमाणो तवस्सी भण्णइ, णिरुत्तं गयं । इदाणिं एगट्ठियाणि भिक्खुस्स तिहिं गाहाहिं भण्णंति-'तिन्ने नाती० (ताइ छ०',॥३४७॥ गाथा,'पव्वइए अणगारे०'॥३४८॥ एत्तो परं तु (साहू लूहे अ तहा) गाहा॥३४९॥ तत्थ 'तिण्णो' नाम जम्हा संसारसमुद्दं तरिंसु तरति तरिस्सति य इति तिण्णे, जम्हा अण्णेऽवि भविए सिद्धिमहापट्टणं अविग्घेण णाणाइणा पहेण नयति तम्हा नेया, दविए नाम रागदोसविमुक्को भवइ, वयाणि एतस्स अत्थि अतो वती, खमतीति खंतो, इंदियकसाया दमतीति दंतो,पाणवहादीहिं आसवदारेहिं न पविरमइत्ति विरए, मुणी मुणित्ति वा नाणित्ति वा एगट्ठा, अहवा सावज्जेसु मोणमासेवतीत्ति मुणी, तवे ठियो तावसो, पन्नवयतीति पन्नवओ, 'उज्जु' मायाविरहिओ अहवा उज्जु-संजमो तंमि अवत्थिओ उज्जु भवइ,भिक्खू पुव्वभणिओ, बुज्झइत्ति बुद्धो,जयणाजुत्तो जती, विदू नाम विदुत्ति वा नाणित्ति एगट्ठा,(पढमाए) गाहाए अत्थो भणिओ । इदाणिं बिइयाए भण्णइ, तत्थ पव्वइए णाम यो वा पाणवधादीओ प्रव्राजितो, अणगारो णाम अगारं घरं भण्णइ, तं जस्स नत्थि सो अणगारो, अट्ठविहाओ कम्मपासाओ डीणो पासंडी, तवं चरतीति चरओ, अट्ठारसविहं बंभं धारयतीति बंभणो, भिक्खणसीलो भिक्खू, सव्वसो पावं परिवज्जयंतो परिवायगो भण्णइ, सममणो समणो, बाहिरब्भंतरेहिं गंथेहिं विरओ निग्गंथो, अहिंसादीहिं संमं जुओ संजतो, जे बाहिरब्भंतरेहिं विप्पमुक्को सो मुत्तो । बितियाए अत्थो भणिओ । इदाणिं तइयाए गाहाए अत्थो भन्नति, तत्थ णिव्वाणसाहए जोगे पहे साधयतीति साधू, अंतपंतेहिं लूहेहिं जीवतित्ति लूहे, अहवा कोहादिणा हासो तस्स नत्थि सो लूहो, संसारसागरस्स तीरं अत्थयतीति तीरडी, अत्थयति नाम अत्थ-

यतीत्ति वा पत्थयति वा एगट्ठियाणि । इदाणिं तस्सेव भिक्खुस्स लिंगाणि दोहिं गाहाहिं भण्णंति-'संवेगो निव्वेओ०'॥३५०॥ गाहा, 'खंती य मद्दवऽज्जव०' ॥ ३५१ ॥ गाहा, तत्थ जिणप्पणीए धम्मे कहिज्जमाणे परसमए य पुव्वावरविरुद्धे दूसेज्जमाणे जो संवेगं गच्छइ सो तस्स संवेगो भिक्खुलिंगं णायव्वंति, तहा नरगभयगब्भवासादिभयमादिसु जो निव्वेयं गच्छइ सोवि तेण णिव्वेयमतिएण लिंगेण भावभिक्खू णायव्वो, तहा सद्दादिसु विसएसु जो विवेगो सो भिक्खुलिंगमेव भवइ, तहा सोभणसीलेहिं समाणं संसग्गी भिक्खुलक्खणं भवइत्ति, तहा इह (पर) लोगाराहणावि भिक्खुलक्खणं णायव्वं, एवं तवो बाहिरब्भंतरो, णाणं-आभिणिबोधियमादि पंचविधं, दंसणं दुविहं, तं०-णिसग्गदंसणं अभिगमुप्पन्नदंसणं च, चरित्तं अट्ठारससीलंगसहस्समयियं, विणओ विणयसमाधीए पुव्वं भणिओ, एते सव्वेऽवि भेदा भिक्खुस्स लिंगाणि भवंति, एगाए गाहाए अत्थो भणिओ। णाणादीणि खमणा-(मा)णं च दट्ठूण नज्जइ जहा एस भावभिक्खुत्ति, तहा अज्जवजुत्तो अकुडिलभावत्तणेण नज्जइ जहा एस भावभिक्खुत्ति, आहारो-वहिमादिसु विमुत्तत्तं लक्खिऊण साहिज्जए जहा एस भावभिक्खुत्ति, तहा अलब्भमाणेसुवि आहारोवहि(माईसु) अदीणं पासिऊण नज्जइ जहा एस अदीणभावो भावट्ठिओ भिक्खू, तहा बावीसं परीसहा तितिक्खमाणं दट्ठूण साहिज्जति जहा एस भावभि-क्खुत्ति, जेऽवस्सकरणिज्जा जोगा तेसु सम्मं पवत्तमाणं उवलभिऊण णज्जइ जहा एस आवस्सगसुद्धिं कुव्वमाणो भावभिक्खू भवइ, एताणि य संवेगमादियाणि तस्स भिक्खुस्स लिंगाणि भणियाणि, इयाणिं जेसु ठाणेसु अवट्ठिओ भिक्खू भवइ जेसु य न भवइ एयंमि य अत्थे जहा पंचावयवा भवंति तहा भाणियव्वं, तं०-'अज्झयणगुणि०' ॥ ३५२ ॥ गाथापुव्वद्धं, जे एतंमि अज्झयणे भिक्खुगुणा भण्णिहिन्ति तेहिं गुणेहिं जो जुत्तो सो भिक्खू, न सेसगाइ, न एतव्वतिरित्तगुणजुत्तो भिक्खू भवइत्ति एस पइन्ना,

आह—को एत्थ हेऊत्ति?, अओ हेऊ दिट्ठंतो य इमेण गाहापच्छद्धेण भण्णइ—'अगुणत्ता इइ हेऊ०'॥३५२॥ गाहापच्छद्धं, तीए पुव्वभणिताए(पइन्नाए)गुणजुत्तत्तणं हेऊ, दिट्ठंतो सुवण्णं, सुवन्नस्स ताव गुणा भण्णंति, जं तं दिट्ठंतो सुवन्नं भणियं तस्स इमे गुणा अट्ठ, तं०—'विसघाइ०' गाहा ॥३५३॥ विसघाइत्तं रसायणसामत्थजुत्तं मंगलसाहगं, विणिएणाम जं जं अभिप्पाइज्जइ तं तं कडगकुंडलादी णिव्वत्तिज्जतित्ति अतो विणीययां तस्स गुणो, पंचमो 'पयाहिणावत्तया' णाम जाहे आवट्टियं भवइ तया पयाहिणं आवत्तइ, तहा गुरुयत्तं छट्ठो गुणो, अडज्झत्तणं सत्तमो गुणो, अकुहभावो अट्ठमो गुणो भवइ. भणिता य सुवण्णगुणा। इदाणिं उवसंहारो भण्णइ—'चउकारणं०' ॥ ३५४॥ गाहा, जहा 'चउहिं कारणेहिं' ति कसच्छेदतावतालणादीहिं (निहसतावछेहतालणादीहिं) परिसुद्धं सुवण्णं भवइ, तं विसघाति रसायणं गरुयं अडज्झणं अकुहणाइगुणजुत्तं भवति, **'तं निहसगुणोवेयं'** (टीकायां तु 'तं कसिणगुणोवेअं'०)॥ ३५५॥ गाथा, जहा तं णिहसादिगुणजुत्तं सुवन्नं भवति न सेसं जुत्तीसुवन्नं, न य णामरूवमेत्तेणेव सुवन्नं भवइ, तहा अगुणजुत्तो सो भिक्खू ण भवइत्ति, 'जुत्तीसुवण्णयं पुण०' ॥ ३५६ ॥ गाथा, जइ पुण केणइ तारिसेण उवाएण जुत्तीसुवन्नं कीरेज्जा, न हु तं सुवण्णं वण्णं चिरेणवि कालेण सेसेहिं गुणेहिं निहसाईहिं असन्तेहिं सुवण्णं भवइ, तहा—'जे अज्झयणे भणिआ०' ॥ ३५७ ॥ गाथा, जे एयंमि अज्झयणे भिक्खुगुणा भणिया, ते सम्मं फासेमाणो सो भिक्खू भवति, जस्स जं भिक्खुत्ति नामं कयं तं भावं पडुच्च, न नामं ठवणं दव्वंति, कहं ?. सुवन्नस्सवत्थेण जहा सोभणवन्नं विसघातादिगुणजुत्तं च काऊण सुवन्नस्स सुवन्नंति नामं कयं, तहा जे सुभिक्खुस्स अज्झयणे गुणा भणिया तेसु वट्टमाणो जो भिक्खुवित्ती सो भिक्खू भण्णइ. न जो भिक्खणसीलो सो भिक्खू रागवसो भवइ, कहं?,'जो भिक्खू गुणरहिओ०' गाथा॥३५८॥

जो भिक्खू गुणरहिओ ठाऊण भिक्खं हिंडइ सो भिक्खू न भवइत्ति, कहं ?, जहा एगेण वत्थेण जुत्तीसुवन्नं असइ सेसेसु विसघातादिगुणवित्थरेसु(न)सुवन्नं भवइ । किंच, कहं सो भिक्खू भविस्सति? जो इमेहिं कारणेहिं वट्टइ?, तंजहा—'उद्दिट्ठकडं०'॥३५९॥ गाहा, जो उद्दिट्ठकडं भुंजइ, पुढविमादीणि य भूताणि पमद्दमाणो य घरं कुव्वइ, पच्चक्खं जलगए-पूयरगादीए जीवे जो पिबति, कहं सो भिक्खू भविस्सइत्ति ?, उवसंहारो भणिओ । इदाणिं निगमणं भण्णइ—'तम्हा जे अज्झयणे०' ॥ ३६० ॥ गाथा, तम्हा अगुणजुत्तो भिक्खू न भवइ, जे एयंमि दसमज्झयणे मूलगुणा भिक्खुस्स भणिया तेहिं समण्णिओ भिक्खू भवति, तहा उत्तरगुणेहि-पिंडविसोधीपडिमाभिग्गहमाईहिं सो भिक्खू भावियतरो भवइत्ति, नामनिप्फण्णो गतो । इदाणिं सुत्ताणुगमे सुत्तं उच्चारेयव्वं, अक्खलियं जहा अणुओगदारे, तं च सुत्तं इमं—'णिक्खंममादाय०' ॥४६१॥ वृत्तं, 'क्रमु पादविक्षेपे' धातुः, अस्य धातोः निस्पूर्वस्य 'समानकर्तृकयोः पूर्वकाले' इति (पा. ३-४-२१) क्त्वाप्रत्ययः, क्त्वाकारादाकारमपकृष्य ककारः ङ्कितिलोपः 'आर्धधातुकस्येड्वलादे'रिति (पा. ७-२-३५) इडागमः, निसः सकारस्य 'इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्येति' (पा. ८-४-४१) सकारस्य षकारः, परगमनं निष्क्रम, त्वा 'कुगतिप्रादय' इति (पा. २-२-१८) समासः, सुपलुक् 'समासे नञ्पूर्वो क्त्वा ल्यपिति ल्यप्प्रत्ययः, सुपलुक् आदेशः, निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः इडादीनामभावः, पकारलकारयोर्लोपः, परगमनं, निष्क्रम्य, तीर्थकरगणधराज्ञया निष्क्रम्य सर्वसंगपरित्यागं कृत्वेत्यर्थः, अथवा निष्क्रम्य-आदाय, 'बुद्धवयणं' बुद्धाः—तीर्थकराः तेषां वचनमादाय गृहीत्वेत्यर्थः, निक्खम्म नाम गिहाओ गिहत्थभावाओ वा दुपदादीणि य चइऊण, णिक्खमिज्जा, 'ज्ञा अवबोधने' धातुः, अस्य धातोः आपूर्वस्य 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः क इति' (पा. ३-१-१३५) कः प्रत्ययः, ककारादकारमपकृष्य ककारः ङ्कितिदिक्षा

लोपः 'आतो लोप इटि च क्ङिति चेति' (पा. ६-४-६४) आकारलोपः परगमनं आज्ञा इति स्थिते स्त्रीविवक्षायां 'अजाद्यतष्टाप्' इति (पा. ४-१-४) टाप् प्रत्ययः अनुबन्धलोपः 'अकः सवर्णे दीर्घः (पा० ६-१-१०१) परगमने आज्ञा इति स्थिते ' कर्तृ-करणयोस्तृतीयेति' (पा० २-३-१८) तृतीया, तस्या एकवचनमुपादीयते टा, टाकारादाकारमपकृष्य टकारस्य लोपः, 'आङि चाप' इति (पा० ७-३-१०५) आकारस्य इकारो भवति आङि परतः, 'एचोऽयवायावः' इति (पा०६-१-१८) अय आदेशः, परगमनं आज्ञया, आणा वा आणत्ति नाम उववायोत्ति वा उवदेसोत्तिवा आगमोत्ति वा एगट्ठा, तित्थगराणाए णिक्खमिऊण,'बुध अवगमने' धातोः 'क्तक्तवतू निष्ठेति' (पा० १-१-२६) क्तप्रत्ययः, ककारः क्ङिति लोपः इट् च प्राप्तः 'एकाच उपदेशेऽनुदात्तादिति' (पा० ७-२-१०) प्रतिषेधः, गुणः प्राप्तः कित्त्वात् प्रतिषेधः 'झषस्तथोर्द्धोऽध' इति (पा० ८-२-४) तकारस्य धकारः, 'झलो झशोऽन्तस्येति' इति (पा० ८-२-३७) जस्त्वेन धकारस्य दकारः, परगमनं, बुद्धः, बुद्धानां वचनं बुद्धवचनं तस्मिन् बुद्धवचने नित्यं, चित्तसमाहितात्मा भवेत्, सर्वकालं द्वादशाङ्गे गणिपिटके चित्तं पसिद्धं तं सम्मं आहितं जस्स सो चित्तसमाहिओ, समाधितं नाम आरुहितं, जहा समाहितं भारं देवदत्तो आरुहेति, समाहितं घडं गेण्हइ, सोभणेण पगारेणेति वुत्तं भवति, आह— कहमसमाहियचित्तो भवति ?, आयरिओ आह-विसयाभिलासातो, ते च विसया सद्दादी, तेसुवि डंडणागयभूतो इत्थिअहिला-सोत्तिकाऊण तन्निवारणत्थमिदमुच्यते–'इत्थीण वसं न आवि गच्छे' त्ति,' 'ष्टुञ् स्तै शब्दसंघातयोः' धातुः, 'धात्वादेः षः सः' इति (पा० ४-१-६४) षकारस्य सभावे 'स्त्रायतेर्ड्ट्' इति (३-६-१६६) ड्ट् डकाराद्रेफमपकृष्य डकारः 'डिति टेरिति' (पा० ४-६-१४१) आलोपः, डिति स्यात् भस्यापि, अनुबन्धलोपः, [ण सामर्थ्यानि लोपः] 'लोपो व्योर्वली'-

प्रत सूत्रांक [५...] गाथा ||४६१-४८१|| दीप अनुक्रम [४८५-५०५]

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

ति (पा ६-१-१६) यकारलोपः, परगमनं स्त्र सु इति स्थिते स्त्रीविवक्षायां 'टिड्ढाणञि' ति (पा० ४-१-१५) ङीप् प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः, परगमनं स्त्री, स्त्रीणां वशं न गच्छेदिति, ताभिस्सह यः संगस्तस्य परित्याग इत्यर्थः, इत्थीओ पसिद्धाओ, तासिं वसं न यावि गच्छेज्जा, अविसद्दो संभावणे, किं संभावयति ?, जहा जो एयंमि इत्थीवसकारणे दढव्वतो सो सेससुवि पायसो ठाणेसु दढो भवति एयं संभावयति, तासिं च इत्थीणं वसं गच्छमाणो वंतं सावज्जं असमाहिकारियं पुणो पडिआयइ, जो एवं निक्खम्म आणाए बुद्धवयणे निच्चं चित्तसमाहिओ इत्थीण वसं न गच्छति वंतं नो पडिआयति स भिक्खू भवति, सोभणे य से भिक्खू भवइ, आह–णणु बुद्धग्गहणेण य सक्काइणो गहणं पावइ, आयरिओ आह–न एत्थ दव्वबुद्धाणं दव्वभिक्खूण य गहणं कयं, कहं ते दव्वबुद्धा दव्वभिक्खुया ?, जम्हा ते सम्मद्दंसणाभावेण जीवाजीवविसेसं अजाणमाणा पुढविमाई जीवे हिंसमाणा दव्व-बुद्धा दव्वभिक्खू य भवंति, कहं तेहिं चित्तसमाधियत्तं भविस्सइ जे जीवाजीवविसेसं ण उवलभंति ?, जे पुढविमादि जीवे णाऊणं परिहरंति ते भावबुद्धा भावभिक्खू य भन्नंति, छज्जीवनिकायजाणगो य रक्खणपरो य भावभिक्खू भवति, तदुपदरिसण-त्थमिदमुच्यते—'पुढविं न खणे न खणावए०' ॥ ४६२ ॥ सिलोगो, तसथावरभूओवघाओत्तिकाऊण पुढविं णो सयं खणेज्जा, न वा परेण खणावेज्जा, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण' मितिकाउं खणंतमवि अन्नं न समणुजाणेज्जा, 'सीओदगं' नाम उदगं असत्थहयं सजीवं सीतोदगं भण्णइ, तं नो पिबेज्जा, ण वा हत्थपायभायणधोवणादीहिं तिविहेण मणवयणकाय-जोगेण करणकारावणअणुमोयणादीहिं समारभेज्जत्ति, किंच—'अगणिसत्थं जहा सुनिसिअं' ति, जहा असिखेडगपरसु-आदि सत्थं सुणिसितं दोसावहं णाऊण तं णो सयं उज्जालेज्जा नो अन्नेहिं उज्जालावेज्जा, 'एगग्गहणेण गहणं तज्जातीयाण'मिति-

काउं उज्जालणं ण समणुजाणेज्जा, जो एते पुढविमादिकाए सारक्खइ स भिक्खू भवइ। आह-णणु छज्जीवणियाए एसो अत्थो भणिओ, जहा 'से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं वा' एवमादि, पिंडेसणाए 'पुढविजीवे ण हिंसेज्जा, उदउल्लेण' एवमादि, धम्मत्थ-कामाएवि वयछक्कं कायछक्कं जहा रक्खियव्वं तहा अणियं, आयारप्पणिहीए 'पुढविं भित्तिं सिलं लेलुं' एवमादि, सेसेसुवि अज्झयणेसु-वि पायसो एतेसिं परिहारो भणिओ, तो किमत्थं पुणो दसमज्झयणे ते चेव काया भण्णंति ?, आयरिओ आह–अविस्सरन्ताणे-होवदरिसणत्थं कायाण वयाण पुणो पुणो गहणं कज्जइ, तेण ण पुणरुत्तं भवइ, पितापुत्रावौषधमन्त्रादिवत्, जहा पुत्तं विदेसं गच्छमाणं मायापियरो अप्पाणेति हे पुत्त! अकालचरियादुट्ठसंसग्गिमाइ सव्वपयत्तेण परिहरेज्जासि, अहोरत्तं अविसरणणिमित्तं वा तेहिं पुणो पुणो भण्णइ, ण य तं पुणरुत्तं भवइ, जहा वा कोई णेहेण भण्णइ-पुत्त ! अवसर अवसर एस सप्पोत्ति, वाहिओ पुण समत्थं ओसहं पुणो पुणो दीज्जइ, मंतो वा ताव पढिज्जति जाव विसं वेयणा वा उवसंता, आगामिफलनिमित्तं कारिसणादिकम्मं पुणो पुणो कज्जमाणं न पुणरुत्तं भवइ, एवं ताव लोगे, वेदेऽपि यथा सुब्राह्मण्ये-इंद्र आगच्छ हरि आगच्छ मेघातिमेघ वृषणश्वस्य-मेन गौरवास्कान्दिनाहल्यायै जार कौशिक ब्राह्मणगौतम···ब्रु वाणसुस्व ना···मा गच्छ मघवं स्वाहा,जहेताणि पुणरुत्ताणि न भवंति तहा सीसस्स थिरीकरणनिमित्तं पुणो पुणो कायावयाणि य भन्नमाणाणि पुणरुत्ताणि न भवंति, इदाणिं पुव्वपत्थियं भण्णइ— 'अनिलेण न वीए न वीयावए०' ॥ ४३३ ॥ वृत्तं, अनिलो वाऊ भण्णइ, तेण अनिलेण अप्पणो कायं अन्नं वा किंचि तारिसं णो वियावेज्जा, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण'मितिकाउ वीयंतेपि अण्णं ण समणुजाणेज्जा, बीयग्गहणेण एक्को चेव मूलकं-न्दादी बीयपज्जवसाणो दसभेदो रुक्खो भवतित्ति तस्स गहणं कयं, ताणि मूलकन्दाईणि बीयपज्जवसाणाणि हरियग्गहणेण दुवा-

लसविहस्सवि वणप्फइकाइयस्स गहणं कयं, तं हरियं न सयं छिंदेज्जा न परेण छिंदावेज्जा, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाणं'ति-काउं छिन्दंतंपि अण्णं न समनुजाणेज्जा विवज्जयंतोत्ति, सचित्तग्गहणेण सव्वस्स पत्तेयसाहारणस्स सभेदस्स वणप्फइकायस्स गहणं कयं, तं सचित्तं नो आहारेज्जा, एताणि हरितछेदणादीणि जो न कुव्वइ सो भिक्खू भवइत्ति । इदाणिं बीयग्गतसाण परिहारो भण्णइ—'वहणं तसथावराण होइ०' ॥ ४६४ ॥ वृत्तं, 'वहणं' णाम मारणं तं तसथावराणं पुढवितणकट्ठणिस्सि-याण भवतित्तिकाऊण तम्हा उद्देसियं न भुंजेज्जा, तहा सयमवि ओदणादी नो पएज्जा णो वा पयावेज्जा, 'एगग्गहणे गहणं तज्जातीयाण'मितिकाउं पयंतमवि अण्णं न समणुजाणेज्जा । 'रोइअ नायपुत्तवयणे०' ॥४६५॥ वृत्तं, णायपुत्तस्स भगवओ वद्धमाणसामिस्स वयणं रोविऊण अत्तसमं पुढविमादी माणेज्जा छप्पि काए, अत्तसमे णाम जहा मम अप्पियं दुक्खं तहा छण्हवि कायाणंति णाऊण ते कहं हिंसामित्ति, एवं अत्तसमे छप्पि काए मण्णेज्जा, पंच चेह पाणवहवेरमणादीणि महव्वयाणि फासेज्जा-आसेविज्जा 'पंचासवसंवरे' णाम पंचिंदियसंवुडे, जहा 'सद्देसु य भद्दयपावएसु, सोयविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया न होयव्वं ॥ १ ॥' एवं सव्वेसु भाणियव्वं, सो य एवं गुणजुत्तो भवति, एते ताव मूलगुणा भणिया । इदाणिं उत्तरगुणा भण्णंति, तंजहा—'चत्तारि वमे सया कसाए०' ॥४६६॥ वृत्तं, चत्तारि कोहादिकसाया सया वमेज्जा, तत्थ वमणं छड्डणं भण्णइ, तहा 'धुवजोगी हविज्ज' धुवजोगी णाम जो खणलवमुहुत्तं पडिबुज्झमाणादिगुणजुत्तो सो धुवजोगी भवइ, अहवा जे पडिलेहणादि संजमजोगा तेसु धुवजोगी भवेज्जा, ण ते अण्णदा कुज्जा अण्णदा न कुज्जा, अहवा मणवयणकायए जोगे जुंजेमाणो आउत्तो जुंजेज्जा, अहवा बुद्धाण वयणं दुवालसंगं तंमि धुवजोगी भवेज्जा, सुओवउत्तो सव्वकालं भवेज्जात्ति, धुवगहणेण

च उप्पादादिधुवस्स गहणं कयं, तं जस्स नत्थि से अहणे 'निज्जायरूवरयए' णाम जं णो केणइ उवाएण उप्पाइयं तं जातरूवं भण्णइ, तं च सुवण्णं, रययग्गहणेण रुप्पगस्स गहणं कयं, तं जातरूवं रजतं च सव्वप्पगारेहिं णिग्गतं जस्स स णिज्जातरूवरयते भण्णति, तिलतुसभागमेत्तंपि से नत्थित्ति वुत्तं भवइ, तहा 'गिहिजोगमवि परिवज्जए' गिहिजोगो नाम पयणविक्कयमादि भण्णइ, एयाणि कसायवमणादीणि जो कुव्वइ सो भिक्खू भवइत्ति । 'सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे०' ॥ ४६७ ॥ वृत्तं, अण्णतित्थियाण सोऊण अण्णेसिं रिद्धीओ दट्ठूण अमूढो भवेज्जा, अहवा सम्मद्दिट्ठिणा जो इदाणीं अत्थो भण्णइ तंमि अत्थि सया अमूढा दिट्ठी कायव्वा, जहा अत्थि हु जोगे नाणे य, तस्स णाणस्स फलं संजमे य, संजमस्स फलं, ताणि य इमंमि चेव जिणवयणे संपुण्णाणि, णो अण्णेसु कुप्पावयणेसुत्ति, सो एवं गुणजुत्तो तवसा बारसप्पगारेण पुराणं पावं धुणाति णवं च णादीयति, मणवयणकायजोगे सुट्ठु संवुडेत्ति , कहं पुण संवुडे ?, तत्थ मणेणं ताव अकुसलमणणिरोधं करेइ, कुसलमणोदीरणं च, वायाएवि पसत्थाणि वायणपरियट्टयाईणि कुव्वइ, मोणं वा आसेवई. कायेण सयणासणआदाणणिक्खेवणठाणचंक्कमणाइसु कायचेट्ठाणियमं कुव्वति, सेसाणि य अकरणिज्जाणि य ण कुव्वइ, सो एवं गुणजुत्तो भिक्खू भवइ । किंच 'तहेव असणं०' ॥ ४६८ ॥ वृत्तं, 'तहेव'त्ति जहा पुव्वं भणियं, एवसद्दो पायपूरणे, असणपाणखाइमसाइमा पुव्वभणिया, तज्जतो भिक्खू भवइ, तेसिं अण्णतरं लभिऊण तत्थ जं भुत्तसेसं उव्वरियं तस्स विही भन्नइत्ति, तं०–'होहीइ अट्ठो सुए परे वा, तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू'त्ति, तत्थ सुए नाम कल्लेत्ति वुत्तं भवतित्ति, परग्गहणेण तइयचउत्थमादीण दिवसाण गहणं कयं, तंमि वा परे अट्ठो होहितित्ति काऊण सयं 'न निहे न निहावए' णाम न परिवासिज्जत्तिवुत्तं भवति, न वा परेण निधावएज्जा, एगग्गहणे गहणं तज्जाती-

याणमितिकाउं णिहन्तंपि अन्नं न समणुजाणेज्जा, सो एवं गुणजुत्तो भिक्खू भवतीत्ति । किंच–' तहेव० ' ॥ ४६९ ॥ वृत्तं, 'तहेव'त्ति तेणेव पगारेण, एवसद्दो पायपूरणे, असणपाणखादिमसादिमा पुव्वं भणिया, तेसिमण्णयरं विविधं–अणेगप्पगारं लभेज्जा अणुग्गहमिति मन्नमाणो धम्मयाते साहम्मियाते छंदिया भुंजेज्जा, छंदिया णाम निमंतिऊण, जइ पडिगाहता तओ तेसिं दाऊण पच्छा सयं भुंजेज्जा, एतेण प्पगारेण भुंजेज्जा, सज्झायरए य जे स भिक्खू भवइत्ति। भुत्तो य समाणो—'न य वुग्ग-हियं कहं कहिज्जा० ' ॥ ४७० ॥ वृत्तं, नकारो पडिसेधे वट्टइ, चकारो समुच्चये, किं समुच्चिणोति ?, जो हेट्ठा अत्थो भणिओ तं समुच्चिणोति, वुग्गहिया नाम कुसुम(कलह)जुत्ता, तं वुग्गहियं कहं णो कहिज्जा, जयावि केणई कारणेण वादकहा जल्पकहादी कहा भवेज्जा, ताहे तं कुव्वमाणो नो कुप्पेज्जा, निहुयाणि पसंताणि अणुद्धताणि इंदियाणि काऊण संजमकहा कायव्वा, तहा ' पसंते ' पसंते नाम रागदोसवज्जिए, एवं पसंतो संजमधुवजोगजुत्तो भवेज्जा, संजमो पुव्वभणिओ, ' धुवं ' नाम सव्वकालं, जोगो मणमादि, तंमि संजमे सव्वकालं तिविहेण जोगेण जुत्तो भवेज्जा, ' उवसंते ' नाम अणाकुलो अव्व-क्खित्तो भवेज्जत्ति, ' अविहेडए ' णाम जे परं अक्कोसतेप्पणादीहिं न विधेडयति से अविहेडए, सो एवं गुणजुत्तो भिक्खू भवतीति । किं च–' जो सहइ हु गामकंटए० ' ॥ ४७१ ॥ वृत्तं, जोत्ति अणिद्दिट्ठस्स गहणं कयं, सहति नाम अहियासेइ, गामगहणेण इंदियगहणं कयं, कंटगा पसिद्धा, जहा कंटगा सरीरानुगता सरीरं पीडयंति तथा अणिट्ठा विषयकंटका सोताइंदिय-गामे अणुप्पविट्ठा तमेव इंदियं पीडयंति, ते य कंटगा इमे ' अक्कोसपहारतज्जणाओ भिक्खू य ' अक्कोसपहारा पसिद्धा तज्जणाए जहा एते समणा कित्रणा कम्मभीता पव्वतिया एवमादि, भयं पसिद्धं, भयं च भेरवं, न सव्वमेव भयं भेरवं, किन्तु ?,

तत्थवि जं अतीव दारुणं भयं तं भेरवं भण्णइ, वेतालगणादयो भयभेरवकायेण महता सद्देण जत्थ ठाणे पहसंति सप्पहासे, तं ठाणं भयभेरवसप्पहासं भण्णइ, तंमि भयभेरवसद्दसप्पहासे, उवसग्गेसु अणुलोमपडिलोमेसु कीरमाणेसु ' **समसुहदुक्खसहे अ जे स भिक्खू०** ' सो एवं समसुहदुक्खो होऊण। ' **पडिमं पडिवज्जिआ सुसाणे०** ' ॥ ४७२ ॥ वृत्तं, सुसाणं पसिद्धं, तंमि सुसाणे पडिमं पडिवज्जिया चिट्ठंति, तत्थ से दिव्वाणि माणुसाणि तिरियाणि वा वेयालअद्धवेयालमादियाणि भयाणि(अणेग)-भेयाणि उप्पज्जंति, ताइं दट्ठूण ण भाएज्जा, पास सम्मचित्तयो भवेज्जा, जहा रत्तपडादीवि सुसाणेसु अच्छंति, ण य बीहिंति, तप्पडिसेधणत्थमिदं भण्णइ, तं— ' **विविहगुणतवोरए अ निचं** ' तेसिं रत्तपडादीणं भणियं, सुसाणे अच्छीयव्वं, ण पुण तेसिं विविहप्पगारं मूलगुणा उत्तरगुणा वा तवो बारसप्पगारो अत्थित्ति जंमि रया तंमि मसाणे चिट्ठंति, (एसो) पुण जहोवइट्ठेण विहिणा वासी, विविहं--अणेगप्पगारं समूलगुणउत्तरगुणेसु तवे य बारसविहे रतो णिच्चं–सव्वकालं भवतित्ति, ण य सरीरं तेहिं उवसग्गेहिं बाहिज्जमाणोऽवि अभिकंखइ, जहा जइ मम एतं सरीरं न दुक्खाविज्जेज्जा, न वा विणस्सिज्जेज्जा, सो एवं गुणजुत्तो भिक्खू भवतित्ति। किंच–' **असइं वोसट्ठचत्तदेहे०** ' ॥ ४७३ ॥ वृत्तं, ' असइं ' नाम सव्वकालं, ' वोसट्ठं ' नाम वोस-ट्ठंति वा वोसिरियंति वा एगट्ठा, चत्तं नाम जेण सरीरविभूषादीणिमित्तं हत्थपादपक्खालणादीहिं परिकम्मं ण वट्टति तं चत्तं भण्णइ, देहगहणेण सरीरगहणं कयं, ' अक्कुट्ठे ' णाम मातिपितिवयणादीहिं हीलणादीहिं, ' हए ' णाम डंडादीहिं तालिए ' **लूसिए** ' नाम सुणगादीहिं भक्खिए, सो एवं अक्कुस्समाणो हम्ममाणो भक्खिज्जमाणो वा ' **पुढवीसमो मुणी भवेज्जा** ' जहा पुढवी अक्कुस्समाणी हम्ममाणी भक्खिज्जमाणी च न य किंचि पओसं वहइ, तहा भिक्खुणावि सव्वफासविसहेण होयव्वं,

मुणी णाम मुणिन्ति वा णाणिन्ति वा एगट्ठा, जो सो माणुसरिद्धिनिमित्तं तवसंजमं न कुव्वइ, से अनियाणे, णट्ठगादिसु अकोउहल्ले भवेज्जा, सो एवंविहगुणजुत्तो भिक्खू भवतीत्ति । किंच-सक्काणं चेत्तवेतसिगा धम्मा इति तेणिसेहणत्थमिदमुच्यते— ' अभिभूअ काएण० ' ॥४७४॥ वृत्तं, कामो सरीरं भण्णइ, ण केवलं मणसा, परीसहे ' अभिभूय ' त्ति अभिमुहं जातिऊण ' समुद्धरे ' णाम सम्मं उद्धरे, सम्मं पासे करेज्जत्ति वुत्तं भवति, जातिग्गहणेण जम्मणस्स गहणं कयं, वधगहणेण मरणस्स गहणं कयं, ताओ जम्मणमरणाओ समुद्धरे अप्पाणंति, कहं पुण समुद्धरेत्ति ?, अतो भण्णइ ' विदित्तु जाती मरणं महब्भयं ' तं पुव्वं भणियं, जातिमरणं महब्भयं विदित्ता नाम जाणिऊण सामण्णिए रते भवेज्जा, समणभावो सामण्णियं भन्नइ, सो एवंगुणजुत्तो भिक्खू भवतीत्ति । ' समणभावो सामण्णियमिति ' तदुपरिसणत्थमिदमुच्यते- 'हत्थसंजए०' ॥ ४७५ ॥ वृत्तं, हत्थपाएहिं कुम्मो इव णिक्कारणे जो गुत्तो अच्छइ, कारणे पडिलेहिय पमज्जिय वावारं कुव्वइ, एवं कुव्वमाणो हत्थसंजओ पायसंजओ भवइ, वायाएवि संजओ, कहं ?, अकुसलवइनिरोधं कुव्वइ, कुसलवइउदीरणं च कज्जे कुव्वइ, ' संजइंदिए ' नाम इंदियविसयपयारणिरोधं कुव्वइ, विसयपत्तेसु इंदियत्थेसु रागदोसविणिग्गहं च कुव्वतीत्ति, ' अज्झप्परए ' नाम सोभणज्झाणरए, ' सुसमाहिअप्पा ' नाम णाणदंसणचरित्ते सुट्ठु आहिओ अप्पा जस्स सो सुसमाहिअप्पा भण्णइ, सुत्तत्थगहणेण सुत्तस्स अत्थस्स तदुभयस्स गहणं कयं, तत्थ सुत्तत्थं विजाणति पुव्विल्लाणि य जो कारणाणि कुव्वति सो भिक्खू भवइत्ति । किंच—' उवहिंमि अमुच्छिए० ' ॥ ४७६ ॥ वृत्तं, उवही वत्थपत्तादी, ताए उवहिए अमुच्छिए अगिद्धिए य भवेज्जा, मुच्छासद्दो य गिद्धिसद्दो य

दोऽवि एगट्ठा, अच्चत्थणिमित्तं आयरणिमित्तं च पउंजमाणा ण पुणरुत्तं भवति, अहवा मुच्छियगहियाणं इमो विसेसो भण्णइ, तत्थ मुच्छासद्दो मोहे दट्ठव्वो, गेद्धियसद्दो पडिबंधे दट्ठव्वो, जहा कोइ मुच्छिओ तेण मोहकारणेण कज्जाकज्जं न याणइ, तहा सोऽवि भिक्खू उवहिंमि अज्झोववण्णो मुच्छिओ किर कज्जाकज्जं न याणइ, तम्हा न मुच्छिओ अमुच्छिओ, अगिद्धिओ अबद्धो भण्णइ, कहं ?, सो तंमि उवहिंमि निच्चमेव आसन्नभव्वत्तणेण अबद्धो इव दट्ठव्वो, णो गिद्धिए अगिद्धिए, 'अन्नायउंछं' णाम उंछं चउव्विहं-णामठवणदव्वभावउंछंति, नामठवणाओ गयाओ, दव्वुंछं तावसादीणं, भावुंछं जमण्णायमण्णाएण उप्पातिज्जति तं भावुंछं भण्णति, एत्थ भावुंछेण अधिगारो, सेसाओ उच्चारितसरिसत्तिकाऊण परूविया, तं भावुंछं अन्नायउंछं भण्णइ, पुलाएवि चउव्विहं, तं०- नामपुलाए ठवणा० दव्व० भावपुलाएत्ति, णामठवणाओ गयाओ, दव्वपुलाओ पलंजि भण्णइ, भावपुलाए जेण मूलगुणउत्तरगुणपदेण पडिसेविएण णिस्सारो संजमो भवति सो भावपुलाओ, एत्थ भावपुलाएण अहिगारो, सेसा उच्चारियसरिसत्तिकाऊण परूविया, तेण भावपुलाएण निपुलाए भवेज्जा, णो तं कुव्वेज्जा जेण पुलागो भवेज्जत्ति, कयविक्कया पसिद्धा, 'संनिही' असंणादीणं परिवासणं भण्णइ, तातो कयविक्कयातो सन्निधीतो य विरए भवेज्जा, 'सव्वसंगावगए'त्ति तत्थ संगावगते नाम संगोत्ति वा इंदियत्थोत्ति वा एगट्ठा, सो य संगो दुवालसविहस्स तवस्स सत्तरसविहस्स य संजमस्स विघायाय होज्जा, सो सव्वो संगो अवगओ जस्स सो संगावगओ भण्णइ, सो एवंगुणजुत्तो भिक्खू भवतित्ति। किंच 'अलोलभिक्खू०' ॥ ४७७ ॥ वृत्तं, जइ तित्तकडुअकसायाई रसे अप्पत्ते णो पत्थेइ से अलोले, भिक्खुत्ति वा

साधुत्ति वा एगट्ठा, तहा तेसु रसेसु नो गेधिं गच्छेज्जा, तं च अण्णायउंछं चरेज्जा, आह-णणु अण्णायउंछं पुलागणिप्पुलाएत्ति भणियमेव ?, आयरिओ आह- उवहिं पडुच्च तं भणियं, इमं पुण आहारं पडुच्च भणियंति पुणरुत्तं न भवइ, तहा ' जीवियं णाभिकंखेज्जा, ' जहाऽहं जइ (जीवं), तहा इड्ढि-विउव्वणमादि सक्कारपूयणं च, एताणि तिण्णिवि जहेज्ज णाम छड्डेज्जत्ति, इड्ढी आगासगमणादि, सक्कारो वत्थपत्तादि, पूया य थुइवंदुमाणादि, णाणदंसणचरित्तेसु ठिओ अप्पा जस्स सो ठियप्पा, ' अणिहे ' णाम अकुडिलेत्ति वा अणिहोत्ति वा एगट्ठा, सो एवं गुणजुत्तो भवइत्ति । ' न परं वइज्जासि० ' ॥ ४७८ ॥ वृत्तं, परो णाम गिहत्था लिंगी वा, जइवि सो अप्पणो कम्मेसु अव्ववत्थिओ तहावि न वत्तव्वो जहाऽयं कुत्थियसीलोत्ति, किं कारणं ?, तत्थ अपत्तियमादि बहवे दोसा भवंति, कदायि पुण सपक्खं सदितं वदेज्जा, जहा कुसीलोऽसि ?, छड्डेहि एवं कुसीलत्तं, अतो निमित्तं परग्गहणं कयं, साधुगुणे सेवा हि एवमादि, तहा ' जेणं नो कुप्पेज्जा तं वएज्ज'त्ति, ' जेण ' त्ति जेण कम्मजातिसिप्पाइणा भणिओ परो कुप्पइ, तं नो वदेज्जा, आह- किं कारणं परो न वत्तव्वो ?, जहा जो चेव अगणिं गिण्हइ सो चेव डज्झइ, एवं नाऊण पत्तेयं पत्तेयं पुण्णपावं अत्ताणं ण समुक्कसइ, जहाऽहं सोभणो एस असोभणोत्ति एवमादि । अत्तुक्करिसपतिसेहणत्थमिदमुच्यते-' न जाइमत्ते० ' ॥ ४७९ ॥ वृत्तं, जाइं पडुच्च मओ न कायव्वो, लाभेणवि मदो न कायव्वो, जहाऽहं आहारोवहिमाईणि लभामि, न एवं अण्णो कोइ लभइत्ति, एवमादि लाभमओ न कायव्वो, जहाऽहं सिद्धंतनीतिकुसलो को एवं अण्णोत्ति, एवमादि सुयमओ न कायव्वो, जाणि य न भणियाणि इस्सरत्तचिन्तणादीणि मदट्ठाणाणि ताणि मदाणि

सव्वाणि विगिंच धीरत्ति, विगिंच णाम छड्डेज्जत्ति, धी-बुद्धी तीए अणुगओ धीरो, तहा धम्मज्झाणरए भवेज्जा, जो एवं गुणजुत्तो स भिक्खू भवेज्जत्ति। किंच–' पवेदए० ' ॥ ४८० ॥ वृत्तं, ' पवेदए ' नाम आइक्खेत्ति वा पवेदइत्ति वा एगट्ठा, अज्जवग्गहणेण अहिंसाइलक्खणस्स एयारिसस्स धम्मस्स गहणं कयं, तं आयरियं धम्मपदं गिहीणं साधूण य पवेदेज्जा, महामुणीत्ति वा महानाणीत्ति वा एगट्ठा, महंतो जसो सीलादिगुणेहिं मुणी य महामुणी, सुयधम्मे चरित्तधम्मे य स एवंठिओ साधू धम्मं कहेमाणो परमवि धम्मे ठावइ, तं च परमं, पावेहिं कम्मेहिं पवत्तं णियत्तेमाणो सोयारं अत्ताणं च धम्मफलेण संजोएइ, भणियं च– " निक्खित्तसत्थस्स कुसलो सोता जइ किंची कालं सोउं वज्जति नियत्तति वा तं कहगस्स हियं भवति " तम्हा एयं आलंबणं काऊण धम्मो कहेयव्वो, तहा ' निक्खम्मं वज्जिज्ज कुसीललिंगं ' ति, जहा पापाओ गिहत्थभावाओ वा निक्खम्म निक्कारणे कुसीलाणं पंडुरंगाईण लिंगं वज्जेज्जा, अथवा जेण आयरिएण कुसीलो संभाविज्जति तं सदा वज्जेज्जा, तहा ' न आवि हासं कुहए भवेज्जा ' हासकुहए णाम ण ताणि कुहगाणि कुज्जा जेण अन्ने हसंतीति, सो एवं गुणजुत्तो भिक्खू भवइत्ति। इदाणिं एयस्स एवंविधस्स भिक्खुस्स फलं भण्णइ, तंजहा– 'तं देहवासं०' ॥ ४८० ॥ वृत्तं, देहवासगहणेण ससरीरया भण्णइ, तं जो इमंमि पच्चक्खे देहवासे दीसइ एयं असुती असासयं सदा जहे, जहे णाम चएज्जत्ति वुत्तं भवति, व(सो)य तं छड्डयति(ज)स्स निच्चहिअट्ठिअप्पा भवति, ण पुण सेसोत्ति, सो एवंगारो भिक्खू 'छिंदित्तु जाईमरणस्स बंधणं' जातीमरणं संसारो तस्स बंधणं-अट्ठविधं कम्मं तं संसारबंधणं कम्मं छिंदिऊण 'उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं'ति, उवेति नाम उवेइत्ति

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १रतिवाक्य चूला

॥३४९॥

वा गच्छइत्ति वा एगट्ठा, भिक्खुगहणेण पुव्वभणियभिक्खुस्स गहणं कयं, अपुणागमा गती सिद्धी भण्णति, तं सो भिक्खू उवेइत्ति, सावसेसकम्मो य देवलोगेसु, पुण सुकुलपच्चायातिं लद्धूण पच्छा सत्तट्ठभवग्गहणब्भंतरतो सिज्झतित्ति, बेमि नाम तीर्थकरोपदेशात्, न स्वाभिप्रायेण ब्रवीमीति । इदाणीं णया-णायंमि गिण्हियव्वे अगिण्हियव्वंमि०॥ गाहा, ' सव्वेसिंपि णयाणं बहुविह वत्तव्वयं णिसामेत्ता । तं सव्वनयविसुद्धं जं चरणगुणट्ठिओ साहू ॥ १ ॥ अर्थः पूर्ववदिति

सभिक्खूअज्झयणचुण्णी सम्मत्ता ।

एवं ताव भिक्खुस्स संजमावत्थियस्स जइ कहंचि संजमे अरती भवेज्जा, तीए अरतीए निवारणनिमित्तं विवित्तचरिया-निमित्तं च इमाओ दो चूलाओ भण्णंति, तत्थ चूलापदस्स ताव वक्खाणं भण्णइ, तंजहा—' दव्वे खेत्ते काले० ' ॥ ३६१ ॥ गाहा, चूला छव्विहा, तंजहा—नामचूला ठवणा० दव्व० भाव० खित्त० कालचूलात्ति, तं पुण चूलियदुगं उत्तरं तंतं नायव्वं, जहा आयारस्स उत्तरं तंतं पंच चूलाओ, एवं दसवेयालियस्स दोण्णि चूलाओ उत्तरं तंतं भवइ, तत्थ चूलासद्दस्स वक्खाणं भण्णति, तंजहा—दव्वे खेत्ते काले दसवेयालियं जाहे पढियं होति ताहे उत्तरकालं पढिज्जंति, जाहे दसवेयालियं सुतं ताहे चूलाओ सुणिज्जंति, अतो उत्तरं तंतं भण्णइ, तंतं नाम तंतंति वा सुत्तोत्ति वा गंथोत्ति वा एगट्ठा, चूलादुगं उत्तरं तंतं, सुतगाहियत्थं संगहणी नायव्वा, तेसिं दसवेयालिओवइट्ठाणं सुतपदत्थाणं समासओ संगहितत्थमेतं चूलादुगं, ते चेव संखेवओ सुत्तत्था अन्ने य संगहिया, अतो एयं चूलादुगं तस्स दसवेयालियस्स संगहणी नायव्वा । इयाणिं पत्तेयं पत्तेयं छव्विहा चूला भण्णइ, तत्थ नाम-

चूर्णि निष्क्रं

॥३४९॥

अध्ययनं -१०- परिसमाप्तं **चूलिका -१- 'रतिवाक्य' आरभ्यते**

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥४८२-४९९॥

दीप अनुक्रम [५०६-५२४]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. १रतिवाक्य चूला ॥३५०॥

ठवणाओ गयाओ, दव्वचूला इमेण गाथापुव्वद्धेण भण्णइ, तंजहा—'दव्वे सच्चित्तादी०'॥३६२॥ अद्धगाथा, (सा तिविहा) तं० सचित्ता अचित्ता मीसिया, तत्थ सचित्ता कुक्कुडस्स चूला सा मत्थए भवइ, अचित्ता चूलामणी, सा य सिरे कीरई, मीसिया मयूरस्स भवति, एवमादि दव्वचूला भणिया । इदाणिं खेत्तचूला भण्णइ—' खेत्तंमि लोगनिक्कुड० ' ॥ ३६२ ॥ गाहापच्छद्धं, खेत्तचूला लोगणिक्कुडाणि, मंदरस्स पव्वयस्स चूला कूडा य एवमादि खेत्तचूला भण्णइ, अहवा अहे लोगस्स सीमंतओ अच्चुतो, तिरियलोगस्स मंदरो । इयाणिं भावचूला भण्णइ, सा य इमा, तंजहा—' भावे खओवसमिए० '॥ ३६३ ॥ गाथापुव्वद्धं, भावचूलाओ इमाओ चेव दोण्णि चूलाओ, कहं ?, जम्हा सुतं खओवसमिए भावे, एयाओ दोऽवि चूलाओ खओवसमियाओ काऊण भावचूलाओ भवंति, तत्थ पढमं रतिवक्कत्ति अज्झयणं, तस्स चत्तारि अणुयोगदारा जहा आवस्सए णवरं णामणिप्फण्णे २इक्कं, दोऽवि पया रती य वक्कं च, तत्थ रतीइ चउक्कनिक्खेवो, तंजहा-णामरती ठवण० दव्व० भावरती य, नामठवणाओ गयाओ, दव्वरती भावरती य तप्पसंगेण अरती इमाए गाहाए भण्णइ, तंजहा—(चूर्णौ तु) ' दव्वरसगंध (दव्वे दुहा उ कम्मे०) ॥३६४॥ गाहा, दव्वरती दुविहा, तंजहा-कम्मदव्वरती णोकम्मदव्वरती य, तत्थ कम्मदव्वरती नाम रतीवेयणिज्जं कम्मं बद्धं न ताव उदिज्जइ एस कम्मदव्वरती, नोकम्मदव्वरती-सद्दरसरूवगंधफासदव्वाणि रतीकराणि णोकम्मदव्वरती भण्णइ, दव्वरती गता । इदाणिं भावरती भण्णइ, सा य उदएण भवइ, कहं ?, तमेव रतिवेयणिज्जं कम्मं जाहे उदिण्णं ताहे भावरती भण्णइ, एवं अरईवि चउव्विहा, तंजहा—नामअरई ठवण० दव्व० भावअरईत्ति, नामठवणाओ तहेव, दव्वअरई दुविधा, तंजहा-कम्मदव्वअरती णोकम्मदव्वअरती, अरईवेयणिज्जं कम्मं बद्धं न ताव उदिज्जइ एसा कम्मदव्वअरती,

रति-निक्षेपाः

॥३५०॥

*** 'रति' शब्दस्य निक्षेपा: दर्शयते

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ १रतिवाक्य चूला ॥३५१॥

णोकम्मदव्वअरती-अणिट्ठा सद्दादयो दव्वा णोकम्मदव्वअरई भण्णइ, जाहे अरती वेदणिज्जं कम्मं उदिण्णं ताहे भावअरई भवइ। इदाणिं चक्कं भण्णइ, तं च जहा चक्ककसुद्धीए भणियं तहा इहंपि भावियव्वं, चक्कंतिदारं गतं। सा य अरती जाहे परीसहाण उदएण उदिज्जति ताहे सा निच्छयओ सुहविवागत्तिकाऊण सरीरपीडाकरावि सम्मं अहियासेयव्वा। एत्थं दिट्ठंतो, 'जहा नाम आउरस्सिह०'॥३६६॥गाथा,आउरो-गिलाणो, सो य वणेण केणइ आगंतुगेण सरीरसमुत्थेण वा आउरीकओ होज्जा, जहा णाम आउरस्स तस्स इह लोगो 'खीवणछेज्जेसु क (की) रमाणेसु जंतणा अपत्थकुच्छा आमदोसपरिहारो विरई हियकारी भवइ' तत्थ जंतणा पसिद्धा, 'अपत्थकुच्छा' णाम अपत्थपरिहारो भण्णइ, 'आमं' अजिण्णं भण्णइ, आमदोसमवि परिहरति, 'विरती' णाम विलोभीमादियाणि अलभणाणि आहारेंतस्स भवति, एयाणि पच्छा सुहाणित्तिकाऊण विरती भजति, हियकारीणि य से पच्छा भवंति, एवं—' अट्ठविहकम्मरोगा० ' ॥ ३६७ ॥ गाथा, अट्ठविधेण कम्मरोगेण आउरस्स जीवस्स तस्स कम्मस्स तिगिच्छाए आरद्धाए अणेगअदव्वभणेण भूमीसेज्जाकट्ठसेज्जादी उक्तं अव्वाबाहसुहकारणं ईहमाणस्स जा धम्मे रती अधम्मे य अरती सा हियकारिया भवइ। किंच—'सज्झाय०' ॥३६८॥ गाथा, सज्झाओ वायणापुच्छणादी पंचविधो, तंमि सज्झाए सत्तर-सविधे य संजमे तवे य बारसविधे वेयावच्चे दसप्पगारे, झाणजोगे दुविधे, तं०-धम्मे सुक्के य, जो एतेसु सज्झायादिसु रमति हिंसाइंमि य असंजमे न रमती सो पावति सिद्धिं। आह—णणु तवग्गहणेण सज्झायवेयावच्चज्झाणा गहिया चेव ?, आयरियो आह—जमेतेसिंपि गहणं तं पाहण्णताउवपदरिसणत्थं कयं, सत्थंमि बारसविहंमिवि तवे एते पहाणतरा, तत्थवि सज्झाओ पहाण-तरो, भणियं च—' बारसविहंमिवि तवे सब्भिंतरबाहिरे जिणक्खाए। णवि अत्थि णवि य होही सज्झायसमं तवो कम्मं ॥ १ ॥'

आतुर-इष्टान्तः हिताहित-कारिचेष्टाः ॥३५१॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥४८२-४९९॥

दीप अनुक्रम [५०६-५२४]

श्रादश-वैकालिक चूर्णौ. १रतिवाक्य चूला

॥३५२॥

तहा वेयावच्चमवि अपडिवाइत्तणादिगुणेण पहाणं, भणियं च—' वेयावच्चं निच्चं करेह तवसंजमे जयंताणं। सव्वं किल पडिवाई वेयावच्चं अप्पडिवातिं ॥ १ ॥ ' झाणं पुण पहाणमेव, कम्हा ?, जेण तदायत्ता वेयावच्चसज्झायावि भवंति, अतो एतेसिं पि-त(ध)ग्गहणं कयं। 'तम्हा धम्मंमि (धम्मे०),' ॥ ३६९ ॥ गाथा, जम्हा एतेहिं गुणेहिं जुत्तो सिद्धिं पावइ, तम्हा धम्मे रइकार-गाणि अहम्मे अरइकारगाणि अट्ठारसट्ठाणाणि इमंमि अज्झयणे भणियाणि य साधू जाणेज्जत्ति, णामणिप्फण्णो गतो। इदाणीं सुत्ताणुगमे सुत्तमुच्चारेयव्वं, त च अखलियं जहा अणुओगदारे, तं च सुत्तं इमं, तंजहा— ' इह खलु भो! पव्वइएणं० ' ॥ (सूत्रं २१) इहगहणेण जिणपवयणस्स गहणं कयं, खलुसद्दो विसेसणे, किं विसेसयति ?, जहा जो अवधावणट्ठी णवधम्मो भवइ तस्स थिरीकरणणिमित्तं पायसो एतं अज्झयणं भासितंति विसेसयति, भो! इति आमंतणे, व्रज गतौ धातुः, अस्य धातोः प्रपूर्वस्य ' क्तक्तवतू निष्ठा ' (पा. १-१-२६) ति क्तप्रत्ययः, ककारात् ङ्कित्ति लोपः ' आर्द्धधातुकस्येड् वलादे' रिति (पा. ७-२-३५) इडागमः परगमनं प्रव्रजितः, प्राणवधानृतवचनपरद्रव्यापहारेभ्यो व्रजितः-अपगतः निष्क्रान्तः निर्गत इत्यर्थः, प्रव्र-जितः अतस्तेन, ' उत्पन्नदुःखेन ' ' पद गतौ ' धातुः, अस्य धातोः उत्पूर्वस्य ' क्तक्तवतू निष्ठा ' ति (पा. १-१-२६) क्त-प्रत्ययः, अनुबन्धलोपः, ' रदाभ्यां निष्ठातो नः ' इति (पा. ८-२-४२) तकारस्य दकारस्य च नकारः, परगमनं उत्पन्नः, उत्प-न्नदुक्खेणंति, दुक्खं दुविधं-सारीरं माणसं वा, तत्थ सारीरं सीउण्हदंसमसगाइ. माणसं इत्थीनिसीहियसक्कारपरीसहादीणं, एयं दुविहं दुक्खं उत्पन्नं जस्स तेण उप्पण्णदुक्खेण सत्तरसविधे संजमे, ' अरइसमावन्नचित्तेण ' समावन्नं नाम तंमि गतं चित्तं मणो अभिप्पाओ वा, संजमे अरतिसमावन्नचित्तो तेण संजमे अरइसमावन्नचित्तेण, अवहावणं अवसप्पणं अतिक्कमणं, संजमातो

उपक्रमः

॥३५२॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥४८२-४९९॥

दीप अनुक्रम [५०६-५२४]

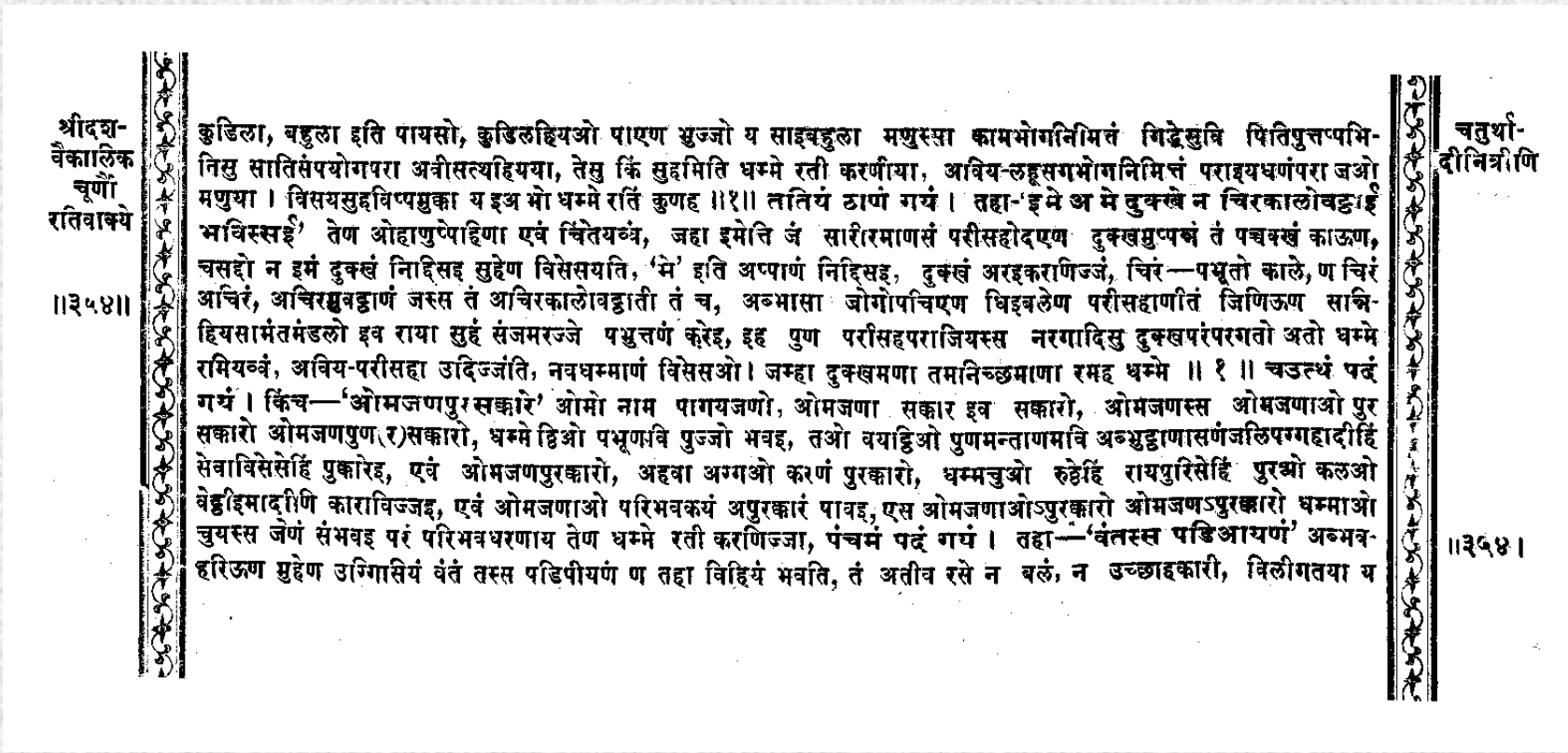
श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ रतिवाक्ये

॥३५३॥

अवक्कमणमवहावणं, तं अवहावणं अणुप्पेहिउं सीलं जस्स सो अवहावणाणुप्पेही, अव इति एतस्स पागए ओगारो भवइ, एवं ओहाणुप्पेही तेण ओहाणुप्पेहिणा, एवं कयसंकप्पेण पुव्वं ओहावणाओ 'अणोहाइएण' एवसद्दो अवधारणे, किमवधारयति ?, णियमा अणोहाइएण अट्ठारसट्ठाणाणि चिंतणीयाणि, पच्छा चिंतणं अणत्थगं, तेसिंपि भावोपदरिसणत्थमिदमुच्यते-' हयरस्सिगयं-कुसपोयपडागाभूआइं ' हयो-अस्सो तस्स रस्सी-खलिणं, सो य सुदप्पिओऽवि खलिणेण णियमिज्जइ, गयो-हत्थी तस्सवि लोहमयं न(म)त्थयखणणमंकुसो, तेण सुमत्तोऽवि (वि॰ णतं गाहिज्जइ, जाणवत्तं-पोतो तस्स पडागा सीतपडो, पोतोऽवि सीयपडेण तेण वीयीहिं न खोहिज्जइ, इच्छियं च देसं पाविज्जइ, हयादीणं रस्सिमादओ नियामगा अतो पत्तेयं ते सह पढिज्जंति— 'हयरस्सिगयंकुसपोतपडागाभूआइं' भूतसद्दो इह सारिस्सवाची, जहा कोऊहलभूयंमिवि लोए आसि पव्वयंतं, अओ तब्भूताणि ते हयरस्सि०सरिसाणि एवं हयरस्सिगयंकुसपोयपडागाभूताइं, इमाइं अट्ठारस ट्ठाणाणित्ति,'इमाणि'त्ति जाणि य णियमिताणि तानि हिदए काऊण पच्चक्खाणि व भणति, अट्ठारस इति संखा, णामंति वा ठाणंति वा भेदत्ति वा एगट्ठा, भणियं च—"इच्चेएहिं चउएहिं ठाणेहिं जीवा णेरतियत्ताए कम्मं पकरेंति," अतो इमाणि अट्ठारसट्ठाणाणि जहा हयादीणं रस्सिमादीणि नियामगाइं तहा जीवस्स ओहावणं कुव्वयओ अहिनिव्वत्तेऊण भिक्खुभावे नियामगाइं,तत्थ पढमं ताव दुक्करजीवियत्तं देसेइ-'हंभो'इत्यादि,हंति भोत्ति संबोधनद्वयमादराय, दूसमाए दुप्पजीवी नाम दुक्खेण प्रजीवणं,आजीविआ, एत्थ संजमे रयाणं तु न सेति, जतो य एवं तम्हा धम्मे रई करणीया, तत्थ कामत्थी विसया भोगा सद्दादिविसया, अविय कुसग्गा इव इयरकाला, कदलीगब्भा वऽसारगा। जम्हा गिहत्थधम्मे, भोगे चइऊण कुणह रइं [धम्मे]॥१॥ बितियं ठाणं गतं। किंच 'भुज्जो य सातिबहुला मणुस्सा' भुज्जो-पुणो२, साति-

स्थान-त्रितयं

॥३५३॥



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ रतिवाक्ये

॥३५४॥

कुडिला, बहुला इति पायसो, कुडिलहियओ पाएण मुज्जो य साइबहुला मणुस्सा कामभोगनिमित्तं गिद्धेसुवि पितिपुत्तप्पभिनिसु सातिसंपयोगपरा अवीसत्थहियया, तेसु किं सुहमिति धम्मे रती करणीया, अविय-लहूसगभोगनिमित्तं पराइयधणंपरा जओ मणुया । विसयसुहविप्पमुक्का य इअ भो धम्मे रतिं कुणह ॥१॥ ततियं ठाणं गयं । तहा-'इमे अ मे दुक्खे न चिरकालोवट्ठाई भविस्सई' तेण ओहाणुप्पेहिणा एवं चिंतेयव्वं, जहा इमेत्ति जं सारीरमाणसं परीसहोदएण दुक्खमुप्पन्नं तं पच्चक्खं काऊण, चसद्दो न इमं दुक्खं निद्दिसइ सुहेण विसेसयति, 'मे' इति अप्पाणं निद्दिसइ, दुक्खं अरइकराणिज्जं, चिरं—पभूतो काले, ण चिरं अचिरं, अचिरमुवट्ठाणं जस्स तं अचिरकालोवट्ठाती तं च, अब्भासा जोगोपचिएण धिइबलेण परीसहाणीतं जिणिऊण सन्निहियसामंतमंडलो इव राया सुहं संजमरज्जे पभुत्तणं करेइ, इह पुण परीसहपराजियस्स नरगादिसु दुक्खपरंपरगतो अतो धम्मे रमियव्वं, अविय-परीसहा उदिज्जंति, नवधम्माणं विसेसओ। जम्हा दुक्खमणा तमनिच्छमाणा रमह धम्मे ॥ १ ॥ चउत्थं पदं गयं । किंच—'ओमजणपुरस्सकारे' ओमो नाम पागयजणो, ओमजणा सक्कार इव सक्कारो, ओमजणस्स ओमजणाओ पुर सक्कारो ओमजणपुण(र)सक्कारो, धम्मे ट्ठिओ पभूणवि पुज्जो भवइ, तओ वयट्ठिओ पुणमन्ताणमवि अब्भुट्ठाणासणंजलिपग्गहादीहिं सेवाविसेसेहिं पुक्कारेइ, एवं ओमजणपुरक्कारो, अहवा अग्गओ करणं पुरक्कारो, धम्मचुओ रुट्ठेहिं रायपुरिसेहिं पुरओ कलओ वेट्ठिमादीणि काराविज्जइ, एवं ओमजणाओ परिभवकयं अपुरक्कारं पावइ, एस ओमजणाओऽपुरक्कारो ओमजणऽपुरक्कारो धम्माओ चुयस्स जेणं संभवइ परं परिभवधरणाय तेण धम्मे रती करणिज्जा, पंचमं पदं गयं । तहा—'वंतस्स पडिआयणं' अब्भवहरिऊण मुहेण उग्गिासियं वंतं तस्स पडिपीयणं ण तहा विहियं भवति, तं अतीव रसे न बलं, न उच्छाहकारी, विलीगतया य

चतुर्था-दीनिर्त्रीणि

॥३५४॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ रतिवाक्ये

॥३५५॥

पडिएति, वग्गुलिं वा जणयति, ततो कोढं वा जणयति, लोगे य गरहितं, तस्स पाणं वंतस्स य पडिआयणमिति तस्स, चकारस्स अत्थो पयणकाले सव्वहापरिचत्ताणं पुणरासेवणं वंतभोयणआदिएणसरिसं ओभजणपुरक्कारगका(र)हादिदोसदूसियं, अविच-सुजसा कुलप्पसूता अगंधणा रायदोसमुग्गिणणा। उच्चिट्ठं नउ भुयगा पिबंति पाणचएवि विसं ॥ १ ॥ अतो वंतस्स पडियातमणसरिसं भोगाभिलासं मोत्तूण धम्मे रती करणीया, छट्ठं पदं गतं। तहा—'अहरगइवासोवसंपया' अधोगति अहरगई, अहरगई-जत्थ पडंतो कम्मादिभारगोरवेणं ण सक्का साहारेउं अधरगती, सा पुण णरगं चेव, तत्थ वासो अहरगतिवासो, तंमि उवसंपज्जणा-उवणमणं अहरगतीवासोवसंपया, सा कहं ?, पुत्तदारस्स कए हिंसादीहिं कम्माणि-अहरगइपाओग्गाणि कम्माणि उवसंपज्जइ, इह च सीउण्हभयपरिस्समे विप्पयोगपराहीणत्तणादि नारगदुक्खसहस्साणि वेदेति, अविय-'निरयाल(उ)यं निबंधइ नरगसमाणि उ इहेव दुक्खाणि। पावेति गिही वराओ जं तेण रई वरं धम्मे ॥१॥, सत्तमं पदं गतं। 'दुल्लहे खलु भो! गिहीणं धम्मे गिहवासमज्झे वसंताणं' दुक्खं लभइ दुल्लभो, पमादबहुलजणेणेति, 'भो' इति तहेव आमंतणं, गिहाणि संति जेसिं ते गिही तेसिं, दुग्गइपडणधारओ धम्मो, दुल्लभो पुण बोधिरूवो धम्मो परलोगे य सोक्खपरंपरा इति सुहनिमित्तं धम्मे रई करणीया, अविय 'दुलहा गिहीण धम्मे गिही(ण)वासे पमादबहुलंमि। मोत्तूण गिहेसु रइं रतिपरमा होह धम्मंमि॥१॥अट्ठमं पदं गतं। अयमवि गिहिवासमज्झे वसंताणं दोसो, तं० 'आयंके से वहाय होइ' सूलाइ आसुकारी सरीरे बाधाविसेसो आयंको, समाणजातीयवयणेण रोगग्गहणमवि, सो कुट्ठादीयो रूयाविसेसो, गिहीवासमज्झे वसंताणं आहारविसमकरादि भारवहणासेवणा, आयंके से वहाय होइ, रोगायंका य जहिं तं सुहाणुभवणविग्घभूता इति धम्मे रतेण भवियव्वं, अविय—'दुलभं गिहीण धम्मे सुहमातं-

सप्तमादीनि चत्वारि

॥३५५॥

केहिं विप्पियसमग्गो। तम्हा धम्मंमि रतिं करेह विरता अधम्माओ ॥ १ ॥ णवमं पदं गतं। 'संकप्पे से वहाय होइ' आयंको सारीरं दुक्खं, संकप्पो माणसं, तं च पियविप्पयोगमयं संवाससोगभयविसादादिकमणेगहा संभवति, 'इट्ठाणवि सज्जा(व्वा)णं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं। कम्माणुसहंमि रती धम्मे भयवियोगविरसंमि ॥१॥ दसमं पदं गतं। एवं विसेसेण धम्मे रती करणीया, जतो 'सोवक्केसे गिहवासे' सह उवक्केसेहिं सोवक्केसो, सो पुण सीउण्हभयपरिस्सहकिसिपसुपालवाणिज्ज-सेवादयो णेहलवणतंदुलछायणसमुप्पयणं बहु परिकेसेहिं इति सोवक्केसे गिहवासे, तमेवंभूतं जाणिऊण धम्मे रती करणीया, अविय 'विचित्तविहाणममत्तं सोवक्केसेण जओ य सोक्कसो। मोत्तूण घरावासं, तम्हा धम्मे रतिं कुज्जा ॥१॥ एक्कारसमं पदं गयं। किंच- 'निरुवक्केसे परियाए' निग्गओ उवक्कोसा जओ निरुक्केसे सो पुव्वभणिओ, उवक्केसे विहरिओऽलं सव्वओ अओ सारयाओ वा गमणं पव्वज्जापरियाओ, तत्थ उवक्केसा ण संभवंतीति धम्मे रती करणीया। णिरुवक्केसो वासो परियाओ जं इहेव पच्चक्खं। परियाए तेण रतिं करेह विरया अहम्माओ॥१॥ बारसमं पदं गतं ॥ किंच—'बंधे गिहवासे' बंधणं बंधो, गिहेसु वासो गिहवासो, सो पुण तदारंभणपवत्तस्स कोसिगारकीडगस्सेव कोसगेण अट्ठविहकम्ममहाकोसेणं संभवइ बन्धो, तओ तेण बंधहेउभूतातो गिहवासाओ विरएण धम्मे रती सया करणीया, अविय-'थे(घ) रचारगबद्धाओ कम्मट्ठगबंधहेतुभूताओ। विरमह रतीय धम्मे करेह जिणवीरम-णियंमि ॥१॥ तेरसमं पदं गतं। किंच 'मोक्खे परियाए' परिआओ पुव्वभणिओ, तंमि परियाए सति अट्ठविहकम्मनिगल-संकलासु झाणपयोगपरिसुद्धिच्छिन्नासु जीवस्स सतो भवति मोक्खो, जेण परियाओ(अट्ठविहकम्मनिगला साहू छएइ सुद्धझाणाओ सो) मोक्खो तेण रइं धम्मे जिणदेसिए कुणह ॥१॥ चोद्दसमं पदं गतं। किंच-'सावज्जे गिहवासे' सह वज्जेण सावज्जो,

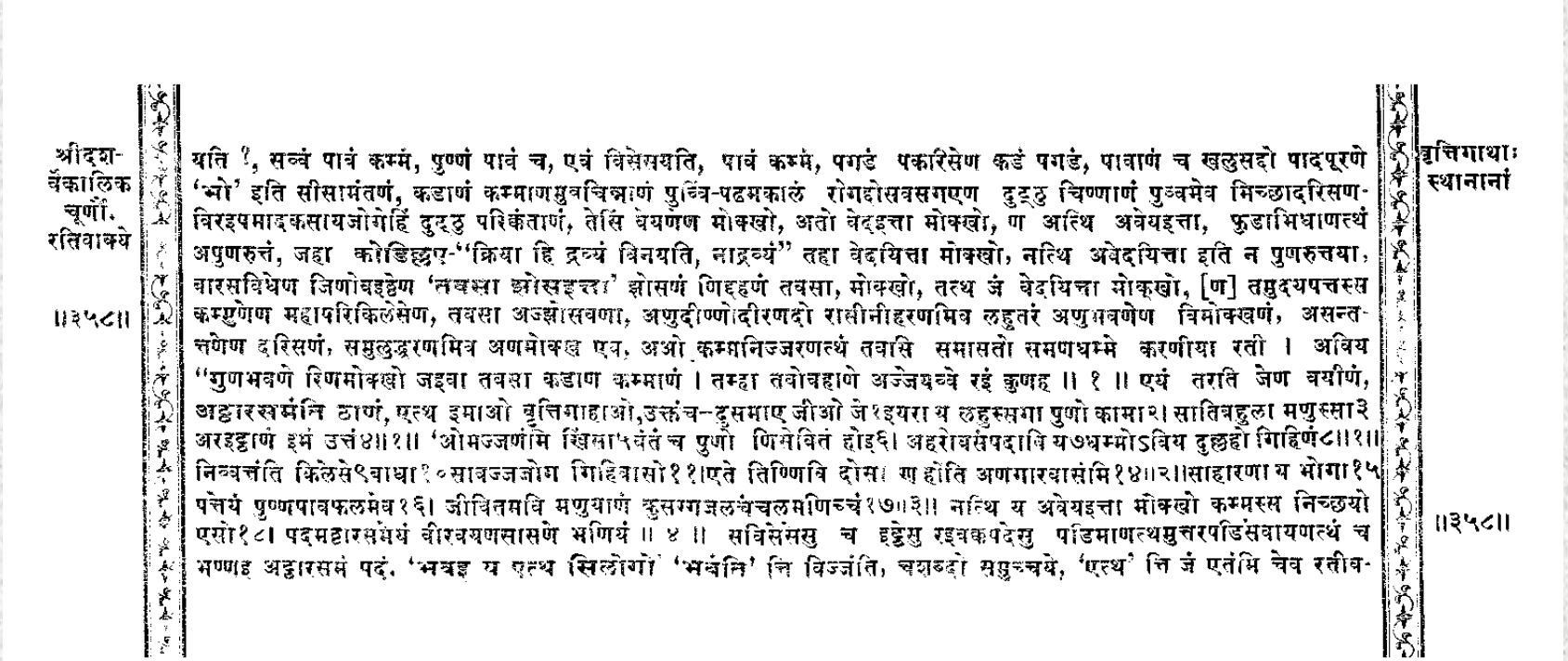
श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. रतिवाक्ये

॥३५७॥

वज्जं गरहितं, अविय—'पाणवंध मुसावादे अदत्तमेहुण परिग्गहे चेव। एवं वज्जं सह तेण होति तम्हा उ सावज्जं॥१॥पण्णरसमं पदं गतं। किंच-'अणवज्जे परियाए' पाणाइवायादिरहिओ अणवज्जो परियाओ, अविय—'सावज्जो गिहवासो अणवज्जो जेण होइ परियाओ। तेण ण रज्जे मोक्खं तातो धम्मेऽह रइं कुणह॥१॥ सोलसमं पदं गतं॥ 'बहु साधारणा गिहीणं काम-भोगा' साहारणं सामण्णं, बहूहिं चोरदुट्ठरायकुलादीहिं सामण्णं बहुसाहारणा, एवंविधा गिहीणं कामभोगा, अविय 'ण य तित्ति कामभोगा, बहुजणसाधारणा य(इमे)कामा। तम्हा णीसामन्ने होउ रती ते थिरा धम्मे॥१॥सत्तरसमं पदं गतं। 'पत्तेय पुन्नपावं पत्तेयं नाम जं परनिमित्तं पुत्तदाराई, संविभागेणण य, एवं पुत्तेमि "दारहेणं अत्थे कमस्स पत्तेयमेव संबंधं। मोत्तूण दारमाईणि तेण धम्मे रइं कुणह॥ १॥ कामभोगाण आहारभूया आउधम्माणो, ते य जीवियं, अओ 'अणिच्चे मणुयाण जीविए' अप्पणोऽवि रोगा नियतं निच्चं, अणिच्चं मणुयायाए, ण(णु) च तेसिं जीवितमणिच्चं, खणिकया विसेसओ दिट्ठंतेण निदरिसिज्जइ 'कुसग्गजलबिन्दुचंचले' दब्भजाइया तणविसेसा कुसा, तेसिं अग्गाणि कुसग्गाणि सुसहासुसहुमाणि भवंतीति, तेसिं ओसाजल-बिन्दवो अतिचंचला, मंदेणावि वाउणा पेरिता पडंति, तहा मणुयाण जीविए, अप्पणोऽवि रोगाइणा उवक्कमविसेसेणं संखोभिए विलयमुपयाति, अतो कुसग्गजलबिन्दुचंचले, एवं गते जीविए को कामभोगाभिलासं करेज्जाति धम्मे ठिती करणीया, अविय "जीवियमवि जीवाणं कुसग्गजलबिंदुचंचलं जम्हा। का मणुयभवंमि रई? धम्मे य तहा रइं कुणह॥ १॥ कुसग्गजलबिन्दु-चंचलस्सावि अत्थे 'बहुं च पावं कम्मं पगडं, पावाणं च खलु भो! कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिन्नाणं दुप्पडिक्कंताणं वेइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेदइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता' बहु-पभूतं, चसद्दो समुच्चये, खलुसद्दो विसेसणे, किं विसेस-

सप्तदशादिनी द्वे वृत्तिगाथाः स्थानानां

॥३५७॥



श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. रतिवाक्ये

॥३५८॥

यति ?, सव्वं पावं कम्मं, पुण्णं पावं च, एवं विसेसयति, पावं कम्मं, पगडं पकारिसेण कडं पगडं, पावाणं च खलुसद्दो पादपूरणे 'भो' इति सीसामंतणं, कडाणं कम्माणमुवचिन्नाणं पुव्विं-पढमकालं रोगदोसवसगएण दुट्ठु चिण्णाणं पुव्वमेव मिच्छादरिसण-विरइपमादकसायजोगेहिं दुट्ठु परिकंताणं, तेसिं वेयणेण मोक्खो, अतो वेदइत्ता मोक्खो, ण अत्थि अवेयइत्ता, फुडाभिधाणत्थं अपुणरुत्तं, जहा कोडिल्लए-"क्रिया हि द्रव्यं विनयति, नाद्रव्यं" तहा वेदयित्ता मोक्खो, नत्थि अवेदयित्ता इति न पुणरुत्तया, बारसविधेण जिणोवइट्ठेण 'तवसा झोसइत्ता' झोसणं णिद्दहणं तवसा, मोक्खो, तत्थ जं वेदयित्ता मोक्खो, [ण] तमुदयपत्तस्स कम्मुणेण महापरिकिलेसेण, तवसा अज्झोसवणा, अणुदीण्णोदीरणदो रासीनीहरणमिव लहुतरं अणुभवणेण विमोक्खणं, असन्त-त्तणेण दरिसणं, समुल्लुद्धरणमिव अणमोक्ख एव, अओ कम्मनिज्जरणत्थं तवसि समासतो समणधम्मे करणीया रती । अविय "गुणभवणे रिणमोक्खो जइवा तवसा कडाण कम्माणं । तम्हा तवोवहाणे अज्जेयव्वे रइं कुणह ॥ १ ॥ एवं तरति जेण वयंणं, अट्ठारसमंति ठाणं, एत्थ इमाओ वुत्तिगाहाओ,उक्तंच-दूसमाए जीओ जे१इयरा य लहुस्सगा पुणो कामा२। सातिबहुला मणुस्सा३ अरइट्ठाणं इमं उत्तं४॥१॥ 'ओमज्जणंमि खिंसा'५वेतं च पुणो णिसेवितं होइ६। अहरोवसेपदाविय७धम्मोऽविय दुल्लहो गिहिणं८॥१॥ निव्वत्तंति किलेसे९बाधा१०सावज्जजोग गिहिवासो११।एते तिण्णिवि दोसा ण होंति अणगारवासंमि१४॥२॥साहारणा य भोगा१५ पत्तेयं पुण्णपावफलमेव१६। जीवितमवि मणुयाणं कुसग्गजलबिंदुचंचलमणिच्चं१७॥३॥ नत्थि य अवेयइत्ता मोक्खो कम्मस्स निच्छयो एसो१८। पदमट्ठारसमेयं वीरवयणसासणे भणियं ॥ ४ ॥ सविसेसासु च इट्ठासु रइवकपदेसु पडिमाणत्थमुत्तरपडिसंवायणत्थं च भण्णइ अट्ठारसमं पदं. 'भवइ य एत्थ सिलोगो' 'भवंति' त्ति विज्जंति, चसद्दो समुच्चये, 'एत्थ' त्ति जं एतंमि चेव रतीव-

वृत्तिगाथाः स्थानानां

॥३५८॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥४८२-४९९॥ दीप अनुक्रम [५०६-५२४]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ रतिवाक्ये ॥३५९॥

यणे अट्ठारसपओवइट्ठो अत्थो, सेसं तस्सोवदरिसणत्थं, सिलोगो इमो, तंजहा—'जदा य जहती धम्मं०' ॥४८२॥ सिलोगो, 'जदा य' इति जंमि चेव काले, चसद्दो पुव्वभणियकारणसमुच्चये, धम्मो य तं जहाति-परिच्चयति, ण अज्जे अणज्जे, अणज्जा मेच्छादयो, जो तहाठिओ अणज्ज इव अणज्जो, से किमत्थं परिचयइ ?, माणुसगादिभोगणिमित्तं 'भोगकारणे से तत्थ' से इति जो धम्मपरिच्चागकारी 'तत्थे' ति तीए लहुसगकामभोगलिच्छाए मुच्छिते-गढिते अज्झोववण्णो तं जया जहइ 'बाले' इति जे मंदविण्णाणे 'आयतीं' आगामिको कालो तं णावबुज्झइ, अथवा आयतीहितं आत्मनो हितमित्यर्थः, 'णावबुज्झइ'त्ति णावबुज्झइ, भणंति आयतीगोरवं तं नावबुज्झती, जहा मम सामण्णस्स परिसुद्धस्स मंदा आयती भविस्सइ, अबुद्धायती कामभोगमुच्छिओ धम्मं परिचइऊण—'जया ओहाविआ०' ॥ ४८३ ॥ सिलोगो, जया तंमि काले, चसद्दो पुव्वकारणसमुच्चये, ओहावणं-अवसप्पणं तं पुण पवज्जाओ अवसरओ भवइ, तस्स ओधायितस्स सओ अवत्थंतरनिदरिसणत्थं भण्णइ-'इंदो वा पडिओ छमं' इंदो सक्को, वा इति उवमा, पडिओ पडिब्भट्ठो, छमा भूमी, तत्थ पडितो जहा इंदस्स महंतातो दिवातो पच्चुतस्स भूमी पडणं, तहा तस्स परमसुहहेऊभूताओ जिणोवइट्ठाओ धम्माओ अवधावणं, एवं च सव्वधम्मपरिब्भट्ठो जं चिरकालं तवधारणं कयं जावज्जीवाए पइण्णारोहणा तं निप्फलं कयं, पुव्वं सव्वं परिब्भट्ठं भवइ, अथवा जे लोइया परिकप्पणाविसेसा तेहिंपि भट्ठो सव्वधम्मपरिब्भट्ठो, पमादित्तणेण वा सावगधम्माओऽवि भट्ठो, कामभोगविरहिओ रोगोदयावसाणे 'स पच्छा परितप्पइ' स इति परिच्चागी, पच्छा उत्तरकालं, सारीरमाणसेहिं दुक्खेहिं सव्वओ तप्पइ परितप्पइ । किंच 'जया य वंदिमो होइ०'॥४८४॥ सिलोगो, 'जया' इति एस णिवातो यस्मादर्थे वर्त्तते, चसद्दो इंदस्स छमापडणसमुच्चये, वंदिमो वंदणिज्जो, सीलत्थ इति-

स्थान-श्लोकाः ॥३५९॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. रतिवाक्ये

॥३६०॥

काऊण रायामच्चादीनामवि वंदणारिहो होऊण सीलपरिक्खलणाणंतरं पच्छा सीलगुणरहित इतिकाऊग अवंदिओ (मो) सक्कारसम्माणरहिओ 'देवया व चुआ ठाणा' देवता इति पुरंदरं मोत्तूण अण्णो देवविसेसो, सट्ठाणाओ परिवडंतो माणुसं महादुक्खमणुभवइ, वासद्दो उवमाणत्थस्स इवसद्दस्स अत्थे, जहा सा देवता ठाणाओ चुया एवमेव सो संजमावसप्पण्णातो अणंतरं पच्छा मणसा सव्वओ तप्पइ परितप्पइ ॥ किंच-'जया अ पूइमो होइ०' ॥४८५॥ सिलोगो, जयासद्दो चसद्दो य पुव्वभणिया, 'पूइमो' पूयणारिहो सीलमंतोत्तिकाऊण रायादीणं पुज्जो होऊण ओहावणाओ अणंतरं सीलसुभो(चुओ)त्तिकाऊण अपूइमो भवइ अ, तहा व अपूइमो पूयणसहलासिओ तस्सऽभावे 'राया व रज्जपब्भट्ठो' राया इव राया, जहा कोई मंडलियो महामंडलियो वा सव्वभूमिपात्थिवत्तणं पाविऊण पुणो अपुण्णोदयमणुभवमाणो केणावि कारणेण रज्जाओ अच्चत्थं पब्भट्ठो परितप्पइ तहा य सो पूयणिओ अपुज्जत्तमुवगओ समणधम्मपरिब्भट्ठो पच्छा तप्पइ ॥ 'जया अ माणिमो होइ०' ॥४८६॥ सिलोगो, जदा इति सद्दो चसद्दो य पुव्वं व वण्णियव्वा, 'माणिमो' माणजोगो माणणीओ, माणिमो जहा सीलप्पसाएण महयामवि माणणीओ होऊण ओधाइओ अतहाभूओ पच्छा असन्माननीयभावाधिगमात्, 'सिट्ठिव्व कब्बडे छूढो' रायकुललद्धसंमाणो समाविद्धचिट्ठणो वणिगममहत्तरो सेट्ठी, वाडवोपमकूडसकूखिसमुब्भावियदुक्खछलव्ववहारतं कब्बडं, जहा सिट्ठी तंमि छूढो विभवहरणाइसंदूसिओ परितप्पइ, अहवा कब्बडं कुनगरं, जत्थ जलत्थलसमुब्भवविचित्तभंडविणियोगो णत्थि, तंमि वसियव्वं, रायकुलनियोगेण छूढो कयविक्कयाभावे विभवोपयोगपरिहीणो, जहा सो तहा साधू धम्मीहिं वंदणदाणेहिं पुव्विं माणितो धम्मपरिब्भट्ठो माणणाभावे स पच्छा परितप्पइ, अंजलिपग्गहसिरिकंपआसणप्पदाणादिजोगं वंदणं, वत्थपत्तादीणा य पयाणमुवजोगं पूयणं, वंदणपूयणाणं अह

स्थान-श्लोकाः

॥३६०॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ रतिवाक्ये

॥३६१॥

विसेसो। 'जया य थेरओ होइ०' ॥ ४८७ ॥ सिलोगो, जदा जीव काले, वसद्दो पुव्वभणिओ, पच्छातावकारणसमुच्चये, पढमवयपरिणामेण थेरओ होइ, दूरं 'समइक्कंतजुव्वणो' निदरिसणं स 'मच्छोव्व गलं गिलित्ता' जहा जलयरसत्तविसेसो मच्छो से थोवोवजीवी वडिसामिसलुद्धो आमिसलोभेण गलमब्भवहरिऊण गलए तिक्खलोहखीलगविद्धो थलेसु य णीओ पच्छा परितप्पइ, एवं सो विडिसामिसत्थाणीयमंदकामभोगाभिलासेण धम्मपरिच्चागी परितप्पइ। इहावि तस्स थेरभावे जाणि दुक्खाणि संभवंति तदुवपदरिसणत्थं भण्णइ—'पुत्तदारपरीकिन्नो०' ॥ ४८९ ॥ सिलोगो, पुत्ता-अवच्चाणि, दारं-भज्जा दुविधादीहिं संबंधेहिं परीकिण्णो-परिवेट्ठिओ, तेहिं परिकिण्णो, दंसणचरित्तमोहमणेगविहं कम्मायाणं अन्नाणं-मोहो तस्स संताणो अव्विच्छित्ती तेण मोहसंताणेण समाहिट्ठिओ मोहसंताणसंतओ, निदरिसणं 'पंकोसन्नो जहा णागो' पंको चिक्खल्लो तंमि खुत्तो पंकोसण्णो. जहा इति जेणप्पगारेण, 'नाग' इति हत्थी, अप्पोदकं पंकबहुलं पाणि हत्थी अवगाढो, अणुवलब्भपाणितं खुत्तो चिंतेइ-किमहमत्थऽवतिन्न इति परितप्पइ, तहा सो ओधाइय थेरभावे पुत्तदारभरेण पोसणासमत्थो धाउपरिक्खयपरिहिणकामभोगपिवासो पच्छाऽऽगतसंवेगो संजमाहिकारणट्ठचेट्ठो बहुविहं तप्पमाणो विसेसेण इमं ओहावणपच्छाणुतावगयं चिंतेइ—'अज्ज अहं गणी हुंतो०' ॥ ४९० ॥ सिलोगो, अज्ज इति इमंमि दिवसे, तावसद्दो अवधारणे, इमं दिवसमइक्कमिऊण, अहमिति अप्पणो णिद्देसे, अन्ने पढंति-'अज्जत्तेहं' अज्जत्ते अहं विच्छूढपइन्नजोगी गणी, 'अज्जत्ते अहं अज्ज हुंतो' अहवा गणो जस्स अत्थि सो गणी-सूरीपदमणुप्पत्ते णाणदंसणचरित्तति(त्तावि)विधगुणतवोविहाए जोगेहिं अणिच्चयादिभावणाहि य 'भाविअप्पा बहुस्सुओ' त्ति जइ ण ओहावंतो तो दुवालसंगगणिपिडगाहिज्जणेण अज्ज बहुस्सुओ, किंपुण 'जइ अहं रमंतो

अवधावित पश्चातापः रत्यरति फलंच

॥३६१॥

परिआए' जदीति अतिक्रान्तां क्रियामाकांक्षति, अहमिति अप्पाणमेव णिद्दिसति, रमंतो इति रइं विंदंतो, परियाओ णाम पव्वज्जा, बहुत्तमितिकाउं सा विसेसिज्जति 'सामण्णे', सो य समणभावो तत्थ विसेसो जिणदेसिए, न बोडियनिण्हगाइसच्छंदगहणं। ओहाणुप्पेहिस्सेव मतीथिरीकरणत्थमिदमुच्यते–'देवलोगसमाणो०'(अ चू.)॥४९१॥ सिलोगो, देवाणं लोगो देवलोगो, देवलोगेण समाणो देवलोगसमाणो, समाणो तुल्लो, जहा तंमि देवलोगे देवा रतिसागरोगाढा गतंपि कालं न याणंति, विविहाणि य माणसाणि दुक्खाणि ण संभवंति, तहा पव्वज्जाए विधिइ अप्पमओ तेण देवलोगसमाणो, तुसद्दो विसेसयति, किं विसेसेति ? अरतीतो रतिं, परियागरइयाण, तव्विवरीयरताण य, तुसद्दो तहेव रतीओ अरइं विसेसयति, निद्दिसणं मणुस्सो, दुक्खाणुगमेण 'महानरयसारिसो' महानिरओ जो सब्भावनिरओ तउ मणुस्सदुक्खो उवयारमेत्तं, अहवा सत्तमादिमहानिरओ, तेण सरिसो-समाणो दुक्खो जस्स सो महानिरयसारिसो, एवं अरयस्स सामण्णपरियाए, सामण्णे रयाणं च सुहदुक्खसहाणोपमाणं भणियं अरयाणं, एयस्स चेव अत्थस्स उवसंहरणोवदेसो समुण्णीयते –'अमरोवमं जाणिअ०'॥४९२॥सिलोगो, मरणं मारो न जेसिं मारो अत्थि ते अमरा, अमराणं सोक्खं अमरसोक्खं, अमरसोक्खेण उवमा जस्स तं अमरसोक्खोवमं, उत्तरपदलोपे कज्जे अमरोवमं, 'जाणिय' जाणिऊण, सोक्खस्स भावो सोक्खं 'उत्तमं' उक्किट्ठं, देवलोगसरिसं सोक्खं भवइ रताणं परियाए, एवं जाणिऊण अरतिं च विवज्जेऊण परियाए रमियव्वंति, तहा 'अरयाणं' ति उत्तरपदेण संबज्झइ, तं पुण इमं 'णिरयोवमं जाणिअ दुक्खमुत्तमं' तहेति तेणप्पगारेण जहा रयाण सुरसुक्खसरिसं, तहेव अरयाणं नरगदोसोवमं दुक्खमुत्तमं जाणिऊण रमेज्ज-सामण्णे धितिं उप्पाएज्जा, 'तम्हा' इति हेउवयणं, रयारयाणं सुहदुक्खपरिण्णाणहेऊ, एतेण कारणेण परियाए रमिज्ज, एवं पंडिओ भवइ, एवं परियाय-

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥४८२-४९९॥

दीप अनुक्रम [५०६-५२४]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ रतिवाक्ये

॥३६३॥

रताणं सुहं अस्साण दुक्खं जाणिऊण इह भवे चेव परभवपरिहारिया धम्मे रई करणीयेति। तदत्थमेवमुवदिसति–'धम्माउ भट्ठं सिरिओ०' ॥४९३॥ वृत्तं, दसविहो साहुधम्मो पुव्ववण्णिओ, तं उभयधम्माओ भट्ठं, सिरी लच्छी सोभा वा, सा पुण जा समण-भावाणुरूवा सामण्णसिरी ताए परिब्भट्ठं, सिरिओऽवधेयं तं धम्मसिरीपरिच्चत्तं, सिरिविरहे एस दिट्ठंतो—'जलग्गिविज्झाअमि-वऽप्पतेअं' जहा मथसहे सुसमीहासमुदये वसारुहिरमहुघयाइहिं हुयमाणो अग्गी संभवदित्तिओ अहितं दिप्पइ, हवणावसाणे परिविज्झाणेसु अंगारावत्थो अप्पतेयो भवति,एवं ओहाविओ समणधम्मपरिच्चत्तो अप्पतेओ भवइ,अओ तमेवंविधं संतं'हीलयंति णं दुव्विहिअं कुसीला' ही इति लज्जा, लज्जं वयंति हीलंति-हेपयंति, विहिओ णाम उप्पाइओ, सो सिरिऽवधेयो हीलणाय उप्पाइओ, दुट्ठु विहिओ, किं तेण उप्पातितेण ? जो एवं निन्दाभायणं, तमेवंविधं संतं हीलयंति णं, तमेवं गयं हीलेंति, कुच्छियसीलं कुसीलं, जहा कोइ पयावहीणो हीलिज्जइत्ति, निदरिसणं 'दाढुद्दिडं घोरविसं व नागं' अग्गदंते परियस्स गतो दसणविसेसो दाढा, ता य अवणीया जस्स सो दाढुद्दिढओ तं, घोरं विसं जस्स सो घोरविसो, जहा घोरविसं अहितुंडिगादि सम्मुट्ठिआ विसादाढं, वासद्दो उवमारूवस्स इवसद्दस्स अत्थे, जहा घोरविसं उत्तरकालमुद्धियदाढं निव्विसोऽयमिति जणो परिभवइ नागं, णागो णाम सप्पो, तं दुव्विहिअं कुसीलं समणधम्मपच्चोगालितं दुव्वयणेहिं हीलेंति, ओहाइयस्स इह भवे लज्जणादोसो भणिओ। इदाणिं इह भवे परत्थ याणेगदोससंभावणत्थं उण्णीयते, जहा--'इहेवऽधम्मो अयसो अकित्ती०' ॥ ४९४ ॥ वृत्तं, इह इमंमि मणुस्सभवे, एवसद्दो अवधारणे, एयं अवधारयति-अच्छउ ताव परलोगो, इहेव दोसो अहम्मो अयसो अकित्ती, जं समणधम्मप-रिच्चत्तो छक्कायारंभेण अपुन्नमायइ-रयए, अधम्मो-सामण्णपरिच्चागो अयसो य, से जहा समणभूतपुव्वो इति दोसकित्तणं,

अवधा-वनफलं

॥३६३॥

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥४८२-४९९॥

दीप अनुक्रम [५०६-५२४]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. रतिवाक्ये

॥३६४॥

अकित्ती, अकित्ती जहाणुरूवभूमिभागऽगुणवयणं, जसो अणुग्गहं, परेण अ गुणसंकित्तणं कित्ती तं, जसकित्तिविसेसो, किंच— 'दुण्णामगोत्तं च पिहुज्जणंमि' कुच्छितं नाम दुण्णाम पुराणादिकं जोणियमारूढो तं गूयइ-अवस्स णीयजातीओ विति, दुसद्दो कुच्छिअत्थे पउत्तो, उभयगामी विसिट्ठनाणविरहिओ सामन्नजणवओ पिहुजणो, एते अधम्मादयो उद्धावियस्स पिहुजणेण दोसा संभाविज्जंति, किं पुण उत्तमजणे?, तस्स दोसदूसियस्स धम्माओ परिब्भट्ठस्स सरीरसुहदारासएण मूढस्स विसेसेण पाणातिवाय-अधम्मसेविणो 'संभिन्नचित्तस्स' सरीरसीलं सामयभिण्णं, चसद्दो पुव्वनिद्दिट्ठकारणसमुच्चये, तस्स धम्मपरिच्चत्तस्स, अहम्म-सेविणो, समवलंबितसंभिन्नचारित्तस्स य रयणापभिइसु कम्मसंभारगरुययाए अहो गमणमिति हिट्ठओगती, अयं च समणधम्मो परिच्चागे अहम्माय, अजसाकित्तीदुन्नामगोयदुग्गइगमणेहिंतो पावयरो पच्चवाओत्ति, तब्भासणत्थमुच्चीयते 'भुंजित्तु भोगाइं०' ॥४९५॥ वृत्तं, भुंजित्तु-अब्भवहरणादिणा उवजीविऊण, दाराभरणभायणाच्छादणादीणि भोत्तव्वाणि भोगाणि, तो दाणदायादग्गि-रायाइणं एकदव्वाभिनिविट्ठाणं बलात्कारेण 'पसज्झचेअसा' णाम जाणंतोऽवि विवागं छिन्नालमरालो इव घायसहणं काउं वेगेण गासभवणमिव चेअसा तस्स अणुरूवं तहाविहं करेऊण कडुअपुण्णमसंजमं तेसु च जाणिऊण बहुं, मरणसमए गइं च गच्छेज्जा, अणभिज्झियं गतिं च नरगादि एतेण सीलेण गच्छेज्जा, अभिलासो-अभिज्झा सो जत्थ समुप्पण्णो तं अभिज्झितं, अणाभिलसित-मणभिप्पेयं गइं च गच्छे, तस्स माइणो 'बोधी य से नो सुलहा पुणो पुणो' अरहंतस्स धम्मस्स उवलद्धी बोधी, सा से णो सुलभा, चसद्देण अणभिज्झअगतिगमणादि संसूयणं, पुणो पुणो इति न केवलमणंतरभवे, किन्तु?, भवसएसुवि, जाणि ओहाणुप्पे-हिमतिथिरीकरणत्थमट्ठारस एयाणि दुस्समाए दुप्पजीविमाइणि समासओऽभिहिताणि तेसिं वित्थरणभया 'जया य चयइ धम्मं'ए-

अवधा-वनफलं

॥३६४॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥४८२-४९९॥ दीप अनुक्रम [५०६-५२४]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. २ चूला

॥३६५॥

वादी य सिलोगा भणिता, जं पुण इमं न मे दुक्खं चिरकालोवट्ठायी भविस्सइत्ति आलंबणं, तदुपदेशार्थं इदमारभ्यते–'इमस्स ता नेरइअस्स०'॥४९६॥ वृत्तं, 'इमस्स'त्ति अप्पणो अप्पनिद्देसो, तासद्दो अवधारणे, इमस्स ताव किमुत बहूणं संसारीणं?, 'नेरइअस्स जंतुणो' त्ति, जहा अहमेव नेरइएसूववन्नो तस्स दुक्खाणि नरओवमाणि दुक्खेहिं वा तप्पायोग्गेहिं मरणमुवणीतस्स दुहोवणीतस्स निमेसमेत्तमवि नत्थि सुहमतिकिलेसवत्तिणो, तहेव तस्स पलिओवमट्ठितीएसूववन्नस्स तप्पभूओ कालो तहावि सहिज्जइ, किं बहुणा ?, तओऽवि पभूततरं सागरोवमं, किपुण-किंमंगं तु, अहवा अरइमन्तआमंतणं, संजमे अरइसमावन्नं अप्पाणमामन्त्रयति, थिरीकरेइ य, 'मज्झ' इति ममं 'इमं' इति जं अरतीमयं अप्पणो पच्चक्खेण 'मणोदुह' मिति मणोमयमेव, न सारीरदुक्खाणुगयं, ओहाणुप्पेहिस्स चित्तथिरीकरणालंबणत्थमिदमुपदिस्सते—'न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सइ०' ॥ ४९७ ॥ वृत्तं, 'न' इति पडिसेधे, 'मे' इति अप्पणो निद्देसे, न ममं चिरं-दीहकालं, दुक्खमिति संजमे अरइसमुप्पत्तिमयं, भविस्सतीति आगामिकालनिद्देसो, तं एयं ममं संजमे अरइमयं दुक्खं न चिरकाली'यमिणं' ति जंनिमित्तं चं अहं संजमाओऽवसप्पितुं ववसामि, 'असासया भोगपिवास जंतुणो' इमस्स मम जीवस्स, 'ण चे (मे) सरीरेण इमेणऽविस्सइ' त्ति, एत्थ काकू गम्मो, जइसद्दस्स अत्थो जइ दुक्खमिणं इमेण उप्पाइयेण सरीरेण न अवगच्छिज्जइ, परगमनं पज्जाओ-अन्तगमणं, तं पुण जीवस्स पज्जाओ मरणमेव, जइ इमेण सरीरेण तस्स अरइदुक्खस्स अन्तो न कज्जिहिति तहावि कित्तियमेव पुरिसाउमिति तदन्ते अरतीदुक्खस्स अन्त एवेति अरतिमहियासेज्जा सरीरत्ति, एवमिदं सव्वं जाणिऊण रमेज्जा तम्हा परियाए पंडिते, संजमे रइनिमित्तं आलंबणांतरमुवट्ठियस्स सुद्धस्सालंबणस्स फलोपदरिसणत्थमिदमुच्यते—'जस्सेवमप्पा उ हविज्ज निच्छिओ०' ॥४९८॥ वृत्तं, जस्सेति

अवधावनफलं

॥३६५॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. रतिवाक्ये

॥३६६॥

आणिद्दिट्ठस्स, एवमिति पगारोपदरिसणत्थं, भगवं अज्जो सज्जंभवो आह–एतेण पगारेण अभिरएणवि संजमे अरइअहियासणं प्रति अप्पा इति चित्तमेव, तुसद्दो संजमं विसेसयति, भवेज्ज, जति एवं होज्ज णिच्छयो-एकग्गकयो ववसायो, सो एवं कयनिच्छयो 'चइज्ज देहं न हु धम्मसासणं' चएज्जत्ति वा जहेज्जत्ति वा एगट्ठा, देहो-शरीरं,'ने' ति प्रतिषेधः,चशब्दो अवधारणे, सासिज्जति जीवादि पदत्था जेण तं सासणं, धम्मस्स वा सासणं धम्मसासणं, एवं कयववसाओ जो देहसंदेहे धम्मसासणं न छड्डेज्ज धम्मठिइधाणियनिच्छओ 'तं तारिसं नो पइलेंति इंदिआ' तमिति निद्देसवयणं विम्हए वा, तारिसमिति देहविणासेऽवि धम्मं अपरिच्चागिणं, इंदियत्था णो पयलेंति-णवि कंपयंति, धम्मचरणाओ न चलेंतीति, सोयाइया इंदिया, सद्दादयो इंदियत्था, आह–कहं किं चालयतीति?, भण्णइ 'उविंतवाया उ (व) सुदंसणं गिरिं०' उवागच्छंता वाया प्राणादयो, वा इति उवमाअत्थे, सुदंसणसेलराया मेरू, जहा वाया उवेंता मेरुं ण य चालयंति तहा तं सुणिच्छितमाणसं इन्दियत्था ण पचालेंति । इदाणिं सुविदियट्ठारसट्ठाणेणं संजमे अरई उज्झिऊण धिईसंपन्नेण जं करणीयं तदुपदेसत्थं भण्णइ—'इच्चेव संपस्सिअ बुद्धिमं नरो०' ॥४९९॥ वृत्तं, इतिसद्दो उपदरिणत्थे, जं अज्झयणे आदावारब्भ उवदिट्ठं तमवलोकयति, एवसद्दो पायपूरणे, पच्चवलोकणनियममाह–संपस्सिअ-एकीभावेण अवलोगेऊणं, बुद्धि जस्स अत्थि सो बुद्धिमान् नरो, मणुस्सोत्तरीया धम्मा इति तस्स गहणं, एवमालोकेऊण 'आयं उवायं विविहं वियाणिया' आओ विन्नाणादीण आगमो, उवायो तस्स साहणं अणुव्वातं, आयं उवायं विविधं-अणेगप्पगारं च जाणिऊण, एवं संपस्सिऊण आयोवायकुसलेन सव्वह करणीयं 'कायेण वाया अदु माणसेणं' कायो सरीरं, वाया अभिवायणं, माणसं माणसमेव, एतेहिं कारणेहिं जहोवदेसेण पवत्तेण सुनिद्धामितेहिं 'तिगुत्तिगुत्तो

अवधा-रनफलं

॥३६६॥

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥४८२-४९९॥ दीप अनुक्रम [५०६-५२४]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ- २ चूला ॥३६७॥

जिणवयणमहिट्ठिज्जासि' तिगुत्तिगुत्तो जिणस्स भगवतो तित्थकरस्स वयणं-उवदेसणं जिणवयणमधिट्ठए, अहिट्ठयति तं तत्थ अवत्थाणं करेह, अहिट्ठए इति सूत्रकारस्य उवएसवयणं, त्तिबेमिसद्दो पुव्ववत्तियत्थो, नयां तहेव ॥ संजमधितिपडिवायणत्थं अट्ठारसत्थ पडिलेहे । जिणवयणोवत्थाणं च होइ रइवक्कपिंडत्थो ॥१॥ रतिवक्कचुण्णी समत्ता ॥

धम्मे१ धितिमओ२ खुड्डियायारावत्थितस्स३ विदितछक्कायावत्थियस्स४ एसणियपिंडधारियसरीरस्स५ समत्तायारवत्थियस्स६ वयणविभागकुसलस्स७पणिहितजोगजुत्तस्स८विणीयस्स९दसमज्झयणस्स समणसयलभिक्खुभावस्स१०विसेसथिरीकरणत्थं च उत्तरं तंतं व दिट्ठं चूलितादुतं, रतिवक्कचूलिया य तत्थ धम्मे थिरीकरणत्थं रतिवक्कणामज्झयणे पढमचूलिया भणिया । विवित्तचरिया-उपदेसत्था बितियचूला भण्णइ, तीसे पढमपओ संकिण्णत्तणे चूला इति णाम, एएण अणुक्कमेणागतं बितियंपि चूलियज्झयणं, तस्स इमा उं उवघातनिज्जुत्ती, पढमगाथा, तं—'अहिगारो पुव्वुत्तो०' ॥ ९३ ॥ गाथा, जं तस्स वत्थुस्स अंगीकरणं, सो पुण चउव्विहो नामादि, इहावि तहेव भाणियव्वो, तंमि परूविये तओ 'बितिए चूलियज्झयणे' सेसाणं नामाईणं निद्देसाईणं च 'दाराण अहक्कमं फासणा होंति' अहक्कममिति जो जो अणुक्कमो तेण, फासणमिति जं तेसिं दाराणं अर्थेन स्पर्शनं, गतो नाम-निप्फण्णो, दो सुत्तफासियगाहाओ सुत्ते चेव भणिहिंति, एतेण पुण ओघाइएण इमंमि चूलियज्झयणे पढमसुत्तमागतं, तंजहा—'चूलिअं तु पवक्खामि०' ॥ ५०० ॥ सिलोगो, तत्थ अप्पचूलाइ चूलिया, सा पुण सिहा चउव्विहा अनंतरेऽज्झयणे चेव वण्णिया, तुसद्दो भावचूलं विसेसेइ, तं पगारिसेण वक्खामि पवक्खामि, 'श्रु श्रवणे' धातुः, अस्य धातोः नपुंसके भावे क्तप्रत्ययः, अनुबन्धलोपः, आद् गुणः (पा० ६-१-८७) प्रतिषेध०, श्रूयते इति श्रुतं, तं पुण सुतनाणं केवलिभासितं, मतिविशिष्टतमं ज्ञानं

उपक्रमः ॥३६७॥

➡ चूलिका -१- परिसमाप्ता चूलिका -२- 'विविक्तचर्या' आरब्धा:

सकललोकालोकावभासकं केवलशब्देनाभिधीयते, केवलं, नपुंसकविवक्षायां सु, अतोऽम् (पा० ७-१-२४) इत्यम्भावः, केवलमस्यास्तीति 'अत इनिठनौ' विति (पा० ५-२-११५) इनि प्रत्ययः सुपलुक् 'यस्येति (पा० ६-४-१४८) अकारलोपः, परगमनं, केवलिना 'कर्तृकरणयो' रिति (पा० २-३-१८) तृतीया, तस्या एकवचनं टा, अनुबन्धलोपः, परगमनं केवलिना, अतस्तेन भगवता, शास्त्रगौरवसमुत्पादनार्थं, भाषितं-अभिहितं व्याख्यातमिति, न केणइ तव्वत्तेणं पुण्णसमुप्पायणत्थमिति, 'जं सुणित्तु'कं?, चूलियत्थवित्थरं, सोऊण 'सपुण्णाणं' सह पुन्नेण सपुन्नो तं सपुन्नं, पुनाति सोधयतीति पुण्णं, सो सइ तम्मि सम्मदंसणाइ 'धम्मे उप्पज्जए मई' तम्मि चरित्तधम्मे य उप्पज्जइ-संभवति मती-चित्तमेव, तं सद्धाजणणं चूलियासुयनाणं (सुणित्तु) सपुन्नाणमेव विसेसेण चरित्तधम्मे मती भवति, परिण्णा पढमसिलोगेण भाणिया, चूलियासुयं केवलिभासियं पवक्खामि, अहिणवधम्मस्स सद्धाजणणत्थं, तत्थ चरियागुणा य नियमा णेगे भाणियव्वा, एवं तु सुहुमत्थपाडपायणमिति निदरिसणत्थं ताव इमं भण्णइ— 'अणुसोअपट्ठि०' ॥ ५०१ ॥ गाथा सूत्रं, तत्थ अणुसद्दो पच्छाभावे, सोतमिति पाणियस्स निण्णपदेसाभिसप्पणं, सोतो पाणियस्स निण्णपदे गमणपवत्ते जं तत्थ पडियं कट्ठाइ तंनिसितं से सोयमणुगच्छतीति अणुसोतपट्ठिए, एवं अणुसोयपट्ठियत्ति सव्वलोए एत्थ दट्ठव्वो, अणुसोयपट्ठित इव जहा कट्ठादीणं नदिपट्ठियाणं निन्नपएसपट्ठिए तव्वेगाहयाणं, अणुस्सोए लोए अणुकूले पच्चणुसुहगमणं, एवं बहु सोऊण, सोवि बहुजणो, जेण संजएहिंतो असंजता अणंतगुणा, जहा तेसिं पाणियवेगाहियाणं महावहणं तहा बहुजणस्सवि सद्दफरिसरसरूवगंधअनुगयाणं अणादिविसयाणुकूलपवणणेणाणुसोतवेगेण संसारमहापायालपडणमेव अणुसोयपट्ठिओ बहुजणो, तंमि अणुसोयपट्ठिअबहुजणंमि किं करणीयमिति ? 'पडिसोअलद्धलक्खेणं पडिसोयं-

मेव अप्पा दायव्वे' प्रतीपं श्रोतं प्रतिश्रोतं, जं पाणियस्स थलं प्रति गमनं, तं पुण न साभावितं, देवतादिनियोगेण होज्जा, जहा तं असकं एवं सद्दादीण विसयाण पडिलोमा प्रवृत्तिः दुक्करा, पडिसोये लद्धं लक्खो जहा ईसत्थं उसुं सिक्खतो, सुशिक्षितः सुसण्हमवि बालादीयं लक्खं लभते, तहा कामसुहभावणाभाविए लोगे तप्पारिच्चागेण संजमलक्खं लब्भइ, सो पडिसोयलद्धलक्खेण पुणो पुणो णियामिज्जा, पडिसोयमेव अप्पा दायव्वो, इह पडिसोतो रागविणयं, एवसद्दो अवधारणे, तमवधारेइ, जहा ण अण्णहा, अप्पा इति सो एस अहिकयो, 'दायव्वो' इति पवत्तेतव्वो दायव्वो, णिव्वाणगमणारुहो 'भविउकामो' होउकामो तेण होउकामेण, पडिसोयं अप्पा दायव्वो, एतस्सेव उदाहरणस्स विसेसेण णिरुंभणत्थं भण्णइ—'अणुसोओ सुहो लोओ०' ॥५०२॥ सिलोगो. अणुसोयं पुव्ववण्णियं, तं जस्स सुभं जहा पाणियस्साऽऽणाभिपस्सवं सुहं एवं सद्दादीवि संगो सुहो लोगस्स, सोयसुहो लोगो, एताओवि वरो, तहा अणुसोतसुहमुच्छिओ लोगो पवत्तमाणो संसारे निवडइ, संसारकारणविवरीतो 'पडिसोओ आसवो सुविहियाणं' पडिसोयगमणमिव दुक्करं, संसारे विसयभावियस्स विसयविनियत्तणं, आसवो नाम इंदियजओ, सोभणं विधाणं जेसिं ते सुविहिया तेसिं, विसयविरत्ताणं सुविहियाणं आसवो पडिसोओत्ति, उभयफलनिदरिसणत्थं अणुसोओ संसारो तहा अणुसोतसुहमुच्छिओ लोगो पवत्तमाणो संसारे निवडइ, संसारकारणं सद्दादयो अणुसोता इति कारणे कारणोवयारो, तव्विवरीयकारणे य पुण पडिसोओ, तस्स निग्घाडो, जहा पडिलोमं गच्छंतो ण पाडिज्जइ पायाले णदीसोएण तहेव सद्दादिसु अमुच्छिओ संसारपायाले ण पडइ. संसारत्थितिमोक्खस्स य कारणमुद्देसेण भणियं। इदाणिं विमुत्तिकारणोवदरिसणत्थमिदमुच्यते 'एवं (तम्हा) आयारपरक्कमेणं०' ॥ ५०३ ॥ गाथा, एवसद्दो पकारोवदरिसणे, संसारपडिकूलायरणेण विमुत्तिभावं दरिसेइ, तं पुण आयारपरक्कमेणं,

श्रीदश-कालिक चूर्णौ. २ चूला

॥३७०॥

आयारो-मूलगुणो परक्कमो-बलं, आयारधारणे सेमत्थं, आयारे परक्कमो जस्स अत्थि सो आयारपरक्कमवान्, ननु लोए कए आयार-परिक्कमो साधुरेव, तेण आयारपरक्कमेण संवरसमाधिबहुलेण, संवरो इंदियसंवरो णोइंदियसंवरो य, 'संवरसमाहिबहुलेण' संवरे समाहाणं तओ अवकप्पणं बहु लाति-बहुं गिण्हइ, संवरे समाहिं बहुं पडिवज्जइ, संवरसमाधिबहुले, तेण संवरसमाधिबहु-लेण किं करणीयमिति भण्णति—'चरिआ गुणा अ नियमा अ हुंति साहूण दट्ठव्वा' चरिया चरित्तमेव, मूलुत्तरगुणसमुदायो गुणा तेसिं सारक्खणनिमित्तं भावणाओ नियमा-पडिमादयो अभिग्गहविसेसा दट्ठव्वा इति भणिहामि, उसद्दो चरियानियमा-णगभेदविकप्पणत्थं होति दट्ठव्वोत्ति, संभवतीति, साधुणा एस तृतीया, तेण आयारपरक्कमवया संवरसमाधिबहुलेण चरिया णियमा गुणा साहुणा अभिक्खणं आलोएऊण विन्नाणेण जाणियव्वा, जहोवएसं च कायव्वा, तेण आयारपरक्कमवया संवरसमा-धिबहुलेण साहुणा चरिया गुणा णियमं दट्ठव्वा इति, तेसिं चरियानियमागुणाणं विसेसेणोवदारिसणत्थमिदमुपदिसति—'अनिएअवासो समुआणं०' ॥ ५०४ ॥ वृत्तं, 'अणिएयवासो' त्ति [illegible] 'समुदाणचरित' त्तिपदं एवमादि, पदत्थो अय-अणिएयवासोत्ति निकेतं-घरं तंमि ण वसियव्वं, उज्जाणाइवासिणा होयव्वं, अणियवासो वा अनिययवासो. निच्चं एगंते न वसियव्वं, समुदाणचरिया इति मज्जायाए उग्गमितं तमेगीभावेणमुवणीयामति समुदाणं, तस्स विसुद्धस्स चरणं समुदाणचरिया, उंछं दुविहं-दव्वओ भावओ य, दव्वओ तावसाईण जं तो, पुव्वपच्छासंथवादीहिं ण उप्पाइयमिति भावओ, अन्नायं उंछं पइरिक्कं विवित्तं भण्णइ,दव्वे जं विजणं भावे रागाइ विरहितं, सपक्खपरपक्खे माणवज्जियं वा, तब्भावो पइरिक्कयाओ. पहाणमुवही जं एगवत्थ-परिच्चाए एवमादि, भावओ अप्पं कोहादिवारणं सपक्खपरपक्खे गतं, कोहाविद्धस्स भंडणं कलहो, तस्स विविधा वज्जणा कलह-

अनिकेत-वासादि

॥३७०॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ २ चूला

॥३७१॥

विवज्जणा, तुसद्दो अणिएयवासादि चरिया विसेसेइ, अणुक्करिसणत्थो, सव्वावि एसा 'विहारचरिया इंसिणं पसत्था' विहरणं विहारो, सो य मासकप्पाइ, तस्स विहारस्स चरणं विहारचरिया, 'इसिणं पसत्था' इति इसिओ-गणहरादयो तेसिं भगवंताणं चरिया पसत्था कहिया पसंसिया वा, एवमायरंतोऽवि सयं भवंतात्ति, इसिणं पसत्थेत्ति' विग्गहे समासए भवइ, तदिह नत्थि, विहारचरिया-विसेसोपदरिसणमुवदिस्सते-'आइण्णो (ण्णओ०)' ॥ ५०५ ॥ इन्द्रवज्जा, 'आइण्ण' मिति अत्थत्थं आइन्नं, तं पुण राय-कुलसंखडिमाइ, तत्थ महाजणविमद्दो पविसमाणस्स हत्थपादादिलूसणभाणभेदाई दोसा, उक्कड्ढगमणा इंदिये दायगस्स सोहे-इत्ति, ओमाणविवज्जणं नाम अवमं-ऊणं अवमाणं ओमो वा मोणा जत्थ संभवइ तं ओमाणं, एत्थ य पुण सपक्खेण असंजतादिणा परपक्खेण वा चरगादीणं बहूणं पविसमाणाणं दायव्वमिति तमेव भिक्खादाणं ऊणीकरेइ दायारो ओमाणं, कओ दाहं ?, अन्ने भण्णंति-अहमाणं वा भवइ, अओ तस्स विवज्जणं, चसद्देण विहारचरिया इति अणुक्करिसिज्जइ, उस्सण्णसद्दो पायोवित्तीए वट्टइ, जहा-'देवा ओसण्णं सातं वेदणं वेदेंति' दिट्ठाहडं जं जत्थ उवयोगो कीरइ, तिआइघरंतराओ परतो, णाणिसि(दि)ट्ठाभिहडकरणं, एयं ओसण्णं दिट्ठाहडभत्तपाणं गेण्हिज्जत्ति, 'संसट्ठकप्पेण चरिज्ज भिक्खू०' संसट्ठं संगुट्ठं ईसिहत्थमत्तादि कप्पोऽवि संसट्ठविधी तेण संसट्ठकप्पेण संगट्ठविधिणा चरिज्ज, एस उवएसो, संसट्ठमेव विसेसिज्जइ-'तज्जायसंसट्ठं जई जएज्जा' 'तज्जाय' मिति तस्स जायंति तज्जाती, जातसद्दो सजातीयभेदपकारवाचको, तज्जातं नाम जहा आमगोरसस्स एव(कूरी,तज्जाओ ऊसणस्स कुसणमेव, एवं सिणेहगुलकट्ठराइसुवि, तत्थ असंसट्ठे पच्छाकम्मपुरेकम्माइ दोसा हवेज्जा, अथ संसट्ठे संसज्जिमदोसा, असंसट्ठमवि तज्जातसंसट्ठं चरेज्जा, जतीति साधू, जएज्जत्ति, एवं भंगा अणुकरिसिज्जंति, तं०-संसट्ठो हत्थो संसट्ठो मत्तो सेसं दव्वं,

अनिकेत-वासादि

॥३७१॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ २ चूला

॥३७२॥

एवं अट्ठ भंगा, तत्थ पढमो भंगो पसत्थो, सेसे निवारेऊण गहणं, गमणं वा, एवं जई जएज्जा, आइन्नोमाणविवज्जणा, वियडस्स संगे पाङ्गणे य णियमेण कुच्छिया वमणे सदोसा इति तदुपदरिसणत्थमिदमुण्णीयते-'अमज्जमंसासि अमच्छरीआ०' ॥५०६॥ सिलोगो, चंडवं जो जातिमयणीयं मयकारि वा मज्जं-महुसीधुपसण्णादो, प्राणिनां सरीरावयवो मांसं, तं पुण जलथलखहचराणं सत्ताणं, तमुभयं जो भुंजइ सो मज्जमंसासि, अकारेण पडिसेहो कीरइ, अमज्जमंसासिणा भवितव्वं, मच्छरो-कोहो सोऽवि से मज्जपाणे संभवइ, विणावि महुमज्जेण अमच्छरी भवेज्जा वक्कसेसं, विकृतिं विगतिं वा ण विगमति णिव्विगति, मज्जमंसा पुण विगती, तदनुसारेण सेसविगइओ नियमिज्जंति, 'अभिक्खणं निव्विगइं गया ये'ति अप्पो कालविसेसो अभिक्खणामिति, अभिक्खणं णिव्वियं करणीयं, जहा मज्जमंसाणं अच्चंतपडिसेधो(न)तहा बीयाणं, केई पढंति—'अभिक्खणं णिव्वितीया जोगो पडिवज्जियव्वो' इति, अभिक्खणं काउस्सग्गकारी, काउसग्गे ठियस्स कम्मनिज्जरा भवइ, गमणागमणविहाराईसु अभिक्खणं काउसग्गे 'सऊसियं नीसासियं' पढियव्वा वाया, तहा 'सज्झायजोगे पयतो भवेज्ज' वायणादि बज्झो सज्झाओ तस्स जं विहाणं आयंबिलाइजोगो तंमि वा जो उज्जमे एस जोगो, तत्थ पयत्तेण भवियव्वं, भवेज्जा इति अंतदीवगं सव्वेहिं अभिसंबज्झते, अमज्जमंसासी भवेज्जा एवमादि, आह-णणु पिंडेसणाए भणियं 'बहुअट्ठियं पोग्गलं अणिमिसं वा बहुकंटकं ?', आयरिओ आह-तत्थ बहुअट्ठियं णिसिद्धमितिऽत्थ सव्वं णिसिद्धं, इमं उस्सग्गे सुत्तं, तं तु कारणीयं, जदा कारणे गहणं तदा पडिसाडिपरिहरणत्थं सुत्तं घेत्तव्वं-न बहुपडि(अट्ठि)यामिति, मज्जं पातुकामस्स पीए य सज्झायादि परिहाणिं, इमेसिं च अकारणे सेवानिसेहणणिमित्तं भण्णइ—'ण पडिन्नविज्जा सयणासणाइं०' ॥ ५०७ ॥ सिलोगो, णकारो पडिसेधे वट्टइ, पडिन्नवणं पडिसेहणमिति,

अमद्यमांसाशित्वादि

॥३७२॥

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. २ चूला

॥३७३॥

जो आगामीकालपक्खीणं संपतिकालविसओ, आगामीकालियपडियरणपडिसेहने एव, न पडिण्णवेज्जा, जहा मम इह परु वरिसारत्तो भविस्सइ, ममेव दायव्वाणि, अण्णस्स(मा)देह, किं पुण ण पडिन्नविज्जत्ति?, सयणासणाइं'सेज्जं निसेज्जं तह भत्त-पाणं' सयणं संथारयादि, आसणं पीढगादि, सेज्जा सज्झायादी भूमि, 'तहे' ति तेण पगारेण, न पडिन्नविज्जति जहा सुए परे भत्तं-ओदणादी पाणं-चउत्थरासियादी, तं एत्तियं कालं परिमाणं वएज्जा तहत्ति वदेज्जा, एयं पडिवन्नयं ममत्तेण, अतो सव्वहा 'गामे कुले वा नगरे च देसे ममत्तभावं न कहिंचि कुज्जा,'तत्थ कुलसमुदायो गामो, कुलमेगं कुटुंबं, महामणुस्ससंपरिग्गहो पंडियसमवाओ नगरं, विसयस्स किंचि मंडलं देसो, एतेसु जहुद्दिट्ठेसु मम इति भावं न कुज्जा, 'कहिंची'ति विसयहरिसरागादिसु सव्वेसु, किं बहुणा?, धम्मोवकरणेसुवि जा सा मुच्छा(सो)परिग्गहो वुत्तो महेसिणा, ममत्तनिवारणं अणंतरसुत्ते भणियं,इमंपि ममत्त-निवारणत्थमेव भण्णइ—'गिहिणो वेआवडियं न कुज्जा०'॥५०८॥ गिहे-पुत्तदारं तं जस्स अत्थि सो गिही, एगवयणं जाती-अत्थमवदिस्सति, तस्स गिहिणो 'वेयावडियं न कुज्जा' वेयावडियं नाम तथाऽऽदरकरणं, तेसिं वा पीतिजणणं, उपकारकं असंजमाणुमोदणं ण कुज्जा, 'अभिवायणा वंदण पूयणं चेव' वयणेण नमोक्काराइकरणं अभिवायणं, सिरप्पणामादि वंदणं, वत्थादिदाणं पूयणं, एताणि असंजमाणुमोदणाणि ण कुज्जा, जहा गिहीणं एताणि अकरणीयाणि, तहा सपक्खेऽवि 'असंकिलि-ट्ठेहिं समं वसेज्जा' गिहिवेयावडियादिरागदोसविवाहितपरिणामा संकिलिट्ठा, तहा भूते परिहरिऊण असंकिलेट्ठेहिं वसेज्जा, संपरिहारी संवसेज्जा, तेहिं संवासो चरित्ताणुपरोधकरेत्ति भण्णइ—'मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी' मुणी-साहू चरित्त-मूलगुणा तस्स, जओ हेऊतो तं न उवहम्मइ तव्विधेहिं असंकिलिट्ठेहिं सह वसियव्वं, अणागतकालीयमिदं सुत्तं, जओ तित्थ-

गृहिवैया-वृत्यनिषेधः

॥३७३॥

गरकाले पासत्थादयो संकिलिट्ठा णासीति, अतो अणागतमिदं परामस्सइ, संवासपराधीणं चरित्तधारणमिदं तमुद्दिट्ठं, अप्पणो णिच्छयबलाहाणत्थमुण्णीयते—'ण या लभेज्जा निउणं सहायं०' ॥५०९॥ सिलोगो, 'णे' ति पडिसेहे वट्टइ, णकाराणंतरो चकार इति जइसद्दस्स अत्थे, 'लाभिज्जात्ति' पावेज्ज, जइ न लभेज्जा, किं जइ न लभेज्जात्ति ?, निउणं-सहायं, आह-केणाहिकं?, भण्णइ--संजमगुणाहिकं, संजमगुणसमं वा, जो अप्पाओ संजमगुणेहिं अहिको समो वा, तव्विहगुणाहिकं जइ ण लभेज्जा गुणाओ संजमओ वा जो य गुणेहिं हेऊभूएहिं समभावगतो तव्विहं वा जइ(न)लभेज्जा गुणेहिं तं समं वा तओ'एक्कोऽवि पावाइं विवज्जयंतो' 'एग' इति असहाओ, अविसद्दो संभावणे, अत्रि जोऽचालणीयसंभावियगुणो सो एक्कोऽवि, पातयतीति पावं, तं पुण अणंताणि, विवज्जयंतो-परिहरंतोत्ति 'विहरेज्जात्ति' अपडिबद्धो जहोवएसं गामनगरादिसु, किन्तु 'कामेसु असज्जमाणो' काम-इत्थी-विसया, तग्गहणेण भोगावि फरिसरसरूवगंधावि गहिया, तेसु असज्जमाणो संग: अगच्छमाणो, विहरेज्जात्तिउवएसवयणं, कामेसु असज्जमाणोत्ति विहरणमुवएसाणंतरकालनियमणत्थमिदमुच्यते–'संवच्छरं वाऽवि परं पमाणं०' ॥ ५१० ॥ सिलोगो, संवच्छरं इति कालपरिमाणं भण्णइ, स नेह संवज्झइ, किन्तु वरिसारत्तं चाउम्मासियं, स एव जेट्ठुग्गहो, तं संवच्छरं, वासद्दो पुव्वभणियविचित्तचरियसमुच्चये, अविसद्दो संभावणे, कारणे अच्छितव्वंति एयं संभावयति, परमिति परसद्दो उक्करिसे वट्टइ, एतं मडिकं पमाणं, एत्तितं कालं वासिऊण बितियं च तओ अणंतरं, चसद्देण बितियमिति, जओ भणियं-"तं दुगुणं दुगुणे परिहरंता वट्टइ" बितियं तइयं च परिहरिऊण चउत्थो होज्जा, एवं ज अभिक्खणदरिसणसिणेहादि दोसा ते परिहरिया भवंति, अओ न वसेज्जात्ति उवएसवयणं, एयस्स नियमणत्थं दसज्झयणभणितस्स सव्वस्स अकलुसणत्थं भण्णइ—'सुत्तस्स मग्गेण चरिज्ज

॥३७४॥

भिक्खू' तं पुण अत्थसूयणेण अत्थप्पवूहेतो वा सुत्तं तस्स मग्गेणेति तस्स उवएसेण, जं तत्थ भणियं तहा चरेज्जा, एवं भिक्खू भवइ, सुयनाममेत्तेण स न बुज्झतित्ति विसेसो कीरइ,-'सुत्तस्स अत्थो जह आणवेति' तस्स सुत्तस्स मासकप्पादि सउस्सग्गापवादो गुरूहिं, ण सुविंचितिओ (पण्णविओ) अत्थो जह आणवेति जहा करणीयमग्गं निरूवेइ, जम्हा 'वक्खाणओ विसेसं पडिवज्जइ' त्ति अत्थस्स मग्गेणेति सुयसूइएणेति, जओ सुत्तमग्गेणऽज्झइएण अत्थो पच्छा पवत्तइ तेण सुत्तविवित्तचरिया असीयणफलं चेति बितियचूलियाहिगारो, तत्थ विवित्तचरिया भणिया, असीयणं पुण जहा भणियं कालमणुवसमाणे नत्थि मणुस्से इति। 'जो पुव्वरत्तावररत्तकाले०' ॥ ५११ ॥ इन्द्रवज्रोपजातिः, 'जो' इति अणिद्दिट्ठस्स उद्देसो, रत्तीए पढमो जामो पुव्वरत्तो तंमि जो अवररत्तो पच्छिमजामो तंमि अवरत्ते, एवं अवरत्तो एगस्स रगारस्स अलक्खणिगो लोवो, एत्थ कालिकपहोत्ति कालो इति वयणं, धम्मजागरियाकालो इति, एतेसु भण्णइ खणलवपडिबोधं पडुच्च सव्वकालेसु पुव्वरत्तावररत्तकाले किं करणीयमिति, 'सारक्खइ अप्पगमप्पएणं' पालयति, संसद्दस्स साभावो, अप्पगमेव कम्मभू [मि] यं अप्पणिज्झेण कारेगण, जहा अप्पाणं पातीकरोति, सारक्खणोवाओ पुण स इमो-जहुद्दिट्ठकालपमाणं पडिसेहेतो एवं चिंतेज्जा-'किं मे कडं' अवस्सकरणीयं जोएसु वारसविहस्स वा तवस्स जं कयं लट्ठमिति, किं मम कडं?, किंसद्दो अन्तगते विचारणे, मे इति अप्पणो णिद्देसे, कडमिति निव्वत्तियं, 'किं च मे किच्चसेसं' किमिति वा सद्दहितं सविकप्पं करणीयं विचारयति, किं करणीयं सेसं जायंति उज्जमामि करणीयसेसे, एसा अत्थविचारणा, 'किं सक्कणिज्जं न समायरामि', बलाबलकालानुरूपं सक्कं वत्थुं किमहं न समायरामि?, बलाबलकालानुरूपं सक्कं वत्थुं पमाददोसेण, जाव छड्डेऊण पमादं तमहं करेमि, पुव्वरत्तावररत्तकालेसु सारक्खणमप्पणो भणियं,

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥५००-५१५॥

दीप अनुक्रम [५२५-५४०]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ. २ चूला

॥३७६॥

सीदंतस्सऽवसेसमिदमुण्णीयते—'किं मे परो पासइ किंच अप्पा०' ॥५११॥ इन्द्रवज्रा, कयकिच्चसेसेसु किं मे परो पस्सतीति, अप्पगयमेव विचारणं, मे इति मम, पर इति अप्पगवइरित्तो, सो परो किं मम पासइ पमादजातं ? सपक्खो वा सिद्धंतविरुद्धं परपक्खो वा लोगविरुद्धं, 'किं च अप्पा' इति पमादबहुलत्तणेण जीवस्स किं मए निद्दाइपमाए नालोइयं जं इदाणिं कओवओगो पस्सामि, एवं किं परो अप्पा वा मम पासइ, ? 'किं वाऽहं खलियं न विवज्जयामि' किंसद्दो तहेव, वासद्दो विकप्पे, धम्मावस्सए जोगविकप्पेण, अहमिति अप्पणो निद्देसे, किं वा मम पमादगलितं बुद्धिखलितं, पुण विचालणं सब्भावत्थानाओ, सोऽहं किं अकरणीयं बुद्धिखलियं विवज्जयामि न-समायरामि, केई पढंति-किं वाऽहं तं खलियं न विवज्जयामि, तं किमहं संजमखलियं न परिहरामि ?, 'इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो' इतिसद्दो उवप्पदरिसणे, किं कडं किच्चसेसं एवमादीणं अत्थाण उवप्पदरिसणे एवसद्दो अप्पगतकिरियाउपपदरिसणे, अवहारणत्थो वा, किमवधारयति ?, एवमेवं, ण अण्णहा, सम्ममिति तत्थ अणुपस्समाणो नाम पढमं भगवया दिट्ठं च पच्छा बुद्धिपुव्वं पस्समाणो अणुपस्समाणो 'अणागतं णो पडिबंध कुज्जा' अणागतमिति आगामिए काले, 'णो' इति पडिसेधे, सो इच्छियफललाभविग्घो तं असंजमपडिबंधं णो कुज्जा, इदाणिं च एवं पुव्वावररत्ताइसु अप्पा परोवएसेण सम्मं समभिलोअमाणो—'जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं० ॥ ५१२ ॥ इन्द्रवज्रोपजातिः 'जत्थेव' जंमि संजमखलणावगासे, एवसद्दो तदवगासावधारणेण कालांतरेण संचरणं कहमिति पदेण अंतरियं, पासे इति जत्थ पेक्खेज्जा, 'कइ' इति कंमि संजमठाणे, किं मे परो पस्सइ किं च अप्पा इति, सपरोभयदिट्ठे दुपणीयसंजमजोगे विरोधेण पवत्तियं, आह—केण दुपणीयं?, भण्णइ—'काएण वाया अदु माणसेणं' काएण इरियाऽसामितित्तणं वायाए भासाए असमिति, मणसा अणुचिंतियाइ, अदु

स्खलित-वर्जनं

॥३७६॥

इति अहवसद्दस्स अत्थे, मण एव माणसो राएहिं कायवायमाणसेहिं जत्थ दुप्पणीयं पासेज्जा 'तत्थेव धीरो पडिसाहरिज्जा' 'तत्थे' ति तंमि चेव, कायवायमाणसावकासे, तंमि वा काले, न कालंतरेण, एवसद्दो उभयकारणे, धीरो पंडिओ, तवकरणसूरो वा, उज्झियपडिसंगहणं पडिसाहरणं, तं कायवायदुप्पणीयादि तंमि चेव विराहितावकासे तंमि च काले पडिसाहरेज्जा, सनिदरिसणं सुहुमत्थो घेप्पइत्ति निदरिसणं भण्णइ-'आइन्नओ खिप्प(त्त)मिवक्खलीणं' गुणेहिं जयविजयाईहिं आपूरिओ आइण्णो, सो पुण अस्सो जातिरेव आइण्णो, जत्थ कोइ जहाऽस्सो पडिसाहरइ पडिवज्जियओक्खित्तं खलिणं, ओखित्तमिति उच्छूढं, खधदेसमागयं नातिक्कमइ, अहवा खिप्पं जं सारहिणा आकड्ढियं. सारहिणा ईसदावि खित्तं णातिक्कमइ, अहवा खिप्पमिव खलियं, खिप्पमिति सिग्घंति, वसद्दो उवम्मे, बंभलोहसंडंसादयो हयवेगणिरुंभगा खलिणं, जहा सो परमविणीओ आइण्णो सयमेव मुहेण खिप्पं पडिवज्जइ, आसावरिछंदेण, न खलिणवसेण पवत्तइ, तदभिप्पाईयं पडिवज्जइ, एवं तव्वसेण वेगपडिसाहरणादि खलिणमेव पडिसाहरियं भवइ, जहा आइण्णो खिप्पं खलिणं पडिसाहरइ तहा काइयादि दुप्पणीयं काएण वाया अदु माणसेणंति। काइयवाइयमाणसाण जोगाणं णियमणउवएसणसमुक्करिसतो भगवं अज्जसज्जंभवो सिस्सा आमंतेऊण आणवेइ-'जस्सेरिसा जोगाजिइंदियस्स०' ॥ ५१४ ॥ सिलोगो, सव्वं वा धम्मो मंगलाइयं उवएसजायं पज्जवलोगा उवदरिसित्ता भगवं सेज्जंभवसामी आणवइ, सकलदसवेयालियसत्थोवएसत्थनियमिया 'जस्सेरिसा जोगजिइंदियस्स', जस्सेति आणिद्दिट्ठस्स निद्देसेण जोगसंबंधं दरिसयति, 'एरिसा' इति पकारोवदरिसणं, एवं नियमियजोगा इति काइयवाइयमाणसियवावारो सद्दाइविसयणियत्ति-

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥५००-५१५॥ दीप अनुक्रम [५२५-५४०]

दिओ जिइंदिओ, धिई जस्स अत्थि सो धिइमंतो, सोभणो पुरिसो पडिबुद्धो, पडिबुद्धस्स जीवितं-सीलं जस्स भवति स पडिबुद्धजीवी, सो एवंगुणो जीवइ संजमजीवितेणं, तमेव जीवितमसारे माणुसत्तणे, धिइमंतो सप्पुरिसस्स जिइंदियस्स संजमे जस्सेरिसा जोगा स जीवइ संजमजीवितेणं भणियं च, अणंतरजीवियफलोपदरिसणत्थं भण्णइ 'अप्पा खलु' अथवा सव्वदसवेयालियसत्थस्स धम्मपसंसाइकस्स उवदेसस्स सव्वदुक्खावमोक्खणेण फलमिदमिति भण्णइ—'अप्पा खलु सययं रक्खियव्वो०' ॥५१५॥ इन्द्रवज्जोपजातिः, जो धम्मपसंसा १ धितिगुण २ संजम ३ जीवाभिगम ४ भिक्खविसोहणा ५ धम्मत्थकाम ६ वयणविहि ७ यार पणिधाण ८ विणये ९ हवति य भिक्खुभावे १० चूलियअज्झयणविनिव्वत्तिभंगो उवएससंजमो, जओ भणियं 'सो जीवई संजमजीवितेणं', एवंगुणो अप्पा, खलु विसेसणे तित्थकरभणियकज्जकरणबद्धा परमभणियाकज्जकप्पणेहिंतो अ संजमप्पाणं विसेसयति, सययमिति आमहव्वयारोवणा मरणपज्जंतं सव्वकालं, रक्खियव्वमिति परिपालनीयो, तस्स रक्खणोवाओ भण्णइ-'सव्वेंदिएहिं सुसमाहिएहिं' सोतचक्खुघंधफासरसणाणि सव्वाणि इंदियाणि सव्वे इंदिया, तेहिं सुट्ठु समाहिएहिं विसयचयणेणं आयभावमक्कमन्तेण आरोवियाणि समाहियाणि य, एवंविहेहिं अरक्खणे पच्चवायोपदरिसणत्थं भण्णइ—'अरक्खिओ जाइपहं उवेइ' ण रक्खिओ सो अरक्खिओ, 'जाइवहं उवेइ' जाती–जणणं उप्पत्ति वधो-मरणं जाइ य वधो य जाइवहो, अरक्खिओ जाइपहं जंमणमरणमुवेइ, पढंति—'जाइपहं' तं पुण संसारमग्गं चउरासीतिजोणीलक्खं परमगंभीरभयाणगमुवेइ, रक्खणगुणोववण्णणनिमित्तं समत्थफलोपदरिसणत्थं भण्णइ-'सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुचइ' सुट्ठु सव्वपयत्तेण पावनियत्तीए

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधिता मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता: आगमसूत्र-[४२] मूलसूत्र-[०३] दशवैकालिक निर्युक्ति: एवं जिनदासगणिरचिता चूर्णि

प्रत सूत्रांक [१] गाथा ॥५००-५१५॥

दीप अनुक्रम [५२५-५४०]

श्रीदश-वैकालिक चूर्णौ २ चूला

॥३७९॥

जोइओ सुरक्खिओ, तहा नियमिओ सव्वदुहाणं सारीरमाणसाणं मुच्चतीति, स सव्वदुक्खरहिओ णिव्वाणमणुत्तरं संतिमुवेति, इतिसद्दो अज्झयणपरिसमत्तीए, बेमि तित्थगरवयणाणुगरिसणे । बितियचूलियज्झयणमेवं सम्मत्तम् ॥ २ ॥

॥ विवित्तचरिआ चूला समत्ता ॥

चरिया य परिविवित्ता असीयणं जो य तस्स फललाभो । एते विसेसभणिया पिंडत्था चूलियज्झयणे ॥१॥
सयलदसवेयालियस्स अत्थोवदरिसणत्थं तु । जं आदिओ उद्दिट्ठं 'जेण व जं वा पडुच्चेइ' ॥२॥

सुत्तकारगस्स पडिणिरस्सणणिमित्तं इमा णिज्जुत्ती गाहा भणिया—'छहिं मासेहिं अधीतं' गाथा, 'छहिं' ति परिमाणसद्दे 'मासेहिं' ति कालपरिसंखाणं, तेहिं छहिं मासेहिं धीतं-एत्तिएण कालेण पढियं, अज्झयणसद्दो सव्वंमि दस (बे) यालिए वट्टइ, अहवा अज्झयणमिदं तु जं इमं अपच्छिमं चूलियज्झयणं, एयंमि आणुपुव्वीए अधीते सकलं सत्थं अधीतं भवति, 'अज्जमणगेणं' अज्जसद्दो सामीपज्जायवयणो, मणओ पुव्वभणिओ, तेण एत्तिउवेओ छम्मासपरियाओ अह कालगओ, अहसद्दो अज्झयणाणंतरं, 'कालगओ समाधीए' जीवनकालो जस्स गतो समाहीएत्ति, जहा तेण एत्तिएण चेव आराहणा भण्णतित्ति ॥ ग्रन्थाग्रं ७९७० (७५७६) ॥

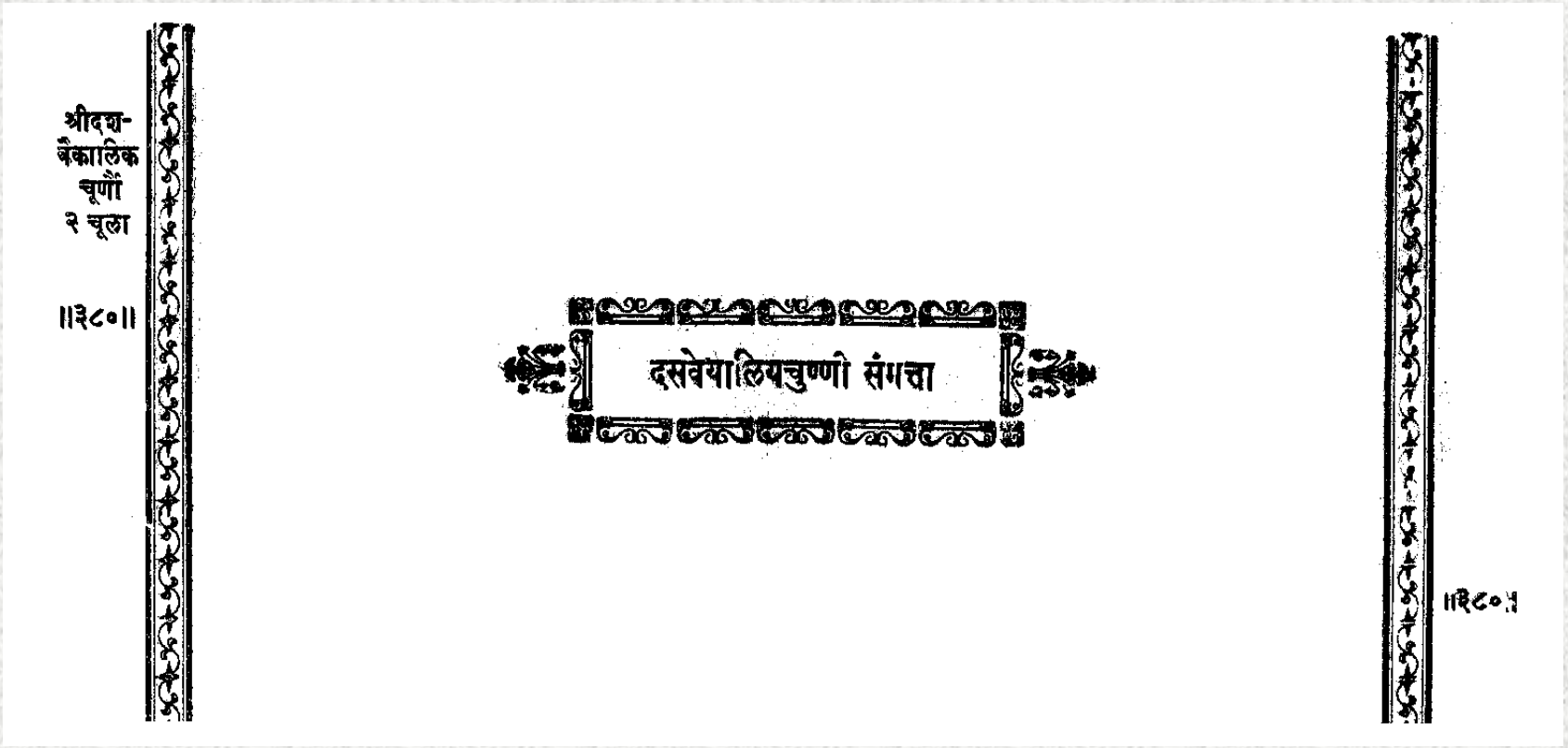
उपसंहारः

॥३७९॥

चूलिका -२- परिसमाप्ता **अथ उपसंहार: क्रियते**

प्रत सूत्रांक [-] गाथा ||-||

दीप अनुक्रम [-]



मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादिता (आगमसूत्र ४२)

“दशवैकालिक-चूर्णि:” परिसमाप्ता:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

भाग-6

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधिता: संपादिताश्च

"दशवैकालिक सूत्र" [निर्युक्ति: एवं जिनदास गणि-रचिता चूर्णि:]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलिता

"दशवैकालिक" निर्युक्ति: एवं चूर्णि: नामेण

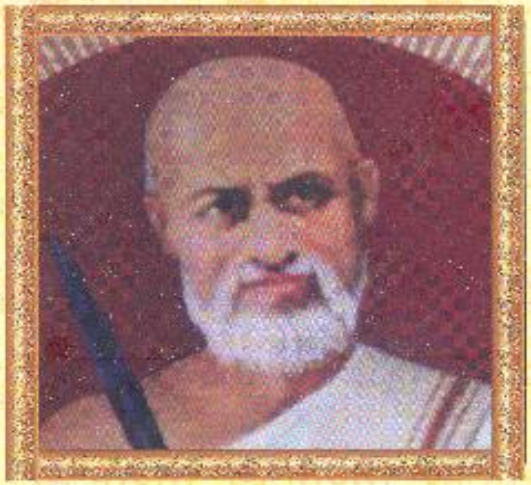
परिसमाप्ता:


आगम
वाचना शताब्दी वर्ष

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

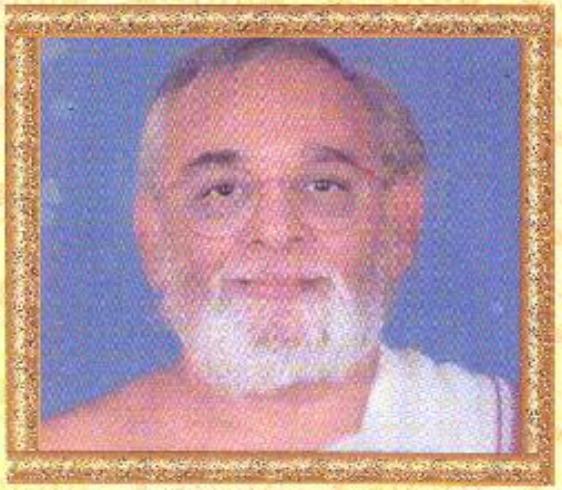
सचूर्णिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदावाद Mo 9825598855 / 9825306275

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता

सच्चारित्र चूडामणि स्वर्गस्थ पूज्यपाद
गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागर
सूरीश्वरजी महाराज साहेब

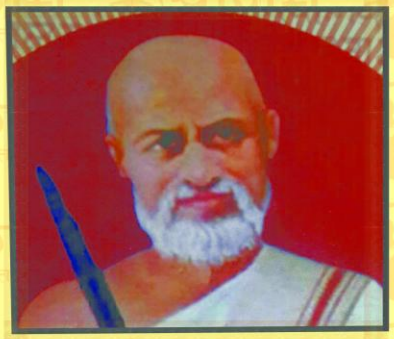


श्री परम आनंद श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

वीतराग सोसायटी, प्रभूदास ठक्कर कोलेज रोड, पालडी, अमदावाद

करीब पचास साल पहेले परम पूज्य स्व र्गस्थ गच्छाधिपति आचार्य देव श्रीमद् देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब द्वारा संस्थापित इस संघमें श्री शीतलनाथ भगवंत का जिनालय भी है, जिन के प्रतिष्ठाचार्य भी पूज्य देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी म० ही है |

इस संघमें पूज्य साधू -भगवंत एवं साध्वी -महाराज के लिए उपाश्रय भी है, जहां हर-साल चातुर्मास करवा के श्रावक-श्राविकाओ को धर्म-आराधन से लाभान्वित करवाया जाता है | इस संघमें आयंबिलभवन, उबाला हुआ पानी, ज्ञान-भण्डार एवं पाठशाला की भी बहोत अच्छी सुविधा प्रदान हो रही है | ऐसे सम्यग्-मार्गी संघ की सद्भावना और प्रभावक आचार्य पूज्य श्री हर्षसागरसूरिजी म० की प्रेरणा से इस शास्त्र के लिए अनुदान प्राप्त हुआ है |



मूल संशोधक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य

श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

आगम - ४२

"दशवैकालिक" निर्युक्ति एवं चूर्णि:

अभिनव-संकलनकर्ता

आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी

[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

